नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

भाग

4

आगम_संबंधी_साहित्य



आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

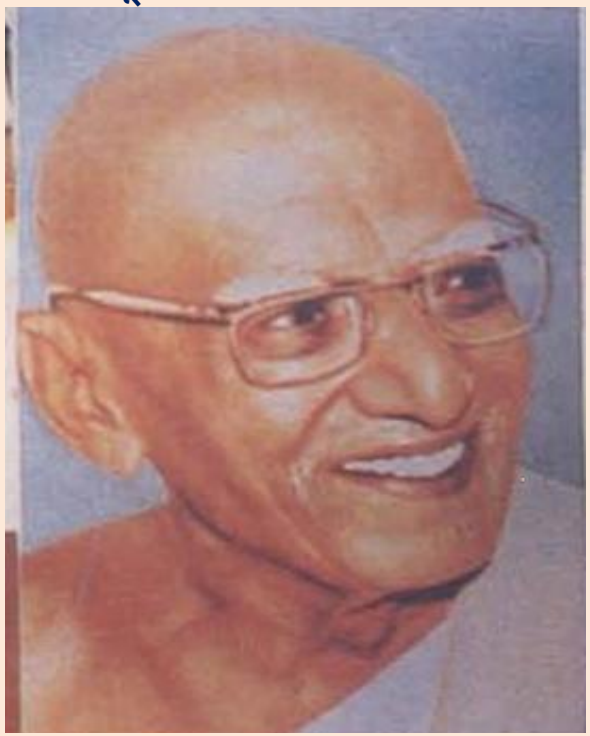
अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब



श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

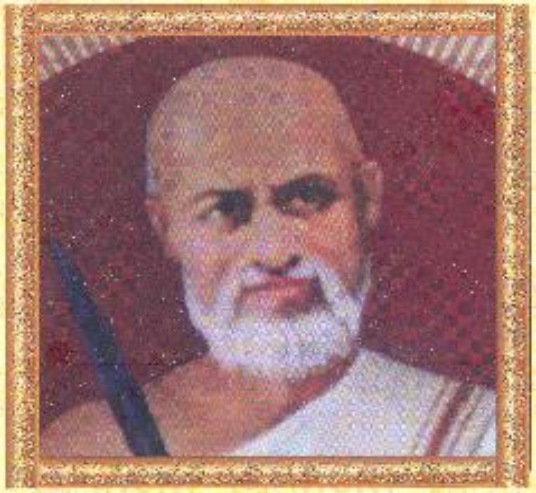
करीब पचास साल पहेले <u>परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब</u> द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

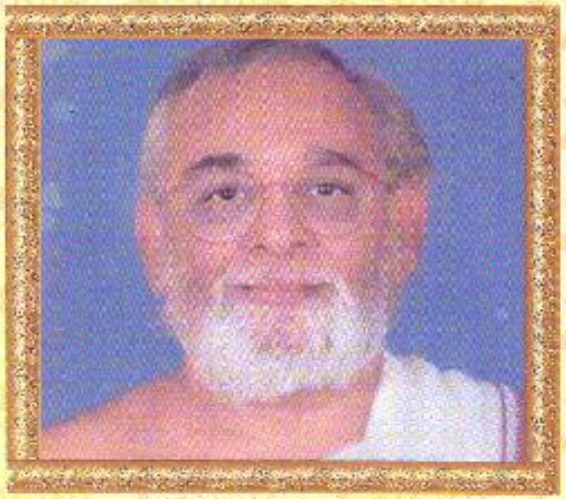
आगम_संबंधी_साहित्य

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275



आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

भाग-4

आगमसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

[१] अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम: [३] प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

[२] उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम: [४] नन्द्यादि-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

[आगम-संबंधी-साहित्य]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५

'आगम-संबंधी-साहित्य' श्रेणि भाग-४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

[आगम-संबंधी-साहित्य]

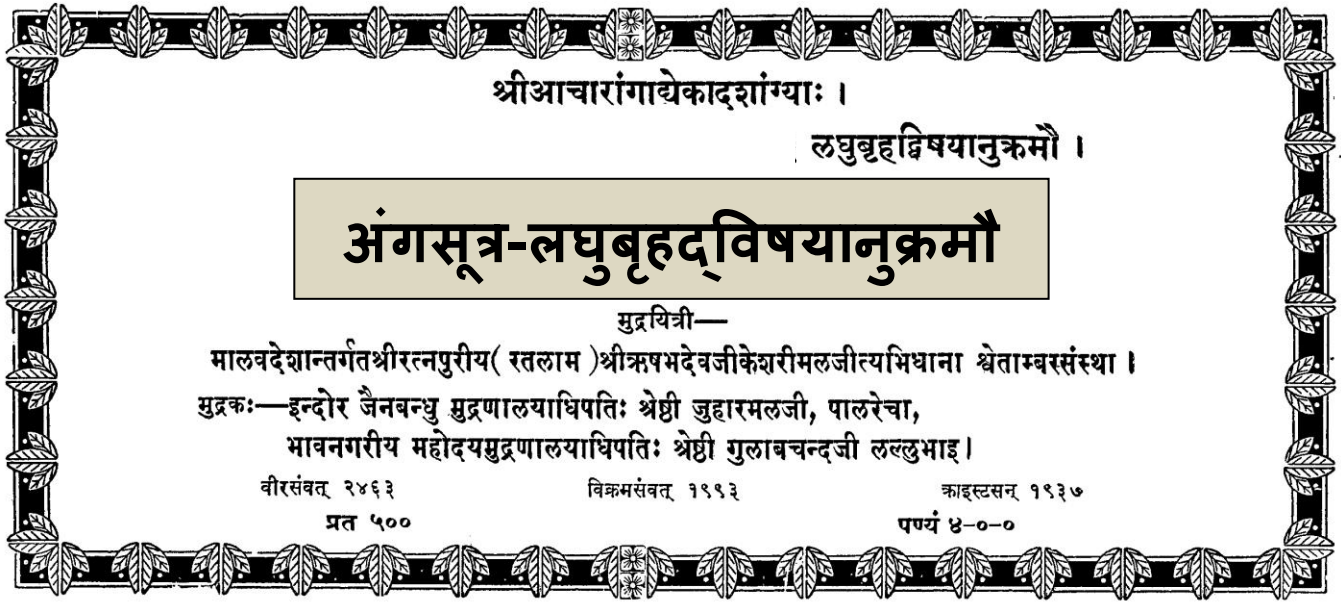
[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ 'आगम-संबंधी-साहित्य' श्रेणि भाग-४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्रीआचारांगाद्येकादशांग्याः ।

लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ।

अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

मुद्रयित्री—

मालवदेशान्तर्गतश्रीरत्नपुरीय(रतलाम)श्रीऋषभदेवजीकेशरीमलजीत्यभिधाना श्वेताम्बरसंस्था ।

मुद्रकः—इन्दोर जैनबन्धु मुद्रणालयाधिपतिः श्रेष्ठी जुहारमलजी, पालरेचा,

भावनगरीय महोदयमुद्रणालयाधिपतिः श्रेष्ठी गुलाबचन्दजी लल्लुभाइ।

वीरसंवत् २४६३	विक्रमसंवत् १९९३	क्राइस्टसन् १९३७
प्रत ५००		पण्यं ४-०-०

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... ***.....मुनि दीपरत्नसागर...***

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

***** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |**

***** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |**

***** मुनि दीपरत्नसागर...**

~~~
~~~

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "आगम-संबंधी-साहित्य" श्रेणि भाग १ से ४ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "आगम संबंधी साहित्य" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई, उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे | समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:		क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:
अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:								
०१	❁ आचार	०१७	०३३		०७	❁ उपासकदशा	०३०	१७०
०२	❁ सूत्रकृत्	०२०	०५९		०८	❁ अंतकृद्दशा	०३०	१७३
०३	❁ स्थान	०२१	०८६		०९	❁ अनुत्तरोपपातिकदशा	०३०	१७६
०४	❁ समवाय	०२२	१०९		१०	❁ प्रश्नव्याकरण	०३१	१७७
०५	❁ भगवती	०२३	१२०		११	❁ विपाकश्रुत	०३१	१८१
०६	❁ ज्ञाताधर्मकथा	०२९	१५९		-----	----------		
उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:								
१२	❁ औपपातिक				१८	❁ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति		
१३	❁ राजप्रश्नीय				१९	❁ निरयावलिका		
१४	❁ जीवाजीवाभिगम				२०	❁ कल्पवतंसिका		
१५	❁ प्रज्ञापना				२१	❁ पुष्पिता		
१६+१७	❁ सूर्य+चन्द्र-प्रज्ञप्ति				२२	❁ पुष्पचूलिका		
-----	----------				२३	❁ वृष्णिदशा		
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)								

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:		क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:
			प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
२४	❁ चतु:शरण				२९	❁ संस्तारक		
२५	❁ आतुरप्रत्याख्यान				३०	❁ गच्छाचार		
२६	❁ महाप्रत्याख्यान				३१	❁ गणिविज्जा		
२७	❁ भक्तपरिज्ञा				३२	❁ देवेन्द्रस्तव		
२८	❁ तंदुलवैचारिक				३३	❁ मरणसमाधि		
	*** [३४-३९] छेदसूत्र-वृत्ति का विषयानुक्रम पूज्य आगमोद्धारकश्रीने नही बनाया ***							
			मूल-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
४०	❁ आवश्यक				४२	❁ दशवैकालिक		
४१/१	❁ पिंडनिर्युक्ति				४३	❁ उत्तराध्ययन		
४१/२	❁ ओघनिर्युक्ति				-----	----------		
			चूलिका-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
४४	❁ नन्दी				४५	❁ अनुयोगद्वार		
	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)							

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांक एवं दीप-क्रमांक

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-गाथा	
०१	❁ आचार	४०२	१४७	५५२	१६	❁ सूर्यप्रज्ञप्ति	१०७	१०३	२१४
०२	❁ सूत्रकृत्	०८२	७२३	८०६	१७	❁ चन्द्रप्रज्ञप्ति	१०७	१०७	२१८
०३	❁ स्थान	७८३	१६९	१०१०	१८	❁ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१७८	१३१	३६५
०४	❁ समवाय	१६०	०९३	३८३	१९	❁ निरयावलिका	०२०	----	०२१
०५	❁ भगवती	८६९	११४	१०८७	२०	❁ कल्पवतंसिका	००२	००१	००५
०६	❁ ज्ञाताधर्मकथा	१६५	०५७	२४१	२१	❁ पुष्पिता	००६	००२	०११
०७	❁ उपासकदशा	०५८	०१३	०७३	२२	❁ पुष्पचूलिका	००१	००१	००३
०८	❁ अंतकृद्दशा	०२७	०१२	०६२	२३	❁ वृष्णिदशा	००२	००१	००५
०९	❁ अनुत्तरोपपातिकदशा	००६	००२	०१३	२४	❁ चतु:शरण	-----	०६३	०६३
१०	❁ प्रश्नव्याकरण	०३०	०१४	०४७	२५	❁ आतुरप्रत्याख्यान	००१	०७०	०७१
११	❁ विपाकश्रुत	०३४	००३	०४७	२६	❁ महाप्रत्याख्यान	-----	१४२	१४२
१२	❁ औपपातिक	०४३	०३०	०७७	२७	❁ भक्तपरिज्ञा	-----	१७२	१७२
१३	❁ राजप्रश्नीय	०८५	-----	०८५	२८	❁ तंदुलवैचारिक	०२०	१३९	१६१
१४	❁ जीवाजीवाभिगम	२७३	०९३	३९८	२९	❁ संस्तारक	-----	१३३	१३३
१५	❁ प्रज्ञापना	३५२	२३१	६२२	३०	❁ गच्छाचार	-----	१३७	१३७

❁ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नही किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि हुआ

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांक एवं दीप-क्रमांक

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-गाथा	
३१	❁ गणिविज्जा	-----	०८२	०८२	४१/२	❁ ओघनिर्युक्ति	-----	८१२	११६५
३२	❁ देवेन्द्रस्तव	-----	३०७	३०७	४२	❁ दशवैकालिक	०२१	५१५	५४०
३३	❁ मरणसमाधि	-----	६६३	६६४	४३	❁ उत्तराध्ययन	०८८	१६४०	१७३१
❁४०	❁ आवश्यक	०५०	०२१	०९२	४४	❁ नन्दीसूत्र्	०५९	०९०	१६३
४१/१	❁ पिंडनिर्युक्ति	-----	६७१	७१२	४५	❁ अनुयोगद्वार	१५२	१४१	३५०
❁ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नही किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि हुआ									

[अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

✣ यह प्रत "अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ" के नामसे सन १९ ३७ (विक्रम-संवत १९९३) में 'श्री ऋषभदेव केशरीमल श्वेताम्बर संस्था' द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

✣ पूज्यपाद् आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने 'आचारांग' वगैरेह ११ अंगसूत्रो के मूलसूत्र एवं उस पर पूर्वाचार्य रचित वृत्ति आदि का संपादन किया था | उन प्रतोमे जो मूलसूत्र, गाथा, वृत्ति आदि थे उन सभी सूत्र आदि के विषयो का अनुक्रम संक्षेप और विस्तार से लिखकर इस प्रतमे प्रकाशित करवाया है | अर्थात् ११ अङ्गसूत्रो के लघु और बृहत् विषयानुक्रम के रचयिता, संपादक और प्रकाशक श्री आगमोद्धारक आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब ही है |

✣ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्रीने इसी तरह उपांगसूत्रो, प्रकीर्णकसूत्रो और नन्दी आदि अन्य आगमसूत्रो के सूत्र आदि के विषयो का अनुक्रम भी संक्षेप और विस्तार से लिखकर संपादन और प्रकाशन करवाया है |

✣ हमारा ये प्रयास क्यों? ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, अब तक मेरे प्रकाशित किये हुए पुस्तको के १,००,००० से ज्यादा पृष्ठ हो चुके है, किन्तु लोगो की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे प्रत संबंधी उपयोगी माहिती लिख दी है, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौन से वर्ण का क्रम चल रहा है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके |

✣ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री ने आगम संबंधी ५२ विषयो को वर्गीकृत किया था, आज भी उनमे से ऐसी कइं प्रते मिलती है, जिसमे ये विभाजन-क्रमांक देखने को मिलते है, उनमे से थोडे विषयो का काम हुआ भी है, जो मुद्रित स्थितिमे भी प्राप्त है |

✣ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणा से और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'आगम-संबंधी-साहित्य' भाग-4 का मुद्रण हुआ है, हम उनके प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है|

.... मुनि दीपरत्नसागर.

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म॰ सा॰]

अंगसूत्र लघु विषयानुक्रम:

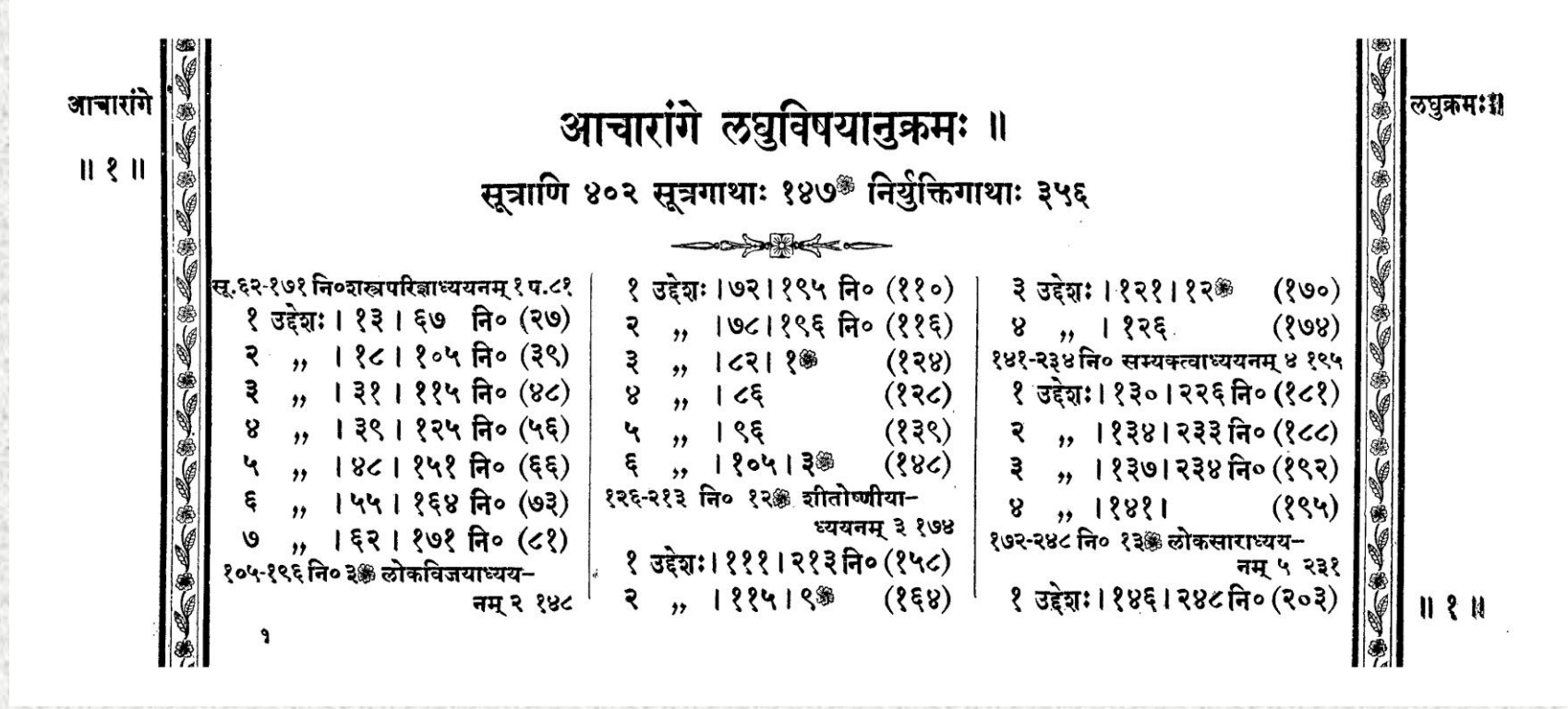
← पुन: संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर **मुनि दीपरत्नसागर**(M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचारांगे ॥ १ ॥

आचारांगे लघुविषयानुक्रमः ॥

सूत्राणि ४०२ सूत्रगाथाः १४७ निर्युक्तिगाथाः ३५६

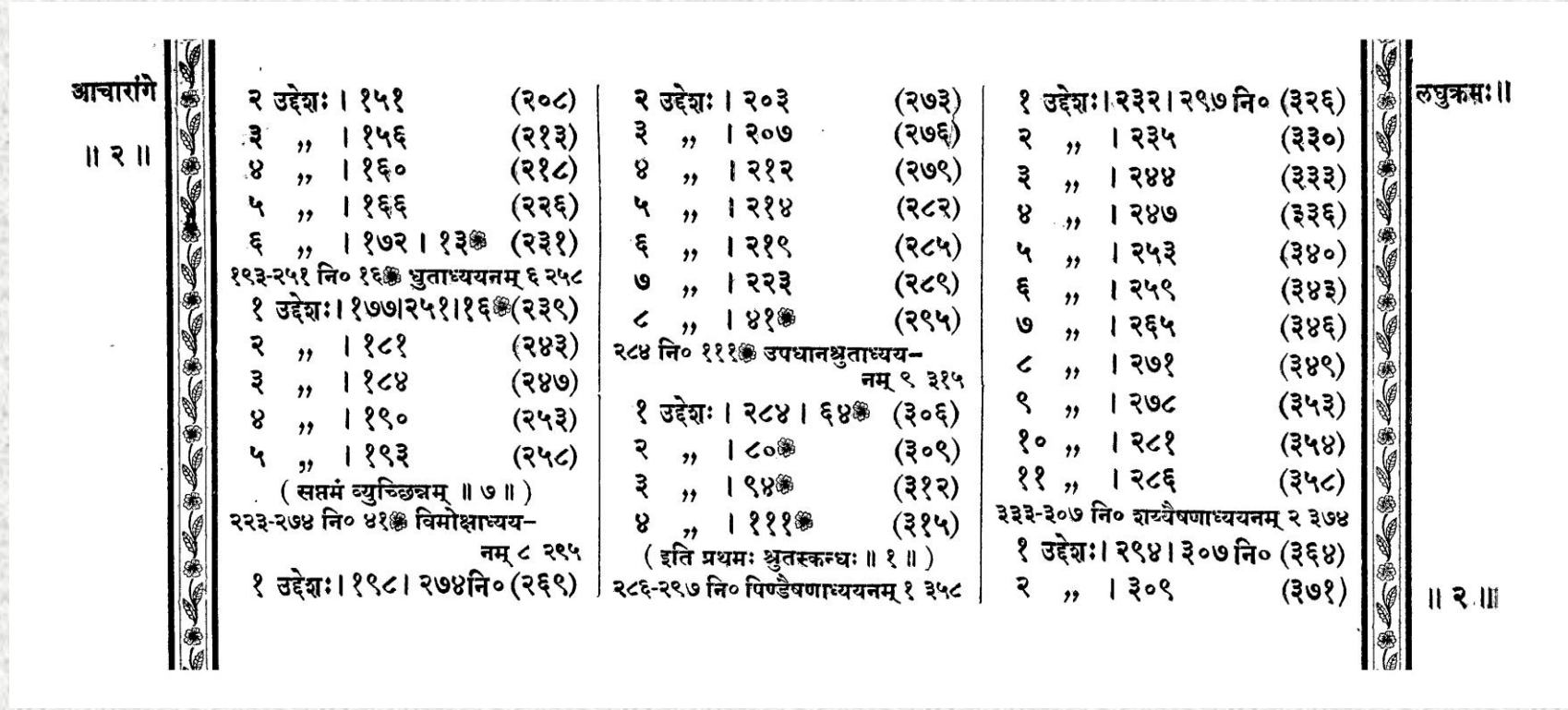
सू.६२-१७१ नि०शस्त्रपरिज्ञाध्ययनम् १ प.८१
१ उद्देशः । १३ । ६७ नि० (२७)
२ ,, । १८ । १०५ नि० (३९)
३ ,, । ३१ । ११५ नि० (४८)
४ ,, । ३९ । १२५ नि० (५६)
५ ,, । ४८ । १५१ नि० (६६)
६ ,, । ५५ । १६४ नि० (७३)
७ ,, । ६२ । १७१ नि० (८१)
१०५-१९६ नि० ३ लोकविजयाध्ययनम् २ १४८
१ उद्देशः । ७२ । १९५ नि० (११०)
२ ,, । ७८ । १९६ नि० (११६)
३ ,, । ८२ । १ (१२४)
४ ,, । ८६ (१२८)
५ ,, । ९६ (१३९)
६ ,, । १०५ । ३ (१४८)
१२६-२१३ नि० १२ शीतोष्णीयाध्ययनम् ३ १७४
१ उद्देशः । १११ । २१३ नि० (१५८)
२ ,, । ११५ । ९ (१६४)
३ उद्देशः । १२१ । १२ (१७०)
४ ,, । १२६ (१७४)
१४१-२३४ नि० सम्यक्त्वाध्ययनम् ४ १९५
१ उद्देशः । १३० । २२६ नि० (१८१)
२ ,, । १३४ । २३३ नि० (१८८)
३ ,, । १३७ । २३४ नि० (१९२)
४ ,, । १४१ । (१९५)
१७२-२४८ नि० १३ लोकसाराध्ययनम् ५ २३१
१ उद्देशः । १४६ । २४८ नि० (२०३)

लघुक्रमः ॥ १ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



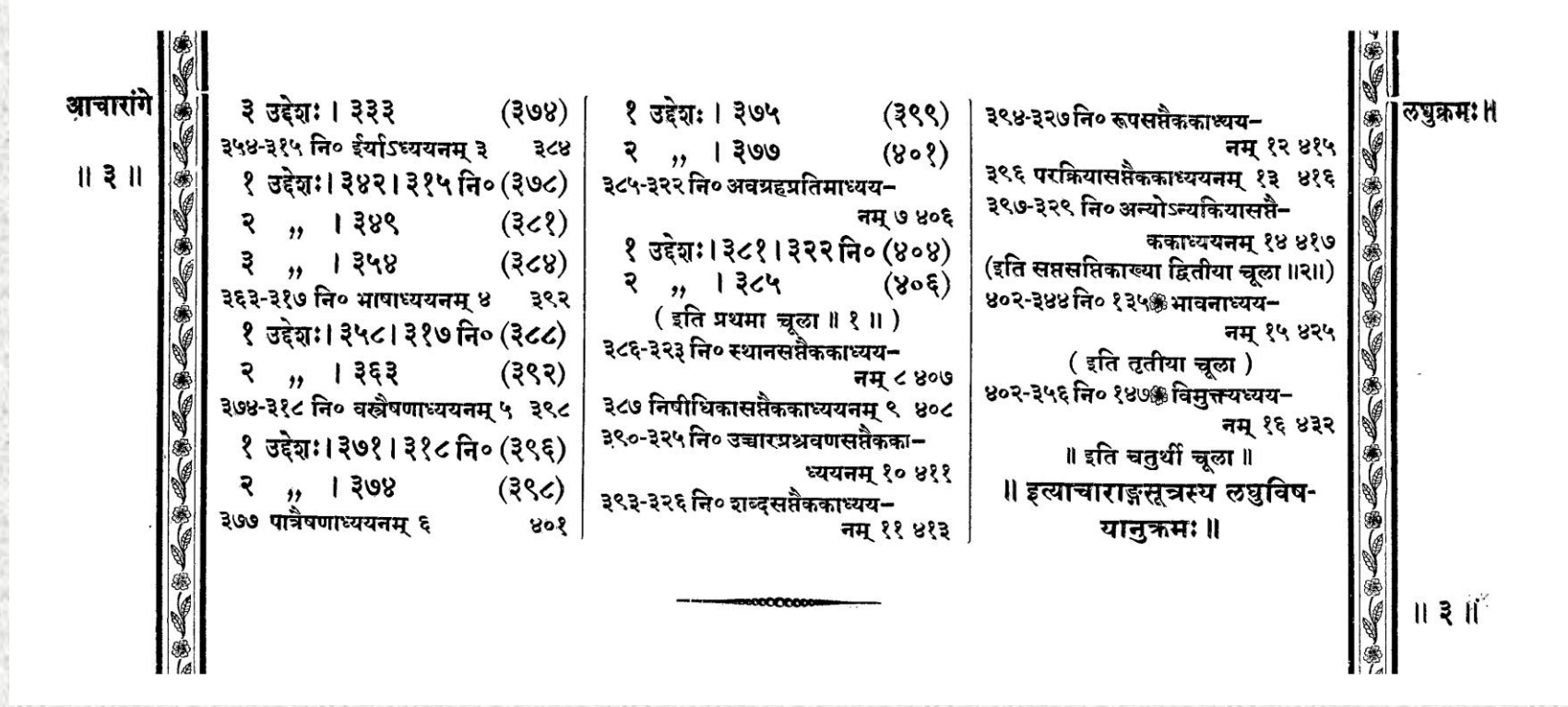
आचारांगे ॥ २ ॥

२ उद्देशः । १५१ (२०८)
३ ,, । १५६ (२१३)
४ ,, । १६० (२१८)
५ ,, । १६६ (२२६)
६ ,, । १७२ । १३ (२३१)
१९३-२५१ नि० १६ धुताध्ययनम् ६ २५८
१ उद्देशः । १७७।२५१।१६ (२३९)
२ ,, । १८१ (२४३)
३ ,, । १८४ (२४७)
४ ,, । १९० (२५३)
५ ,, । १९३ (२५८)
(सप्तमं व्युच्छिन्नम् ॥ ७ ॥)
२२३-२७४ नि० ४१ विमोक्षाध्ययनम् ८ २९५
१ उद्देशः । १९८ । २७४नि० (२६९)
२ उद्देशः । २०३ (२७३)
३ ,, । २०७ (२७६)
४ ,, । २१२ (२७९)
५ ,, । २१४ (२८२)
६ ,, । २१९ (२८५)
७ ,, । २२३ (२८९)
८ ,, । ४१ (२९५)
२८४ नि० १११ उपधानश्रुताध्ययनम् ९ ३१५
१ उद्देशः । २८४ । ६४ (३०६)
२ ,, । ८० (३०९)
३ ,, । ९४ (३१२)
४ ,, । १११ (३१५)
(इति प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥ १ ॥)
२८६-२९७ नि० पिण्डैषणाध्ययनम् १ ३५८
१ उद्देशः । २३२ । २९७ नि० (३२६)
२ ,, । २३५ (३३०)
३ ,, । २४४ (३३३)
४ ,, । २४७ (३३६)
५ ,, । २५३ (३४०)
६ ,, । २५९ (३४३)
७ ,, । २६५ (३४६)
८ ,, । २७१ (३४९)
९ ,, । २७८ (३५३)
१० ,, । २८१ (३५४)
११ ,, । २८६ (३५८)
३३३-३०७ नि० शय्यैषणाध्ययनम् २ ३७४
१ उद्देशः । २९४ । ३०७ नि० (३६४)
२ ,, । ३०९ (३७१)
लघुक्रमः ॥
॥ २ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचारांगे ॥ ३ ॥

२ उद्देशः । ३३३ (३७४)
३५४-३१५ नि० ईर्याऽध्ययनम् ३ ३८४
१ उद्देशः । ३४२ । ३१५ नि० (३७८)
२ ,, । ३४९ (३८१)
३ ,, । ३५४ (३८४)
३६३-३१७ नि० भाषाध्ययनम् ४ ३९२
१ उद्देशः । ३५८ । ३१७ नि० (३८८)
२ ,, । ३६३ (३९२)
३७४-३१८ नि० वस्त्रैषणाध्ययनम् ५ ३९८
१ उद्देशः । ३७१ । ३१८ नि० (३९६)
२ ,, । ३७४ (३९८)
३७७ पात्रैषणाध्ययनम् ६ ४०१

१ उद्देशः । ३७५ (३९९)
२ ,, । ३७७ (४०१)
३८५-३२२ नि० अवग्रहप्रतिमाध्यय-
नम् ७ ४०६
१ उद्देशः । ३८१ । ३२२ नि० (४०४)
२ ,, । ३८५ (४०६)
(इति प्रथमा चूला ॥ १ ॥)
३८६-३२३ नि० स्थानसप्तैककाध्यय-
नम् ८ ४०७
३८७ निषीधिकासप्तैककाध्ययनम् ९ ४०८
३९०-३२५ नि० उच्चारप्रश्रवणसप्तैकका-
ध्ययनम् १० ४११
३९३-३२६ नि० शब्दसप्तैककाध्यय-
नम् ११ ४१३

३९४-३२७ नि० रूपसप्तैककाध्यय-
नम् १२ ४१५
३९६ परक्रियासप्तैककाध्ययनम् १३ ४१६
३९७-३२९ नि० अन्योऽन्यक्रियासप्तै-
ककाध्ययनम् १४ ४१७
(इति सप्तसप्तिकाख्या द्वितीया चूला ॥२॥)
४०२-३४४ नि० १३५ भावनाध्यय-
नम् १५ ४२५
(इति तृतीया चूला)
४०२-३५६ नि० १४७ विमुक्त्यध्यय-
नम् १६ ४३२
॥ इति चतुर्थी चूला ॥
॥ इत्याचाराङ्गसूत्रस्य लघुविष-
यानुक्रमः ॥

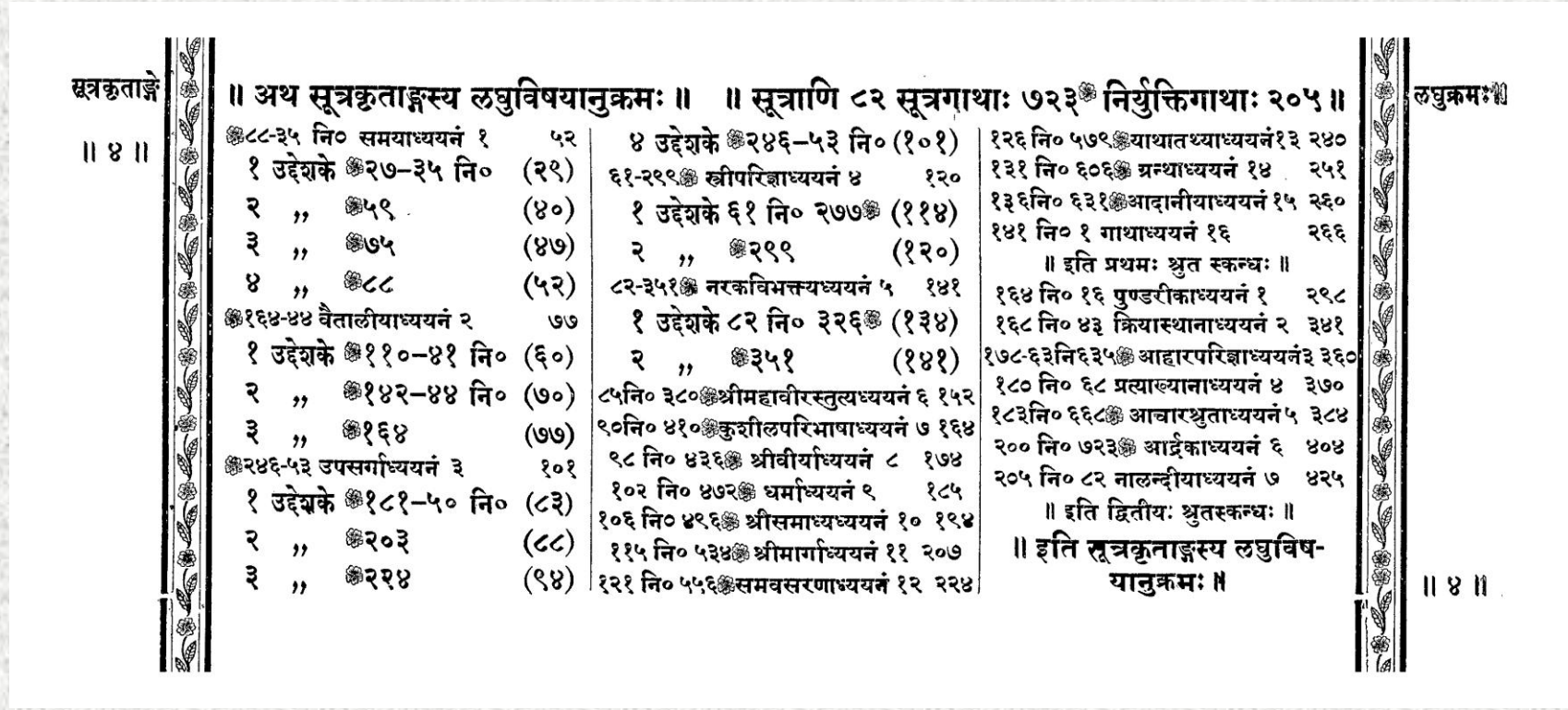
लघुक्रमः ॥

॥ ३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृताङ्गे ॥ ४ ॥

॥ अथ सूत्रकृताङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥ ॥ सूत्राणि ८२ सूत्रगाथाः ७२३ निर्युक्तिगाथाः २०५ ॥

८८-३५ नि० समयाध्ययनं १ ५२
१ उद्देशके २७–३५ नि० (२९)
२ ,, ५९ (४०)
३ ,, ७५ (४७)
४ ,, ८८ (५२)
१६४-४४ वैतालीयाध्ययनं २ ७७
१ उद्देशके ११०–४१ नि० (६०)
२ ,, १४२–४४ नि० (७०)
३ ,, १६४ (७७)
२४६-५३ उपसर्गाध्ययनं ३ १०१
१ उद्देशके १८१–५० नि० (८३)
२ ,, २०३ (८८)
३ ,, २२४ (९४)
४ उद्देशके २४६–५३ नि० (१०१)
६१-२९९ स्त्रीपरिज्ञाध्ययनं ४ १२०
१ उद्देशके ६१ नि० २७७ (११४)
२ ,, २९९ (१२०)
८२-३५१ नरकविभक्त्यध्ययनं ५ १४१
१ उद्देशके ८२ नि० ३२६ (१३४)
२ ,, ३५१ (१४१)
८५नि० ३८० श्रीमहावीरस्तुत्यध्ययनं ६ १५२
९०नि० ४१० कुशीलपरिभाषाध्ययनं ७ १६४
९८ नि० ४३६ श्रीवीर्याध्ययनं ८ १७४
१०२ नि० ४७२ धर्माध्ययनं ९ १८५
१०६ नि० ४९६ श्रीसमाध्यध्ययनं १० १९४
११५ नि० ५३४ श्रीमार्गाध्ययनं ११ २०७
१२१ नि० ५५६ समवसरणाध्ययनं १२ २२४
१२६ नि० ५७९ याथातथ्याध्ययनं १३ २४०
१३१ नि० ६०६ ग्रन्थाध्ययनं १४ २५१
१३६नि० ६३१ आदानीयाध्ययनं १५ २६०
१४१ नि० १ गाथाध्ययनं १६ २६६
॥ इति प्रथमः श्रुत स्कन्धः ॥
१६४ नि० १६ पुण्डरीकाध्ययनं १ २९८
१६८ नि० ४३ क्रियास्थानाध्ययनं २ ३४१
१७८-६३नि६३५ आहारपरिज्ञाध्ययनं३ ३६०
१८० नि० ६८ प्रत्याख्यानाध्ययनं ४ ३७०
१८३नि० ६६८ आचारश्रुताध्ययनं५ ३८४
२०० नि० ७२३ आर्द्रकाध्ययनं ६ ४०४
२०५ नि० ८२ नालन्दीयाध्ययनं ७ ४२५
॥ इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

॥ इति सूत्रकृताङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥

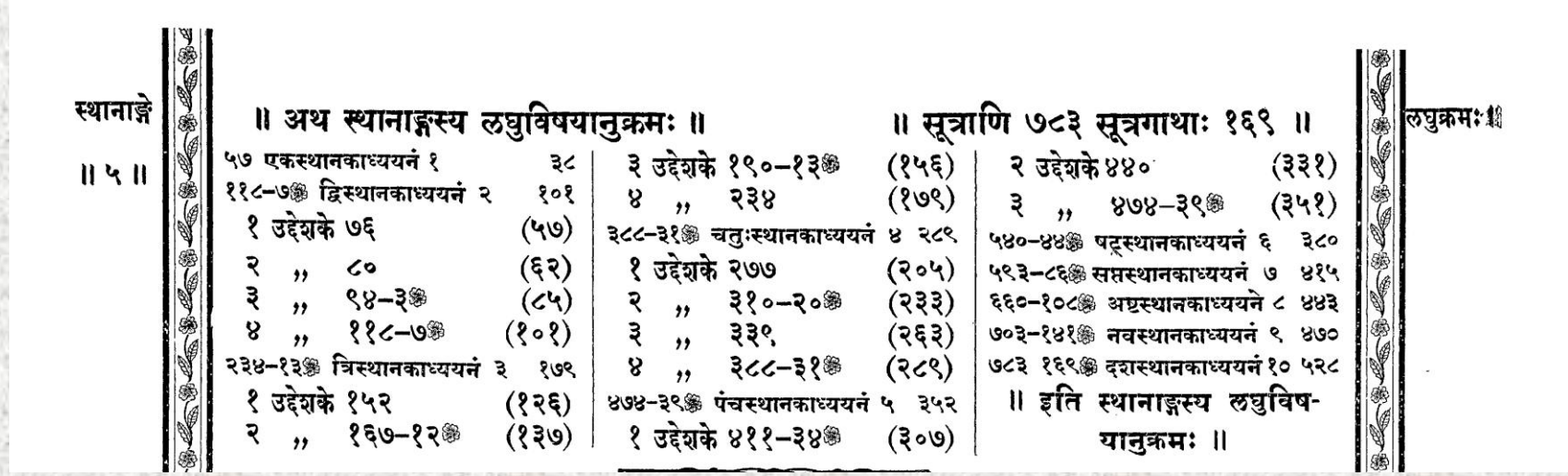
लघुक्रमः

॥ ४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



स्थानाङ्गे ॥ ५ ॥

॥ अथ स्थानाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥

॥ सूत्राणि ७८३ सूत्रगाथाः १६९ ॥

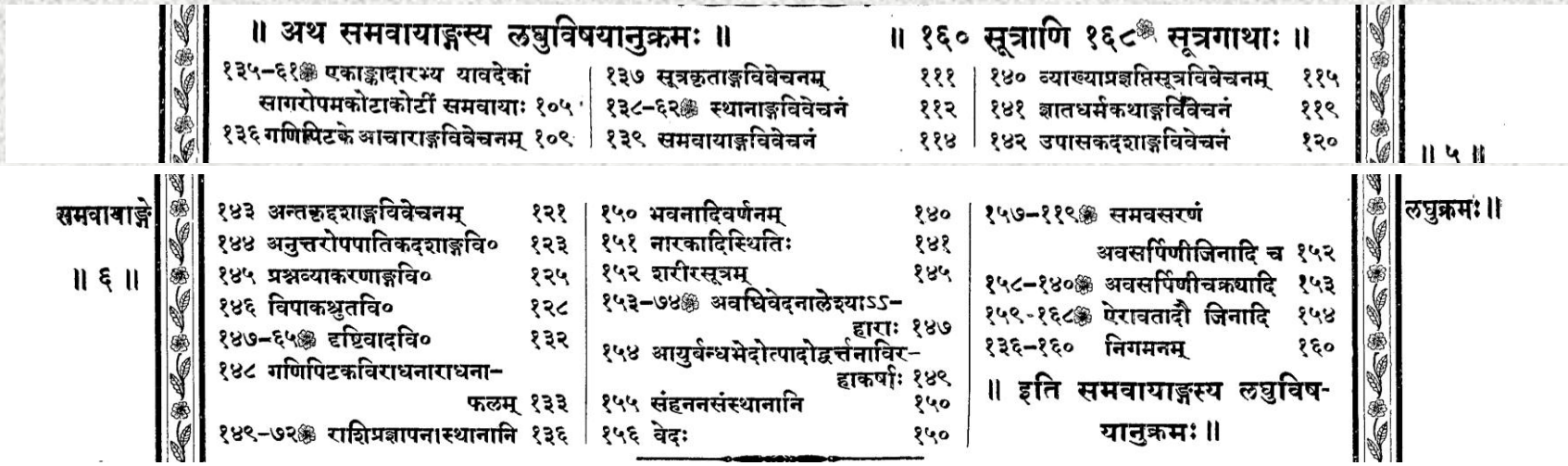
५७ एकस्थानकाध्ययनं १ ३८
११८-७ द्विस्थानकाध्ययनं २ १०१
१ उद्देशके ७६ (५७)
२ ,, ८० (६२)
३ ,, ९४-३ (८५)
४ ,, ११८-७ (१०१)
२३४-१३ त्रिस्थानकाध्ययनं ३ १७९
१ उद्देशके १५२ (१२६)
२ ,, १६७-१२ (१३७)
३ उद्देशके १९०-१३ (१५६)
४ ,, २३४ (१७९)
३८८-३१ चतुःस्थानकाध्ययनं ४ २८९
१ उद्देशके २७७ (२०५)
२ ,, ३१०-२० (२३३)
३ ,, ३३९ (२६३)
४ ,, ३८८-३१ (२८९)
४७४-३९ पंचस्थानकाध्ययनं ५ ३५२
१ उद्देशके ४११-३४ (३०७)
२ उद्देशके ४४० (३३१)
३ ,, ४७४-३९ (३५१)
५४०-४४ षट्स्थानकाध्ययनं ६ ३८०
५९३-८६ सप्तस्थानकाध्ययनं ७ ४१५
६६०-१०८ अष्टस्थानकाध्ययने ८ ४४३
७०३-१४१ नवस्थानकाध्ययनं ९ ४७०
७८३ १६९ दशस्थानकाध्ययनं १० ५२८
॥ इति स्थानाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥

लघुक्रमः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



॥ अथ समवायाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥ ॥ १६० सूत्राणि १६८ सूत्रगाथाः ॥

१३५–६१ एकाङ्कादारभ्य यावदेकां सागरोपमकोटाकोटीं समवायाः १०५
१३६ गणिपिटके आचाराङ्गविवेचनम् १०९
१३७ सूत्रकृताङ्गविवेचनम् १११
१३८–६२ स्थानाङ्गविवेचनं ११२
१३९ समवायाङ्गविवेचनं ११४
१४० व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रविवेचनम् ११५
१४१ ज्ञातधर्मकथाङ्गविवेचनं ११९
१४२ उपासकदशाङ्गविवेचनं १२०
॥ ५ ॥

समवायाङ्गे ॥ ६ ॥

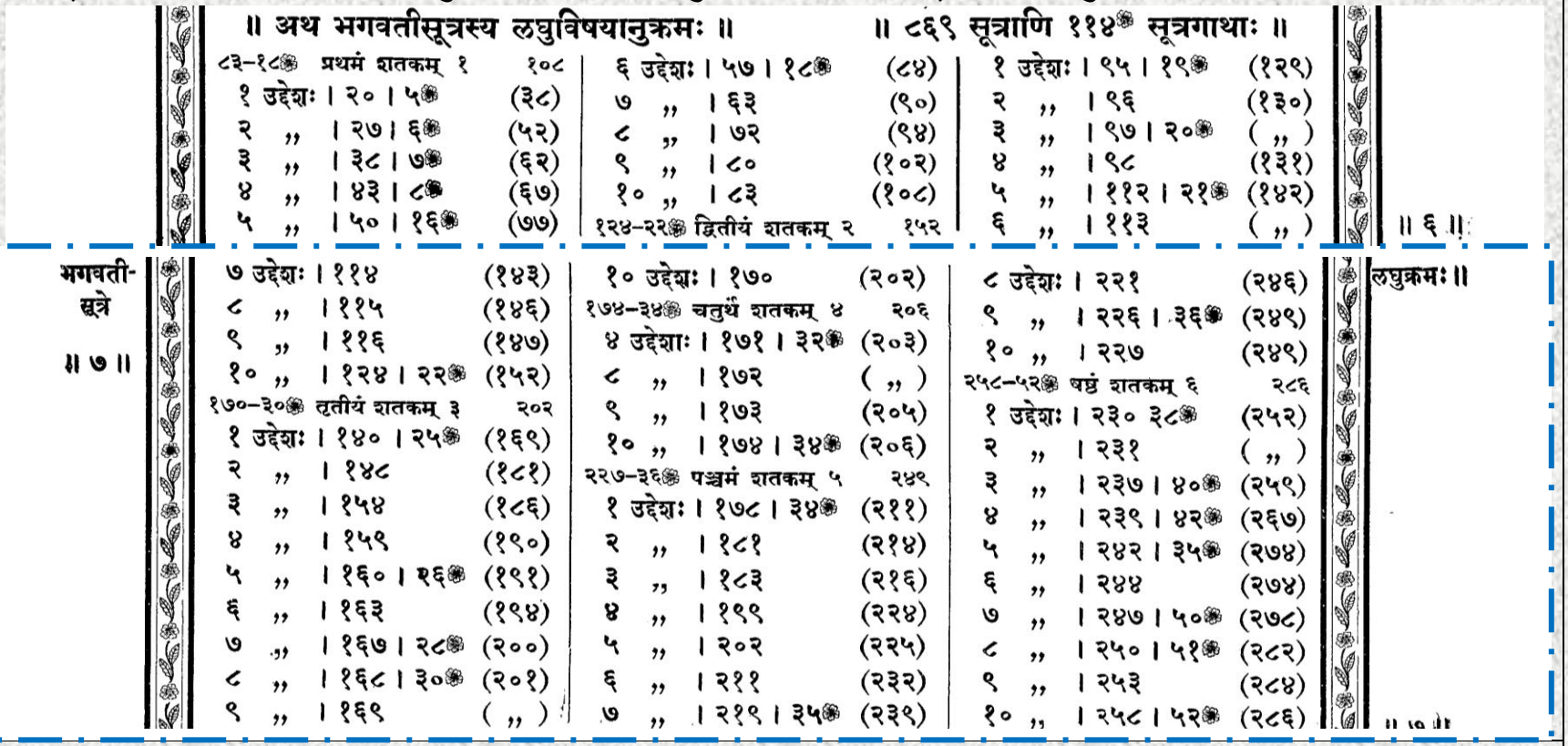
१४३ अन्तकृद्दशाङ्गविवेचनम् १२१
१४४ अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गवि० १२३
१४५ प्रश्नव्याकरणाङ्गवि० १२५
१४६ विपाकश्रुतवि० १२८
१४७–६५ दृष्टिवादवि० १३२
१४८ गणिपिटकविराधनाराधना-फलम् १३३
१४९–७२ राशिप्रज्ञापनास्थानानि १३६
१५० भवनादिवर्णनम् १४०
१५१ नारकादिस्थितिः १४१
१५२ शरीरसूत्रम् १४५
१५३–७४ अवधिवेदनालेश्याऽऽ-हाराः १४७
१५४ आयुर्बन्धभेदोत्पादोद्वर्त्तनाविर-हाकर्षाः १४९
१५५ संहननसंस्थानानि १५०
१५६ वेदः १५०
१५७–११९ समवसरणं अवसर्पिणीजिनादि च १५२
१५८–१४० अवसर्पिणीचक्रधादि १५३
१५९-१६८ ऐरावतादौ जिनादि १५४
१३६–१६० निगमनम् १६०
॥ इति समवायाङ्गस्य लघुविष-यानुक्रमः ॥

लघुक्रमः ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



॥ अथ भगवतीसूत्रस्य लघुविषयानुक्रमः ॥ ॥ ८६९ सूत्राणि ११४ सूत्रगाथाः ॥

८३–१८ प्रथमं शतकम् १ १०८
१ उद्देशः । २० । ५ (३८)
२ ,, । २७ । ६ (५२)
३ ,, । ३८ । ७ (६२)
४ ,, । ४३ । ८ (६७)
५ ,, । ५० । १६ (७७)
६ उद्देशः । ५७ । १८ (८४)
७ ,, । ६३ (९०)
८ ,, । ७२ (९४)
९ ,, । ८० (१०२)
१० ,, । ८३ (१०८)
१२४–२२ द्वितीयं शतकम् २ १५२
१ उद्देशः । ९५ । १९ (१२९)
२ ,, । ९६ (१३०)
३ ,, । ९७ । २० (,,)
४ ,, । ९८ (१३१)
५ ,, । ११२ । २१ (१४२)
६ ,, । ११३ (,,)
॥ ६ ॥

भगवती-सूत्रे ॥ ७ ॥

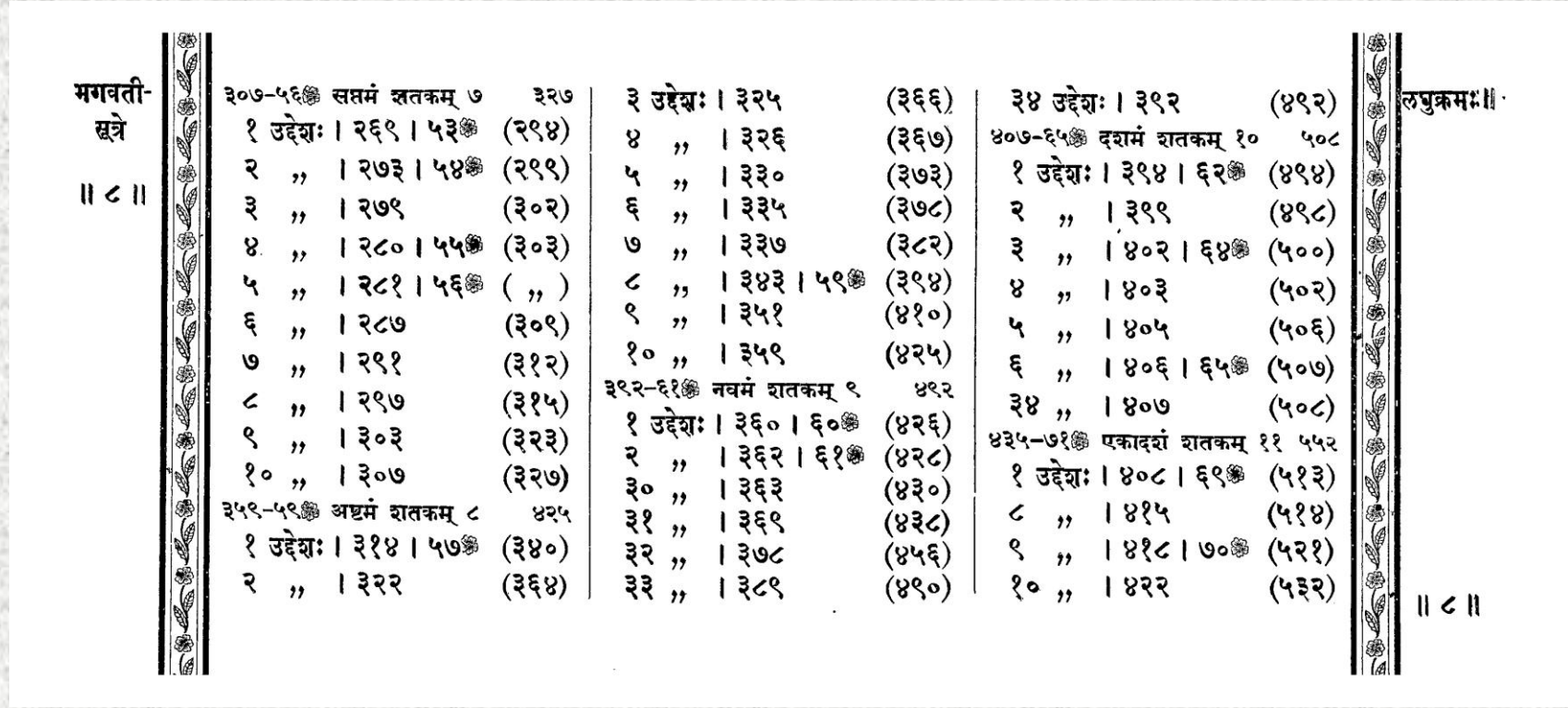
७ उद्देशः । ११४ (१४३)
८ ,, । ११५ (१४६)
९ ,, । ११६ (१४७)
१० ,, । १२४ । २२ (१५२)
१७०–३० तृतीयं शतकम् ३ २०२
१ उद्देशः । १४० । २५ (१६९)
२ ,, । १४८ (१८१)
३ ,, । १५४ (१८६)
४ ,, । १५९ (१९०)
५ ,, । १६० । २६ (१९१)
६ ,, । १६३ (१९४)
७ ,, । १६७ । २८ (२००)
८ ,, । १६८ । ३० (२०१)
९ ,, । १६९ (,,)
१० उद्देशः । १७० (२०२)
१७४–३४ चतुर्थं शतकम् ४ २०६
४ उद्देशाः । १७१ । ३२ (२०३)
८ ,, । १७२ (,,)
९ ,, । १७३ (२०५)
१० ,, । १७४ । ३४ (२०६)
२२७–३६ पञ्चमं शतकम् ५ २४९
१ उद्देशः । १७८ । ३४ (२११)
२ ,, । १८१ (२१४)
३ ,, । १८३ (२१६)
४ ,, । १९९ (२२४)
५ ,, । २०२ (२२५)
६ ,, । २११ (२३२)
७ ,, । २१९ । ३५ (२३९)
८ उद्देशः । २२१ (२४६)
९ ,, । २२६ । ३६ (२४९)
१० ,, । २२७ (२४९)
२५८–५२ षष्ठं शतकम् ६ २८६
१ उद्देशः । २३० । ३८ (२५२)
२ ,, । २३१ (,,)
३ ,, । २३७ । ४० (२५९)
४ ,, । २३९ । ४२ (२६७)
५ ,, । २४२ । ३५ (२७४)
६ ,, । २४४ (२७४)
७ ,, । २४७ । ५० (२७८)
८ ,, । २५० । ५१ (२८२)
९ ,, । २५३ (२८४)
१० ,, । २५८ । ५२ (२८६)
॥ ७ ॥

लघुक्रमः ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



भगवती-सूत्रे ॥ ८ ॥

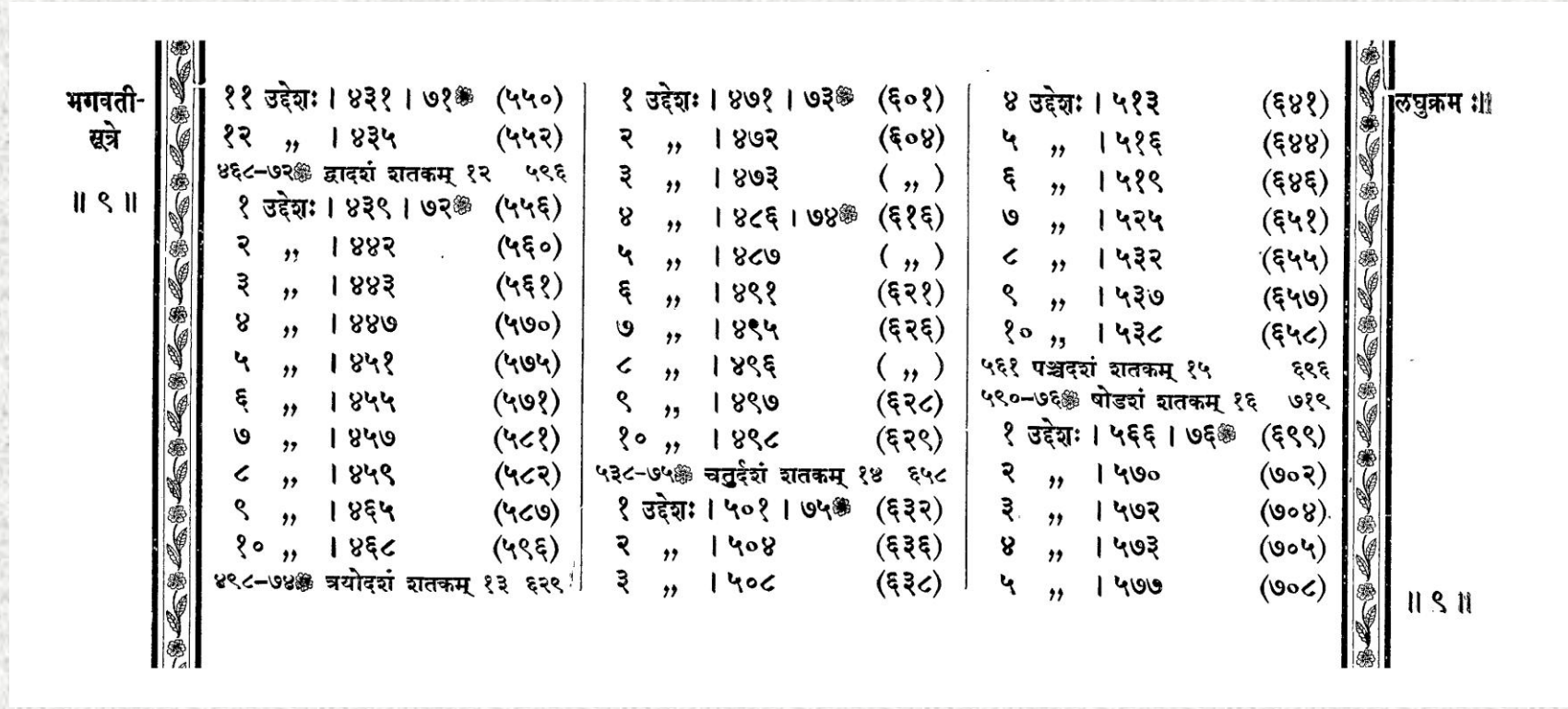
३०७-५६ सप्तमं शतकम् ७ ३२७
१ उद्देशः । २६९ । ५३ (२९४)
२ ,, । २७३ । ५४ (२९९)
३ ,, । २७९ (३०२)
४ ,, । २८० । ५५ (३०३)
५ ,, । २८१ । ५६ (,,)
६ ,, । २८७ (३०९)
७ ,, । २९१ (३१२)
८ ,, । २९७ (३१५)
९ ,, । ३०३ (३२३)
१० ,, । ३०७ (३२७)
३१९-५९ अष्टमं शतकम् ८ ४२५
१ उद्देशः । ३१४ । ५७ (३४०)
२ ,, । ३२२ (३६४)
३ उद्देशः । ३२५ (३६६)
४ ,, । ३२६ (३६७)
५ ,, । ३३० (३७३)
६ ,, । ३३५ (३७८)
७ ,, । ३३७ (३८२)
८ ,, । ३४३ । ५९ (३९४)
९ ,, । ३५१ (४१०)
१० ,, । ३५९ (४२५)
३९२-६१ नवमं शतकम् ९ ४९२
१ उद्देशः । ३६० । ६० (४२६)
२ ,, । ३६२ । ६१ (४२८)
३० ,, । ३६३ (४३०)
३१ ,, । ३६९ (४३८)
३२ ,, । ३७८ (४५६)
३३ ,, । ३८९ (४९०)
३४ उद्देशः । ३९२ (४९२)
४०७-६५ दशमं शतकम् १० ५०८
१ उद्देशः । ३९४ । ६२ (४९४)
२ ,, । ३९९ (४९८)
३ ,, । ४०२ । ६४ (५००)
४ ,, । ४०३ (५०२)
५ ,, । ४०५ (५०६)
६ ,, । ४०६ । ६५ (५०७)
३४ ,, । ४०७ (५०८)
४३५-७१ एकादशं शतकम् ११ ५५२
१ उद्देशः । ४०८ । ६९ (५१३)
८ ,, । ४१५ (५१४)
९ ,, । ४१८ । ७० (५२१)
१० ,, । ४२२ (५३२)

लघुक्रमः ॥ ८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



भगवती-सूत्रे ॥ ९ ॥

११ उद्देशः । ४३१ । ७१ (५५०)
१२ ,, । ४३५ (५५२)
४६८-७२ द्वादशं शतकम् १२ ५९६
१ उद्देशः । ४३९ । ७२ (५५६)
२ ,, । ४४२ (५६०)
३ ,, । ४४३ (५६१)
४ ,, । ४४७ (५७०)
५ ,, । ४५१ (५७५)
६ ,, । ४५५ (५७१)
७ ,, । ४५७ (५८१)
८ ,, । ४५९ (५८२)
९ ,, । ४६५ (५८७)
१० ,, । ४६८ (५९६)
४९८-७४ त्रयोदशं शतकम् १३ ६२९

१ उद्देशः । ४७१ । ७३ (६०१)
२ ,, । ४७२ (६०४)
३ ,, । ४७३ (,,)
४ ,, । ४८६ । ७४ (६१६)
५ ,, । ४८७ (,,)
६ ,, । ४९१ (६२१)
७ ,, । ४९५ (६२६)
८ ,, । ४९६ (,,)
९ ,, । ४९७ (६२८)
१० ,, । ४९८ (६२९)
५३८-७५ चतुर्दशं शतकम् १४ ६५८
१ उद्देशः । ५०१ । ७५ (६३२)
२ ,, । ५०४ (६३६)
३ ,, । ५०८ (६३८)

४ उद्देशः । ५१३ (६४१)
५ ,, । ५१६ (६४४)
६ ,, । ५१९ (६४६)
७ ,, । ५२५ (६५१)
८ ,, । ५३२ (६५५)
९ ,, । ५३७ (६५७)
१० ,, । ५३८ (६५८)
५६१ पञ्चदशं शतकम् १५ ६९६
५९०-७६ षोडशं शतकम् १६ ७१९
१ उद्देशः । ५६६ । ७६ (६९९)
२ ,, । ५७० (७०२)
३ ,, । ५७२ (७०४)
४ ,, । ५७३ (७०५)
५ ,, । ५७७ (७०८)

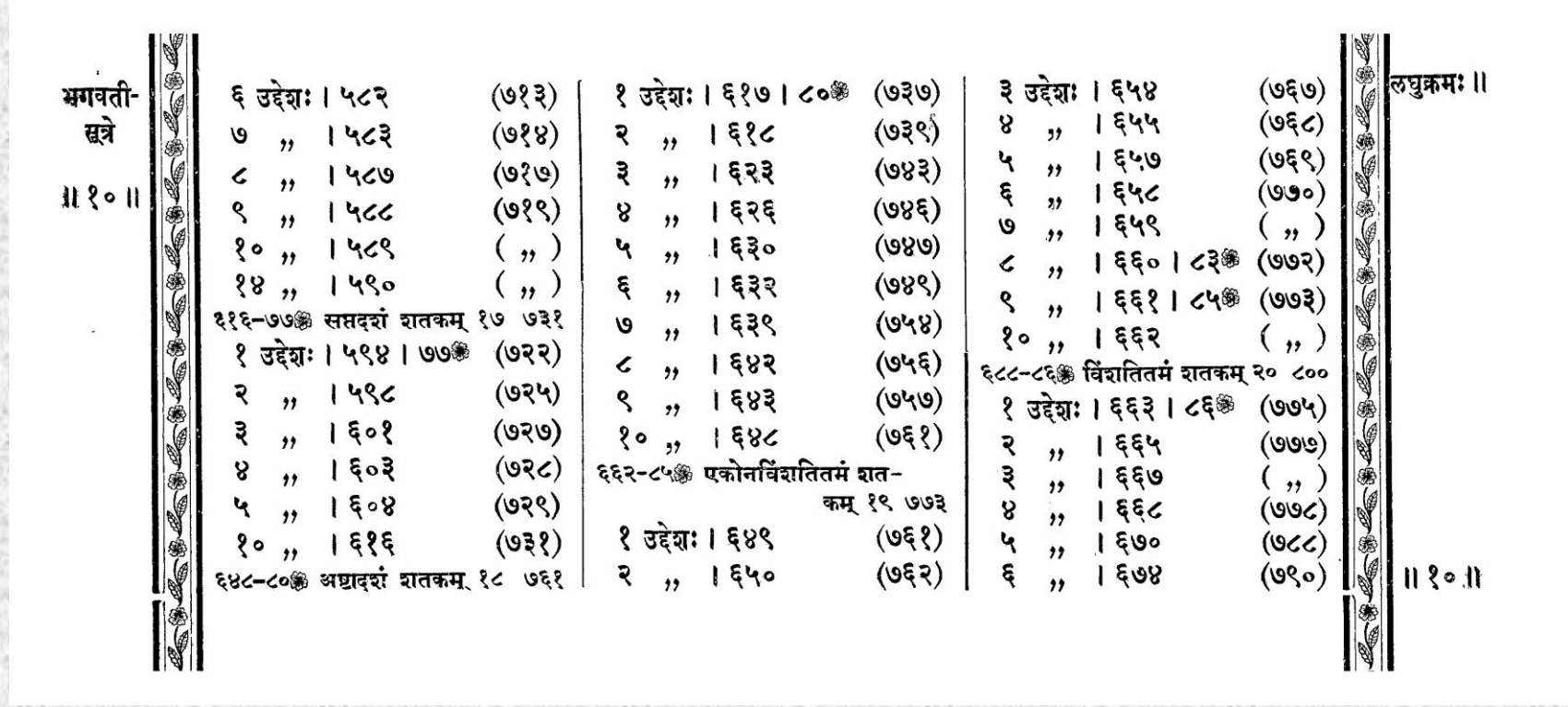
लघुक्रम ॥

॥ ९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



भगवती-सूत्रे ॥ १० ॥

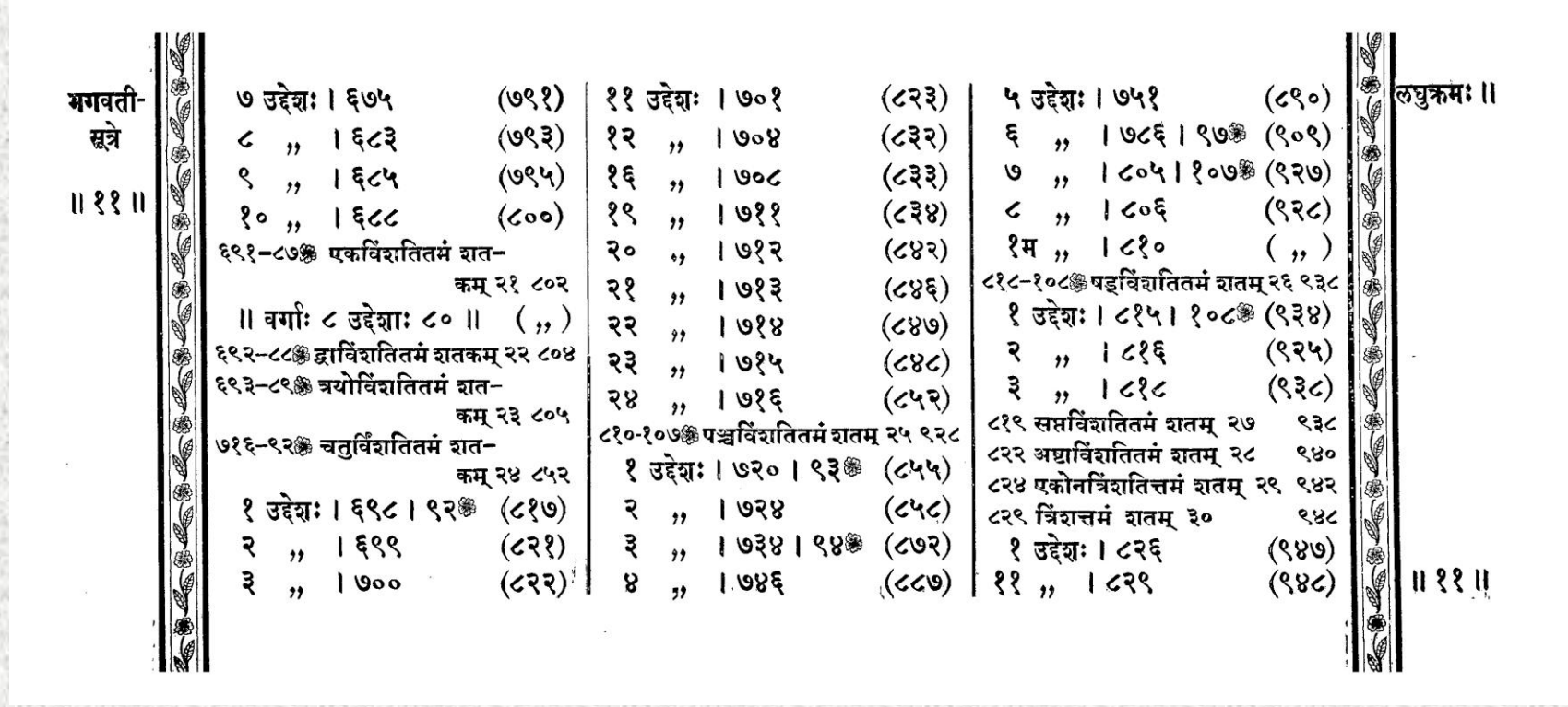
६ उद्देशः । ५८२ (७१३)
७ ,, । ५८३ (७१४)
८ ,, । ५८७ (७१७)
९ ,, । ५८८ (७१९)
१० ,, । ५८९ (,,)
१४ ,, । ५९० (,,)
६१६-७७ सप्तदशं शतकम् १७ ७३१
१ उद्देशः । ५९४ । ७७ (७२२)
२ ,, । ५९८ (७२५)
३ ,, । ६०१ (७२७)
४ ,, । ६०३ (७२८)
५ ,, । ६०४ (७२९)
१० ,, । ६१६ (७३१)
६४८-८० अष्टादशं शतकम् १८ ७६१
१ उद्देशः । ६१७ । ८० (७३७)
२ ,, । ६१८ (७३९)
३ ,, । ६२३ (७४३)
४ ,, । ६२६ (७४६)
५ ,, । ६३० (७४७)
६ ,, । ६३२ (७४९)
७ ,, । ६३९ (७५४)
८ ,, । ६४२ (७५६)
९ ,, । ६४३ (७५७)
१० ,, । ६४८ (७६१)
६६२-८५ एकोनविंशतितमं शत-कम् १९ ७७३
१ उद्देशः । ६४९ (७६१)
२ ,, । ६५० (७६२)
३ उद्देशः । ६५४ (७६७)
४ ,, । ६५५ (७६८)
५ ,, । ६५७ (७६९)
६ ,, । ६५८ (७७०)
७ ,, । ६५९ (,,)
८ ,, । ६६० । ८३ (७७२)
९ ,, । ६६१ । ८५ (७७३)
१० ,, । ६६२ (,,)
६८८-८६ विंशतितमं शतकम् २० ८००
१ उद्देशः । ६६३ । ८६ (७७५)
२ ,, । ६६५ (७७७)
३ ,, । ६६७ (,,)
४ ,, । ६६८ (७७८)
५ ,, । ६७० (७८८)
६ ,, । ६७४ (७९०)

लघुक्रमः ॥ ॥ १० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

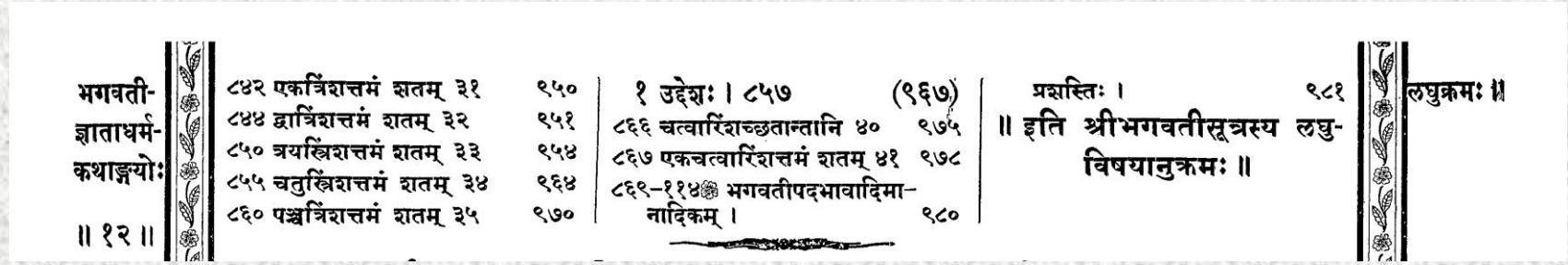
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



भगवती-सूत्रे ॥ ११ ॥

७ उद्देशः । ६७५ (७९१)
८ ,, । ६८३ (७९३)
९ ,, । ६८५ (७९५)
१० ,, । ६८८ (८००)
६९१-८७ एकविंशतितमं शत-कम् २१ ८०२
॥ वर्गाः ८ उद्देशाः ८० ॥ (,,)
६९२-८८ द्वाविंशतितमं शतकम् २२ ८०४
६९३-८९ त्रयोविंशतितमं शत-कम् २३ ८०५
७१६-९२ चतुर्विंशतितमं शत-कम् २४ ८५२
१ उद्देशः । ६९८ । ९२ (८१७)
२ ,, । ६९९ (८२१)
३ ,, । ७०० (८२२)
११ उद्देशः । ७०१ (८२३)
१२ ,, । ७०४ (८३२)
१६ ,, । ७०८ (८३३)
१९ ,, । ७११ (८३४)
२० ,, । ७१२ (८४२)
२१ ,, । ७१३ (८४६)
२२ ,, । ७१४ (८४७)
२३ ,, । ७१५ (८४८)
२४ ,, । ७१६ (८५२)
८१०-१०७ पञ्चविंशतितमं शतम् २५ ९२८
१ उद्देशः । ७२० । ९३ (८५५)
२ ,, । ७२४ (८५८)
३ ,, । ७३४ । ९४ (८७२)
४ ,, । ७४६ (८८७)
५ उद्देशः । ७५१ (८९०)
६ ,, । ७८६ । ९७ (९०९)
७ ,, । ८०५ । १०७ (९२७)
८ ,, । ८०६ (९२८)
१म ,, । ८१० (,,)
८१८-१०८ षड्विंशतितमं शतम् २६ ९३८
१ उद्देशः । ८१५ । १०८ (९३४)
२ ,, । ८१६ (९२५)
३ ,, । ८१८ (९३८)
८१९ सप्तविंशतितमं शतम् २७ ९३८
८२२ अष्टाविंशतितमं शतम् २८ ९४०
८२४ एकोनत्रिंशतित्तमं शतम् २९ ९४२
८२९ त्रिंशत्तमं शतम् ३० ९४८
१ उद्देशः । ८२६ (९४७)
११ ,, । ८२९ (९४८)
लघुक्रमः ॥ ॥ ११ ॥

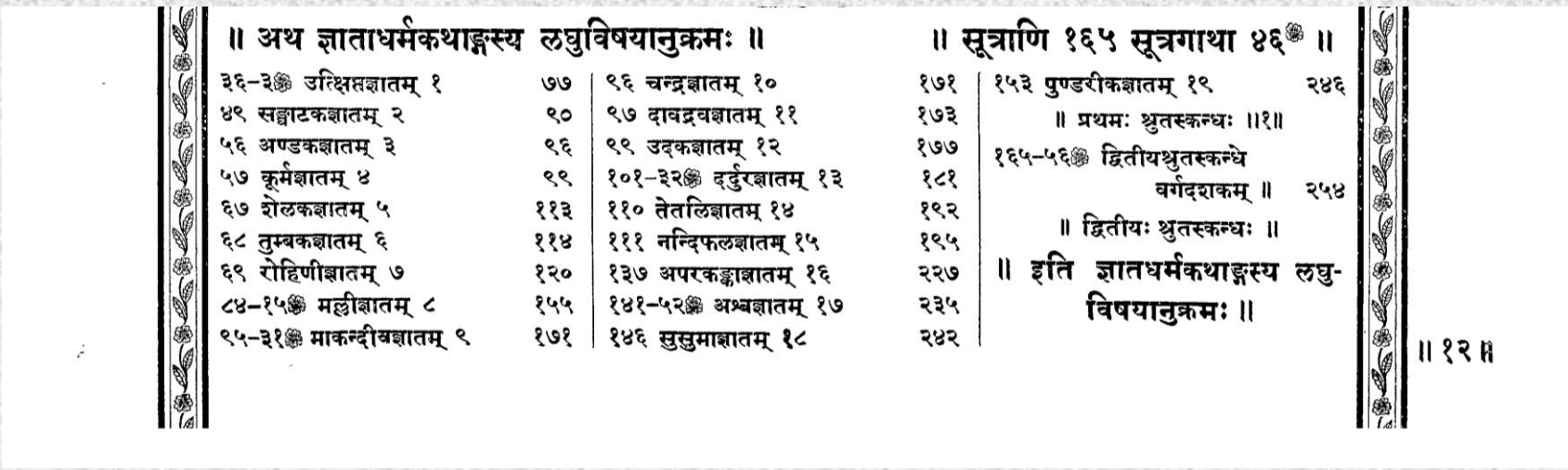
आगम संबंधी साहित्य	[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [अंगसूत्र-५. "भगवती"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



भगवती-ज्ञाताधर्म-कथाङ्गयोः ॥ १२ ॥

८४२ एकत्रिंशत्तमं शतम् ३१ ९५०
८४४ द्वात्रिंशत्तमं शतम् ३२ ९५१
८५० त्रयस्त्रिंशत्तमं शतम् ३३ ९५४
८५५ चतुस्त्रिंशत्तमं शतम् ३४ ९६४
८६० पञ्चत्रिंशत्तमं शतम् ३५ ९७०
१ उद्देशः । ८५७ (९६७)
८६६ चत्वारिंशच्छतान्तानि ४० ९७५
८६७ एकचत्वारिंशत्तमं शतम् ४१ ९७८
८६९–११४ भगवतीपदभावादिमा-नादिकम् । ९८०
प्रशस्तिः । ९८१
॥ इति श्रीभगवतीसूत्रस्य लघु-विषयानुक्रमः ॥

लघुक्रमः ॥



॥ अथ ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥ ॥ सूत्राणि १६५ सूत्रगाथा ४६ ॥

३६-३ उत्क्षिप्तज्ञातम् १ ७७
४९ सङ्घाटकज्ञातम् २ ९०
५६ अण्डकज्ञातम् ३ ९६
५७ कूर्मज्ञातम् ४ ९९
६७ शैलकज्ञातम् ५ ११३
६८ तुम्बकज्ञातम् ६ ११४
६९ रोहिणीज्ञातम् ७ १२०
८४-१५ मल्लीज्ञातम् ८ १५५
९५-३१ माकन्दीज्ञातम् ९ १७१
९६ चन्द्रज्ञातम् १० १७१
९७ दावद्रवज्ञातम् ११ १७३
९९ उदकज्ञातम् १२ १७७
१०१-३२ दर्दुरज्ञातम् १३ १८१
११० तेतलिज्ञातम् १४ १९२
१११ नन्दिफलज्ञातम् १५ १९५
१३७ अपरकङ्काज्ञातम् १६ २२७
१४१-५२ अश्वज्ञातम् १७ २३५
१४६ सुसुमाज्ञातम् १८ २४२
१५३ पुण्डरीकज्ञातम् १९ २४६
॥ प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥१॥
१६५-५६ द्वितीयश्रुतस्कन्धे वर्गदशकम् ॥ २५४
॥ द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

॥ इति ज्ञातधर्मकथाङ्गस्य लघु-विषयानुक्रमः ॥

॥ १२ ॥

[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-७,८,९. "उपासकदशा, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा,"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

उपाशक-दशाङ्ग-अन्तकृद्-शाङ्ग-अनु-त्तरोपपा-

॥ अथ उपासकदशाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ५८ सूत्रगाथाः १३ ॥

सू. १७-१॥ आनन्दाध्ययनम् १ प. १९
२६ कामदेवाध्ययनम् २ ३१
२९ चुलनीपित्रध्ययनम् ३ ३४
३१ सुरादेवाध्ययनम् ४ ३५
३४ चुल्लशतकाध्ययनम् ५ ३६
३८ कुण्डकोलिकाध्ययनम् ६ ३९
४५ सद्दालपुत्राध्ययनम् ७ ४८
५४ महाशतकाध्ययनम् ८ ५२
५८-१३ नन्दिनीपितृशालिहीपि-अधिकारौ । ५४

॥ इति उपासकदशाङ्गस्य लघु-विषयानुक्रमः ॥

लघुक्रमः ॥

तिक्खुत्तो

॥ १३ ॥

॥ अथ अन्तकृद्दशाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि २७ सूत्रगाथाः ११ ॥

७-३ वर्गत्रयम् ३ १४
८-४ चतुर्थो वर्गः ४ १४
११-५ पञ्चमो वर्गः ५ १८
१५-७ षष्ठो वर्गः ६ २५
२७-११ सप्तमो वर्गः ७ २७

॥ इति अन्तकृद्दशाङ्गस्य लघु-विषयानुक्रमः ॥

॥ अथ अनुत्तरोपपातिकस्य लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ६ ॥

६ वर्गत्रयम् । ८

॥ इति अनुत्तरोपपातिकस्य लघुविषयानुक्रमः ॥

॥ १३ ॥

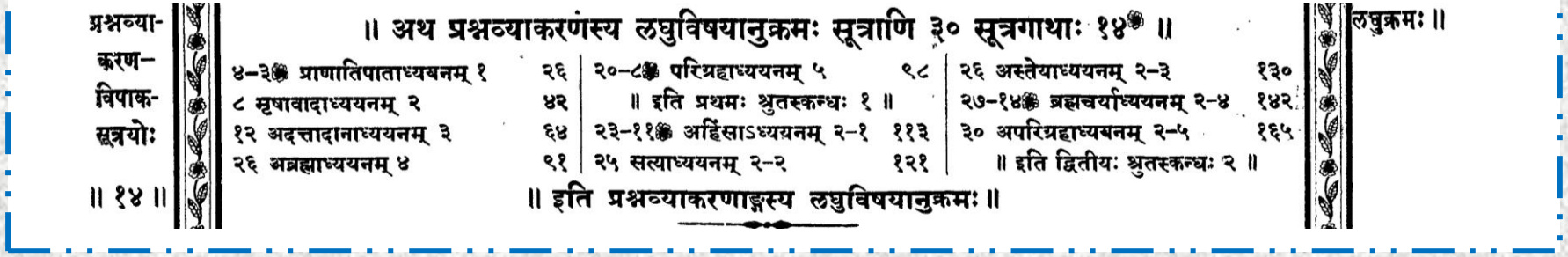
[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-१०,११. "उपासकदशा, अन्त्कृद्दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा,"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



प्रश्नव्याकरण-विपाकसूत्रयोः ॥ १४ ॥

॥ अथ प्रश्नव्याकरणंस्य लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ३० सूत्रगाथाः १४ ॥

४-३ प्राणातिपाताध्यबनम् १	२६	२०-८ परिग्रहाध्ययनम् ५	९८	२६ अस्तेयाध्ययनम् २-३	१३०
८ मृषावादाध्ययनम् २	४२	॥ इति प्रथमः श्रुतस्कन्धः १ ॥		२७-१४ ब्रह्मचर्याध्ययनम् २-४	१४२
१२ अदत्तादानाध्ययनम् ३	६४	२३-११ अहिंसाऽध्ययनम् २-१	११३	३० अपरिग्रहाध्यबनम् २-५	१६५
२६ अब्रह्माध्ययनम् ४	९१	२५ सत्याध्ययनम् २-२	१२१	॥ इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः २ ॥	

॥ इति प्रश्नव्याकरणाङ्गस्य लघुविषयानुक्रमः ॥

लघुक्रमः ॥

॥ अथ विपाकसूत्रस्य लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ३० सूत्रगाथाः ३ ॥

६-२ मृगापुत्रीयाध्ययनम् १	४४	२७ उम्बरदत्ताध्ययनम् ७	७८	३१-३ सुबाहूध्ययनम् २-१	९४
१३ उज्झिताध्ययनम् २	५५	२८ सौर्यदत्ताध्ययनम् ८	८१	३३ प्रतिलम्भनाध्ययनम् २-२ शेषाणि च	९६
१९ अभग्नसेनाध्ययनम् ३	६४	२९ देवदत्ताध्ययनम् ९	८७	॥ इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः २ ॥	
२२ शकटाध्ययनम् ४	६७	३० अञ्जूध्ययनम् १०	८९	॥ इति विपाकसूत्रस्य लघुविष-यानुक्रमः ॥	
२४ बृहस्पतिदत्ताध्ययनम् ५	६९	॥ इति प्रथमः श्रुतस्कन्धः १ ॥			
२६ सुदर्शनाध्ययनम् ६	७३				

॥ समाप्तोऽयमङ्गेषु लघुक्रमः ॥

॥ १४ ॥

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म॰ सा॰]

अंगसूत्र बृहद्विषयानुक्रम:

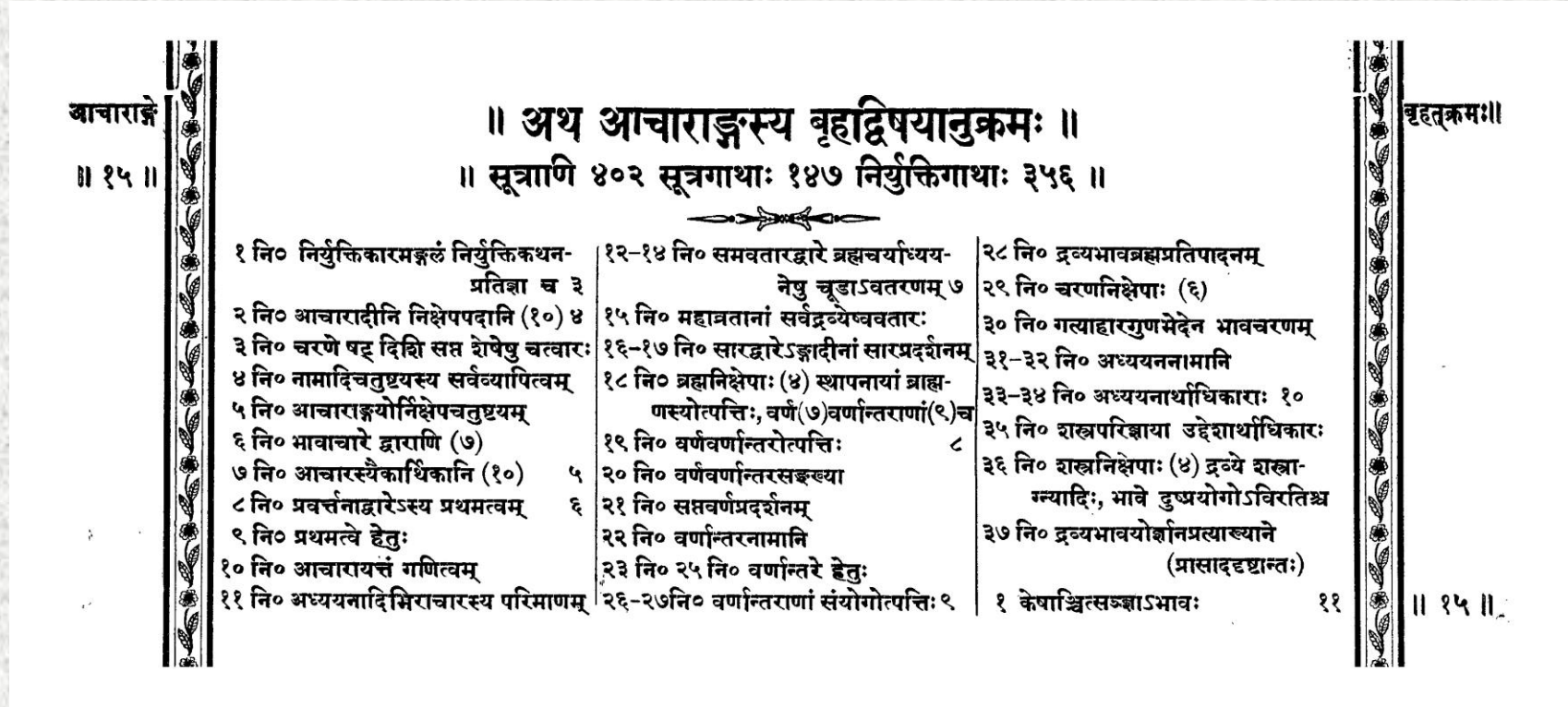
← पुन: संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ १५ ॥

॥ अथ आचाराङ्गस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥

॥ सूत्राणि ४०२ सूत्रगाथाः १४७ निर्युक्तिगाथाः ३५६ ॥

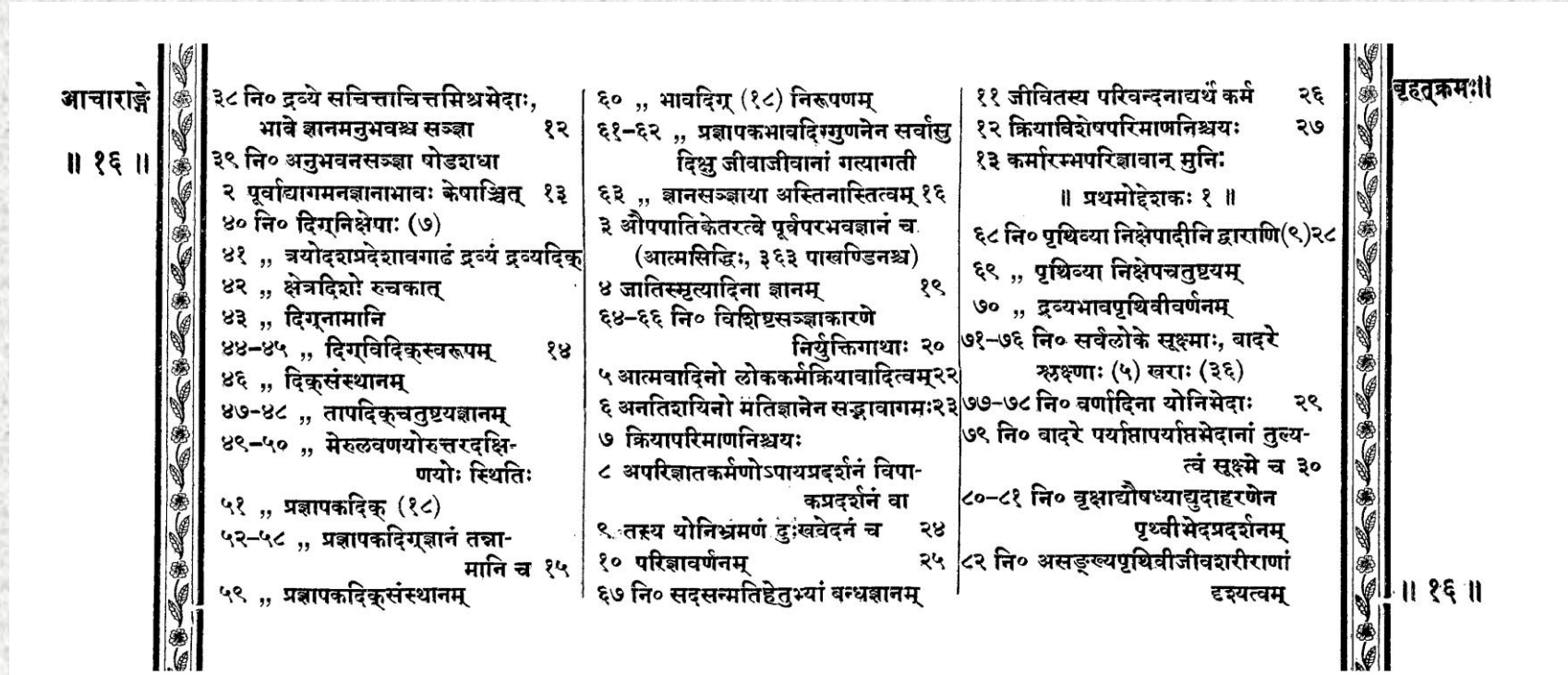
१ नि० निर्युक्तिकारमङ्गलं निर्युक्तिकथन-प्रतिज्ञा च ३
२ नि० आचारादीनि निक्षेपपदानि (१०) ४
३ नि० चरणे षट् दिशि सप्त शेषेषु चत्वारः
४ नि० नामादिचतुष्टयस्य सर्वव्यापित्वम्
५ नि० आचाराङ्गयोर्निक्षेपचतुष्टयम्
६ नि० भावाचारे द्वाराणि (७)
७ नि० आचारस्यैकार्थिकानि (१०) ५
८ नि० प्रवर्त्तनाद्वारेऽस्य प्रथमत्वम् ६
९ नि० प्रथमत्वे हेतुः
१० नि० आचारायत्तं गणित्वम्
११ नि० अध्ययनादिभिराचारस्य परिमाणम्
१२-१४ नि० समवतारद्वारे ब्रह्मचर्याध्ययनेषु चूडाऽवतरणम् ७
१५ नि० महाव्रतानां सर्वद्रव्येष्ववतारः
१६-१७ नि० सारद्वारेऽङ्गादीनां सारप्रदर्शनम्
१८ नि० ब्रह्मनिक्षेपाः (४) स्थापनायां ब्राह्मणस्योत्पत्तिः, वर्ण(७)वर्णान्तराणां(९)च
१९ नि० वर्णवर्णान्तरोत्पत्तिः ८
२० नि० वर्णवर्णान्तरसङ्ख्या
२१ नि० सप्तवर्णप्रदर्शनम्
२२ नि० वर्णान्तरनामानि
२३ नि० २५ नि० वर्णान्तरे हेतुः
२६-२७नि० वर्णान्तराणां संयोगोत्पत्तिः ९
२८ नि० द्रव्यभावब्रह्मप्रतिपादनम्
२९ नि० चरणनिक्षेपाः (६)
३० नि० गत्याहारगुणभेदेन भावचरणम्
३१-३२ नि० अध्ययननामानि
३३-३४ नि० अध्ययनार्थाधिकाराः १०
३५ नि० शस्त्रपरिज्ञाया उद्देशार्थाधिकारः
३६ नि० शस्त्रनिक्षेपाः (४) द्रव्ये शस्त्राग्न्यादिः, भावे दुष्प्रयोगोऽविरतिश्च
३७ नि० द्रव्यभावयोर्ज्ञानप्रत्याख्याने (प्रासाददृष्टान्तः)
१ केषाञ्चित्सञ्ज्ञाऽभावः ११

बृहत्क्रमः॥ ॥ १५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ १६ ॥

३८ नि० द्रव्ये सचित्ताचित्तमिश्रभेदाः, भावे ज्ञानमनुभवश्च सञ्ज्ञा १२
३९ नि० अनुभवनसञ्ज्ञा षोडशधा
२ पूर्वाद्यागमनज्ञानाभावः केषाञ्चित् १३
४० नि० दिग्निक्षेपाः (७)
४१ ,, त्रयोदशप्रदेशावगाढं द्रव्यं द्रव्यदिक्
४२ ,, क्षेत्रदिशोः रुचकात्
४३ ,, दिग्नामानि
४४–४५ ,, दिग्विदिक्स्वरूपम् १४
४६ ,, दिक्संस्थानम्
४७-४८ ,, तापदिक्चतुष्टयज्ञानम्
४९–५० ,, मेरुलवणयोरुत्तरदक्षिणयोः स्थितिः
५१ ,, प्रज्ञापकदिक् (१८)
५२–५८ ,, प्रज्ञापकदिग्ज्ञानं तन्नामानि च १५
५९ ,, प्रज्ञापकदिक्संस्थानम्
६० ,, भावदिग् (१८) निरूपणम्
६१–६२ ,, प्रज्ञापकभावदिग्गुणनेन सर्वासु दिक्षु जीवाजीवानां गत्यागती
६३ ,, ज्ञानसञ्ज्ञाया अस्तिनास्तित्वम् १६
३ औपपातिकेतरत्वे पूर्वपरभवज्ञानं च (आत्मसिद्धिः, ३६३ पाखण्डिनश्च)
४ जातिस्मृत्यादिना ज्ञानम् १९
६४–६६ नि० विशिष्टसञ्ज्ञाकारणे निर्युक्तिगाथाः २०
५ आत्मवादिनो लोककर्मक्रियावादित्वम् २२
६ अनतिशयिनो मतिज्ञानेन सद्भावागमः २३
७ क्रियापरिमाणनिश्चयः
८ अपरिज्ञातकर्मणोऽपायप्रदर्शनं विपाकप्रदर्शनं वा
९ तस्य योनिभ्रमणं दुःखवेदनं च २४
१० परिज्ञावर्णनम् २५
६७ नि० सदसन्मतिहेतुभ्यां बन्धज्ञानम्
११ जीवितस्य परिवन्दनाद्यर्थं कर्म २६
१२ क्रियाविशेषपरिमाणनिश्चयः २७
१३ कर्मारम्भपरिज्ञावान् मुनिः
॥ प्रथमोद्देशकः १ ॥
६८ नि० पृथिव्या निक्षेपादीनि द्वाराणि (९) २८
६९ ,, पृथिव्या निक्षेपचतुष्टयम्
७० ,, द्रव्यभावपृथिवीवर्णनम्
७१–७६ नि० सर्वलोके सूक्ष्माः, बादरे श्लक्ष्णाः (५) खराः (३६)
७७–७८ नि० वर्णादिना योनिभेदाः २९
७९ नि० बादरे पर्याप्तापर्याप्तभेदानां तुल्यत्वं सूक्ष्मे च ३०
८०–८१ नि० वृक्षाद्यौषध्याद्युदाहरणेन पृथ्वीभेदप्रदर्शनम्
८२ नि० असङ्ख्यपृथिवीजीवशरीराणां दृश्यत्वम्

बृहत्क्रमः॥ ॥ १६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

आचाराङ्गे ॥ १७ ॥

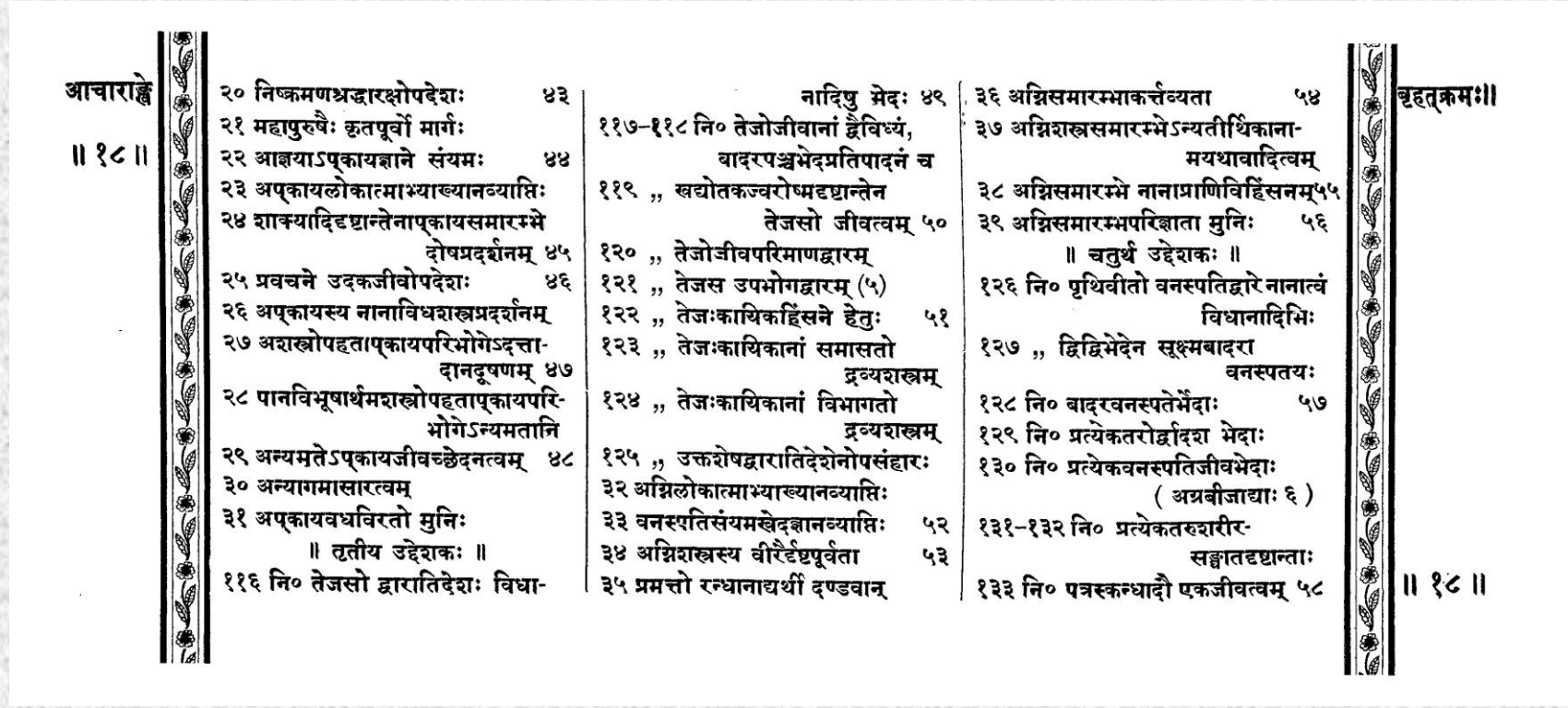
८३ नि० चक्षुःस्पर्शागतपृथिवीशरीरकथनोपसंहारः, शेषाणामाज्ञाग्राहिता
८४ नि० लक्षणद्वारे उदयलेश्याभेदाः (११)
८५ नि० शरीरास्थिदृष्टान्तेन कठिनपृथिवीशरीरे चेतनत्वम् ३१
८६–८८ नि० पृथिवीकायपरिमाणम्
८९ नि० क्षेत्रकालयोः सूक्ष्मबादरत्वम् ३२
९० नि० कालतः पृथ्वीकायपरिमाणम्
९१ नि० पृथिवीकायानां परम्परमवगाहः
९२–९३ नि० चङ्क्रमणादिभि (१६)-र्मनुष्याणां पृथ्व्या उपभोगः
९४ नि० सुखार्थं परदुःखोदीरकत्वम्
९५ नि० शस्त्रद्वारे हलकुलिकादिसमास-द्रव्यशस्त्रप्रतिपादनम् ३३
९६ नि० विभागद्रव्यभावशस्त्रप्रतिपादनम्
९७ नि० पृथ्वीकाये वेदनाः
९८ नि० पृथ्वीकायस्याङ्गोपाङ्गरहितत्वेऽपि वेदनाऽस्तित्वम्
९९ नि० वधद्वारे कुतीर्थिकस्वरूपम्
१०० नि० दृष्टान्तगर्भं कुतीर्थिकस्वरूपनिगमनम्
१०१ नि० कृतकारितानुमतिभिर्वधः
१०२ नि० पृथिवीकायवधे निदानिदाभ्यां तदाश्रितान्यदृश्यादृश्यजीववधप्रदर्शनम्
१०३ नि० पृथ्व्या वधे तन्निश्रितानां सूक्ष्मादीनां वधः
१०४–१०५ नि० पृथ्वीवधविरता गुप्त्यादिमन्तश्चानगाराः
१४ पृथ्वीहिंसका आर्त्तपरिद्यूनादिमन्तः
१५ असङ्ख्येयजीवसङ्घातरूपा पृथिवीतिप्रदर्शनम्
१६ कृतकारितानुमतिभिः पृथिवीसमारम्भे प्रवृत्तिप्रदर्शनम्
१६ अन्धादिवत्पृथिवीसमारम्भे प्रवृत्तमतेरहितादि भोग्यफलप्राप्तिः ३७
१८ पृथिवीदण्डविरतो मुनिः ३९
॥ द्वितीय उद्देशकः ॥
१०६ नि० अप्कायद्वाराणि भेदपरिमाणोपभोगशस्त्रलक्षणेषु विशेषः
१०७–१०८ नि० अप्कायस्य भेद-नानात्वं, बादरे पञ्च शुद्धोदकाद्याः ४०
१०९ नि० अप्कायपरिमाणद्वारम्
११० नि० अप्कायलक्षणद्वारम्
१११ नि० अप्कायोपभोग(७)द्वारम् ४१
९१२ ,, अप्कायवधप्रवर्त्तने हेतुः
११३ ,, अप्काये शस्त्रद्वारम् (उत्सिञ्चनादि ६)
११४ नि० विभागतो द्रव्यभावशस्त्रम् ४२
११५ ,, पृथिवीवदप्कायस्य शेषद्वाराणि
१९ अनगारस्वरूपम्

बृहत्क्रमः॥ ॥ १७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



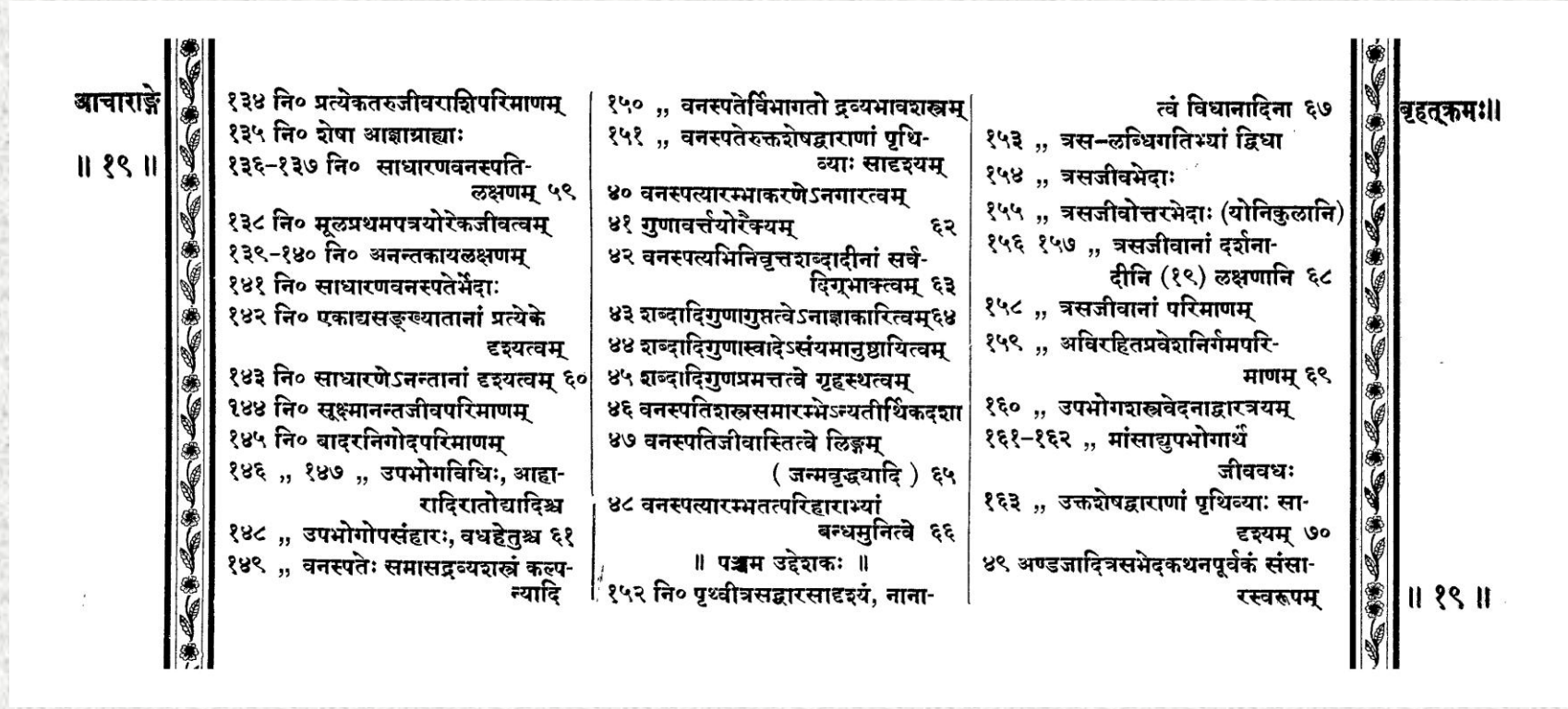
आचाराङ्गे ॥ १८ ॥

२० निष्क्रमणश्रद्धारक्षोपदेशः ४३
२१ महापुरुषैः कृतपूर्वो मार्गः
२२ आज्ञयाऽप्कायज्ञाने संयमः ४४
२३ अप्कायलोकात्माभ्याख्यानव्याप्तिः
२४ शाक्यादिदृष्टान्तेनाप्कायसमारम्भे दोषप्रदर्शनम् ४५
२५ प्रवचने उदकजीवोपदेशः ४६
२६ अप्कायस्य नानाविधशस्त्रप्रदर्शनम्
२७ अशस्त्रोपहताप्कायपरिभोगेऽदत्तादानदूषणम् ४७
२८ पानविभूषार्थमशस्त्रोपहताप्कायपरिभोगेऽन्यमतानि
२९ अन्यमतेऽप्कायजीवच्छेदनत्वम् ४८
३० अन्यागमासारत्वम्
३१ अप्कायवधविरतो मुनिः
॥ तृतीय उद्देशकः ॥
११६ नि० तेजसो द्वारातिदेशः विधानादिषु भेदः ४९
११७-११८ नि० तेजोजीवानां द्वैविध्यं, बादरपञ्चभेदप्रतिपादनं च
११९ ,, खद्योतकज्वरोष्मदृष्टान्तेन तेजसो जीवत्वम् ५०
१२० ,, तेजोजीवपरिमाणद्वारम्
१२१ ,, तेजस उपभोगद्वारम् (५)
१२२ ,, तेजःकायिकहिंसने हेतुः ५१
१२३ ,, तेजःकायिकानां समासतो द्रव्यशस्त्रम्
१२४ ,, तेजःकायिकानां विभागतो द्रव्यशस्त्रम्
१२५ ,, उक्तशेषद्वारातिदेशेनोपसंहारः
३२ अग्निलोकात्माभ्याख्यानव्याप्तिः
३३ वनस्पतिसंयमखेदज्ञानव्याप्तिः ५२
३४ अग्निशस्त्रस्य वीरैर्दृष्टपूर्वता ५३
३५ प्रमत्तो रन्धानाद्यर्थी दण्डवान् ३६ अग्निसमारम्भाकर्त्तव्यता ५४
३७ अग्निशस्त्रसमारम्भेऽन्यतीर्थिकानामयथावादित्वम्
३८ अग्निसमारम्भे नानाप्राणिविहिंसनम् ५५
३९ अग्निसमारम्भपरिज्ञाता मुनिः ५६
॥ चतुर्थं उद्देशकः ॥
१२६ नि० पृथिवीतो वनस्पतिद्वारे नानात्वं विधानादिभिः
१२७ ,, द्विद्विभेदेन सूक्ष्मबादरा वनस्पतयः
१२८ नि० बादरवनस्पतेर्भेदाः ५७
१२९ नि० प्रत्येकतरोर्द्वादश भेदाः
१३० नि० प्रत्येकवनस्पतिजीवभेदाः (अग्रबीजाद्याः ६)
१३१-१३२ नि० प्रत्येकतरुशरीरसङ्घातदृष्टान्ताः
१३३ नि० पत्रस्कन्धादौ एकजीवत्वम् ५८
बृहत्क्रमः॥ ॥ १८ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



आचाराङ्गे ॥ १९ ॥

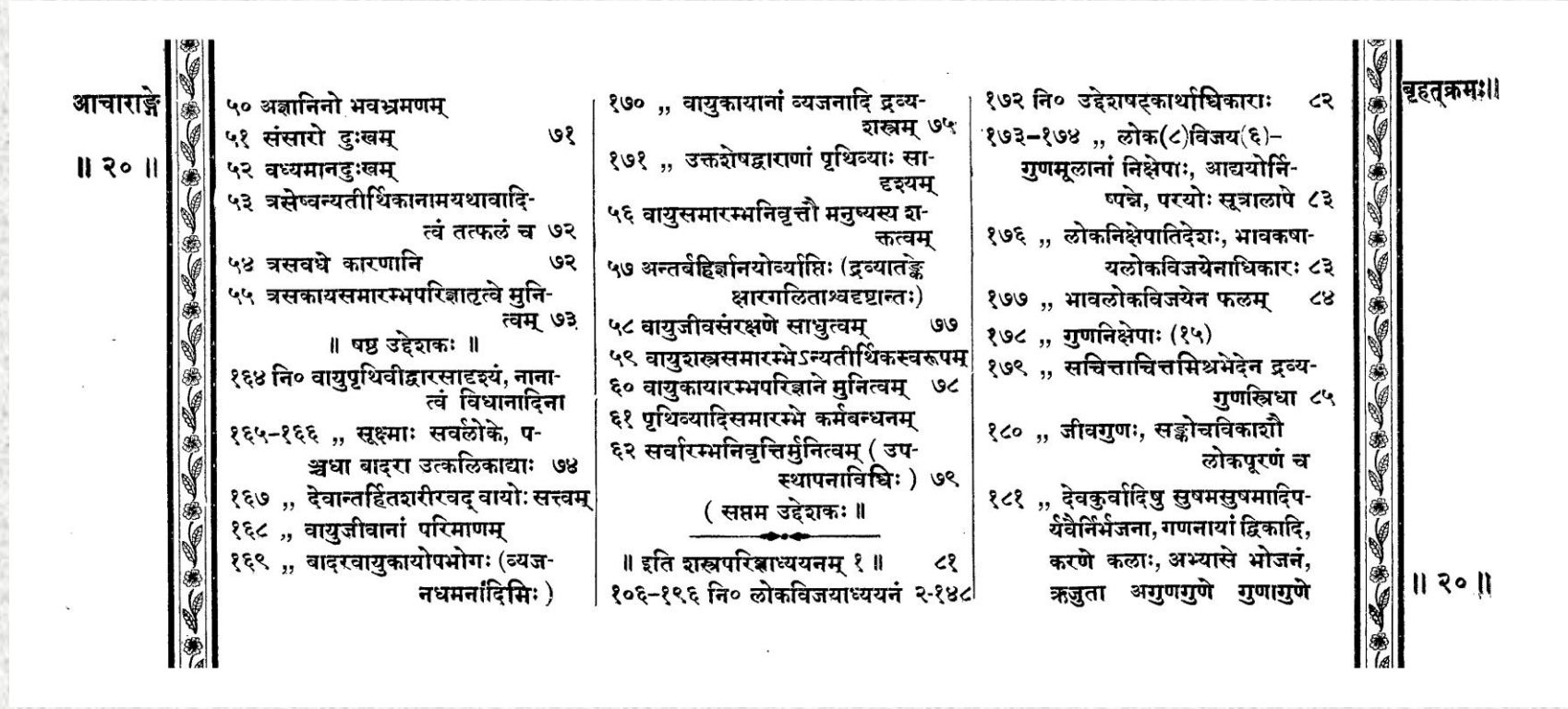
१३४ नि० प्रत्येकतरुजीवराशिपरिमाणम्
१३५ नि० शेषा आज्ञाग्राह्याः
१३६-१३७ नि० साधारणवनस्पति-लक्षणम् ५९
१३८ नि० मूलप्रथमपत्रयोरेकजीवत्वम्
१३९-१४० नि० अनन्तकायलक्षणम्
१४१ नि० साधारणवनस्पतेर्भेदाः
१४२ नि० एकाद्यसङ्ख्यातानां प्रत्येके दृश्यत्वम्
१४३ नि० साधारणेऽनन्तानां दृश्यत्वम् ६०
१४४ नि० सूक्ष्मानन्तजीवपरिमाणम्
१४५ नि० बादरनिगोदपरिमाणम्
१४६ ,, १४७ ,, उपभोगविधिः, आहारादिरातोद्यादिश्च
१४८ ,, उपभोगोपसंहारः, वधहेतुश्च ६१
१४९ ,, वनस्पतेः समासद्रव्यशस्त्रं कल्पन्यादि
१५० ,, वनस्पतेर्विभागतो द्रव्यभावशस्त्रम्
१५१ ,, वनस्पतेरुक्तशेषद्वाराणां पृथिव्याः सादृश्यम्
४० वनस्पत्यारम्भाकरणेऽनगारत्वम्
४१ गुणावर्त्तयोरैक्यम् ६२
४२ वनस्पत्यभिनिवृत्तशब्दादीनां सर्वदिग्भाक्त्वम् ६३
४३ शब्दादिगुणागुप्तत्वेऽनाज्ञाकारित्वम् ६४
४४ शब्दादिगुणास्वादेऽसंयमानुष्ठायित्वम्
४५ शब्दादिगुणप्रमत्तत्वे गृहस्थत्वम्
४६ वनस्पतिशस्त्रसमारम्भेऽन्यतीर्थिकदशा
४७ वनस्पतिजीवास्तित्वे लिङ्गम् (जन्मवृद्ध्यादि) ६५
४८ वनस्पत्यारम्भतत्परिहाराभ्यां बन्धमुनित्वे ६६
॥ पञ्चम उद्देशकः ॥
१५२ नि० पृथ्वीत्रसद्वारसादृश्यं, नानात्वं विधानादिना ६७
१५३ ,, त्रस-लब्धिगतिभ्यां द्विधा
१५४ ,, त्रसजीवभेदाः
१५५ ,, त्रसजीवोत्तरभेदाः (योनिकुलानि)
१५६ १५७ ,, त्रसजीवानां दर्शनादीनि (१९) लक्षणानि ६८
१५८ ,, त्रसजीवानां परिमाणम्
१५९ ,, अविरहितप्रवेशनिर्गमपरिमाणम् ६९
१६० ,, उपभोगशस्त्रवेदनाद्वारत्रयम्
१६१-१६२ ,, मांसाद्युपभोगार्थं जीववधः
१६३ ,, उक्तशेषद्वाराणां पृथिव्याः सादृश्यम् ७०
४९ अण्डजादित्रसभेदकथनपूर्वकं संसारस्वरूपम्

बृहत्क्रमः॥ ॥ १९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ २० ॥

५० अज्ञानिनो भवभ्रमणम्
५१ संसारो दुःखम् ७१
५२ वध्यमानदुःखम्
५३ त्रसेष्वन्यतीर्थिकानामयथावादित्वं तत्फलं च ७२
५४ त्रसवधे कारणानि ७२
५५ त्रसकायसमारम्भपरिज्ञातृत्वे मुनित्वम् ७३
॥ षष्ठ उद्देशकः ॥
१६४ नि० वायुपृथिवीद्वारसादृश्यं, नानात्वं विधानादिना
१६५-१६६ ,, सूक्ष्माः सर्वलोके, पञ्चधा बादरा उत्कलिकाद्याः ७४
१६७ ,, देवान्तर्हितशरीरवद् वायोः सत्त्वम्
१६८ ,, वायुजीवानां परिमाणम्
१६९ ,, बादरवायुकायोपभोगः (व्यजनधमनादिभिः)
१७० ,, वायुकायानां व्यजनादि द्रव्यशस्त्रम् ७५
१७१ ,, उक्तशेषद्वाराणां पृथिव्याः सादृश्यम्
५६ वायुसमारम्भनिवृत्तौ मनुष्यस्य शक्तत्वम्
५७ अन्तर्बहिर्ज्ञानयोर्व्याप्तिः (द्रव्यातङ्कक्षारगलिताश्वदृष्टान्तः)
५८ वायुजीवसंरक्षणे साधुत्वम् ७७
५९ वायुशस्त्रसमारम्भेऽन्यतीर्थिकस्वरूपम्
६० वायुकायारम्भपरिज्ञाने मुनित्वम् ७८
६१ पृथिव्यादिसमारम्भे कर्मबन्धनम्
६२ सर्वारम्भनिवृत्तिर्मुनित्वम् (उपस्थापनाविधिः) ७९
(सप्तम उद्देशकः ॥
॥ इति शस्त्रपरिज्ञाध्ययनम् १ ॥ ८१
१०६-१९६ नि० लोकविजयाध्ययनं २-१४८
१७२ नि० उद्देशषट्कार्थाधिकाराः ८२
१७३-१७४ ,, लोक(८)विजय(६)-गुणमूलानां निक्षेपाः, आद्ययोर्निष्पन्ने, परयोः सूत्रालापे ८३
१७६ ,, लोकनिक्षेपातिदेशः, भावकषायलोकविजयेनाधिकारः ८३
१७७ ,, भावलोकविजयेन फलम् ८४
१७८ ,, गुणनिक्षेपाः (१५)
१७९ ,, सचित्ताचित्तमिश्रभेदेन द्रव्यगुणस्त्रिधा ८५
१८० ,, जीवगुणः, सङ्कोचविकाशौ लोकपूरणं च
१८१ ,, देवकुर्वादिषु सुषमसुषमादिपर्यैर्वर्निर्भजना, गणनायां द्विकादि, करणे कलाः, अभ्यासे भोजनं, ऋजुता अगुणगुणे गुणागुणे
बृहत्क्रमः॥
॥ २० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

आचाराङ्गे ॥ २१ ॥

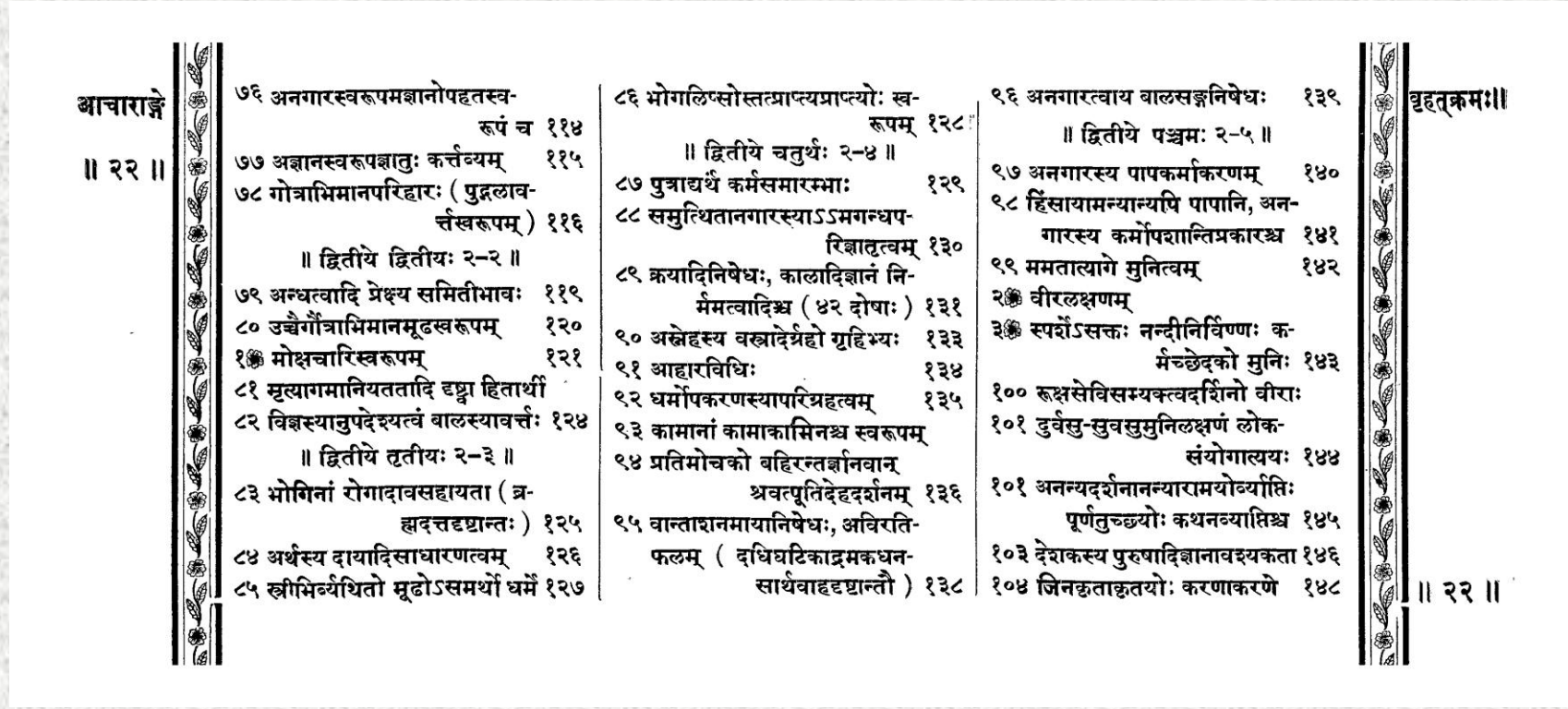
वक्रता, भवे नारकादि, शीले क्षान्त्यादि, भावे जीवाजीवयोः ८६
१८२ नि० मूलनिक्षेपाः (६) ८७
१८३ ,, भावमूलस्य त्रैविध्यम्, औदयिक उपदेष्टा आदिः (विनय-कषायादि) ८८
१८४ ,, स्थाननिक्षेपाः (१५)
१८५ ,, शब्दादिविषयेषु मूलस्थानत्वम् ८९
१८६ ,, पादपदृष्टान्तेन कर्मणः संसारप्रतिष्ठितमूलत्वम् ९०
१८७ ,, कर्माणि मोहनीयमूलानि काममूलानि वा, ततश्च संसारः
१८८ ,, मोहनीयस्य द्वैविध्यम्
१८९ ,, कर्मणि कषायाणां प्रधानकारणत्वं, तेषां स्थानविशेषाश्च ९१
१९० ,, कषायनिक्षेपाः (८)
१९१ ,, संसारः पञ्चधा
१९२॥ ,, कर्मनिक्षेपाः, नामस्थापनाद्रव्यप्रयोगसमुदानेर्यापथिकाऽऽधातपःकृतिभावकर्मभेदेन (वर्गणास्वरूपं मूलोत्तरप्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशबन्धाः) ९२
१९३ ,, अष्टविधकर्मणाऽधिकारः ९८
६३ गुणमूलस्थानयोरैक्यं प्रमत्तस्वरूपं मात्रादिममत्वं च (परशुरामचाणक्य-जरासिन्धुदृष्टान्ताः)
१९४ नि० स्वजनत्यागात्कषायकर्मभवच्छेदाः १०१
१९५ ,, स्नेहासक्तत्वेन जन्ममरणप्राप्तिः
६४ जरायामिन्द्रियाणां शिथिलता (इन्द्रियनिरूपणम्) १०३
६५ वार्द्धक्ये लोकावगीतत्वम् (धनवृद्धदृष्टान्तः) १०५
६६ प्रशस्तमूलस्थानम्, अप्रमादः १०७
६७ संसाराभिष्वङ्गिस्वरूपम्
६८ जराद्यभिभवेऽर्थस्यात्राणत्वम् १०८
६९ स्वकृतकर्मफलसुखदुःखयोर्ज्ञानेऽक्लैव्यम् १०९
७० यौवने धर्मोद्यमः
७१ क्षणे द्रव्ये त्रसादि, क्षेत्रे कर्मभूमयः, काले तृतीयचतुर्थारकौ, भावे कर्मणि न्यूनकोटिसागरता (ध्रुवप्रकृतयः) नोकर्मणि आलस्या(१३)द्यभावः
७२ यावदिन्द्रियशक्ति आत्मार्थोपदेशः ११०
॥ द्वितीये प्रथमः २-१ ॥
७३ अरतिरहितो मुच्येत १११
१९६ नि० संयमावधावनहेतवः ११२
७४ अनाज्ञावर्तिनामुभयभ्रष्टत्वम्
७५ संसारविमुक्तस्वरूपम् ११३

बृहत्क्रमः॥ ॥ २१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ २२ ॥

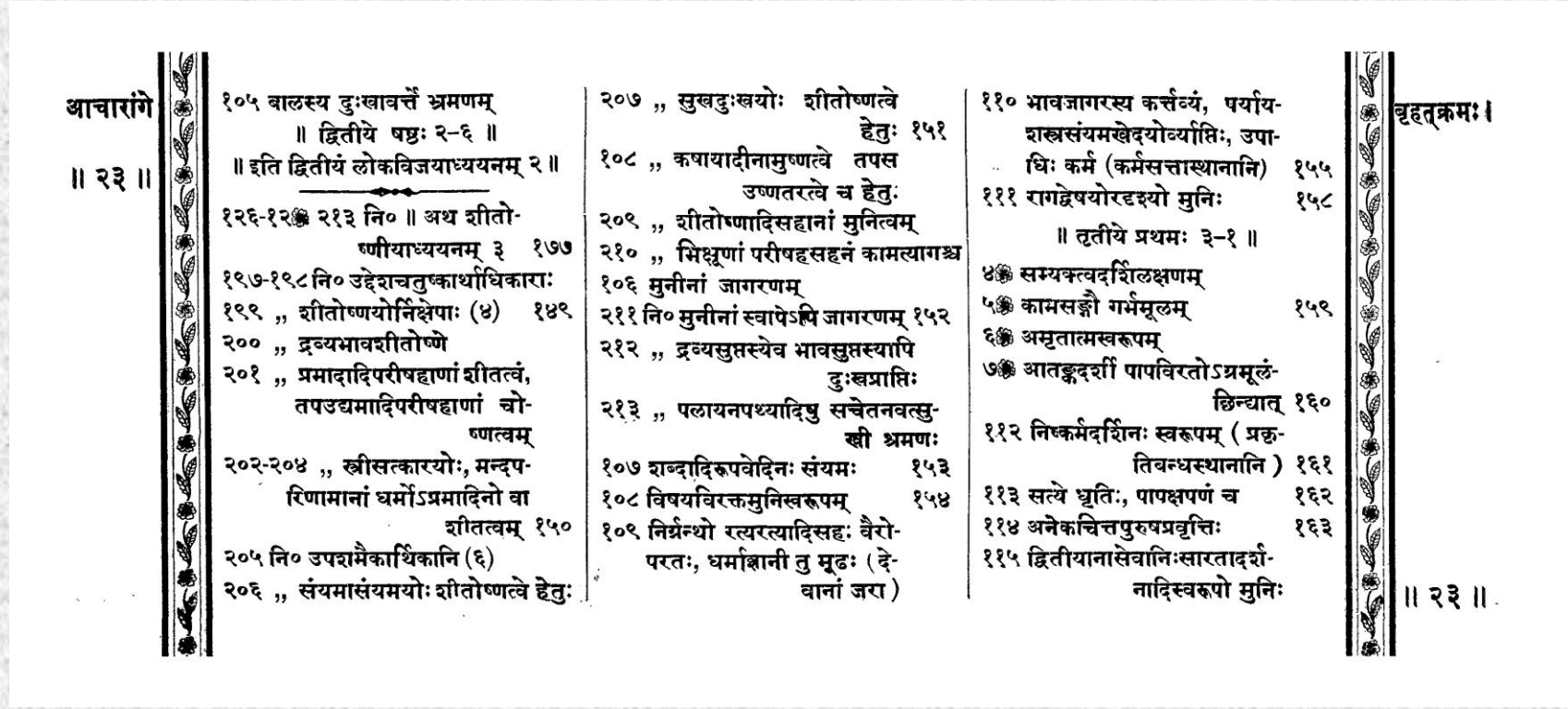
७६ अनगारस्वरूपमज्ञानोपहतस्वरूपं च ११४
७७ अज्ञानस्वरूपज्ञातुः कर्त्तव्यम् ११५
७८ गोत्राभिमानपरिहारः (पुद्गलावर्त्तस्वरूपम्) ११६
॥ द्वितीये द्वितीयः २-२ ॥
७९ अन्धत्वादि प्रेक्ष्य समितीभावः ११९
८० उच्चैर्गोत्राभिमानमूढस्वरूपम् १२०
१ मोक्षचारिस्वरूपम् १२१
८१ मृत्यागमानियतत्वादि दृष्ट्वा हितार्थी
८२ विज्ञस्यानुपदेश्यत्वं बालस्यावर्त्तः १२४
॥ द्वितीये तृतीयः २-३ ॥
८३ भोगिनां रोगादावसहायता (ब्रह्मदत्तदृष्टान्तः) १२५
८४ अर्थस्य दायादिसाधारणत्वम् १२६
८५ स्त्रीभिर्व्यथितो मूढोऽसमर्थो धर्मे १२७
८६ भोगलिप्सोस्तत्प्राप्त्यप्राप्त्योः स्वरूपम् १२८
॥ द्वितीये चतुर्थः २-४ ॥
८७ पुत्राद्यर्थं कर्मसमारम्भाः १२९
८८ समुत्थितानगारस्याऽऽमगन्धपरिज्ञातृत्वम् १३०
८९ क्रयादिनिषेधः, कालादिज्ञानं निर्ममत्वादिश्च (४२ दोषाः) १३१
९० अस्नेहस्य वस्त्रादेर्ग्रहो गृहिभ्यः १३३
९१ आहारविधिः १३४
९२ धर्मोपकरणस्यापरिग्रहत्वम् १३५
९३ कामानां कामाकामिनश्च स्वरूपम्
९४ प्रतिमोचको बहिरन्तर्ज्ञानवान् श्रवत्पूतिदेहदर्शनम् १३६
९५ वान्ताशनमायानिषेधः, अविरतिफलम् (दधिघटिकाद्रमकधनसार्थवाहदृष्टान्तौ) १३८
९६ अनगारत्वाय बालसङ्गनिषेधः १३९
॥ द्वितीये पञ्चमः २-५ ॥
९७ अनगारस्य पापकर्माकरणम् १४०
९८ हिंसायामन्यान्यपि पापानि, अनगारस्य कर्मोपशान्तिप्रकारश्च १४१
९९ ममतात्यागे मुनित्वम् १४२
२ वीरलक्षणम्
३ स्पर्शेऽसक्तः नन्दीनिर्विण्णः कर्मच्छेदको मुनिः १४३
१०० रूक्षसेविसम्यक्त्वदर्शिनो वीराः
१०१ दुर्वसु-सुवसुमुनिलक्षणं लोकसंयोगात्ययः १४४
१०१ अनन्यदर्शनानन्यारामयोर्व्याप्तिः पूर्णतुच्छयोः कथनव्याप्तिश्च १४५
१०३ देशकस्य पुरुषादिज्ञानावश्यकता १४६
१०४ जिनकृताकृतयोः करणाकरणे १४८

बृहत्क्रमः॥ ॥ २२ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

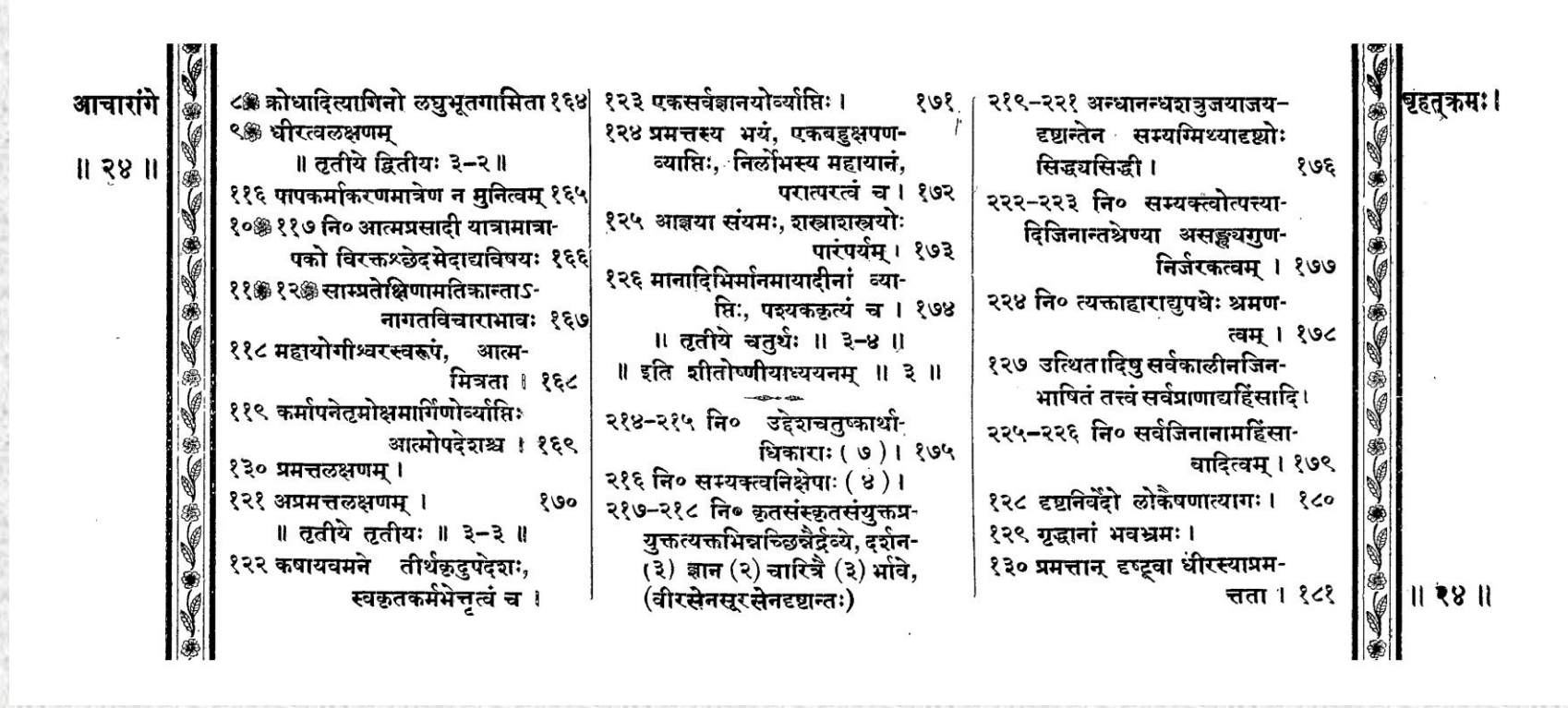


आचारांगे ॥ २३ ॥

१०५ बालस्य दुःखावर्त्ते भ्रमणम्
॥ द्वितीये षष्ठः २-६ ॥
॥ इति द्वितीयं लोकविजयाध्ययनम् २ ॥
१२६-१२७ २१३ नि० ॥ अथ शीतोष्णीयाध्ययनम् ३ १७७
१९७-१९८ नि० उद्देशचतुष्कार्थाधिकाराः
१९९ ,, शीतोष्णयोर्निक्षेपाः (४) १४९
२०० ,, द्रव्यभावशीतोष्णे
२०१ ,, प्रमादादिपरीषहाणां शीतत्वं, तपउद्यमादिपरीषहाणां चोष्णत्वम्
२०२-२०४ ,, स्त्रीसत्कारयोः, मन्दपरिणामानां धर्मोऽप्रमादिनो वा शीतत्वम् १५०
२०५ नि० उपशमैकार्थिकानि (६)
२०६ ,, संयमासंयमयोः शीतोष्णत्वे हेतुः
२०७ ,, सुखदुःखयोः शीतोष्णत्वे हेतुः १५१
१०८ ,, कषायादीनामुष्णत्वे तपस उष्णतरत्वे च हेतुः
२०९ ,, शीतोष्णादिसहानां मुनित्वम्
२१० ,, भिक्षूणां परीषहसहनं कामत्यागश्च
१०६ मुनीनां जागरणम्
२११ नि० मुनीनां स्वापेऽपि जागरणम् १५२
२१२ ,, द्रव्यसुप्तस्येव भावसुप्तस्यापि दुःखप्राप्तिः
२१३ ,, पलायनपथ्यादिषु सचेतनवत्सु स्त्री श्रमणः
१०७ शब्दादिरूपवेदिनः संयमः १५३
१०८ विषयविरक्तमुनिस्वरूपम् १५४
१०९ निर्ग्रन्थो रत्यरत्यादिसहः वैरोपरतः, धर्मज्ञानी तु मूढः (देवानां जरा)
११० भावजागरस्य कर्त्तव्यं, पर्यायशस्त्रसंयमखेदयोर्व्याप्तिः, उपाधिः कर्म (कर्मसत्तास्थानानि) १५५
१११ रागद्वेषयोरदृश्यो मुनिः १५८
॥ तृतीये प्रथमः ३-१ ॥
४ सम्यक्त्वदर्शिलक्षणम्
५ कामसङ्गौ गर्भमूलम् १५९
६ अमृतात्मस्वरूपम्
७ आतङ्कदर्शी पापविरतोऽग्रमूलं-छिन्द्यात् १६०
११२ निष्कर्मदर्शिनः स्वरूपम् (प्रकृतिबन्धस्थानानि) १६१
११३ सत्ये धृतिः, पापक्षपणं च १६२
११४ अनेकचित्तपुरुषप्रवृत्तिः १६३
११५ द्वितीयानासेवानिःसारतादर्शनादिस्वरूपो मुनिः

बृहत्क्रमः ।

॥ २३ ॥



आचारांगे ॥ २४ ॥

८ क्रोधादित्यागिनो लघुभूतगामिता १६४
९ धीरत्वलक्षणम्
॥ तृतीये द्वितीयः ३-२ ॥
११६ पापकर्माकरणमात्रेण न मुनित्वम् १६५
१० ११७ नि० आत्मप्रसादी यात्रामात्रा-
पको विरक्तश्छेदभेदाद्यविषयः १६६
११ १२ साम्प्रतेक्षिणामतिक्रान्ता-
नागतविचाराभावः १६७
११८ महायोगीश्वरस्वरूपं, आत्म-
मित्रता । १६८
११९ कर्मापनेतृमोक्षमार्गिणोर्व्याप्तिः
आत्मोपदेशश्च । १६९
१२० प्रमत्तलक्षणम् ।
१२१ अप्रमत्तलक्षणम् । १७०
॥ तृतीये तृतीयः ॥ ३-३ ॥
१२२ कषायवमने तीर्थकृदुपदेशः,
स्वकृतकर्मभेक्तृत्वं च ।
१२३ एकसर्वज्ञानयोर्व्याप्तिः । १७१
१२४ प्रमत्तस्य भयं, एकबहुक्षपण-
व्याप्तिः, निर्लोभस्य महायानं,
परात्परत्वं च । १७२
१२५ आज्ञया संयमः, शस्त्राशस्त्रयोः
पारंपर्यम् । १७३
१२६ मानादिभिर्मानमायादीनां व्या-
प्तिः, पश्यककृत्यं च । १७४
॥ तृतीये चतुर्थः ॥ ३-४ ॥
॥ इति शीतोष्णीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥
२१४-२१५ नि० उद्देशचतुष्कार्था-
धिकाराः (७) । १७५
२१६ नि० सम्यक्त्वनिक्षेपाः (४) ।
२१७-२१८ नि० कृतसंस्कृतसंयुक्तप्र-
युक्तत्यक्तभिन्नच्छिन्नद्रव्ये, दर्शन-
(३) ज्ञान (२) चारित्रै (३) र्भावे,
(वीरसेनसूरसेनदृष्टान्तः)
२१९-२२१ अन्धानन्धशत्रुजयाजय-
दृष्टान्तेन सम्यग्मिथ्यादृष्ट्योः
सिद्ध्यसिद्धी । १७६
२२२-२२३ नि० सम्यक्त्वोत्पत्त्या-
दिजिनान्तश्रेण्या असङ्ख्यगुण-
निर्जरकत्वम् । १७७
२२४ नि० त्यक्ताहाराद्युपधेः श्रमण-
त्वम् । १७८
१२७ उत्थितादिषु सर्वकालीनजिन-
भाषितं तत्त्वं सर्वप्राणाद्यहिंसादि ।
२२५-२२६ नि० सर्वजिनानामहिंसा-
वादित्वम् । १७९
१२८ दृष्टनिर्वेदो लोकैषणात्यागः । १८०
१२९ गृद्धानां भवभ्रमः ।
१३० प्रमत्तान् दृष्ट्वा धीरस्याप्रम-
त्तता । १८१

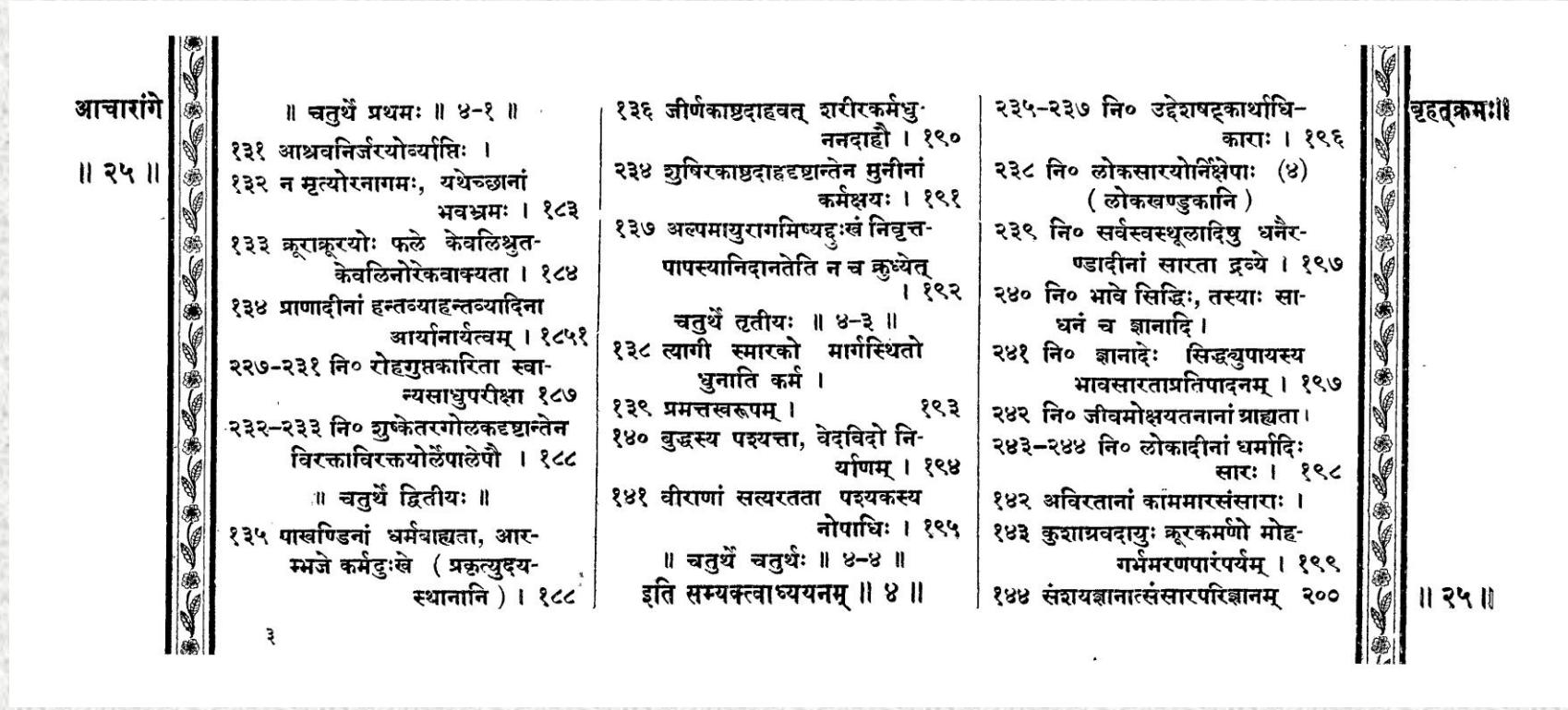
बृहत्क्रमः ।

॥ १४ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



आचारांगे ॥ २५ ॥

॥ चतुर्थे प्रथमः ॥ ४-१ ॥

१३१ आश्रवनिर्जरयोर्व्याप्तिः ।
१३२ न मृत्योरनागमः, यथेच्छानां भवभ्रमः । १८३
१३३ क्रूराक्रूरयोः फले केवलिश्रुत-केवलिनोरेकवाक्यता । १८४
१३४ प्राणादीनां हन्तव्याहन्तव्यादिना आर्यानार्यत्वम् । १८५१
२२७-२३१ नि० रोहगुप्तकारिता स्वा-न्यसाधुपरीक्षा १८७
२३२-२३३ नि० शुष्केतरगोलकदृष्टान्तेन विरक्ताविरक्तयोर्लेपालेपौ । १८८

॥ चतुर्थे द्वितीयः ॥

१३५ पाखण्डिनां धर्मबाह्यता, आर-म्भजे कर्मदुःखे (प्रकृत्युदय-स्थानानि) । १८८
१३६ जीर्णकाष्ठदाहवत् शरीरकर्मधु-ननदाहौ । १९०
२३४ शुषिरकाष्ठदाहदृष्टान्तेन मुनीनां कर्मक्षयः । १९१
१३७ अल्पमायुरागमिष्यद्दुःखं निवृत्त-पापस्यानिदानतेति न च क्रुध्येत् । १९२

चतुर्थे तृतीयः ॥ ४-३ ॥

१३८ त्यागी स्मारको मार्गस्थितो धुनाति कर्म ।
१३९ प्रमत्तस्वरूपम् । १९३
१४० बुद्धस्य पश्यत्ता, वेदविदो नि-र्याणम् । १९४
१४१ वीराणां सत्यरतता पश्यकस्य नोपाधिः । १९५

॥ चतुर्थे चतुर्थः ॥ ४-४ ॥

इति सम्यक्त्वाध्ययनम् ॥ ४ ॥
२३५-२३७ नि० उद्देशषट्कार्थाधि-काराः । १९६
२३८ नि० लोकसारयोर्निक्षेपाः (४) (लोकखण्डुकानि)
२३९ नि० सर्वस्वस्थूलादिषु धनैर-ण्डादीनां सारता द्रव्ये । १९७
२४० नि० भावे सिद्धिः, तस्याः सा-धनं च ज्ञानादि ।
२४१ नि० ज्ञानादेः सिद्ध्युपायस्य भावसारताप्रतिपादनम् । १९७
२४२ नि० जीवमोक्षयतनानां ग्राह्यता ।
२४३-२४४ नि० लोकादीनां धर्मादिः सारः । १९८
१४२ अविरतानां काममारसंसाराः ।
१४३ कुशाग्रवदायुः क्रूरकर्मणो मोह-गर्भमरणपारंपर्यम् । १९९
१४४ संशयज्ञानात्संसारपरिज्ञानम् २००

बृहत्क्रमः॥ ॥ २५ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

आचाराङ्गे ॥ २६ ॥

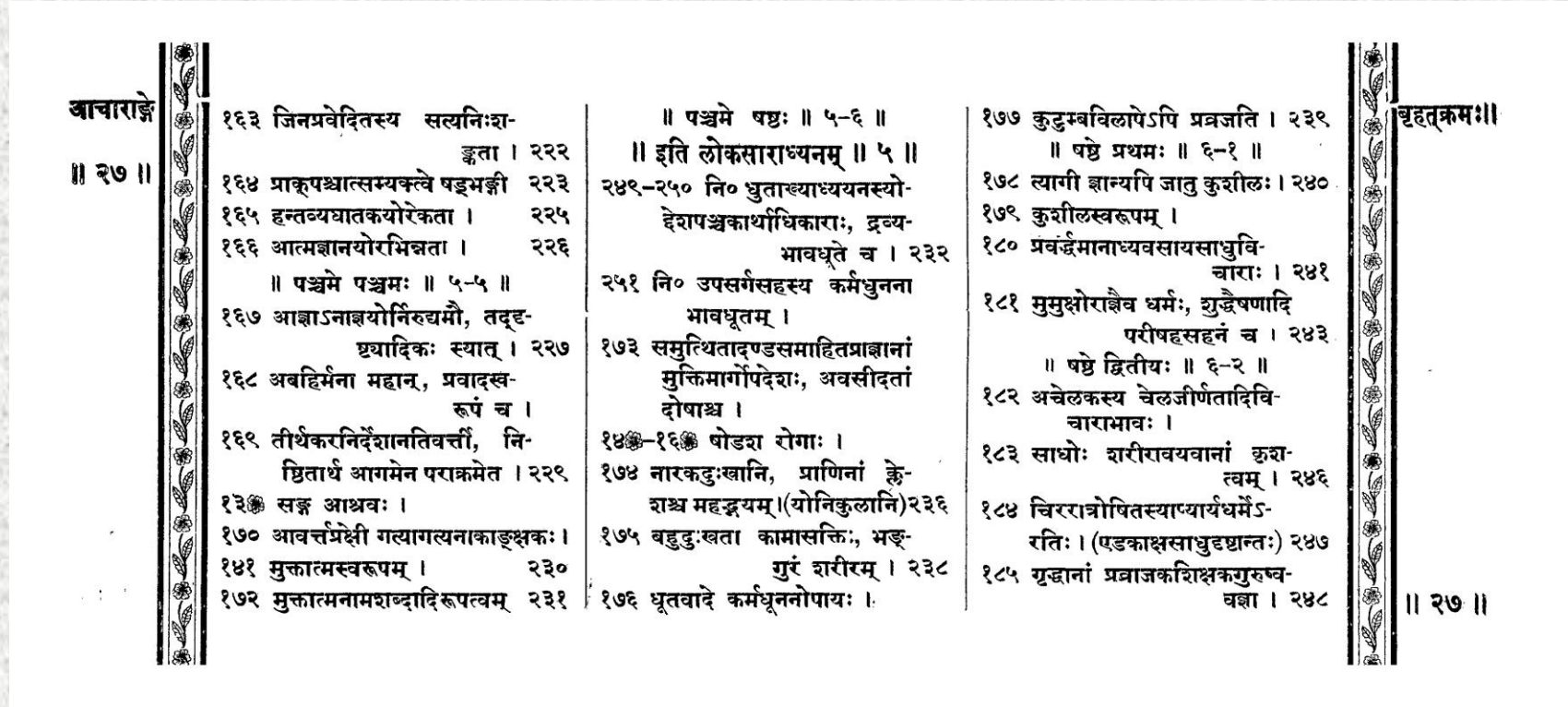
१४५ छेको मैथुनाद्विरतः, बालस्य द्वितीया बालता । १४६ गृद्धः आरम्भी पापरतः एकचारी बहुक्रोधादिः अज्ञातधर्मो भवभ्रमी । २०१
२४५ नि० चारशब्दस्य निक्षेपाः (६) एकार्थिकाश्च (३), द्रव्ये दारुसङ्क्रमादिः । २०२
२४६ नि० क्षेत्रादिचारा; भावे प्रशस्ताप्रशस्तौ ।
२४७ नि० प्रश्नद्वारेण प्रशस्तभावचारः । २०३
२४८ नि० द्रव्यादिचारेषु यतेर्विशेषता ।
॥ पञ्चमे प्रथमः ॥ ५-१ ॥
१४७ सन्धिदर्शी उत्थितः पृथक्कर्मज्ञाता विरतः । २०४
१४८ पूर्वपश्चाद्भावभिदुरादिधर्मत्वाच्छरीरस्य विरतपापस्याध्यासनम् । २०५
१४९ शरीरासारतादर्शिनो न पर्यटनम् । २०६
१५० अविरतवादिनः परिग्रहवत्त्वम् २०७
१५१ परमचक्षुः पराक्रमी श्रुताध्यात्मस्थता, प्रमत्तस्य बाह्यत्वम् । २०८
॥ पञ्चमे द्वितीयः ॥ ५-२ ॥
१५२ सन्धिक्षपणाय वीर्यम् । २०८
१५३ पूर्वोत्थायिपश्चान्निपातिभङ्गस्वरूपम् । २०९
१५४ अकामोऽझञ्झो बाह्येन युध्येत २१०
१५५ अन्तरारिषड्वर्गरिपुजयसाम्रथ्या दुष्प्रापत्वम् । २११
१५६ सम्यक्त्वमौनयोर्व्याप्तिः, अप्रमत्तस्यैव सम्यक्त्वमौने । २१३
॥ पञ्चमे तृतीयः ॥ ५-३ ॥
१५७ अव्यक्तमिक्षोर्दुर्विहारता ।
१५८ अज्ञस्य क्रोधमोहसंबाधभावाः, तद्दृष्टिमुक्त्यादिर्मुनिः । २१५
१५९ अप्रमत्तस्याकुट्टिकृतकर्मविवेकः । २१६
१६० ज्ञानधर्मबाधितस्यावमोदरिकादिः । २१७
॥ पञ्चमे चतुर्थः ॥ ५-४ ॥
१६१ हृदवत्प्रतिपूर्ण उपशान्तरजा आचार्यः । (सम्पदष्टकम्) २२०
१६२ विचिकित्सकोऽसमाधिमान्बोधाबोधयोर्निर्वेदः भव्यत्वशङ्का २२१

बृहत्क्रमः॥ ॥ २६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ २७ ॥

१६३ जिनप्रवेदितस्य सत्यनिःशङ्कता । २२२
१६४ प्राक्पश्चात्सम्यक्त्वे षड्भङ्गी २२३
१६५ हन्तव्यघातकयोरेकता । २२५
१६६ आत्मज्ञानयोरभिन्नता । २२६
॥ पञ्चमे पञ्चमः ॥ ५-५ ॥
१६७ आज्ञाऽनाज्ञयोर्निरुद्यमौ, तद्दृष्ट्यादिकः स्यात् । २२७
१६८ अबहिर्मना महान्, प्रवादस्वरूपं च ।
१६९ तीर्थकरनिर्देशानतिवर्त्ती, निष्ठितार्थ आगमेन पराक्रमेत । २२९
१३॥ सङ्ग आश्रवः ।
१७० आवर्त्तप्रेक्षी गत्यागत्यनाकाङ्क्षकः ।
१४१ मुक्तात्मस्वरूपम् । २३०
१७२ मुक्तात्मनामशब्दादिरूपत्वम् २३१
॥ पञ्चमे षष्ठः ॥ ५-६ ॥
॥ इति लोकसाराध्ययनम् ॥ ५ ॥
२४९-२५० नि० धुताख्याध्ययनस्योद्देशपञ्चकार्थाधिकाराः, द्रव्यभावधूते च । २३२
२५१ नि० उपसर्गसहस्य कर्मधुनना भावधूतम् ।
१७३ समुत्थितादण्डसमाहितप्राज्ञानां मुक्तिमार्गोपदेशः, अवसीदतां दोषाश्च ।
१४॥-१६॥ षोडश रोगाः ।
१७४ नारकदुःखानि, प्राणिनां क्लेशश्च महद्भयम् ।(योनिकुलानि)२३६
१७५ बहुदुःखता कामासक्तिः, भङ्गुरं शरीरम् । २३८
१७६ धूतवादे कर्मधूननोपायः ।
१७७ कुटुम्बविलापेऽपि प्रव्रजति । २३९
॥ षष्ठे प्रथमः ॥ ६-१ ॥
१७८ त्यागी ज्ञान्यपि जातु कुशीलः । २४०
१७९ कुशीलस्वरूपम् ।
१८० प्रवर्द्धमानाध्यवसायसाधुविचाराः । २४१
१८१ मुमुक्षोराज्ञैव धर्मः, शुद्धैषणादि परीषहसहनं च । २४३
॥ षष्ठे द्वितीयः ॥ ६-२ ॥
१८२ अचेलकस्य चेलजीर्णतादिविचाराभावः ।
१८३ साधोः शरीरावयवानां कृशत्वम् । २४६
१८४ चिररात्रोषितस्याप्यार्यधर्मेऽरतिः । (एडकाक्षसाधुदृष्टान्तः) २४७
१८५ गृद्धानां प्रव्राजकशिक्षकगुरुष्वज्ञा । २४८

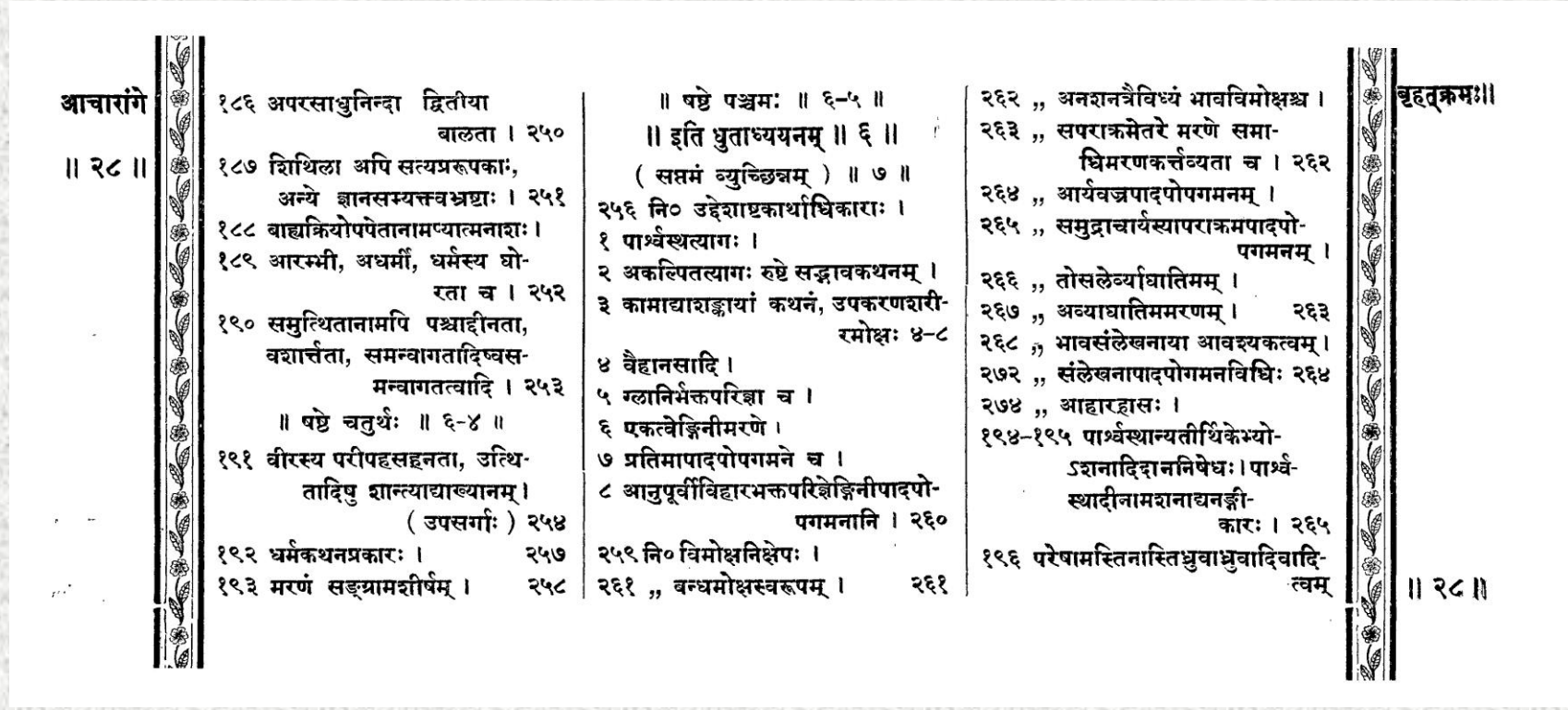
बृहत्क्रमः॥

॥ २७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



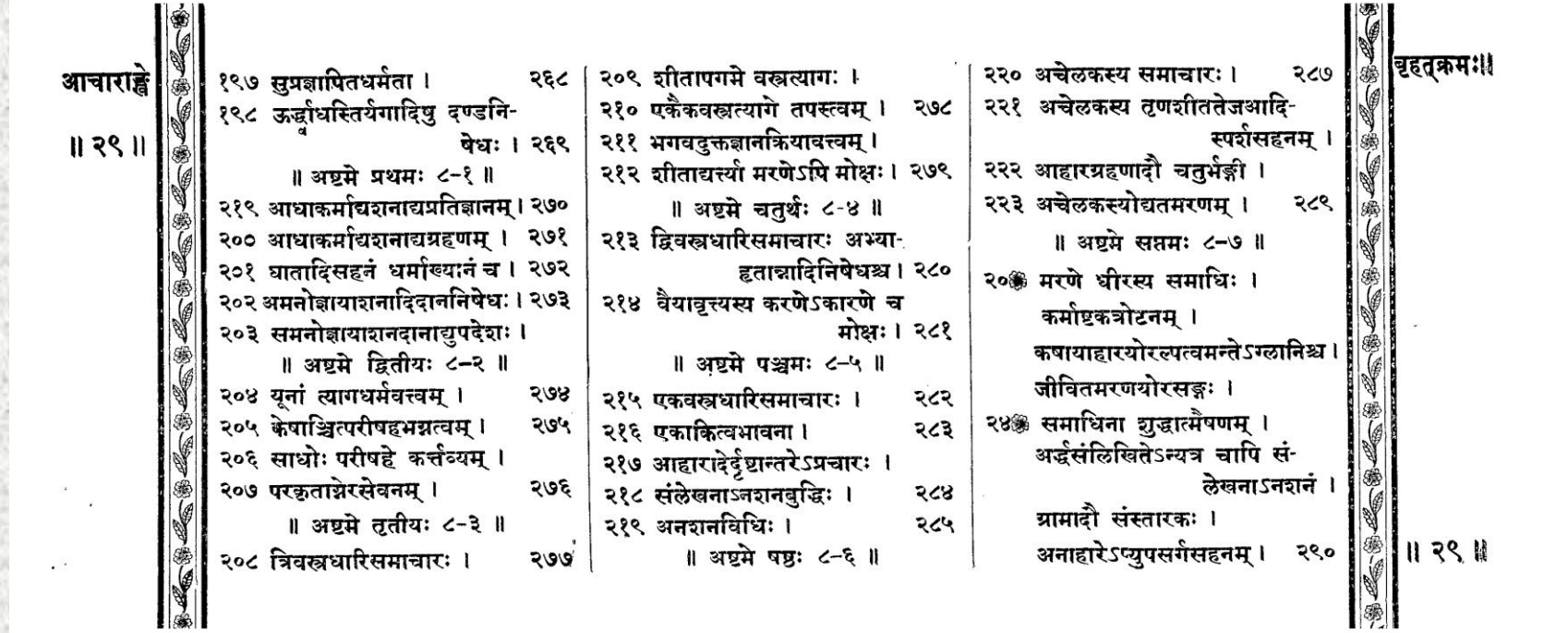
आचारांगे ॥ २८ ॥

१८६ अपरसाधुनिन्दा द्वितीया बालता । २५०
१८७ शिथिला अपि सत्यप्ररूपकाः, अन्ये ज्ञानसम्यक्त्वभ्रष्टाः । २५१
१८८ बाह्यक्रियोपपेतानामप्यात्मनाशः ।
१८९ आरम्भी, अधर्मी, धर्मस्य घोरता च । २५२
१९० समुत्थितानामपि पश्चादीनता, वशार्त्तता, समन्वागतादिष्वसमन्वागतत्वादि । २५३
॥ षष्ठे चतुर्थः ॥ ६-४ ॥
१९१ वीरस्य परीषहसहनता, उत्थितादिषु शान्त्याद्याख्यानम् । (उपसर्गाः) २५४
१९२ धर्मकथनप्रकारः । २५७
१९३ मरणं सङ्ग्रामशीर्षम् । २५८

॥ षष्ठे पञ्चमः ॥ ६-५ ॥
॥ इति धुताध्ययनम् ॥ ६ ॥
(सप्तमं व्युच्छिन्नम्) ॥ ७ ॥
२५६ नि० उद्देशाष्टकार्थाधिकाराः ।
१ पार्श्वस्थत्यागः ।
२ अकल्पितत्यागः रुष्टे सद्भावकथनम् ।
३ कामाद्याशङ्कायां कथनं, उपकरणशरीरमोक्षः ४-८
४ वैहानसादि ।
५ ग्लानिर्भक्तपरिज्ञा च ।
६ एकत्वेङ्गिनीमरणे ।
७ प्रतिमापादपोपगमने च ।
८ आनुपूर्वीविहारभक्तपरिज्ञेङ्गिनीपादपोपगमनानि । २६०
२५९ नि० विमोक्षनिक्षेपः ।
२६१ ,, बन्धमोक्षस्वरूपम् । २६१

२६२ ,, अनशनत्रैविध्यं भावविमोक्षश्च ।
२६३ ,, सपराक्रमेतरे मरणे समाधिमरणकर्त्तव्यता च । २६२
२६४ ,, आर्यवज्रपादपोपगमनम् ।
२६५ ,, समुद्राचार्यस्यापराक्रमपादपोपगमनम् ।
२६६ ,, तोसलेर्व्याघातिमम् ।
२६७ ,, अव्याघातिममरणम् । २६३
२६८ ,, भावसंलेखनाया आवश्यकत्वम् ।
२७२ ,, संलेखनापादपोगमनविधिः २६४
२७४ ,, आहारहासः ।
१९४-१९५ पार्श्वस्थान्यतीर्थिकेभ्योऽशनादिदाननिषेधः । पार्श्वस्थादीनामशनाद्यनङ्गीकारः । २६५
१९६ परेषामस्तिनास्तिध्रुवाध्रुवादिवादित्वम्

बृहत्क्रमः ॥
॥ २८ ॥



आचाराङ्गे ॥ २९ ॥

१९७ सुप्रज्ञापितधर्मता । २६८
१९८ ऊर्द्ध्वाधस्तिर्यगादिषु दण्डनिषेधः । २६९
॥ अष्टमे प्रथमः ८-१ ॥
२१९ आधाकर्माद्यशनाद्यप्रतिज्ञानम् । २७०
२०० आधाकर्माद्यशनाद्यग्रहणम् । २७१
२०१ घातादिसहनं धर्माख्यानं च । २७२
२०२ अमनोज्ञायाशनादिदाननिषेधः । २७३
२०३ समनोज्ञायाशनदानाद्युपदेशः ।
॥ अष्टमे द्वितीयः ८-२ ॥
२०४ यूनां त्यागधर्मवत्त्वम् । २७४
२०५ केषाञ्चित्परीषहभग्नत्वम् । २७५
२०६ साधोः परीषहे कर्त्तव्यम् ।
२०७ परकृताग्नेरसेवनम् । २७६
॥ अष्टमे तृतीयः ८-३ ॥
२०८ त्रिवस्त्रधारिसमाचारः । २७७

२०९ शीतापगमे वस्त्रत्यागः ।
२१० एकैकवस्त्रत्यागे तपस्त्वम् । २७८
२११ भगवदुक्तज्ञानक्रियावत्त्वम् ।
२१२ शीताद्यर्त्या मरणेऽपि मोक्षः । २७९
॥ अष्टमे चतुर्थः ८-४ ॥
२१३ द्विवस्त्रधारिसमाचारः अभ्याहृतान्नादिनिषेधश्च । २८०
२१४ वैयावृत्त्यस्य करणेऽकारणे च मोक्षः । २८१
॥ अष्टमे पञ्चमः ८-५ ॥
२१५ एकवस्त्रधारिसमाचारः । २८२
२१६ एकाकित्वभावना । २८३
२१७ आहारादेर्दृष्टान्तरेऽप्रचारः ।
२१८ संलेखनाऽनशनबुद्धिः । २८४
२१९ अनशनविधिः । २८५
॥ अष्टमे षष्ठः ८-६ ॥

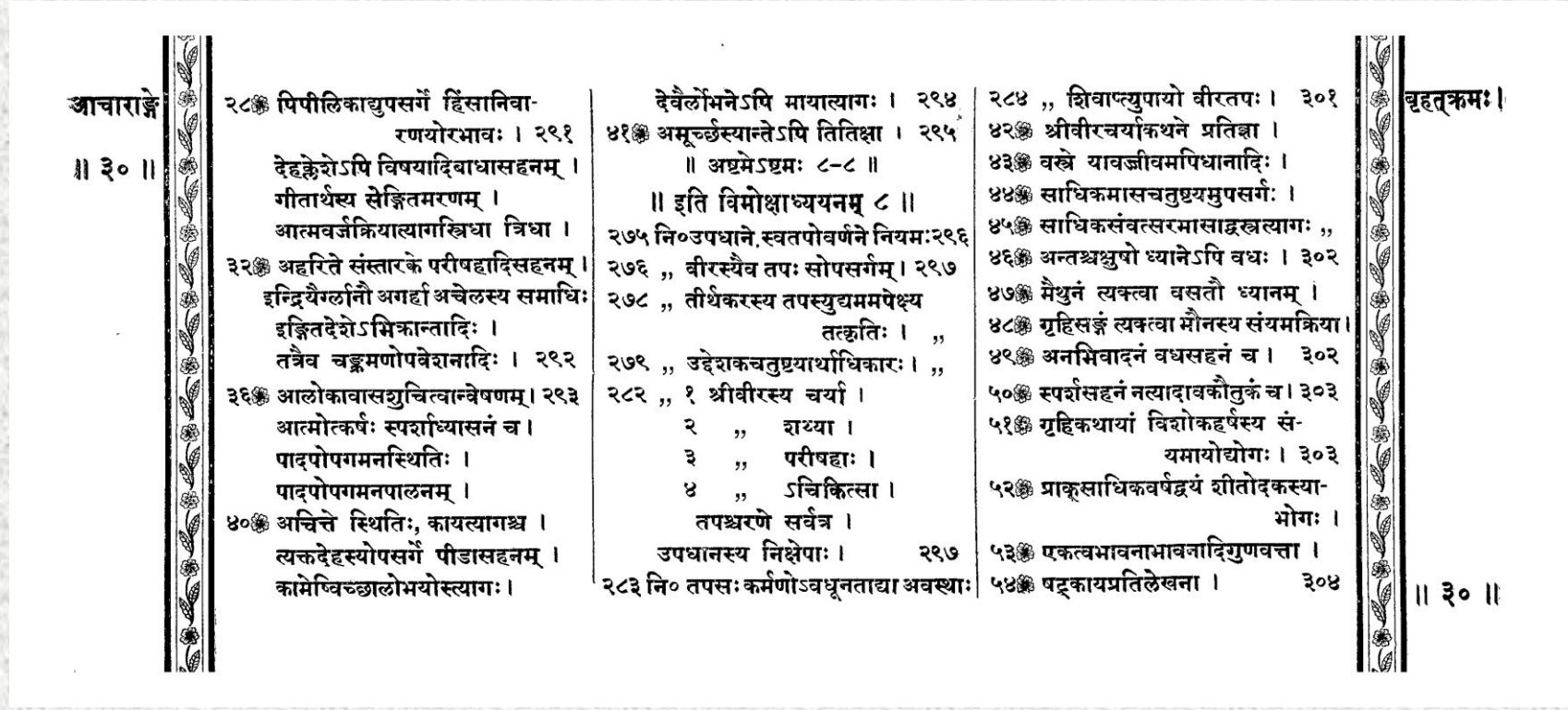
२२० अचेलकस्य समाचारः । २८७
२२१ अचेलकस्य तृणशीततेजआदिस्पर्शसहनम् ।
२२२ आहारग्रहणादौ चतुर्भङ्गी ।
२२३ अचेलकस्योद्यतमरणम् । २८९
॥ अष्टमे सप्तमः ८-७ ॥
२० मरणे धीरस्य समाधिः ।
कर्माष्टकत्रोटनम् ।
कषायाहारयोरल्पत्वमन्तेऽग्लानिश्च ।
जीवितमरणयोरसङ्गः ।
२४ समाधिना शुद्धात्मैषणम् ।
अर्द्धसंलिखितेऽन्यत्र चापि संलेखनाऽनशनं ।
ग्रामादौ संस्तारकः ।
अनाहारेऽप्युपसर्गसहनम् । २९०

बृहत्क्रमः ॥ ॥ २९ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



आचाराङ्गे ॥ ३० ॥

२८ पिपीलिकाद्युपसर्गे हिंसानिवारणयोरभावः । २९१
देहक्लेशेऽपि विषयादिबाधासहनम् ।
गीतार्थस्य सेङ्गितमरणम् ।
आत्मवर्जक्रियात्यागस्त्रिधा त्रिधा ।
३२ अहरिते संस्तारके परीषहादिसहनम् ।
इन्द्रियैर्ग्लानौ अगर्हा अचेलस्य समाधिः
इङ्गितदेशेऽभिक्रान्तादिः ।
तत्रैव चङ्क्रमणोपवेशनादिः । २९२
३६ आलोकावासशुचित्वान्वेषणम् । २९३
आत्मोत्कर्षः स्पर्शाध्यासनं च ।
पादपोपगमनस्थितिः ।
पादपोपगमनपालनम् ।
४० अचित्ते स्थितिः, कायत्यागश्च ।
त्यक्तदेहस्योपसर्गे पीडासहनम् ।
कामेष्विच्छालोभयोस्त्यागः ।
देवैर्लोभनेऽपि मायात्यागः । २९४
४१ अमूर्च्छस्यान्तेऽपि तितिक्षा । २९५
॥ अष्टमेऽष्टमः ८-८ ॥
॥ इति विमोक्षाध्ययनम् ८ ॥
२७५ नि०उपधाने.स्वतपोवर्णने नियमः२९६
२७६ ,, वीरस्यैव तपः सोपसर्गम् । २९७
२७८ ,, तीर्थकरस्य तपस्युद्यममपेक्ष्य तत्कृतिः । ,,
२७९ ,, उद्देशकचतुष्टयार्थाधिकारः । ,,
२८२ ,, १ श्रीवीरस्य चर्या ।
२ ,, शय्या ।
३ ,, परीषहाः ।
४ ,, ऽचिकित्सा ।
तपश्चरणे सर्वत्र ।
उपधानस्य निक्षेपाः । २९७
२८३ नि० तपसः कर्मणोऽवधूनताद्या अवस्थाः
२८४ ,, शिवाप्त्युपायो वीरतपः । ३०१
४२ श्रीवीरचर्याकथने प्रतिज्ञा ।
४३ वस्त्रे यावज्जीवमपिधानादिः ।
४४ साधिकमासचतुष्टयमुपसर्गः ।
४५ साधिकसंवत्सरमासाद्वस्त्रत्यागः ,,
४६ अन्तश्चक्षुषो ध्यानेऽपि वधः । ३०२
४७ मैथुनं त्यक्त्वा वसतौ ध्यानम् ।
४८ गृहिसङ्गं त्यक्त्वा मौनस्य संयमक्रिया ।
४९ अनभिवादनं वधसहनं च । ३०२
५० स्पर्शसहनं नत्यादावकौतुकं च । ३०३
५१ गृहिकथायां विशोकहर्षस्य संयमायोद्योगः । ३०३
५२ प्राक्साधिकवर्षद्वयं शीतोदकस्याभोगः ।
५३ एकत्वभावनाभावनादिगुणवत्ता ।
५४ षट्कायप्रतिलेखना । ३०४

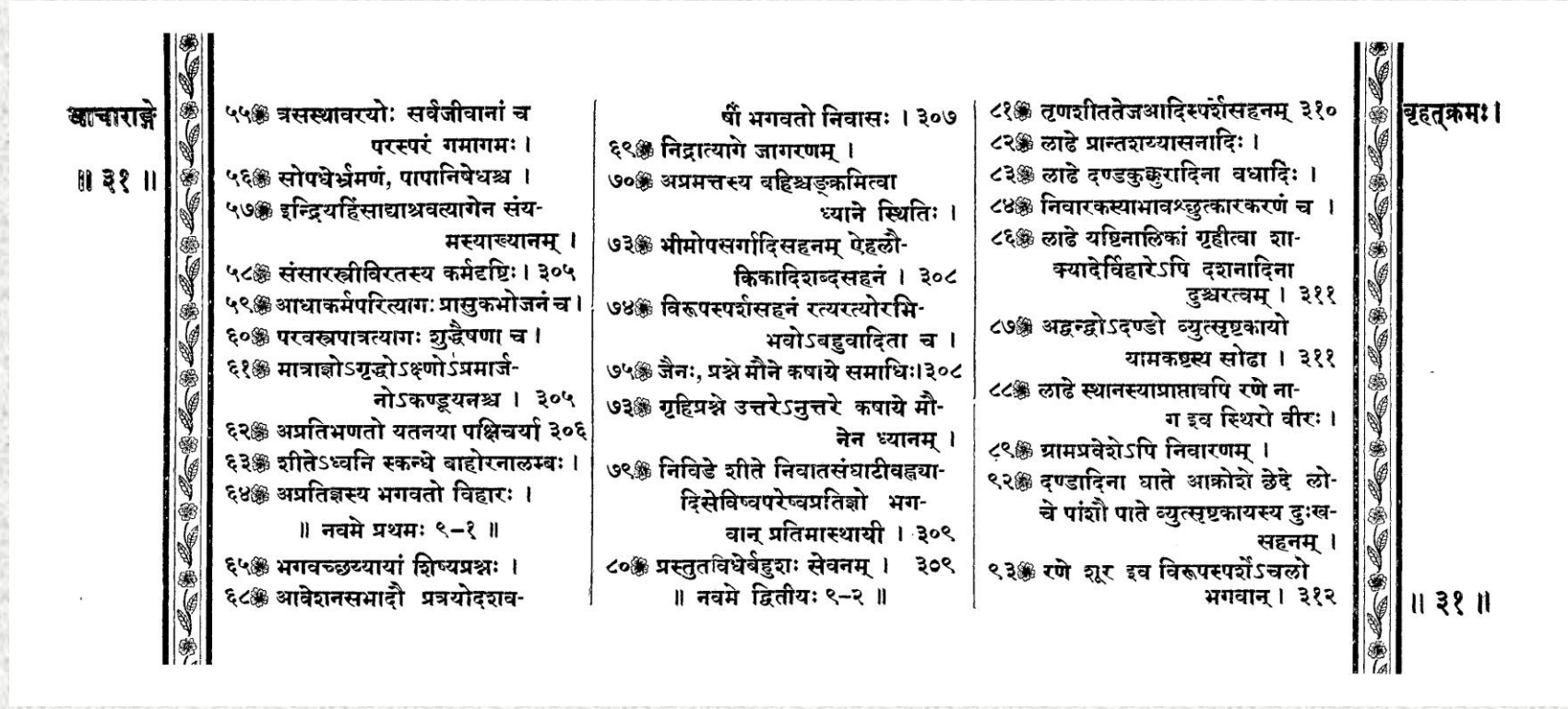
बृहत्क्रमः ।

॥ ३० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ ३१ ॥

५५ त्रसस्थावरयोः सर्वजीवानां च परस्परं गमागमः ।
५६ सोपधेर्भ्रमणं, पापानिषेधश्च ।
५७ इन्द्रियहिंसाद्याश्रवत्यागेन संयमस्याख्यानम् ।
५८ संसारस्त्रीविरतस्य कर्मदृष्टिः । ३०५
५९ आधाकर्मपरित्यागः प्रासुकभोजनं च ।
६० परवस्त्रपात्रत्यागः शुद्धैषणा च ।
६१ मात्राज्ञोऽगृद्धोऽक्षणोऽप्रमार्जनोऽकण्डूयनश्च । ३०५
६२ अप्रतिभणतो यतनया पक्षिचर्या ३०६
६३ शीतेऽध्वनि स्कन्धे बाहोरनालम्बः ।
६४ अप्रतिज्ञस्य भगवतो विहारः ।
॥ नवमे प्रथमः ९–१ ॥
६५ भगवच्छय्यायां शिष्यप्रश्नः ।
६८ आवेशनसभादौ प्रत्रयोदशवर्षी भगवतो निवासः । ३०७
६९ निद्रात्यागे जागरणम् ।
७० अप्रमत्तस्य बहिश्चङ्क्रमित्वा ध्याने स्थितिः ।
७३ भीमोपसर्गादिसहनम् ऐहलौकिकादिशब्दसहनं । ३०८
७४ विरूपस्पर्शसहनं रत्यरत्योरभिभवोऽबहुवादिता च ।
७५ जैनः, प्रश्ने मौने कषाये समाधिः।३०८
७३ गृहिप्रश्ने उत्तरेऽनुत्तरे कषाये मौनेन ध्यानम् ।
७९ निविडे शीते निवातसंघाटीवह्न्यादिसेवेष्वपरेष्वप्रतिज्ञो भगवान् प्रतिमास्थायी । ३०९
८० प्रस्तुतविधेर्बहुशः सेवनम् । ३०९
॥ नवमे द्वितीयः ९–२ ॥
८१ तृणशीततेजआदिस्पर्शसहनम् ३१०
८२ लाढे प्रान्तशय्यासनादिः ।
८३ लाढे दण्डकुक्कुरादिना वधादिः ।
८४ निवारकस्याभावश्छुत्कारकरणं च ।
८६ लाढे यष्टिनालिकां गृहीत्वा शाक्यादेर्विहारेऽपि दशनादिना दुश्चरत्वम् । ३११
८७ अद्वन्द्वोऽदण्डो व्युत्सृष्टकायो यामकृष्ण्य सोढा । ३११
८८ लाढे स्थानस्याप्राप्तावपि रणे नाग इव स्थिरो वीरः ।
८९ ग्रामप्रवेशेऽपि निवारणम् ।
९२ दण्डादिना घाते आक्रोशे छेदे लोचे पांशौ पाते व्युत्सृष्टकायस्य दुःखसहनम् ।
९३ रणे शूर इव विरूपस्पर्शेऽचलो भगवान् । ३१२

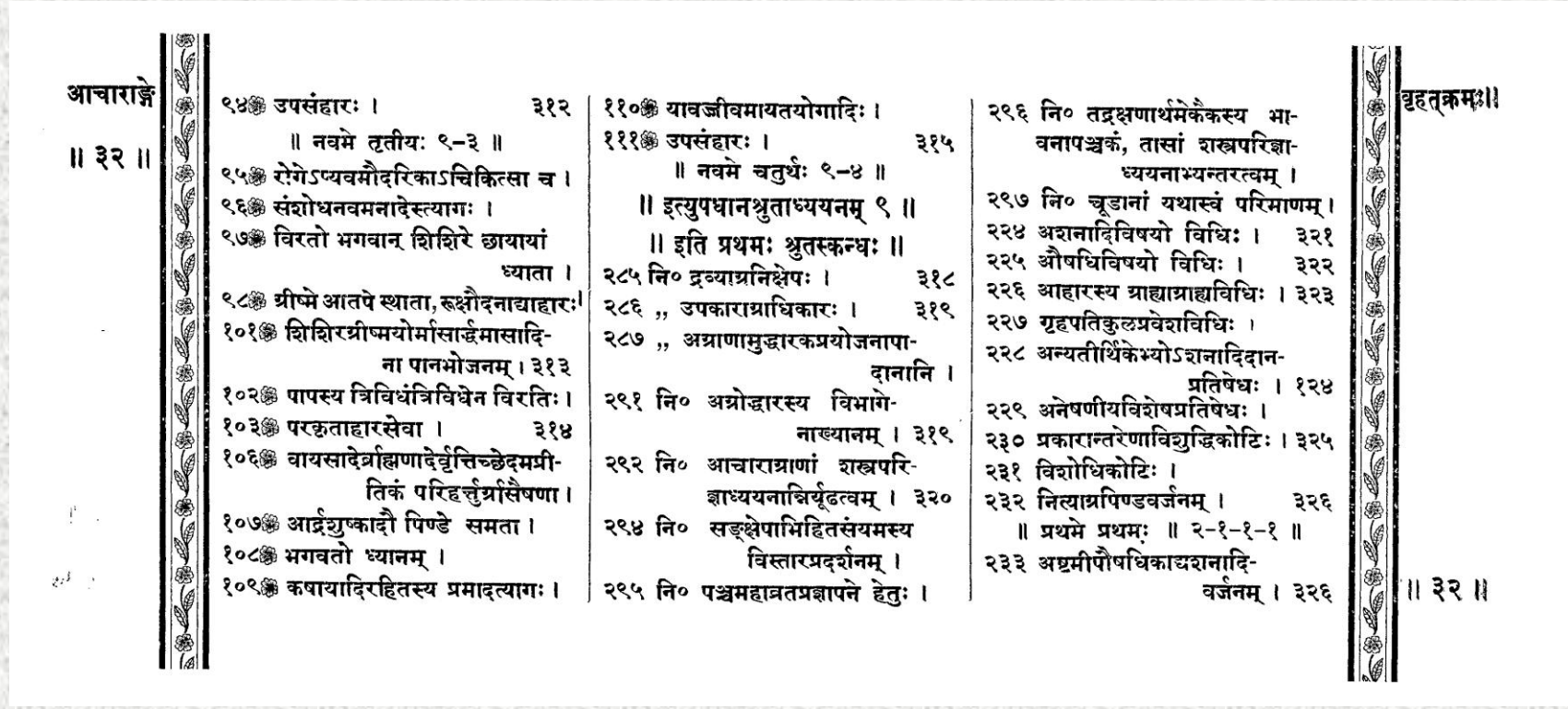
बृहत्क्रमः ।

॥ ३१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



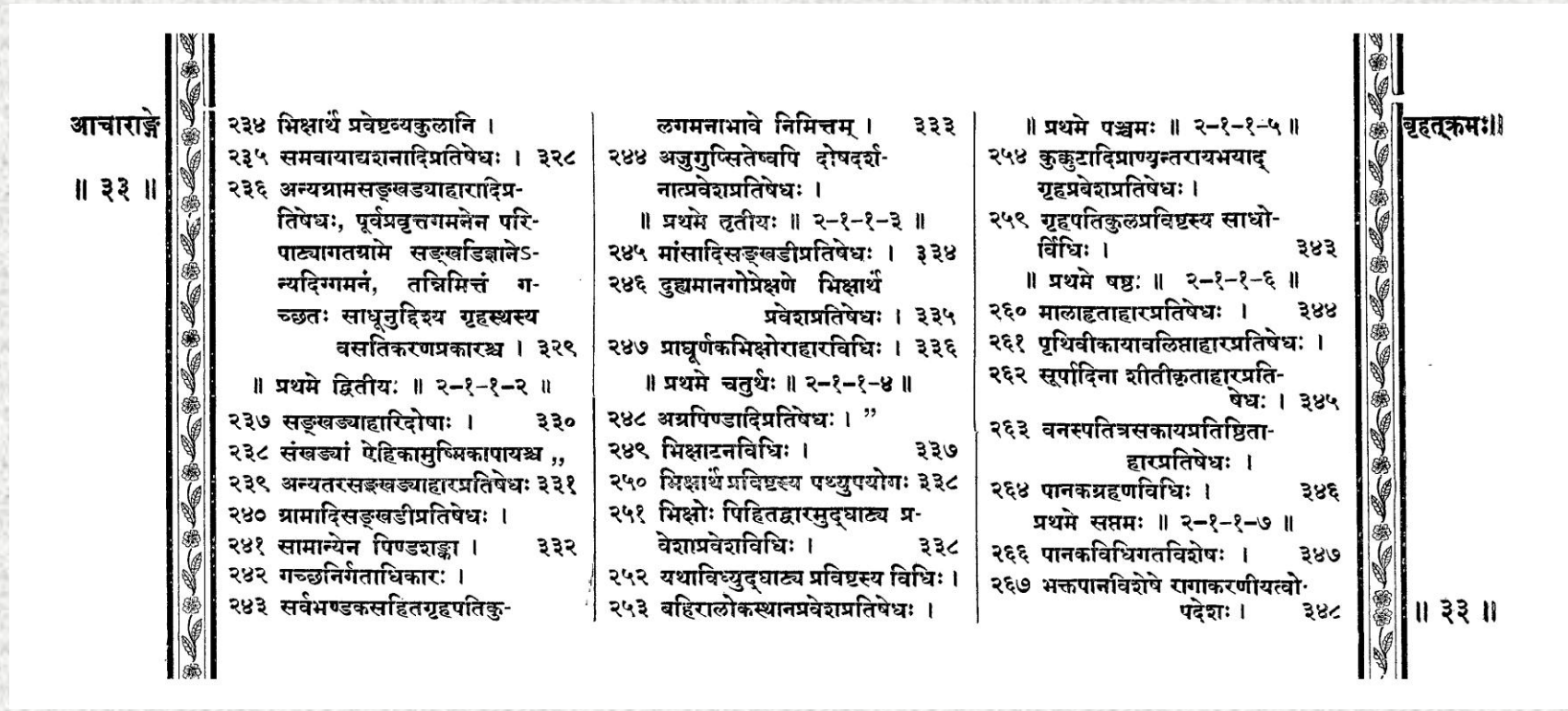
आचाराङ्गे ॥ ३२ ॥

९४ उपसंहारः । ३१२
॥ नवमे तृतीयः ९–३ ॥
९५ रोगेऽप्यवमौदरिकाऽचिकित्सा च ।
९६ संशोधनवमनादेस्त्यागः ।
९७ विरतो भगवान् शिशिरे छायायां ध्याता ।
९८ ग्रीष्मे आतपे स्थाता, रूक्षौदनाद्याहारः ।
१०१ शिशिरग्रीष्मयोर्मासार्द्धमासादिना पानभोजनम् । ३१३
१०२ पापस्य त्रिविधंत्रिविधेन विरतिः ।
१०३ परकृताहारसेवा । ३१४
१०६ वायसादेर्ब्राह्मणादेर्वृत्तिच्छेदमप्रीतिकं परिहर्त्तुर्ग्रासैषणा ।
१०७ आर्द्रशुष्कादौ पिण्डे समता ।
१०८ भगवतो ध्यानम् ।
१०९ कषायादिरहितस्य प्रमादत्यागः ।
११० यावज्जीवमायतयोगादिः ।
१११ उपसंहारः । ३१५
॥ नवमे चतुर्थः ९–४ ॥
॥ इत्युपधानश्रुताध्ययनम् ९ ॥
॥ इति प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥
२८५ नि० द्रव्याग्रनिक्षेपः । ३१८
२८६ ,, उपकाराग्राधिकारः । ३१९
२८७ ,, अग्राणामुद्धारकप्रयोजनापादानानि ।
२९१ नि० अग्रोद्धारस्य विभागेनाख्यानम् । ३१९
२९२ नि० आचाराग्राणां शस्त्रपरिज्ञाध्ययनान्निर्यूढत्वम् । ३२०
२९४ नि० सङ्क्षेपाभिहितसंयमस्य विस्तारप्रदर्शनम् ।
२९५ नि० पञ्चमहाव्रतप्रज्ञापने हेतुः ।
२९६ नि० तद्रक्षणार्थमेकैकस्य भावनापञ्चकं, तासां शस्त्रपरिज्ञाध्ययनाभ्यन्तरत्वम् ।
२९७ नि० चूडानां यथास्वं परिमाणम् ।
२२४ अशनादिविषयो विधिः । ३२१
२२५ औषधिविषयो विधिः । ३२२
२२६ आहारस्य ग्राह्याग्राह्यविधिः । ३२३
२२७ गृहपतिकुलप्रवेशविधिः ।
२२८ अन्यतीर्थिकेभ्योऽशनादिदानप्रतिषेधः । १२४
२२९ अनेषणीयविशेषप्रतिषेधः ।
२३० प्रकारान्तरेणाविशुद्धिकोटिः । ३२५
२३१ विशोधिकोटिः ।
२३२ नित्याग्रपिण्डवर्जनम् । ३२६
॥ प्रथमे प्रथमः ॥ २–१–१–१ ॥
२३३ अष्टमीपौषधिकाद्यशनादिवर्जनम् । ३२६

बृहत्क्रमः ॥
॥ ३२ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘सवृत्तिक आगम सुत्ताणि’



आचाराङ्गे ॥ ३३ ॥

२३४ भिक्षार्थं प्रवेष्टव्यकुलानि ।
२३५ समवायाद्यशनादिप्रतिषेधः । ३२८
२३६ अन्यग्रामसङ्खडयाहारादिप्रतिषेधः, पूर्वप्रवृत्तगमनेन परिपाट्यागतग्रामे सङ्खडिज्ञानेऽन्यदिग्गमनं, तन्निमित्तं गच्छतः साधूनुद्दिश्य गृहस्थस्य वसतिकरणप्रकारश्च । ३२९
॥ प्रथमे द्वितीयः ॥ २-१-१-२ ॥
२३७ सङ्खडयाहारिदोषाः । ३३०
२३८ संखड्यां ऐहिकामुष्मिकापायश्च ,,
२३९ अन्यतरसङ्खडयाहारप्रतिषेधः ३३१
२४० ग्रामादिसङ्खडीप्रतिषेधः ।
२४१ सामान्येन पिण्डशङ्का । ३३२
२४२ गच्छनिर्गताधिकारः ।
२४३ सर्वभण्डकसहितगृहपतिकुलगमनाभावे निमित्तम् । ३३३
२४४ अजुगुप्सितेष्वपि दोषदर्शनात्प्रवेशप्रतिषेधः ।
॥ प्रथमे तृतीयः ॥ २-१-१-३ ॥
२४५ मांसादिसङ्खडीप्रतिषेधः । ३३४
२४६ दुह्यमानगोप्रेक्षणे भिक्षार्थं प्रवेशप्रतिषेधः । ३३५
२४७ प्राघूर्णकभिक्षोराहारविधिः । ३३६
॥ प्रथमे चतुर्थः ॥ २-१-१-४ ॥
२४८ अग्रपिण्डादिप्रतिषेधः । ”
२४९ भिक्षाटनविधिः । ३३७
२५० भिक्षार्थं प्रविष्टस्य पथ्युपयोगः ३३८
२५१ भिक्षोः पिहितद्वारमुद्घाट्य प्रवेशाप्रवेशविधिः । ३३८
२५२ यथाविध्युद्घाट्य प्रविष्टस्य विधिः ।
२५३ बहिरालोकस्थानप्रवेशप्रतिषेधः ।
॥ प्रथमे पञ्चमः ॥ २-१-१-५ ॥
२५४ कुक्कुटादिप्राण्यन्तरायभयाद् गृहप्रवेशप्रतिषेधः ।
२५९ गृहपतिकुलप्रविष्टस्य साधोर्विधिः । ३४३
॥ प्रथमे षष्ठः ॥ २-१-१-६ ॥
२६० मालाहृताहारप्रतिषेधः । ३४४
२६१ पृथिवीकायावलिप्ताहारप्रतिषेधः ।
२६२ सूर्पादिना शीतीकृताहारप्रतिषेधः । ३४५
२६३ वनस्पतित्रसकायप्रतिष्ठिताहारप्रतिषेधः ।
२६४ पानकग्रहणविधिः । ३४६
प्रथमे सप्तमः ॥ २-१-१-७ ॥
२६६ पानकविधिगतविशेषः । ३४७
२६७ भक्तपानविशेषे रागाकरणीयत्वोपदेशः । ३४८

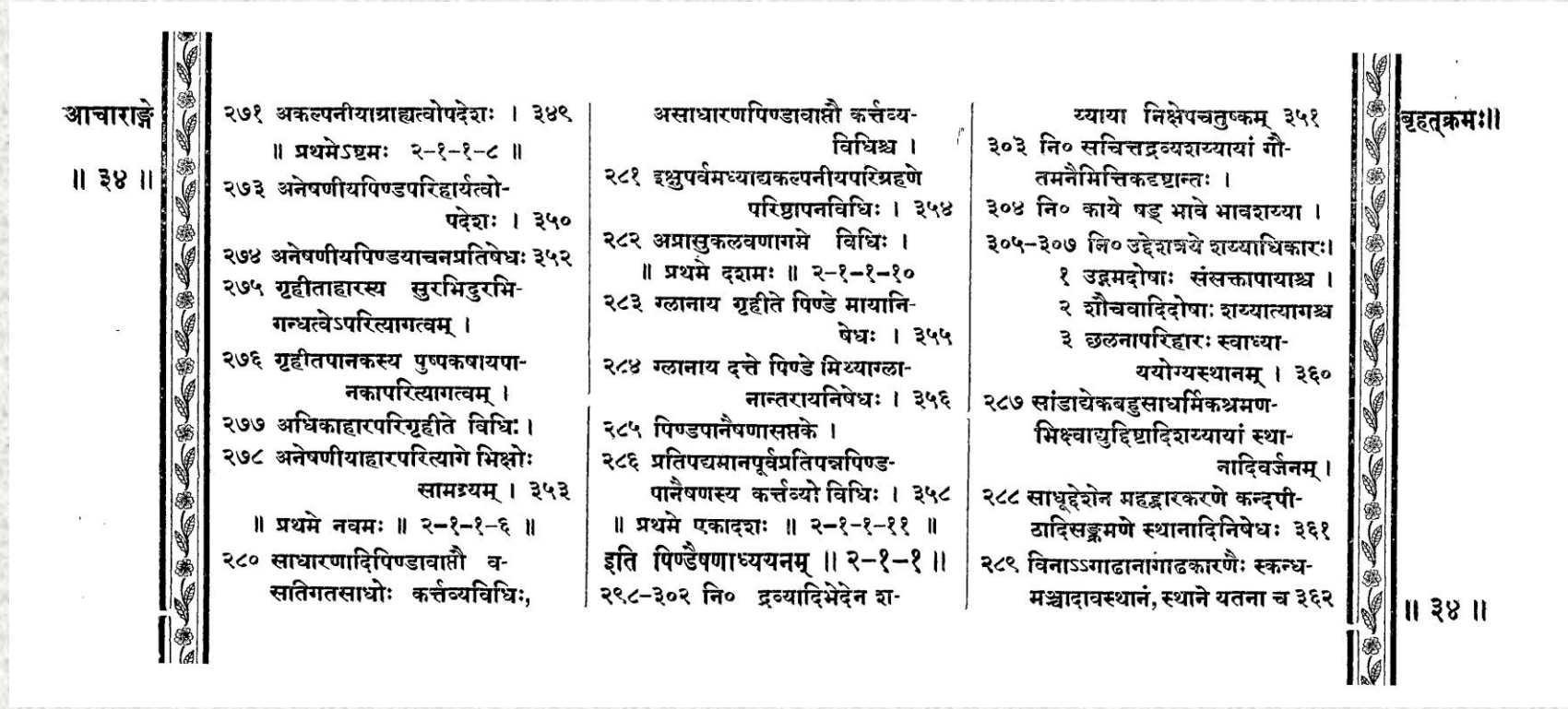
बृहत्क्रमः॥

॥ ३३ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



आचाराङ्गे ॥ ३४ ॥

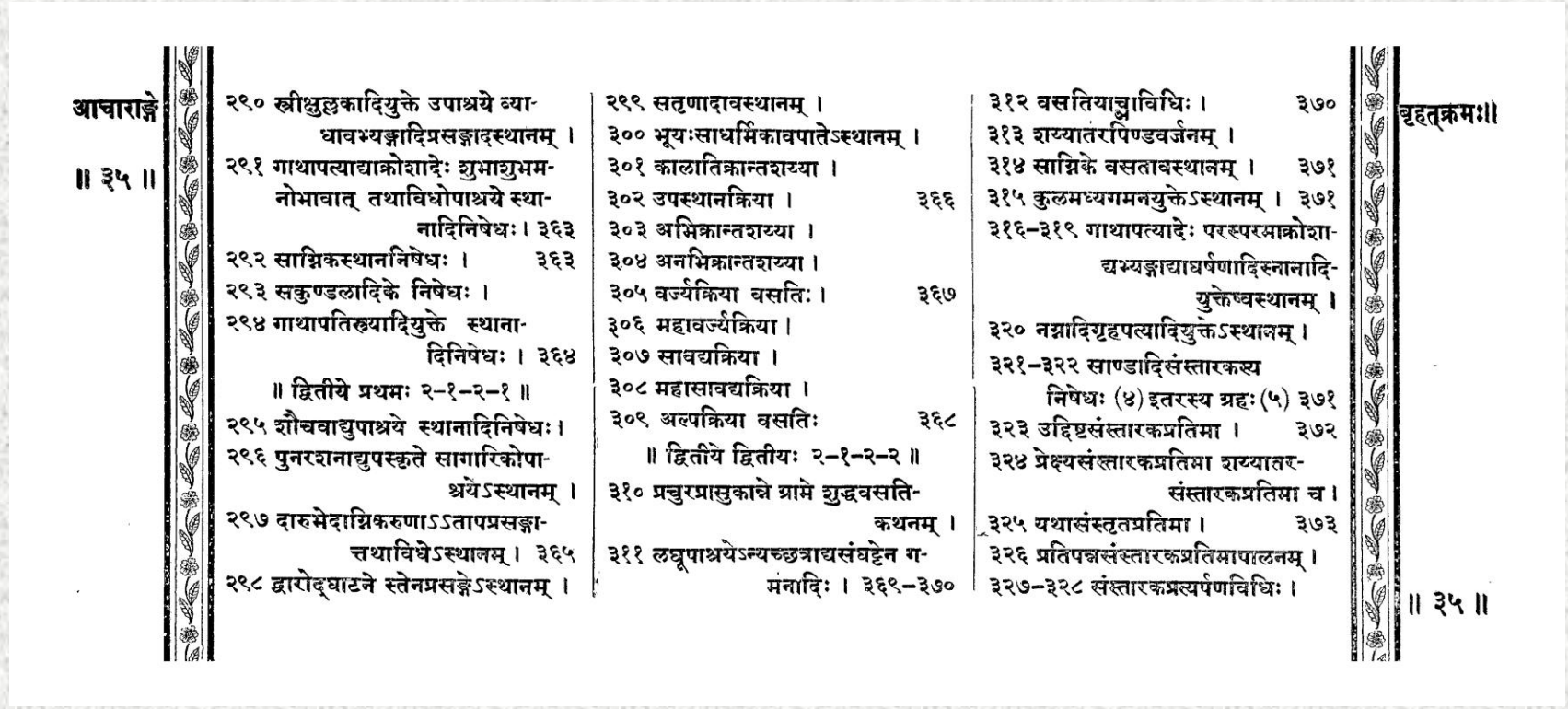
२७१ अकल्पनीयाग्राह्यत्वोपदेशः । ३४९
॥ प्रथमेऽष्टमः २-१-१-८ ॥
२७३ अनेषणीयपिण्डपरिहार्यत्वोपदेशः । ३५०
२७४ अनेषणीयपिण्डयाचनप्रतिषेधः ३५२
२७५ गृहीताहारस्य सुरभिदुरभिगन्धत्वेऽपरित्यागत्वम् ।
२७६ गृहीतपानकस्य पुष्पकषायपानकापरित्यागत्वम् ।
२७७ अधिकाहारपरिगृहीते विधिः ।
२७८ अनेषणीयाहारपरित्यागे भिक्षोः सामग्र्यम् । ३५३
॥ प्रथमे नवमः ॥ २-१-१-६ ॥
२८० साधारणादिपिण्डावासौ वसतिगतसाधोः कर्त्तव्यविधिः, असाधारणपिण्डावासौ कर्त्तव्यविधिश्च ।
२८१ इक्षुपर्वमध्याद्यकल्पनीयपरिग्रहणे परिष्ठापनविधिः । ३५४
२८२ अप्रासुकलवणागमे विधिः ।
॥ प्रथमे दशमः ॥ २-१-१-१०
२८३ ग्लानाय गृहीते पिण्डे मायानिषेधः । ३५५
२८४ ग्लानाय दत्ते पिण्डे मिथ्याग्लानान्तरायनिषेधः । ३५६
२८५ पिण्डपानैषणासप्तके ।
२८६ प्रतिपद्यमानपूर्वप्रतिपन्नपिण्डपानैषणस्य कर्त्तव्यो विधिः । ३५८
॥ प्रथमे एकादशः ॥ २-१-१-११ ॥
इति पिण्डैषणाध्ययनम् ॥ २-१-१ ॥
२९८-३०२ नि० द्रव्यादिभेदेन शय्या निक्षेपचतुष्कम् ३५१
३०३ नि० सचित्तद्रव्यशय्यायां गौतमनैमित्तिकदृष्टान्तः ।
३०४ नि० काये षड् भावे भावशय्या ।
३०५-३०७ नि० उद्देशत्रये शय्याधिकारः।
१ उद्गमदोषाः संसक्तापायाश्च ।
२ शौचवादिदोषाः शय्यात्यागश्च
३ छलनापरिहारः स्वाध्याययोग्यस्थानम् । ३६०
२८७ सांडाद्येकबहुसाधर्मिकश्रमणभिक्ष्वायुर्दिष्टादिशय्यायां स्थानादिवर्जनम् ।
२८८ साधूद्देशेन महद्द्वारकरणे कन्दपीठादिसङ्क्रमणे स्थानादिनिषेधः ३६१
२८९ विनाऽऽगाढानागाढकारणैः स्कन्धमञ्चादावस्थानं, स्थाने यतना च ३६२

बृहत्क्रमः॥
॥ ३४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ ३५ ॥

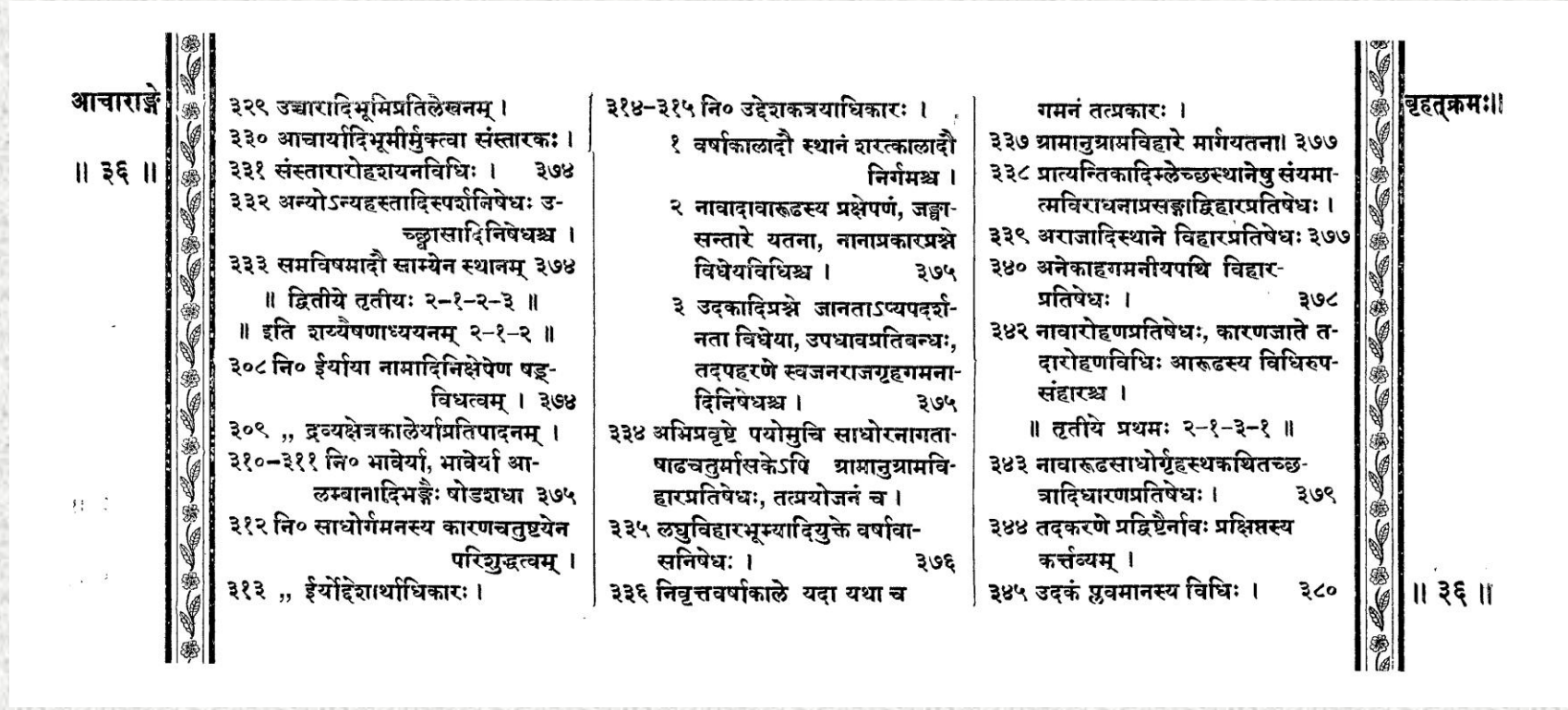
२९० स्त्रीक्षुल्लकादियुक्ते उपाश्रये व्याघावभ्यङ्गादिप्रसङ्गादस्थानम् ।
२९१ गाथापत्याद्याक्रोशादेः शुभाशुभमनोभावात् तथाविधोपाश्रये स्थानादिनिषेधः । ३६३
२९२ साग्निकस्थाननिषेधः । ३६३
२९३ सकुण्डलादिके निषेधः ।
२९४ गाथापतिस्त्र्यादियुक्ते स्थानादिनिषेधः । ३६४
॥ द्वितीये प्रथमः २-१-२-१ ॥
२९५ शौचवाद्युपाश्रये स्थानादिनिषेधः ।
२९६ पुनरशनाद्युपस्कृते सागारिकोपाश्रयेऽस्थानम् ।
२९७ दारुभेदाग्निकरुणाऽऽतापप्रसङ्गात्तथाविधेऽस्थानम् । ३६५
२९८ द्वारोद्घाटने स्तेनप्रसङ्गेऽस्थानम् ।
२९९ सतृणादावस्थानम् ।
३०० भूयःसाधर्मिकावपातेऽस्थानम् ।
३०१ कालातिक्रान्तशय्या ।
३०२ उपस्थानक्रिया । ३६६
३०३ अभिक्रान्तशय्या ।
३०४ अनभिक्रान्तशय्या ।
३०५ वर्ज्यक्रिया वसतिः । ३६७
३०६ महावर्ज्यक्रिया ।
३०७ सावद्यक्रिया ।
३०८ महासावद्यक्रिया ।
३०९ अल्पक्रिया वसतिः ३६८
॥ द्वितीये द्वितीयः २-१-२-२ ॥
३१० प्रचुरप्रासुकान्ने ग्रामे शुद्धवसतिकथनम् ।
३११ लघूपाश्रयेऽन्यच्छत्राद्यसंघट्टेन गमनादिः । ३६९-३७०
३१२ वसतियाच्ञाविधिः । ३७०
३१३ शय्यातरपिण्डवर्जनम् ।
३१४ साग्निके वसतावस्थानम् । ३७१
३१५ कुलमध्यगमनयुक्तेऽस्थानम् । ३७१
३१६-३१९ गाथापत्यादेः परस्परमाक्रोशाद्यभ्यङ्गाद्याघर्षणादिस्नानादियुक्तेष्वस्थानम् ।
३२० नग्नादिगृहपत्यादियुक्तेऽस्थानम् ।
३२१-३२२ साण्डादिसंस्तारकस्य निषेधः (४) इतरस्य ग्रहः (५) ३७१
३२३ उद्दिष्टसंस्तारकप्रतिमा । ३७२
३२४ प्रेक्ष्यसंस्तारकप्रतिमा शय्यातरसंस्तारकप्रतिमा च ।
३२५ यथासंस्तृतप्रतिमा । ३७३
३२६ प्रतिपन्नसंस्तारकप्रतिमापालनम् ।
३२७-३२८ संस्तारकप्रत्यर्पणविधिः ।

बृहत्क्रमः॥ ॥ ३५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ ३६ ॥

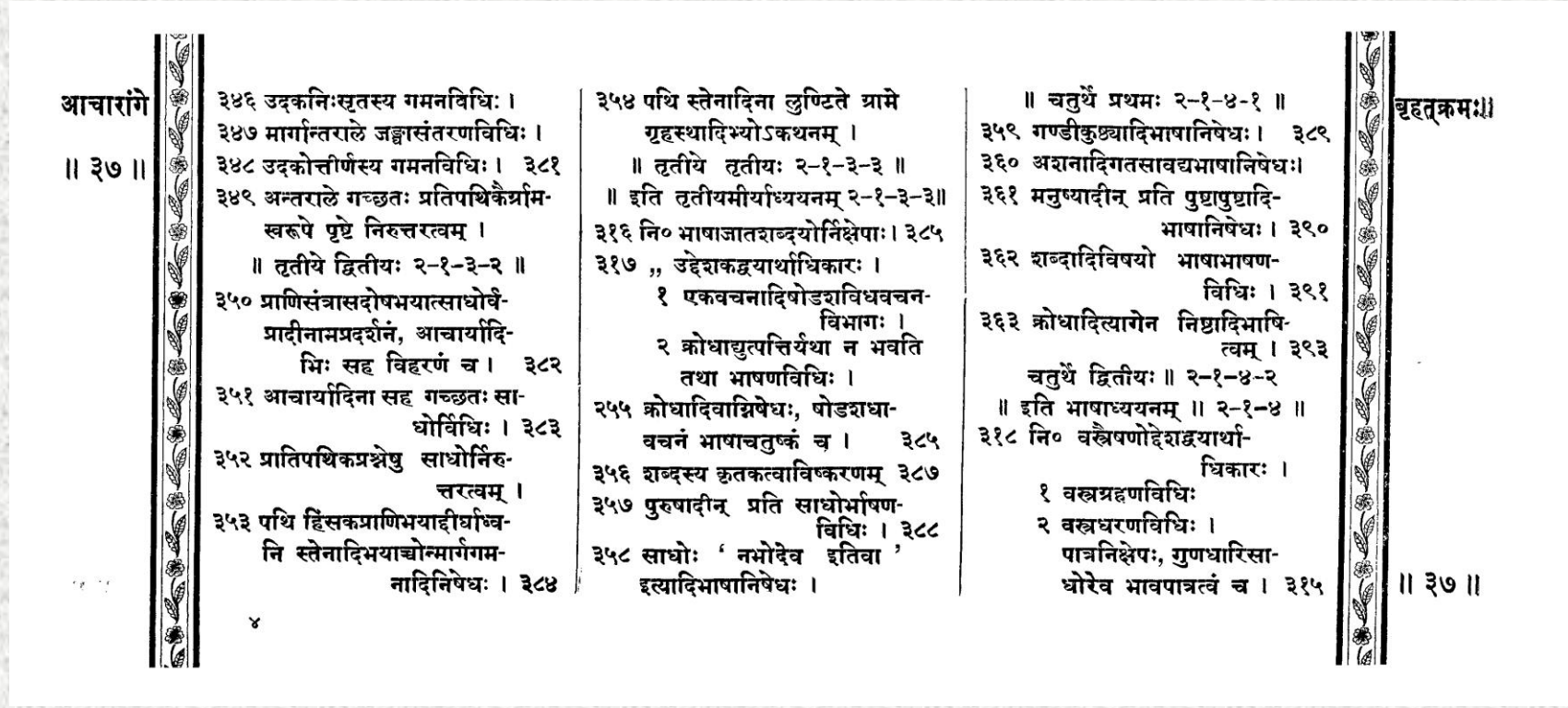
३२९ उच्चारादिभूमिप्रतिलेखनम् ।
३३० आचार्यादिभूमीर्मुक्त्वा संस्तारकः ।
३३१ संस्तारारोहशयनविधिः । ३७४
३३२ अन्योऽन्यहस्तादिस्पर्शनिषेधः उच्छ्वासादिनिषेधश्च ।
३३३ समविषमादौ साम्येन स्थानम् ३७४
॥ द्वितीये तृतीयः २-१-२-३ ॥
॥ इति शय्यैषणाध्ययनम् २-१-२ ॥
३०८ नि० ईर्याया नामादिनिक्षेपेण षड्विधत्वम् । ३७४
३०९ ,, द्रव्यक्षेत्रकालेर्याप्रतिपादनम् ।
३१०-३११ नि० भावेर्या, भावेर्या आलम्बनादिभङ्गैः षोडशधा ३७५
३१२ नि० साधोर्गमनस्य कारणचतुष्टयेन परिशुद्धत्वम् ।
३१३ ,, ईर्योद्देशार्थाधिकारः ।
३१४-३१५ नि० उद्देशकत्रयाधिकारः ।
१ वर्षाकालादौ स्थानं शरत्कालादौ निर्गमश्च ।
२ नावादावारूढस्य प्रक्षेपणं, जङ्घासन्तारे यतना, नानाप्रकारप्रश्ने विधेयविधिश्च । ३७५
३ उदकादिप्रश्ने जानताऽप्यपदर्शनता विधेया, उपधावप्रतिबन्धः, तदपहरणे स्वजनराजगृहगमनादिनिषेधश्च । ३७५
३३४ अभिप्रवृष्टे पयोमुचि साधोरनागतषाढचतुर्मासकेऽपि ग्रामानुग्रामविहारप्रतिषेधः, तत्प्रयोजनं च ।
३३५ लघुविहारभूम्यादियुक्ते वर्षावासनिषेधः । ३७६
३३६ निवृत्तवर्षाकाले यदा यथा च गमनं तत्प्रकारः ।
३३७ ग्रामानुग्रामविहारे मार्गयतना। ३७७
३३८ प्रात्यन्तिकादिम्लेच्छस्थानेषु संयमात्मविराधनाप्रसङ्गाद्विहारप्रतिषेधः ।
३३९ अराजादिस्थाने विहारप्रतिषेधः ३७७
३४० अनेकाहगमनीयपथि विहारप्रतिषेधः । ३७८
३४२ नावारोहणप्रतिषेधः, कारणजाते तदारोहणविधिः आरूढस्य विधिरुपसंहारश्च ।
॥ तृतीये प्रथमः २-१-३-१ ॥
३४३ नावारूढसाधोर्गृहस्थकथितच्छत्रादिधारणप्रतिषेधः । ३७९
३४४ तदकरणे प्रद्विष्टैर्नावः प्रक्षिप्तस्य कर्त्तव्यम् ।
३४५ उदकं प्लवमानस्य विधिः । ३८०

बृहत्क्रमः॥ ॥ ३६ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘सवृत्तिक आगम सुत्ताणि’

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



आचारांगे

॥ ३७ ॥

३४६ उदकनिःसृतस्य गमनविधिः ।
३४७ मार्गान्तराले जङ्घासंतरणविधिः ।
३४८ उदकोत्तीर्णस्य गमनविधिः । ३८१
३४९ अन्तराले गच्छतः प्रतिपथिकैर्ग्राम-स्वरूपे पृष्टे निरुत्तरत्वम् ।
॥ तृतीये द्वितीयः २-१-३-२ ॥
३५० प्राणिसंत्रासदोषभयात्साधोर्वै-प्रादीनामप्रदर्शनं, आचार्यादि-भिः सह विहरणं च । ३८२
३५१ आचार्यादिना सह गच्छतः सा-धोर्विधिः । ३८३
३५२ प्रातिपथिकप्रश्नेषु साधोर्निरु-त्तरत्वम् ।
३५३ पथि हिंसकप्राणिभयाद्दीर्घाध्व-नि स्तेनादिभयाच्चोन्मार्गगम-नादिनिषेधः । ३८४

३५४ पथि स्तेनादिना लुण्टिते ग्रामे गृहस्थादिभ्योऽकथनम् ।
॥ तृतीये तृतीयः २-१-३-३ ॥
॥ इति तृतीयमीर्याध्ययनम् २-१-३-३॥
३१६ नि० भाषाजातशब्दयोर्निक्षेपाः । ३८५
३१७ ,, उद्देशकद्वयार्थाधिकारः ।
१ एकवचनादिषोडशविधवचन-विभागः ।
२ क्रोधाद्युत्पत्तिर्यथा न भवति तथा भाषणविधिः ।
३५५ क्रोधादिवाग्निषेधः, षोडशधा-वचनं भाषाचतुष्कं च । ३८५
३५६ शब्दस्य कृतकत्वाविष्करणम् ३८७
३५७ पुरुषादीन् प्रति साधोर्भाषण-विधिः । ३८८
३५८ साधोः ‘ नभोदेव इतिवा ’ इत्यादिभाषानिषेधः ।

॥ चतुर्थे प्रथमः २-१-४-१ ॥
३५९ गण्डीकुष्ठ्यादिभाषानिषेधः । ३८९
३६० अशनादिगतसावद्यभाषानिषेधः।
३६१ मनुष्यादीन् प्रति पुष्टापुष्टादि-भाषानिषेधः । ३९०
३६२ शब्दादिविषयो भाषाभाषण-विधिः । ३९१
३६३ क्रोधादित्यागेन निष्ठादिभाषि-त्वम् । ३९३
चतुर्थे द्वितीयः ॥ २-१-४-२
॥ इति भाषाध्ययनम् ॥ २-१-४ ॥
३१८ नि० वस्त्रैषणोद्देशद्वयार्था-धिकारः ।
१ वस्त्रग्रहणविधिः
२ वस्त्रधरणविधिः ।
पात्रनिक्षेपः, गुणधारिसा-धोरेव भावपात्रत्वं च । ३१५

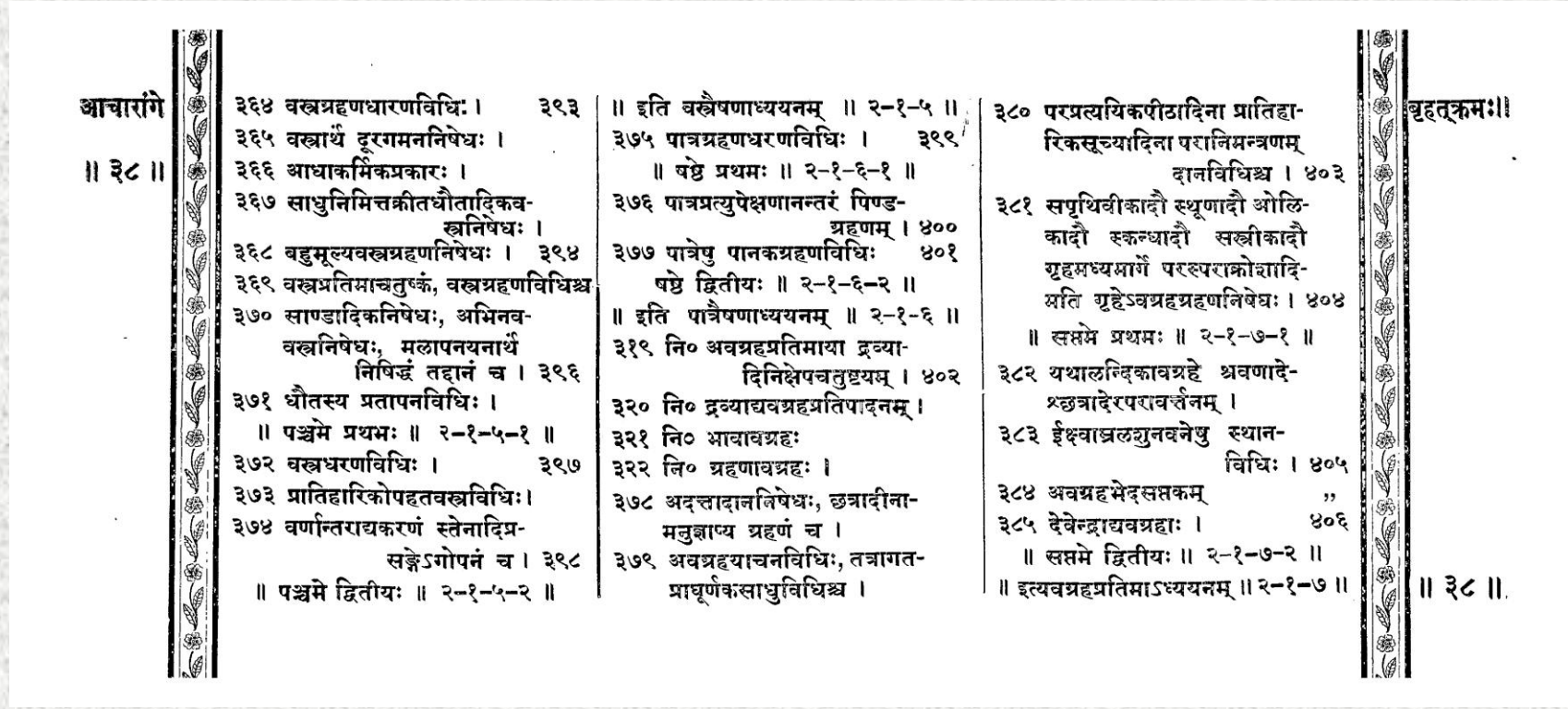
बृहत्क्रमः॥

॥ ३७ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



आचारांगे ॥ ३८ ॥

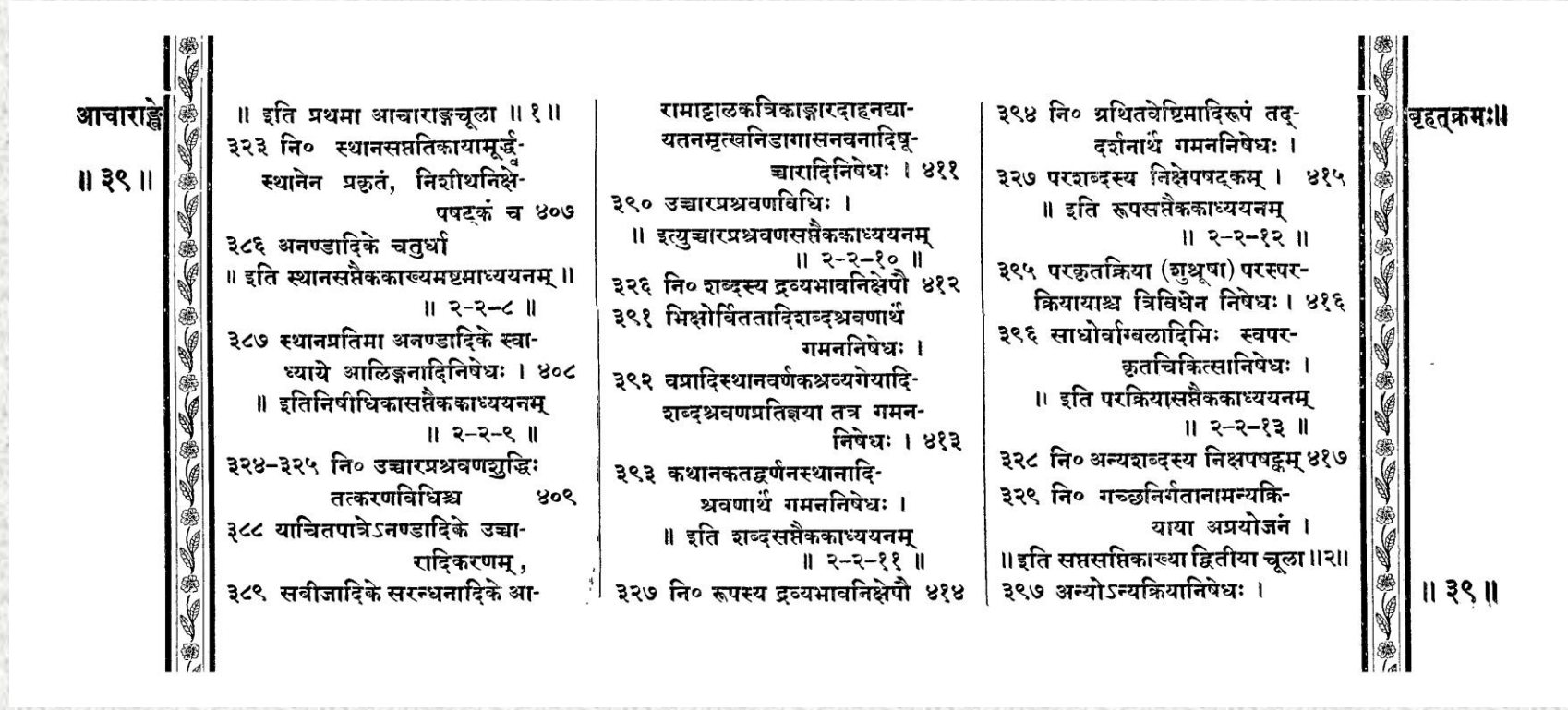
३६४ वस्त्रग्रहणधारणविधिः । ३९३
३६५ वस्त्रार्थं दूरगमननिषेधः ।
३६६ आधाकर्मिकप्रकारः ।
३६७ साधुनिमित्तक्रीतधौतादिकवस्त्रनिषेधः ।
३६८ बहुमूल्यवस्त्रग्रहणनिषेधः । ३९४
३६९ वस्त्रप्रतिमाश्चतुष्कं, वस्त्रग्रहणविधिश्च
३७० साण्डादिकनिषेधः, अभिनववस्त्रनिषेधः, मलापनयनार्थं निषिद्धं तद्दानं च । ३९६
३७१ धौतस्य प्रतापनविधिः ।
॥ पञ्चमे प्रथमः ॥ २-१-५-१ ॥
३७२ वस्त्रधरणविधिः । ३९७
३७३ प्रातिहारिकोपहृतवस्त्रविधिः।
३७४ वर्णान्तराद्यकरणं स्तेनादिप्रसङ्गेऽगोपनं च । ३९८
॥ पञ्चमे द्वितीयः ॥ २-१-५-२ ॥
॥ इति वस्त्रैषणाध्ययनम् ॥ २-१-५ ॥
३७५ पात्रग्रहणधरणविधिः । ३९९
॥ षष्ठे प्रथमः ॥ २-१-६-१ ॥
३७६ पात्रप्रत्युपेक्षणानन्तरं पिण्डग्रहणम् । ४००
३७७ पात्रेषु पानकग्रहणविधिः ४०१
षष्ठे द्वितीयः ॥ २-१-६-२ ॥
॥ इति पात्रैषणाध्ययनम् ॥ २-१-६ ॥
३१९ नि० अवग्रहप्रतिमाया द्रव्यादिनिक्षेपचतुष्टयम् । ४०२
३२० नि० द्रव्याद्यवग्रहप्रतिपादनम् ।
३२१ नि० भावावग्रहः
३२२ नि० ग्रहणावग्रहः ।
३७८ अदत्तादाननिषेधः, छत्रादीनामनुज्ञाप्य ग्रहणं च ।
३७९ अवग्रहयाचनविधिः, तत्रागतप्राघूर्णकसाधुविधिश्च ।
३८० परप्रत्ययिकपीठादिना प्रातिहारिकसूच्यादिना परानिमन्त्रणम् दानविधिश्च । ४०३
३८१ सपृथिवीकादौ स्थूणादौ ओलिकादौ स्कन्धादौ सस्त्रीकादौ गृहमध्यमार्गे परस्पराक्रोशादिसति गृहेऽवग्रहग्रहणनिषेधः । ४०४
॥ सप्तमे प्रथमः ॥ २-१-७-१ ॥
३८२ यथालन्दिकावग्रहे श्रवणादेश्छत्रादेरपरावर्त्तनम् ।
३८३ ईक्ष्वाम्रलशुनवनेषु स्थानविधिः । ४०५
३८४ अवग्रहभेदसप्तकम् ,,
३८५ देवेन्द्राद्यवग्रहाः । ४०६
॥ सप्तमे द्वितीयः ॥ २-१-७-२ ॥
॥ इत्यवग्रहप्रतिमाऽध्ययनम् ॥ २-१-७ ॥

बृहत्क्रमः॥ ॥ ३८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ ३९ ॥

॥ इति प्रथमा आचाराङ्गचूला ॥ १ ॥
३२३ नि० स्थानसप्ततिकायामूर्द्ध्व-स्थानेन प्रकृतं, निशीथनिक्षे- षषट्कं च ४०७
३८६ अनण्डादिके चतुर्थो
॥ इति स्थानसप्तैककाख्यमष्टमाध्ययनम् ॥ ॥ २-२-८ ॥
३८७ स्थानप्रतिमा अनण्डादिके स्वा- ध्याये आलिङ्गनादिनिषेधः । ४०८
॥ इतिनिषीधिकासप्तैककाध्ययनम् ॥ २-२-९ ॥
३२४-३२५ नि० उच्चारप्रश्रवणशुद्धिः तत्करणविधिश्च ४०९
३८८ याचितपात्रेऽनण्डादिके उच्चा- रादिकरणम् ,
३८९ सबीजादिके सरन्धनादिके आ- रामाट्टालकत्रिकाङ्गारदाहनद्या- यतनमृत्खनिडागासनवनादिषू- च्चारादिनिषेधः । ४११
३९० उच्चारप्रश्रवणविधिः ।
॥ इत्युच्चारप्रश्रवणसप्तैककाध्ययनम् ॥ २-२-१० ॥
३२६ नि० शब्दस्य द्रव्यभावनिक्षेपौ ४१२
३९१ भिक्षोर्विततादिशब्दश्रवणार्थं गमननिषेधः ।
३९२ वप्रादिस्थानवर्णकश्रव्यगेयादि- शब्दश्रवणप्रतिज्ञया तत्र गमन- निषेधः । ४१३
३९३ कथानकतद्वर्णनस्थानादि- श्रवणार्थं गमननिषेधः ।
॥ इति शब्दसप्तैककाध्ययनम् ॥ २-२-११ ॥
३२७ नि० रूपस्य द्रव्यभावनिक्षेपौ ४१४
३९४ नि० ग्रथितवेष्टिमादिरूपं तद्- दर्शनार्थं गमननिषेधः ।
३२७ परशब्दस्य निक्षेपषट्कम् । ४१५
॥ इति रूपसप्तैककाध्ययनम् ॥ २-२-१२ ॥
३९५ परकृतक्रिया (शुश्रूषा) परस्पर- क्रियायाश्च त्रिविधेन निषेधः । ४१६
३९६ साधोर्वाग्बलादिभिः स्वपर- कृतचिकित्सानिषेधः ।
॥ इति परक्रियासप्तैककाध्ययनम् ॥ २-२-१३ ॥
३२८ नि० अन्यशब्दस्य निक्षपषट्कम् ४१७
३२९ नि० गच्छनिर्गतानामन्यक्रि- याया अप्रयोजनं ।
॥ इति सप्तसप्तिकाख्या द्वितीया चूला ॥२॥
३९७ अन्योऽन्यक्रियानिषेधः ।

बृहत्क्रमः॥ ॥ ३९ ॥

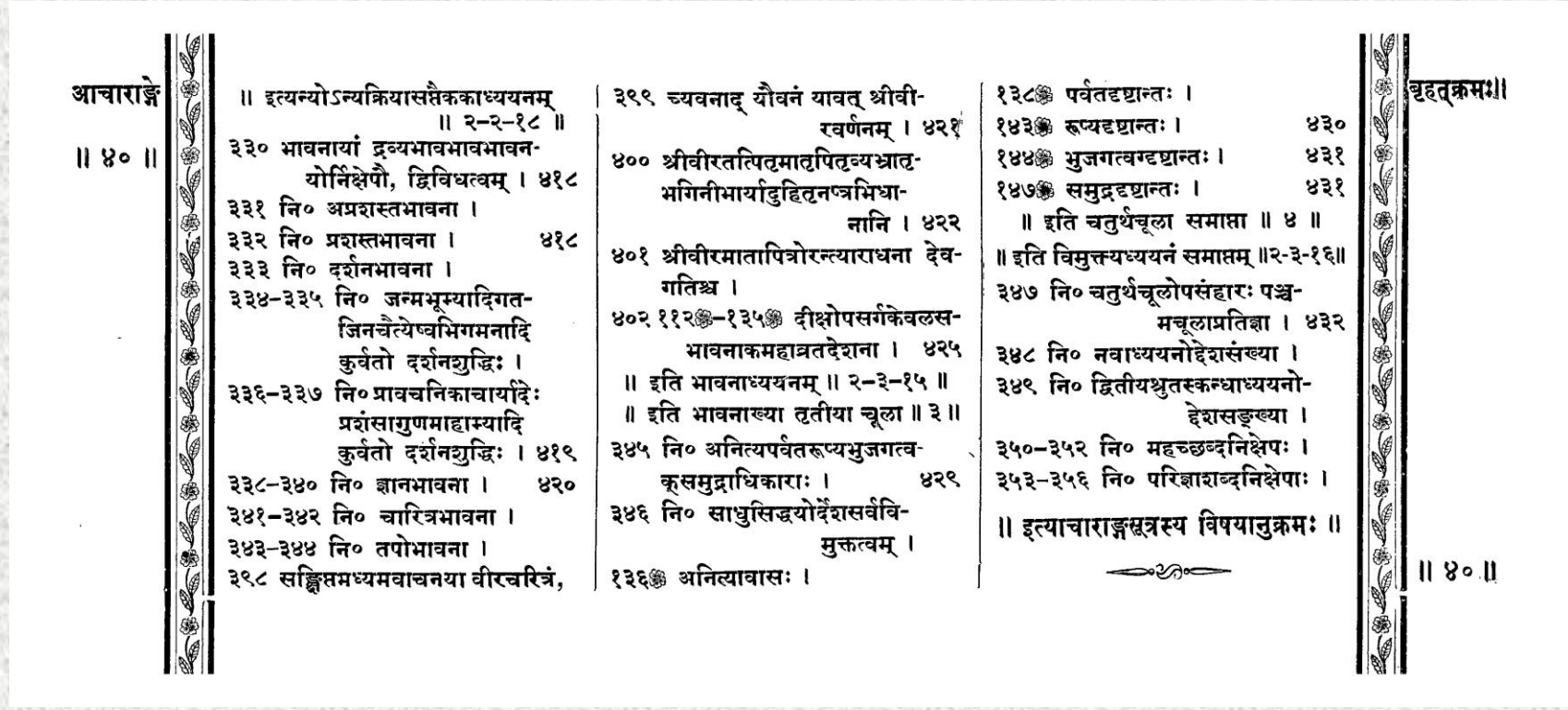
[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-१. “आचार”]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘सवृत्तिक आगम सुत्ताणि’



आचाराङ्गे ॥ ४० ॥

॥ इत्यन्योऽन्यक्रियासप्तैककाध्ययनम् ॥ २-२-१८ ॥
३३० भावनायां द्रव्यभावभावभावन-योर्निक्षेपौ, द्विविधत्वम् । ४१८
३३१ नि० अप्रशस्तभावना ।
३३२ नि० प्रशस्तभावना । ४१८
३३३ नि० दर्शनभावना ।
३३४-३३५ नि० जन्मभूम्यादिगत-जिनचैत्येष्वभिगमनादि कुर्वतो दर्शनशुद्धिः ।
३३६-३३७ नि० प्रावचनिकाचार्यादेः प्रशंसागुणमाहात्म्यादि कुर्वतो दर्शनशुद्धिः । ४१९
३३८-३४० नि० ज्ञानभावना । ४२०
३४१-३४२ नि० चारित्रभावना ।
३४३-३४४ नि० तपोभावना ।
३९८ सङ्क्षिप्तमध्यमवाचनया वीरचरित्रं,
३९९ च्यवनाद् यौवनं यावत् श्रीवीरवर्णनम् । ४२१
४०० श्रीवीरतत्पितृमातृपितृव्यभ्रातृभगिनीभार्यादुहितृनप्तृभिधानानि । ४२२
४०१ श्रीवीरमातापित्रोरन्त्याराधना देवगतिश्च ।
४०२ ११२-१३५ दीक्षोपसर्गकेवलसभावनाकमहाव्रतदेशना । ४२५
॥ इति भावनाध्ययनम् ॥ २-३-१५ ॥
॥ इति भावनाख्या तृतीया चूला ॥ ३ ॥
३४५ नि० अनित्यपर्वतरूप्यभुजगत्वकृसमुद्राधिकाराः । ४२९
३४६ नि० साधुसिद्धयोर्देशसर्वविमुक्तत्वम् ।
१३६ अनित्यावासः ।
१३८ पर्वतदृष्टान्तः ।
१४३ रूप्यदृष्टान्तः । ४३०
१४४ भुजगत्वग्दृष्टान्तः । ४३१
१४७ समुद्रदृष्टान्तः । ४३१
॥ इति चतुर्थचूला समाप्ता ॥ ४ ॥
॥ इति विमुक्त्यध्ययनं समाप्तम् ॥२-३-१६॥
३४७ नि० चतुर्थचूलोपसंहारः पञ्चमचूलाप्रतिज्ञा । ४३२
३४८ नि० नवाध्ययनोद्देशसंख्या ।
३४९ नि० द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशसङ्ख्या ।
३५०-३५२ नि० महच्छब्दनिक्षेपः ।
३५३-३५६ नि० परिज्ञाशब्दनिक्षेपाः ।
॥ इत्याचाराङ्गसूत्रस्य विषयानुक्रमः ॥

बृहत्क्रमः॥ ॥ ४० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

सूत्रकृतांगे विषयानुक्रमः ॥

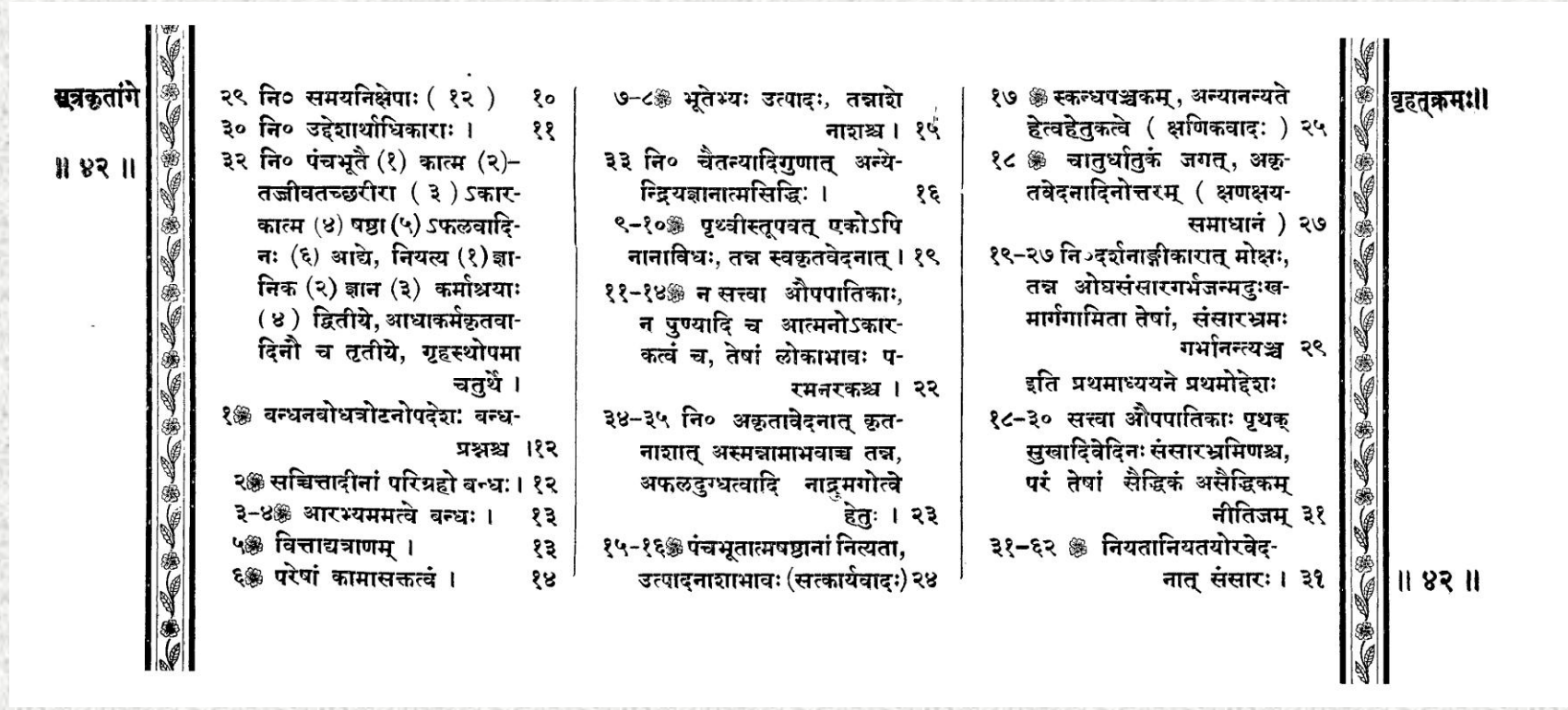
सूत्राणि ८२ सूत्रगाथाः ७२३* निर्युक्तिगाथाः २०५ ॥

मङ्गलम्, पूर्वसूरिव्याख्यातस्य व्याख्या उपोद्घातः । १
१ नि० मङ्गलादि
२ नि० सूत्रकृतो नामत्रयम् । २
३ नि० सूत्रनिक्षेपः (४) २ द्रव्ये पोण्डगादि, भावे संज्ञासंग्रह-वृत्तिजातिभेदम्, अन्त्ये कथ्य-गद्यपद्यगेयानि ।
४-१५ नि० करणकारककृतानां निक्षे-पाः(६) द्रव्यकरणे मूलोत्तराभ्यां प्रयोगः, व्यञ्जनोपस्काराभ्यां उत्तरम्, शरीराणि करणादीनि इन्द्रियाणि विषादिपरिणामो वा, संघातनादिभिरजीवे प्रयोगः, विद्युदादिषु विश्रसा क्षेत्रे इक्षु-क्षेत्रादि काले ववादि भावे प्रयो-गे उत्तरे कलासु श्रुतयौवनानि भोजनादिना वर्णादि च, विश्र-सा छायातपदुग्धादिषु । ५
१६ नि० त्रिविधयोगशुभध्यानाध्य-वसायस्वसमयैः प्रकृतम् । ६
१७-१९ नि० रचनायां स्थित्यनुभा-वबन्धाद्यवस्था सूत्रकृताङ्करण-रीतिः जिनस्य वाग्योगः, स्वाभा-विकप्राकृतभाषया कृतिश्च ग-णीनां । ६
२० नि० सूत्रकृतनिरुक्त्यन्तरम् । ७
२१ नि० बहूनामर्थानां सूचनात् सूत्रता । ७
२२ नि० श्रुतस्कन्धादिपरिमाणम् । ८
२३ गाथायाः (४) षोडशकस्य (६) श्रुतस्य (४) स्कन्धस्य (४) च निक्षेपाः ८
२४-२८ नि० आद्यश्रुतस्कन्धाध्य-नार्थाधिकाराः (उपक्रमादीनि) आनुपूर्वी च । ८-१०

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ४२ ॥

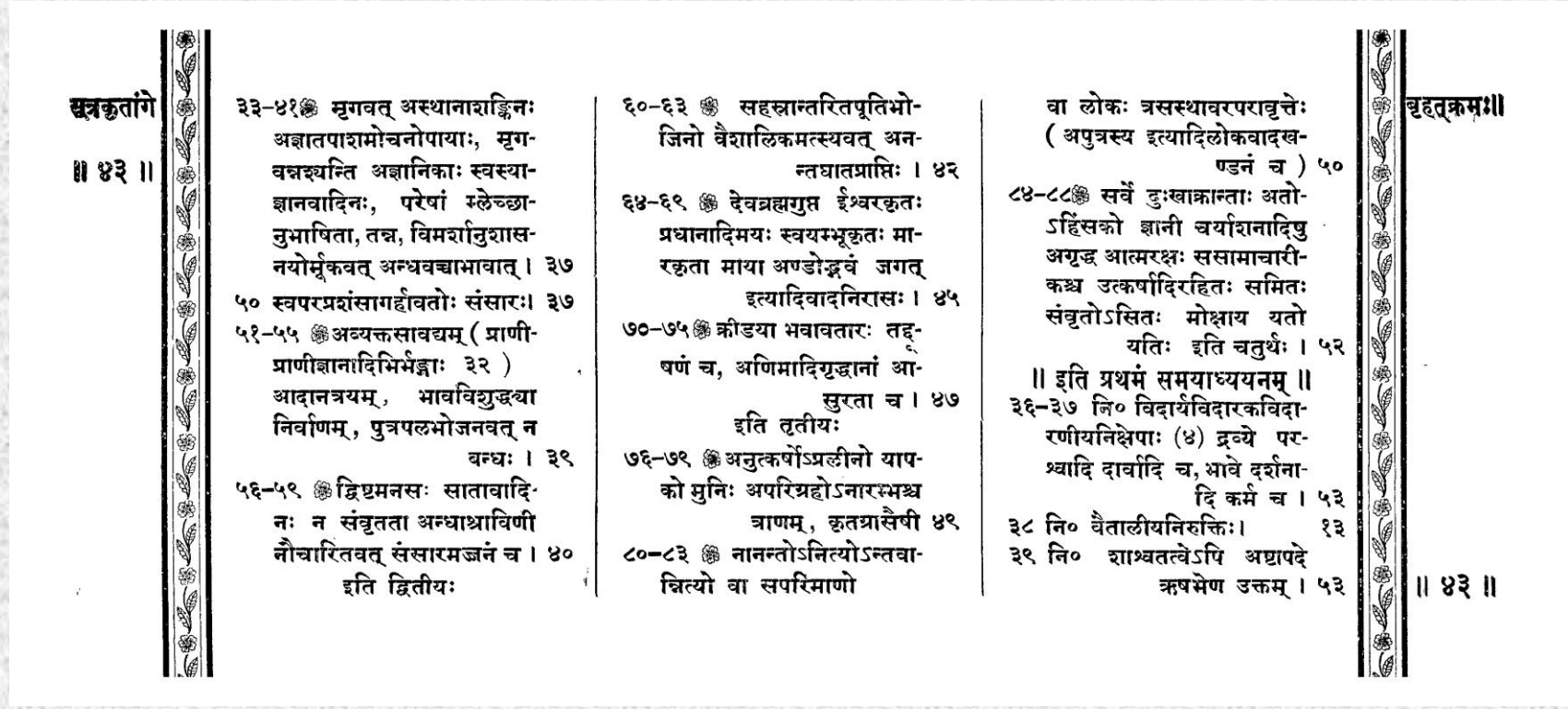
२९ नि० समयनिक्षेपाः (१२) १०
३० नि० उद्देशार्थाधिकाराः । ११
३२ नि० पंचभूतै (१) कात्म (२)-तज्जीवतच्छरीरा (३) ऽकारकात्म (४) षष्ठा (५) ऽफलवादिनः (६) आद्ये, नियत्य (१) ज्ञानिक (२) ज्ञान (३) कर्माश्रयाः (४) द्वितीये, आधाकर्मकृतवादिनौ च तृतीये, गृहस्थोपमा चतुर्थे । १२
१ बन्धनबोधत्रोटनोपदेशः बन्धप्रश्नश्च । १२
२ सच्चित्तादीनां परिग्रहो बन्धः । १२
३-४ आरम्भममत्वे बन्धः । १३
५ वित्ताद्यत्राणम् । १३
६ परेषां कामासक्तत्वं । १४
७-८ भूतेभ्यः उत्पादः, तन्नाशे नाशश्च । १५
३३ नि० चैतन्यादिगुणात् अन्येन्द्रियज्ञानात्मसिद्धिः । १६
९-१० पृथ्वीस्तूपवत् एकोऽपि नानाविधः, तन्न स्वकृतवेदनात् । १९
११-१४ न सत्त्वा औपपातिकाः, न पुण्यादि च आत्मनोऽकारकत्वं च, तेषां लोकाभावः परमनरकश्च । २२
३४-३५ नि० अकृतावेदनात् कृतनाशात् अस्मन्नामाभवाच्च तन्न, अफलदुग्धत्वादि नाद्रुमगोत्वे हेतुः । २३
१५-१६ पंचभूतात्मषष्ठानां नित्यता, उत्पादनाशाभावः (सत्कार्यवादः) २४
१७ स्कन्धपञ्चकम्, अन्यानन्यते हेत्वहेतुकत्वे (क्षणिकवादः) २५
१८ चातुर्धातुकं जगत्, अकृतवेदनादिनोत्तरम् (क्षणक्षयसमाधानं) २७
१९-२७ नि०दर्शनाङ्गीकारात् मोक्षः, तन्न ओघसंसारगर्भजन्मदुःखमार्गगामिता तेषां, संसारभ्रमः गर्भानन्त्यञ्च २९
इति प्रथमाध्ययने प्रथमोद्देशः
१८-३० सत्त्वा औपपातिकाः पृथक् सुखादिवेदिनः संसारभ्रमिणश्च, परं तेषां सैद्धिकं असैद्धिकम् नीतिजम् ३१
३१-६२ नियतानियतयोरवेदनात् संसारः । ३१

बृहत्क्रमः॥ ॥ ४२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ४३ ॥

३३–४१ मृगवत् अस्थानाशङ्किनः अज्ञातपाशमोचनोपायाः, मृगवन्नश्यन्ति अज्ञानिकाः स्वस्याज्ञानवादिनः, परेषां म्लेच्छानुभाषिता, तन्न, विमर्शानुशासनयोर्मूकवत् अन्धवच्चाभावात् । ३७

५० स्वपरप्रशंसागर्हावतोः संसारः। ३७

५१–५५ अव्यक्तसावद्यम् (प्राणीप्राणीज्ञानादिभिर्भङ्गाः ३२) आदानत्रयम्, भावविशुद्ध्या निर्वाणम्, पुत्रपलभोजनवत् न बन्धः । ३९

५६–५९ द्विष्टमनसः सातावादिनः न संवृतता अन्धाश्राविणी नौचारितवत् संसारमज्जनं च । ४०

इति द्वितीयः

६०–६२ सहस्रान्तरितपूतिभोजिनो वैशालिकमत्स्यवत् अनन्तघातप्राप्तिः । ४२

६४–६९ देवब्रह्मगुप्त ईश्वरकृतः प्रधानादिमयः स्वयम्भूकृतः मारकृता माया अण्डोद्भवं जगत् इत्यादिवादनिरासः । ४५

७०–७५ क्रीडया भवावतारः तद्दूषणं च, अणिमादिगृद्धानां आसुरता च । ४७

इति तृतीयः

७६–७९ अनुत्कर्षोऽप्रलीनो यापको मुनिः अपरिग्रहोऽनारम्भश्च त्राणम्, कृतत्रासैषी ४९

८०–८३ नानन्तोऽनित्योऽन्तवान्नित्यो वा सपरिमाणो वा लोकः त्रसस्थावरपरावृत्तेः (अपुत्रस्य इत्यादिलोकवादखण्डनं च) ५०

८४–८८ सर्वे दुःखाक्रान्ताः अतोऽहिंसको ज्ञानी चर्याशनादिषु अगृद्ध आत्मरक्षः ससामाचारीकश्च उत्कर्षादिरहितः समितः संवृतोऽसितः मोक्षाय यतो यतिः इति चतुर्थः । ५२

॥ इति प्रथमं समयाध्ययनम् ॥

३६–३७ नि० विदार्यविदारकविदारणीयनिक्षेपाः (४) द्रव्ये पृथ्वादि दार्वादि च, भावे दर्शनादि कर्म च । ५३

३८ नि० वैतालीयनिरुक्तिः। १३

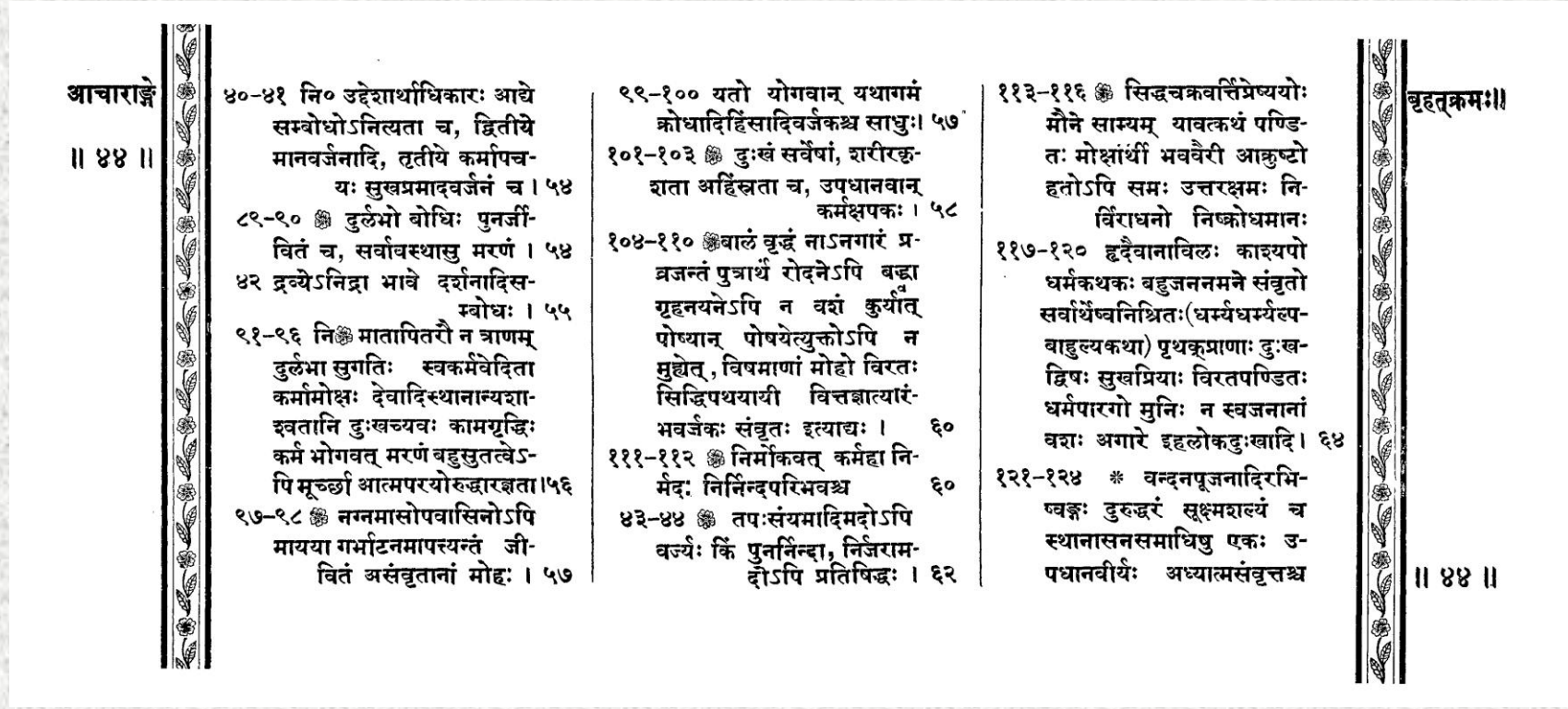
३९ नि० शाश्वतत्वेऽपि अष्टापदे ऋषभेण उक्तम् । ५३

बृहत्क्रमः॥ ॥ ४३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



आचाराङ्गे ॥ ४४ ॥

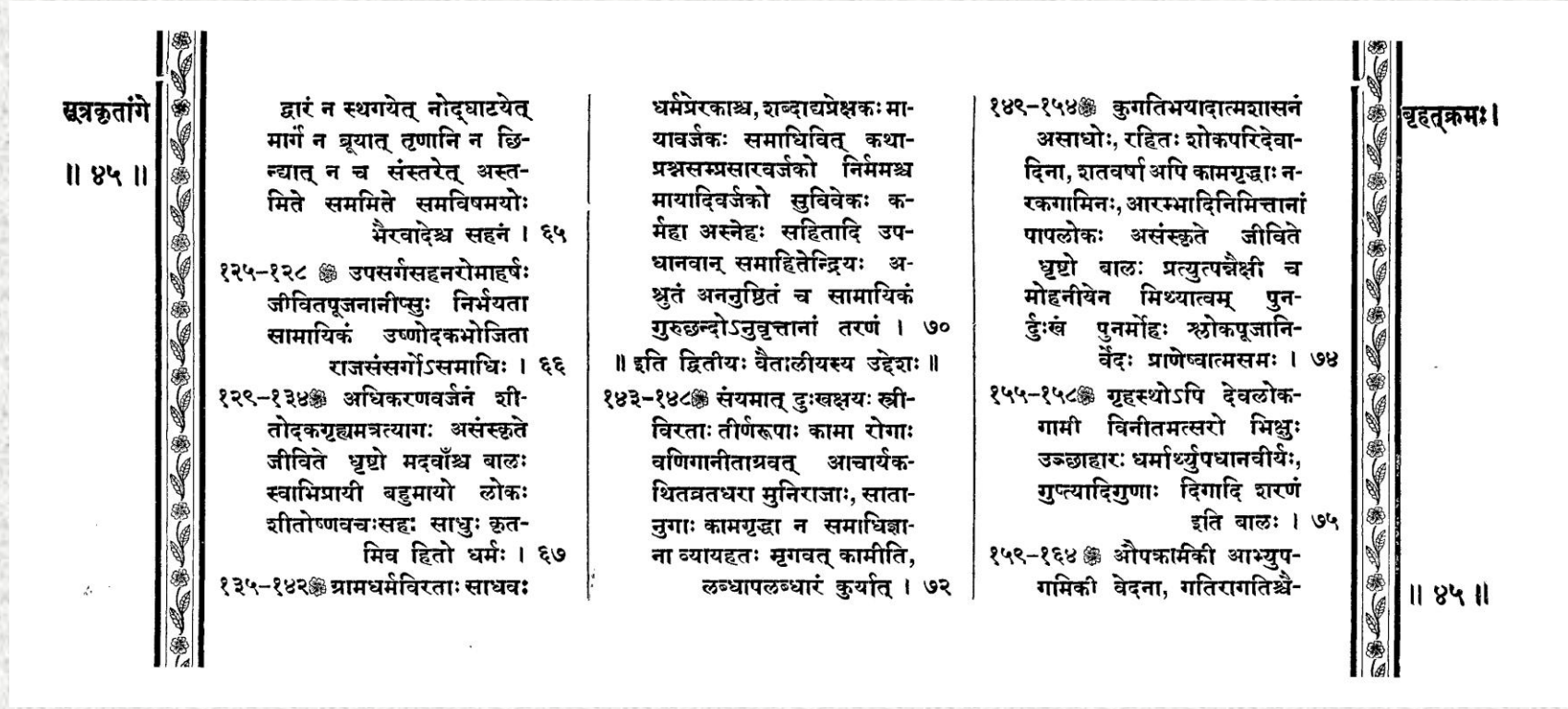
४०-४१ नि० उद्देशार्थाधिकारः आद्ये सम्बोधोऽनित्यता च, द्वितीये मानवर्जनादि, तृतीये कर्मापचयः सुखप्रमादवर्जनं च । ५४
८९-९० ❀ दुर्लभो बोधिः पुनर्जीवितं च, सर्वावस्थासु मरणं । ५४
४२ द्रव्येऽनिद्रा भावे दर्शनादिसम्बोधः । ५५
९१-९६ नि❀ मातापितरौ न त्राणम् दुर्लभा सुगतिः स्वकर्मवेदिता कर्मामोक्षः देवादिस्थानान्यशाश्वतानि दुःखच्यवः कामगृद्धिः कर्म भोगवत् मरणं बहुसुतत्वेऽपि मूर्च्छा आत्मपरयोरुद्धारज्ञता।५६
९७-९८ ❀ नग्नमासोपवासिनोऽपि मायया गर्भाटनमापत्स्यन्तं जीवितं असंवृतानां मोहः । ५७
९९-१०० यतो योगवान् यथागमं क्रोधादिहिंसादिवर्जकश्च साधुः। ५७
१०१-१०३ ❀ दुःखं सर्वेषां, शरीरकृशता अहिंस्रता च, उपधानवान् कर्मक्षपकः । ५८
१०४-११० ❀बालं वृद्धं नाऽनगारं प्रव्रजन्तं पुत्रार्थं रोदनेऽपि बद्ध्वा गृहनयनेऽपि न वशं कुर्यात् पोष्यान् पोषयेत्युक्तोऽपि न मुह्येत्, विषमाणां मोहो विरतः सिद्धिपथयायी वित्तज्ञात्यारंभवर्जकः संवृतः इत्याद्यः । ६०
१११-११२ ❀ निर्मोकवत् कर्महा निर्मदः निर्निन्दपरिभवश्च ६०
४३-४४ ❀ तपःसंयमादिमदोऽपि वर्ज्यः किं पुनर्निन्दा, निर्जरामदोऽपि प्रतिषिद्धः । ६२
११३-११६ ❀ सिद्धचक्रवर्त्तिप्रेष्ययोः मौने साम्यम् यावत्कथं पण्डितः मोक्षार्थी भववैरी आक्रुष्टो हतोऽपि समः उत्तरक्षमः निर्विराधनो निष्क्रोधमानः
११७-१२० हृदैवानाविलः काश्यपो धर्मकथकः बहुजननमने संवृतो सर्वार्थेष्वनिश्रितः(धर्म्यधर्म्यल्पबाहुल्यकथा) पृथक्प्राणाः दुःखद्विषः सुखप्रियाः विरतपण्डितः धर्मपारगो मुनिः न स्वजनानां वशः अगारे इहलोकदुःखादि। ६४
१२१-१२४ * वन्दनपूजनादिरभिष्वङ्गः दुरुद्धरं सूक्ष्मशल्यं च स्थानासनसमाधिषु एकः उपधानवीर्यः अध्यात्मसंवृत्तश्च

बृहत्क्रमः॥ ॥ ४४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ४५ ॥

द्वारं न स्थगयेत् नोद्घाटयेत् मार्गं न ब्रूयात् तृणानि न छिन्द्यात् न च संस्तरेत् अस्तमिते सममिते समविषमयोः भैरवादेश्च सहनं । ६५

१२५-१२८ ❀ उपसर्गसहनरोमाहर्षः जीवितपूजनानीप्सुः निर्भयता सामायिकं उष्णोदकभोजिता राजसंसर्गोऽसमाधिः । ६६

१२९-१३४❀ अधिकरणवर्जनं शीतोदकगृह्यमत्रत्यागः असंस्कृते जीविते धृष्टो मदवाँश्च बालः स्वाभिप्रायी बहुमायो लोकः शीतोष्णवचःसहः साधुः कृतमिव हितो धर्मः । ६७

१३५-१४२❀ ग्रामधर्मविरताः साधवः धर्मप्रेरकाश्च, शब्दाद्यप्रेक्षकः मायावर्जकः समाधिवित् कथाप्रश्नसम्प्रसारवर्जको निर्ममश्च मायादिवर्जको सुविवेकः कर्महा अस्नेहः सहितादि उपधानवान् समाहितेन्द्रियः अश्रुतं अननुष्ठितं च सामायिकं गुरुछन्दोऽनुवृत्तानां तरणं । ७०

॥ इति द्वितीयः वैतालीयस्य उद्देशः ॥

१४३-१४८❀ संयमात् दुःखक्षयः स्त्रीविरताः तीर्णरूपाः कामा रोगाः वणिगानीताग्रवत् आचार्यकथितव्रतधरा मुनिराजाः, सातानुगाः कामगृद्धा न समाधिज्ञाना व्यायहतः मृगवत् कामीति, लब्धापलब्धारं कुर्यात् । ७२

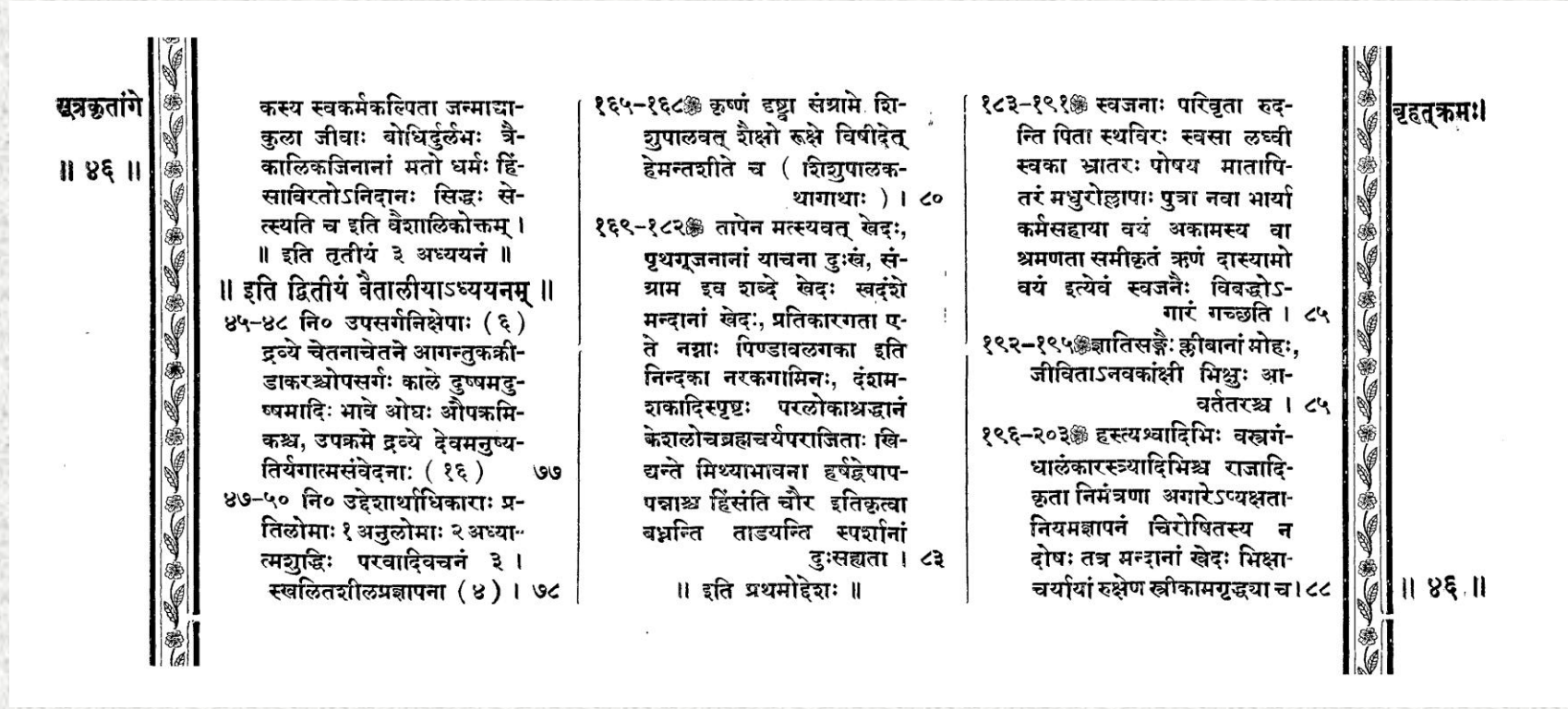
१४९-१५४❀ कुगतिभयादात्मशासनं असाधोः, रहितः शोकपरिदेवादिना, शतवर्षा अपि कामगृद्धाः नरकगामिनः, आरम्भादिनिमित्तानां पापलोकः असंस्कृते जीविते धृष्टो बालः प्रत्युत्पन्नैक्षी च मोहनीयेन मिथ्यात्वम् पुनर्दुःखं पुनर्मोहः श्लोकपूजानिवेदः प्राणेष्वात्मसमः । ७४

१५५-१५८❀ गृहस्थोऽपि देवलोकगामी विनीतमत्सरो भिक्षुः उञ्छाहारः धर्मार्थ्युपधानवीर्यः, गुप्त्यादिगुणाः दिगादि शरणं इति बालः । ७५

१५९-१६४ ❀ औपक्रामिकी आभ्युपगमिकी वेदना, गतिरागतिश्चै-

बृहत्क्रमः।

॥ ४५ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ४६ ॥

कस्य स्वकर्मकल्पिता जन्माद्याकुला जीवाः बोधिर्दुर्लभः त्रैकालिकजिनानां मतो धर्मः हिंसाविरतोऽनिदानः सिद्धः सेत्स्यति च इति वैशालिकोक्तम् ।
॥ इति तृतीयं ३ अध्ययनं ॥

॥ इति द्वितीयं वैतालीयाऽध्ययनम् ॥

४५-४८ नि० उपसर्गनिक्षेपाः (६) द्रव्ये चेतनाचेतने आगन्तुककीडाकरश्चोपसर्गः काले दुष्षमदुष्षमादिः भावे ओघः औपक्रमिकश्च, उपक्रमे द्रव्ये देवमनुष्यतिर्यगात्मसंवेदनाः (१६) ७७

४७-५० नि० उद्देशार्थाधिकाराः प्रतिलोमाः १ अनुलोमाः २ अध्यात्मशुद्धिः परवादिवचनं ३ । स्खलितशीलप्रज्ञापना (४) । ७८

१६५-१६८ कृष्णं दृष्ट्वा संग्रामे शिशुपालवत् शैक्षो रूक्षे विषीदेत् हेमन्तशीते च (शिशुपालकथागाथाः) । ८०

१६९-१८२ तापेन मत्स्यवत् खेदः, पृथग्जनानां याचना दुःखं, संग्राम इव शब्दे खेदः खदंशे मन्दानां खेदः, प्रतिकारगता एते नग्नाः पिण्डावलगका इति निन्दका नरकगामिनः, दंशमशकादिस्पृष्टः परलोकाश्रद्धानं केशलोचब्रह्मचर्यपराजिताः खिद्यन्ते मिथ्याभावना हर्षद्वेषापन्नाश्च हिंसंति चौर इतिकृत्वा बध्नन्ति ताडयन्ति स्पर्शानां दुःसह्यता । ८३

॥ इति प्रथमोद्देशः ॥

१८३-१९१ स्वजनाः परिवृता रुदन्ति पिता स्थविरः स्वसा लघ्वी स्वका भ्रातरः पोषय मातापितरं मधुरोल्लापाः पुत्रा नवा भार्या कर्मसहाया वयं अकामस्य वा श्रमणता समीकृतं ऋणं दास्यामो वयं इत्येवं स्वजनैः विबद्धोऽगारं गच्छति । ८५

१९२-१९५ ज्ञातिसङ्गैः क्लीबानां मोहः, जीविताऽनवकांक्षी भिक्षुः आवर्ततरश्च । ८५

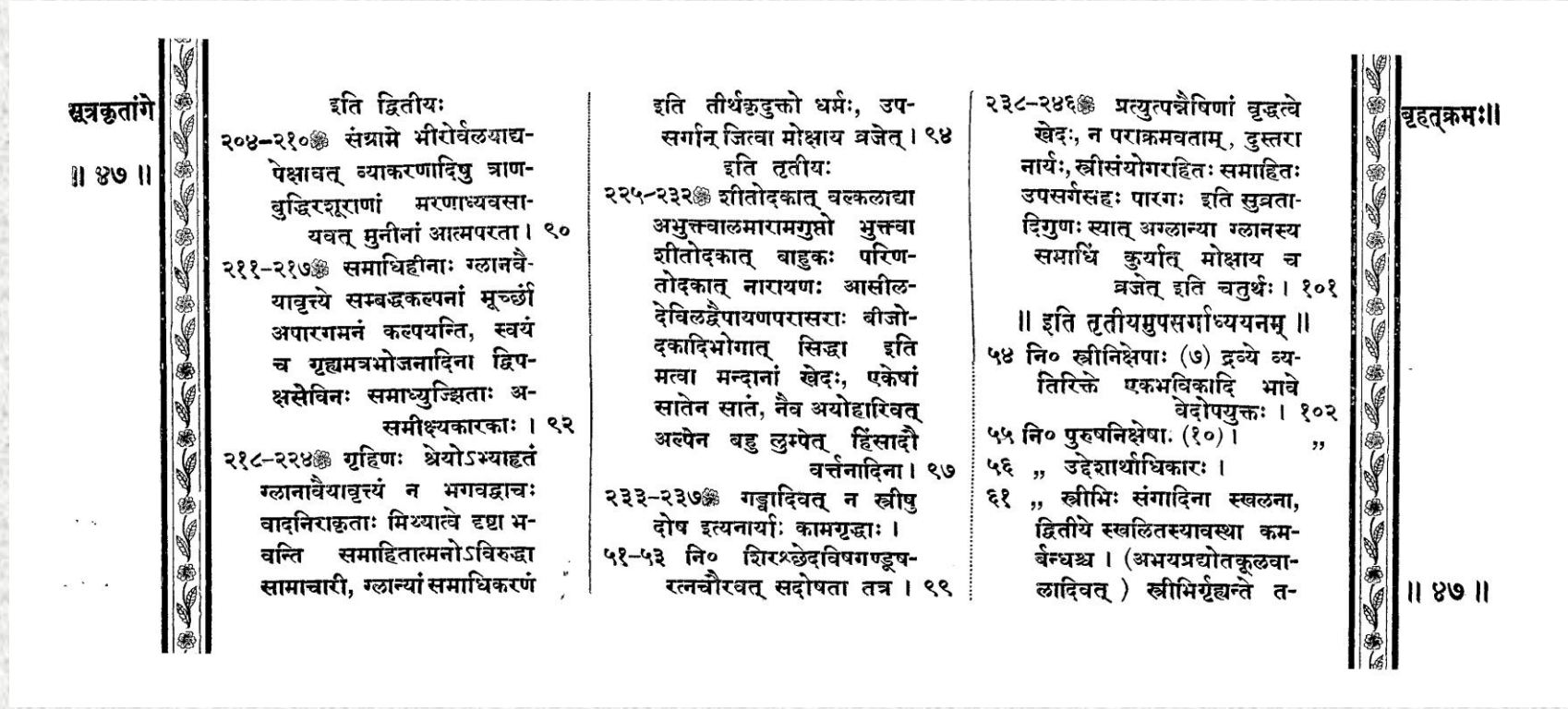
१९६-२०३ हस्त्यश्वादिभिः वस्त्रगंधालंकारस्त्र्यादिभिश्च राजादिकृता निमंत्रणा अगारेऽप्यक्षतानियमज्ञापनं चिरोषितस्य न दोषः तत्र मन्दानां खेदः भिक्षाचर्यायां रुक्षेण स्त्रीकामगृद्धया च । ८८

बृहत्क्रमः ॥ ४६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ४७ ॥

इति द्वितीयः

२०४–२१०❁ संग्रामे भीरोर्वलयाद्यपेक्षावत् व्याकरणादिषु त्राणबुद्धिरशूराणां मरणाध्यवसायवत् मुनीनां आत्मपरता। ९०

२११–२१७❁ समाधिहीनाः ग्लानवैयावृत्त्ये सम्बद्धकल्पनां मूच्छीं अपारगमनं कल्पयन्ति, स्वयं च गृह्यमत्रभोजनादिना द्विपक्षसेविनः समाध्युज्झिताः असमीक्ष्यकारकाः। ९२

२१८–२२४❁ गृहिणः श्रेयोऽभ्याहृतं ग्लानावैयावृत्त्यं न भगवद्वाचः वादनिराकृताः मिथ्यात्वे दृष्टा भवन्ति समाहितात्मनोऽविरुद्धा सामाचारी, ग्लान्यां समाधिकरणं इति तीर्थकृदुक्तो धर्मः, उपसर्गान् जित्वा मोक्षाय व्रजेत्। ९४

इति तृतीयः

२२५–२३२❁ शीतोदकात् वल्कलाद्या अभुक्त्वालमारामगुप्तो भुक्त्वा शीतोदकात् बाहुकः परिणतोदकात् नारायणः आसीलदेविलद्वैपायणपरासराः बीजोदकादिभोगात् सिद्धा इति मत्वा मन्दानां खेदः, एकेषां सातेन सातं, नैव अयोहारिवत् अल्पेन बहु लुम्पेत् हिंसादौ वर्त्तनादिना। ९७

२३३–२३७❁ गङ्वादिवत् न स्त्रीषु दोष इत्यनार्याः कामगृद्धाः।

५१–५३ नि० शिरश्छेदविषगण्डूषरत्नचौरवत् सदोषता तत्र। ९९

२३८–२४६❁ प्रत्युत्पन्नैषिणां वृद्धत्वे खेदः, न पराक्रमवताम्, दुस्तरा नार्यः, स्त्रीसंयोगरहितः समाहितः उपसर्गसहः पारगः इति सुव्रतादिगुणः स्यात् अग्लान्या ग्लानस्य समाधिं कुर्यात् मोक्षाय च व्रजेत् इति चतुर्थः। १०१

॥ इति तृतीयमुपसर्गाध्ययनम् ॥

५४ नि० स्त्रीनिक्षेपाः (७) द्रव्ये व्यतिरिक्ते एकभविकादि भावे वेदोपयुक्तः। १०२

५५ नि० पुरुषनिक्षेपा. (१०)। ,,

५६ ,, उद्देशार्थाधिकारः।

६१ ,, स्त्रीभिः संगादिना स्खलना, द्वितीये स्खलितस्यावस्था कर्मबन्धश्च। (अभयप्रद्योतकूलवालादिवत्) स्त्रीभिर्गृह्यन्ते तत्-

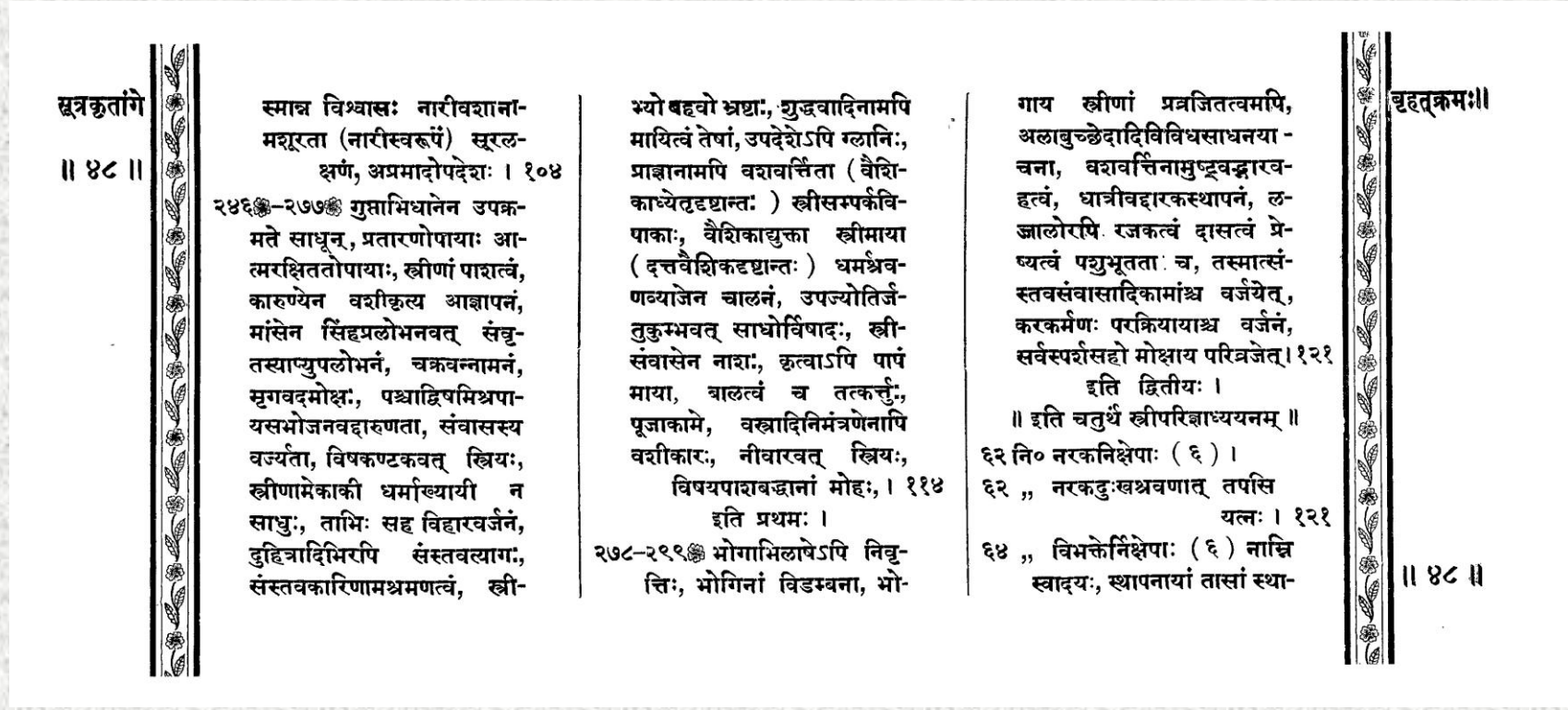
बृहत्क्रमः॥

॥ ४७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ४८ ॥

स्मान्न विश्वासः नारीवशानामशूरता (नारीस्वरूपं) सूरलक्षणं, अप्रमादोपदेशः । १०४

२४६–२७७ गुप्ताभिधानेन उपक्रमते साधून्, प्रतारणोपायाः आत्मरक्षिततोपायाः, स्त्रीणां पाशत्वं, कारुण्येन वशीकृत्य आज्ञापनं, मांसेन सिंहप्रलोभनवत् संवृतस्याप्युपलोभनं, चक्रवन्नामनं, मृगवदमोक्षः, पश्चाद्विषमिश्रपायसभोजनवदारुणता, संवासस्य वर्ज्यता, विषकण्टकवत् स्त्रियः, स्त्रीणामेकाकी धर्माख्यायी न साधुः, ताभिः सह विहारवर्जनं, दुहित्रादिभिरपि संस्तवत्यागः, संस्तवकारिणामश्रमणत्वं, स्त्रीभ्यो बहवो भ्रष्टाः, शुद्धवादिनामपि मायित्वं तेषां, उपदेशेऽपि ग्लानिः, प्राज्ञानामपि वशवर्त्तिता (वैशिकाध्येतृदृष्टान्तः) स्त्रीसम्पर्कविपाकाः, वैशिकाद्युक्ता स्त्रीमाया (दत्तवैशिकदृष्टान्तः) धर्मश्रवणव्याजेन चालनं, उपज्योतिर्जतुकुम्भवत् साधोर्विषादः, स्त्रीसंवासेन नाशः, कृत्वाऽपि पापं माया, बालत्वं च तत्कर्तुः, पूजाकामे, वस्त्रादिनिमंत्रणेनापि वशीकारः, नीवारवत् स्त्रियः, विषयपाशबद्धानां मोहः, । ११४

इति प्रथमः ।

२७८–२९९ भोगाभिलाषेऽपि निवृत्तिः, भोगिनां विडम्बना, भोगाय स्त्रीणां प्रव्रजितत्वमपि, अलाबुच्छेदादिविविधसाधनयाचना, वशवर्त्तिनामुष्ट्रवद्भारवहत्वं, धात्रीवद्दारकस्थापनं, लज्जालोरपि रजकत्वं दासत्वं प्रेष्यत्वं पशुभूतता च, तस्मात्संस्तवसंवासादिकामांश्च वर्जयेत्, करकर्मणः परक्रियायाश्च वर्जनं, सर्वस्पर्शसहो मोक्षाय परिव्रजेत्। १२१

इति द्वितीयः ।

॥ इति चतुर्थं स्त्रीपरिज्ञाध्ययनम् ॥

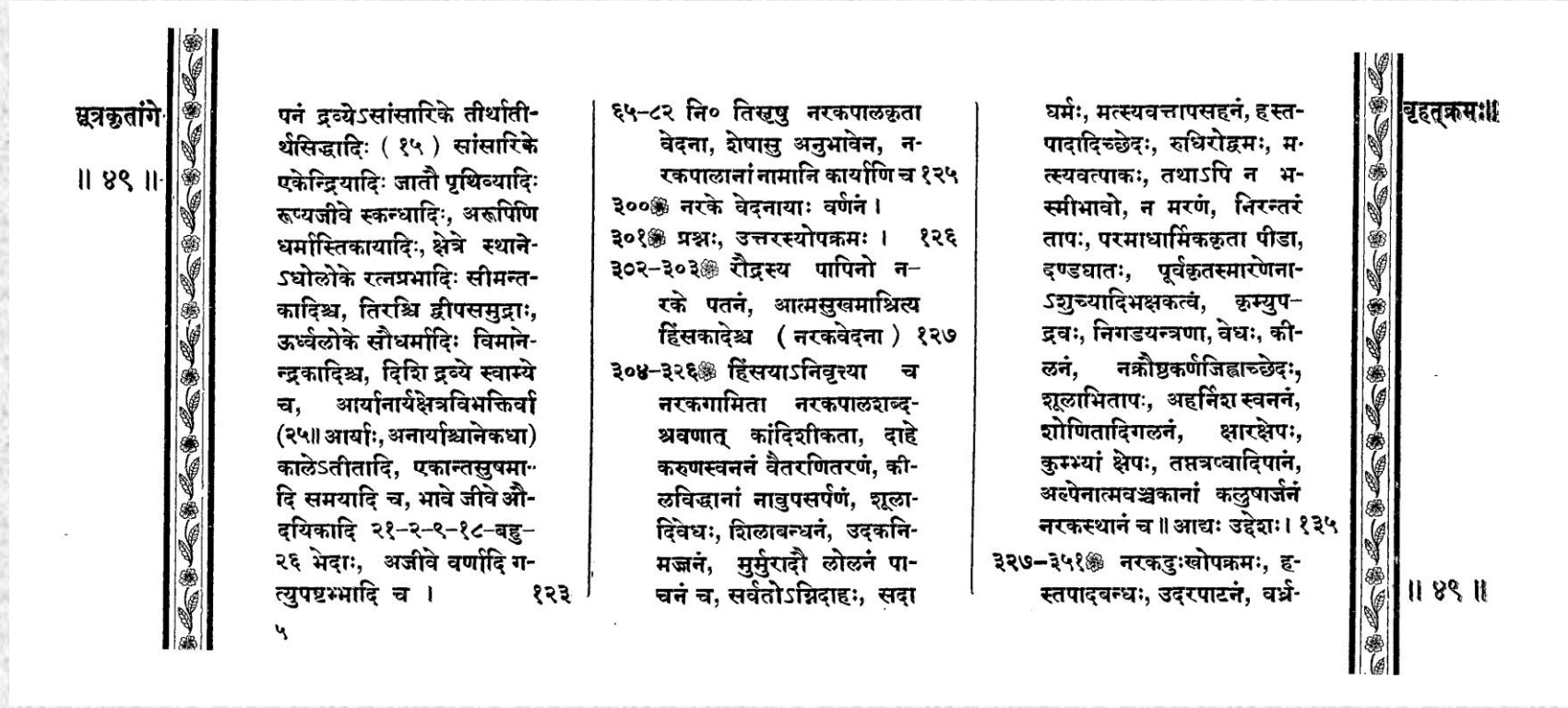
६२ नि० नरकनिक्षेपाः (६) ।

६२ ,, नरकदुःखश्रवणात् तपसि यत्नः । १२१

६४ ,, विभक्तेर्निक्षेपाः (६) नाम्नि स्वादयः, स्थापनायां तासां स्था-

बृहत्क्रमः॥

॥ ४८ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ४९ ॥

पनं द्रव्येऽसांसारिके तीर्थातीर्थसिद्धादिः (१५) सांसारिके एकेन्द्रियादिः जातौ पृथिव्यादिः रूप्यजीवे स्कन्धादिः, अरूपिणि धर्मास्तिकायादिः, क्षेत्रे स्थानेऽधोलोके रत्नप्रभादिः सीमन्तकादिश्च, तिरश्चि द्वीपसमुद्राः, ऊर्ध्वलोके सौधर्मादिः विमानेन्द्रकादिश्च, दिशि द्रव्ये स्वाम्ये च, आर्यानार्यक्षेत्रविभक्तिर्वा (२५॥ आर्याः, अनार्याश्चानेकधा) कालेऽतीतादि, एकान्तसुषमादि समयादि च, भावे जीवे औदयिकादि २१-२-९-१८-बहु-२६ भेदाः, अजीवे वर्णादि गत्युपष्टम्भादि च । १२३

५

६५-८२ नि० तिसृषु नरकपालकृता वेदना, शेषासु अनुभावेन, नरकपालानां नामानि कार्याणि च १२५

३००❁ नरके वेदनायाः वर्णनं ।

३०१❁ प्रश्नः, उत्तरस्योपक्रमः । १२६

३०२-३०३❁ रौद्रस्य पापिनो नरके पतनं, आत्मसुखमाश्रित्य हिंसकादेश्च (नरकवेदना) १२७

३०४-३२६❁ हिंसयाऽनिवृत्त्या च नरकगामिता नरकपालशब्दश्रवणात् कांदिशीकता, दाहे करुणस्वननं वैतरणितरणं, कीलविद्धानां नावुपसर्पणं, शूलादिविधः, शिलाबन्धनं, उदकनिमज्जनं, मुर्मुरादौ लोलनं पाचनं च, सर्वतोऽग्निदाहः, सदा

घर्मः, मत्स्यवत्तापसहनं, हस्तपादादिच्छेदः, रुधिरोद्गमः, मत्स्यवत्पाकः, तथाऽपि न भस्मीभावो, न मरणं, निरन्तरं तापः, परमाधार्मिककृता पीडा, दण्डघातः, पूर्वकृतस्मारणेनाऽशुच्यादिभक्षकत्वं, कृम्युपद्रवः, निगडयन्त्रणा, वेधः, कीलनं, नक्कौष्ठकर्णजिह्वाच्छेदः, शूलाभितापः, अहर्निश स्वननं, शोणितादिगलनं, क्षारक्षेपः, कुम्भ्यां क्षेपः, तप्तत्रपवादिपानं, अल्पेनात्मवञ्चकानां कलुषार्जनं नरकस्थानं च ॥ आद्यः उद्देशः । १३५

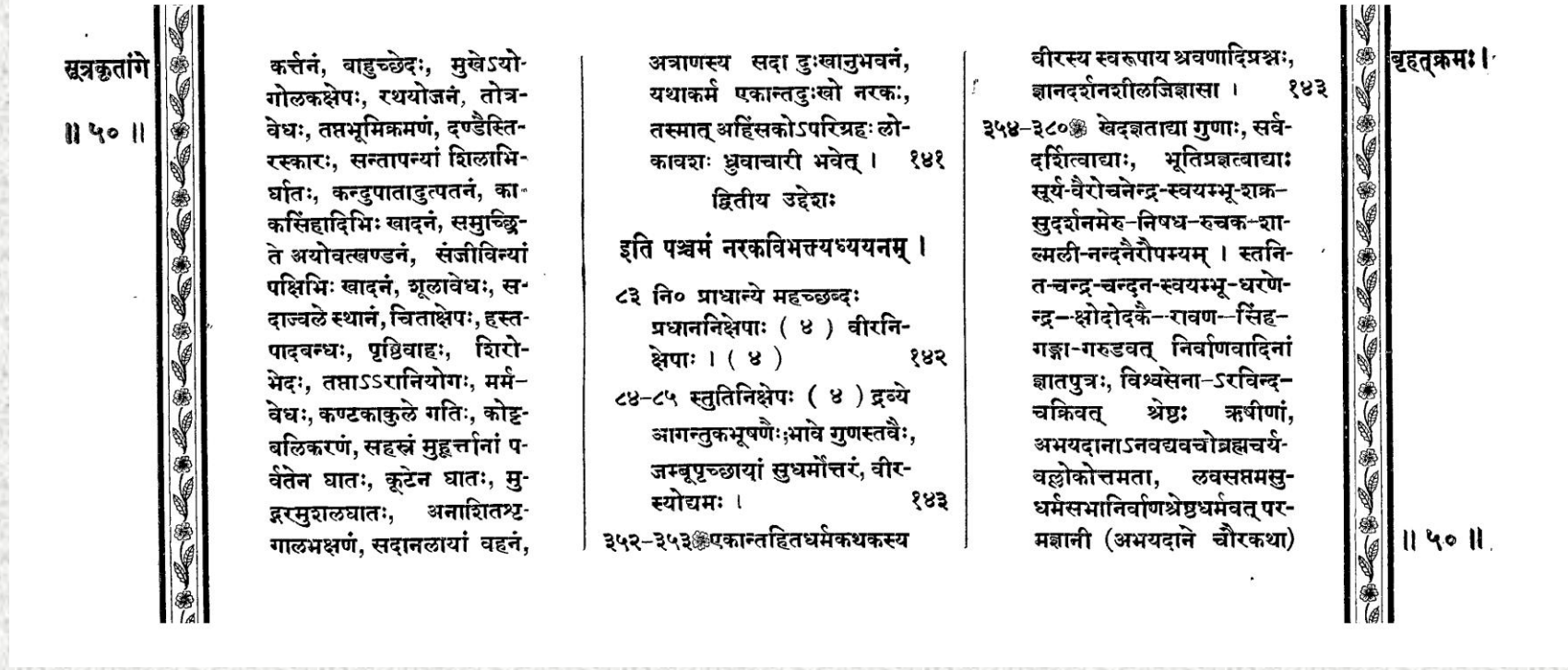
३२७-३५१❁ नरकदुःखोपक्रमः, हस्तपादबन्धः, उदरपाटनं, वर्भ्र-

बृहत्क्रमः ॥

॥ ४९ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ५० ॥

कर्त्तनं, बाहुच्छेदः, मुखेऽयोगोलकक्षेपः, रथयोजनं, तोत्रवेधः, तप्तभूमिक्रमणं, दण्डैस्तिरस्कारः, सन्तापन्यां शिलाभिर्घातः, कन्दुपातादुत्पतनं, काकसिंहादिभिः खादनं, समुच्छ्रिते अयोवत्खण्डनं, संजीविन्यां पक्षिभिः खादनं, शूलावेधः, सदाज्वले स्थानं, चिताक्षेपः, हस्तपादबन्धः, पृष्ठिवाहः, शिरोभेदः, तप्ताऽऽरानियोगः, मर्मवेधः, कण्टकाकुले गतिः, कोष्टबलिकरणं, सहस्रं मुहूर्त्तानां पर्वतेन घातः, कूटेन घातः, मुद्गरमुशलघातः, अनाशितशृगालभक्षणं, सदानलायां वहनं,

अत्राणस्य सदा दुःखानुभवनं, यथाकर्म एकान्तदुःखो नरकः, तस्मात् अहिंसकोऽपरिग्रहः लोकावशः ध्रुवाचारी भवेत् । १४१

द्वितीय उद्देशः

इति पञ्चमं नरकविभक्त्यध्ययनम् ।

८३ नि० प्राधान्ये महच्छब्दः प्रधाननिक्षेपाः (४) वीरनिक्षेपाः । (४) १४२

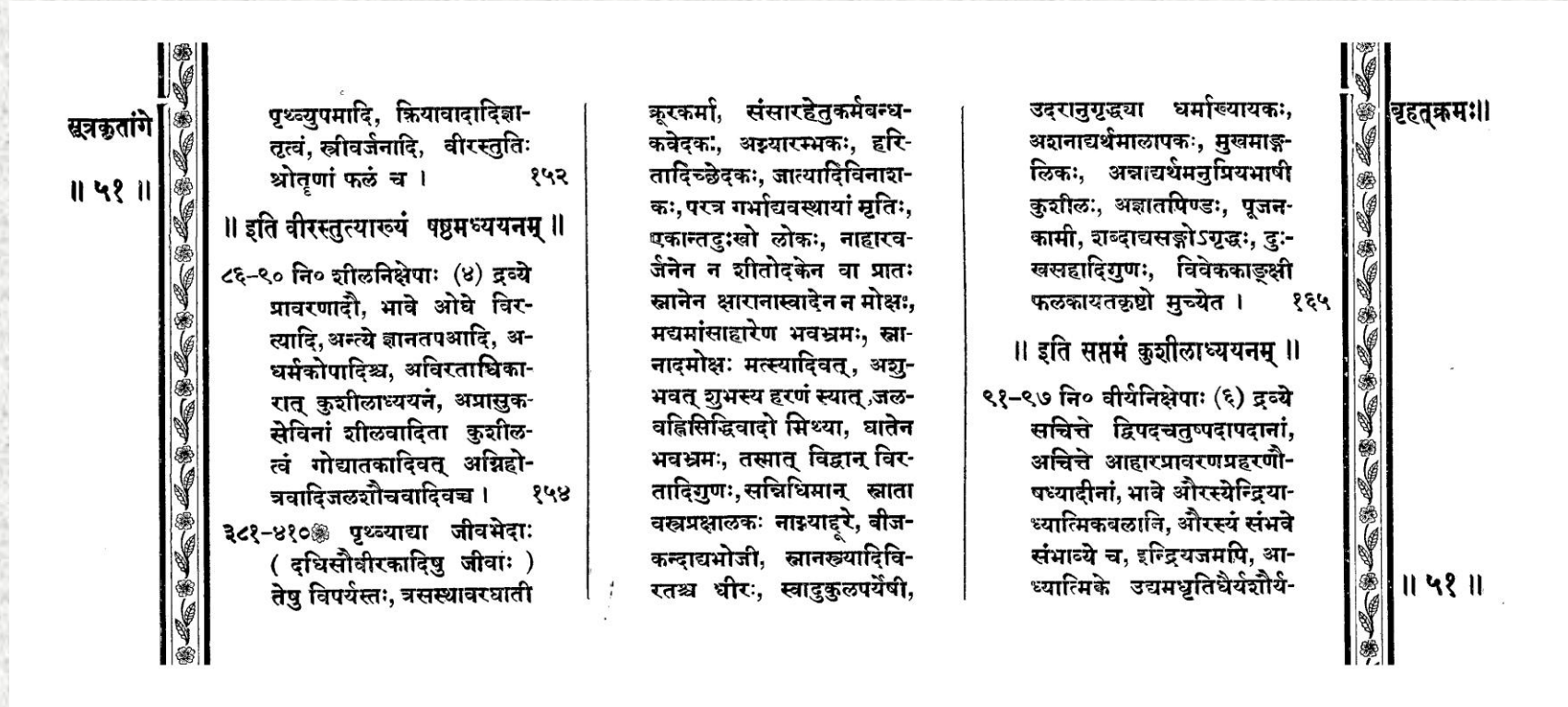
८४-८५ स्तुतिनिक्षेपः (४) द्रव्ये आगन्तुकभूषणैः;भावे गुणस्तवैः, जम्बूपृच्छायां सुधर्मोत्तरं, वीरस्योद्यमः । १४३

३५२-३५३ एकान्तहितधर्मकथकस्य वीरस्य स्वरूपाय श्रवणादिप्रश्नः, ज्ञानदर्शनशीलजिज्ञासा । १४३

३५४-३८० खेदज्ञताद्या गुणाः, सर्वदर्शित्वाद्याः, भूतिप्रज्ञत्वाद्याः सूर्य-वैरोचनेन्द्र-स्वयम्भू-शक्र-सुदर्शनमेरु-निषध-रुचक-शाल्मली-नन्दनैरौपम्यम् । स्तनित-चन्द्र-चन्दन-स्वयम्भू-धरणेन्द्र-क्षोदोदकै-रावण-सिंह-गङ्गा-गरुडवत् निर्वाणवादिनां ज्ञातपुत्रः, विश्वसेना-ऽरविन्द-चक्रिवत् श्रेष्ठः ऋषीणां, अभयदानाऽनवद्यवचोब्रह्मचर्यवल्लोकोत्तमता, लवसप्तमसुधर्मसभानिर्वाणश्रेष्ठधर्मवत् परमज्ञानी (अभयदाने चौरकथा)

बृहत्क्रमः ।

॥ ५० ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ५१ ॥

पृथव्युपमादि, क्रियावादादिज्ञातृत्वं, स्त्रीवर्जनादि, वीरस्तुतिः श्रोतृणां फलं च । १५२

॥ इति वीरस्तुत्याख्यं षष्ठमध्ययनम् ॥

८६-९० नि० शीलनिक्षेपाः (४) द्रव्ये प्रावरणादौ, भावे ओघे विरत्यादि, अन्त्ये ज्ञानतपआदि, अधर्मकोपादिश्च, अविरताधिकारात् कुशीलाध्ययनं, अप्रासुकसेविनां शीलवादिता कुशीलत्वं गोद्यातकादिवत् अग्निहोत्रवादिजलशौचवादिवच्च । १५४

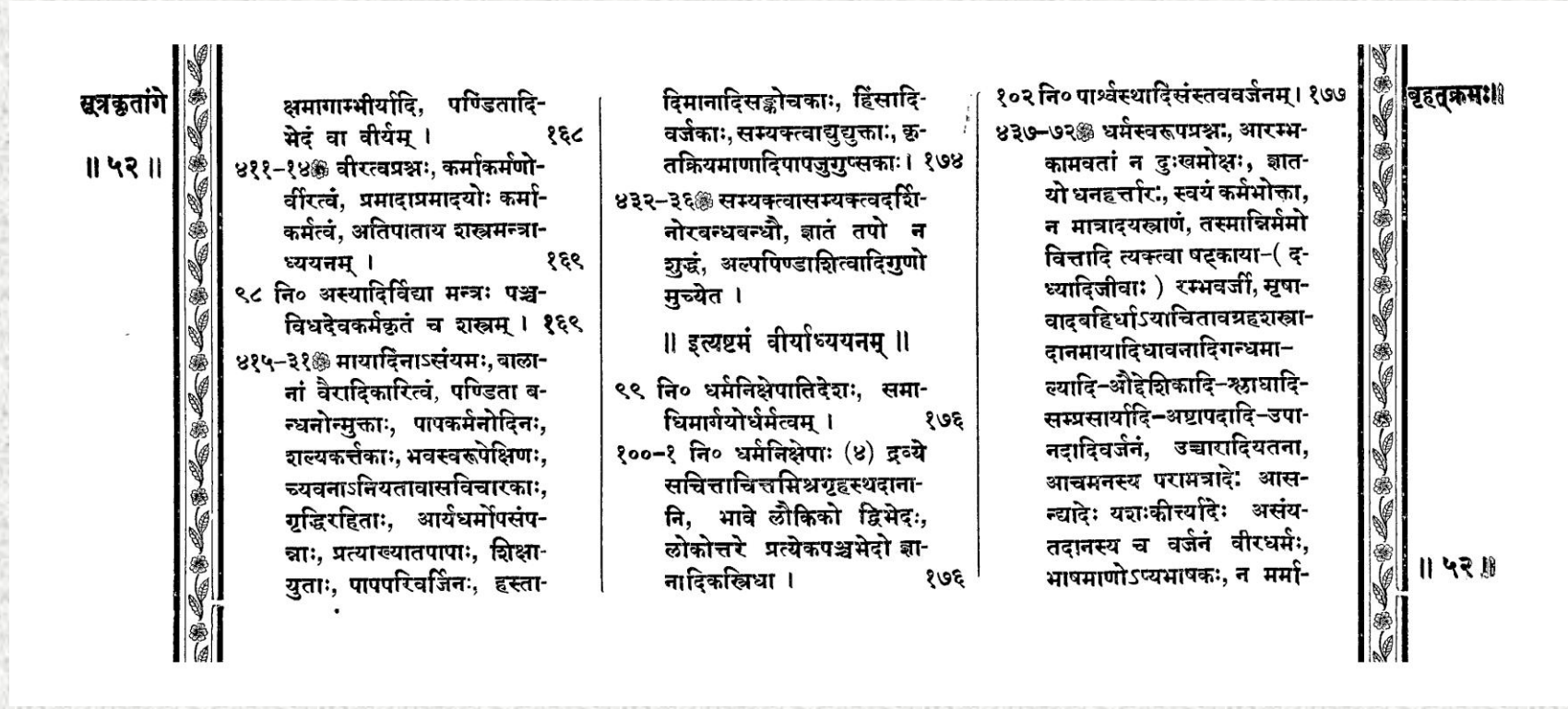
३८१-४१० पृथव्याद्या जीवभेदाः (दधिसौवीरकादिषु जीवाः) तेषु विपर्यस्तः, त्रसस्थावरघाती क्रूरकर्मा, संसारहेतुकर्मबन्धकवेदकः, अश्यारम्भकः, हरितादिच्छेदकः, जात्यादिविनाशकः, परत्र गर्भाद्यवस्थायां मृतिः, एकान्तदुःखो लोकः, नाहारवर्जनेन न शीतोदकेन वा प्रातः स्नानेन क्षारानास्वादेन न मोक्षः, मद्यमांसाहारेण भवभ्रमः, स्नानादमोक्षः मत्स्यादिवत्, अशुभवत् शुभस्य हरणं स्यात्,जलवह्निसिद्धिवादो मिथ्या, घातेन भवभ्रमः, तस्मात् विद्वान् विरतादिगुणः,सन्निधिमान् स्नाता वस्त्रप्रक्षालकः नाश्याद्दूरे, बीजकन्दाद्यभोजी, स्नानस्त्र्यादिविरतश्च धीरः, स्वादुकुलपर्येषी, उदरानुगृद्धया धर्माख्यायकः, अशनाद्यर्थमालापकः, मुखमाङ्गलिकः, अन्नाद्यर्थमनुप्रियभाषी कुशीलः, अज्ञातपिण्डः, पूजनकामी, शब्दाद्यसङ्गोऽगृद्धः, दुःखसहादिगुणः, विवेककाङ्क्षी फलकाङ्यतकृष्टो मुच्येत । १६५

॥ इति सप्तमं कुशीलाध्ययनम् ॥

९१-९७ नि० वीर्यनिक्षेपाः (६) द्रव्ये सचित्ते द्विपदचतुष्पदापदानां, अचित्ते आहारप्रावरणप्रहरणौषध्यादीनां, भावे औरस्येन्द्रियाध्यात्मिकबलानि, औरस्यं संभवे संभाव्ये च, इन्द्रियजमपि, आध्यात्मिके उद्यमधृतिधैर्यशौर्य-

बृहत्क्रमः॥

॥ ५१ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ५२ ॥

क्षमागाम्भीर्यादि, पण्डितादि-भेदं वा वीर्यम् । १६८

४११-१४ वीरत्वप्रश्नः, कर्माकर्मणो-र्वीरत्वं, प्रमादाप्रमादयोः कर्मा-कर्मत्वं, अतिपाताय शस्त्रमन्त्रा-ध्ययनम् । १६९

९८ नि० अस्यादिर्विद्या मन्त्रः पञ्च-विधदेवकर्मकृतं च शस्त्रम् । १६९

४१५-३१ मायादिनाऽसंयमः, बाला-नां वैरादिकारित्वं, पण्डिता ब-न्धनोन्मुक्ताः, पापकर्मनोदिनः, शल्यकर्त्तकाः, भवस्वरूपेक्षिणः, च्यवनाऽनियतावासविचारकाः, गृद्धिरहिताः, आर्यधर्मोपसंप-न्नाः, प्रत्याख्यातपापाः, शिक्षा-युताः, पापपरिवर्जिनः, हस्ता-दिमानादिसङ्कोचकाः, हिंसादि-वर्जकाः, सम्यक्त्वाद्युद्युक्ताः, कृ-तक्रियमाणादिपापजुगुप्सकाः । १७४

४३२-३६ सम्यक्त्वासम्यक्त्वदर्शि-नोरबन्धबन्धौ, ज्ञातं तपो न शुद्धं, अल्पपिण्डाशित्वादिगुणो मुच्येत ।

॥ इत्यष्टमं वीर्याध्ययनम् ॥

९९ नि० धर्मनिक्षेपातिदेशः, समा-धिमार्गयोर्धर्मत्वम् । १७६

१००-१ नि० धर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्ये सचित्ताचित्तमिश्रगृहस्थदाना-नि, भावे लौकिको द्विभेदः, लोकोत्तरे प्रत्येकपञ्चभेदो ज्ञा-नादिकस्त्रिधा । १७६

१०२ नि० पार्श्वस्थादिसंस्तववर्जनम् । १७७

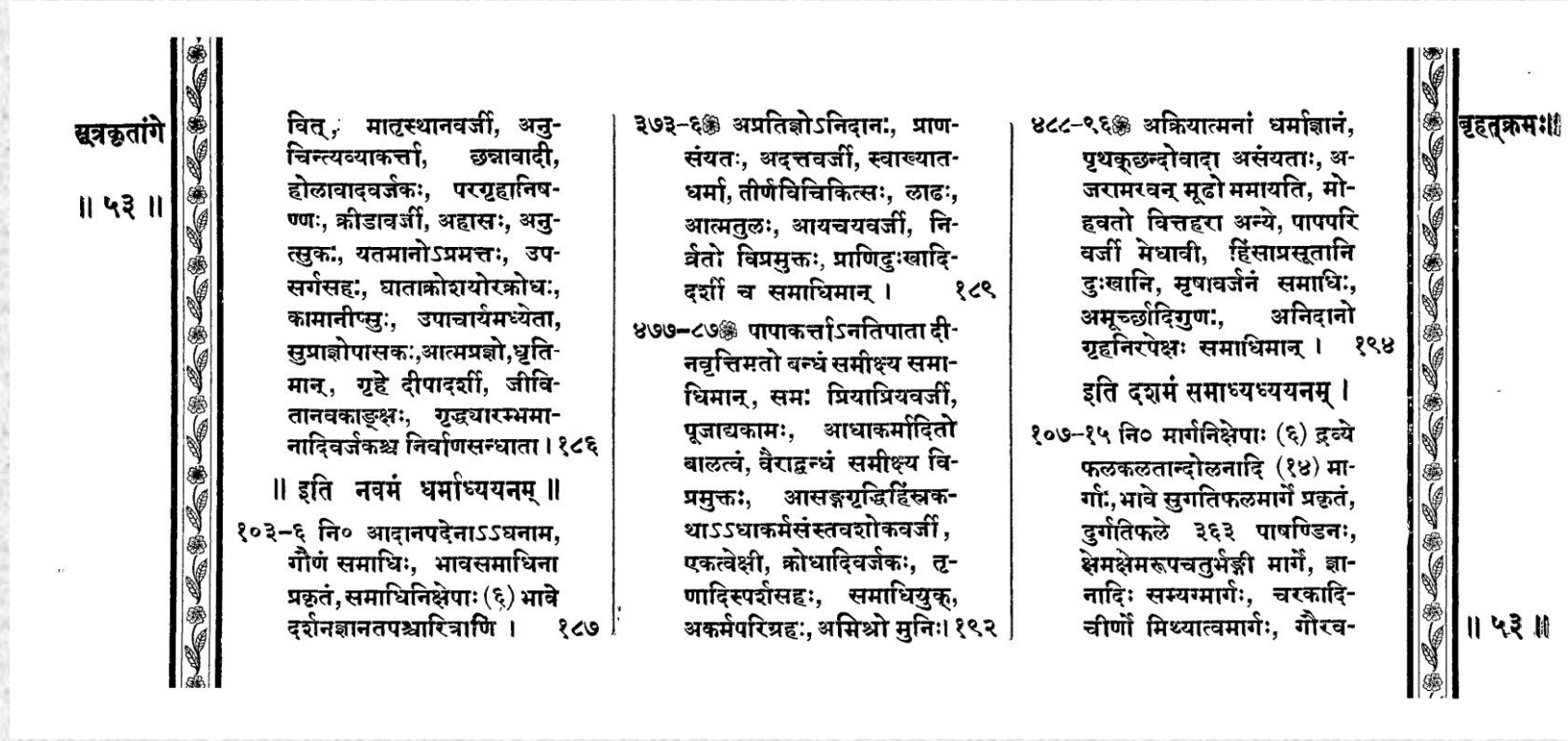
४३७-७२ धर्मस्वरूपप्रश्नः, आरम्भ-कामवतां न दुःखमोक्षः, ज्ञात-यो धनहर्त्तारः, स्वयं कर्मभोक्ता, न मात्रादयस्त्राणं, तस्माद्विर्ममो वित्तादि त्यक्त्वा षट्काया-(द-ध्यादिजीवाः) रम्भवर्जी, मृषा-वादबहिर्धाऽयाचितावग्रहशस्त्रा-दानमायादिधावनादिगन्धमा-ल्यादि-औद्देशिकादि-श्लाघादि-सम्प्रसार्यादि-अष्टापदादि-उपा-नदादिवर्जनं, उच्चारादियतना, आचमनस्य परामर्शादेः आस-न्द्यादेः यशःकीर्त्यादेः असंय-तदानस्य च वर्जनं वीरधर्मः, भाषमाणोऽप्यभाषकः, न मर्मा-

बृहत्क्रमः ॥ ॥ ५२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ५३ ॥

वित्, मातृस्थानवर्जी, अनुचिन्त्यव्याकर्त्ता, छन्नावादी, होलावादवर्जकः, परगृहान्निषण्णः, क्रीडावर्जी, अहासः, अनुत्सुकः, यतमानोऽप्रमत्तः, उपसर्गसहः, घाताक्रोशयोरक्रोधः, कामानीप्सुः, उपाचार्यमध्येता, सुप्राज्ञोपासकः, आत्मप्रज्ञो, धृतिमान्, गृहे दीपादर्शी, जीवितानवकाङ्क्षः, गृद्ध्यारम्भमानादिवर्जकश्च निर्वाणसन्धाता। १८६

॥ इति नवमं धर्माध्ययनम् ॥

१०३–६ नि० आदानपदेनाऽऽधनाम, गौणं समाधिः, भावसमाधिना प्रकृतं, समाधिनिक्षेपाः (६) भावे दर्शनज्ञानतपश्चारित्राणि । १८७

३७३–६ अप्रतिज्ञोऽनिदानः, प्राणसंयतः, अदत्तवर्जी, स्वाख्यातधर्मा, तीर्णविचिकित्सः, लाढः, आत्मतुलः, आयचयवर्जी, निर्व्रतो विप्रमुक्तः, प्राणिदुःखादिदर्शी च समाधिमान् । १८९

४७७–८७ पापाकर्त्ताऽनतिपातादीनवृत्तिमतो बन्धं समीक्ष्य समाधिमान्, समः प्रियाप्रियवर्जी, पूजाद्यकामः, आधाकर्मादितो बालत्वं, वैराद्बन्धं समीक्ष्य विप्रमुक्तः, आसङ्गगृद्धिहिंस्रकथाऽऽधाकर्मसंस्तवशोकवर्जी, एकत्वेक्षी, क्रोधादिवर्जकः, तृणादिस्पर्शसहः, समाधियुक्, अकर्मपरिग्रहः, अमिश्रो मुनिः। १९२

४८८–९६ अक्रियात्मनां धर्माज्ञानं, पृथक्छन्दोवादा असंयताः, अजरामरवन् मूढो ममायति, मोहवतो वित्तहरा अन्ये, पापपरिवर्जी मेधावी, हिंसाप्रसूतानि दुःखानि, मृषावर्जनं समाधिः, अमूर्च्छादिगुणः, अनिदानो गृहनिरपेक्षः समाधिमान् । १९४

इति दशमं समाध्यध्ययनम् ।

१०७–१५ नि० मार्गनिक्षेपाः (६) द्रव्ये फलकलतान्दोलनादि (१४) मार्गाः, भावे सुगतिफलमार्गे प्रकृतं, दुर्गतिफले ३६३ पाषण्डिनः, क्षेमक्षेमरूपचतुर्भङ्गी मार्गे, ज्ञानादिः सम्यग्मार्गः, चरकादिचीर्णो मिथ्यात्वमार्गः, गौरव-

बृहत्क्रमः ॥ ५३ ॥

सूत्रकृतांगे ॥ ५४ ॥

वधयुताः कुमार्गाश्रिताः, तपः-संयमादिमन्तः सन्मार्गकथकाः, मार्गैकार्थिकानि (१३) १९८

४१६-५१२ मार्गप्रश्नः, उत्तरे व्यवहारेण समुद्रतरणवत् मार्गात्संसारतरणं, षड्जीवनिकायानां आक्रान्तदुःखत्वाद्वधत्यागः, अहिंसा ज्ञानिनः सारः, सर्ववधविरतिर्निर्वाणं, विरोधत्यागः, एषणासमितो धीरः, औद्देशिकपूतिकर्मवर्जी, सावद्यानुमतिरहितः । २०२

५१३-१८ दानस्य विधिनिषेधयोर्निषेधः । २०३

५१९-३४ द्वीपसमो धर्माख्यायी, अज्ञानिनः समाधिहीनाः, बीजोदकादिभोजिनः ढङ्कादिवदशुभध्यायिनः, उन्मार्गगा दुःखिनः, सच्छिद्रनावारूढान्धवन्मिथ्यादृष्टिश्रमणाः, काश्यपधर्मेण श्रोतस्तरणः ग्रामविरतः आत्मोपमो मानादिवर्जी निर्वाणाभिसन्धी, उपधानवीर्यो भिक्षुः, भूतानां जगतीवन्मार्गाधारः, वातेन गिरिवदुपसर्गेण न विहन्येत, दत्तैषणो धीरो निर्वाणकाङ्क्षीति केवलिमतम् । २०७

एकादशं मार्गाध्ययनम् ।

११६-२१ समवसरणनिक्षेपाः (६) भावे सप्रभेदं भावषट्कं, क्रियाक्रियाज्ञानविनयवादाः, क्रियावाद्यादीनां लक्षणं भेदाश्च, सम्यग्दृष्टयः क्रियावादिनः । २११

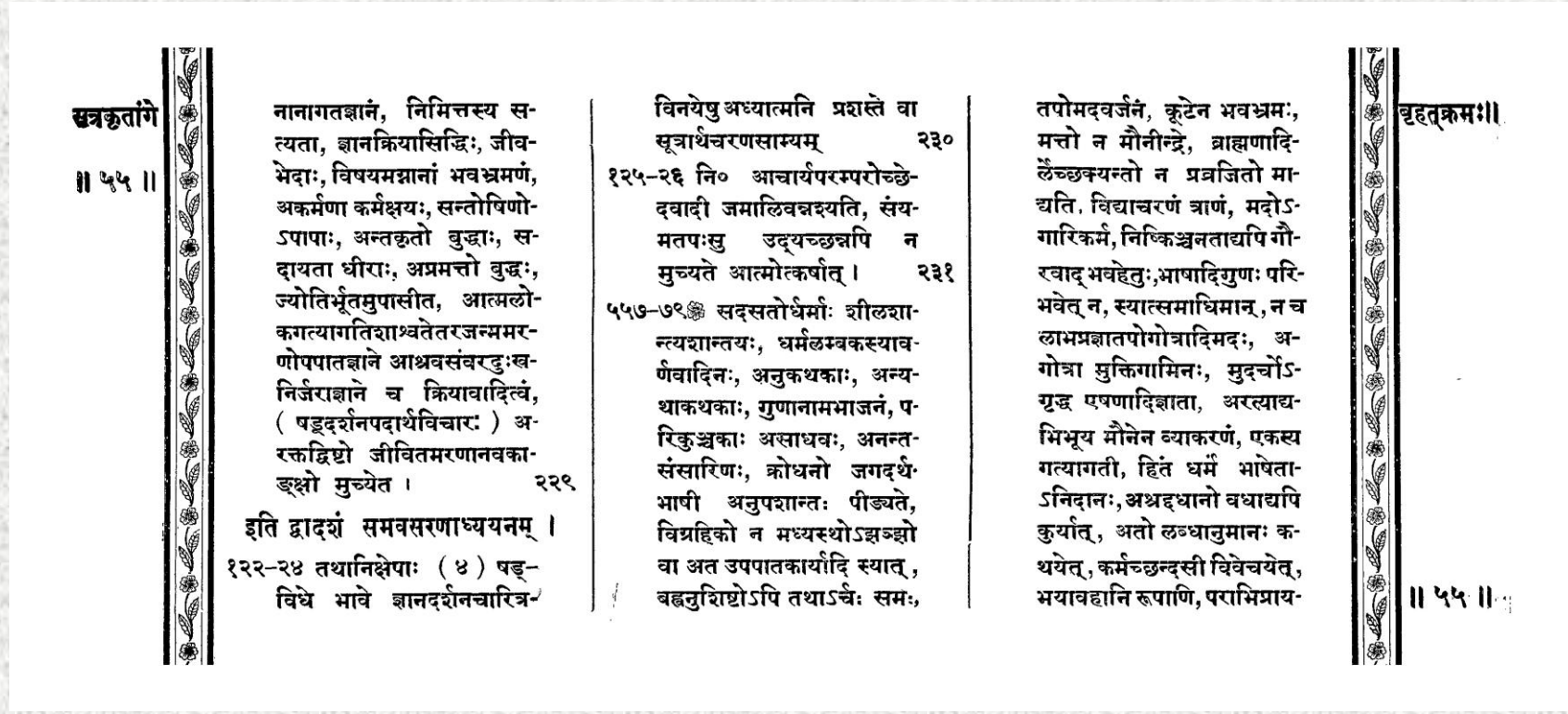
५३५-५६ प्रवादिचतुष्कं, अज्ञानिनां मृषावादित्वं, आत्मप्रमाणसर्वज्ञज्ञेयज्ञानानां सिद्धिः, सत्यासत्यसाध्वसाधुनिर्विशेषा वैनयिकाः, अक्रियावादिनो लवावशङ्किनः, (नास्तिका बौद्धाश्च) नास्तिकानां बौद्धानां चाऽसत्त्वप्रतिपादनेऽभावप्रतिपादने वा विपक्षाङ्गीकारान्मिश्रीभावः, साङ्ख्यानां चाक्रियत्वे, तेषां छलवादिता, विरूपशास्त्रता, शून्यवादनिराकरणं, सूर्यचन्द्रखरूपे विवादः, तत्सिद्धिश्च, स्वप्नादेः सद्भावत्वं, अष्टाङ्गनिमित्ते-

बृहत्क्रमः ॥ ॥ ५४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ५५ ॥

नानागतज्ञानं, निमित्तस्य सत्यता, ज्ञानक्रियासिद्धिः, जीवभेदाः, विषयमज्ञानां भवभ्रमणं, अकर्मणा कर्मक्षयः, सन्तोषिणोऽपापाः, अन्तकृतो बुद्धाः, सदायता धीराः, अप्रमत्तो बुद्धः, ज्योतिर्भूतमुपासीत, आत्मलोकगत्यागतिशाश्वतेतरजन्ममरणोपपातज्ञाने आश्रवसंवरदुःखनिर्जराज्ञाने च क्रियावादित्वं, (षड्दर्शनपदार्थविचारः) अरक्तद्विष्टो जीवितमरणानवकाङ्क्षो मुच्येत । २२९

इति द्वादशं समवसरणाध्ययनम् ।

१२२–२४ तथानिक्षेपाः (४) षड्विधे भावे ज्ञानदर्शनचारित्रविनयेषु अध्यात्मनि प्रशस्ते वा सूत्रार्थचरणसाम्यम् २३०

१२५–२६ नि० आचार्यपरम्परोच्छेदवादी जमालिवन्नश्यति, संयमतपःसु उद्यच्छन्नपि न मुच्यते आत्मोत्कर्षात् । २३१

५५७–७९ सदसतोर्धर्माः शीलशान्त्यशान्तयः, धर्मलम्बकस्यावर्णवादिनः, अनुकथकाः, अन्यथाकथकाः, गुणानामभाजनं, परिकुञ्चकाः असाधवः, अनन्तसंसारिणः, क्रोधनो जगदर्थभाषी अनुपशान्तः पीड्यते, विग्रहिको न मध्यस्थोऽझञ्झो वा अत उपपातकार्यादि स्यात्, बह्वनुशिष्टोऽपि तथाऽर्चः समः, तपोमदवर्जनं, कूटेन भवभ्रमः, मत्तो न मौनीन्द्रे, ब्राह्मणादिर्लेच्छक्यन्तो न प्रव्रजितो माद्यति, विद्याचरणं त्राणं, मदोऽगारिकर्म, निष्किञ्चनताद्यपि गौरवाद् भवहेतुः, भाषादिगुणः परिभवेत् न, स्यात्समाधिमान्, न च लाभप्रज्ञातपोगोत्रादिमदः, अगोत्रा मुक्तिगामिनः, मुदर्चोऽगृद्ध एषणादिज्ञाता, अरत्याद्यभिभूय मौनेन व्याकरणं, एकस्य गत्यागती, हितं धर्मं भाषताऽनिदानः, अश्रद्दधानो वधाद्यपि कुर्यात्, अतो लब्धानुमानः कथयेत्, कर्मच्छन्दसी विवेचयेत्, भयावहानि रूपाणि, पराभिप्राय-

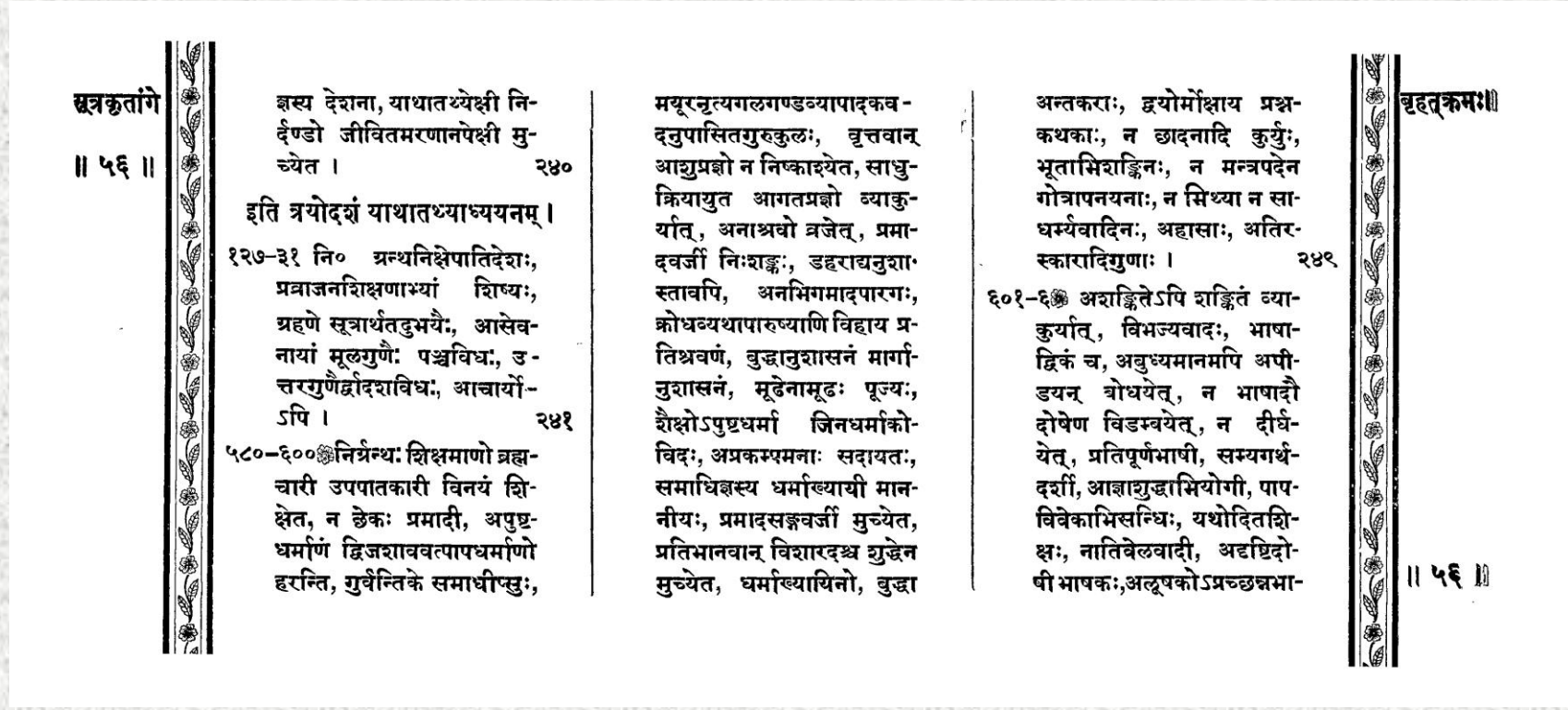
बृहत्क्रमः॥

॥ ५५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ५६ ॥

ज्ञस्य देशना, याथातथ्येक्षी निर्दण्डो जीवितमरणानपेक्षी मुच्येत । २४०

इति त्रयोदशं याथातथ्याध्ययनम् ।

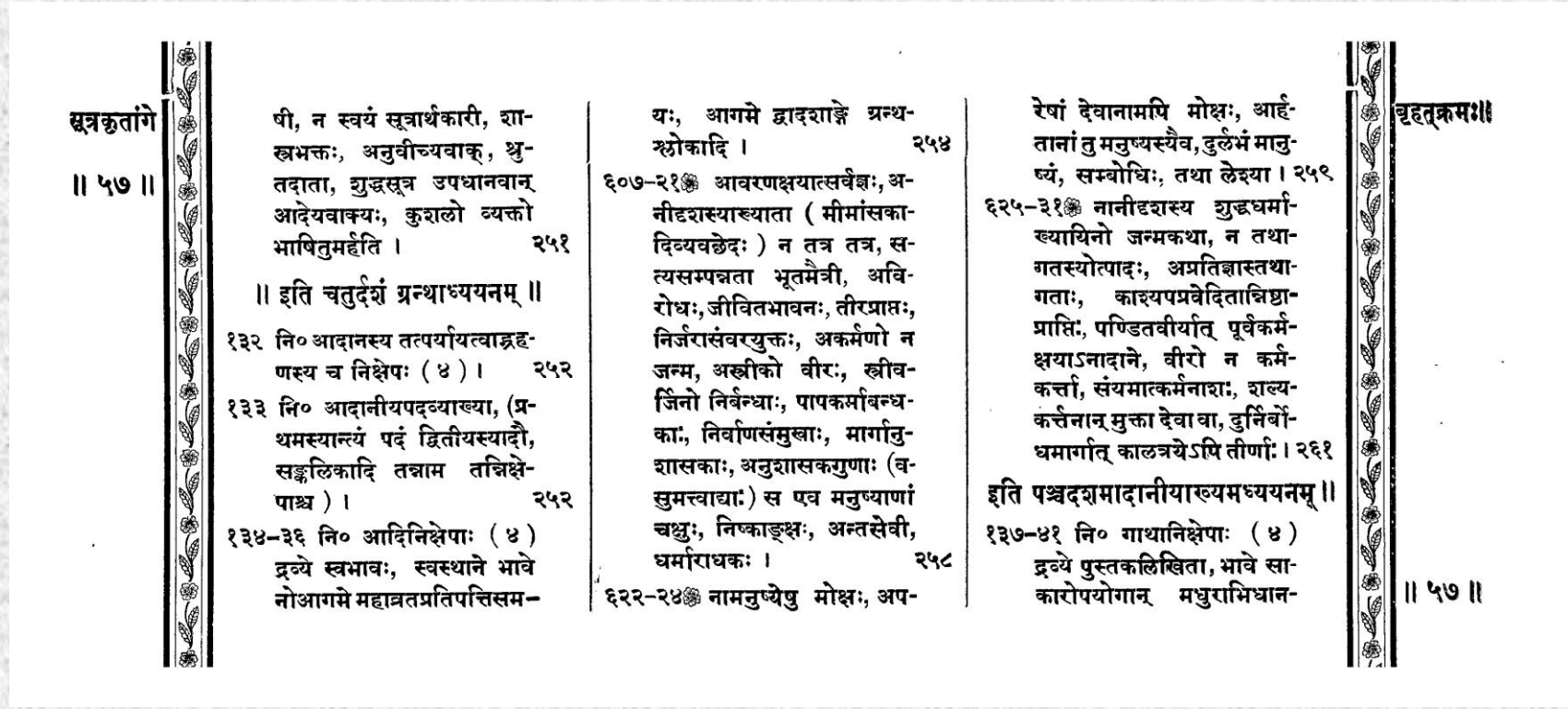
१२७-३१ नि० ग्रन्थनिक्षेपातिदेशः, प्रव्राजनशिक्षणाभ्यां शिष्यः, ग्रहणे सूत्रार्थतदुभयैः, आसेवनायां मूलगुणैः पञ्चविधः, उत्तरगुणैर्द्वादशविधः, आचार्योऽपि । २४१

५८०-६००॥ निर्ग्रन्थः शिक्षमाणो ब्रह्मचारी उपपातकारी विनयं शिक्षेत, न छेकः प्रमादी, अपुष्टधर्माणं द्विजशाववत्पापधर्माणो हरन्ति, गुर्वन्तिके समाधीप्सुः, मयूरनृत्यगलगण्डव्यापादकवदनुपासितगुरुकुलः, वृत्तवान् आशुप्रज्ञो न निष्काश्येत, साधुक्रियायुत आगतप्रज्ञो व्याकुर्यात्, अनाश्रवो व्रजेत्, प्रमादवर्जी निःशङ्कः, डहराद्यनुशास्तावपि, अनभिगमादपारगः, क्रोधव्यथापारुष्याणि विहाय प्रतिश्रवणं, बुद्धानुशासनं मार्गानुशासनं, मूढेनामूढः पूज्यः, शैक्षोऽपुष्टधर्मा जिनधर्माकोविदः, अप्रकम्पमनाः सदायतः, समाधिज्ञस्य धर्माख्यायी माननीयः, प्रमादसङ्गवर्जी मुच्येत, प्रतिभानवान् विशारदश्च शुद्धेन मुच्येत, धर्माख्यायिनो, बुद्धा अन्तकराः, द्वयोर्मोक्षाय प्रश्नकथकाः, न छादनादि कुर्युः, भूताभिशङ्किनः, न मन्त्रपदेन गोत्रापनयनाः, न मिथ्या न साधर्म्यवादिनः, अहासाः, अतिरस्कारादिगुणाः । २४९

६०१-६॥ अशङ्कितेऽपि शङ्कितं व्याकुर्यात्, विभज्यवादः, भाषाद्विकं च, अबुध्यमानमपि अपीडयन् बोधयेत्, न भाषादौ दोषेण विडम्बयेत्, न दीर्घयेत्, प्रतिपूर्णभाषी, सम्यगर्थदर्शी, आज्ञाशुद्धाभियोगी, पापविवेकाभिसन्धिः, यथोदितशिक्षः, नातिवेलवादी, अदृष्टिदोषी भाषकः, अलूषकोऽप्रच्छन्नभा-

बृहत्क्रमः॥

॥ ५६ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ५७ ॥

षी, न स्वयं सूत्रार्थकारी, शास्त्रभक्तः, अनुवीच्यवाक्, श्रुतदाता, शुद्धसूत्र उपधानवान् आदेयवाक्यः, कुशलो व्यक्तो भाषितुमर्हति । २५१

॥ इति चतुर्दशं ग्रन्थाध्ययनम् ॥

१३२ नि० आदानस्य तत्पर्यायत्वाद्ग्रहणस्य च निक्षेपः (४) । २५२

१३३ नि० आदानीयपदव्याख्या, (प्रथमस्यान्त्यं पदं द्वितीयस्यादौ, सङ्कलिकादि तन्नाम तन्निक्षेपाश्च) । २५२

१३४-३६ नि० आदिनिक्षेपाः (४) द्रव्ये स्वभावः, स्वस्थाने भावे नोआगमे महाव्रतप्रतिपत्तिसमयः, आगमे द्वादशाङ्गे ग्रन्थश्लोकादि । २५४

६०७-२१ आवरणक्षयात्सर्वज्ञः, अनीदृशस्याख्याता (मीमांसकादिव्यवच्छेदः) न तत्र तत्र, सत्यसम्पन्नता भूतमैत्री, अविरोधः, जीवितभावनः, तीरप्राप्तः, निर्जरासंवरयुक्तः, अकर्मणो न जन्म, अस्त्रीको वीरः, स्त्रीवर्जितो निर्बन्धाः, पापकर्मबन्धकाः, निर्वाणसंमुखाः, मार्गानुशासकाः, अनुशासकगुणाः (वसुमत्त्वाद्याः) स एव मनुष्याणां चक्षुः, निष्काङ्क्षः, अन्तसेवी, धर्माराधकः । २५८

६२२-२४ नामनुष्येषु मोक्षः, अपरेषां देवानामपि मोक्षः, आर्हतानां तु मनुष्यस्यैव, दुर्लभं मानुष्यं, सम्बोधिः, तथा लेश्या । २५९

६२५-३१ नानीदृशस्य शुद्धधर्माख्यायिनो जन्मकथा, न तथागतस्योत्पादः, अप्रतिज्ञास्तथागताः, काश्यपप्रवेदिताच्चिष्ठाप्राप्तिः, पण्डितवीर्यात् पूर्वकर्मक्षयाऽनादाने, वीरो न कर्मकर्त्ता, संयमात्कर्मनाशः, शल्यकर्त्तनान् मुक्ता देवा वा, दुर्निर्बोधमार्गात् कालत्रयेऽपि तीर्णाः । २६१

इति पञ्चदशमादानीयाख्यमध्ययनम् ॥

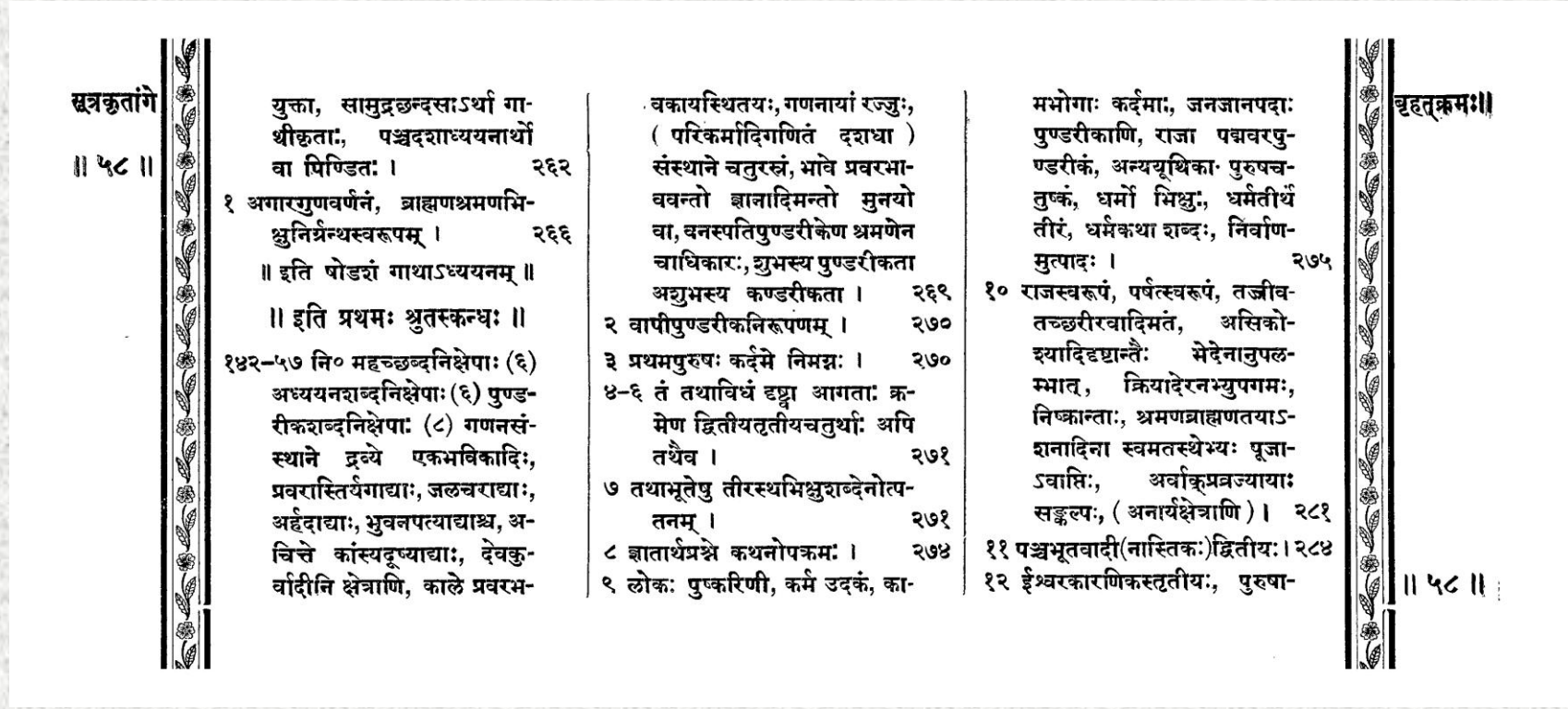
१३७-४१ नि० गाथानिक्षेपाः (४) द्रव्ये पुस्तकलिखिता, भावे साकारोपयोगान् मधुराभिधान-

बृहत्क्रमः॥ ॥ ५७ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

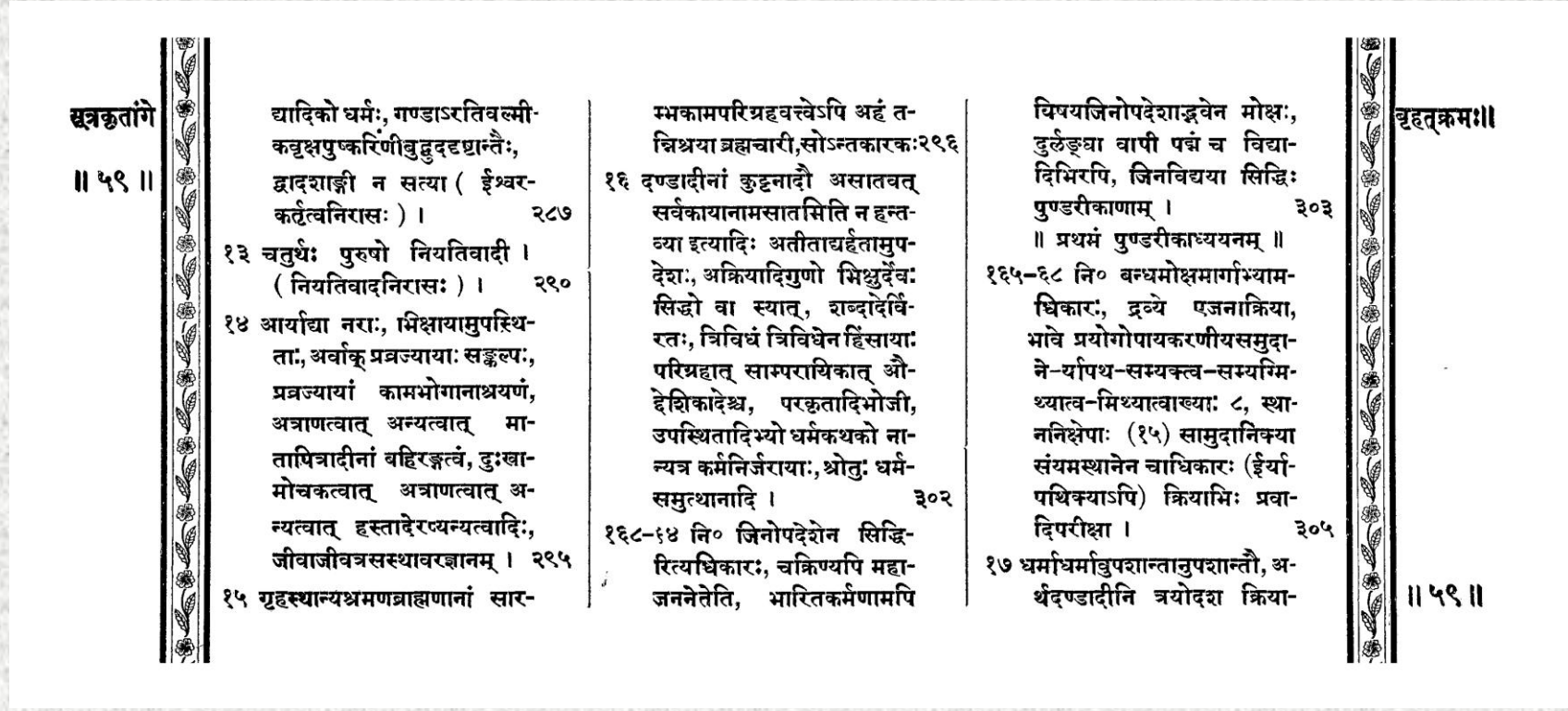
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



सूत्रकृतांगे ॥ ५८ ॥

युक्ता, सामुद्रछन्दसाऽर्था गाथीकृताः, पञ्चदशाध्ययनार्थो वा पिण्डितः । २६२
१ अगारगुणवर्णनं, ब्राह्मणश्रमणभिक्षुनिर्ग्रन्थस्वरूपम् । २६६
॥ इति षोडशं गाथाऽध्ययनम् ॥
॥ इति प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥
१४२–५७ नि० महच्छब्दनिक्षेपाः (६) अध्ययनशब्दनिक्षेपाः (६) पुण्डरीकशब्दनिक्षेपाः (८) गणनसंस्थाने द्रव्ये एकभविकादिः, प्रवरास्तिर्यगाद्याः, जलचराद्याः, अर्हदाद्याः, भुवनपत्याद्याश्च, अचित्ते कांस्यदूष्याद्याः, देवकुर्वादीनि क्षेत्राणि, काले प्रवरभवकायस्थितयः, गणनायां रज्जुः, (परिकर्मादिगणितं दशधा) संस्थाने चतुरस्रं, भावे प्रवरभाववन्तो ज्ञानादिमन्तो मुनयो वा, वनस्पतिपुण्डरीकेण श्रमणेन चाधिकारः, शुभस्य पुण्डरीकता अशुभस्य कण्डरीकता । २६९
२ वापीपुण्डरीकनिरूपणम् । २७०
३ प्रथमपुरुषः कर्दमे निमग्नः । २७०
४–६ तं तथाविधं दृष्ट्वा आगताः क्रमेण द्वितीयतृतीयचतुर्थाः अपि तथैव । २७१
७ तथाभूतेषु तीरस्थभिक्षुशब्देनोत्पतनम् । २७१
८ ज्ञातार्थप्रश्ने कथनोपक्रमः । २७४
९ लोकः पुष्करिणी, कर्म उदकं, कामभोगाः कर्दमाः, जनजानपदाः पुण्डरीकाणि, राजा पद्मवरपुण्डरीकं, अन्ययूथिका· पुरुषचतुष्कं, धर्मो भिक्षुः, धर्मतीर्थं तीरं, धर्मकथा शब्दः, निर्वाणमुत्पादः । २७५
१० राजस्वरूपं, पर्षत्स्वरूपं, तज्जीवतच्छरीरवादिमतं, असिकोश्यादिदृष्टान्तैः भेदेनानुपलम्भात्, क्रियादेरनभ्युपगमः, निष्क्रान्ताः, श्रमणब्राह्मणतयाऽशनादिना स्वमतस्थेभ्यः पूजाऽवाप्तिः, अर्वाक्प्रव्रज्यायाः सङ्कल्पः, (अनार्यक्षेत्राणि) । २८१
११ पञ्चभूतवादी(नास्तिकः)द्वितीयः । २८४
१२ ईश्वरकारणिकस्तृतीयः, पुरुषा-

बृहत्क्रमः॥ ॥ ५८ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ५९ ॥

द्यादिको धर्मः, गण्डाऽरतिवल्मीकवृक्षपुष्करिणीबुद्बुददृष्टान्तैः, द्वादशाङ्गी न सत्या (ईश्वरकर्तृत्वनिरासः) । २८७

१३ चतुर्थः पुरुषो नियतिवादी । (नियतिवादनिरासः) । २९०

१४ आर्याद्या नराः, भिक्षायामुपस्थिताः, अर्वाक् प्रव्रज्यायाः सङ्कल्पः, प्रव्रज्यायां कामभोगानाश्रयणं, अत्राणत्वात् अन्यत्वात् मातापित्रादीनां बहिरङ्गत्वं, दुःखामोचकत्वात् अत्राणत्वात् अन्यत्वात् हस्तादेरप्यन्यत्वादिः, जीवाजीवत्रसस्थावरज्ञानम् । २९५

१५ गृहस्थान्यश्रमणब्राह्मणानां सारम्भकामपरिग्रहवत्त्वेऽपि अहं तन्निश्रया ब्रह्मचारी,सोऽन्तकारकः२९६

१६ दण्डादीनां कुट्टनादौ असातवत् सर्वकायानामसातमिति न हन्तव्या इत्यादिः अतीताद्यर्हतामुपदेशः, अक्रियादिगुणो भिक्षुर्देवः सिद्धो वा स्यात्, शब्दादेर्विरतः, त्रिविधं त्रिविधेन हिंसायाः परिग्रहात् साम्परायिकात् औद्देशिकादेश्च, परकृतादिभोजी, उपस्थितादिभ्यो धर्मकथको नान्यत्र कर्मनिर्जरायाः, श्रोतुः धर्मसमुत्थानादि । ३०२

१६८-६४ नि० जिनोपदेशेन सिद्धिरित्यधिकारः, चक्रिण्यपि महाजननेतेति, भारितकर्मणामपि विषयजिनोपदेशाद्भवेन मोक्षः, दुर्लङ्घ्या वापी पद्मं च विद्यादिभिरपि, जिनविद्यया सिद्धिः पुण्डरीकाणाम् । ३०३

॥ प्रथमं पुण्डरीकाध्ययनम् ॥

१६५-६८ नि० बन्धमोक्षमार्गाभ्यामधिकारः, द्रव्ये एजनाक्रिया, भावे प्रयोगोपायकरणीयसमुदाने-र्यापथ-सम्यक्त्व-सम्यग्मिथ्यात्व-मिथ्यात्वाख्याः ८, स्थाननिक्षेपाः (१५) सामुदानिकया संयमस्थानेन चाधिकारः (ईर्यापथिक्याऽपि) क्रियाभिः प्रवादिपरीक्षा । ३०५

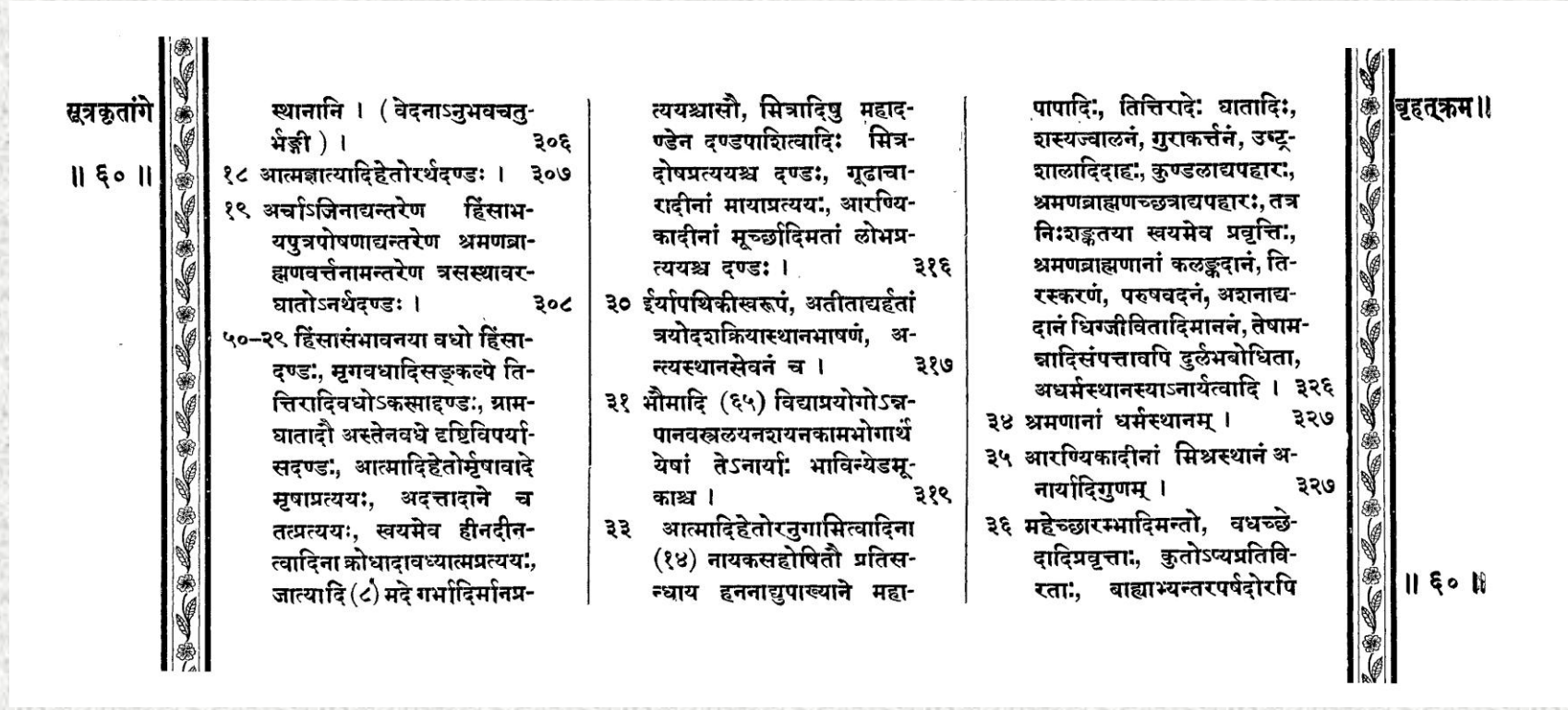
१७ धर्माधर्मावुपशान्तानुपशान्तौ, अर्थदण्डादीनि त्रयोदश क्रिया-

बृहत्क्रमः॥ ॥ ५९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ६० ॥

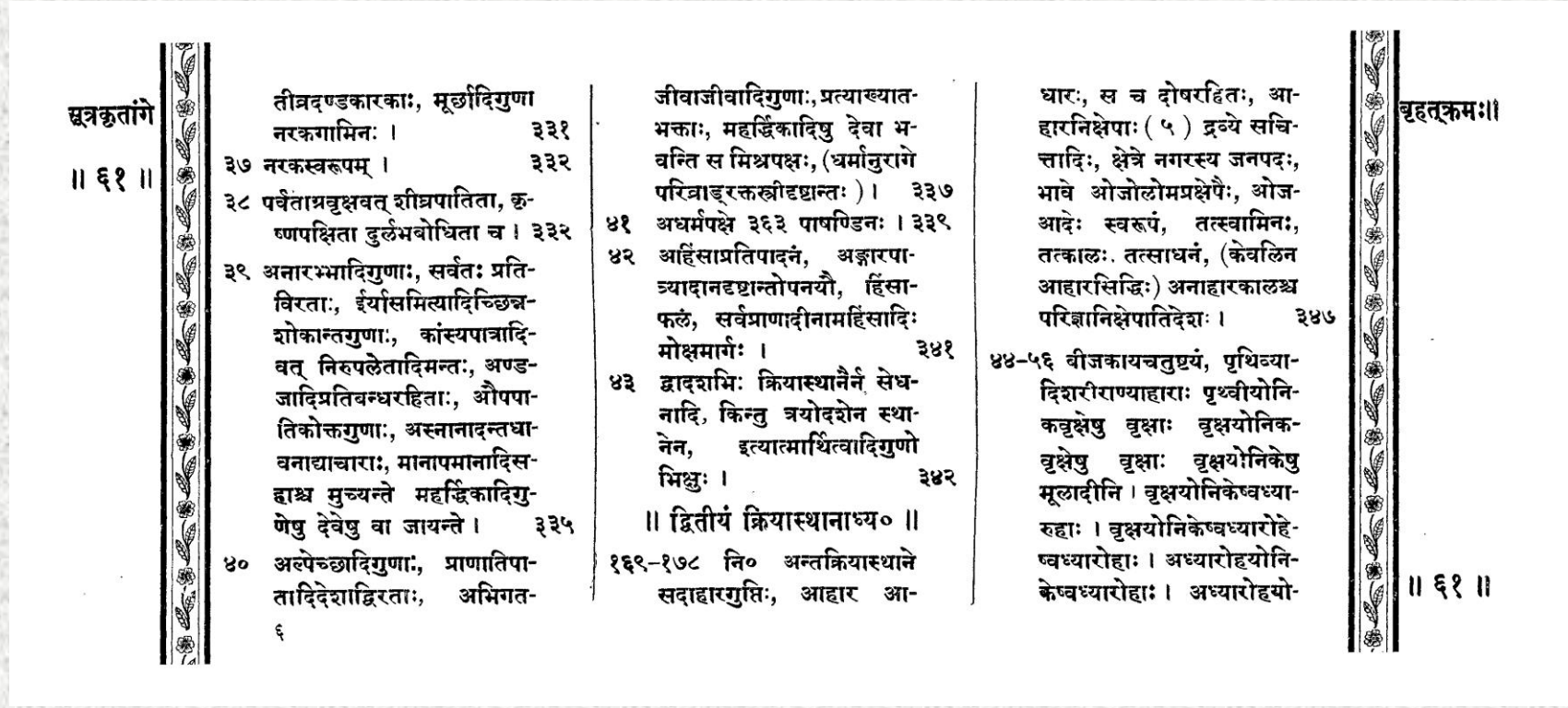
स्थानानि । (वेदनाऽनुभवचतुर्भङ्गी) । ३०६
१८ आत्मज्ञात्यादिहेतोरर्थदण्डः । ३०७
१९ अर्चाऽजिनाद्यन्तरेण हिंसाभयपुत्रपोषणाद्यन्तरेण श्रमणब्राह्मणवर्त्तनामन्तरेण त्रसस्थावरघातोऽनर्थदण्डः । ३०८
५०–२९ हिंसासंभावनया वधो हिंसादण्डः, मृगवधादिसङ्कल्पे तित्तिरादिवधोऽकस्माद्दण्डः, ग्रामघातादौ अस्तेनवधे दृष्टिविपर्यासदण्डः, आत्मादिहेतोर्मृषावादे मृषाप्रत्ययः, अदत्तादाने च तत्प्रत्ययः, स्वयमेव हीनदीनत्वादिना क्रोधादावध्यात्मप्रत्ययः, जात्यादि (८) मदे गर्भादिर्मानप्रत्ययश्चासौ, मित्रादिषु महादण्डेन दण्डपाशित्वादिः मित्रदोषप्रत्ययश्च दण्डः, गूढाचारादीनां मायाप्रत्ययः, आरण्यिकादीनां मूर्च्छादिमतां लोभप्रत्ययश्च दण्डः । ३१६
३० ईर्यापथिकीस्वरूपं, अतीताद्यर्हतां त्रयोदशक्रियास्थानभाषणं, अन्यस्थानसेवनं च । ३१७
३१ भौमादि (६५) विद्याप्रयोगोऽन्नपानवस्त्रालयनशयनकामभोगार्थं येषां तेऽनार्याः भाविन्येऽमूकाश्च । ३१९
३३ आत्मादिहेतोरनुगामित्वादिना (१४) नायकसहोषितौ प्रतिसन्धाय हननाद्युपाख्याने महापापादिः, तित्तिरादेः घातादिः, शस्यज्वालनं, गुराकर्त्तनं, उष्ट्रशालादिदाहः, कुण्डलाद्यपहारः, श्रमणब्राह्मणच्छत्राद्यपहारः, तत्र निःशङ्कतया स्वयमेव प्रवृत्तिः, श्रमणब्राह्मणानां कलङ्कदानं, तिरस्करणं, परुषवदनं, अशनाद्यदानं धिग्जीवितादिमाननं, तेषामज्ञादिसंपत्तावपि दुर्लभबोधिता, अधर्मस्थानस्याऽनार्यत्वादि । ३२६
३४ श्रमणानां धर्मस्थानम् । ३२७
३५ आरण्यिकादीनां मिश्रस्थानं अनार्यादिगुणम् । ३२७
३६ महेच्छारम्भादिमन्तो, वधच्छेदादिप्रवृत्ताः, कुतोऽप्यप्रतिविरताः, बाह्याभ्यन्तरपर्षदोरपि

बृहत्क्रम ॥

॥ ६० ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ६१ ॥

तीव्रदण्डकारकाः, मूर्छादिगुणा नरकगामिनः । ३३१
३७ नरकस्वरूपम् । ३३२
३८ पर्वताग्रवृक्षवत् शीघ्रपातिता, कृष्णपक्षिता दुर्लभबोधिता च । ३३२
३९ अनारम्भादिगुणाः, सर्वतः प्रतिविरताः, ईर्यासमित्यादिच्छिन्नशोकान्तगुणाः, कांस्यपात्रादिवत् निरुपलेतादिमन्तः, अण्डजादिप्रतिबन्धरहिताः, औपपातिकोक्तगुणाः, अस्नानादन्तधावनाद्याचाराः, मानापमानादिसहाश्च मुच्यन्ते महर्द्धिकादिगुणेषु देवेषु वा जायन्ते । ३३५
४० अल्पेच्छादिगुणाः, प्राणातिपातादिदेशाद्विरताः, अभिगत-

६

जीवाजीवादिगुणाः, प्रत्याख्यातभक्ताः, महर्द्धिकादिषु देवा भवन्ति स मिश्रपक्षः, (धर्मानुरागे परिव्राड्रक्तस्त्रीदृष्टान्तः) । ३३७
४१ अधर्मपक्षे ३६३ पाषण्डिनः । ३३९
४२ अहिंसाप्रतिपादनं, अङ्गारपात्रादानदृष्टान्तोपनयौ, हिंसाफलं, सर्वप्राणादीनामहिंसादिः मोक्षमार्गः । ३४१
४३ द्वादशभिः क्रियास्थानैर्न सेधनादि, किन्तु त्रयोदशेन स्थानेन, इत्यात्मार्थित्वादिगुणो भिक्षुः । ३४२

॥ द्वितीयं क्रियास्थानाध्य० ॥

१६९-१७८ नि० अन्तक्रियास्थाने सदाहारगुप्तिः, आहार आ-

धारः, स च दोषरहितः, आहारनिक्षेपाः (५) द्रव्ये सचित्तादिः, क्षेत्रे नगरस्य जनपदः, भावे ओजोलोमप्रक्षेपैः, ओजआदेः स्वरूपं, तत्स्वामिनः, तत्कालः. तत्साधनं, (केवलिन आहारसिद्धिः) अनाहारकालश्च परिज्ञानिक्षेपातिदेशः । ३४७
४४-५६ बीजकायचतुष्टयं, पृथिव्यादिशरीराण्याहाराः पृथ्वीयोनिकवृक्षेषु वृक्षाः वृक्षयोनिकवृक्षेषु वृक्षाः वृक्षयोनिकेषु मूलादीनि । वृक्षयोनिकेष्वध्यारुहाः । वृक्षयोनिकेष्वध्यारोहेष्वध्यारोहाः । अध्यारोहयोनिकेष्वध्यारोहाः । अध्यारोहयो-

बृहत्क्रमः॥

॥ ६१ ॥

सूत्रकृतांगे ॥ ६२ ॥

निकेष्वध्यारोहेषु मूलत्वादीनि, पृथ्वीषु तृणत्वं, पृथ्वीयोनिकेषु तृणेषु तृणत्वं, तृणयोनिकेषु तृणेषु तृणत्वं, तेषु मूलत्वादीनि, एवमौषधीनां, हरितानामपि । पृथिव्यामागत्यादीनि, उदकेवृक्षतया उत्पत्तिः, शेषं पृथ्वीवृक्षवत्, उदकेषु उदकावकादितयोत्पत्तिः, सर्वेषु त्रसप्राणतयोत्पत्तिराहारश्च । ३५३

५७ कर्मभूमिजादिमनुष्योत्पत्त्यादि।३५४

५८ जलचर-चतुष्पदोरःपरिसर्प-भुजपरिसर्प-खेचराणां भेदा उत्पत्तिराहारश्च । ३५६

५९ कलेवराश्रितानामुत्पत्त्यादि, विष्ठायुत्पन्नानां तिर्यक्शरीरोत्पन्नानामुत्पत्त्यादि । ३५७

६० त्रसस्थावरशरीरेषु वातकायेऽप्कायोत्पत्त्यादि, उदके च, उदकयोनिके उदके च, उदकतया त्रसप्राणतया चोत्पत्त्यादि।३५८

६१ त्रसस्थावरशरीरेष्वग्नितया इत्याद्यालापकत्रयं, वायुकाये आलापकचतुष्टयम् । ३५९

६२ त्रसस्थावरशरीरेषु पृथ्व्यादि-४० तयोत्पत्त्यादि । ३५९

६३ प्राणिनां कर्मवशात्परस्परं गमागमः । ३६०

तृतीयमाहारपरिज्ञाऽध्ययनम् ।

१७९-१८० नि० प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६) मूलगुणैरधिकारः, तत्प्रत्ययिकी अप्रत्याख्यानक्रिया । ३६१

६४ आत्मनोऽप्रत्याख्यानित्वादि एकान्तसुप्तत्वान्तम् । ,,

६५ वधकदृष्टान्तेनाप्रवृत्तावपि दण्डसिद्धिः । ३६६

६६-६७ अदृष्टजीवादिप्रत्ययानि कथं पापस्थानानि, तत्र सञ्ज्ञयसञ्ज्ञिदृष्टान्तेन हिंसादिसिद्धिः (सञ्ज्ञयसञ्ज्ञिनोरन्योऽन्यानुगमः) । ३७०

६८ आत्मौपम्येन सर्वेषां दण्डादिभिरसातं, तन्न हन्तव्या इत्यादि धर्मो ध्रुवः, साधुस्वरूपं च । ३७०

इति चतुर्थं प्रत्याख्यानाध्य०

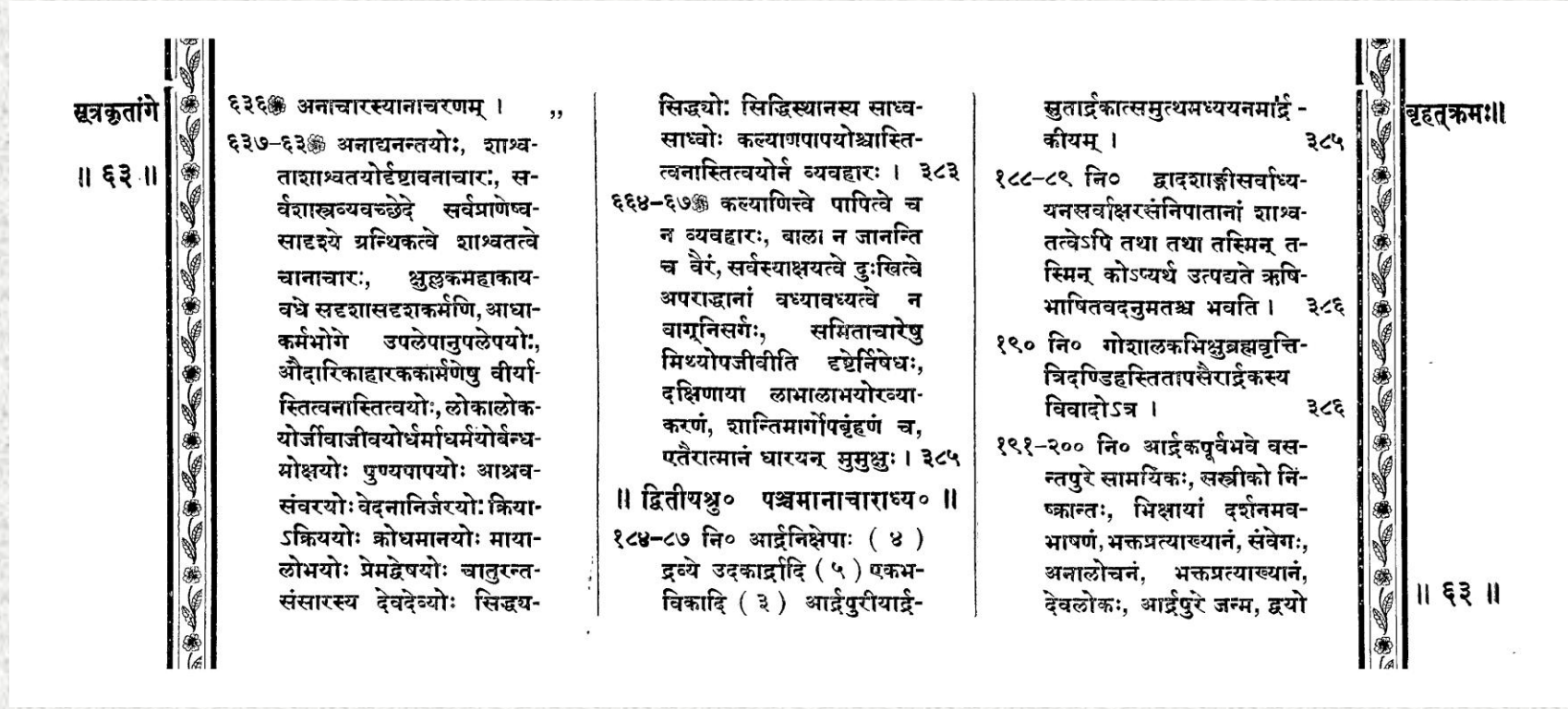
१८१-८३ नि० आचारनिक्षेपाः (४) अबहुश्रुतस्य विराधना, अनगारश्रुतमित्यपि नाम । ३७१

बृहत्क्रमः॥ ॥ ६२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ६३ ॥

६३६ अनाचारस्यानाचरणम् । ,,
६३७–६३ अनाद्यनन्तयोः, शाश्वताशाश्वतयोर्दृष्टावनाचारः, सर्वशास्त्रव्यवच्छेदे सर्वप्राणेष्वसादृश्ये ग्रन्थिकत्वे शाश्वतत्वे चानाचारः, क्षुल्लकमहाकायवधे सदृशासदृशकर्मणि, आधाकर्मभोगे उपलेपानुपलेपयोः, औदारिकाहारककार्मणेषु वीर्यास्तित्वनास्तित्वयोः, लोकालोकयोर्जीवाजीवयोर्धर्माधर्मयोर्बन्धमोक्षयोः पुण्यपापयोः आश्रवसंवरयोः वेदनानिर्जरयोः क्रियाऽक्रिययोः क्रोधमानयोः मायालोभयोः प्रेमद्वेषयोः चातुरन्तसंसारस्य देवदेव्योः सिद्धयसिद्धयोः सिद्धिस्थानस्य साध्वसाध्वोः कल्याणपापयोश्चास्तित्वनास्तित्वयोर्न व्यवहारः । ३८३
६६४–६७ कल्याणित्वे पापित्वे च न व्यवहारः, बाला न जानन्ति च वैरं, सर्वस्याक्षयत्वे दुःखित्वे अपराद्धानां वध्यावध्यत्वे न वाग्निसर्गः, समिताचारेषु मिथ्योपजीवीति दृष्टेर्निषेधः, दक्षिणाया लाभालाभयोरव्याकरणं, शान्तिमार्गोपबृंहणं च, एतैरात्मानं धारयन् मुमुक्षुः । ३८५

॥ द्वितीयश्रु० पञ्चमानाचाराध्य० ॥

१८४–८७ नि० आर्द्रनिक्षेपाः (४) द्रव्ये उदकार्द्रादि (५) एकभविकादि (३) आर्द्रपुरीयार्द्रसुतार्द्रकात्समुत्थमध्ययनमार्द्रकीयम् । ३८५
१८८–८९ नि० द्वादशाङ्गीसर्वाध्ययनसर्वाक्षरसंनिपातानां शाश्वतत्वेऽपि तथा तथा तस्मिन् तस्मिन् कोऽप्यर्थ उत्पद्यते ऋषिभाषितवदनुमतश्च भवति । ३८६
१९० नि० गोशालकभिक्षुब्रह्मवृत्तित्रिदण्डिहस्तितापसैरार्द्रकस्य विवादोऽत्र । ३८६
१९१–२०० नि० आर्द्रकपूर्वभवे वसन्तपुरे सामयिकः, सस्त्रीको निष्क्रान्तः, भिक्षायां दर्शनमवभाषणं, भक्तप्रत्याख्यानं, संवेगः, अनालोचनं, भक्तप्रत्याख्यानं, देवलोकः, आर्द्रपुरे जन्म, द्वयो

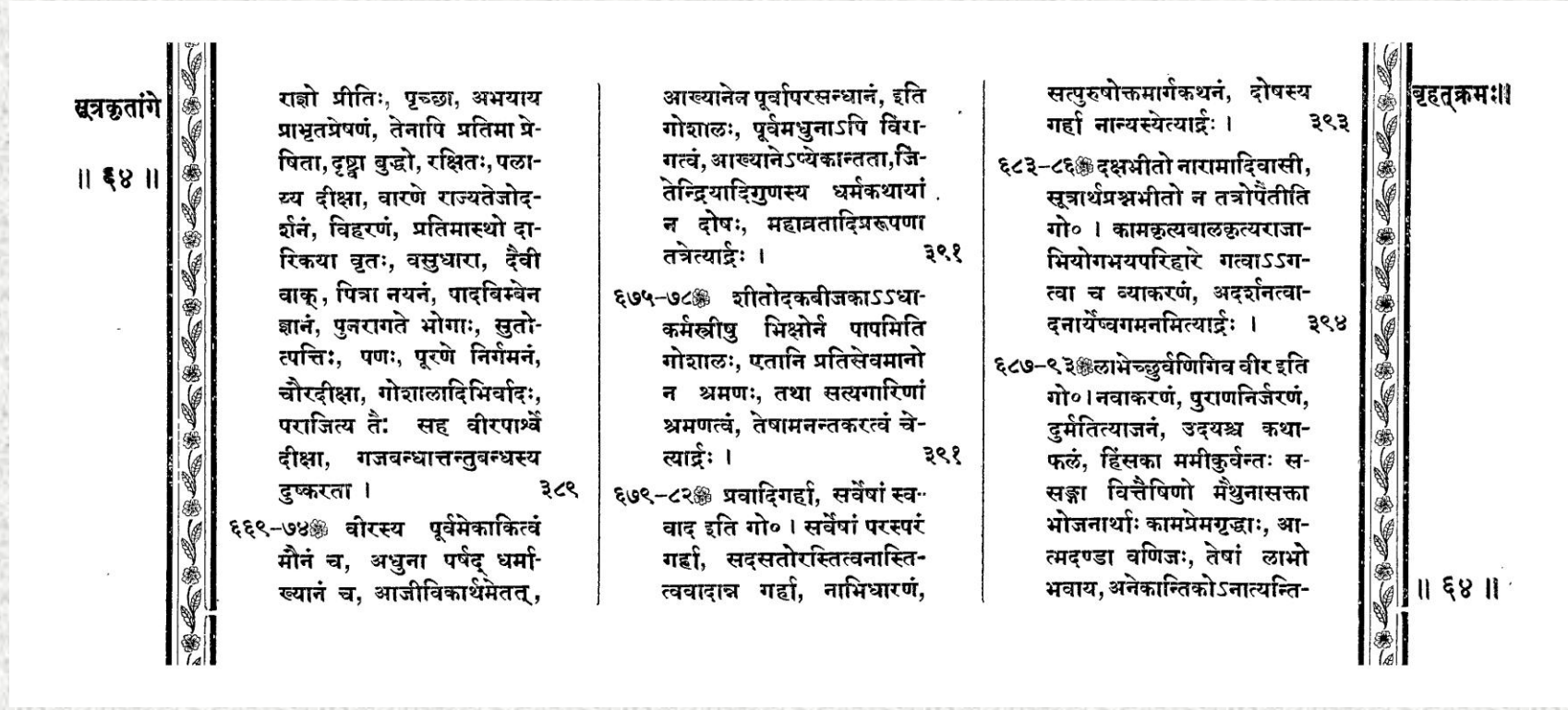
बृहत्क्रमः॥

॥ ६३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ६४ ॥

राज्ञो प्रीतिः, पृच्छा, अभयाय प्राभृतप्रेषणं, तेनापि प्रतिमा प्रेषिता, दृष्ट्वा बुद्धो, रक्षितः, पलाय्य दीक्षा, वारणे राज्यतेजोदर्शनं, विहरणं, प्रतिमास्थो दारिकया वृतः, वसुधारा, दैवी वाक्, पित्रा नयनं, पादबिम्बेन ज्ञानं, पुनरागते भोगाः, सुतोत्पत्तिः, पणः, पूरणे निर्गमनं, चौरदीक्षा, गोशालादिभिर्वादः, पराजित्य तैः सह वीरपार्श्वे दीक्षा, गजबन्धात्तन्तुबन्धस्य दुष्करता । ३८९

६६९–७४ वीरस्य पूर्वमेकाकित्वं मौनं च, अधुना पर्षद् धर्माख्यानं च, आजीविकार्थमेतत्, आख्यानेन पूर्वापरसन्धानं, इति गोशालः, पूर्वमधुनाऽपि विरागत्वं, आख्याने ऽप्येकान्तता, जितेन्द्रियादिगुणस्य धर्मकथायां न दोषः, महाव्रतादिप्ररूपणा तत्रेत्यार्द्रः । ३९१

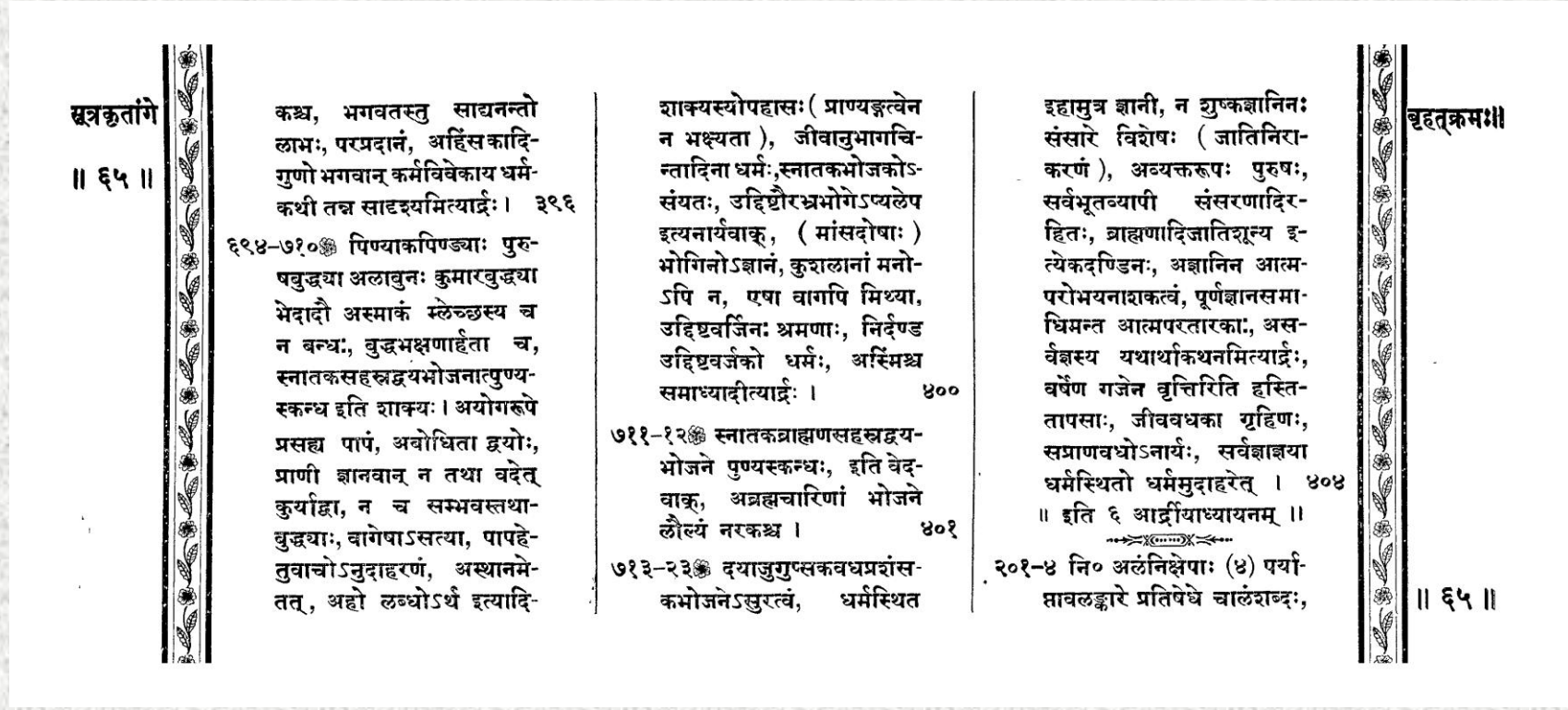
६७५–७८ शीतोदकबीजकाऽऽधाकर्मस्त्रीषु भिक्षोर्न पापमिति गोशालः, एतानि प्रतिसेवमानो न श्रमणः, तथा सत्यगारिणां श्रमणत्वं, तेषामनन्तकरत्वं चेत्यार्द्रः । ३९१

६७९–८२ प्रवादिगर्हा, सर्वेषां स्ववाद इति गो० । सर्वेषां परस्परं गर्हा, सदसतोरस्तित्वनास्तित्ववादान्न गर्हा, नाभिधारणं, सत्पुरुषोक्तमार्गकथनं, दोषस्य गर्हा नान्यस्येत्यार्द्रः । ३९३

६८३–८६ दक्षभीतो नारामादिवासी, सूत्रार्थप्रश्नभीतो न तत्रोपैतीति गो० । कामकृत्यबालकृत्यराजाभियोगभयपरिहारे गत्वाऽऽगत्वा च व्याकरणं, अदर्शनत्वादनार्येष्वगमनमित्यार्द्रः । ३९४

६८७–९३ लाभेच्छुर्वणिगिव वीर इति गो० । नवाकरणं, पुराणनिर्जरणं, दुर्मतित्याजनं, उदयश्च कथाफलं, हिंसका ममीकुर्वन्तः ससङ्गा वित्तैषिणो मैथुनासक्ता भोजनार्थाः कामप्रेमगृद्धाः, आत्मदण्डा वणिजः, तेषां लाभो भवाय, अनेकान्तिकोऽनात्यन्ति-

बृहत्क्रमः ॥ ॥ ६४ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ६५ ॥

कश्च, भगवतस्तु साद्यनन्तो लाभः, परप्रदानं, अहिंसकादि-गुणो भगवान् कर्मविवेकाय धर्म-कथी तन्न सादृश्यमित्यार्द्रः। ३९६

६९४-७१०ॐ पिण्याकपिण्ड्याः पुरु-षबुद्ध्या अलाबुनः कुमारबुद्ध्या भेदादौ अस्माकं म्लेच्छस्य च न बन्धः, बुद्धभक्षणार्हता च, स्नातकसहस्रद्वयभोजनात्पुण्य-स्कन्ध इति शाक्यः। अयोगरूपे प्रसह्य पापं, अबोधिता द्वयोः, प्राणी ज्ञानवान् न तथा वदेत् कुर्याद्वा, न च सम्भवस्तथा-बुद्ध्याः, वागेषाऽसत्या, पापहे-तुवाचोऽनुदाहरणं, अस्थानमे-तत्, अहो लब्धोऽर्थ इत्यादि-

शाक्यस्योपहासः (प्राण्यङ्गत्वेन न भक्ष्यता), जीवानुभागचि-न्तादिना धर्मः,स्नातकभोजकोऽ-संयतः, उद्दिष्टौरभ्रभोगेऽप्यलेप इत्यनार्यवाक्, (मांसदोषाः) भोगिनोऽज्ञानं, कुशलानां मनो-ऽपि न, एषा वागपि मिथ्या, उद्दिष्टवर्जिनः श्रमणाः, निर्दण्ड उद्दिष्टवर्जको धर्मः, अस्मिंश्च समाध्यादीत्यार्द्रः । ४००

७११-१२ॐ स्नातकब्राह्मणसहस्रद्वय-भोजने पुण्यस्कन्धः, इति वेद-वाक्, अब्रह्मचारिणां भोजने लौल्यं नरकश्च । ४०१

७१३-२३ॐ दयाजुगुप्सकवधप्रशंस-कभोजनेऽसुरत्वं, धर्मस्थित

इहामुत्र ज्ञानी, न शुष्कज्ञानिनः संसारे विशेषः (जातिनिरा-करणं), अव्यक्तरूपः पुरुषः, सर्वभूतव्यापी संसरणादिर-हितः, ब्राह्मणादिजातिशून्य इ-त्येकदण्डिनः, अज्ञानिन आत्म-परोभयनाशकत्वं, पूर्णज्ञानसमा-धिमन्त आत्मपरतारकाः, अस-र्वज्ञस्य यथार्थाकथनमित्यार्द्रः, वर्षेण गजेन वृत्तिरिति हस्ति-तापसाः, जीववधका गृहिणः, सप्राणवधोऽनार्यः, सर्वज्ञाज्ञया धर्मस्थितो धर्ममुदाहरेत् । ४०४

॥ इति ६ आर्द्रीयाध्यायनम् ॥

२०१-४ नि० अलंनिक्षेपाः (४) पर्या-यावलङ्कारे प्रतिषेधे चालंशब्दः,

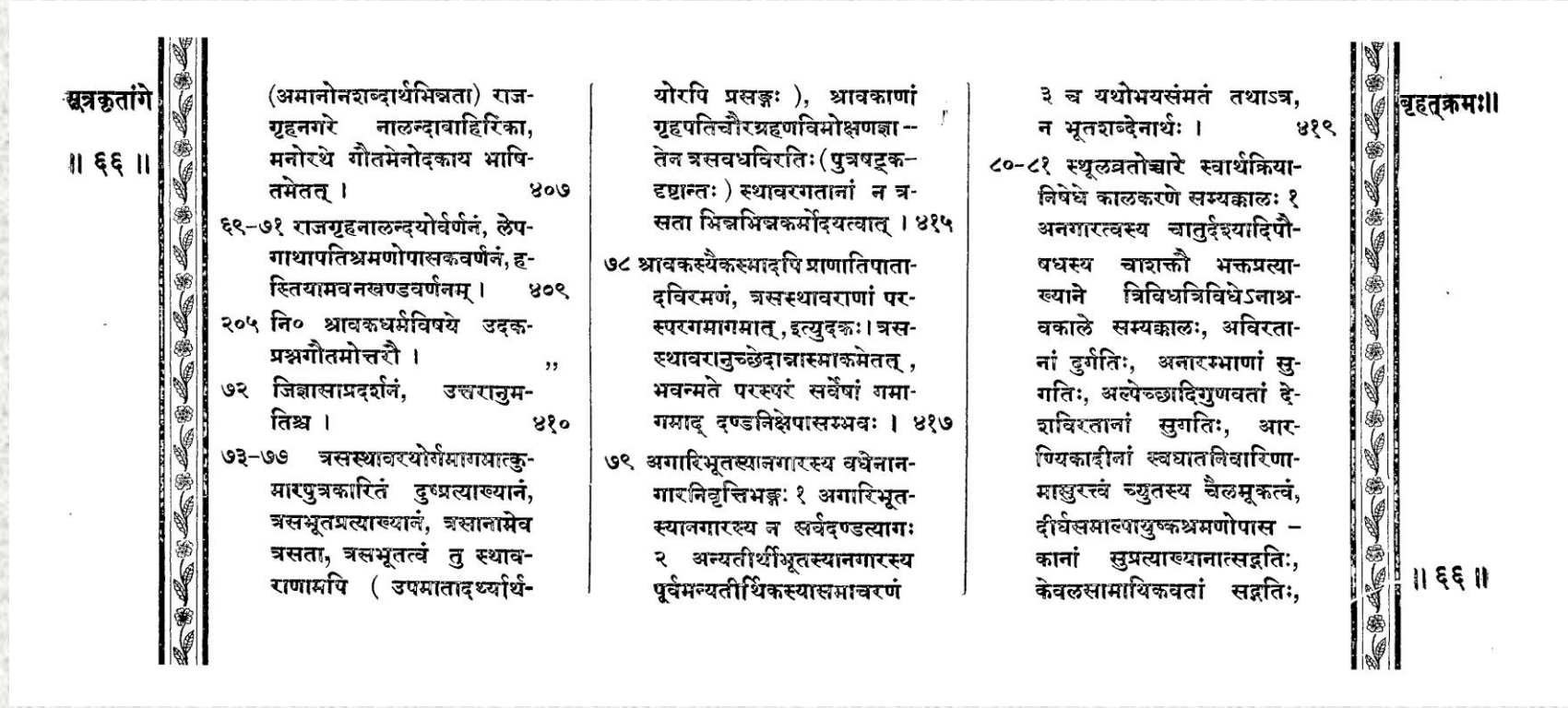
बृहत्क्रमः॥

॥ ६५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



सूत्रकृतांगे ॥ ६६ ॥

(अमानोनशब्दार्थभिन्नता) राजगृहनगरे नालन्दावाहिरिका, मनोरथे गौतमेनोदकाय भाषितमेतत् । ४०७

६९-७१ राजगृहनालन्दयोर्वर्णनं, लेपगाथापतिश्रमणोपासकवर्णनं, हस्तियामवनखण्डवर्णनम् । ४०९

२०५ नि० श्रावकधर्मविषये उदकप्रश्नगौतमोत्तरौ । ,,

७२ जिज्ञासाप्रदर्शनं, उत्तरानुमतिश्च । ४१०

७३-७७ त्रसस्थावरयोर्गमागमात्कुमारपुत्रकारितं दुष्प्रत्याख्यानं, त्रसभूतप्रत्याख्यानं, त्रसानामेव त्रसता, त्रसभूतत्वं तु स्थावराणामपि (उपमातादर्थ्यार्थयोरपि प्रसङ्गः), श्रावकाणां गृहपतिचौरग्रहणविमोक्षणज्ञातेन त्रसवधविरतिः (पुत्रषट्कदृष्टान्तः) स्थावरगतानां न त्रसता भिन्नभिन्नकर्मोदयत्वात् । ४१५

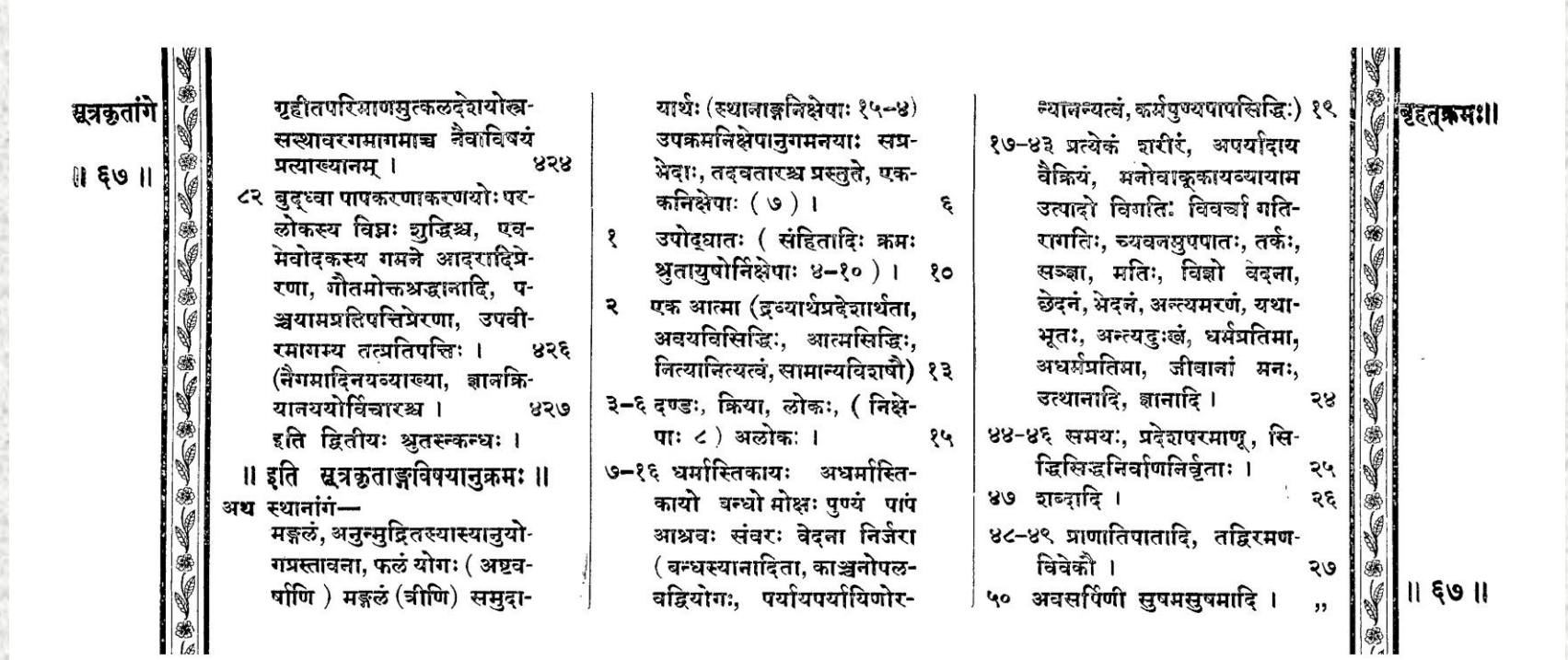
७८ श्रावकस्यैकस्मादपि प्राणातिपातादविरमणं, त्रसस्थावराणां परस्परगमागमात्, इत्युदकः। त्रसस्थावरानुच्छेदान्नास्माकमेतत्, भवन्मते परस्परं सर्वेषां गमागमाद् दण्डनिक्षेपासम्भवः । ४१७

७९ अगारिभूतस्यानगारस्य वधेनानगारनिवृत्तिभङ्गः १ अगारिभूतस्यानगारस्य न सर्वदण्डत्यागः २ अन्यतीर्थीभूतस्यानगारस्य पूर्वमन्यतीर्थिकस्यासमाचरणं ३ च यथोभयसंमतं तथाऽत्र, न भूतशब्देनार्थः । ४१९

८०-८१ स्थूलव्रतोच्चारे स्वार्थक्रियानिषेधे कालकरणे सम्यक्कालः १ अनगारत्वस्य चातुर्दश्यादिपौषधस्य चाशक्तौ भक्तप्रत्याख्याने त्रिविधत्रिविधेऽनाश्रवकाले सम्यक्कालः, अविरतानां दुर्गतिः, अनारम्भाणां सुगतिः, अल्पेच्छादिगुणवतां देशविरतानां सुगतिः, आरण्यिकादीनां स्वघातनिवारिणामासुरत्वं च्युतस्य चैलमूकत्वं, दीर्घसमाप्तायुष्कश्रमणोपासकानां सुप्रत्याख्यानात्सद्गतिः, केवलसामायिकवतां सद्गतिः,

बृहत्क्रमः॥

॥ ६६ ॥



सूत्रकृतांगे ॥ ६७ ॥

गृहीतपरिमाणसुत्कलदेशयोक्त-सस्थावरगमागमाच्च नैवाविषयं प्रत्याख्यानम् । ४२४

८२ बुद्ध्वा पापकरणाकरणयोः पर-लोकस्य विघ्नः शुद्धिश्च, एव-मेवोदकस्य गमने आदरादिप्रे-रणा, गौतमोक्तश्रद्धानादि, प-ञ्चयामप्रतिपत्तिप्रेरणा, उपवी-रमागम्य तत्प्रतिपत्तिः । ४२६

(नैगमादिनयव्याख्या, ज्ञानक्रि-यानययोर्विचारश्च । ४२७

इति द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ।

॥ इति सूत्रकृताङ्गविषयानुक्रमः ॥

अथ स्थानांग—

मङ्गलं, अनुन्मुद्रितस्यास्यानुयो-गप्रस्तावना, फलं योगः (अष्टव-र्षाणि) मङ्गलं (त्रीणि) समुदा-यार्थः (स्थानाङ्गनिक्षेपाः १५-४) उपक्रमनिक्षेपानुगमनयाः सप्र-भेदाः, तदवतारश्च प्रस्तुते, एक-कनिक्षेपाः (७) । ६

१ उपोद्घातः (संहितादिः क्रमः श्रुतायुषोर्निक्षेपाः ४-१०) । १०

२ एक आत्मा (द्रव्यार्थप्रदेशार्थता, अवयविसिद्धिः, आत्मसिद्धिः, नित्यानित्यत्वं, सामान्यविशषौ) १३

३-६ दण्डः, क्रिया, लोकः, (निक्षे-पाः ८) अलोकः । १५

७-१६ धर्मास्तिकायः अधर्मास्ति-कायो बन्धो मोक्षः पुण्यं पापं आश्रवः संवरः वेदना निर्जरा (बन्धस्थानादिता, काश्रवोपल-वद्धियोगः, पर्यायपर्यायिणोर-स्थानन्यत्वं, कर्मपुण्यपापसिद्धिः) १९

१७-४३ प्रत्येकं शरीरं, अपर्याप्तादाय वैक्रियं, मनोवाक्कूकायव्यायाम उत्पादो विगतिः विवर्चा गति-रागतिः, च्यवनमुपपातः, तर्कः, सञ्ज्ञा, मतिः, विज्ञो वेदना, छेदनं, भेदनं, अन्त्यमरणं, यथा-भूतः, अन्त्यदुःखं, धर्मप्रतिमा, अधर्मप्रतिमा, जीवानां मनः, उत्थानादि, ज्ञानादि । २४

४४-४६ समयः, प्रदेशपरमाणू, सि-द्धिसिद्धनिर्वाणनिर्वृताः । २५

४७ शब्दादि । २६

४८-४९ प्राणातिपातादि, तद्विरमण-विवेकौ । २७

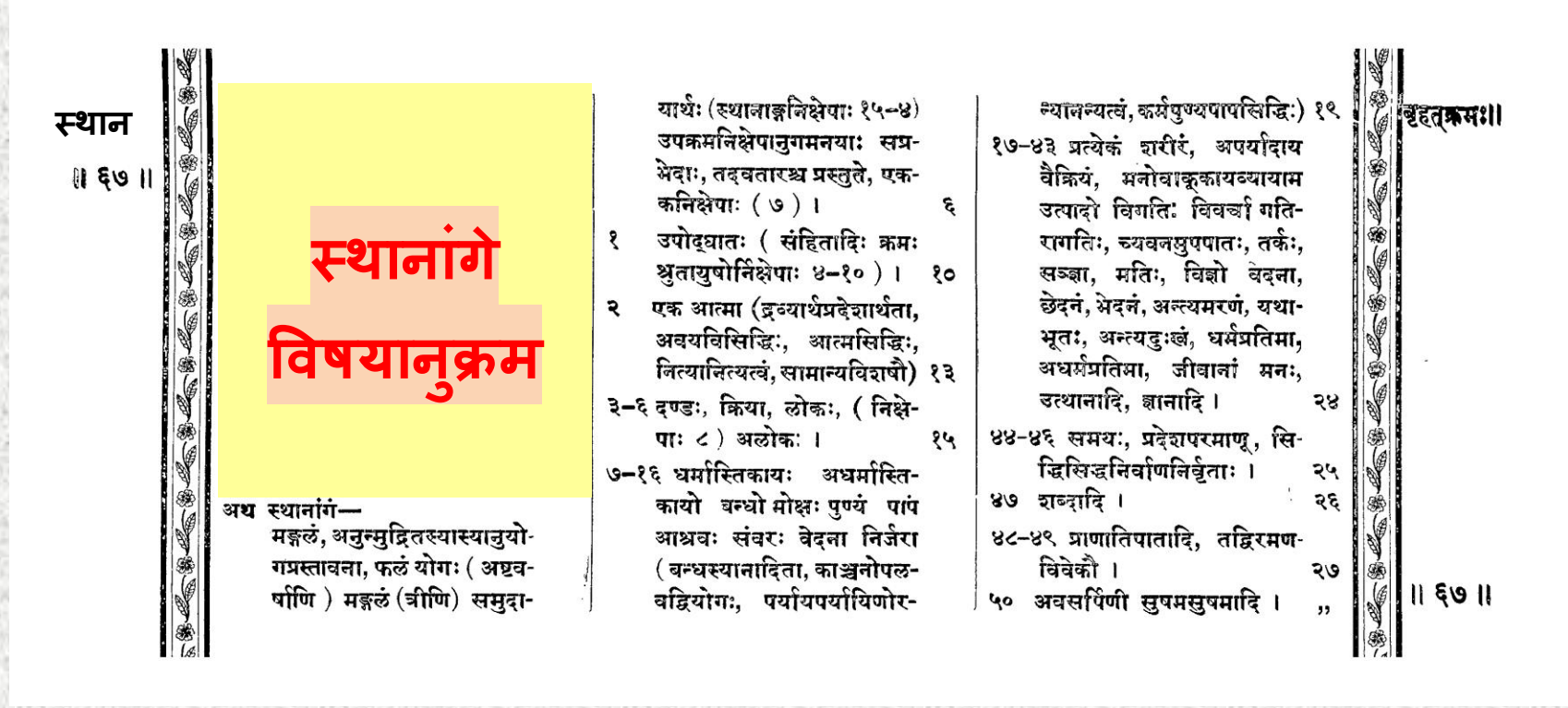
५० अवसर्पिणी सुषमसुषमादि । ,,

बृहत्क्रमः॥ ॥ ६७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



स्थान

॥ ६७ ॥

स्थानांगे विषयानुक्रम

अथ स्थानांगं—
मङ्गलं, अनुन्मुद्रितस्यास्यानुयोगप्रस्तावना, फलं योगः (अष्टवर्षाणि) मङ्गलं (त्रीणि) समुदायार्थः (स्थानाङ्गनिक्षेपाः १५-४) उपक्रमनिक्षेपानुगमनयाः सप्रभेदाः, तदवतारश्च प्रस्तुते, एककनिक्षेपाः (७) । ६
१ उपोद्घातः (संहितादिः क्रमः श्रुतायुषोर्निक्षेपाः ४-१०) । १०
२ एक आत्मा (द्रव्यार्थप्रदेशार्थता, अवयविसिद्धिः, आत्मसिद्धिः, नित्यानित्यत्वं, सामान्यविशषौ) १३
३-६ दण्डः, क्रिया, लोकः, (निक्षेपाः ८) अलोकः । १५
७-१६ धर्मास्तिकायः अधर्मास्तिकायो बन्धो मोक्षः पुण्यं पापं आश्रवः संवरः वेदना निर्जरा (बन्धस्थानादिता, काश्रवोपलवद्धियोगः, पर्यायपर्यायिणोरस्थानन्यत्वं, कर्मपुण्यपापसिद्धिः) १९
१७-४३ प्रत्येकं शरीरं, अपर्याप्तादाय वैक्रियं, मनोवाक्कूकायव्यायाम उत्पादो विगतिः विवर्चा गतिरागतिः, च्यवनमुपपातः, तर्कः, सञ्ज्ञा, मतिः, विज्ञो वेदना, छेदनं, भेदनं, अन्त्यमरणं, यथाभूतः, अन्त्यदुःखं, धर्मप्रतिमा, अधर्मप्रतिमा, जीवानां मनः, उत्थानादि, ज्ञानादि । २४
४४-४६ समयः, प्रदेशपरमाणू, सिद्धिसिद्धनिर्वाणनिर्वृताः । २५
४७ शब्दादि । २६
४८-४९ प्राणातिपातादि, तद्विरमणविवेकौ । २७
५० अवसर्पिणी सुषमसुषमादि । ,,

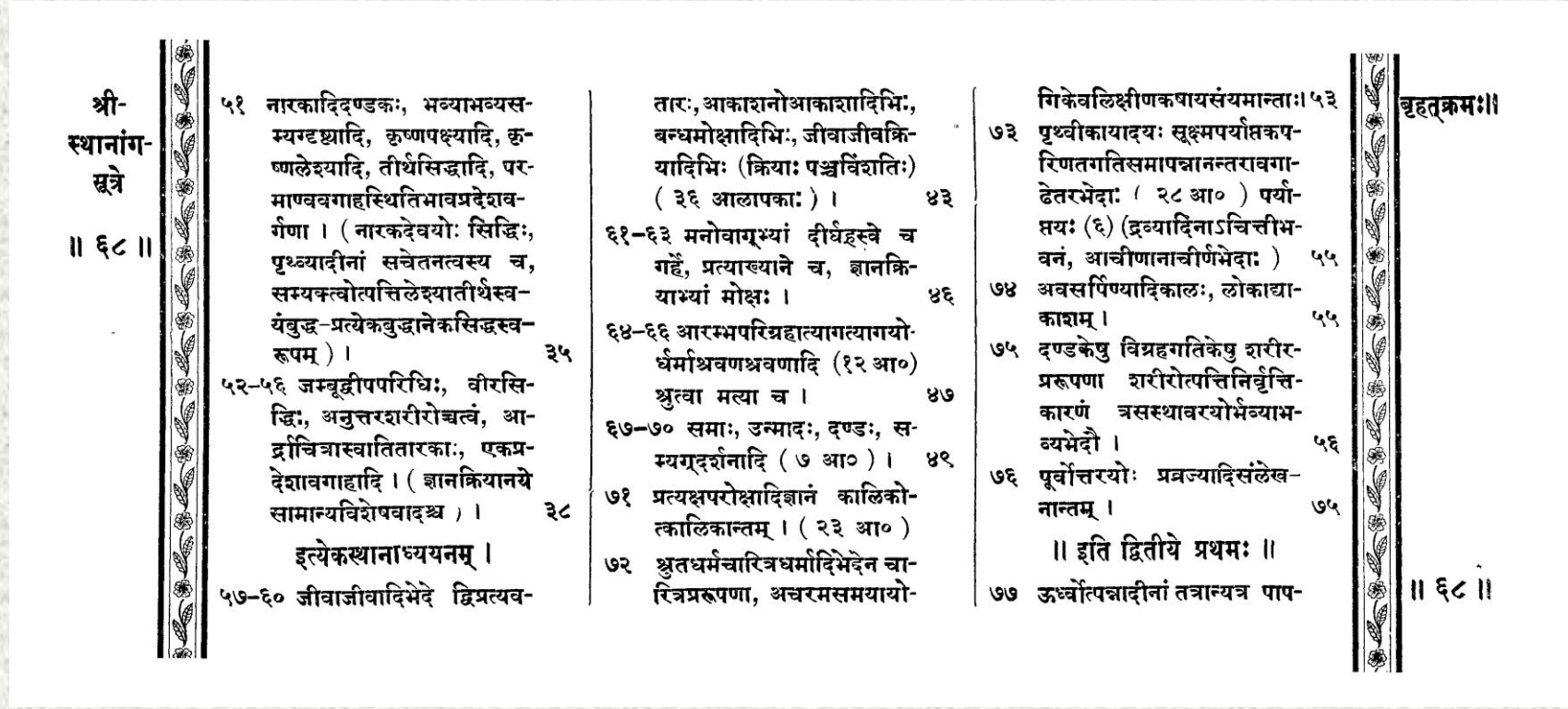
बृहत्क्रमः॥

॥ ६७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ६८ ॥

५१ नारकादिदण्डकः, भव्याभव्यसम्यग्दृष्ट्यादि, कृष्णपक्ष्यादि, कृष्णलेश्यादि, तीर्थसिद्धादि, परमाण्ववगाहस्थितिभावप्रदेशवर्गणा । (नारकदेवयोः सिद्धिः, पृथ्व्यादीनां सचेतनत्वस्य च, सम्यक्त्वोत्पत्तिलेश्यातीर्थस्वयंबुद्ध-प्रत्येकबुद्धानेकसिद्धस्वरूपम्) । ३५

५२-५६ जम्बूद्वीपपरिधिः, वीरसिद्धिः, अनुत्तरशरीरोच्चत्वं, आर्द्राचित्रास्वातितारकाः, एकप्रदेशावगाहादि । (ज्ञानक्रियानये सामान्यविशेषवादश्च) । ३८

इत्येकस्थानाध्ययनम् ।

५७-६० जीवाजीवादिभेदे द्विप्रत्यवतारः, आकाशनोआकाशादिभिः, बन्धमोक्षादिभिः, जीवाजीवक्रियादिभिः (क्रियाः पञ्चविंशतिः) (३६ आलापकाः) । ४३

६१-६३ मनोवाग्भ्यां दीर्घह्रस्वे च गर्हे, प्रत्याख्याने च, ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः । ४६

६४-६६ आरम्भपरिग्रहात्यागत्यागयोर्धर्माश्रवणश्रवणादि (१२ आ०) श्रुत्वा मत्या च । ४७

६७-७० समाः, उन्मादः, दण्डः, सम्यग्दर्शनादि (७ आ०) । ४९

७१ प्रत्यक्षपरोक्षादिज्ञानं कालिकोत्कालिकान्तम् । (२३ आ०)

७२ श्रुतधर्मचारित्रधर्मादिभेदेन चारित्रप्ररूपणा, अचरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायसंयमान्ताः । ५३

७३ पृथ्वीकायादयः सूक्ष्मपर्याप्तकपरिणतगतिसमापन्नानन्तरावगाढेतरभेदाः (२८ आ०) पर्यासयः (६) (द्रव्यादिनाऽचित्तीभवनं, आचीर्णानाचीर्णभेदाः) ५५

७४ अवसर्पिण्यादिकालः, लोकाद्याकाशम् । ५५

७५ दण्डकेषु विग्रहगतिकेषु शरीरप्ररूपणा शरीरोत्पत्तिनिर्वृत्तिकारणं त्रसस्थावरयोर्भव्याभव्यभेदौ । ५६

७६ पूर्वोत्तरयोः प्रव्रज्यादिसंलेखनान्तम् । ७५

॥ इति द्वितीये प्रथमः ॥

७७ ऊर्ध्वोत्पन्नादीनां तत्रान्यत्र पाप-

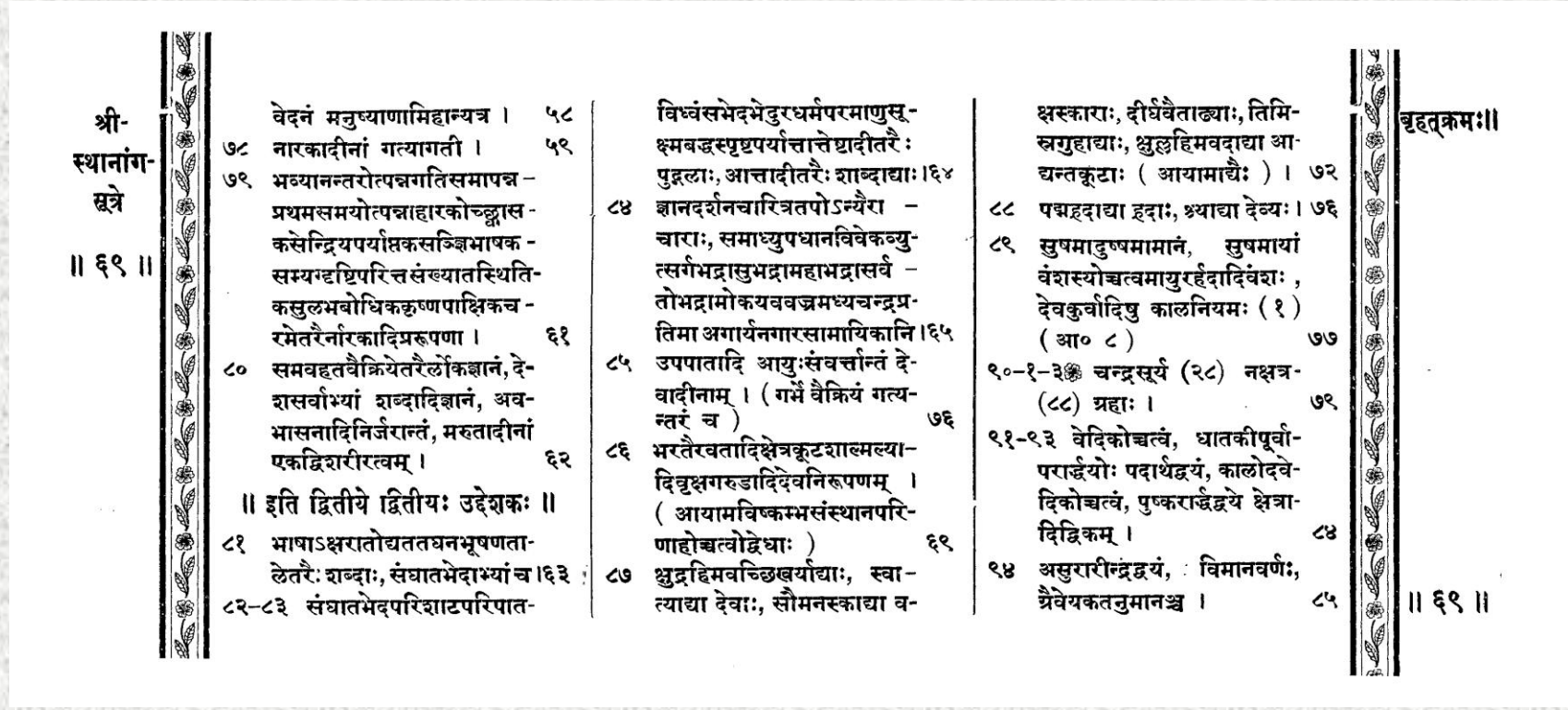
बृहत्क्रमः॥

॥ ६८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ६९ ॥

वेदनं मनुष्याणामिहान्यत्र । ५८
७८ नारकादीनां गत्यागती । ५९
७९ भव्यानन्तरोत्पन्नगतिसमापन्न-प्रथमसमयोत्पन्नाहारकोच्छ्वास-कसेन्द्रियपर्याप्तकसञ्ज्ञिभाषक-सम्यग्दृष्टिपरित्तसंख्यातस्थिति-कसुलभबोधिककृष्णपाक्षिकच-रमेतरैर्नारकादिप्ररूपणा । ६१
८० समवहतवैक्रियेतरैर्लोकज्ञानं, देशसर्वाभ्यां शब्दादिज्ञानं, अवभासनादिनिर्जरान्तं, मरुतादीनां एकद्विशरीरत्वम् । ६२

॥ इति द्वितीये द्वितीयः उद्देशकः ॥

८१ भाषाऽक्षरातोद्यततघनभूषणतालेतरैः शब्दाः, संघातभेदाभ्यां च ।६३
८२-८३ संघातभेदपरिशाटपरिपात-विध्वंसभेदभेदुरधर्मपरमाणुसूक्ष्मबद्धस्पृष्टपर्याप्तात्तेष्टादीतरैः पुद्गलाः, आत्तादीतरैः शाब्दाद्याः ।६४
८४ ज्ञानदर्शनचारित्रतपोऽन्यैरा-चाराः, समाध्युपधानविवेकव्युत्सर्गभद्रासुभद्रामहाभद्रासर्व-तोभद्रामोकयववज्रमध्यचन्द्रप्रतिमा अगार्यनगारसामायिकानि ।६५
८५ उपपातादि आयुःसंवर्त्तान्तं देवादीनाम् । (गर्भे वैक्रियं गत्यन्तरं च) ६६
८६ भरतैरवतादिक्षेत्रकूटशाल्मल्यादिवृक्षगरुडादिदेवनिरूपणम् । (आयामविष्कम्भसंस्थानपरिणाहोच्चत्वोद्वेधाः) ६९
८७ क्षुद्रहिमवच्छिखर्याद्याः, स्वात्याद्या देवाः, सौमनस्काद्या वक्षस्काराः, दीर्घवैताढ्याः, तिमिस्रगुहाद्याः, क्षुल्लहिमवदाद्या आद्यन्तकूटाः (आयामाद्यैः) । ७२
८८ पद्महदाद्या हृदाः, श्र्याद्या देव्यः । ७६
८९ सुषमादुष्षमामानं, सुषमायां वंशस्योच्चत्वमायुरर्हदादिवंशः, देवकुर्वादिषु कालनियमः (१) (आ० ८) ७७
९०-१-३ चन्द्रसूर्य (२८) नक्षत्र-(८८) ग्रहाः । ७९
९१-९३ वेदिकोच्चत्वं, धातकीपूर्वापरार्द्धयोः पदार्थद्वयं, कालोदवेदिकोच्चत्वं, पुष्करार्द्धद्वये क्षेत्रादिद्विकम् । ८४
९४ असुरारीन्द्रद्वयं, विमानवर्णः, ग्रैवेयकतनुमानञ्च । ८५

बृहत्क्रमः॥

॥ ६९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ७० ॥

९५ समयावलिकादित उत्सर्पिण्य-न्तानां (२५) ग्रामनगरादितो राजधान्यन्तानां (४७) छाया-दीनां संप्रवातान्तानां जीव-त्वम् । ८८

९६ प्रेमद्वेषौ बन्धौ,रागद्वेषाभ्यां पापं, आभ्युपगमिक्यौपक्रमिकीभ्या-मुदीर्णानि, (योगप्रत्ययबन्धस्व-रूपम्) । ८९

९७ देशसर्वाभ्यां शरीरस्पर्शादि । ९०

९८ क्षयोपशमाभ्यां धर्मश्रवणादि । ९०

९९-४-६ पल्योपमसागरोपमस्वरूपम् ।९१

१००-१०१-७ आत्मपरप्रतिष्ठितः क्रो-धादिः । सिद्धेन्द्रियकायादिभि-र्द्वैविध्यम् । (मिथ्यादृष्टेरज्ञानम्) ९३

१०२ अनुज्ञाताननुज्ञातानि मरणानि (९ आ०) (संलेखनादिविधिः) ९६

१०३-१०४ जीवाजीवयोरनन्तशाश्व-तत्वे, बोधिबुद्धमोहमूढाः । ९६

१०५ देशसर्वज्ञानदर्शनावरणीये साता-साते, दर्शनचारित्रमोहौ, अद्धा-भवायुषी, शुभाशुभनामनी,उच्च-नीचे, प्रत्युत्पन्नागामिनाशैः ॥ ९८

१०६-१०८ प्रेमद्वेषोद्भवा मूर्छा, धार्मि-ककेवल्याराधनाः, तीर्थकराणां वर्णाः । ९८

१०९-११२ पूर्ववस्तुलक्षत्रतारकमनुष्य-क्षेत्रसमुद्ररकगच्चक्रवर्त्तिनौ । ९९

११३-११८ भवनवास्यादिस्थितिः, क-ल्पस्त्रियः, तेजोलेश्याकल्पौ, प-रिचारणा, त्रसस्थावरकायनि-र्वर्त्तिताः पुद्गलचयनाद्या द्विप्रदे-शिकाद्या द्विगुणरूक्षान्ताः । (नि-षेकादिलक्षणम्) १०१

॥ द्वितीये चतुर्थः ॥ इति द्वितीयं स्थानं ॥

११९ नामस्थापनाद्रव्यज्ञानदेवेन्द्रादि-नवकम् । १०४

१२०-१२१ पर्यादायाऽपर्यादायोभयैर-भ्यन्तरबाह्यदानानादानेतरैर्वै – क्रियं, कृत्यकृत्यवक्तव्यसंचिता नारकाद्याः । १०५

१२२-१२३ देवपरिचारणाया मैथुन-तत्कारकस्य च त्रैविध्यम् । १०६

१२४ योगप्रयोगकरणत्रैविध्यं संरम्भ-समारम्भारम्भाश्च । १०८

१२५ अल्पदीर्घाशुभशुभदीर्घायुष्ककारणानि(संविग्नलुब्धकदृष्टान्तौ)। १११

१२६ गुप्त्यगुप्तिदण्डाः । ११२

बृहत्क्रमः॥

॥ ७० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७१ ॥

१२७ मनोवाक्कायैर्दीर्घह्रस्वकायैश्च ग्रर्हाप्रत्याख्याने । ११३
१२८ पत्रफलपुष्पोपगवृक्षवत्पुरुषत्रै-विध्यं, नामज्ञानवेदोत्तमधर्मो-ग्रदासादिभेदाः पुरुषाः (९ आ०) । ११४
१२९-१३१ मत्स्यपक्ष्युरोभुजपरिस-र्पाणां त्रैविध्यम् । (१२ आ०) तिर्यगादिस्त्रीपुरुषनपुंसकत्रैवि-ध्यं, तिर्यक्त्रैविध्यम् । ११५
१३२ लेश्यात्रयवन्तो जीवाः।(२४ आ०)। „
१३३ ताराचलनं विद्युत्कारः, स्तनि-तशब्दश्च । ११६
१३४ लोकान्धकारोद्योतौ देवान्ध-कारोद्योतसंनिपातादि, देवेन्द्रा-दीनां मनुष्यलोकागमन (१५)-देवाभ्युत्थानादि (४) चैत्यवृ-क्षचलनलोकान्तिकागमनकार-णानि । ११७
१३५ मातापितृभर्तृधर्माचार्यदुष्प्रति-कारत्वम् । १२०
१३६-१३८ अनिदानदृष्टिसंपन्नयोग-वाहिताभिर्मोक्षः, अवसर्पिण्या-दित्रैविध्यं, पुद्गलचलनोपधि-परिग्रहत्रैविध्यम् । १२१
२३९-४० प्रणिधानानि, योनयः । १२२
१४१-४२ संख्यातासंख्यातानन्तजी-विका वनस्पतयः, मागधादीनि तीर्थानि (१५) । १२३
१४३ सुषमामानं सुषमानरोच्चत्वायुषी, अर्हच्चक्रिदशारवंशाः, यथाऽऽ-युषो मध्यमायुषश्च (३२ आ०)।१२३
१४४-४६ तेजोवायुस्थितिः, शाल्या-दीनां योनिः; शर्करावालुकयोः स्थितिः । (भंतेशब्दार्थः) । १२४
१४७-४९ धूमप्रभास्थितिः, उष्णवे-दना, अप्रतिष्ठानादीनि सीमन्त-कादीनि च समानि, उदकरसा बहुमत्स्याश्चोदधयः । १२५
१५०-५२ निःशीलराजादीनां नरकग-मनं, त्यागिनां देवत्वं, विमान-वर्णाः, आनतादितनूच्चत्वं,कालि-कप्रज्ञप्तयः । १२६

॥ तृतीये प्रथमः ॥

१५३ नामज्ञानोर्ध्वादिलोकाः । (लोक-स्वरूपम्) । १२७
१५४ असुरेन्द्रादिपर्षदः । १२८
१५६-१५७ ज्ञानादिबोधिबुद्धाः, इह-

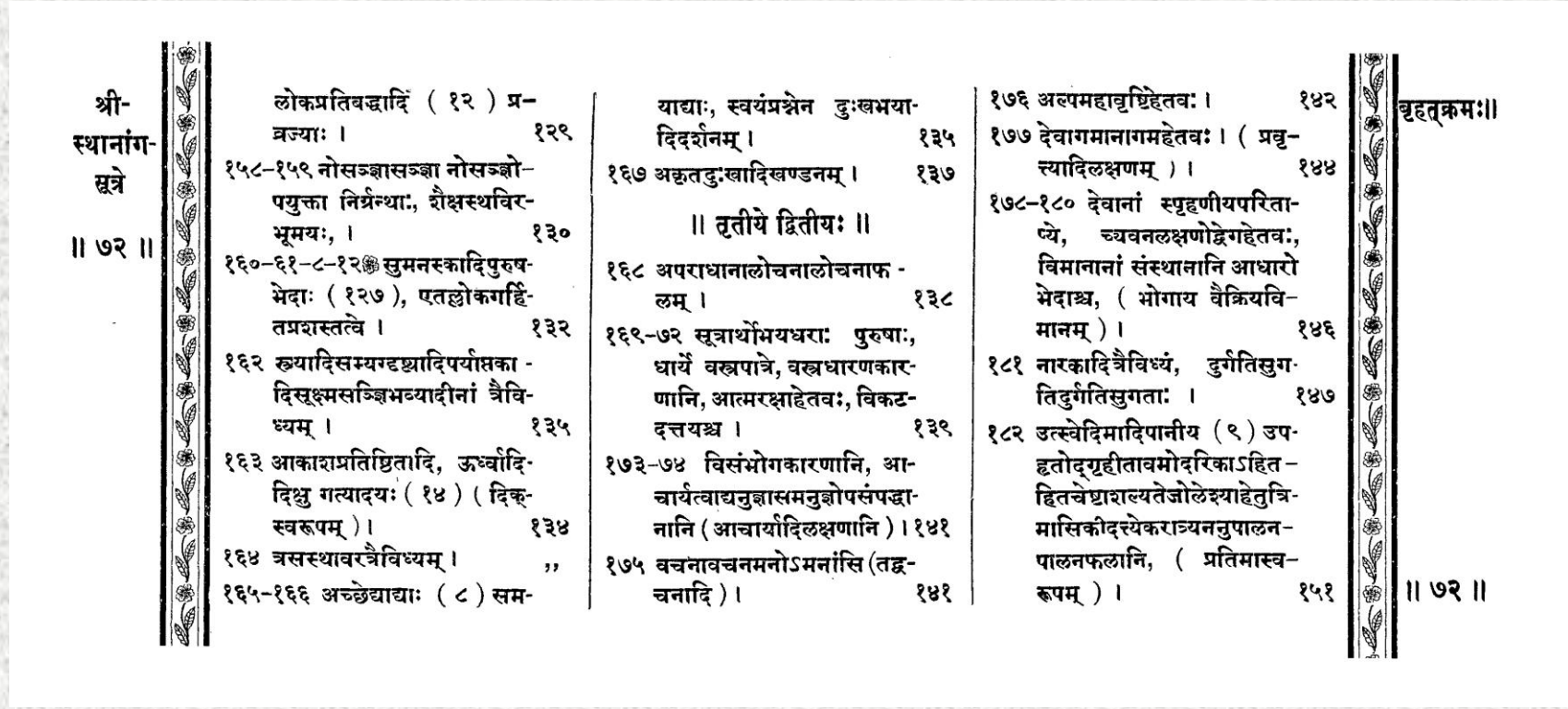
बृहत्क्रमः ।

॥ ७१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७२ ॥

लोकप्रतिबद्धादिं (१२) प्रव्रज्याः । १२९
१५८-१५९ नोसञ्ज्ञासञ्ज्ञा नोसञ्ज्ञोपयुक्ता निर्ग्रन्थाः, शैक्षस्थविरभूमयः, । १३०
१६०-६१-८-१२ सुमनस्कादिपुरुषभेदाः (१२७), एतल्लोकगर्हितप्रशस्तत्वे । १३२
१६२ रूयादिसम्यग्दृष्ट्यादिपर्याप्तका - दिसूक्ष्मसञ्ज्ञिभव्यादीनां त्रैविध्यम् । १३५
१६३ आकाशप्रतिष्ठितादि, ऊर्ध्वादिदिक्षु गत्यादयः (१४) (दिक्स्वरूपम्)। १३४
१६४ त्रसस्थावरत्रैविध्यम् । ,,
१६५-१६६ अच्छेद्याद्याः (८) समयाद्याः, स्वयंप्रज्ञेन दुःखभयादिदर्शनम् । १३५
१६७ अकृतदुःखादिखण्डनम् । १३७

॥ तृतीये द्वितीयः ॥

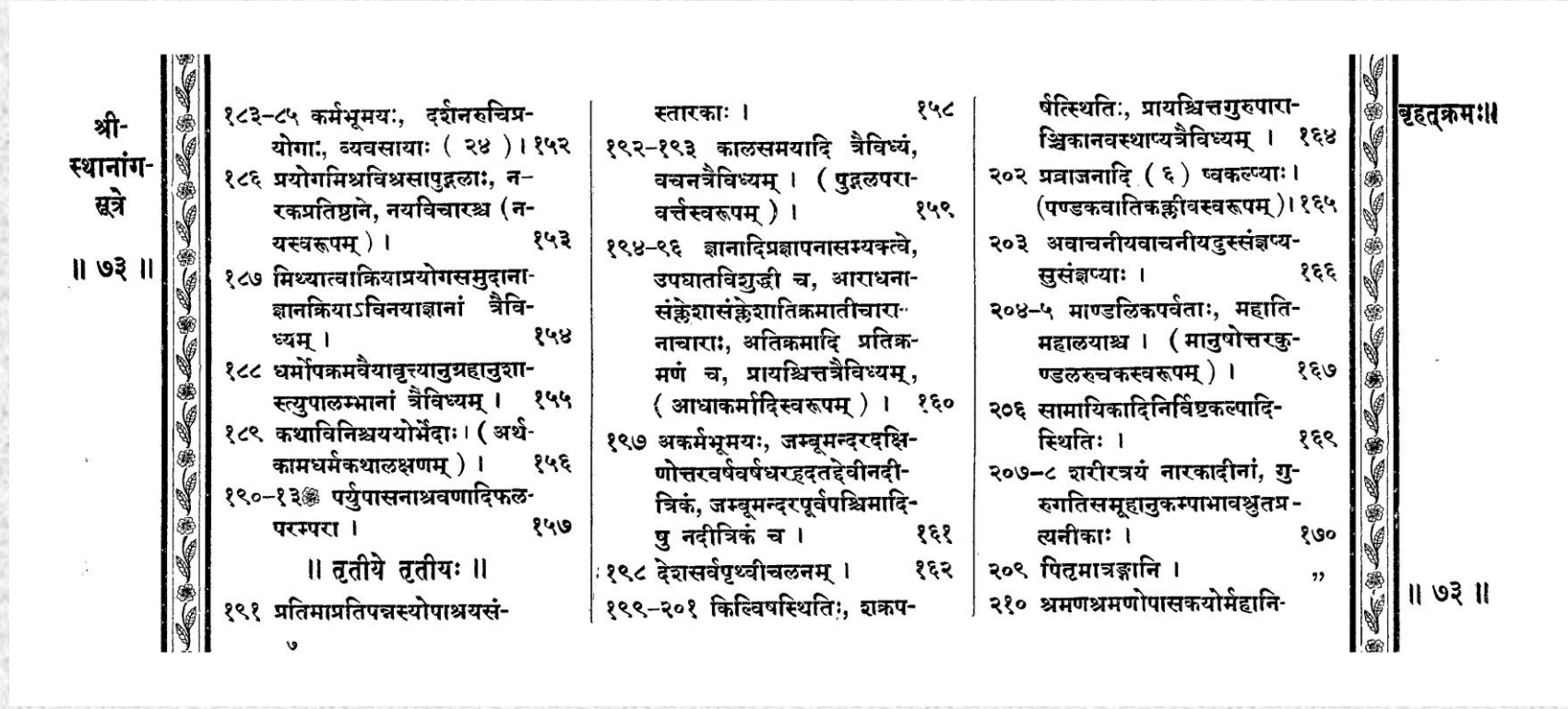
१६८ अपराधानालोचनालोचनाफ - लम् । १३८
१६९-७२ सूत्रार्थोभयधराः पुरुषाः, धार्ये वस्त्रपात्रे, वस्त्रधारणकारणानि, आत्मरक्षाहेतवः, विकटदत्तयश्च । १३९
१७३-७४ विसंभोगकारणानि, आचार्यत्वाद्यनुज्ञासमनुज्ञोपसंपद्धानानि (आचार्यादिलक्षणानि) । १४१
१७५ वचनावचनमनोऽमनांसि (तद्वचनादि) । १४१
१७६ अल्पमहावृष्टिहेतवः । १४२
१७७ देवागमानागमहेतवः । (प्रवृत्त्यादिलक्षणम्) । १४४
१७८-१८० देवानां स्पृहणीयपरितापे, च्यवनलक्षणोद्वेगहेतवः, विमानानां संस्थानानि आधारो भेदाश्च, (भोगाय वैक्रियविमानम्) । १४६
१८१ नारकादित्रैविध्यं, दुर्गतिसुगतिदुर्गतिसुगताः । १४७
१८२ उत्स्वेदिमादिपानीय (९) उपहृतोद्गृहीतावमोदरिकाऽहित - हितचेष्टाशल्यतेजोलेश्याहेतुत्रिमासिकीदस्त्येकराज्यननुपालन-पालनफलानि, (प्रतिमास्वरूपम्) । १५१

बृहत्क्रमः॥ ॥ ७२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७३ ॥

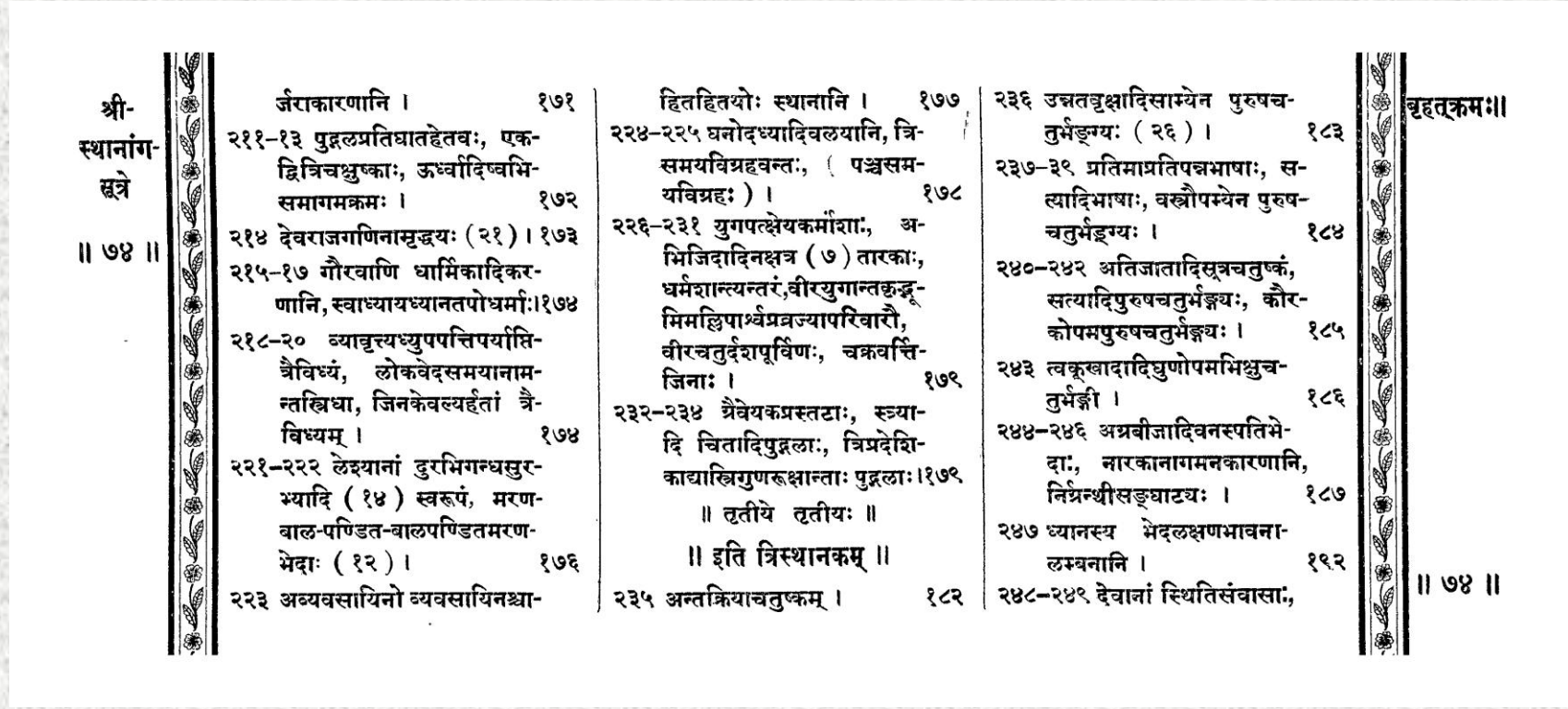
१८३–८५ कर्मभूमयः, दर्शनरुचिप्रयोगाः, व्यवसायाः (२४) । १५२
१८६ प्रयोगमिश्रविश्रसापुद्गलाः, नरकप्रतिष्ठाने, नयविचारश्च (नयस्वरूपम्) । १५३
१८७ मिथ्यात्वाक्रियाप्रयोगसमुदानाज्ञानक्रियाऽविनयाज्ञानां त्रैविध्यम् । १५४
१८८ धर्मोपक्रमवैयावृत्त्यानुग्रहानुशास्त्युपालम्भानां त्रैविध्यम् । १५५
१८९ कथाविनिश्चययोर्भेदाः । (अर्थकामधर्मकथालक्षणम्) । १५६
१९०–१३ पर्युपासनाश्रवणादिफलपरम्परा । १५७

॥ तृतीये तृतीयः ॥

१९१ प्रतिमाप्रतिपन्नस्योपाश्रयसंस्तारकाः । १५८
१९२–९३ कालसमयादि त्रैविध्यं, वचनत्रैविध्यम् । (पुद्गलपरावर्त्तस्वरूपम्) । १५९
१९४–९६ ज्ञानादिप्रज्ञापनासम्यक्त्वे, उपघातविशुद्धी च, आराधनासंक्लेशासंक्लेशातिक्रमातीचारानाचाराः, अतिक्रमादि प्रतिक्रमणं च, प्रायश्चित्तत्रैविध्यम्, (आधाकर्मादिस्वरूपम्) । १६०
१९७ अकर्मभूमयः, जम्बूमन्दरदक्षिणोत्तरवर्षवर्षधरह्रदतद्देवीनदीत्रिकं, जम्बूमन्दरपूर्वपश्चिमादिषु नदीत्रिकं च । १६१
१९८ देशसर्वपृथ्वीचलनम् । १६२
१९९–२०१ किल्विषस्थितिः, शक्रपर्षत्स्थितिः, प्रायश्चित्तगुरुपाराञ्चिकानवस्थाप्यत्रैविध्यम् । १६४
२०२ प्रव्राजनादि (६) ष्वकल्प्याः । (पण्डकवातिकक्लीवस्वरूपम्) । १६५
२०३ अवाचनीयवाचनीयदुस्संज्ञप्यसुसंज्ञप्याः । १६६
२०४–५ माण्डलिकपर्वताः, महातिमहालयाश्च । (मानुषोत्तरकुण्डलरुचकस्वरूपम्) । १६७
२०६ सामायिकादिनिर्विष्टकल्पादिस्थितिः । १६९
२०७–८ शरीरत्रयं नारकादीनां, गुरुगतिसमूहानुकम्पाभावश्रुतप्रत्यनीकाः । १७०
२०९ पितृमात्रङ्गानि । ,,
२१० श्रमणश्रमणोपासकयोर्महानि-

॥ ७३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



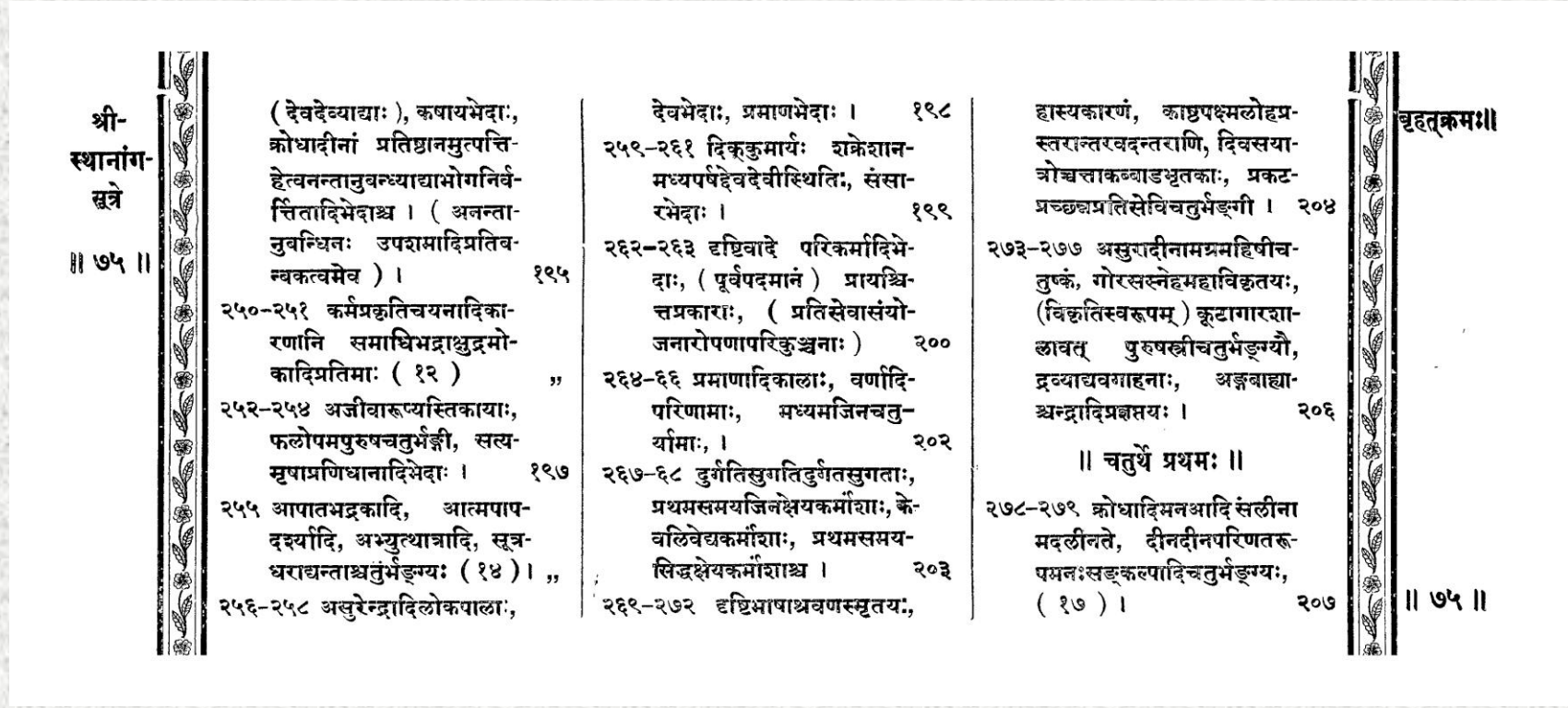
श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ७४ ॥

जराकारणानि । १७१
२११–१३ पुद्गलप्रतिघातहेतवः, एक-द्वित्रिचक्षुष्काः, ऊर्ध्वादिष्वभि-समागमक्रमः । १७२
२१४ देवराजगणिनामृद्धयः (२१)। १७३
२१५–१७ गौरवाणि धार्मिकादिकर-णानि, स्वाध्यायध्यानतपोधर्माः।१७४
२१८–२० व्यावृत्त्यध्युपपत्तिपर्याप्ति-त्रैविध्यं, लोकवेदसमयानाम-न्तस्त्रिधा, जिनकेवल्यर्हतां त्रै-विध्यम् । १७४
२२१–२२२ लेश्यानां दुरभिगन्धसुर-भ्यादि (१४) स्वरूपं, मरण-बाल-पण्डित-बालपण्डितमरण-भेदाः (१२)। १७६
२२३ अव्यवसायिनो व्यवसायिनश्चा-हितहितयोः स्थानानि । १७७
२२४–२२५ घनोदध्यादिवलयानि, त्रि-समयविग्रहवन्तः, (पञ्चसम-यविग्रहः) । १७८
२२६–२३१ युगपत्क्षेयकर्मांशाः, अ-भिजिदादिनक्षत्र (७) तारकाः, धर्मशान्त्यन्तरं,वीरयुगान्तकृद्भू-मिमल्लिपार्श्वप्रव्रज्यापरिवारौ, वीरचतुर्दशपूर्विणः, चक्रवर्त्ति-जिनाः । १७९
२३२–२३४ ग्रैवेयकप्रस्तटाः, स्त्र्या-दि चितादिपुद्गलाः, त्रिप्रदेशि-काद्यास्त्रिगुणरूक्षान्ताः पुद्गलाः।१७९
॥ तृतीये तृतीयः ॥
॥ इति त्रिस्थानकम् ॥
२३५ अन्तक्रियाचतुष्कम् । १८२
२३६ उन्नतवृक्षादिसाम्येन पुरुषच-तुर्भङ्ग्यः (२६)। १८३
२३७–३९ प्रतिमाप्रतिपन्नभाषाः, स-त्यादिभाषाः, वस्त्रौपम्येन पुरुष-चतुर्भङ्ग्यः । १८४
२४०–२४२ अतिजातादिसूत्रचतुष्कं, सत्यादिपुरुषचतुर्भङ्ग्यः, कौर-कोपमपुरुषचतुर्भङ्ग्यः । १८५
२४३ त्वक्खादादिघुणोपमभिक्षुच-तुर्भङ्गी । १८६
२४४–२४६ अग्रबीजादिवनस्पतिभे-दाः, नारकानागमनकारणानि, निर्ग्रन्थीसङ्घाटयः । १८७
२४७ ध्यानस्य भेदलक्षणभावना-लम्बनानि । १९२
२४८–२४९ देवानां स्थितिसंवासाः,

बृहत्क्रमः॥

॥ ७४ ॥



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७५ ॥

(देवदेव्याद्याः), कषायभेदाः, क्रोधादीनां प्रतिष्ठानमुत्पत्तिहेत्वनन्तानुबन्ध्याद्याभोगनिर्वर्त्तितादिभेदाश्च । (अनन्तानुबन्धिनः उपशमादिप्रतिबन्धकत्वमेव) । १९५

२५०-२५१ कर्मप्रकृतिचयनादिकारणानि समाधिभद्राक्षुद्रमोकादिप्रतिमाः (१२) ,,

२५२-२५४ अजीवारूप्यस्तिकायाः, फलोपमपुरुषचतुर्भङ्गी, सत्यमृषाप्रणिधानादिभेदाः । १९७

२५५ आपातभद्रकादि, आत्मपापदर्श्यादि, अभ्युत्थात्रादि, सूत्रधराद्यन्ताश्चतुर्भङ्ग्यः (१४)। ,,

२५६-२५८ असुरेन्द्रादिलोकपालाः, देवभेदाः, प्रमाणभेदाः । १९८

२५९-२६१ दिक्कुमार्यः शक्रेशानमध्यपर्षद्देवदेवीस्थितिः, संसारभेदाः । १९९

२६२-२६३ दृष्टिवादे परिकर्मादिभेदाः, (पूर्वपदमानं) प्रायश्चित्तप्रकाराः, (प्रतिसेवासंयोजनारोपणापरिकुञ्चनाः) २००

२६४-६६ प्रमाणादिकालाः, वर्णादिपरिणामाः, मध्यमजिनचतुर्यामाः, । २०२

२६७-६८ दुर्गतिसुगतिदुर्गतसुगताः, प्रथमसमयजिनक्षेयकर्मांशाः, केवलिवेद्यकर्मांशाः, प्रथमसमयसिद्धक्षेयकर्मांशाश्च । २०३

२६९-२७२ दृष्टिभाषाश्रवणस्मृतयः, हास्यकारणं, काष्ठपक्ष्मलोहप्रस्तरान्तरवदन्तराणि, दिवसयाञ्चोच्चत्ताकब्बाडभृतकाः, प्रकटप्रच्छन्नप्रतिसेवाचतुर्भङ्गी । २०४

२७३-२७७ असुरादीनामग्रमहिषीचतुष्कं, गोरसस्नेहमहाविकृतयः, (विकृतिस्वरूपम्) कूटागारशालावत् पुरुषस्त्रीचतुर्भङ्ग्यौ, द्रव्याद्यवगाहनाः, अङ्गबाह्याश्चन्द्रादिप्रज्ञप्तयः । २०६

॥ चतुर्थे प्रथमः ॥

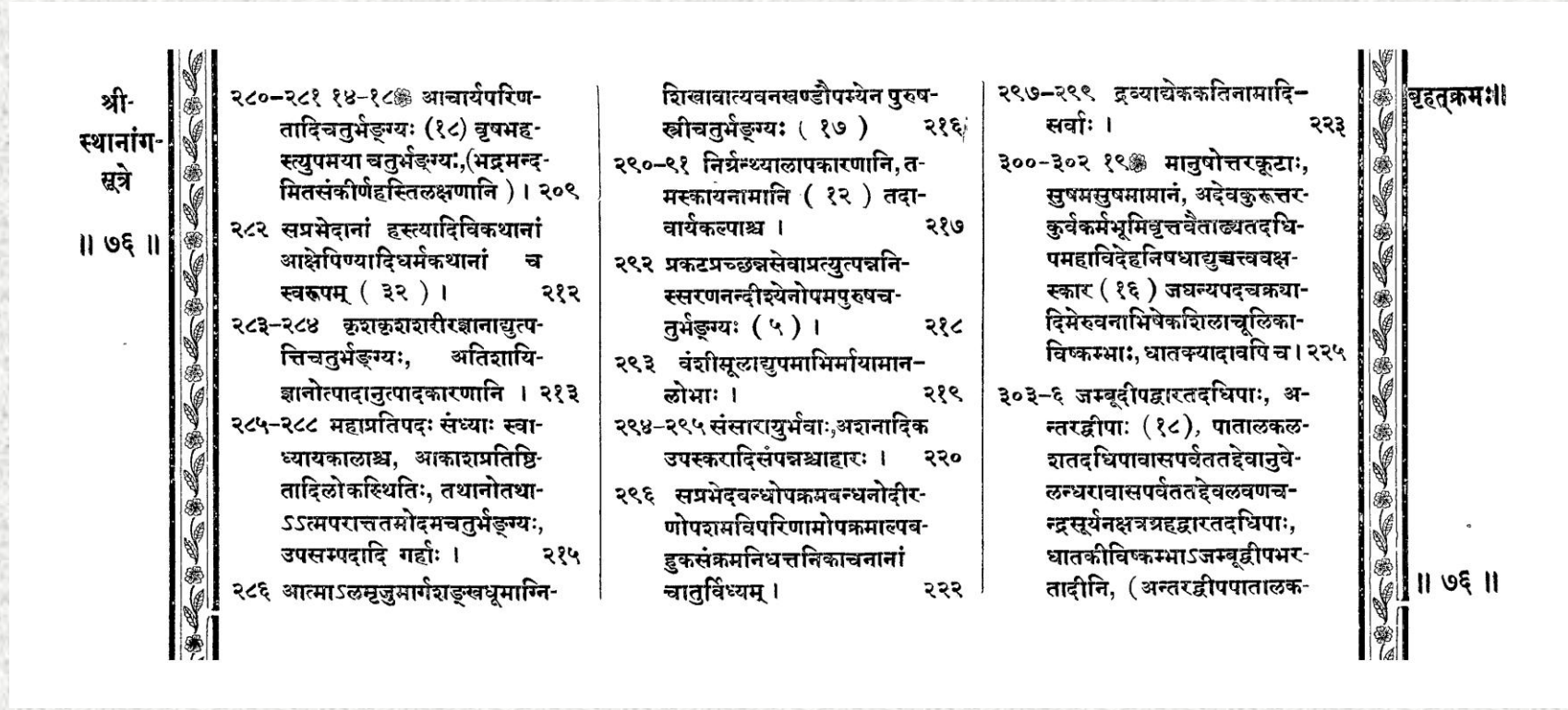
२७८-२७९ क्रोधादिमनआदिसंलीनामदलीनते, दीनदीनपरिणतरूपमनःसङ्कल्पादिचतुर्भङ्ग्यः, (१७) । २०७

बृहत्क्रमः॥ ॥ ७५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७६ ॥

२८०–२८१ १४–१८ आचार्यपरिणतादिचतुर्भङ्ग्यः (१८) वृषभहस्त्युपमया चतुर्भङ्ग्यः,(भद्रमन्दमितसंकीर्णहस्तिलक्षणानि)। २०९

२८२ सप्रभेदानां हस्त्यादिविकथानां आक्षेपिण्यादिधर्मकथानां च स्वरूपम् (३२)। २१२

२८३–२८४ कृशकृशशरीरज्ञानाद्युत्पत्तिचतुर्भङ्ग्यः, अतिशायिज्ञानोत्पादानुत्पादकारणानि । २१३

२८५–२८८ महाप्रतिपदः संध्याः स्वाध्यायकालाश्च, आकाशप्रतिष्ठितादिलोकस्थितिः, तथानोतथाऽऽत्मपरात्ततमोदमचतुर्भङ्ग्यः, उपसम्पदादि गर्हाः । २१५

२८६ आत्माऽलमृजुमार्गशङ्खधूमाग्निशिखावात्यवनखण्डौपम्येन पुरुषस्त्रीचतुर्भङ्ग्यः (१७) २१६

२९०–९१ निर्ग्रन्थ्यालापकारणानि, तमस्कायनामानि (१२) तदावार्यकल्पाश्च । २१७

२९२ प्रकटप्रच्छन्नसेवाप्रत्युत्पन्ननिस्सरणनन्दीश्येनोपमपुरुषचतुर्भङ्ग्यः (५)। २१८

२९३ वंशीमूलाद्युपमाभिर्मायामानलोभाः । २१९

२९४–२९५ संसारायुर्भवाः,अशनादिक उपस्करादिसंपन्नश्चाहारः । २२०

२९६ सप्रभेदबन्धोपक्रमबन्धनोदीरणोपशमविपरिणामोपक्रमाल्पबहुकसंक्रमनिधत्तनिकाचनानां चातुर्विध्यम् । २२२

२९७–२९९ द्रव्याद्येककतिनामादिसर्वाः । २२३

३००–३०२ १९ मानुषोत्तरकूटाः, सुषमसुषमामानं, अदेवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमिवृत्तवैताढ्यतदधिपमहाविदेहनिषधाद्युच्चत्ववक्षस्कार (१६) जघन्यपदचक्रवादिमेरुवनाभिषेकशिलाचूलिकाविष्कम्भाः, धातक्यादावपि च । २२५

३०३–६ जम्बूद्वीपद्वारतदधिपाः, अन्तरद्वीपाः (१८), पातालकलशतदधिपावासपर्वततद्देवानुवेलन्धरावासपर्वततद्देवलवणचन्द्रसूर्यनक्षत्रग्रहद्वारतदधिपाः, धातकीविष्कम्भाऽजम्बूद्वीपभरतादीनि, (अन्तरद्वीपपातालक-

बृहत्क्रमः॥

॥ ७६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥ ७७ ॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे



लशवेलन्धरवक्तव्यता)। २२९
३०७-२० नन्दीश्वराञ्जनकसिद्धायतनतद्वारतदधिपमुखमुण्डपप्रेक्षागृहाक्षाटकमणिपीठिकासिंहासनविजयदूष्याङ्कुशमुक्तादामचैत्यस्तूपजिनप्रतिमापुष्करिणीवनषण्डवापीत्रिसोपानतोरणदधिमुखरतिकराग्रमहिषीराजधान्यः। २३३
३०८-१० नामसत्यादि, आजीविकतपः, मलआदिसंयमत्यागाकिञ्चन्यानि, (पुस्तकवस्त्रचर्मपञ्चकानि)। २३४
॥ चतुर्थे द्वितीयः ॥
३११-१२ पर्वतादिराजीकर्दमाद्युदकसमौ क्रोधभावौ, रुतरूपाभ्यां प्रीत्यप्रीतिभ्यामात्मपरयोः प्रीतिकरणप्रवेशचतुर्भङ्ग्यः। २३५
३१३-३१४ पत्रपुष्पफलच्छायोपगवृक्षवत्पुरुषाः,भारवाहकाश्वासवत् श्रमणोपासकाश्वासाः। २३७
३१५-१९ उदितोदितोदितास्तमितभङ्गाः (४) भरतादिषु, कृतयुग्मादिक्षान्त्यादिशूराः, उच्चोच्चच्छन्दादिचतुर्भङ्गी, चतुर्लेश्याकाः) । २३८
३२० यानयुग्यसारथिहयगजयुग्यचर्यापुष्पफलोपमैःपुरुषचतुर्भङ्ग्यः, प्रव्राजनोद्देशनाद्याचार्यशिष्याः, आराधनाऽनाराधनयो रत्नाधिकादिनिर्ग्रन्थनिर्ग्रन्थीश्रावकश्राविकाश्च । २४२
३२१-२३ मातापित्रादिआदर्शादिसमाः श्रावकाः (८) वीरश्रावकस्थितिः, देवानागमागमकारणानि । २४५
३२४ लोकान्धकारोद्योतादि, लोकान्तिकागमनकारणानि । २४५
३२५-३२६ दुःखसुखशय्याः अवाचनीयवाचनीयाः। २४७
३२७ आत्मंभरिपरंभर्यादि चतुर्भङ्ग्यः। २५०
३२८-३२९ अप्रतिष्ठादीनि सीमन्तकादीनि समानि सपक्षाणि च, द्विशरीराः। २५१
३३०-३३४ हीमत्त्वादिपुरुषाः, शय्यावस्त्रपात्रस्थानप्रतिमा, जीवस्पृष्टकार्मणोन्मिश्रशरीराणि, लोकास्तिकायवादराः समप्रदेशाः,



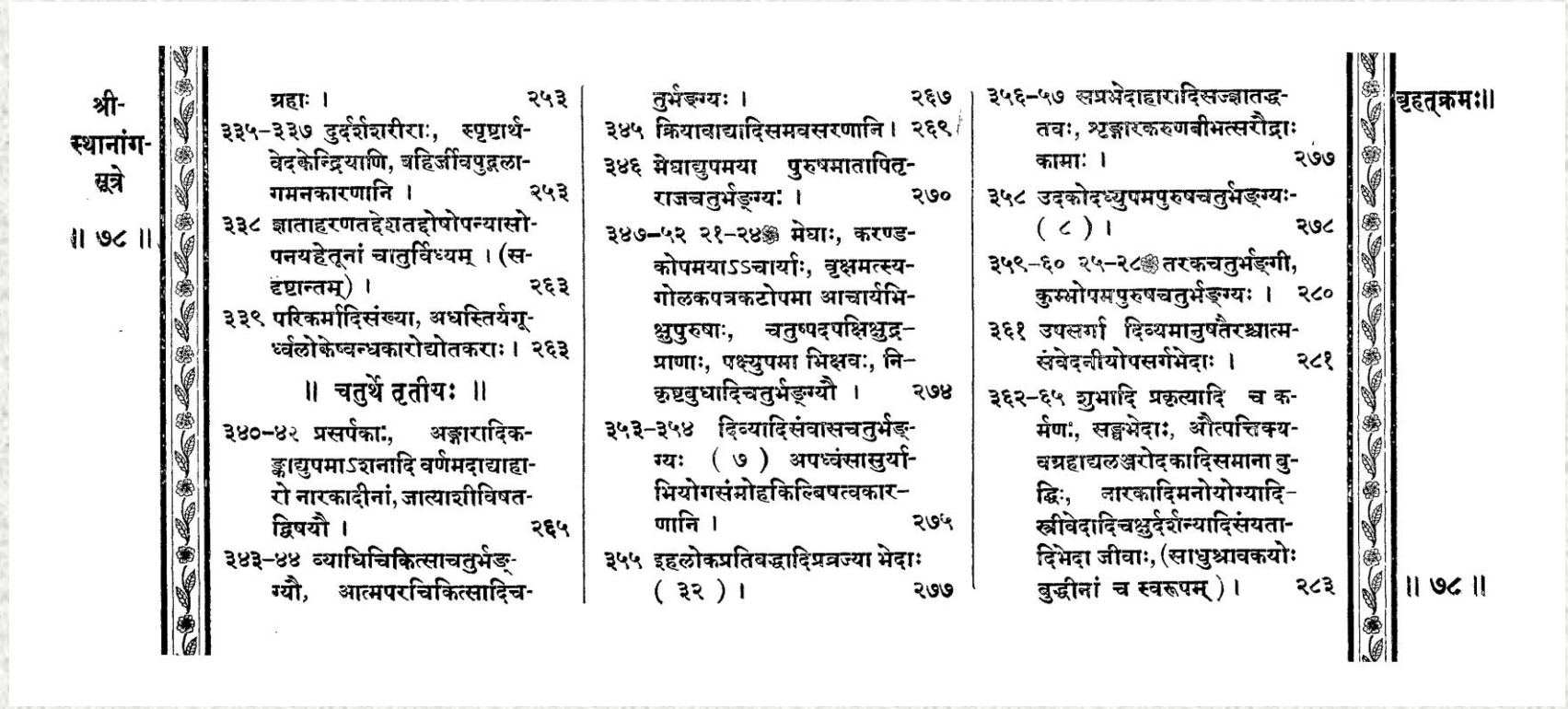
बृहत्क्रमः॥

॥ ७७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७८ ॥

ग्रहाः । २५३
३३५-३३७ दुर्दर्शशरीराः, स्पृष्ट्यर्थ-वेदकेन्द्रियाणि, बहिर्जीवपुद्गला-गमनकारणानि । २५३
३३८ ज्ञाताहरणतद्देशतद्दोषोपन्यासो-पनयहेतूनां चातुर्विध्यम् । (स-दृष्टान्तम्) । २६३
३३९ परिकर्मादिसंख्या, अधस्तिर्यगू-र्ध्वलोकेष्वन्धकारोद्योतकराः । २६३

॥ चतुर्थे तृतीयः ॥

३४०-४२ प्रसर्पकाः, अङ्गारादिक-ङ्ग्राद्युपमाऽशनादि वर्णमदाद्याहा-रो नारकादीनां, जात्याशीविषत-द्विषयौ । २६५
३४३-४४ व्याधिचिकित्साचतुर्भङ्ग्यौ, आत्मपरचिकित्सादिच-तुर्भङ्ग्यः । २६७
३४५ क्रियावाद्यादिसमवसरणानि । २६९
३४६ मेघाद्युपमया पुरुषमातापितृ-राजचतुर्भङ्ग्यः । २७०
३४७-५२ २१-२४ मेघाः, करण्ड-कोपमयाऽऽचार्याः, वृक्षमत्स्य-गोलकपत्रकटोपमा आचार्यभि-क्षुपुरुषाः, चतुष्पदपक्षिक्षुद्र-प्राणाः, पक्ष्युपमा भिक्षवः, नि-कृष्टबुधादिचतुर्भङ्ग्यौ । २७४
३५३-३५४ दिव्यादिसंवासचतुर्भङ्ग्यः (७) अपध्वंसासुर्या-भियोगसंमोहकिल्बिषत्वकार-णानि । २७५
३५५ इहलोकप्रतिबद्धादिप्रव्रज्या भेदाः (३२) । २७७
३५६-५७ सप्तभेदाहारादिसज्ज्ञातद्ध-तवः, शृङ्गारकरुणबीभत्सरौद्राः कामाः । २७७
३५८ उदकोदध्युपमपुरुषचतुर्भङ्ग्यः-(८) । २७८
३५९-६० २५-२८ तरकचतुर्भङ्गी, कुम्भोपमपुरुषचतुर्भङ्ग्यः । २८०
३६१ उपसर्गा दिव्यमानुषतैरश्चात्म-संवेदनीयोपसर्गभेदाः । २८१
३६२-६५ शुभादि प्रकृत्यादि च क-र्मणः, सङ्घभेदाः, औत्पत्तिक्य-वग्रहाद्यवलग्नरोदकादिसमाना बु-द्धिः, नारकादिमनोयोग्यादि-स्त्रीवेदादिचक्षुर्दर्शन्यादिसंयता-दिभेदा जीवाः, (साधुश्रावकयोः बुद्धीनां च स्वरूपम्) । २८३

बृहत्क्रमः॥ ॥ ७८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ७९ ॥

३६६-७१ मित्रादिपुरुषचतुर्भङ्ग्यः, तिर्यङ्मनुष्यगत्यागती, द्वीन्द्रियानारम्भारम्भसंयमासंयमौ, सम्यग्दृष्टिक्रिया, गुणनाशोत्पादकारणानि शरीरकारणानि । २८५
३७२-७५ धर्मद्वाराणि, महारम्भत्वादीनि नारकत्वादिकारणानि, वाद्यनृत्यगेयमाल्यालङ्काराभिनयानां चातुर्विध्यं, सनत्कुमारादिविमानवर्णशुक्रादिदेवतनुमाने । २८७
३७६-७७ २९-३१ उदकगर्भाः, मानुषीगर्भाः । २८७
३७८-८५ उत्पादवस्तूनि काव्यानि, नारकवातसमुद्घाताः, नेमिचतुर्दशपूर्विणः, वीरवादिनः, अर्द्धपूर्णार्द्धचन्द्रसमाः कल्पाः, प्रत्येकरसोदधयः, खरावर्त्ताद्युपमया कषायाः ॥ २८९
३८६-८८ अनुराधादि (३) तारकाः, पापचयनादि चतुष्प्रदेशिकादि । २०९

॥ चतुर्थं चतुर्थः ॥

॥ इति चतुर्थस्थानकाध्य० ॥

३८९ महाव्रतानुव्रतानि । २९१
३९०-९१ वर्णरसकामगुणभेदः सङ्गादिविनिघातहेत्वहितहितदुर्गतिसुगतिहेतवः (१३), प्राणातिपाततद्विरमणादिभिर्दुर्गतिसुगती । २९२
३९२-९४ भद्राद्याः प्रतिमाः, (तत्स्थापना) इन्द्राद्याः स्थावराः, अवधिदर्शनोत्पादक्षमक्षोभाः । २९४
३९५ शरीरवर्णरसभेदौदारिकवर्णादि, (शरीरस्वरूपम्) । २९६
३९६-९७ दुराख्यातस्वाख्यातादिभिर्दुर्गमसुगमे शान्त्यादि सत्यादि उत्क्षिप्तचरत्वादि अज्ञातचरत्वादि उपनिहितादि आचाम्लादि अरसाहारादि अरसजीवित्वादि स्थानादि दण्डायतिकादी (५०) । न्यभ्यनुज्ञातानि च, अग्लान्या वैयावृत्त्येन (७०) महानिर्जरा । ३००
३९८-४०० विसंभोगपाराञ्चिककारणानि, विग्रहाविग्रहस्थानानि, उत्कुटुकादिनिषद्याऽऽर्जवस्थानानि । (सूत्राध्ययनपर्यायाः) २०२

बृहत्क्रमः ।

॥ ७९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ८० ॥

४०१-५ चन्द्रादिभव्यादिदेवाः, कायादिपरिचारणा, चमरबल्यग्रमहिष्यः, असुरेन्द्रादीनां संग्रामानीकतदधिपाः, शक्रेशानाभ्यन्तरपर्षद्देवदेवीस्थितिः। ३०३
४०६-८ गत्यादिप्रतिघाताः, जात्याद्याजीवाः,खड्गादिचिह्नानि। ३०४
४०९ छद्मस्थकेवलिपरीषहसहनकारणानि । ३०५
४१० हेत्वहेतुज्ञानाज्ञानकेवल्यनुत्तराणि । ३०७
४११ पद्मप्रभादीनां (१४) च्यवनादिनक्षत्राणि । ३०७
॥ पञ्चमे प्रथमः ॥
४१२-१३ गङ्गादयो द्विस्त्रिर्मासान्तरनुत्तार्या अन्यत्र भयादिभ्यः । प्रथमप्रावृष्यन्यत्र भयादिभ्यः, पर्युषितेऽन्यत्र ज्ञानादिभ्यो न विहारः । ३१०
४१४ हस्तकर्मादीनि गुरूणि । ३११
४१५ राजान्तःपुरप्रवेशकारणानि । ३१२
४१६ असंसर्गे गर्भधारणे (५) संसर्गेऽपि गर्भाधारणे (१५) कारणानि च । ३१४
४१७ निर्ग्रन्थनिर्ग्रन्थ्येकत्रावासकारणानि (१०) । ३१५
४१८-४१९ आश्रवसंवरद्वारदण्डाः, आरम्भिक्याद्याः कायिक्याद्याश्च क्रियाः । ३१७
४२०-२१ उपध्यादिपरिज्ञा, आगमादिव्यवहाराः । ३१९
४२२-२५ सुप्तजागरितसंयतासंयतानां सुप्तजागराः, रजआदानवमनकारणानि, पञ्चमासिकीदत्तयः, उद्गमाद्युपघातविशुद्धिः। ३२१
४२६ दुर्लभसुलभबोधिकारणानि । ३२२
४२७-३१ संलीनतासंलीनता संवरासंवरा सामायिकादिसंयमाः, एकेन्द्रियानारम्भारम्भसंयमः, पञ्चेन्द्रियसर्वप्राणाद्यनारम्भारम्भसंयमासंयमाः, अग्रबीजाद्या वनस्पतिभेदाः । (चारित्रस्वरूपम्) । ३२५
४३२-३३ ज्ञानाद्याचाराः, मासिकाद्याचारप्रकल्पप्रस्थापिताद्यारोपणा ३२६
४३४-४३५ जम्बूधातकीपुष्करपूर्वापरार्द्धपूर्वसीतापश्चिमसीतोदोत्तरदक्षिणवक्षस्कार (२०) देव-

बृहत्क्रमः॥

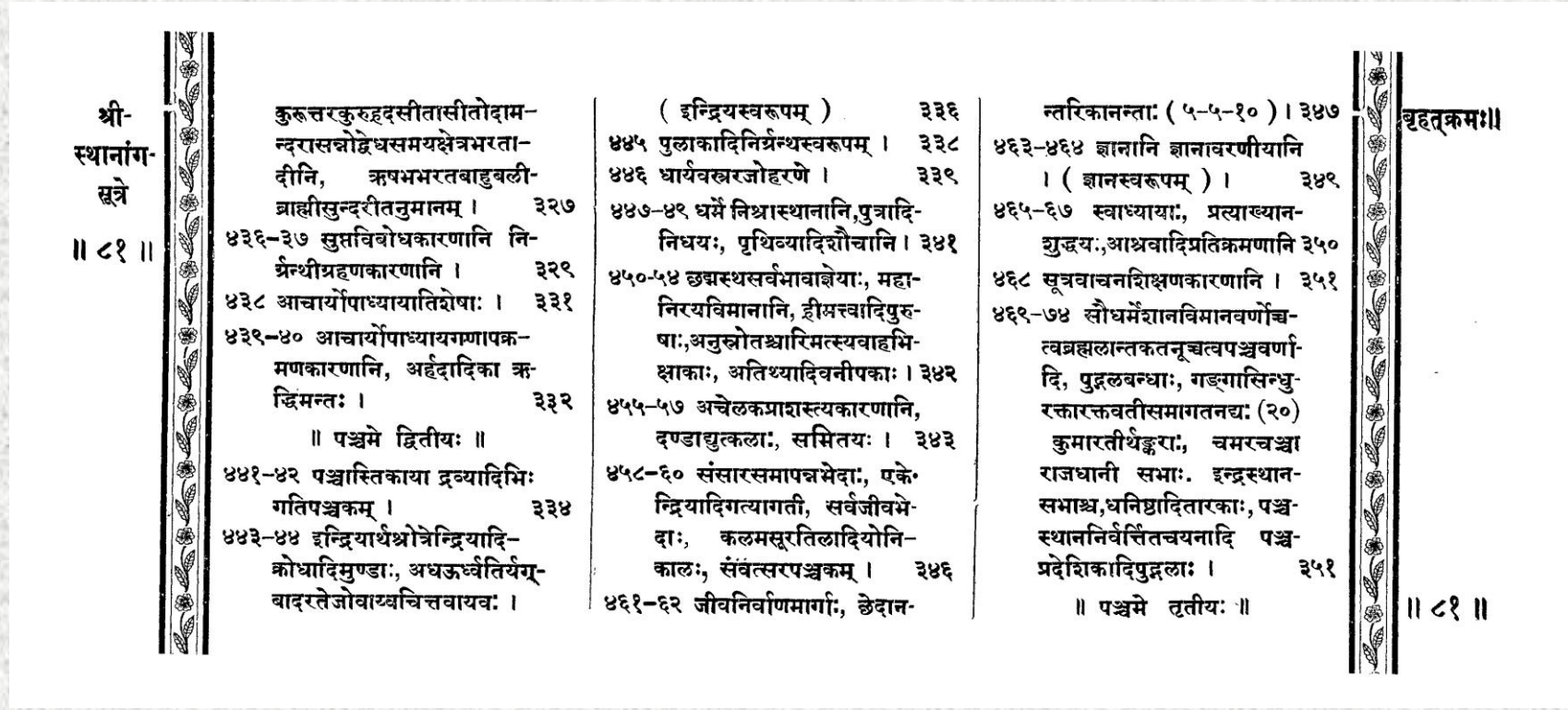
॥ ८० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥ ८१ ॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे

कुरूत्तरकुरुहृदसीतासीतोदाम-
न्दरासन्नोद्वेधसमयक्षेत्रभरता-
दीनि, ऋषभभरतबाहुबली-
ब्राह्मीसुन्दरीतनुमानम् । ३२७
४३६-३७ सुप्तविबोधकारणानि नि-
र्ग्रन्थीग्रहणकारणानि । ३२९
४३८ आचार्योपाध्यायातिशेषाः । ३३१
४३९-४० आचार्योपाध्यायगणापक्र-
मणकारणानि, अर्हदादिका ऋ-
द्धिमन्तः । ३३२
॥ पञ्चमे द्वितीयः ॥
४४१-४२ पञ्चास्तिकाया द्रव्यादिभिः
गतिपञ्चकम् । ३३४
४४३-४४ इन्द्रियार्थश्रोत्रेन्द्रियादि-
क्रोधादिमुण्डाः, अधऊर्ध्वतिर्यग्-
बादरतेजोवाय्वचित्तवायवः ।
(इन्द्रियस्वरूपम्) ३३६
४४५ पुलाकादिनिर्ग्रन्थस्वरूपम् । ३३८
४४६ धार्यवस्त्ररजोहरणे । ३३९
४४७-४९ धर्मे निश्रास्थानानि,पुत्रादि-
निधयः, पृथिव्यादिशौचानि । ३४१
४५०-५४ छद्मस्थसर्वभावाज्ञेयाः, महा-
निरयविमानानि, ह्रीमत्त्वादिपुरु-
षाः,अनुस्रोतश्चारिमत्स्यवाहभि-
क्षाकाः, अतिथ्यादिवनीपकाः । ३४२
४५५-५७ अचेलकप्राशस्त्यकारणानि,
दण्डाद्युत्कलाः, समितयः । ३४३
४५८-६० संसारसमापन्नभेदाः, एके-
न्द्रियादिगत्यागती, सर्वजीवभे-
दाः, कलमसूरतिलादियोनि-
कालः, संवत्सरपञ्चकम् । ३४६
४६१-६२ जीवनिर्वाणमार्गाः, छेदान-
न्तरिकानन्ताः (५-५-१०) । ३४७
४६३-४६४ ज्ञानानि ज्ञानावरणीयानि
। (ज्ञानस्वरूपम्) । ३४९
४६५-६७ स्वाध्यायाः, प्रत्याख्यान-
शुद्धयः,आश्रवादिप्रतिक्रमणानि ३५०
४६८ सूत्रवाचनशिक्षणकारणानि । ३५१
४६९-७४ सौधर्मैशानविमानवर्णोच्च-
त्वब्रह्मलान्तकतनूच्चत्वपञ्चवर्णा-
दि, पुद्गलबन्धाः, गङ्गासिन्धु-
रक्तारक्तवतीसमागतनद्यः (२०)
कुमारतीर्थङ्कराः, चमरचञ्चा
राजधानी सभाः. इन्द्रस्थान-
सभाश्च,धनिष्ठादितारकाः, पञ्च-
स्थाननिर्वर्त्तितचयनादि पञ्च-
प्रदेशिकादिपुद्गलाः । ३५१
॥ पञ्चमे तृतीयः ॥

बृहत्क्रमः॥

॥ ८१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ८२ ॥

॥ पञ्चमस्थानकाध्य० ॥

४७५-७७ गणधारणगुणाः, निर्ग्रन्थी-ग्रहणकारणानि, कालगतसाधर्मिकसमाचाराः । ३५४
४७८-८४ छद्मस्थैः सर्वभावाज्ञेयाः, अजीवकरणतादीन्यशक्यानि, जीवनिकायाः तारकग्रहाः संसारसमापन्नतद्गत्यागतयः, सर्वजीवषड्विधत्वं, अग्रबीजाद्याः । ३५५
४८५-८९ मानुष्यत्वादीनि दुर्लभानि, इन्द्रियार्थाः, संवरासंवराः, सातासाते, प्रायश्चित्तषट्कम् । ३५६
४९०-९५ जंबूद्वीपकादिसंमूर्च्छिमादि (१२) मनुष्याः, ऋद्धयनृद्धिमन्तोऽर्हदादिहैमवदाद्याः, आरकषट्कं, सुषमसुषमादेवकुरूत्तरकुरुनरोच्चत्वायुषी, संहननानि, संस्थानानि । ३५८
४९६-९८ अनात्मात्मवतोरहितहितकारणानि (पर्यायादीनि) जातिकुलार्याः, लोकस्थितिः । ३५९
४९९-५०० प्राच्यादिदिशाषट्केन जीवतिर्यङ्मनुष्याणां गत्यागत्यादीनि (१४) आहारानाहारकारणानि । ३६०
५०१-२ अर्हदवर्णादीन्युन्मादकारणानि, मद्यनिद्राविषयकषायद्यूतप्रत्युपेक्षणाः प्रमादाः । ३६१
५०३-९ प्रमादाप्रमादप्रतिलेखनाः, तिर्यग्नरलेश्या, शक्रसोमेशानयमयोरग्रमहिष्यः, ईशानेन्द्रमध्यपर्षदेवस्थितिः, दिग्विद्युत्कुमारीमहत्तरिकाः (१२), धरणभूतानन्दादीनामग्रमहिष्यः, धरणभूतानन्दादीनां सामानिकाः। (प्रतिलेखनास्वरूपम्) । ३६३
५१० अवग्रहेहापायधारणाभेदाः । (बहुवाद्याः) । ३६४
५११-५१२ बाह्याभ्यन्तरतपसी, विवादाः । ३६५
५१३-१५ क्षुद्रप्राणाः, गोचरचर्या, दक्षिणस्यां प्रथमचतुर्थीनरकापक्रान्तनिरयाः । ३६७
५१६-१७ ब्रह्मप्रस्तटाः, पूर्वभागादिनक्षत्राणि (पूर्वाभाद्रपदादि-३० शतभिषगादि १४ रोहण्यादि ४५) । ३६८
५१८-२१ अभिचन्द्रोच्चत्वं, भरतम-

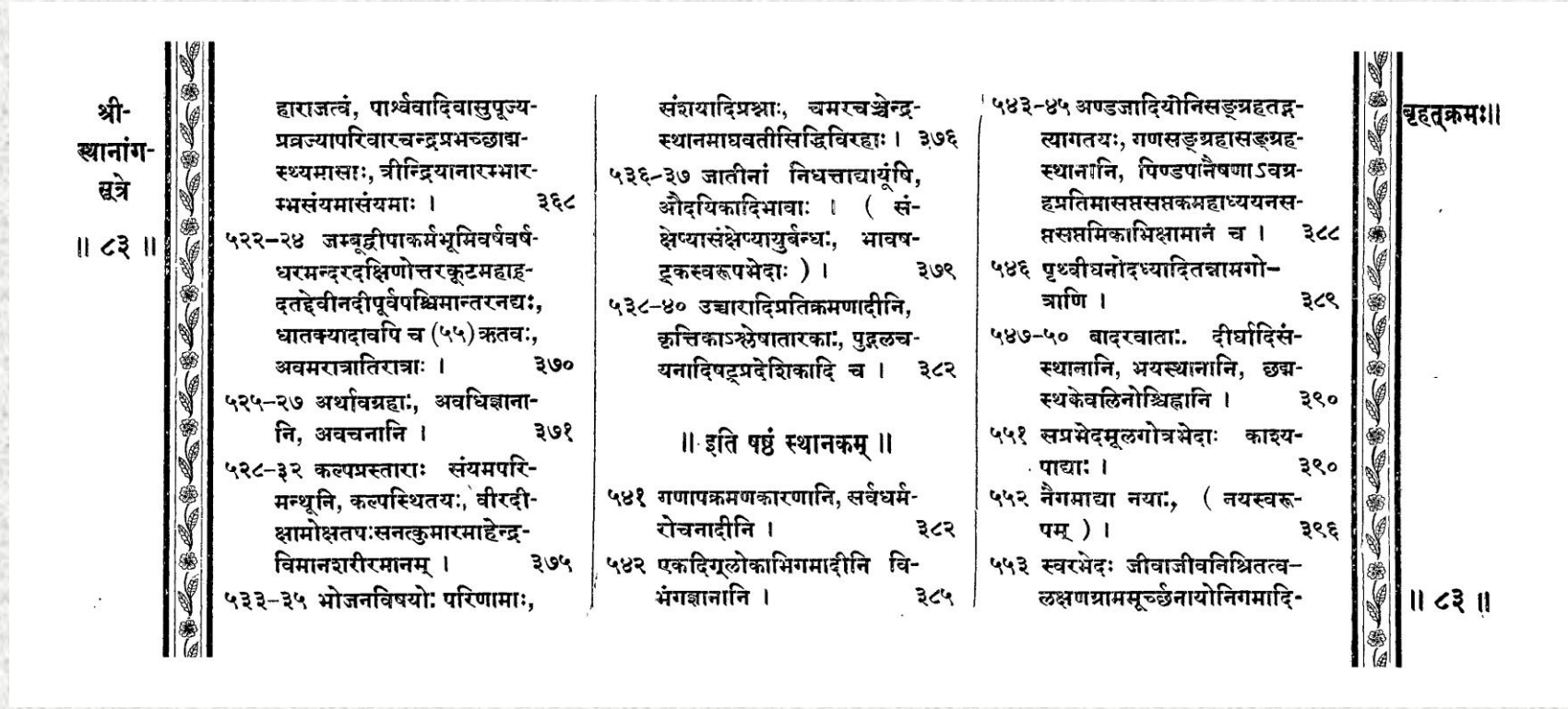
बृहत्क्रमः॥

॥ ८२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ८३ ॥

हाराजत्वं, पार्श्ववादिवासुपूज्य-प्रव्रज्यापरिवारचन्द्रप्रभच्छाद्य-स्थ्यमासाः, त्रीन्द्रियानारम्भार-म्भसंयमासंयमाः । ३६८

५२२-२४ जम्बूद्वीपाकर्मभूमिवर्षवर्ष-धरमन्दरदक्षिणोत्तरकूटमहाह-दतद्देवीनदीपूर्वपश्चिमान्तरनद्यः, धातक्यादावपि च (५५) ऋतवः, अवमरात्रातिरात्राः । ३७०

५२५-२७ अर्थावग्रहाः, अवधिज्ञाना-नि, अवचनानि । ३७१

५२८-३२ कल्पप्रस्ताराः संयमपरि-मन्थूनि, कल्पस्थितयः, वीरदी-क्षामोक्षतपःसनत्कुमारमाहेन्द्र-विमानशरीरमानम् । ३७५

५३३-३५ भोजनविषयोः परिणामाः, संशयादिप्रश्नाः, चमरचञ्चेन्द्र-स्थानमाघवतीसिद्धिविरहाः । ३७६

५३६-३७ जातीनां निधत्ताद्यायूंषि, औदयिकादिभावाः । (सं-क्षेप्यासंक्षेप्यायुर्बन्धः, भावष-ट्कस्वरूपभेदाः) । ३७९

५३८-४० उच्चारादिप्रतिक्रमणादीनि, कृत्तिकाऽश्लेषातारकाः, पुद्गलच-यनादिषट्प्रदेशिकादि च । ३८२

॥ इति षष्ठं स्थानकम् ॥

५४१ गणापक्रमणकारणानि, सर्वधर्म-रोचनादीनि । ३८२

५४२ एकदिग्लोकाभिगमादीनि वि-भंगज्ञानानि । ३८५

५४३-४५ अण्डजादियोनिसङ्ग्रहतद्व-त्यागतयः, गणसङ्ग्रहासङ्ग्रह-स्थानानि, पिण्डपानैषणाऽवग्र-हप्रतिमासप्तसप्तकमहाध्ययनस-प्तसप्तमिकाभिक्षामानं च । ३८८

५४६ पृथ्वीघनोदध्यादितन्नामगो-त्राणि । ३८९

५४७-५० बादरवाताः. दीर्घादिसं-स्थानानि, भयस्थानानि, छद्म-स्थकेवलिनोश्चिह्नानि । ३९०

५५१ सप्रभेदमूलगोत्रभेदाः काश्य-पाद्याः । ३९०

५५२ नैगमाद्या नयाः, (नयस्वरू-पम्) । ३९६

५५३ स्वरभेदः जीवाजीवनिश्रितत्व-लक्षणग्राममूर्च्छनायोनिगमादि-

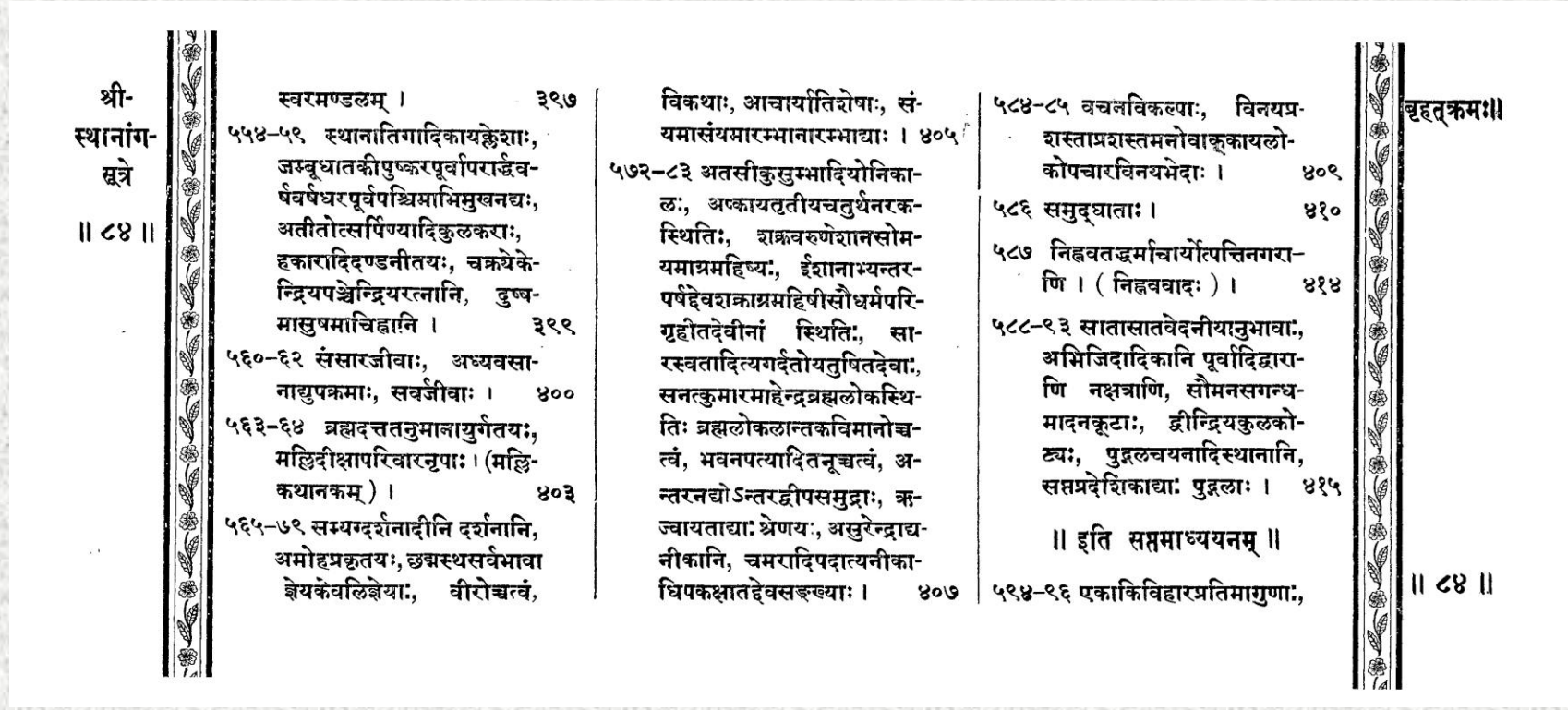
बृहत्क्रमः॥

॥ ८३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे

॥ ८४ ॥

स्वरमण्डलम् । ३९७

५५४–५९ स्थानातिगादिकायक्लेशाः, जम्बूधातकीपुष्करपूर्वापरार्द्धवर्षवर्षधरपूर्वपश्चिमाभिमुखनद्यः, अतीतोत्सर्पिण्यादिकुलकराः, हकारादिदण्डनीतयः, चक्रवर्त्येकेन्द्रियपञ्चेन्द्रियरत्नानि, दुष्षमासुषमाचिह्नानि । ३९९

५६०–६२ संसारजीवाः, अध्यवसानाद्युपक्रमाः, सर्वजीवाः । ४००

५६३–६४ ब्रह्मदत्ततनुमानायुर्गतयः, मल्लिदीक्षापरिवारनृपाः । (मल्लिकथानकम्) । ४०३

५६५–७९ सम्यग्दर्शनादीनि दर्शनानि, अमोहप्रकृतयः, छद्मस्थसर्वभावा ज्ञेयकेवलिज्ञेयाः, वीरोच्चत्वं, विकथाः, आचार्यातिशेषाः, संयमासंयमारम्भानारम्भाद्याः । ४०५

५७२–८३ अतसीकुसुम्भादियोनिकालः, अप्कायतृतीयचतुर्थनरकस्थितिः, शक्रवरुणेशानसोमयमाग्रमहिष्यः, ईशानाभ्यन्तरपर्षद्देवशक्राग्रमहिषीसौधर्मपरिगृहीतदेवीनां स्थितिः, सारस्वतादित्यगर्दतोयतुषितदेवाः, सनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकस्थितिः ब्रह्मलोकलान्तकविमानोच्चत्वं, भवनपत्यादितनूच्चत्वं, अन्तरनद्योऽन्तरद्वीपसमुद्राः, ऋज्वायताद्याः श्रेणयः, असुरेन्द्राद्यनीकानि, चमरादिपदात्यनीकाधिपकक्षातद्देवसङ्ख्याः । ४०७

५८४–८५ वचनविकल्पाः, विनयप्रशस्ताप्रशस्तमनोवाक्कायलोकोपचारविनयभेदाः । ४०९

५८६ समुद्घाताः । ४१०

५८७ निह्नवतद्धर्माचार्योत्पत्तिनगराणि । (निह्नववादः) । ४१४

५८८–९३ सातासातवेदनीयानुभावाः, अभिजिदादिकानि पूर्वादिद्वाराणि नक्षत्राणि, सौमनसगन्धमादनकूटाः, द्वीन्द्रियकुलकोट्यः, पुद्गलचयनादिस्थानानि, सप्तप्रदेशिकाद्याः पुद्गलाः । ४१५

॥ इति सप्तमाध्ययनम् ॥

५९४–९६ एकाकिविहारप्रतिमागुणाः,

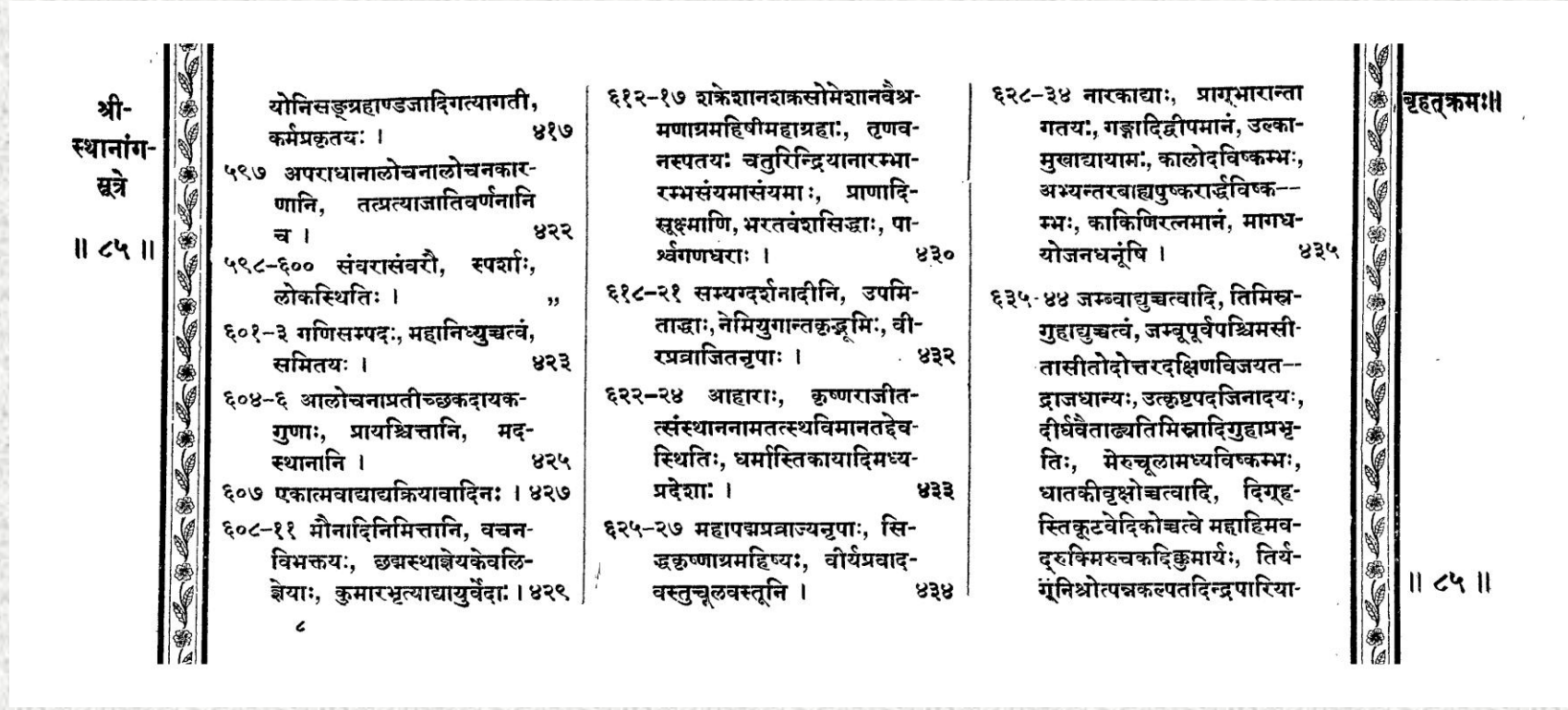
बृहत्क्रमः॥

॥ ८४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ८५ ॥

योनिसङ्ग्रहाण्डजादिगत्यागती, कर्मप्रकृतयः । ४१७

५९७ अपराधानालोचनालोचनकारणानि, तत्प्रत्याजातिवर्णनानि च । ४२२

५९८-६०० संवरासंवरौ, स्पर्शाः, लोकस्थितिः । ,,

६०१-३ गणिसम्पदः, महानिध्युच्चत्वं, समितयः । ४२३

६०४-६ आलोचनाप्रतीच्छकदायकगुणाः, प्रायश्चित्तानि, मदस्थानानि । ४२५

६०७ एकात्मवाद्याद्यक्रियावादिनः । ४२७

६०८-११ मौनादिनिमित्तानि, वचनविभक्तयः, छद्मस्थाज्ञेयकेवलिज्ञेयाः, कुमारभृत्याद्यायुर्वेदाः । ४२९

६१२-१७ शक्रेशानशक्रसोमेशानवैश्रमणाग्रमहिषीमहाग्रहाः, तृणवनस्पतयः चतुरिन्द्रियानारम्भारम्भसंयमासंयमाः, प्राणादिसूक्ष्माणि, भरतवंशसिद्धाः, पार्श्वगणधराः । ४३०

६१८-२१ सम्यग्दर्शनादीनि, उपमिताद्धाः, नेमियुगान्तकृद्भूमिः, वीरप्रव्राजितनृपाः । ४३२

६२२-२४ आहाराः, कृष्णराजीतत्संस्थाननामतत्स्थविमानतद्देवस्थितिः, धर्मास्तिकायादिमध्यप्रदेशाः । ४३३

६२५-२७ महापद्मप्रव्राज्यनृपाः, सिद्धकृष्णाग्रमहिष्यः, वीर्यप्रवादवस्तुचूलवस्तूनि । ४३४

६२८-३४ नारकाद्याः, प्राग्भारान्तागतयः, गङ्गादिद्वीपमानं, उल्कामुखाद्यायामः, कालोदविष्कम्भः, अभ्यन्तरबाह्यपुष्करार्द्धविष्कम्भः, काकिणिरत्नमानं, मागधयोजनधनूंषि । ४३५

६३५-४४ जम्ब्वाद्युच्चत्वादि, तिमिस्रगुहाद्युच्चत्वं, जम्बूपूर्वपश्चिमसीतासीतोदोत्तरदक्षिणविजयतद्राजधान्यः, उत्कृष्टपदजिनादयः, दीर्घवैताढ्यतिमिस्रादिगुहाप्रभृतिः, मेरुचूलामध्यविष्कम्भः, धातकीवृक्षोच्चत्वादि, दिग्गजहस्तिकूटवेदिकोच्चत्वे महाहिमवद्रुक्मिरुचकदिक्कुमार्यः, तिर्यग्निश्रोत्पन्नकल्पतदिन्द्रपारिया-

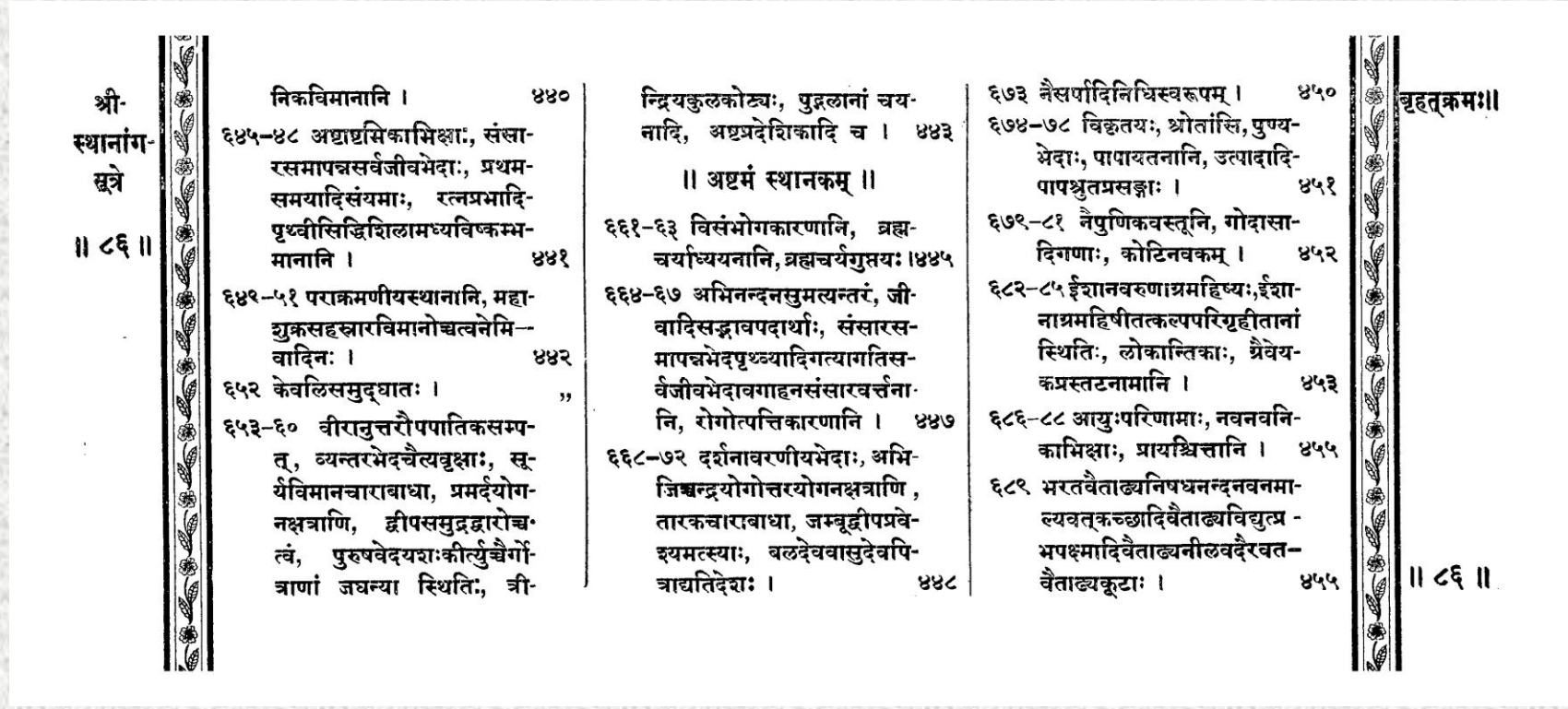
बृहत्क्रमः॥

॥ ८५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ८६ ॥

निकविमानानि । ४४०

६४५-४८ अष्टाष्टसिकाभिक्षाः, संसारसमापन्नसर्वजीवभेदाः, प्रथमसमयादिसंयमाः, रत्नप्रभादिपृथ्वीसिद्धिशिलामध्यविष्कम्भमानानि । ४४१

६४९-५१ पराक्रमणीयस्थानानि, महाशुक्रसहस्रारविमानोच्चत्वनेमिवादिनः । ४४२

६५२ केवलिसमुद्घातः । ,,

६५३-६० वीरानुत्तरौपपातिकसम्पत्, व्यन्तरभेदचैत्यवृक्षाः, सूर्यविमानचाराबाधा, प्रमर्दयोगनक्षत्राणि, द्वीपसमुद्रद्वारोच्चत्वं, पुरुषवेदयशःकीर्त्युच्चैर्गोत्राणां जघन्या स्थितिः, त्रीन्द्रियकुलकोट्यः, पुद्गलानां चयनादि, अष्टप्रदेशिकादि च । ४४३

॥ अष्टमं स्थानकम् ॥

६६१-६३ विसंभोगकारणानि, ब्रह्मचर्याध्ययनानि, ब्रह्मचर्यगुप्तयः ।४४५

६६४-६७ अभिनन्दनसुमत्यन्तरं, जीवादिसद्भावपदार्थाः, संसारसमापन्नभेदपृथ्व्यादिगत्यागतिसर्वजीवभेदावगाहनसंसारवर्त्तनानि, रोगोत्पत्तिकारणानि । ४४७

६६८-७२ दर्शनावरणीयभेदाः, अभिजिच्चन्द्रयोगोत्तरयोगनक्षत्राणि, तारकचाराबाधा, जम्बूद्वीपप्रवेश्यमत्स्याः, बलदेववासुदेवपित्राद्यतिदेशः । ४४८

६७३ नैसर्पादिनिधिस्वरूपम् । ४५०

६७४-७८ विकृतयः, श्रोतांसि, पुण्यभेदाः, पापायतनानि, उत्पादादिपापश्रुतप्रसङ्गाः । ४५१

६७९-८१ नैपुणिकवस्तूनि, गोदासादिगणाः, कोटिनवकम् । ४५२

६८२-८५ ईशानवरुणाग्रमहिष्यः,ईशानाग्रमहिषीतत्कल्पपरिगृहीतानां स्थितिः, लोकान्तिकाः, ग्रैवेयकप्रस्तटनामानि । ४५३

६८६-८८ आयुःपरिणामाः, नवनवनिकामिक्षाः, प्रायश्चित्तानि । ४५५

६८९ भरतवैताढ्यनिषधनन्दनवनमाल्यवत्कच्छादिवैताढ्यविद्युत्प्रभपक्ष्मादिवैताढ्यनीलवदैरवतवैताढ्यकूटाः । ४५५

बृहत्क्रमः॥

॥ ८६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥ ८७ ॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-स्थानांग-सूत्रे

६९०–९१ पार्श्वोच्चत्वं, वीरतीर्थभावितीर्थकराः । ४५७
६९२ कृष्णादीनां मुक्तिः । ४५८
६९३ श्रेणिकचरित्रम् । ४६८
६९४–७०३ पश्चाद्भागनक्षत्राणि, आनतादिविमानोच्चत्वं, विमलवाहनोच्चत्वं, अवसर्पिण्यारम्भऋषभतीर्थान्तरं, घनदन्ताद्यायामाः, शुक्रग्रहवीथयः, नोकषायाः, चतुरिन्द्रियभुजपरिसर्पाणां कुलकोट्यः, नवस्थानपुद्गलचयनादिः, नवप्रदेशिकादि ।४७०

इति नवमाध्ययनं ॥

७०४ जीवप्रत्यागमनादिका लोकस्थितिः । ४७१
७०५–६ शब्दभेदाः (निर्हारिमाद्याः), अतीतप्रत्युत्पन्नानागतेन्द्रियार्थाः ४७२
७०७–९ पुद्गलचलनकारणानि, क्रोधोत्पत्तिकारणानि संयमासंयमसंवरासंवराः । ४७३
७१०–१३ मानकारणानि, समाध्यसमाधयः, प्रव्रज्याभेदश्रमणधर्मवैयावृत्यानि, जीवाजीवपरिणामाः।४७५
७१४–१५ अन्तरीक्षौदारिकास्वाध्यायाः, पञ्चेन्द्रियावधवधसंयमासंयमाः । ४७७
७१६–२६ प्राणादिभङ्गान्तसूक्ष्माणि, गङ्गादिसमागतनद्यः, भरतराजधान्यः, तत्प्रव्रजिता नृपाश्च, मेरुधरण्यवगाहादि, दिग्दृशकगोतीर्थमानोदकमानपातालकलशोद्वेधमूलादिविष्कम्भकुड्यमानक्षुद्रपातालोद्वेधादि, धातकीपुष्करमन्दरावगाहः, वृत्तवैताढ्योच्चत्वोद्वेधविष्कम्भाः, क्षेत्रदशकं, मानुषोत्तरमूलविष्कम्भः, अञ्जनदधिमुखरतिकरविष्कम्भादि, रुचककुण्डलविष्कम्भादि । ४८१
७२७ द्रव्याद्यनुयोगाः । ४८२
७२८ देवोत्पादपर्वतप्रमाणम् । ४८३
७२९–३३ वनस्पतिजलचरस्थलचरशरीरावगाहः संभवाभिनन्दनान्तरं, अनन्तदशकं, उत्पादवस्त्वस्तिनास्तिचूलवस्तूनि, प्रतिसेवाभेदानालोचनादोषालोचनार्हत्वतद्गुणप्रायश्चित्तानि । ४८७
७३४–३८ मिथ्यात्वभेदाः, चन्द्रप-

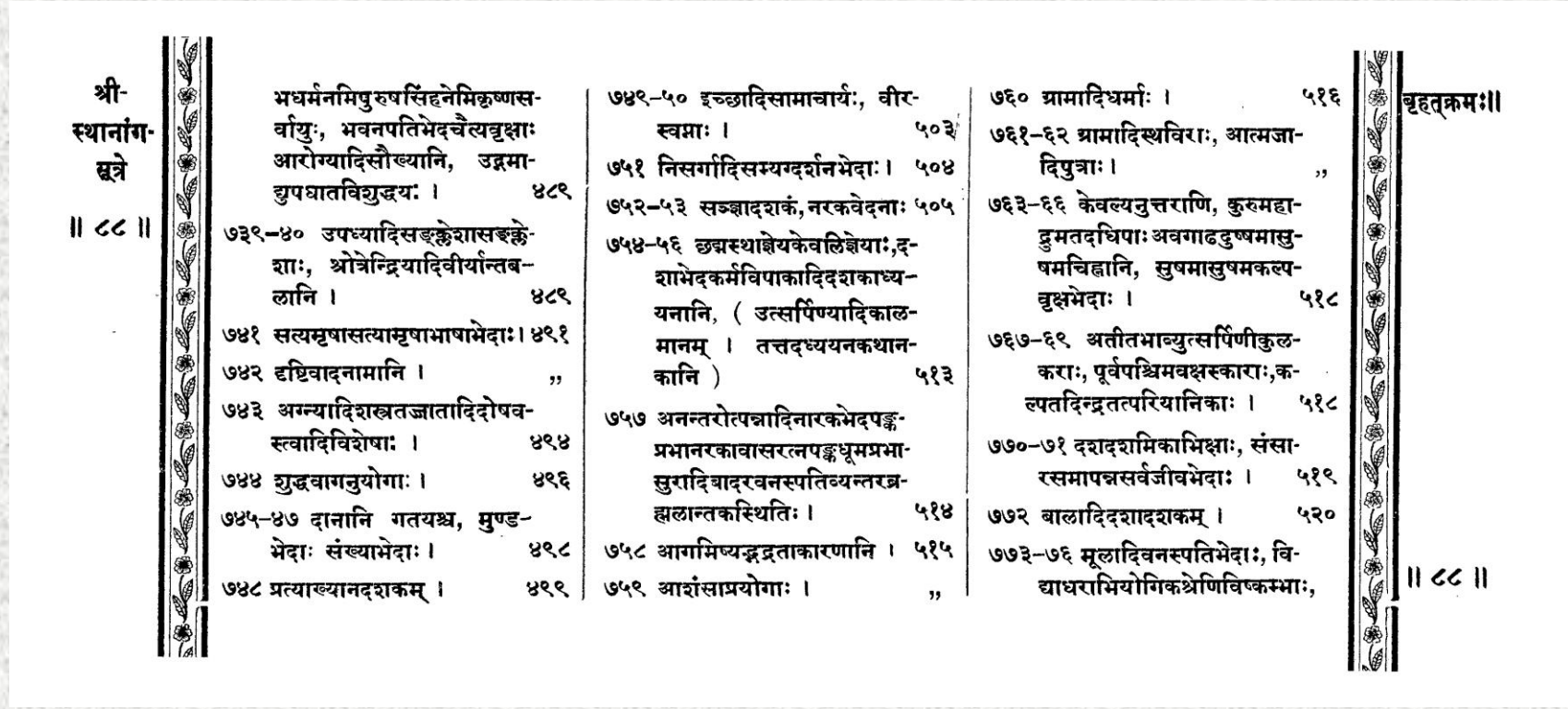
बृहत्क्रमः

॥ ८७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ८८ ॥

भधर्मनभिपुरुषसिंहनेमिकृष्णसर्वायुः, भवनपतिभेदचैत्यवृक्षाः आरोग्यादिसौख्यानि, उद्गमाद्युपघातविशुद्धयः । ४८९

७३९–४० उपध्यादिसङ्क्लेशासङ्क्लेशाः, श्रोत्रेन्द्रियादिवीर्यान्तबलानि । ४८९

७४१ सत्यमृषासत्यामृषाभाषाभेदाः। ४९१

७४२ दृष्टिवादनामानि । ,,

७४३ अग्न्यादिशस्त्रतज्जातादिदोषवस्त्वादिविशेषाः । ४९४

७४४ शुद्धवागनुयोगाः । ४९६

७४५–४७ दानानि गतयश्च, मुण्डभेदाः संख्याभेदाः । ४९८

७४८ प्रत्याख्यानदशकम् । ४९९

७४९–५० इच्छादिसामाचार्यः, वीरस्वप्नाः । ५०३

७५१ निसर्गादिसम्यग्दर्शनभेदाः । ५०४

७५२–५३ सञ्ज्ञादशकं, नरकवेदनाः ५०५

७५४–५६ छद्मस्थाज्ञेयकेवलिज्ञेयाः,दशाभेदकर्मविपाकादिदशकाध्ययनानि, (उत्सर्पिण्यादिकालमानम् । तत्तदध्ययनकथानकानि) ५१३

७५७ अनन्तरोत्पन्नादिनारकभेदपङ्कप्रभानरकावासरत्नपङ्कधूमप्रभासुरादिबादरवनस्पतिव्यन्तरह्रदान्तकस्थितिः । ५१४

७५८ आगमिष्यद्भद्रताकारणानि । ५१५

७५९ आशंसाप्रयोगाः । ,,

७६० ग्रामादिधर्माः । ५१६

७६१–६२ ग्रामादिस्थविराः, आत्मजादिपुत्राः । ,,

७६३–६६ केवल्यनुत्तराणि, कुरुमहाद्रुमतदधिपाः अवगाढदुष्षमासुषमचिह्नानि, सुषमासुषमकल्पवृक्षभेदाः । ५१८

७६७–६९ अतीतभाव्युत्सर्पिणीकुलकराः, पूर्वपश्चिमवक्षस्काराः,कल्पतदिन्द्रतत्परियानिकाः । ५१८

७७०–७१ दशदशमिकाभिक्षाः, संसारसमापन्नसर्वजीवभेदाः । ५१९

७७२ बालादिदशादशकम् । ५२०

७७३–७६ मूलादिवनस्पतिभेदाः, विद्याधराभियोगिकश्रेणिविष्कम्भाः,

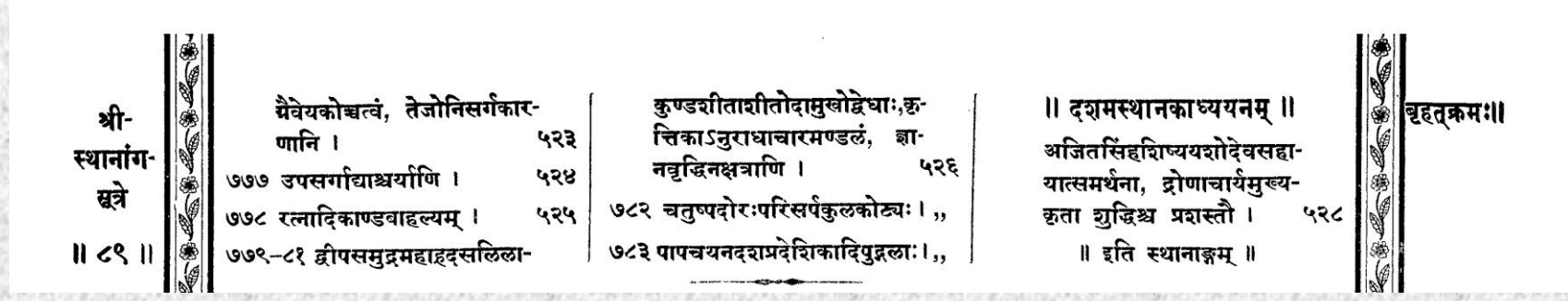
बृहत्क्रमः॥

॥ ८८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

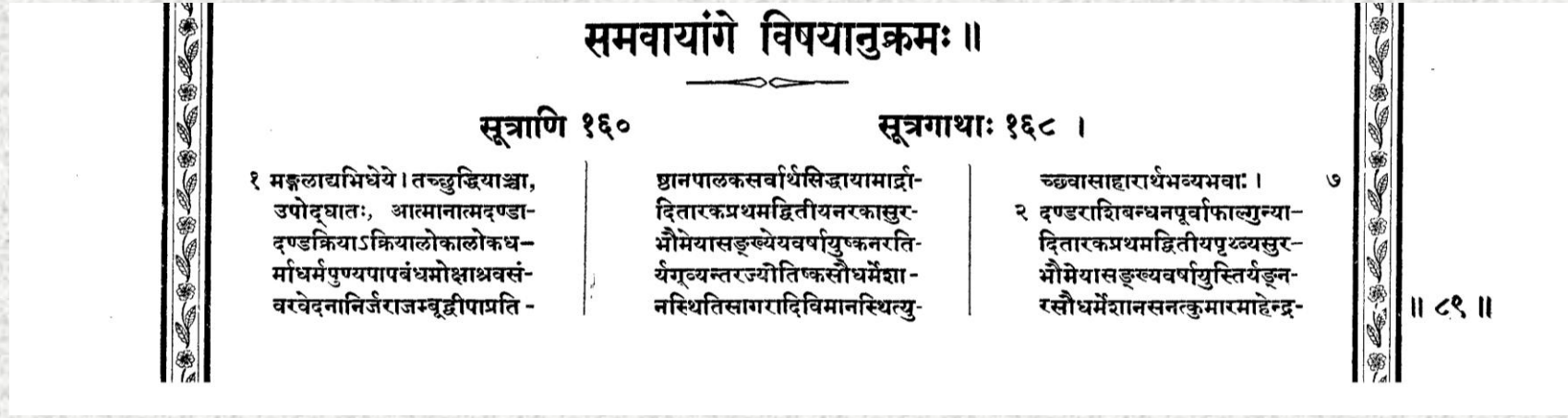
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-स्थानांग-सूत्रे ॥ ८९ ॥

ग्रैवेयकोच्चत्वं, तेजोनिसर्गकारणानि । ५२३
७७७ उपसर्गाद्याश्चर्याणि । ५२४
७७८ रत्नादिकाण्डबाहल्यम् । ५२५
७७९–८१ द्वीपसमुद्रमहाहृदसलिला-
कुण्डशीताशीतोदामुखोद्वेधाः,कृत्तिकाऽनुराधाचारमण्डलं, ज्ञानवृद्धिनक्षत्राणि । ५२६
७८२ चतुष्पदोरःपरिसर्पकुलकोट्यः । ,,
७८३ पापचयनदशप्रदेशिकादिपुद्गलाः । ,,
॥ दशमस्थानकाध्ययनम् ॥
अजितसिंहशिष्ययशोदेवसहायात्समर्थना, द्रोणाचार्यमुख्यकृता शुद्धिश्च प्रशस्तौ । ५२८
॥ इति स्थानाङ्गम् ॥

बृहत्क्रमः॥



समवायांगे विषयानुक्रमः ॥

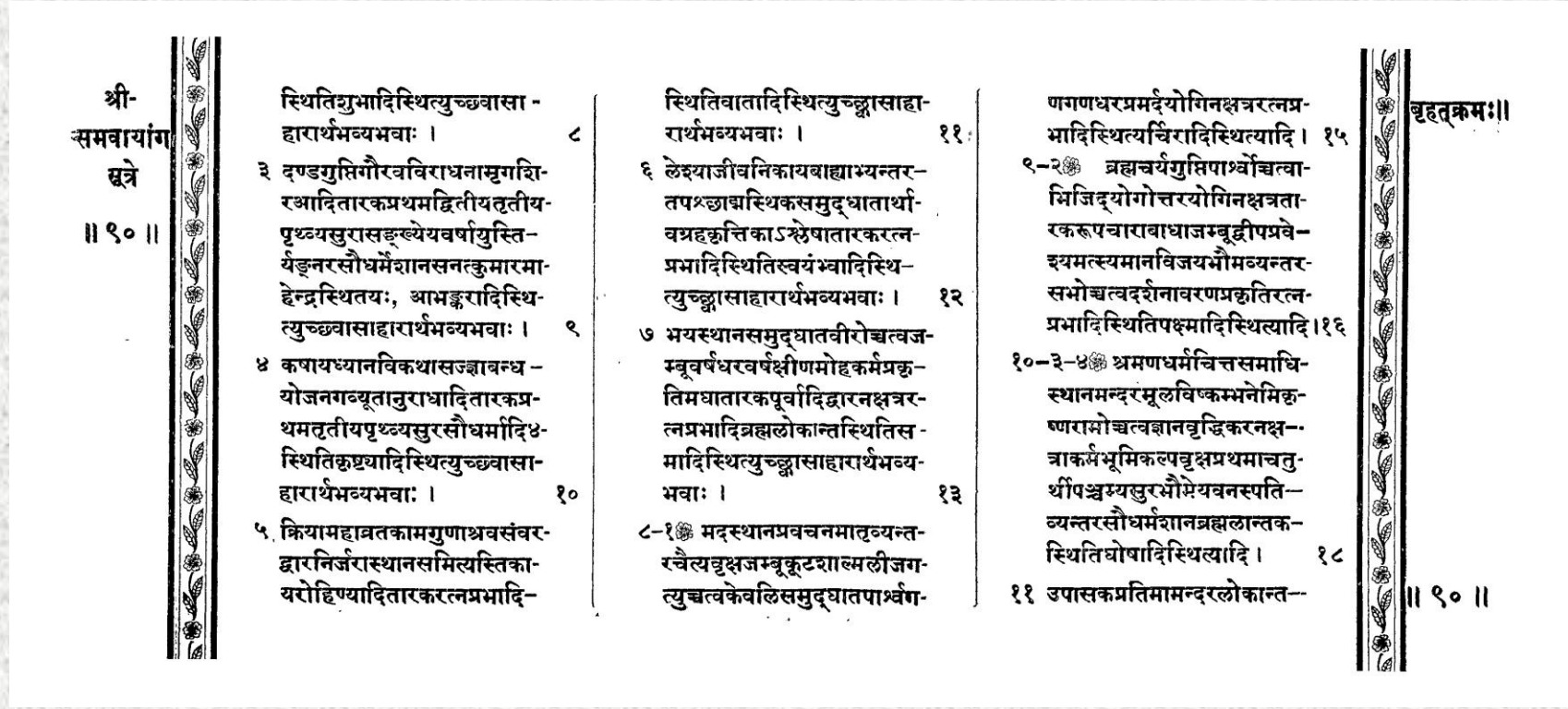
सूत्राणि १६० सूत्रगाथाः १६८ ।

१ मङ्गलाद्यभिधेये। तच्छुद्धियाज्ञा, उपोद्घातः, आत्मानात्मदण्डा- दण्डक्रियाऽक्रियालोकालोकध- र्माधर्मपुण्यपापबंधमोक्षाश्रवसं- वरवेदनानिर्जराजम्बूद्वीपाप्रति - ष्ठानपालकसर्वार्थसिद्धायामार्द्रा- दितारकप्रथमद्वितीयनरकासुर- भौमेयासङ्ख्येयवर्षायुष्कनरति- र्यग्व्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशा - नस्थितिसागरादिविमानस्थित्यु- च्छ्वासाहारार्थभव्यभवाः । ७
२ दण्डराशिबन्धनपूर्वाफाल्गुन्या- दितारकप्रथमद्वितीयपृथ्व्यसुर- भौमेयासङ्ख्यवर्षायुस्तिर्यङ्न- रसौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्र- ॥ ८९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग सूत्रे ॥ ९० ॥

स्थितिशुभादिस्थित्युच्छ्वासा-हारार्थभव्यभवाः । ८

३ दण्डगुप्तिगौरवविराधनामृगशिरआदितारकप्रथमद्वितीयतृतीयपृथ्व्यसुरासङ्ख्येयवर्षायुस्तिर्यङ्नरसौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रस्थितयः, आभङ्करादिस्थित्युच्छ्वासाहारार्थभव्यभवाः । ९

४ कषायध्यानविकथासज्ञाबन्ध-योजनगव्यूतानुराधादितारकप्रथमतृतीयपृथ्व्यसुरसौधर्मादि४-स्थितिकृष्ण्यादिस्थित्युच्छ्वासाहारार्थभव्यभवाः । १०

५ क्रियामहाव्रतकामगुणाश्रवसंवरद्वारनिर्जरास्थानसमित्यस्तिकायरोहिण्यादितारकरत्नप्रभादि-स्थितिवातादिस्थित्युच्छ्वासाहारार्थभव्यभवाः । ११

६ लेश्याजीवनिकायबाह्याभ्यन्तरतपश्छाद्मस्थिकसमुद्घातार्थावग्रहकृत्तिकाऽश्लेषातारकरत्नप्रभादिस्थितिस्वयंभ्वादिस्थित्युच्छ्वासाहारार्थभव्यभवाः । १२

७ भयस्थानसमुद्घातवीरोच्चत्वजम्बूवर्षधरवर्षक्षीणमोहकर्मप्रकृतिमघातारकपूर्वाद्विद्वारनक्षत्ररत्नप्रभादिब्रह्मलोकान्तस्थितिसमादिस्थित्युच्छ्वासाहारार्थभव्यभवाः । १३

८-१ मदस्थानप्रवचनमातृव्यन्तरचैत्यवृक्षजम्बूकूटशाल्मलीजगत्युच्चत्वकेवलिसमुद्घातपार्श्वगणगणधरप्रमर्दयोगिनक्षत्ररत्नप्रभादिस्थित्यर्चिरादिस्थित्यादि । १५

९-२ ब्रह्मचर्यगुप्तिपार्श्वोच्चत्वाभिजिद्योगोत्तरयोगिनक्षत्रतारकरूपचाराबाधाजम्बूद्वीपप्रवेश्यमत्स्यमानविजयभौमव्यन्तरसभोच्चत्वदर्शनावरणप्रकृतिरत्नप्रभादिस्थितिपक्ष्मादिस्थित्यादि । १६

१०-३-४ श्रमणधर्मचित्तसमाधिस्थानमन्दरमूलविष्कम्भनेमिकृष्णराज्युच्चत्वज्ञानवृद्धिकरनक्षत्राकर्मभूमिकल्पवृक्षप्रथमाचतुर्थीपञ्चम्यसुरभौमेयवनस्पतिव्यन्तरसौधर्मशानब्रह्मलान्तकस्थितिघोषादिस्थित्यादि । १८

११ उपासकप्रतिमामन्दरलोकान्त-

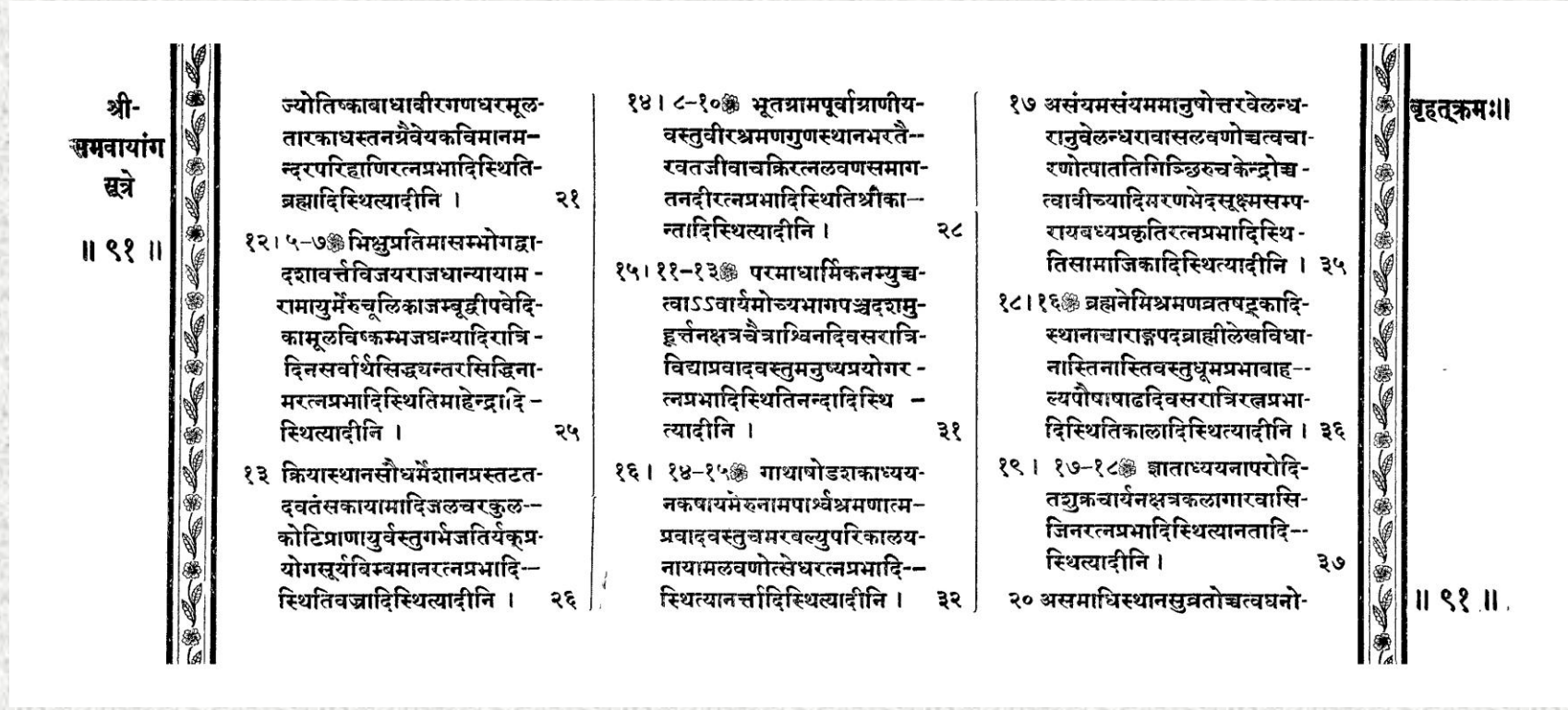
बृहत्क्रमः॥

॥ ९० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग सूत्रे

॥ ९१ ॥

ज्योतिष्काबाधावीरगणधरमूल-तारकाधस्तनग्रैवेयकविमानम-न्दरपरिहाणिरत्नप्रभादिस्थिति-ब्रह्मादिस्थित्यादीनि । २१

१२। ५-७ भिक्षुप्रतिमासम्भोगद्वा-दशावर्त्तविजयराजधान्यायाम-रामायुर्मेरुचूलिकाजम्बूद्वीपवेदि-कामूलविष्कम्भजघन्यादिरात्रि-दिनसर्वार्थसिद्धयन्तरसिद्धिना-मरत्नप्रभादिस्थितिमाहेन्द्रादि-स्थित्यादीनि । २५

१३ क्रियास्थानसौधर्मैशानप्रस्तटत-द्वतंसकायामादिजलचरकुल-कोटिप्राणायुर्वस्तुगर्भजतिर्यक्प्र-योगसूर्यबिम्बमानरत्नप्रभादि-स्थितिवज्रादिस्थित्यादीनि । २६

१४। ८-१० भूतग्रामपूर्वाग्राणीय-वस्तुवीरश्रमणगुणस्थानभरतै-रवतजीवाचक्रिरत्नलवणसमाग-तनदीरत्नप्रभादिस्थितिश्रीका-न्तादिस्थित्यादीनि । २८

१५। ११-१३ परमाधार्मिकनम्युच्च-त्वाऽऽर्यमोच्यभागपञ्चदशमु-हूर्त्तनक्षत्रचैत्राश्विनदिवसरात्रि-विद्याप्रवादवस्तुमनुष्यप्रयोगर-त्नप्रभादिस्थितिनन्दादिस्थि-त्यादीनि । ३१

१६। १४-१५ गाथाषोडशकाध्यय-नकषायमेरुनामपार्श्वश्रमणात्म-प्रवादवस्तुचमरबल्युपरिकालय-नायामलवणोत्सेधरत्नप्रभादि-स्थित्यानर्त्तादिस्थित्यादीनि । ३२

१७ असंयमसंयममानुषोत्तरवेलन्ध-रानुवेलन्धरावासलवणोच्चत्वचा-रणोत्पातातिगिञ्छिरुचकेन्द्रोच्च-त्वावीच्यादिशरणभेदसूक्ष्मसम्प-रायबध्यप्रकृतिरत्नप्रभादिस्थि-तिसामाजिकादिस्थित्यादीनि । ३५

१८। १६ ब्रह्मनेमिश्रमणव्रतषट्कादि-स्थानाचाराङ्गपदब्राह्मीलेखविधा-नास्तिनास्तिवस्तुधूमप्रभावाह-ल्यपौषाषाढदिवसरात्रिरत्नप्रभा-दिस्थितिकालादिस्थित्यादीनि । ३६

१९। १७-१८ ज्ञाताध्ययनापरोदि-तशुक्रचार्यनक्षत्रकलागारवासि-जिनरत्नप्रभादिस्थित्यानतादि-स्थित्यादीनि । ३७

२० असमाधिस्थानसुव्रतोच्चत्वघनो-

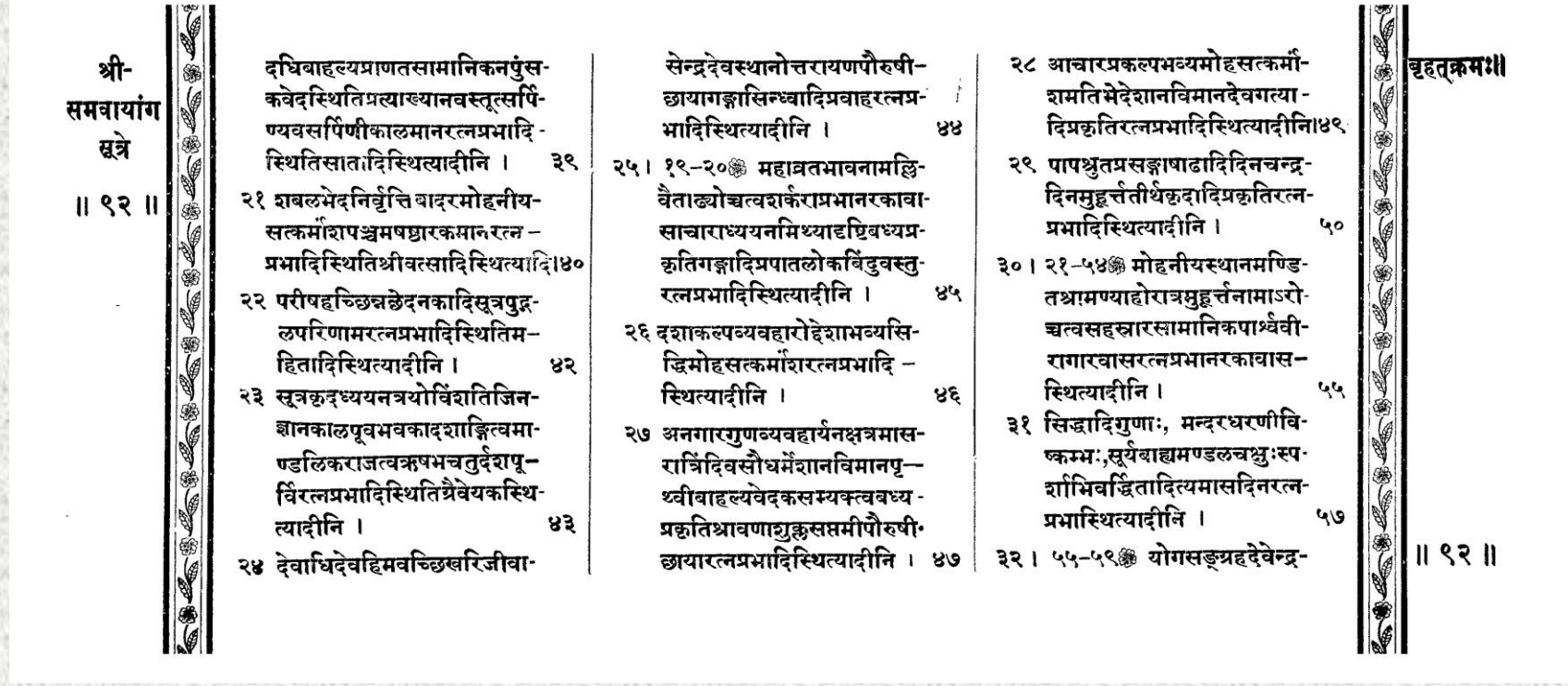
बृहत्क्रमः॥

॥ ९१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग सूत्रे ॥ ९२ ॥

दधिबाहल्यप्राणतसामानिकनपुंसकवेदस्थितिप्रत्याख्यानवस्तूत्सर्पिण्यवसर्पिणीकालमानरत्नप्रभादिस्थितिसातादिस्थित्यादीनि । ३९

२१ शबलभेदनिर्वृत्तिबादरमोहनीयसत्कर्मांशपञ्चमषष्ठारकमानरत्नप्रभादिस्थितिश्रीवत्सादिस्थित्यादि।४०

२२ परीषहच्छिन्नछेदनकादिसूत्रपुद्गलपरिणामरत्नप्रभादिस्थितिमहितादिस्थित्यादीनि । ४२

२३ सूत्रकृद्ध्ययनत्रयोविंशतिजिनज्ञानकालपूर्वभवकादशाङ्गित्वमाण्डलिकराजत्वऋषभचतुर्दशपूर्विरत्नप्रभादिस्थितिग्रैवेयकस्थित्यादीनि । ४३

२४ देवाधिदेवहिमवच्छिखरिजीवासेन्द्रदेवस्थानोत्तरायणपौरुषीछायागङ्गासिन्ध्वादिप्रवाहरत्नप्रभादिस्थित्यादीनि । ४४

२५। १९-२०ॐ महाव्रतभावनामल्लिवैताढ्योच्चत्वशर्कराप्रभानरकावासाचाराध्ययनमिथ्यादृष्टिबध्यप्रकृतिगङ्गादिप्रपातलोकबिंदुवस्तुरत्नप्रभादिस्थित्यादीनि । ४५

२६ दशाकल्पव्यवहारोद्देशाभव्यसिद्धिमोहसत्कर्मांशरत्नप्रभादिस्थित्यादीनि । ४६

२७ अनगारगुणव्यवहार्यनक्षत्रमासरात्रिंदिवसौधर्मैशानविमानपृथ्वीबाहल्यवेदकसम्यक्त्वबध्यप्रकृतिश्रावणशुक्लसप्तमीपौरुषीछायारत्नप्रभादिस्थित्यादीनि । ४७

२८ आचारप्रकल्पभव्यमोहसत्कर्मांशमतिभेदेशानविमानदेवगत्यादिप्रकृतिरत्नप्रभादिस्थित्यादीनि।४९

२९ पापश्रुतप्रसङ्गाषाढादिदिनचन्द्रदिनमुहूर्त्ततीर्थकृदादिप्रकृतिरत्नप्रभादिस्थित्यादीनि । ५०

३०। २१-५४ॐ मोहनीयस्थानमण्डितश्रामण्याहोरात्रमुहूर्त्तनामाऽरोच्चत्वसहस्रारसामानिकपार्श्ववीरागारवासरत्नप्रभानरकावासस्थित्यादीनि । ५५

३१ सिद्धादिगुणाः, मन्दरधरणीविष्कम्भः,सूर्यबाह्यमण्डलचक्षुःस्पर्शाभिवर्द्धितादित्यमासदिनरत्नप्रभास्थित्यादीनि । ५७

३२। ५५-५९ॐ योगसङ्ग्रहदेवेन्द्र-

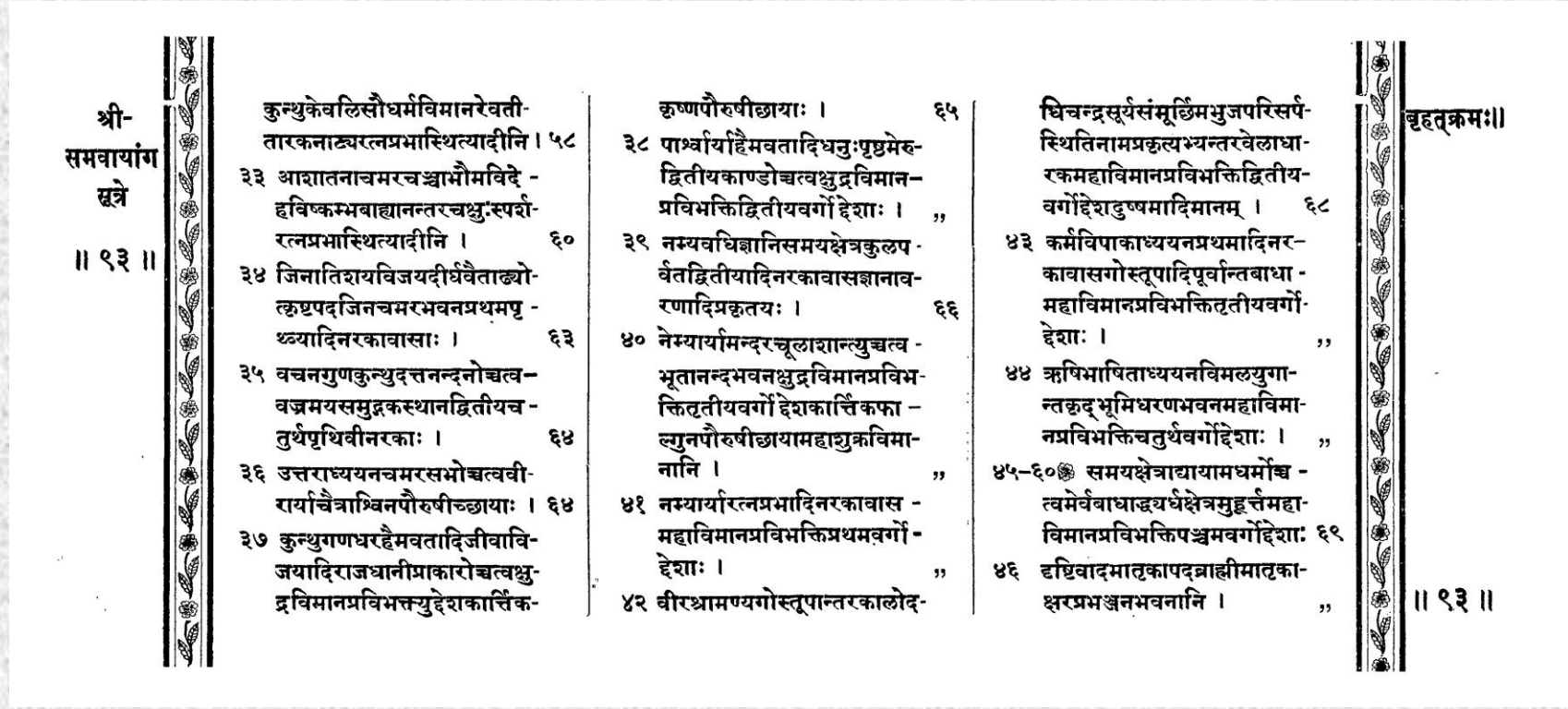
बृहत्क्रमः॥

॥ ९२ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्री-समवायांग सूत्रे

॥ ९३ ॥

कुन्थुकेवलिसौधर्मविमानरेवती-तारकनाट्यरत्नप्रभास्थित्यादीनि । ५८
३३ आशातनाचमरचञ्चाभौमविदे-हविष्कम्भबाह्यानन्तरचक्षुःस्पर्श-रत्नप्रभास्थित्यादीनि । ६०
३४ जिनातिशयविजयदीर्घवैताढ्यो-त्कृष्टपदजिनचमरभवनप्रथमपृ-थ्व्यादिनरकावासाः । ६३
३५ वचनगुणकुन्थुदत्तनन्दनोच्चत्व-वज्रमयसमुद्गकस्थानद्वितीयच-तुर्थपृथिवीनरकाः । ६४
३६ उत्तराध्ययनचमरसभोच्चत्ववी-र्याचैत्राश्विनपौरुषीच्छायाः । ६४
३७ कुन्थुगणधरहैमवतादिजीवावि-जयादिराजधानीप्राकारोच्चत्वक्षु-द्रविमानप्रविभक्त्युद्देशकार्त्तिक-कृष्णपौरुषीछायाः । ६५
३८ पार्श्वार्याहैमवतादिधनुःपृष्ठमेरु-द्वितीयकाण्डोच्चत्वक्षुद्रविमान-प्रविभक्तिद्वितीयवर्गोद्देशाः । ,,
३९ नम्यवधिज्ञानिसमयक्षेत्रकुलप-र्वतद्वितीयादिनरकावासज्ञानाव-रणादिप्रकृतयः । ६६
४० नेम्यार्यामन्दरचूलाशान्त्युच्चत्व-भूतानन्दभवनक्षुद्रविमानप्रविभ-क्तितृतीयवर्गोद्देशकार्त्तिकफा-ल्गुनपौरुषीछायामहाशुक्रविमा-नानि । ,,
४१ नम्यार्यारत्नप्रभादिनरकावास-महाविमानप्रविभक्तिप्रथमवर्गो-द्देशाः । ,,
४२ वीरश्रामण्यगोस्तूपान्तरकालोद-धिचन्द्रसूर्यसंमूर्छिमभुजपरिसर्प-स्थितिनामप्रकृत्यभ्यन्तरवेलाधा-रकमहाविमानप्रविभक्तिद्वितीय-वर्गोद्देशदुष्षमादिमानम् । ६८
४३ कर्मविपाकाध्ययनप्रथमादिनर-कावासगोस्तूपादिपूर्वान्तबाधा-महाविमानप्रविभक्तितृतीयवर्गो-द्देशाः । ,,
४४ ऋषिभाषिताध्ययनविमलयुगा-न्तकृद्भूमिधरणभवनमहाविमा-नप्रविभक्तिचतुर्थवर्गोद्देशाः । ,,
४५–६० समयक्षेत्राद्यायामधर्मोच्च-त्वमेर्वबाधाद्व्यर्धक्षेत्रमुहूर्त्तमहा-विमानप्रविभक्तिपञ्चमवर्गोद्देशाः ६९
४६ दृष्टिवादमातृकापदब्राह्मीमातृका-क्षरप्रभञ्जनभवनानि । ,,

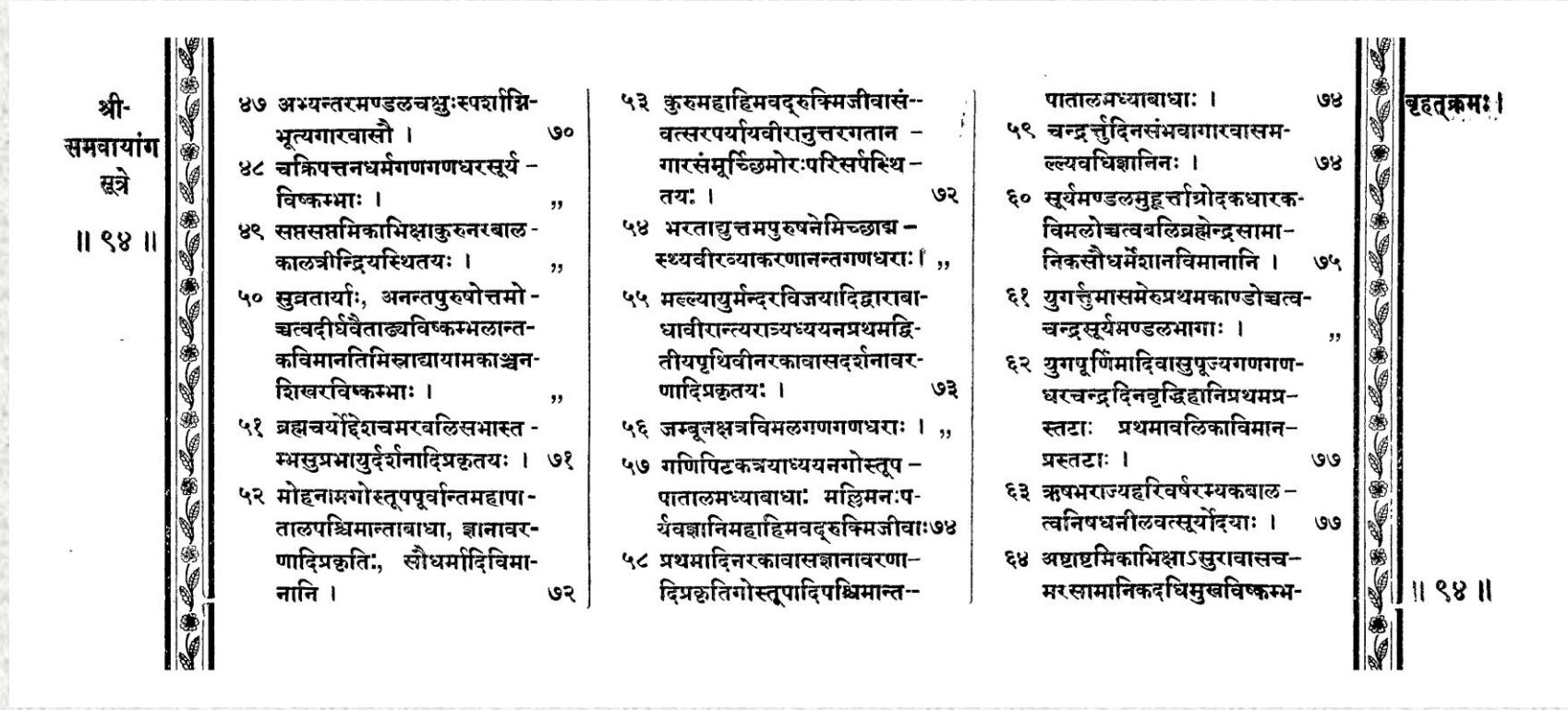
बृहत्क्रमः॥

॥ ९३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग सूत्रे

॥ ९४ ॥

४७ अभ्यन्तरमण्डलचक्षुःस्पर्शान्नि-भूत्यगारवासौ । ७०

४८ चक्रिपत्तनधर्मगणगणधरसूर्य-विष्कम्भाः । ,,

४९ सप्तसप्तमिकाभिक्षाकुरुनरबाल-कालत्रीन्द्रियस्थितयः । ,,

५० सुव्रतार्याः, अनन्तपुरुषोत्तमो-च्चत्वदीर्घवैताढ्यविष्कम्भलान्त-कविमानतिमिस्राद्यायामकाञ्चन-शिखरविष्कम्भाः । ,,

५१ ब्रह्मचर्योद्देशचमरबलिसभास्त-म्भसुप्रभायुर्दर्शनादिप्रकृतयः । ७१

५२ मोहनाम्नगोस्तूपपूर्वान्तमहापा-तालपश्चिमान्ताबाधा, ज्ञानावर-णादिप्रकृतिः, सौधर्मादिविमा-नानि । ७२

५३ कुरुमहाहिमवद्रुक्मिजीवासं-वत्सरपर्यायवीरानुत्तरगतान -गारसंमूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थि-तयः । ७२

५४ भरताद्युत्तमपुरुषनेमिच्छाद्म -स्थ्यवीरव्याकरणानन्तगणधराः । ,,

५५ मल्ल्यायुर्मन्दरविजयादिद्वारावा-धावीरान्त्यराज्यध्ययनप्रथमद्वि-तीयपृथिवीनरकावासदर्शनावर-णादिप्रकृतयः । ७३

५६ जम्बूलक्षत्रविमलगणगणधराः । ,,

५७ गणिपिटकत्रयाध्ययनगोस्तूप -पातालमध्याबाधाः मल्लिमनःप-र्यवज्ञानिमहाहिमवद्रुक्मिजीवाः ७४

५८ प्रथमादिनरकावासज्ञानावरणा-दिप्रकृतिगोस्तूपादिपश्चिमान्त-पातालमध्याबाधाः । ७४

५९ चन्द्रर्क्षदिनसंभवागारवासम-ल्ल्यवधिज्ञानिनः । ७४

६० सूर्यमण्डलमुहूर्त्ताग्रोदकधारक-विमलोच्चत्वबलिब्रह्मेन्द्रसामा-निकसौधर्मेशानविमानानि । ७५

६१ युगर्क्षमासमेरुप्रथमकाण्डोच्चत्व-चन्द्रसूर्यमण्डलभागाः । ,,

६२ युगपूर्णिमादिवासुपूज्यगणगण-धरचन्द्रदिनवृद्धिहानिप्रथमप्र-स्तटाः प्रथमावलिकाविमान-प्रस्तटाः । ७७

६३ ऋषभराज्यहरिवर्षरम्यकबाल -त्वनिषधनीलवत्सूर्योदयाः । ७७

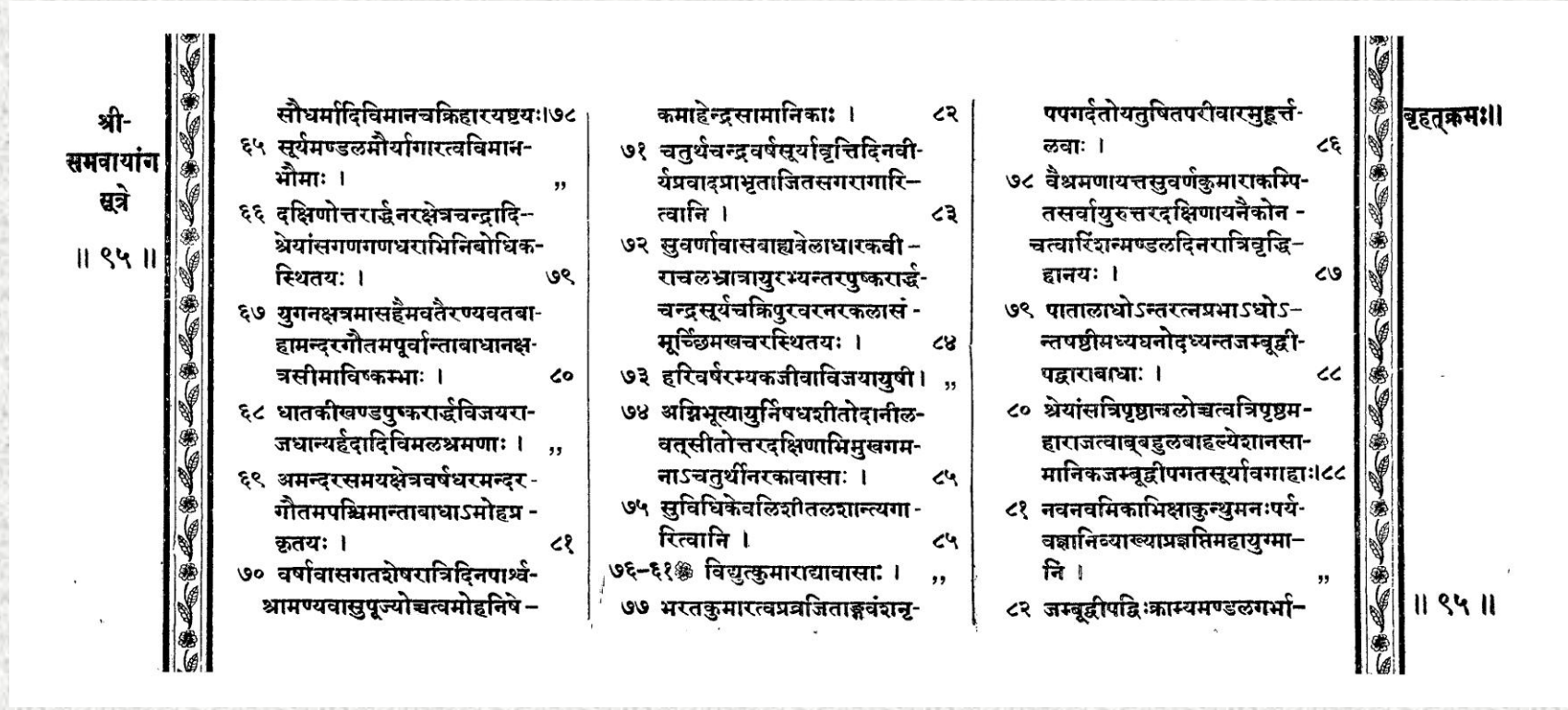
६४ अष्टाष्टमिकाभिक्षाऽसुरावासच-मरसामानिकदधिमुखविष्कम्भ-बृहत्क्रमः ।

॥ ९४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



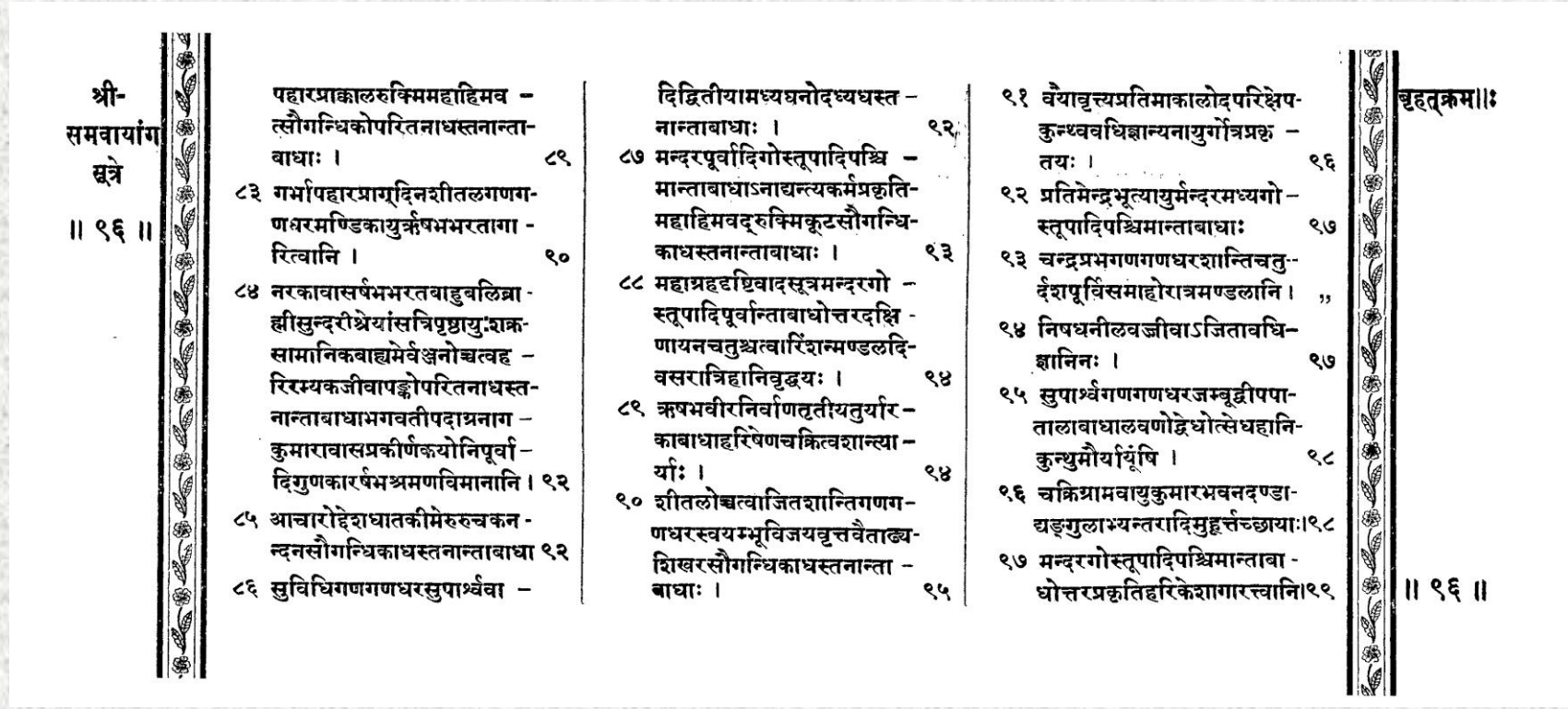
श्री-समवायांग सूत्रे ॥ ९५ ॥

सौधर्मादिविमानचक्रिहारयष्टयः।७८
६५ सूर्यमण्डलमौर्यागारत्वविमान-भौमाः । ,,
६६ दक्षिणोत्तरार्द्धनरक्षेत्रचन्द्रादि-श्रेयांसगणगणधराभिनिबोधिक-स्थितयः । ७९
६७ युगनक्षत्रमासहैमवतैरण्यवतबा-हामन्दरगौतमपूर्वान्ताबाधानक्ष-त्रसीमाविष्कम्भाः । ८०
६८ धातकीखण्डपुष्करार्द्धविजयरा-जधान्यर्हदादिविमलश्रमणाः । ,,
६९ अमन्दरसमयक्षेत्रवर्षधरमन्दर-गौतमपश्चिमान्ताबाधाऽमोहप्र-कृतयः । ८१
७० वर्षावासगतशेषरात्रिदिनपार्श्व-श्रामण्यवासुपूज्योच्चत्वमोहनिषे-कमाहेन्द्रसामानिकाः । ८२
७१ चतुर्थचन्द्रवर्षसूर्यावृत्तिदिनवी-र्यप्रवादप्राभृताजितसगरारिगारि-त्वानि । ८३
७२ सुवर्णावासबाह्यवेलाधारकवी-राचलभ्रात्रायुरभ्यन्तरपुष्करार्द्ध-चन्द्रसूर्यचक्रिपुरवरनरकलासं-मूर्च्छिमखचरस्थितयः । ८४
७३ हरिवर्षरम्यकजीवाविजययायुषी। ,,
७४ अग्निभूत्यायुर्निषधशीतोदानील-वत्सीतोत्तरदक्षिणाभिमुखगम-नाऽचतुर्थीनरकावासाः । ८५
७५ सुविधिकेवलिशीतलशान्त्यगा-रित्वानि । ८५
७६-६१ विद्युत्कुमाराद्यावासाः । ,,
७७ भरतकुमारत्वप्रव्रजिताङ्गवंशनृ-पपगर्दतोयतुषितपरीवारमुहूर्त्त-लवाः । ८६
७८ वैश्रमणायत्तसुवर्णकुमाराकम्पि-तसर्वायुरुत्तरदक्षिणायनैकोन-चत्वारिंशन्मण्डलदिनरात्रिवृद्धि-ह्रानयः । ८७
७९ पातालाधोऽन्तरत्नप्रभाऽधोऽ-न्तपष्ठीमध्यघनोदध्यन्तजम्बूद्वी-पद्वाराबाधाः । ८८
८० श्रेयांसत्रिपृष्ठान्नलोच्चत्वत्रिपृष्ठम-हाराजत्वाब्बहुलबाहल्येशानसा-मानिकजम्बूद्वीपगतसूर्यावगाहाः।८८
८१ नवनवमिकाभिक्षाकुन्थुमनःपर्य-वज्ञानिव्याख्याप्रज्ञप्तिमहायुग्मा-नि । ,,
८२ जम्बूद्वीपद्वि:क्राम्यमण्डलगर्भा-बृहत्क्रमः॥ ॥ ९५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग सूत्रे ॥ ९६ ॥

पहारप्राक्कालरुक्मिमहाहिमव – त्सौगन्धिकोपरितनाधस्तनान्ता-बाधाः । ८९

८३ गर्भापहारप्राग्दिनशीतलगणगग-णधरमण्डिकायुर्ऋषभभरतागा - रित्वानि । ९०

८४ नरकावासर्षभभरतबाहुबलिब्रा - ह्मीसुन्दरीश्रेयांसत्रिपृष्ठायु:शक्र-सामानिकबाह्यमेर्वन्तोच्चत्वह – रिरम्यकजीवापद्मोपरितनाधस्त-नान्ताबाधाभगवतीपदाग्रनाग – कुमारावासप्रकीर्णकयोनिपूर्वा – दिगुणकारर्षभश्रमणविमानानि । ९२

८५ आचारोद्देशधातकीमेरुरुचकन - न्दनसौगन्धिकाधस्तनान्ताबाधा ९२

८६ सुविधिगणगणधरसुपार्श्ववा – दिद्वितीयामध्यघनोदध्यधस्त – नान्ताबाधाः । ९२

८७ मन्दरपूर्वादिगोस्तूपादिपश्चि – मान्ताबाधाऽनाद्यन्त्यकर्मप्रकृति-महाहिमवद्रुक्मिकूटसौगन्धि-काधस्तनान्ताबाधाः । ९३

८८ महाग्रहदृष्टिवादसूत्रमन्दरगो – स्तूपादिपूर्वान्ताबाधोत्तरदक्षि - णायनचतुश्चत्वारिंशन्मण्डलदि-वसरात्रिहानिवृद्धयः । ९४

८९ ऋषभवीरनिर्वाणतृतीयतुर्यार – काबाधाहरिषेणचक्रित्वशान्त्या – र्याः । ९४

९० शीतलोच्चत्वाजितशान्तिगणग-णधरस्वयम्भूविजयवृत्तवैताढ्य-शिखरसौगन्धिकाधस्तनान्ता – बाधाः । ९५

९१ वैयावृत्त्यप्रतिमाकालोदपरिक्षेप-कुन्थ्ववधिज्ञान्यनायुर्गोत्रप्रकृ – तयः । ९६

९२ प्रतिमेन्द्रभूत्यायुर्मन्दरमध्यगो – स्तूपादिपश्चिमान्ताबाधाः ९७

९३ चन्द्रप्रभगणगणधरशान्तिचतु--र्दशपूर्विसमाहोरात्रमण्डलानि । ,,

९४ निषधनीलवज्रीवाऽजितावधि–ज्ञानिनः । ९७

९५ सुपार्श्वगणगणधरजम्बूद्वीपपा-तालाबाधालवणोद्वेधोत्सेधहानि-कुन्थुमौर्यायूंषि । ९८

९६ चक्रिग्रामवायुकुमारभवनदण्डा-द्यङ्गुलाभ्यन्तरादिमुहूर्त्तच्छाया:।९८

९७ मन्दरगोस्तूपादिपश्चिमान्ताबा - धोत्तरप्रकृतिहरिकेशागारत्त्वानि।९९

बृहत्क्रम॥:

॥ ९६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥ ९७ ॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-समवायांग-सूत्रे

९८ नन्दनोपरितनपाण्डुकाधस्तनान्त-
मेरुपश्चिमगोस्तूपादिपूर्वान्ताबा-
धाभरतधनु:पृष्ठोत्तरदक्षिणाय –
नैकोनपञ्चाशन्मण्डलदिनरात्रि –
वृद्धिहानिरेवत्यादिप्रथमज्येष्ठा –
न्तनक्षत्रतारकाः । ९९

९९ मन्दरोच्चत्वनन्दनपूर्वापरोत्तर–
दक्षिणान्ताबाधाप्रथमद्वितीय –
तृतीयमण्डलायामाज्ञनाधस्तना-
न्तव्यन्तरोपरितनान्ताबाधाः । १००

१०० दशदशमिकाभिक्षाशतभिषक्ता-
रकसुविध्युच्चत्वपार्श्वसुधर्मायु –
र्वैताढ्यक्षुल्लहिमवच्छिखरिका –
ञ्जननगोच्चत्वोद्वेधमूलविष्कम्भाः १०१

१०१ चन्द्रप्रभोच्चत्वारणाच्युतविमाना-
नि (१५०) । १०१

१०२ सुपार्श्वसर्वमहाहिमवद्रुक्म्यु–
च्चत्वोद्वेधजम्बूद्वीपकाञ्जनकाः ।
(२००) । १०१

१०३ पद्मप्रभासुरप्रासादोच्चत्वे । (२५०) ,,

१०४ सुमत्युच्चत्वनेमिकुमारत्वविमा-
नप्राकारोच्चत्ववीरचतुर्दशपूर्वि-
पञ्चधनुःशतसिद्धावगाहना:
(३००) । १०१

१०५ पार्श्वचतुर्दशपूर्व्यभिनन्दनोच्च-
त्वे (३५०) । १०१

१०६ संभवनिषधनीलवत्तदासन्नसर्व-
वक्षस्कारोच्चत्वोद्वेधानतप्राणत-
विमानवीरवादिनः । (४००) १०२

१०७ अजितसगरोच्चत्वे (४५०) । ,,

१०८ मेर्वासन्नवक्षस्कारशीताशीतोदा-
सर्ववर्षधरकूटर्षभभरतसौमनस-
गन्धमादनविद्युत्प्रभमाल्यवन्तह-
रिहरिस्सहवक्षस्कारकूटबलकूट-
नन्दनकूटसौधर्मैशानविमानो –
च्चत्वोद्वेधायामविष्कंभाः ।
(५००) । १०२

१०९ सनत्कुमारमाहेन्द्रविमानोच्चत्व–
हिमवच्छिखरिकूटधरणितला –
बाधापार्श्वचाद्यभिचन्द्रोच्चत्व –
वासुपूज्यप्रव्रज्यापरिवाराः ।
(६००) । १०३

११० ब्रह्मलान्तकविमानोच्चत्ववीरके-
वलिवैक्रियनेमिकेवलित्वमहाहि-
मवद्रुक्मिकूटतलाबाधाः(७००)। ,,

१११ महाशुक्रसहस्रारविमानोच्चत्व-
प्रथमकाण्डव्यन्तरस्थानवीरानु-
त्तरोपपातिकसूर्यचारान्तरनेमि-

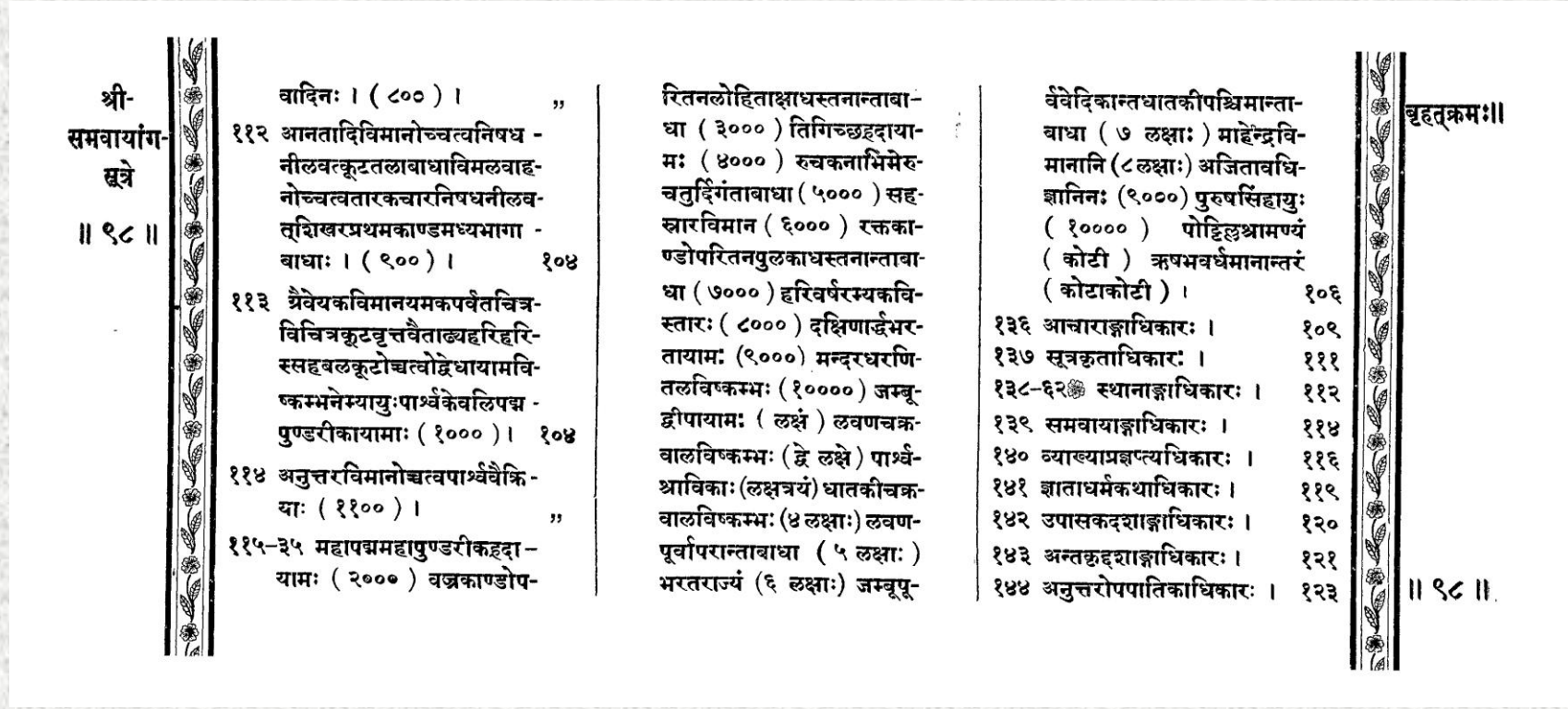
बृहत्क्रमः॥

॥ ९७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग-सूत्रे

॥ ९८ ॥

वादिनः । (८००) । „

११२ आनतादिविमानोच्चत्वनिषध - नीलवत्कूटतलाबाधाविमलवाह- नोच्चत्वतारकचारनिषधनीलव- त्शिखरप्रथमकाण्डमध्यभागा - बाधाः । (९००) । १०४

११३ ग्रैवेयकविमानयमकपर्वतचित्र- विचित्रकूटवृत्तवैताढ्यहरिहरि- स्सहबलकूटोच्चत्वोद्वेधायामवि- ष्कम्भनेम्यायुःपार्श्वकेवलिपद्म - पुण्डरीकायामाः (१०००) । १०४

११४ अनुत्तरविमानोच्चत्वपार्श्ववैक्रि- याः (११००) । „

११५-३५ महापद्ममहापुण्डरीकहृदा- यामः (२०००) वज्रकाण्डोप- रितनलोहिताक्षाधस्तनान्ताबा- धा (३०००) तिगिच्छहृदाया- मः (४०००) रुचकनाभिमेरु- चतुर्दिगंताबाधा (५०००) सह- स्रारविमान (६०००) रक्तका- ण्डोपरितनपुलकाधस्तनान्ताबा- धा (७०००) हरिवर्षरम्यकवि- स्तारः (८०००) दक्षिणार्द्धभर- तायामः (९०००) मन्दरधरणि- तलविष्कम्भः (१००००) जम्बू- द्वीपायामः (लक्षं) लवणचक्र- वालविष्कम्भः (द्वे लक्षे) पार्श्व- श्राविकाः (लक्षत्रयं) धातकीचक्र- वालविष्कम्भः (४ लक्षाः) लवण- पूर्वापरान्ताबाधा (५ लक्षाः) भरतराज्यं (६ लक्षाः) जम्बूपू- र्वेवेदिकान्तधातकीपश्चिमान्ता- बाधा (७ लक्षाः) माहेन्द्रवि- मानानि (८ लक्षाः) अजितावधि- ज्ञानिनः (९०००) पुरुषसिंहायुः (१००००) पोट्टिलश्रामण्यं (कोटी) ऋषभवर्धमानान्तरं (कोटाकोटी) । १०६

१३६ आचाराङ्गाधिकारः । १०९

१३७ सूत्रकृताधिकारः । १११

१३८-६२ स्थानाङ्गाधिकारः । ११२

१३९ समवायाङ्गाधिकारः । ११४

१४० व्याख्याप्रज्ञप्त्यधिकारः । ११६

१४१ ज्ञाताधर्मकथाधिकारः । ११९

१४२ उपासकदशाङ्गाधिकारः । १२०

१४३ अन्तकृद्दशाङ्गाधिकारः । १२१

१४४ अनुत्तरोपपातिकाधिकारः । १२३

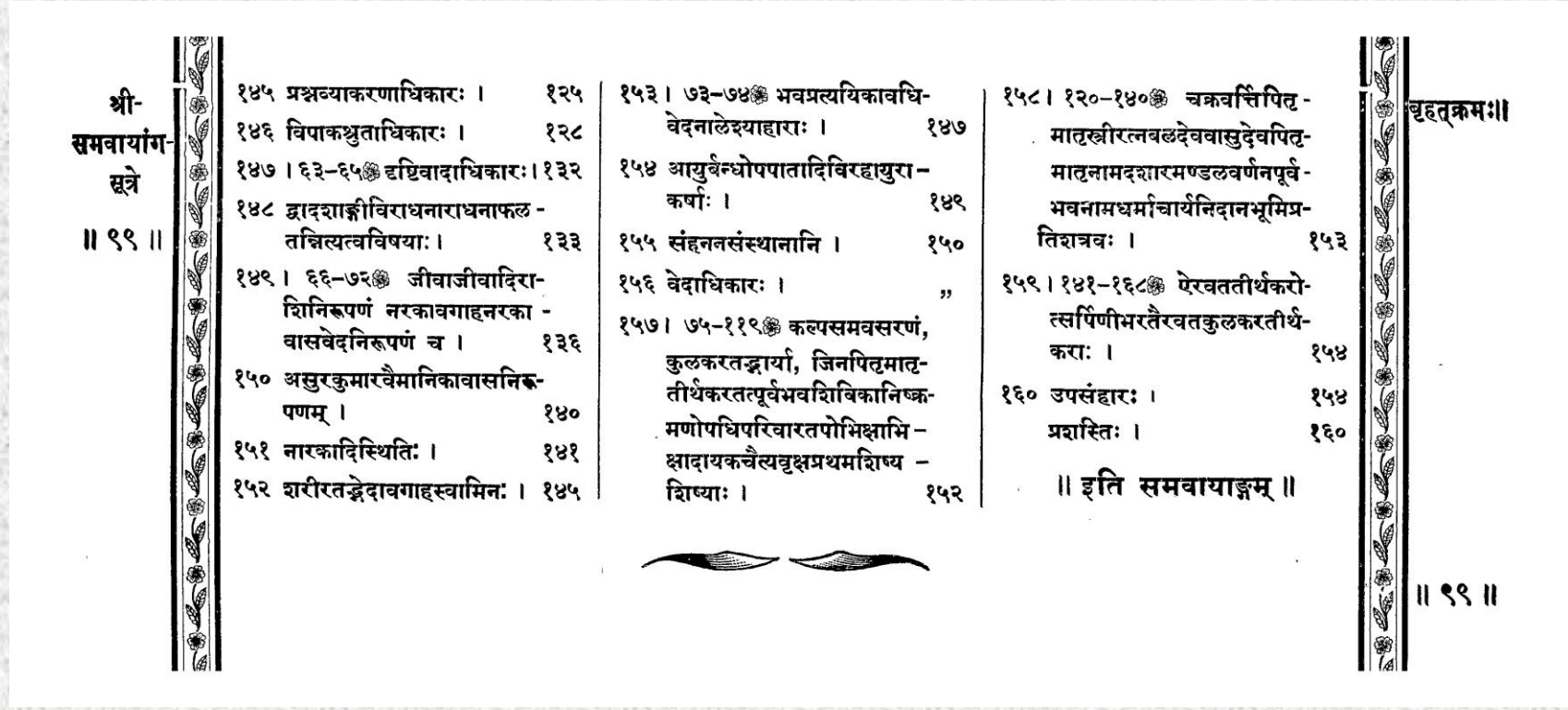
बृहत्क्रमः॥

॥ ९८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-समवायांग-सूत्रे

॥ ९९ ॥

१४५ प्रश्नव्याकरणाधिकारः । १२५
१४६ विपाकश्रुताधिकारः । १२८
१४७ । ६३–६५ दृष्टिवादाधिकारः । १३२
१४८ द्वादशाङ्गीविराधनाराधनाफल-तन्नित्यत्वविषयाः । १३३
१४९ । ६६–७२ जीवाजीवादिराशिनिरूपणं नरकावगाहनरकावासवेदनिरूपणं च । १३६
१५० असुरकुमारवैमानिकावासनिरूपणम् । १४०
१५१ नारकादिस्थितिः । १४१
१५२ शरीरतद्भेदावगाहस्वामिनः । १४५
१५३ । ७३–७४ भवप्रत्ययिकावधिवेदनालेश्याहाराः । १४७
१५४ आयुर्बन्धोपपातादिविरहायुरा-कर्षाः । १४९
१५५ संहननसंस्थानानि । १५०
१५६ वेदाधिकारः । ,,
१५७ । ७५–११९ कल्पसमवसरणं, कुलकरतद्भार्या, जिनपितृमातृतीर्थकरतत्पूर्वभवशिविकानिष्क्रमणोपधिपरिवारतपोभिक्षाभिक्षादायकचैत्यवृक्षप्रथमशिष्य-शिष्याः । १५२
१५८ । १२०–१४० चक्रवर्त्तिपितृ-मातृस्त्रीरत्नबलदेववासुदेवपितृ-मातृनामदशारमण्डलवर्णनपूर्वभवनामधर्माचार्यनिदानभूमिप्रतिशत्रवः । १५३
१५९ । १४१–१६८ ऐरवततीर्थकरोत्सर्पिणीभरतैरवतकुलकरतीर्थकराः । १५४
१६० उपसंहारः । १५४
प्रशस्तिः । १६०

॥ इति समवायाङ्गम् ॥

बृहत्क्रमः॥

॥ ९९ ॥

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१००॥

भगवतीसूत्रस्य विषयानुक्रमः ॥

सूत्राणि ८६९ सूत्रगाथाः: ११४

मङ्गलम्, एतट्टीकाचूर्णिजीवाभिगमादिवृत्तिसंयोजनेन विवरणप्रतिज्ञा, जयकुञ्जरोपमा, व्याख्याप्रज्ञप्तिशब्दार्थः । २
१ पञ्चनमस्कारः ५
२ ब्राह्मीलिपिनमस्कारः । ५
१ ॐ उद्देशक(१०)सङ्ग्रहगाथा । ६
३ श्रुतनमस्कारः । ,,
४ राजगृहगुणशीलश्रेणिकचेल्लणावर्णनम् (अतिदेशः) । ७
५ वीरवर्णनं समवसरणान्तम् । १०
६ पर्षन्निर्गमधर्मकथापर्षत्प्रतिगमनानि । ११
७ गौतमवर्णनम् । १३
८ जातश्रद्धादिना चलच्चलितादि-(९) प्रश्नोत्तराणि । १६
९ चलच्चलितादीनामेकानेकार्थादि-प्रश्नोत्तरे । १९
१० ॐ नारकाणां स्थित्युच्छ्वासाहाराः (३९ द्वाराणि) । २३
११-१२-३ ॐ पूर्वाहृतपुद्गलचयादि । २४
१३-४ ॐ पुद्गलभेदचयनोपचयनोदीरणवेदननिर्जरणत्रिकालिकोद्वर्त्तनसंक्रमनिधत्तनिकाचनप्रश्नाः २५
१४ तैजसकार्मणग्रहणोदीरणवेदननिर्जराप्रश्नोत्तरे । ५६
१५-५ ॐ चलिताचलितादिकर्मबन्धादि । ,,
१६ नारकादिदण्डकस्थित्याहारौ । ३१
१७ आत्मपरोभयारम्भानारम्भाः । (अप्रमत्ता अनारम्भाः) । ३३
९८ इहपरोभयभविकज्ञानदर्शनचारित्रतपःसंयमप्रश्नोत्तरे । ३४

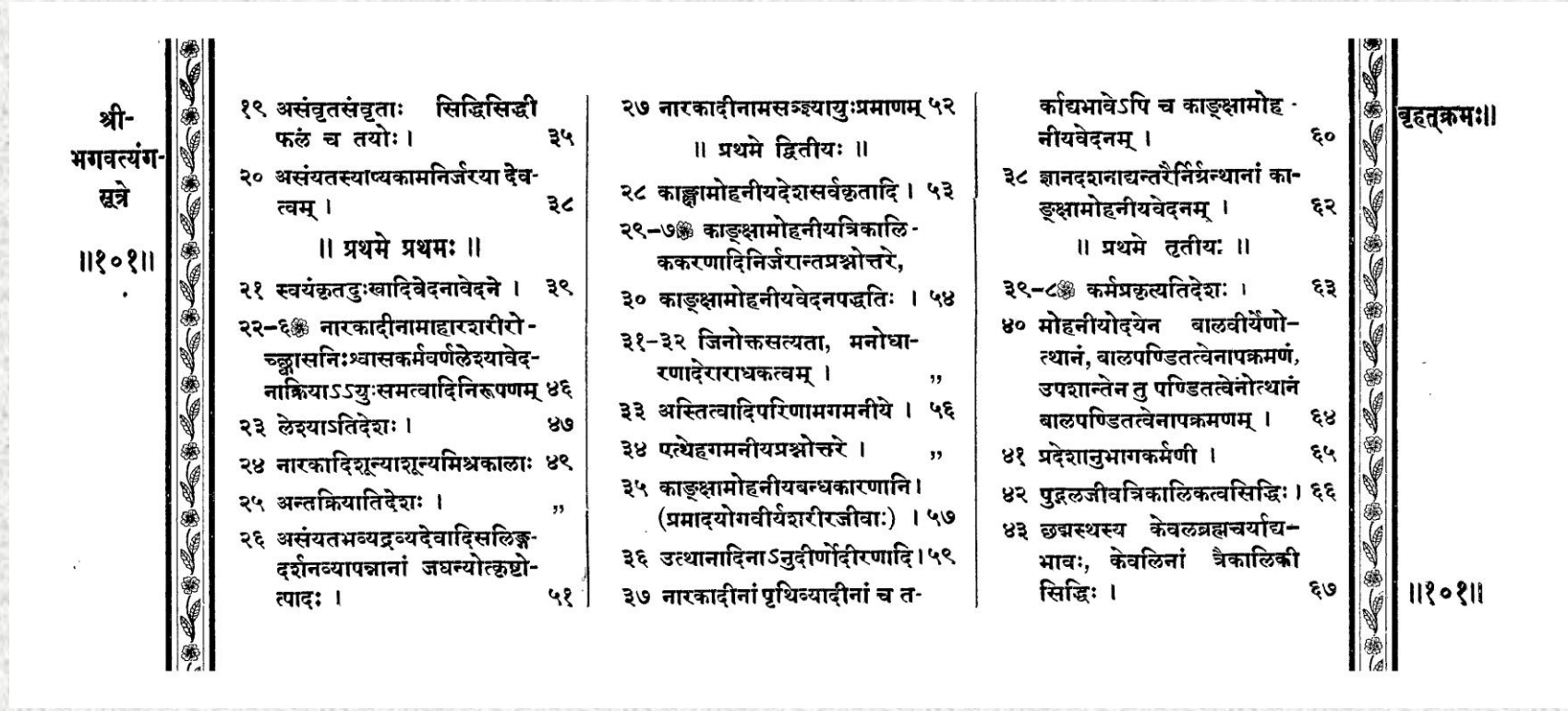
बृहत्क्रमः॥

॥१००॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

॥१०१॥

१९ असंवृतसंवृताः सिद्धिसिद्धी फलं च तयोः। ३५
२० असंयतस्याप्यकामनिर्जरया देवत्वम्। ३८

॥ प्रथमे प्रथमः ॥

२१ स्वयंकृतदुःखादिवेदनावेदने। ३९
२२-६ नारकादीनामाहारशरीरोच्छ्वासनिःश्वासकर्मवर्णलेश्यावेदनाक्रियाऽऽयुःसमत्वादिनिरूपणम् ४६
२३ लेश्याऽतिदेशः। ४७
२४ नारकादिशून्याशून्यमिश्रकालाः ४९
२५ अन्तक्रियातिदेशः। ,,
२६ असंयतभव्यद्रव्यदेवादिसलिङ्गदर्शनव्यापन्नानां जघन्योत्कृष्टोत्पादः। ५१
२७ नारकादीनामसञ्ज्ञ्यायुःप्रमाणम् ५२

॥ प्रथमे द्वितीयः ॥

२८ काङ्क्षामोहनीयदेशसर्वकृतादि। ५३
२९-७ काङ्क्षामोहनीयत्रिकालिककरणादिनिर्जरान्तप्रश्नोत्तरे, ,,
३० काङ्क्षामोहनीयवेदनपद्धतिः। ५४
३१-३२ जिनोक्तसत्यता, मनोधारणादेराराधकत्वम्। ,,
३३ अस्तित्वादिपरिणामगमनीये। ५६
३४ एत्थेहगमनीयप्रश्नोत्तरे। ,,
३५ काङ्क्षामोहनीयबन्धकारणानि। (प्रमादयोगवीर्यशरीरजीवाः) । ५७
३६ उत्थानादिनाऽनुदीर्णोदीरणादि। ५९
३७ नारकादीनां पृथिव्यादीनां च तत्कार्याद्यभावेऽपि च काङ्क्षामोहनीयवेदनम्। ६०
३८ ज्ञानदर्शनाद्यन्तरैर्निर्ग्रन्थानां काङ्क्षामोहनीयवेदनम्। ६२

॥ प्रथमे तृतीयः ॥

३९-८ कर्मप्रकृत्यतिदेशः। ६३
४० मोहनीयोदयेन बालवीर्येणोत्थानं, बालपण्डितत्वेनापक्रमणं, उपशान्तेन तु पण्डितत्वेनोत्थानं बालपण्डितत्वेनापक्रमणम्। ६४
४१ प्रदेशानुभागकर्मणी। ६५
४२ पुद्गलजीवत्रिकालिकत्वसिद्धिः। ६६
४३ छद्मस्थस्य केवलब्रह्मचर्याद्यभावः, केवलिनां त्रैकालिकी सिद्धिः। ६७

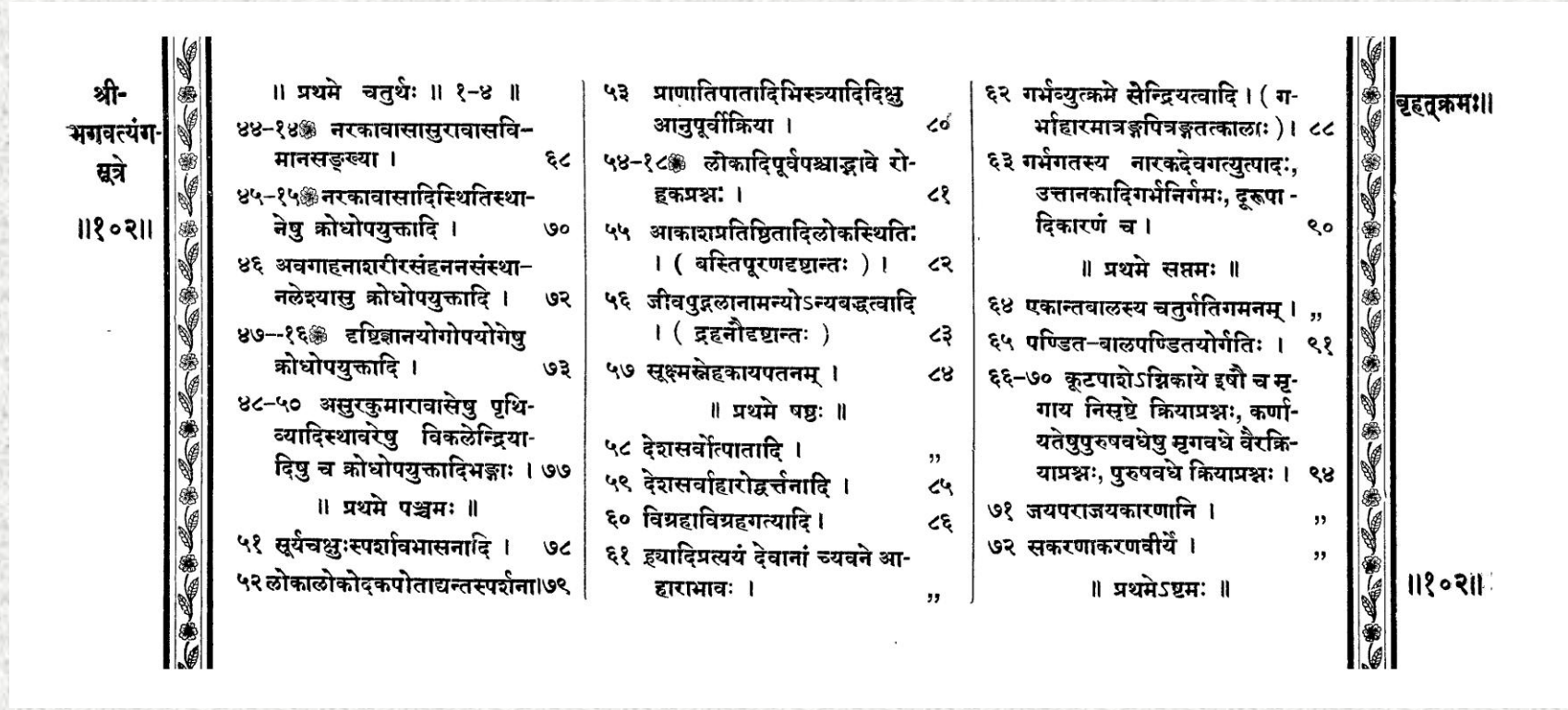
बृहत्क्रमः॥

॥१०१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१०२॥

॥ प्रथमे चतुर्थः ॥ १-४ ॥
४४-१४ नरकावासासुरावासविमानसङ्ख्या । ६८
४५-१५ नरकावासादिस्थितिस्थानेषु क्रोधोपयुक्तादि । ७०
४६ अवगाहनाशरीरसंहननसंस्थानलेश्यासु क्रोधोपयुक्तादि । ७२
४७-१६ दृष्टिज्ञानयोगोपयोगेषु क्रोधोपयुक्तादि । ७३
४८-५० असुरकुमारावासेषु पृथिव्यादिस्थावरेषु विकलेन्द्रियादिषु च क्रोधोपयुक्तादिभङ्गाः । ७७
॥ प्रथमे पञ्चमः ॥
५१ सूर्यचक्षुःस्पर्शावभासनादि । ७८
५२ लोकालोकोदकपोताद्यन्तस्पर्शना ७९
५३ प्राणातिपातादिभिस्त्र्यादिदिक्षु आनुपूर्वीक्रिया । ८०
५४-१८ लोकादिपूर्वपश्चाद्भावे रोहकप्रश्नः । ८१
५५ आकाशप्रतिष्ठितादिलोकस्थितिः । (वस्तिपूरणदृष्टान्तः) । ८२
५६ जीवपुद्गलानामन्योऽन्यबद्धत्वादि । (द्रहनौदृष्टान्तः) ८३
५७ सूक्ष्मस्नेहकायपतनम् । ८४
॥ प्रथमे षष्ठः ॥
५८ देशसर्वोत्पातादि । ,,
५९ देशसर्वाहारोद्वर्त्तनादि । ८५
६० विग्रहाविग्रहगत्यादि । ८६
६१ ह्यादिप्रत्ययं देवानां च्यवने आहाराभावः । ,,
६२ गर्भव्युत्क्रमे सेन्द्रियत्वादि । (गर्भाहारमात्रङ्गपित्रङ्गतत्कालाः) । ८८
६३ गर्भगतस्य नारकदेवगत्युत्पादः, उत्तानकादिगर्भनिर्गमः, दूरूपादिकारणं च । ९०
॥ प्रथमे सप्तमः ॥
६४ एकान्तबालस्य चतुर्गतिगमनम् । ,,
६५ पण्डित-बालपण्डितयोर्गतिः । ९१
६६-७० कूटपाशेऽग्निकाये इषौ च मृगाय निसृष्टे क्रियाप्रश्नः, कर्णायतेषुपुरुषवधेषु मृगवधे वैरक्रियाप्रश्नः, पुरुषवधे क्रियाप्रश्नः । ९४
७१ जयपराजयकारणानि । ,,
७२ सकरणाकरणवीर्ये । ,,
॥ प्रथमेऽष्टमः ॥

बृहत्क्रमः॥

॥१०२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥१०३॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

७३ प्राणातिपातादितद्विरमणाभ्यां गुरुलघुत्वादि भ्रमणव्यतिव्रजनान्तम् । ९५

७४ अवकाशवातादिनारकादिपुद्गलास्तिकायलेश्यादृष्ट्यादिकालानां गुरुलघुत्वविचारः । ९७

७५ लाघवाद्यक्रोधत्वादेः प्रशस्तत्वं, प्राग्बहुमोहोऽपि संवृतोऽन्तकरः । ,,

७६ नैकदा भवद्वयायुर्वेदनम् । ९९

७७ पार्श्वापत्यकालाशवेशिकस्थविरविवादः । (सामायिकसंयमविवेकादीनामर्थविषये पञ्चमहाव्रताङ्गीकारः सिद्धिश्च । १०१

७८ श्रेष्ठिदरिद्रादेः समाऽप्रत्याख्यानक्रिया । ,,

७९ आधाकर्मप्राशुकयोर्भोगे बन्धाबन्धादि । १०२

८० अस्थिरादेर्लोठनभञ्जने, शाश्वते बालपण्डितत्वे च । १०२

॥ प्रथमे नवमः ॥

८१ चलदचलितादि, विषमपरमाणुस्कन्धसमविभागभाषाक्रियासमयाभाषाक्रियाऽक्रियेत्यन्ययूथिकमतम् । १०६

८२ युगपदीर्यापथिकसांपरायिकक्रिये इत्यन्ये । १०७

८३ नरकगत्युत्पादविरहातिदेशः । १०८

॥ प्रथमे दशमः ॥

॥ इति प्रथमं शतकम् ॥१॥

८४ १९ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहगाथा, पृथ्यादीनामुच्छ्वासाद्यस्तित्वम् । १०९

८५ द्रव्याद्यैरुच्छ्वासगमः, वायोरपि । ११०

८६-८९ वायोर्भूयस्तत्रोत्पत्तिः, स्पर्शे मरणं, सशरीरादिनिर्गमः, शरीरचतुष्कं च, मृतादिनः पुनर्नरादित्वं, प्राणभूतजीवसत्त्वविज्ञव्युत्पत्तिः, मृतादिनः सिद्धिः । ११२

९०-९२ स्कन्दकचरित्रं, पिङ्गलनिर्ग्रन्थः, सान्तलोकादिप्रश्नः, पूर्वसङ्गतिकतया गौतमप्रत्युद्गमनं, व्याकृतभोजिवीरवर्णनं, लोकसिद्धिसिद्धमरणस्वरूपं, स्कन्दकदीक्षा, मुनित्वं, प्रतिमा, गुण-

बृहत्क्रमः॥

॥१०३॥

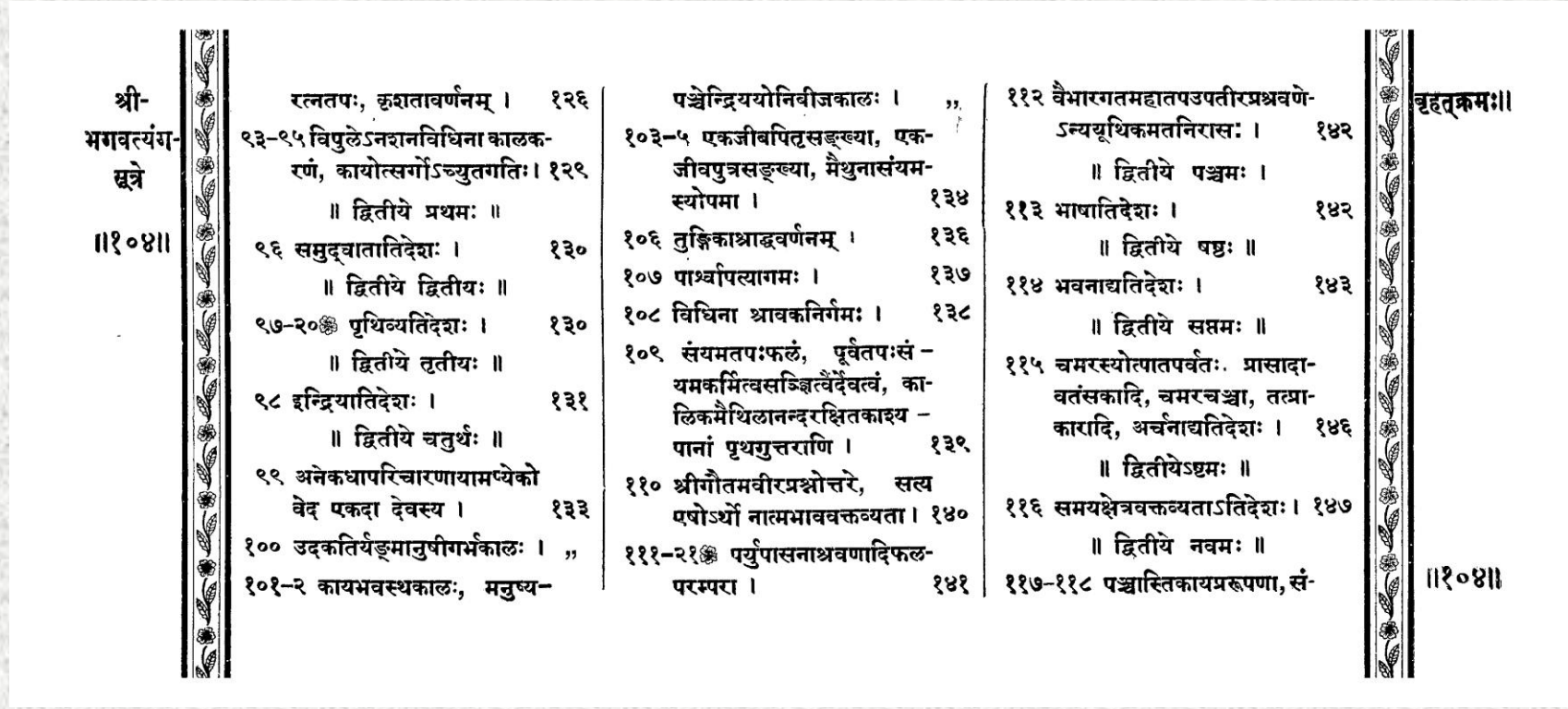
[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-५. "भगवती"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१०४॥

रत्नतपः, कृशतावर्णनम् । १२६
९३-९५ विपुलेऽनशनविधिना कालकरणं, कायोत्सर्गोऽच्युतगतिः। १२९
॥ द्वितीये प्रथमः ॥
९६ समुद्घातातिदेशः । १३०
॥ द्वितीये द्वितीयः ॥
९७-२० पृथिव्यतिदेशः । १३०
॥ द्वितीये तृतीयः ॥
९८ इन्द्रियातिदेशः । १३१
॥ द्वितीये चतुर्थः ॥
९९ अनेकधापरिचारणायामप्येको वेद एकदा देवस्य । १३३
१०० उदकतिर्यङ्मानुषीगर्भकालः । ,,
१०१-२ कायभवस्थकालः, मनुष्यपञ्चेन्द्रिययोनिबीजकालः । ,,
१०३-५ एकजीवपितृसङ्ख्या, एकजीवपुत्रसङ्ख्या, मैथुनासंयमस्योपमा । १३४
१०६ तुङ्गिकाश्राद्धवर्णनम् । १३६
१०७ पार्श्वापत्यागमः । १३७
१०८ विधिना श्रावकनिर्गमः । १३८
१०९ संयमतपःफलं, पूर्वतपःसंयमकर्मित्वसज्ञित्वैदैवत्वं, कालिकमैथिलानन्दरक्षितकाश्यपानां पृथगुत्तराणि । १३९
११० श्रीगौतमवीरप्रश्नोत्तरे, सत्य एषोऽर्थो नात्मभाववक्तव्यता। १४०
१११-२१ पर्युपासनाश्रवणादिफलपरम्परा । १४१
११२ वैभारगतमहातपउपतीरप्रश्रवणेऽन्ययूथिकमतनिरासः । १४२
॥ द्वितीये पञ्चमः ।
११३ भाषातिदेशः । १४२
॥ द्वितीये षष्ठः ॥
११४ भवनाद्यतिदेशः । १४३
॥ द्वितीये सप्तमः ॥
११५ चमरस्योत्पातपर्वतः. प्रासादावतंसकादि, चमरचञ्चा, तत्प्राकारादि, अर्चनाद्यतिदेशः । १४६
॥ द्वितीयेऽष्टमः ॥
११६ समयक्षेत्रवक्तव्यताऽतिदेशः। १४७
॥ द्वितीये नवमः ॥
११७-११८ पञ्चास्तिकायप्ररूपणा, सं-

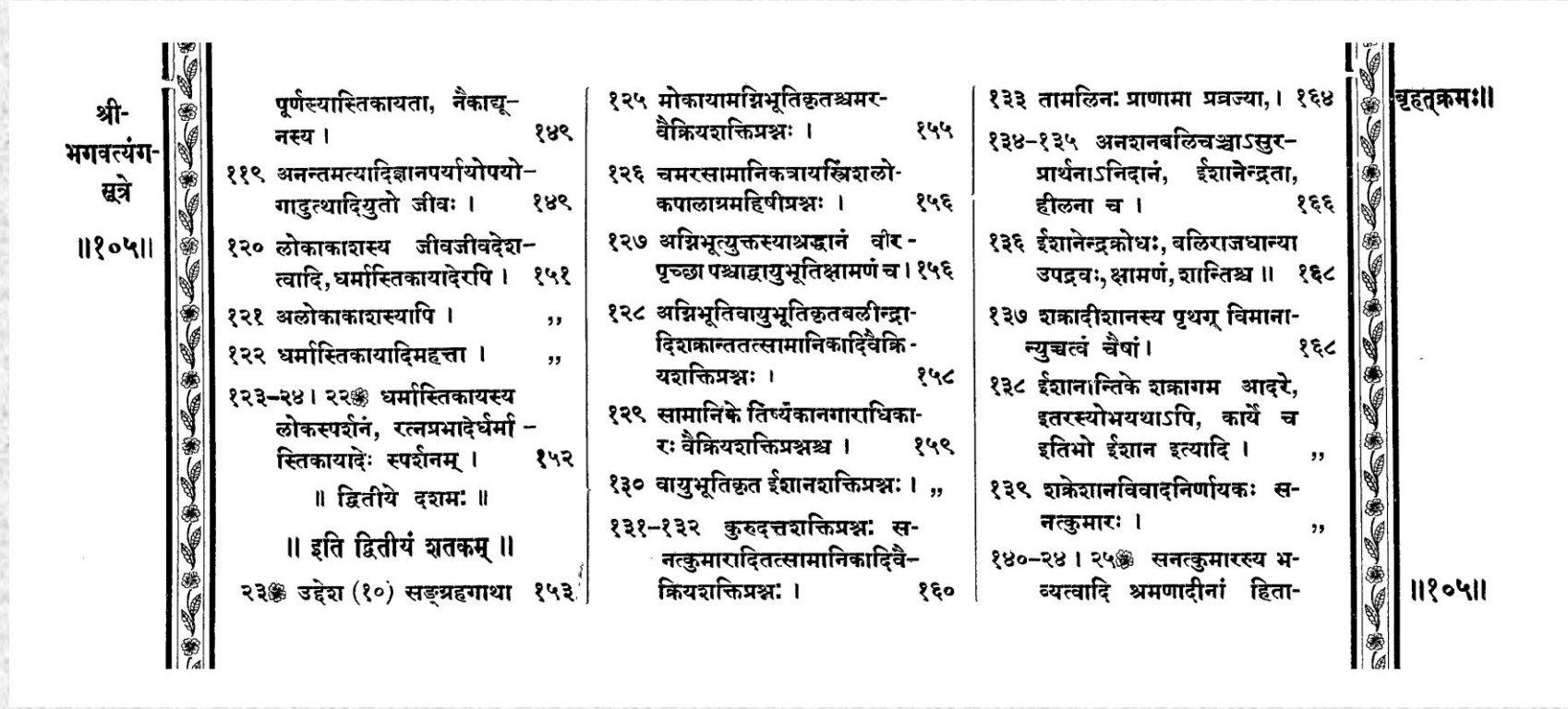
बृहत्क्रमः॥

॥१०४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१०५॥

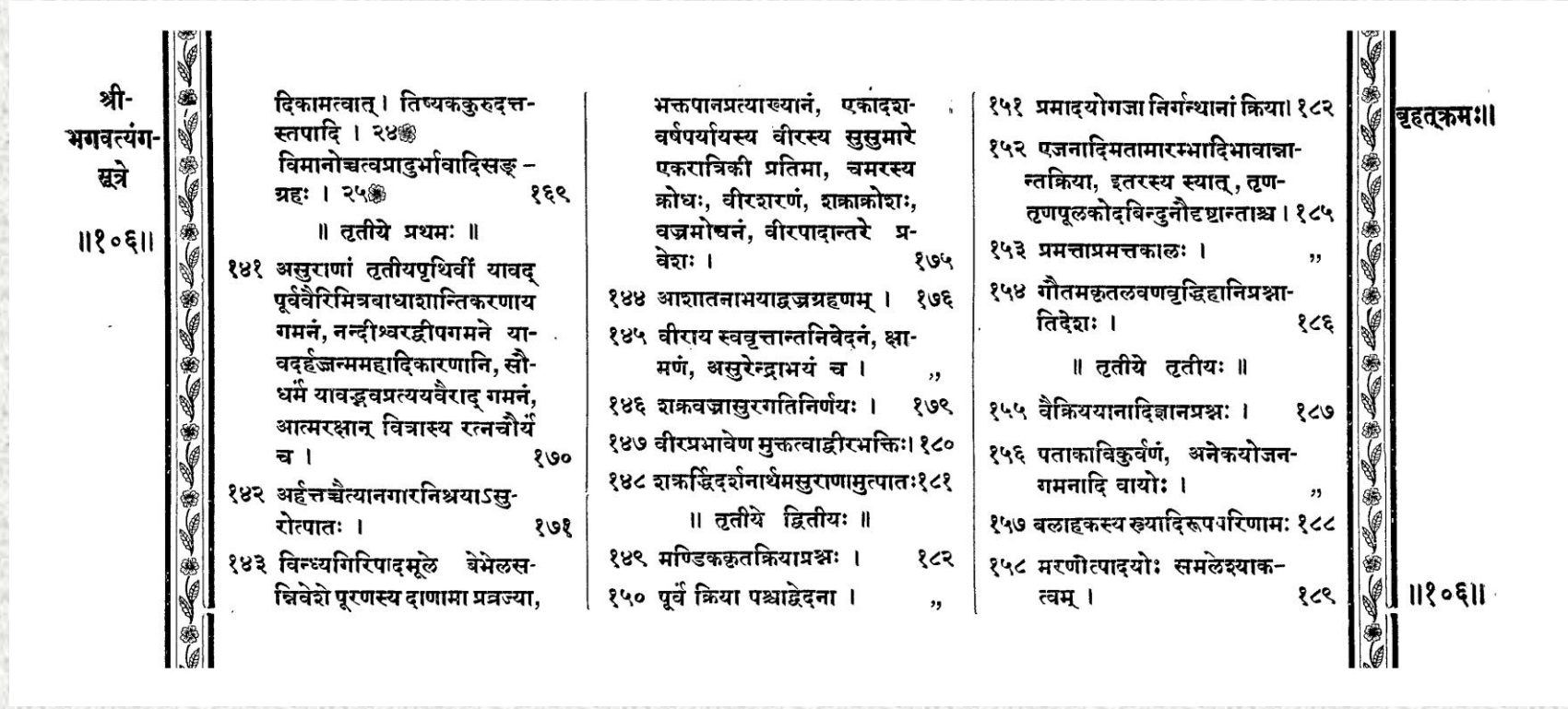
पूर्णस्यास्तिकायता, नैकाद्यू-नस्य । १४९
११९ अनन्तमत्यादिज्ञानपर्यायोपयो-गादुत्थादियुतो जीवः । १४९
१२० लोकाकाशस्य जीवजीवदेश-त्वादि, धर्मास्तिकायादेरपि । १५१
१२१ अलोकाकाशस्यापि । ,,
१२२ धर्मास्तिकायादिमहत्ता । ,,
१२३-२४ । २२ धर्मास्तिकायस्य लोकस्पर्शनं, रत्नप्रभादेर्धर्मा-स्तिकायादेः स्पर्शनम् । १५२
॥ द्वितीये दशमः ॥
॥ इति द्वितीयं शतकम् ॥
२३ उद्देश (१०) सङ्ग्रहगाथा १५३
१२५ मोकायामग्निभूतिकृतश्चमर-वैक्रियशक्तिप्रश्नः । १५५
१२६ चमरसामानिकत्रायस्त्रिंशलो-कपालाग्रमहिषीप्रश्नः । १५६
१२७ अग्निभूत्युक्तस्याश्रद्धानं वीर-पृच्छा पश्चाद्वायुभूतिक्षामणं च । १५६
१२८ अग्निभूतिवायुभूतिकृतबलीन्द्रा-दिशक्रान्ततत्सामानिकादिवैक्रि-यशक्तिप्रश्नः । १५८
१२९ सामानिके तिर्यंकानगाराधिका-रः वैक्रियशक्तिप्रश्नश्च । १५९
१३० वायुभूतिकृत ईशानशक्तिप्रश्नः । ,,
१३१-१३२ कुरुदत्तशक्तिप्रश्नः स-नत्कुमारादितत्सामानिकादिवै-क्रियशक्तिप्रश्नः । १६०
१३३ तामलिनः प्राणामा प्रव्रज्या, । १६४
१३४-१३५ अनशनबलिचञ्चाऽसुर-प्रार्थनाऽनिदानं, ईशानेन्द्रता, हीलना च । १६६
१३६ ईशानेन्द्रक्रोधः, बलिराजधान्या उपद्रवः, क्षामणं, शान्तिश्च ॥ १६८
१३७ शक्रादीशानस्य पृथग् विमाना-न्युच्चत्वं चैषां । १६८
१३८ ईशानान्तिके शक्रागम आदरे, इतरस्योभयथाऽपि, कार्ये च इतिभो ईशान इत्यादि । ,,
१३९ शक्रेशानविवादनिर्णायकः स-नत्कुमारः । ,,
१४०-२४ । २५ सनत्कुमारस्य भ-व्यत्वादि श्रमणादीनां हिता-

बृहत्क्रमः॥
॥१०५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

॥१०६॥

दिकामत्वात्। तिष्यककुरुदत्त-स्तपादि । २४
विमानोच्चत्वप्रादुर्भावादिसङ्ग्रहः । २५ १६९

॥ तृतीये प्रथमः ॥

१४१ असुराणां तृतीयपृथिवीं यावद् पूर्ववैरिमित्रबाधाशान्तिकरणाय गमनं, नन्दीश्वरद्वीपगमने यावदर्हज्जन्ममहादिकारणानि, सौधर्मे यावद्भवप्रत्ययवैराद् गमनं, आत्मरक्षान् वित्रास्य रत्नचौर्यं च । १७०

१४२ अर्हत्तच्चैत्यानगारनिश्रयाऽसुरोत्पातः । १७१

१४३ विन्ध्यगिरिपादमूले बेभेलसन्निवेशे पूरणस्य दाणामा प्रव्रज्या, भक्तपानप्रत्याख्यानं, एकादशवर्षपर्यायस्य वीरस्य सुसुमारे एकरात्रिकी प्रतिमा, चमरस्य क्रोधः, वीरशरणं, शक्राक्रोशः, वज्रमोचनं, वीरपादान्तरे प्रवेशः । १७५

१४४ आशातनाभयाद्वज्रग्रहणम् । १७६

१४५ वीराय स्ववृत्तान्तनिवेदनं, क्षामणं, असुरेन्द्राभयं च । ,,

१४६ शक्रवज्रासुरगतिनिर्णयः । १७९

१४७ वीरप्रभावेण मुक्तत्वाद्वीरभक्तिः। १८०

१४८ शक्रर्द्धिदर्शनार्थमसुराणामुत्पातः १८१

॥ तृतीये द्वितीयः ॥

१४९ मण्डिककृतक्रियाप्रश्नः । १८२

१५० पूर्वं क्रिया पश्चाद्वेदना । ,,

१५१ प्रमादयोगजा निर्गन्थानां क्रिया। १८२

१५२ एजनादिमतामारम्भादिभावान्नान्तक्रिया, इतरस्य स्यात्, तृण-तृणपूलकोदबिन्दुनौदृष्टान्ताश्च । १८५

१५३ प्रमत्ताप्रमत्तकालः । ,,

१५४ गौतमकृतलवणवृद्धिहानिप्रश्नातिदेशः । १८६

॥ तृतीये तृतीयः ॥

१५५ वैक्रिययानादिज्ञानप्रश्नः । १८७

१५६ पताकाविकुर्वणं, अनेकयोजनगमनादि वायोः । ,,

१५७ बलाहकस्य रुयादिरूपपरिणामः १८८

१५८ मरणोत्पादयोः समलेश्याकत्वम् । १८९

बृहत्क्रमः॥

॥१०६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१०७॥

१५९ प्रणीतभोजनादेर्मायिनो वैक्रियं, अमायिन आलोचितस्याराधना । १९०

॥ तृतीये चतुर्थः ॥

१६०–२६ स्त्रीअसिचर्मपल्यङ्कादिविविधवैक्रियकरणं भावितात्मनः । १९१

॥ तृतीये पञ्चमः ॥

१६१–१६२ मिथ्यादृष्टेर्भावितात्मनः सम्यग्दृष्टेश्च समुद्घाते रूपज्ञानप्रश्नौ । १९३

१६३ चमराद्यात्मरक्षकसङ्ख्याति-देशः । १९४

॥ तृतीये षष्ठः ॥

१६४-१६७।२९ शक्रलोकपालतद्विमानतदायत्तदेवकार्यग्रहनिरूपणम् । २००

॥ तृतीये सप्तमः ॥

१६८–३० असुरादिनिकायसौधर्मेशानाद्यधिपाः (१०) । २०१

॥ तृतीयेऽष्टमः ॥

१६९ इन्द्रियविषयातिदेशः । ,,

॥ तृतीये नवमः ॥

१७० असुरादिपर्षदतिदेशः । २०२

॥ तृतीये दशमः ॥

॥ इति तृतीयं शतकम् ॥

३१ उद्देश (१०) संग्रहणी । २०३

१७१ । ३२ ईशानलोकपालविमानस्थितयः । २०३

॥ चतुर्थे चत्वारः ॥ १–४ ॥

१७२ ईशानलोकपालराजधान्यः । ,,

॥ चतुर्थेऽष्टौ ॥

१७३ नारको नरके उत्पद्यते इत्याद्यतिदेशः । २०५

॥ चतुर्थे नवमः ॥

१७४।३३ लेश्यापरिणामवर्णाद्यतिदेशः २०६

॥ चतुर्थे दशमः ॥

॥ इति चतुर्थं शतकम् ॥

३४ उद्देश (१०) सङ्ग्रहणी । २०६

१७५ उदक्प्राच्यामुद्रस्य प्राग्दक्षिणागमनमित्यादिसूर्यवक्तव्यता । २०७

१७६ मेरुदक्षिणोत्तरार्द्धादिदिनरात्रिमुहूर्त्तपृच्छा । २०९

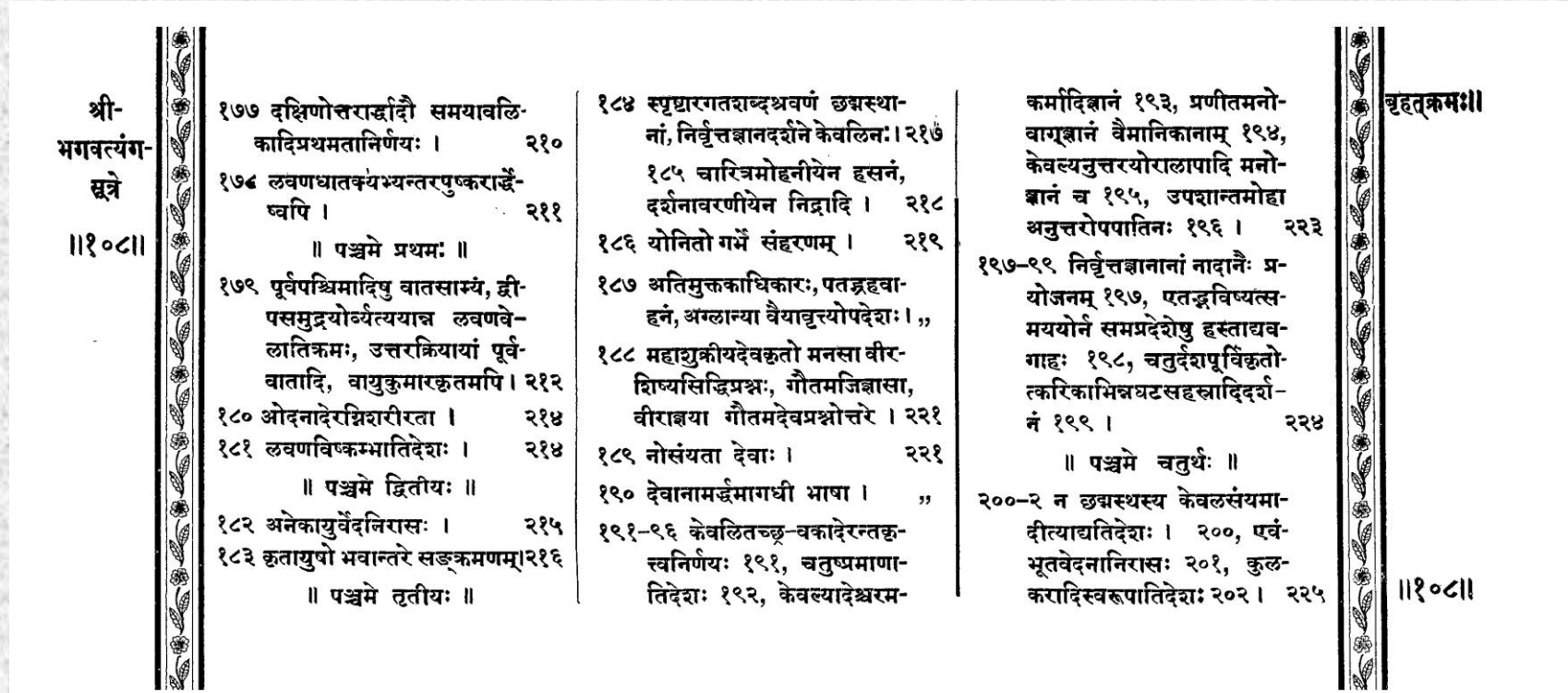
बृहत्क्रमः ।

॥१०७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१०८॥

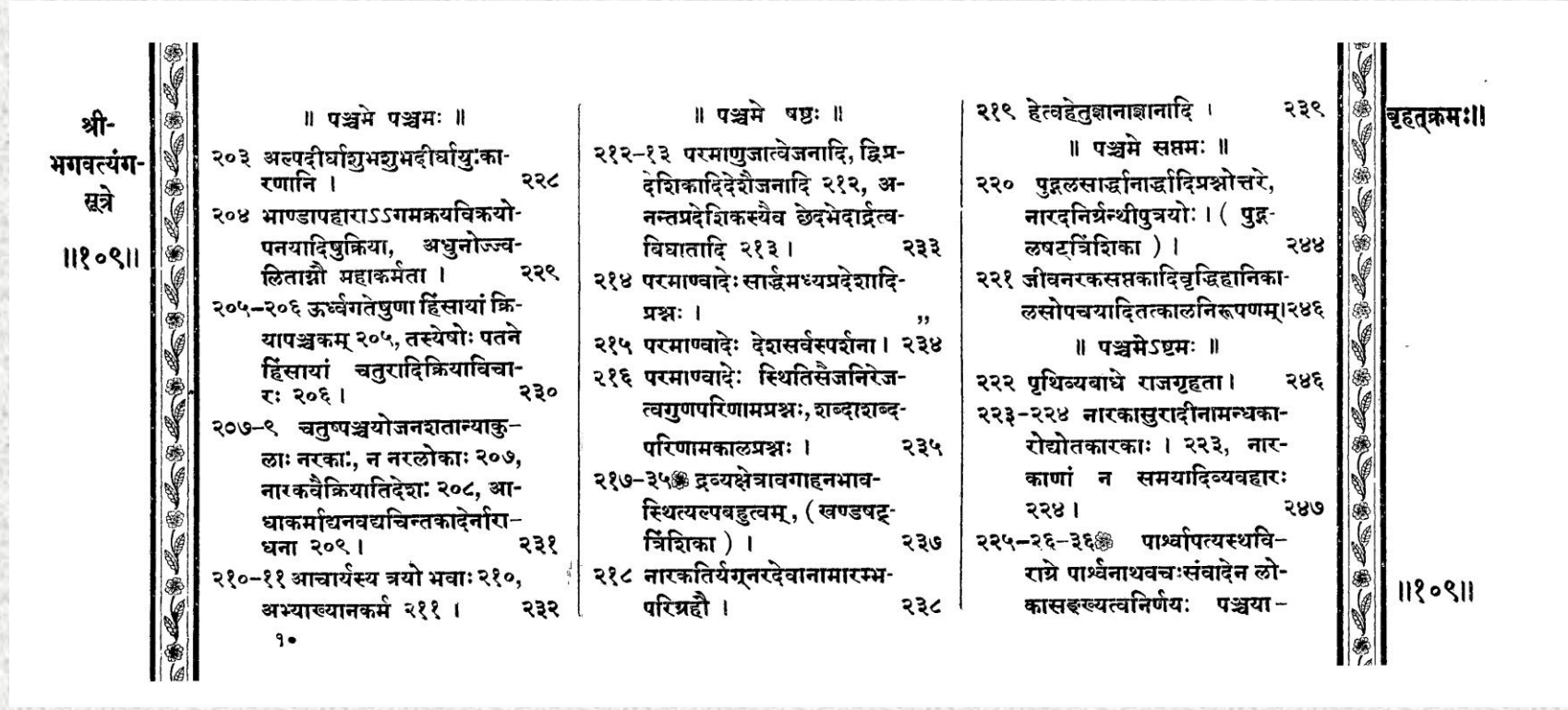
१७७ दक्षिणोत्तरार्द्धादौ समयावलिकादिप्रथमतानिर्णयः । २१०
१७८ लवणधातकंयभ्यन्तरपुष्करार्द्धेष्वपि । २११
॥ पञ्चमे प्रथमः ॥
१७९ पूर्वपश्चिमादिषु वातसाम्यं, द्वीपसमुद्रयोर्व्यत्ययान्न लवणवेलातिक्रमः, उत्तरक्रियायां पूर्ववातादि, वायुकुमारकृतमपि। २१२
१८० ओदनादेरग्निशरीरता । २१४
१८१ लवणविष्कम्भातिदेशः । २१४
॥ पञ्चमे द्वितीयः ॥
१८२ अनेकायुर्वेदनिरासः । २१५
१८३ कृतायुषो भवान्तरे सङ्क्रमणम्।२१६
॥ पञ्चमे तृतीयः ॥
१८४ स्पृष्टारगतशब्दश्रवणं छद्मस्थानां, निर्वृत्तज्ञानदर्शने केवलिनः।२१७
१८५ चारित्रमोहनीयेन हसनं, दर्शनावरणीयेन निद्रादि । २१८
१८६ योनितो गर्भे संहरणम् । २१९
१८७ अतिमुक्तकाधिकारः, पतद्ग्रहवाहनं, अग्लान्या वैयावृत्त्योपदेशः। ,,
१८८ महाशुक्रीयदेवकृतो मनसा वीरशिष्यसिद्धिप्रश्नः, गौतमजिज्ञासा, वीराज्ञया गौतमदेवप्रश्नोत्तरे । २२१
१८९ नोसंयता देवाः । २२१
१९० देवानामर्द्धमागधी भाषा । ,,
१९१-९६ केवलितच्छद्म-वकादेरन्तकृत्त्वनिर्णयः १९१, चतुष्प्रमाणातिदेशः १९२, केवल्यादेश्चरमकर्मादिज्ञानं १९३, प्रणीतमनोवाग्ज्ञानं वैमानिकानाम् १९४, केवल्यनुत्तरयोरालापादि मनोज्ञानं च १९५, उपशान्तमोहा अनुत्तरोपपातिनः १९६ । २२३
१९७-९९ निर्वृत्तज्ञानानां नादानैः प्रयोजनम् १९७, एतद्भविष्यत्समययोर्न समप्रदेशेषु हस्ताद्यवगाहः १९८, चतुर्दशपूर्विकृतोत्करिकाभिन्नघटसहस्रादिदर्शनं १९९ । २२४
॥ पञ्चमे चतुर्थः ॥
२००-२ न छद्मस्थस्य केवलसंयमादीत्याद्यतिदेशः । २००, एवंभूतवेदनानिरासः २०१, कुलकरादिस्वरूपातिदेशः २०२ । २२५

बृहत्क्रमः॥ ॥१०८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१०९॥

॥ पञ्चमे पञ्चमः ॥

२०३ अल्पदीर्घाशुभशुभदीर्घायुःकारणानि । २२८

२०४ भाण्डापहारादऽगमक्रयविक्रयोपनयादिषुक्रिया, अधुनोज्ज्वलिताग्नौ महाकर्मता । २२९

२०५-२०६ ऊर्ध्वगतेषुणा हिंसायां क्रियापञ्चकम् २०५, तस्येषोः पतने हिंसायां चतुरादिक्रियाविचारः २०६ । २३०

२०७-९ चतुष्पञ्चयोजनशतान्याकुलाः नरकाः, न नरलोकाः २०७, नारकवैक्रियातिदेशः २०८, आधाकर्मादिनवद्यचिन्तकादेर्नाराधना २०९ । २३१

२१०-११ आचार्यस्य त्रयो भवाः २१०, अभ्याख्यानकर्म २११ । २३२

॥ पञ्चमे षष्ठः ॥

२१२-१३ परमाणुजात्वेजनादि, द्विप्रदेशिकादिदेशैजनादि २१२, अनन्तप्रदेशिकस्यैव छेदभेदार्द्रत्वविघातादि २१३ । २३३

२१४ परमाण्वादेः सार्द्धमध्यप्रदेशादिप्रश्नः । ,,

२१५ परमाण्वादेः देशसर्वस्पर्शना । २३४

२१६ परमाण्वादेः स्थितिसैजनिरेजत्वगुणपरिणामप्रश्नः, शब्दाशब्दपरिणामकालप्रश्नः । २३५

२१७-३५ द्रव्यक्षेत्रावगाहनभावस्थित्यल्पबहुत्वम्, (खण्डषट्त्रिंशिका) । २३७

२१८ नारकतिर्यग्नरदेवानामारम्भपरिग्रहौ । २३८

२१९ हेत्वहेतुज्ञानाज्ञानादि । २३९

॥ पञ्चमे सप्तमः ॥

२२० पुद्गलसार्द्धनार्द्धादिप्रश्नोत्तरे, नारदनिर्ग्रन्थीपुत्रयोः । (पुद्गलषट्त्रिंशिका) । २४४

२२१ जीवनरकसप्तकादिवृद्धिहानिकालसोपचयादितत्कालनिरूपणम् २४६

॥ पञ्चमेऽष्टमः ॥

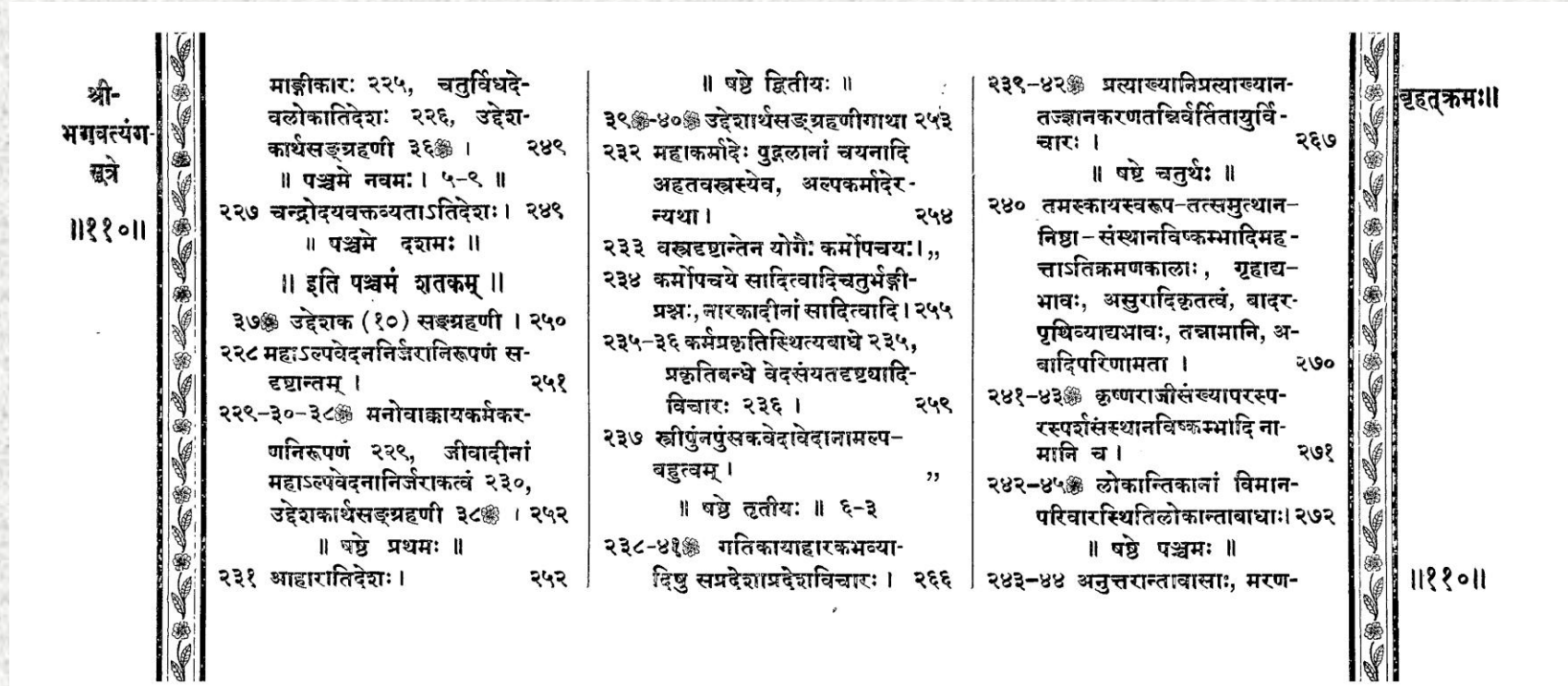
२२२ पृथिव्यबाधे राजगृहता । २४६

२२३-२२४ नारकासुरादीनामन्धकारोद्योतकारकाः । २२३, नारकाणां न समयादिव्यवहारः २२४ । २४७

२२५-२६-३६ पार्श्वापत्यस्थविरागे पार्श्वनाथवचःसंवादेन लोकासङ्ख्यत्वनिर्णयः पञ्चया-

बृहत्क्रमः॥

॥१०९॥



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११०॥

माङ्गीकारः २२५, चतुर्विधदेवलोकातिदेशः २२६, उद्देशकार्थसङ्ग्रहणी ३६ । २४९
॥ पञ्चमे नवमः । ५-९ ॥
२२७ चन्द्रोदयवक्तव्यताऽतिदेशः । २४९
॥ पञ्चमे दशमः ॥
॥ इति पञ्चमं शतकम् ॥
३७ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी । २५०
२२८ महाऽल्पवेदननिर्जरालिरूपणं सदृष्टान्तम् । २५१
२२९-३०-३८ मनोवाक्कायकर्मकरणनिरूपणं २२९, जीवादीनां महाऽल्पवेदनानिर्जराकत्वं २३०, उद्देशकार्थसङ्ग्रहणी ३८ । २५२
॥ षष्ठे प्रथमः ॥
२३१ आहारातिदेशः । २५२
॥ षष्ठे द्वितीयः ॥
३९-४० उद्देशार्थसङ्ग्रहणीगाथा २५३
२३२ महाकर्मादेः पुद्गलानां चयनादि अहतवस्त्रस्येव, अल्पकर्मादेरन्यथा । २५४
२३३ वस्त्रदृष्टान्तेन योगैः कर्मोपचयः । ,,
२३४ कर्मोपचये सादित्वादिचतुर्भङ्गीप्रश्नः, नारकादीनां सादित्वादि । २५५
२३५-३६ कर्मप्रकृतिस्थित्यबाधे २३५, प्रकृतिबन्धे वेदसंयतदृष्टयादिविचारः २३६ । २५९
२३७ स्त्रीपुंनपुंसकवेदावेदानामल्पबहुत्वम् । ,,
॥ षष्ठे तृतीयः ॥ ६-३
२३८-४१ गतिकायाहारकभव्यादिषु सप्रदेशाप्रदेशविचारः । २६६
२३९-४२ प्रत्याख्यानिप्रत्याख्यानतज्ज्ञानकरणतद्विर्वर्तितायुर्विचारः । २६७
॥ षष्ठे चतुर्थः ॥
२४० तमस्कायस्वरूप-तत्समुत्थाननिष्ठा-संस्थानविष्कम्भादिमहत्ताऽतिक्रमणकालाः, गृहाद्यभावः, असुरादिकृतत्वं, बादरपृथिव्याद्यभावः, तन्नामानि, अबादिपरिणामता । २७०
२४१-४३ कृष्णराजीसंख्यापरस्परस्पर्शसंस्थानविष्कम्भादि नामानि च । २७१
२४२-४५ लोकान्तिकानां विमानपरिवारस्थितिलोकान्ताबाधाः । २७२
॥ षष्ठे पञ्चमः ॥
२४३-४४ अनुत्तरान्तावासाः, मरण-

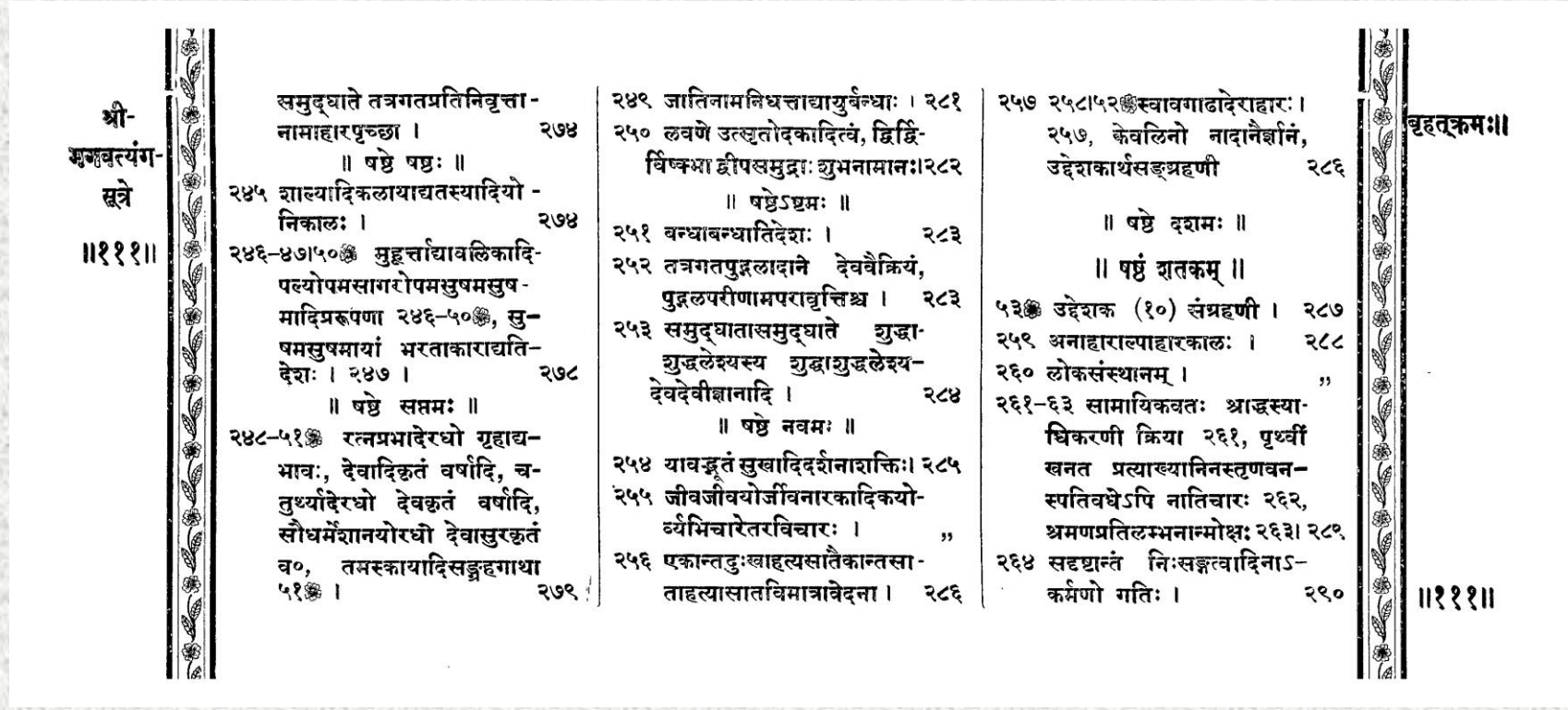
बृहत्क्रमः॥

॥११०॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१११॥

समुद्घाते तत्रगतप्रतिनिवृत्ता-नामाहारपृच्छा । २७४
॥ षष्ठे षष्ठः ॥
२४५ शाल्यादिकलाद्यावतस्यादियो-निकालः । २७४
२४६-४७।५०॒ मुहूर्त्ताद्यावलिकादि-पल्योपमसागरोपमसुषमसुष-मादिप्ररूपणा २४६-५०॒, सु-षमसुषमायां भरताकाराद्यति-देशः । २४७ । २७८
॥ षष्ठे सप्तमः ॥
२४८-५१॒ रत्नप्रभादेरधो गृहाद्य-भावः, देवादिकृतं वर्षादि, च-तुर्थ्यादेरधो देवकृतं वर्षादि, सौधर्मेशानयोरधो देवासुरकृतं व०, तमस्कायादिसङ्ग्रहगाथा ५१॒ । २७९

२४९ जातिनामनिधत्ताद्यायुर्बन्धाः । २८१
२५० लवणे उत्सृतोदकादित्वं, द्विर्द्वि-र्विष्कम्भा द्वीपसमुद्राः शुभनामानः।२८२
॥ षष्ठेऽष्टमः ॥
२५१ बन्धाबन्धातिदेशः । २८३
२५२ तत्रगतपुद्गलादाने देववैक्रियं, पुद्गलपरीणामपरावृत्तिश्च । २८३
२५३ समुद्घातासमुद्घाते शुद्धा-शुद्धलेश्यस्य शुद्धाशुद्धलेश्य-देवदेवीज्ञानादि । २८४
॥ षष्ठे नवमः ॥
२५४ यावद्भूतं सुखादिदर्शनाशक्तिः। २८५
२५५ जीवजीवयोर्जीवनारकादिकयो-र्व्यभिचारेतरविचारः । ,,
२५६ एकान्तदुःखाहत्यसातैकान्तसा-ताहत्यासातविमात्रावेदना । २८६

२५७ २५८।५२॒स्वावगाढादेराहारः। २५७, केवलिनो नादानैर्ज्ञानं, उद्देशकार्थसङ्ग्रहणी २८६
॥ षष्ठे दशमः ॥
॥ षष्ठं शतकम् ॥
५३॒ उद्देशक (१०) संग्रहणी । २८७
२५९ अनाहाराल्पाहारकालः । २८८
२६० लोकसंस्थानम् । ,,
२६१-६३ सामायिकवतः श्राद्धस्या-धिकरणी क्रिया २६१, पृथ्वीं खनत प्रत्याख्यानिनस्तृणवन-स्पतिवधेऽपि नातिचारः २६२, श्रमणप्रतिलम्भनान्मोक्षः २६३। २८९
२६४ सदृष्टान्तं निःसङ्गत्वादिनाऽ-कर्मणो गतिः । २९०

बृहत्क्रमः॥ ॥१११॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥११२॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

२६५ दुःखिनो दुःखस्पर्शादि । २९१
२६६-६८ अनायुक्तगमनादेः साम्परायिकी २६६, साङ्गारधूमादेरर्थः २६७, क्षेत्रकालमार्गप्रमाणातिकान्तानामर्थः २६८ । २६३
२६९ शस्त्रातीतादेरर्थः । २९४
॥ सप्तमे प्रथमः ॥
२७० अज्ञातजीवादेर्वधप्रत्याख्यानं दुष्प्रत्याख्यातत्वादि । २९५
२७१-५४ देशसर्वमूलोत्तरप्रत्याख्यानानि । २९७
२७२ मूलोत्तरप्रत्याख्यान्यप्रत्याख्यान्यल्पबहुत्वम् । २९९
२७३ जीवस्य शाश्वताशाश्वतत्वे । ,,
॥ सप्तमे द्वितीयः ॥
२७४-७६ प्रावृषि बहुः, ग्रीष्मे चाल्पाहारो वनस्पतेः, उष्णयोनिजीवपुद्गलव्युत्क्रमाद् ग्रीष्मे तच्छोभा, २७४, मूलकन्दादीनां पृथिवीमूलादिप्रतिबन्धादाहारादि २७५ आलुकमूलकादीनामनन्तकायता २७६ । ३००
२७७ कृष्णनीलादिलेश्यानां क्रमात्स्थित्यपेक्षया महाकर्मता । ३०१
२७८ वेदनं कर्मणः, निर्जरा नोकर्मणः, भिन्नकर्मता न वेदननिर्जरयोः । ३०२
२७९ नारकादेः शाश्वताशाश्वतत्वे । ,,
॥ सप्तमे तृतीयः ॥
२८०-५५ षड्विधसंसारसमापन्नजीवाद्यतिदेशः । ३०३
॥ सप्तमे चतुर्थः ॥
२८१-५६ योनिसङ्ग्रहाद्यतिदेशः । ३०३
॥ सप्तमे पञ्चमः ॥
२८२-८५ नारकादेरिहायुःकरणं, उत्पन्नस्यैकान्तदुःखाहत्यसातादि २८२, अनाभोगनिर्वर्त्तिता - युषो जीवाः, २८३, वधादिना कर्कशवेदनीयानि, तद्विरमणेन त्वितराणि २८४, प्राण्यनुकम्पादिभिः सातं, दुःखनादिभिरितरत् २८५ । ३०५
२८६-८७ दुष्षमदुष्षमायां भरतस्याकारप्रत्यवतारः २८६, तत्र मनुष्याणामाकारप्रत्यवतारः २८३। ३०९
॥ सप्तमे षष्ठः ॥
२८८-८९ सकषायिणः संवृतस्यापि साम्परायिकी २८८, कामभोगानां रूपित्वसचित्तत्वादि २८९ । ३११
२९० भोगत्यागान्महापर्यवसानं, प-

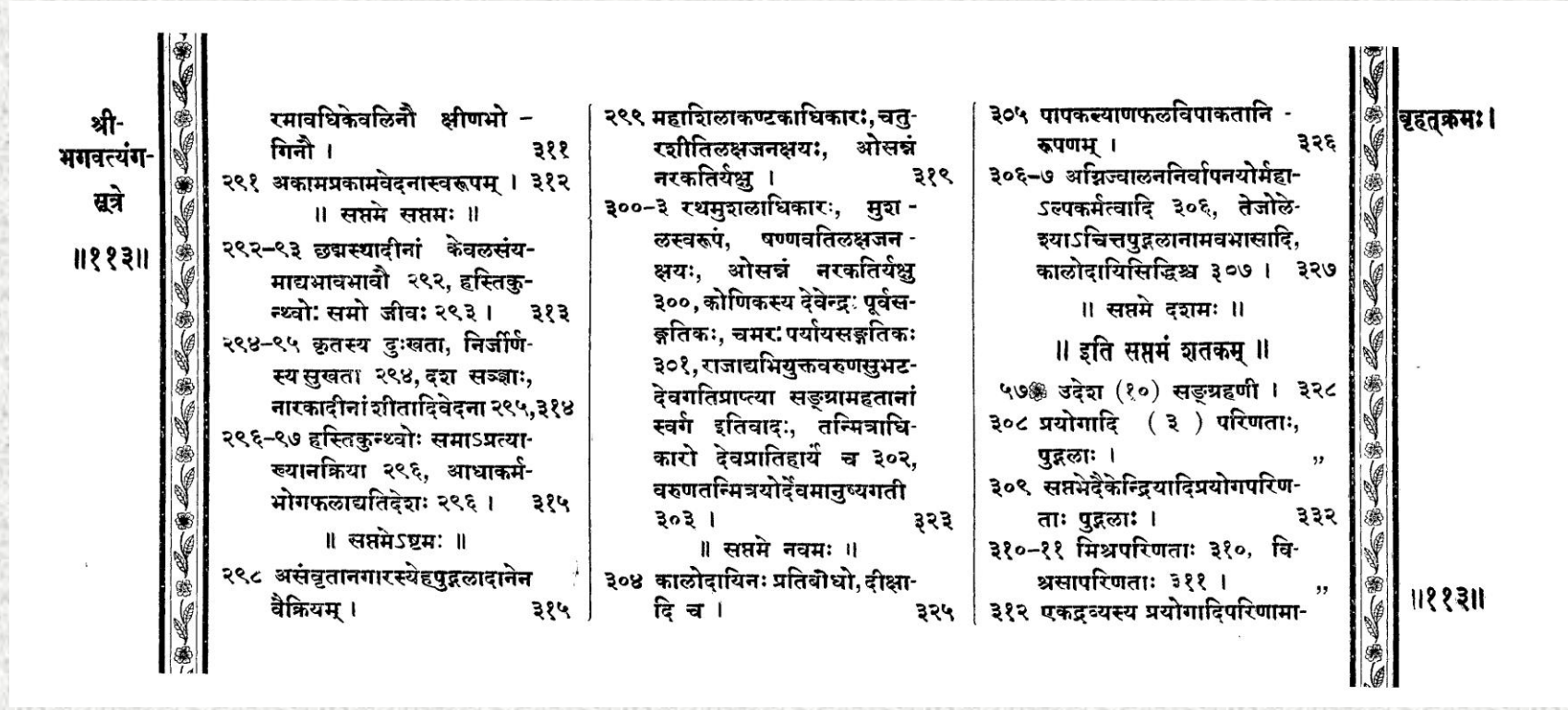
बृहत्क्रमः॥

॥११२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११३॥

रमावधिकेवलिनौ क्षीणभो - गिनौ । ३११
२९१ अकामप्रकामवेदनास्वरूपम् । ३१२
॥ सप्तमे सप्तमः ॥
२९२-९३ छद्मस्थादीनां केवलसंय-माद्यभावभावौ २९२, हस्तिकु-न्थ्वो: समो जीवः २९३ । ३१३
२९४-९५ कृतस्य दु:खता, निर्जीर्ण-स्य सुखता २९४, दश सञ्ज्ञाः, नारकादीनां शीतादिवेदना २९५, ३१४
२९६-९७ हस्तिकुन्थ्वोः समाऽप्रत्या-ख्यानक्रिया २९६, आधाकर्म-भोगफलाद्यतिदेशः २९६ । ३१५
॥ सप्तमेऽष्टमः ॥
२९८ असंवृतानगारस्येहपुद्गलादानेन वैक्रियम् । ३१५
२९९ महाशिलाकण्टकाधिकारः, चतु-रशीतिलक्षजनक्षयः, ओसन्नं नरकतिर्यक्षु । ३१९
३००-३ रथमुशलाधिकारः, मुश-लस्वरूपं, षण्णवतिलक्षजन-क्षयः, ओसन्नं नरकतिर्यक्षु ३००, कोणिकस्य देवेन्द्रः पूर्वस-ङ्गतिकः, चमरः पर्यायसङ्गतिकः ३०१, राजाद्यभियुक्तवरुणसुभट-देवगतिप्राप्त्या सङ्ग्रामहतानां स्वर्ग इतिवादः, तन्मित्राधि-कारो देवप्रातिहार्यं च ३०२, वरुणतन्मित्रयोर्दैवमानुष्यगती ३०३ । ३२३
॥ सप्तमे नवमः ॥
३०४ कालोदायिनः प्रतिबोधो, दीक्षा-दि च । ३२५
३०५ पापकल्याणफलविपाकतानि - रूपणम् । ३२६
३०६-७ अग्निज्वालननिर्वापनयोर्महा-ऽल्पकर्मत्वादि ३०६, तेजोले-श्याऽचित्तपुद्गलानामवभासादि, कालोदायिसिद्धिश्च ३०७ । ३२७
॥ सप्तमे दशमः ॥
॥ इति सप्तमं शतकम् ॥
५७ उदेश (१०) सङ्ग्रहणी । ३२८
३०८ प्रयोगादि (३) परिणताः, पुद्गलाः । ,,
३०९ सप्तभेदैकेन्द्रियादिप्रयोगपरिण-ताः पुद्गलाः । ३३२
३१०-११ मिश्रपरिणताः ३१०, वि-स्रसापरिणताः ३११ । ,,
३१२ एकद्रव्यस्य प्रयोगादिपरिणामा-

बृहत्क्रमः।

॥११३॥

[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-५. "भगवती"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११४॥

रम्भादिविचारः । ३३६
३१३ द्रव्यादिद्रव्याणां प्रयोगादि । ३३९
३१४ प्रयोगादिपरिणतानामल्पबहुत्वम् । ३४०
॥ अष्टमे प्रथमः ॥
३१५ जातिकर्माशीविषनिरूपणम् । ३४२
३१६ छद्मस्थसर्वभावाज्ञेयकेवलिज्ञेयाः । ,,
३१७ आभिनिबोधिकादिज्ञानाज्ञानस्वरूपं, जीवनारकादीनां ज्ञान्यज्ञानित्वादि । ३४५
३१८ गतीन्द्रियादिमार्गणासु ज्ञान्यज्ञानित्वादि । ३४८
३१९ ज्ञानदर्शनादि (१०) लब्ध्यलब्धिषु ज्ञान्यज्ञानिविचारः । (परिहारविशुद्ध्यधिकारः) । ३५४

३२० उपयोगयोगलेश्यावेदाऽऽहारमार्गणासु ज्ञान्यज्ञान्यधिकारः । ३५६
३२१–२२ ज्ञानाज्ञानानां विषयः ३२१, स्थितिपर्यायाल्पबहुत्वं ज्ञानाज्ञानानाम् ३२२ । ३६४
॥ अष्टमे द्वितीयः ॥
३२३ सङ्ख्याऽसङ्ख्याऽनन्तजीविकाः । ३६५
३२४ छिन्नकूर्मादेरन्तरा प्रदेशानां नाबाधादि ,,
३२५ पृथ्व्यादीनां चरमादिरतिदेशेन । ३६६
॥ अष्टमे तृतीयः ॥
३२६ कायिक्यादिक्रियाऽतिदेशः । ३६७
॥ अष्टमे चतुर्थः ॥
३२७ सामायिके ' नो मे हिरण्य–' मित्यादिभावेऽपि ममत्वभावात्तदीयं भाण्डादि । ३६८

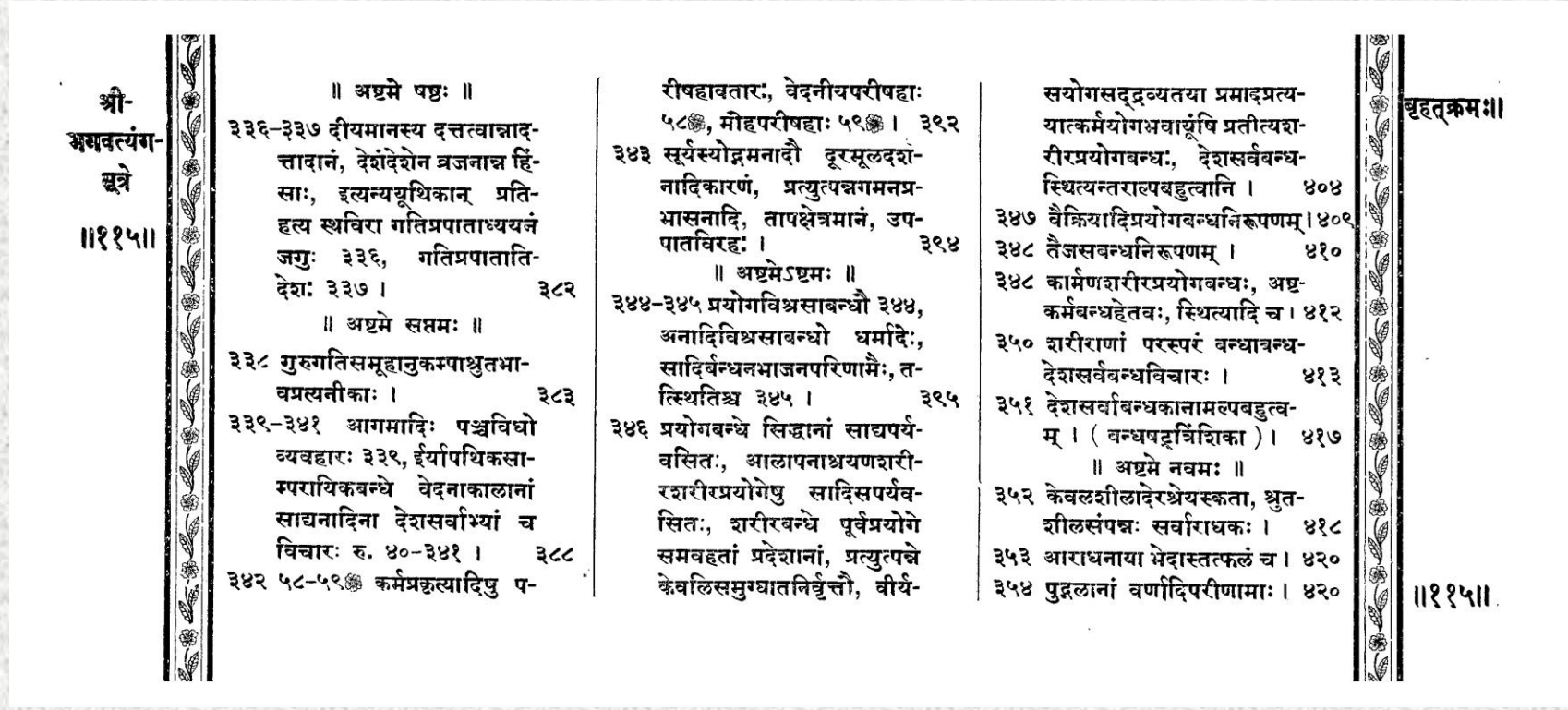
३२८–३० स्थूलप्राणातिपातादौ एकोनपञ्चाशद्भङ्गाः ३२८, 'अक्षीणप्रतिभोजिनः सत्त्वाः' इत्याजीविकमते तालाद्याः, कर्मादानवर्जकास्तु श्रावकाः ३२९, देवलोकातिदेशः ३३० । ३७३
॥ अष्टमे पञ्चमः ॥
३३१ श्रमणादिप्रतिलाभे एकान्तनिर्जरादि । ३७४
३३२ पिण्डप्रतिग्रहादियष्टिसंस्तार – कान्तयावद्दशकनिसन्त्रणं निर्ग्रन्थस्थविरविधिना । ३७५
३३६ अकृत्ये प्राप्त्यप्राप्त्योराराधनाविराधनाऽधिकारः । ३७६
३३४ अन्नेधर्मानं न वर्त्यादेः । ३७६
३३५ औदारिकादिशरीरेभ्यः क्रिया । ३७८

बृहत्क्रमः॥ ॥११४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११५॥

॥ अष्टमे षष्ठः ॥

३३६-३३७ दीयमानस्य दत्तत्वान्नाद-त्तादानं, देशंदेशेन व्रजनान्न हिं-साः, इत्यन्ययूथिकान् प्रति-हत्य स्थविरा गतिप्रपाताध्ययनं जगुः ३३६, गतिप्रपातादि-देशः ३३७ । ३८२

॥ अष्टमे सप्तमः ॥

३३८ गुरुगतिसमूहानुकम्पाश्रुतभा-वप्रत्यनीकाः । ३८३

३३९-३४१ आगमादिः पञ्चविधो व्यवहारः ३३९, ईर्यापथिकसा-म्परायिकबन्धे वेदनाकालानां साद्यनादिना देशसर्वाभ्यां च विचारः रु. ४०-३४१ । ३८८

३४२ ५८-५९ कर्मप्रकृत्यादिषु प-रीषहावतारः, वेदनीयपरीषहाः ५८, मोहपरीषहाः ५९ । ३९२

३४३ सूर्यस्योद्गमनादौ दूरमूलदर्श-नादिकारणं, प्रत्युत्पन्नगमनप्र-भासनादि, तापक्षेत्रमानं, उप-पातविरहः । ३९४

॥ अष्टमेऽष्टमः ॥

३४४-३४५ प्रयोगविश्रसाबन्धौ ३४४, अनादिविश्रसाबन्धो धर्मादेः, सादिर्बन्धनभाजनपरिणामैः, त-स्थितिश्च ३४५ । ३९५

३४६ प्रयोगबन्धे सिद्धानां साद्यपर्य-वसितः, आलापनाश्रयणशरी-रशरीरप्रयोगेषु सादिसपर्यव-सितः, शरीरबन्धे पूर्वप्रयोगे समवहतां प्रदेशानां, प्रत्युत्पन्ने केवलिसमुद्घातनिर्वृत्तौ, वीर्य-सयोगसद्द्रव्यतया प्रमादप्रत्य-यात्कर्मयोगश्चवायूंषि प्रतीत्यश-रीरप्रयोगबन्धः, देशसर्वबन्ध-स्थित्यन्तराल्पबहुत्वानि । ४०४

३४७ वैक्रियादिप्रयोगबन्धनिरूपणम् । ४०९

३४८ तैजसबन्धनिरूपणम् । ४१०

३४८ कार्मणशरीरप्रयोगबन्धः, अष्ट-कर्मबन्धहेतवः, स्थित्यादि च । ४१२

३५० शरीराणां परस्परं बन्धाबन्ध-देशसर्वबन्धविचारः । ४१३

३५१ देशसर्वाबन्धकानामल्पबहुत्व-म् । (बन्धषट्त्रिंशिका) । ४१७

॥ अष्टमे नवमः ॥

३५२ केवलशीलादेरश्रेयस्कता, श्रुत-शीलसंपन्नः सर्वाराधकः । ४१८

३५३ आराधनाया भेदास्तत्फलं च । ४२०

३५४ पुद्गलानां वर्णादिपरीणामाः । ४२०

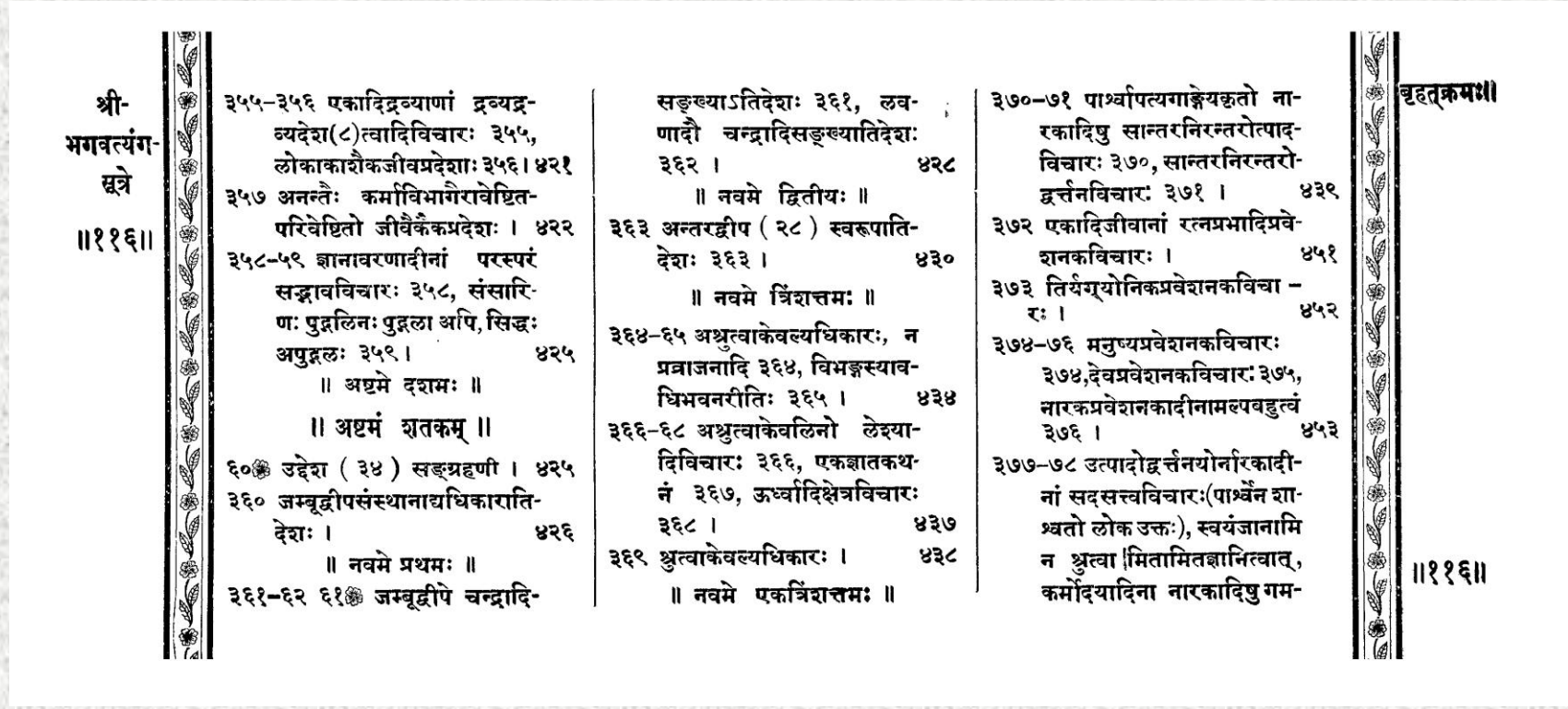
बृहत्क्रमः॥

॥११५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११६॥

३५५-३५६ एकादिद्रव्याणां द्रव्यद्रव्यदेश(८)त्वादिविचारः ३५५, लोकाकाशैकजीवप्रदेशाः ३५६। ४२१
३५७ अनन्तैः कर्मविभागैरावेष्टित-परिवेष्टितो जीवैकैकप्रदेशः । ४२२
३५८-५९ ज्ञानावरणादीनां परस्परं सद्भावविचारः ३५८, संसारिणः पुद्गलिनः पुद्गला अपि, सिद्धः अपुद्गलः ३५९। ४२५
॥ अष्टमे दशमः ॥
॥ अष्टमं शतकम् ॥
६०॰ उद्देश (३४) सङ्ग्रहणी । ४२५
३६० जम्बूद्वीपसंस्थानाद्यधिकारातिदेशः । ४२६
॥ नवमे प्रथमः ॥
३६१-६२ ६१॰ जम्बूद्वीपे चन्द्रादिसङ्ख्याऽतिदेशः ३६१, लवणादौ चन्द्रादिसङ्ख्यातिदेशः ३६२ । ४२८
॥ नवमे द्वितीयः ॥
३६३ अन्तरद्वीप (२८) स्वरूपातिदेशः ३६३ । ४३०
॥ नवमे त्रिंशत्तमः ॥
३६४-६५ अश्रुत्वाकेवल्यधिकारः, न प्रव्राजनादि ३६४, विभङ्गस्यावधिभवनरीतिः ३६५ । ४३४
३६६-६८ अश्रुत्वाकेवलिनो लेश्यादिविचारः ३६६, एकज्ञातकथनं ३६७, ऊर्ध्वादिक्षेत्रविचारः ३६८ । ४३७
३६९ श्रुत्वाकेवल्यधिकारः । ४३८
॥ नवमे एकत्रिंशत्तमः ॥
३७०-७१ पार्श्वापत्यगाङ्गेयकृतो नारकादिषु सान्तरनिरन्तरोत्पादविचारः ३७०, सान्तरनिरन्तरोद्वर्त्तनविचारः ३७१ । ४३९
३७२ एकादिजीवानां रत्नप्रभादिप्रवेशनकविचारः । ४५१
३७३ तिर्यग्योनिकप्रवेशनकविचारः । ४५२
३७४-७६ मनुष्यप्रवेशनकविचारः ३७४, देवप्रवेशनकविचारः ३७५, नारकप्रवेशनकादीनामल्पबहुत्वं ३७६ । ४५३
३७७-७८ उत्पादोद्वर्त्तनयोर्नारकादीनां सदसत्त्वविचारः(पार्श्वेन शाश्वतो लोक उक्तः), स्वयंजानामि न श्रुत्वा |मितामितज्ञानित्वात्, कर्मोदयादिना नारकादिषु गम-

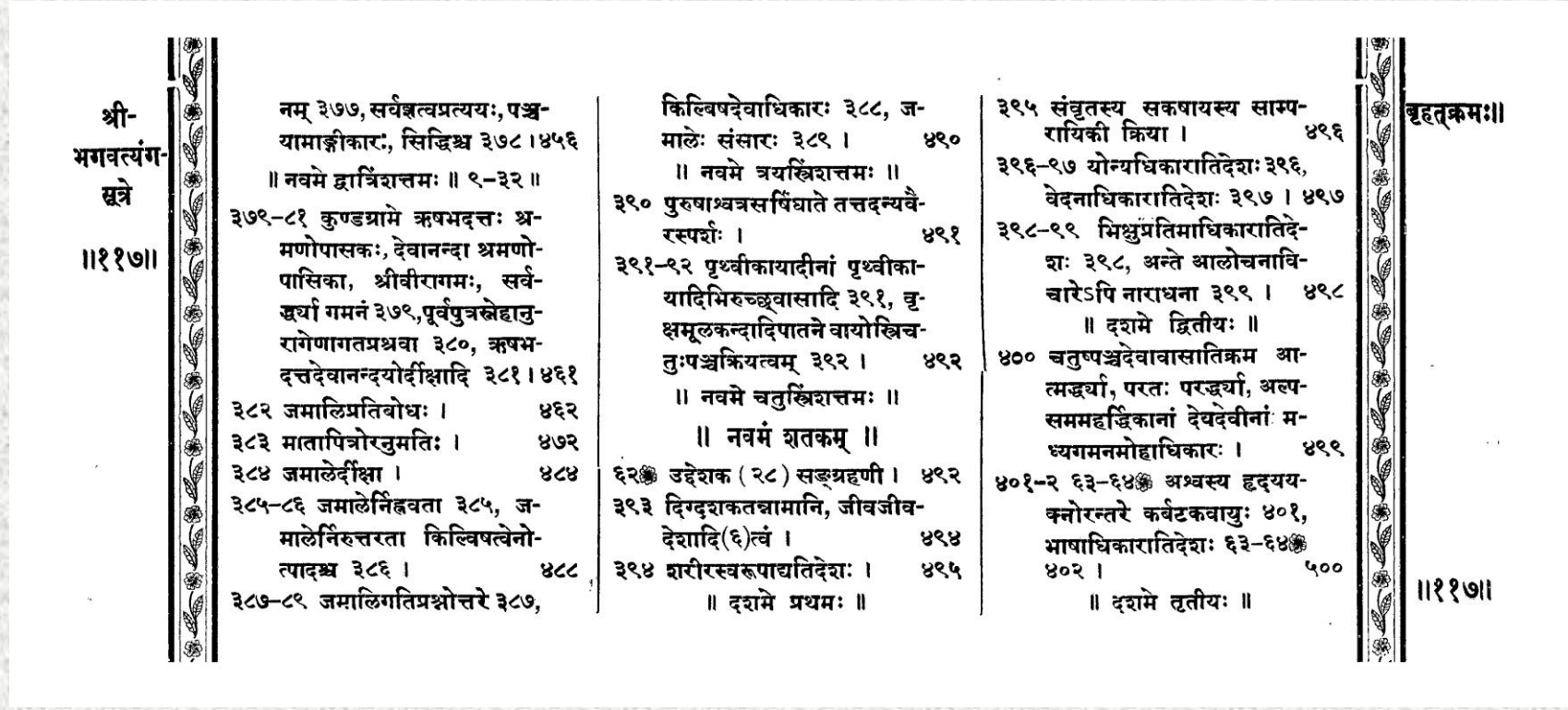
बृहत्क्रमः॥

॥११६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११७॥

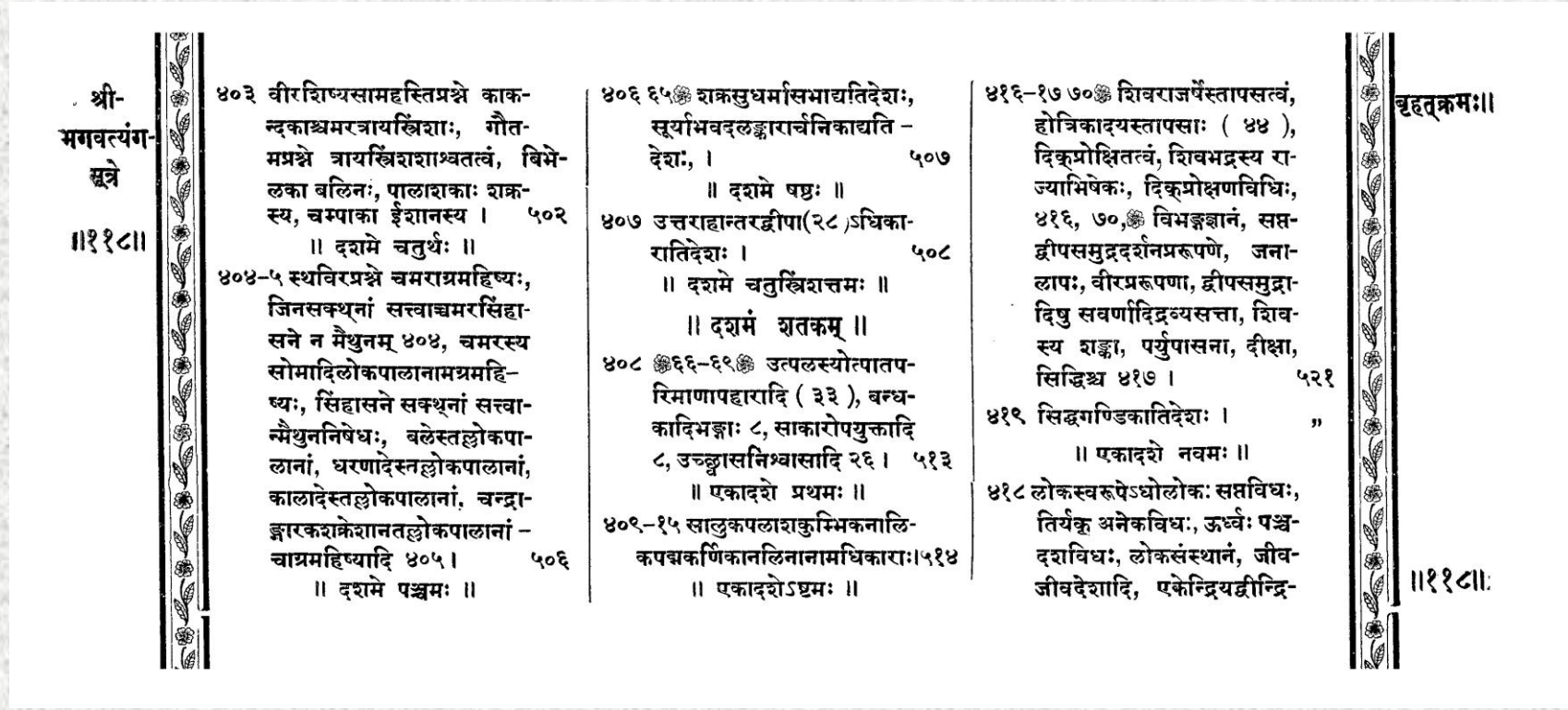
नम् ३७७, सर्वज्ञत्वप्रत्ययः, पञ्चयामाङ्गीकारः, सिद्धिश्च ३७८ । ४५६
॥ नवमे द्वात्रिंशत्तमः ॥ ९-३२ ॥
३७९-८१ कुण्डग्रामे ऋषभदत्तः श्रमणोपासकः, देवानन्दा श्रमणोपासिका, श्रीवीरागमः, सर्वऋद्ध्या गमनं ३७९, पूर्वपुत्रस्नेहानुरागेणागतप्रश्रवा ३८०, ऋषभदत्तदेवानन्दयोर्दीक्षादि ३८१ । ४६१
३८२ जमालिप्रतिबोधः । ४६२
३८३ मातापित्रोरनुमतिः । ४७२
३८४ जमालेर्दीक्षा । ४८४
३८५-८६ जमालेर्निह्नवता ३८५, जमालेर्निरुत्तरता किल्विषत्वेनोत्पादश्च ३८६ । ४८८
३८७-८९ जमालिगतिप्रश्नोत्तरे ३८७, किल्विषदेवाधिकारः ३८८, जमालेः संसारः ३८९ । ४९०
॥ नवमे त्रयस्त्रिंशत्तमः ॥
३९० पुरुषाश्वत्रसपिंघाते तत्तदन्यवैरस्पर्शः । ४९१
३९१-९२ पृथ्वीकायादीनां पृथ्वीकायादिभिरुच्छ्वासादि ३९१, वृक्षमूलकन्दादिपातने वायोस्त्रिचतुःपञ्चक्रियत्वम् ३९२ । ४९२
॥ नवमे चतुस्त्रिंशत्तमः ॥
॥ नवमं शतकम् ॥
६२ उद्देशक (२८) सङ्ग्रहणी । ४९२
३९३ दिग्दशकतन्नामानि, जीवजीवदेशादि(६)त्वं । ४९४
३९४ शरीरस्वरूपाद्यतिदेशः । ४९५
॥ दशमे प्रथमः ॥
३९५ संवृतस्य सकषायस्य साम्परायिकी क्रिया । ४९६
३९६-९७ योन्यधिकारातिदेशः ३९६, वेदनाधिकारातिदेशः ३९७ । ४९७
३९८-९९ भिक्षुप्रतिमाधिकारातिदेशः ३९८, अन्ते आलोचनाविचारेऽपि नाराधना ३९९ । ४९८
॥ दशमे द्वितीयः ॥
४०० चतुष्पञ्चदेवावासातिक्रम आत्मर्द्ध्या, परतः परर्द्ध्या, अल्पसममहर्द्धिकानां देवदेवीनां मध्यगमनमोहाधिकारः । ४९९
४०१-२ ६३-६४ अश्वस्य हृदयवक्नोरन्तरे कर्बटकवायुः ४०१, भाषाधिकारातिदेशः ६३-६४ ४०२ । ५००
॥ दशमे तृतीयः ॥

बृहत्क्रमः॥ ॥११७॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११८॥

४०३ वीरशिष्यसामहस्तिप्रश्ने काकन्दकाश्चमरत्रायस्त्रिंशाः, गौतमप्रश्ने त्रायस्त्रिंशशाश्वतत्वं, बिभेलका बलिनः, पालाशकाः शक्रस्य, चम्पाका ईशानस्य । ५०२
॥ दशमे चतुर्थः ॥

४०४-५ स्थविरप्रश्ने चमराग्रमहिष्यः, जिनसक्थ्नां सत्त्वाच्चमरसिंहासने न मैथुनम् ४०४, चमरस्य सोमादिलोकपालानामग्रमहिष्यः, सिंहासने सक्थ्नां सत्त्वान्मैथुननिषेधः, बलेस्तल्लोकपालानां, धरणादेस्तल्लोकपालानां, कालादेस्तल्लोकपालानां, चन्द्राङ्गारकशक्रेशानतल्लोकपालानां - चाग्रमहिष्यादि ४०५। ५०६
॥ दशमे पञ्चमः ॥

४०६ ६५ शक्रसुधर्मासभाद्यतिदेशः, सूर्याभवदलङ्कारार्चनिकाद्यति - देशः, । ५०७
॥ दशमे षष्ठः ॥

४०७ उत्तराहान्तरद्वीपा(२८)ऽधिकारातिदेशः । ५०८
॥ दशमे चतुस्त्रिंशत्तमः ॥

॥ दशमं शतकम् ॥

४०८ ६६-६९ उत्पलस्योत्पातपरिमाणापहारादि (३३), बन्धकादिभङ्गाः ८, साकारोपयुक्तादि ८, उच्छ्वासनिश्वासादि २६। ५१३
॥ एकादशे प्रथमः ॥

४०९-१५ सालुकपलाशकुम्भिकनालिकपद्मकर्णिकानलिनानामधिकाराः।५१४
॥ एकादशेऽष्टमः ॥

४१६-१७ ७० शिवराजर्षेस्तापसत्वं, होत्रिकादयस्तापसाः (४४), दिक्प्रोक्षितत्वं, शिवभद्रस्य राज्याभिषेकः, दिक्प्रोक्षणविधिः, ४१६, ७०, विभङ्गज्ञानं, सप्तद्वीपसमुद्रदर्शनप्ररूपणे, जनालापः, वीरप्ररूपणा, द्वीपसमुद्रादिषु सवर्णादिद्रव्यसत्ता, शिवस्य शङ्का, पर्युपासना, दीक्षा, सिद्धिश्च ४१७ । ५२१

४१९ सिद्धगण्डिकातिदेशः । ,,
॥ एकादशे नवमः ॥

४१८ लोकस्वरूपेऽधोलोकः सप्तविधः, तिर्यक् अनेकविधः, ऊर्ध्वः पञ्चदशविधः, लोकसंस्थानं, जीवाजीवदेशादि, एकेन्द्रियद्वीन्द्रि-

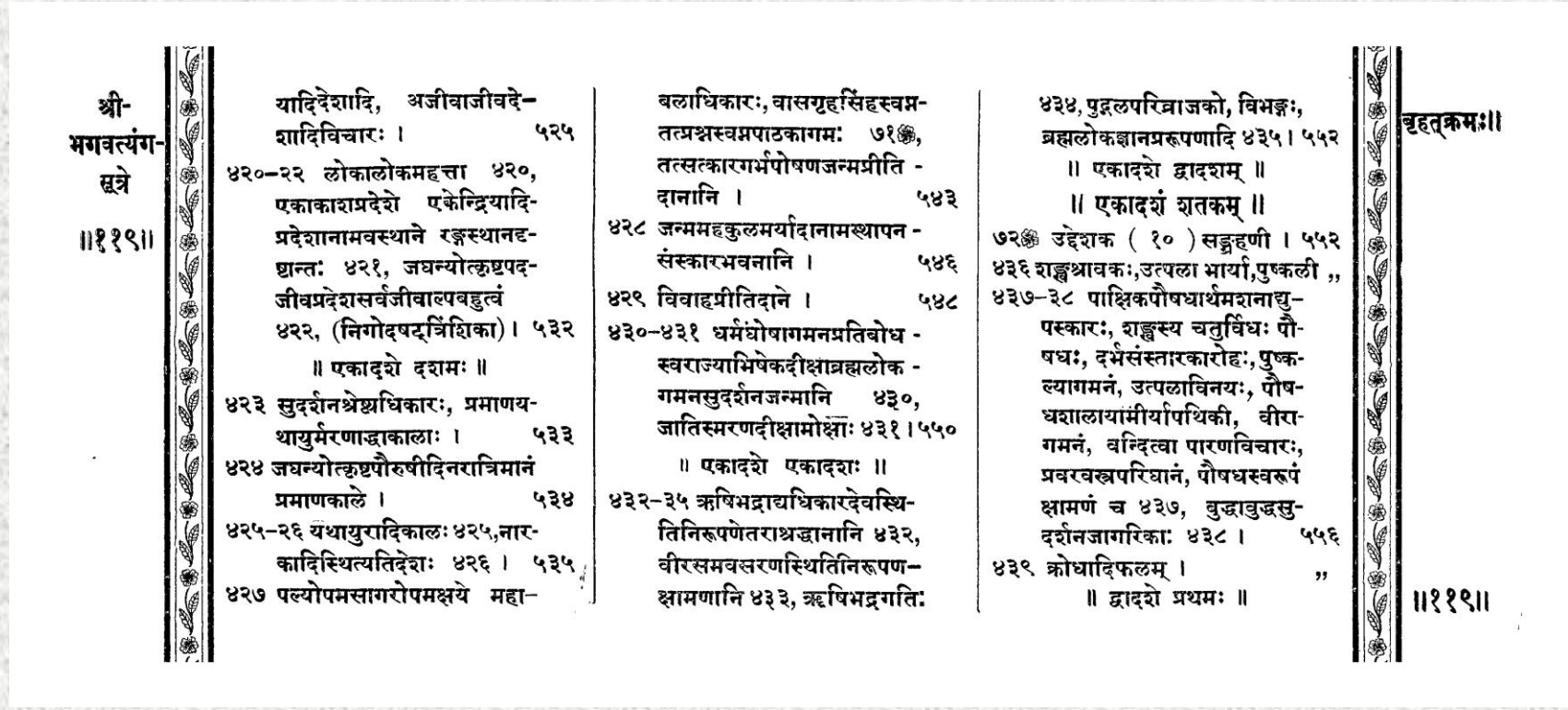
बृहत्क्रमः॥

॥११८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥११९॥

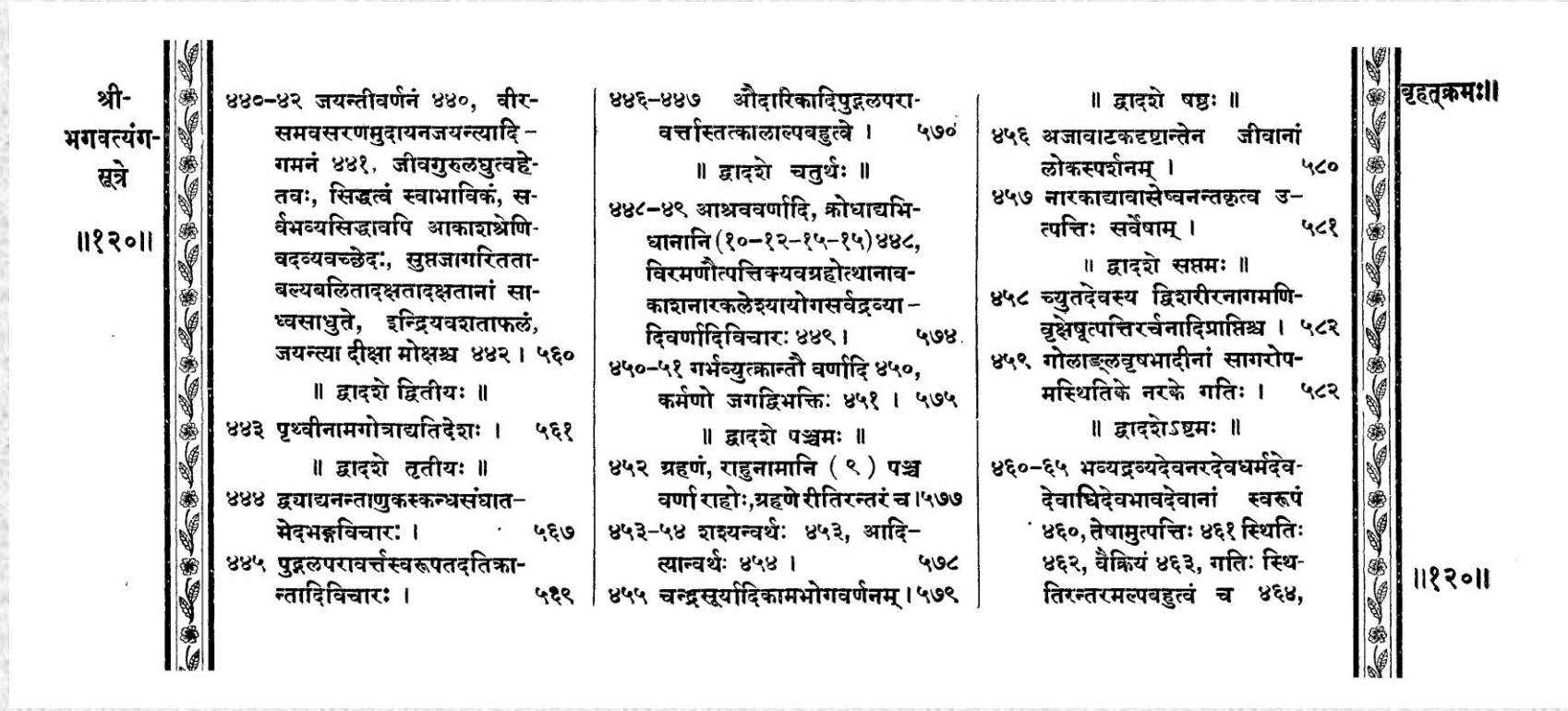
यादिदेशादि, अजीवाजीवदे-शादिविचारः । ५२५
४२०-२२ लोकालोकमहत्ता ४२०, एकाकाशप्रदेशे एकेन्द्रियादि-प्रदेशानामवस्थाने रज्ज्वस्थानद्दष्टान्तः ४२१, जघन्योत्कृष्टपद-जीवप्रदेशसर्वजीवाल्पबहुत्वं ४२२, (निगोदषट्त्रिंशिका)। ५३२
॥ एकादशे दशमः ॥
४२३ सुदर्शनश्रेष्ठ्यधिकारः, प्रमाणय-थायुर्मरणाद्धाकालाः । ५३३
४२४ जघन्योत्कृष्टपौरुषीदिनरात्रिमानं प्रमाणकाले । ५३४
४२५-२६ यथायुरादिकालः ४२५, नार-कादिस्थित्यतिदेशः ४२६ । ५३५
४२७ पल्योपमसागरोपमक्षये महा-बलाधिकारः, वासगृहसिंहस्वप्न-तत्प्रश्नस्वप्नपाठकागमः ७१, तत्सत्कारगर्भपोषणजन्मप्रीति-दानानि । ५४३
४२८ जन्ममहकुलमर्यादानामस्थापन-संस्कारभवनानि । ५४६
४२९ विवाहप्रीतिदाने । ५४८
४३०-४३१ धर्मघोषागमनप्रतिबोध-स्वराज्याभिषेकदीक्षाब्रह्मलोक-गमनसुदर्शनजन्मानि ४३०, जातिस्मरणदीक्षामोक्षाः ४३१ । ५५०
॥ एकादशे एकादशः ॥
४३२-३५ ऋषिभद्राद्यधिकारदेवस्थि-तिनिरूपणेतराध्ययनानि ४३२, वीरसमवसरणस्थितिनिरूपण-क्षामणानि ४३३, ऋषिभद्रगतिः ४३४, पुद्गलपरिव्राजको, विभङ्गः, ब्रह्मलोकज्ञानप्ररूपणादि ४३५ । ५५२
॥ एकादशे द्वादशम् ॥
॥ एकादशं शतकम् ॥
७२ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी । ५५२
४३६ शङ्खश्रावकः, उत्पला भार्या, पुष्कली ,,
४३७-३८ पाक्षिकपौषधार्थमशनाद्यु-पस्कारः, शङ्खस्य चतुर्विधः पौ-षधः, दर्भसंस्तारकारोहः, पुष्क-ल्यागमनं, उत्पलाविनयः, पौष-धशालायामीर्यापथिकी, वीरा-गमनं, वन्दित्वा पारणविचारः, प्रवरवस्त्रपरिधानं, पौषधस्वरूपं क्षामणं च ४३७, बुद्धावुद्धसु-दर्शनजागरिकाः ४३८ । ५५६
४३९ क्रोधादिफलम् । ,,
॥ द्वादशे प्रथमः ॥

बृहत्क्रमः॥ ॥११९॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२०॥

४४०-४२ जयन्तीवर्णनं ४४०, वीर-समवसरणमुदायनजयन्त्यादि-गमनं ४४१, जीवगुरुलघुत्वहेतवः, सिद्धत्वं स्वाभाविकं, सर्वभव्यसिद्धावपि आकाशश्रेणिवदव्यवच्छेदः, सुप्तजागरितताबल्यबलितादक्षतादक्षतानां साध्वसाधुते, इन्द्रियवशताफलं, जयन्त्या दीक्षा मोक्षश्च ४४२। ५६०

॥ द्वादशे द्वितीयः ॥

४४३ पृथ्वीनामगोत्राद्यतिदेशः। ५६१

॥ द्वादशे तृतीयः ॥

४४४ द्व्याद्यनन्ताणुकस्कन्धसंघात-भेदभङ्गविचारः। ५६७

४४५ पुद्गलपरावर्त्तस्वरूपतदतिक्रान्तादिविचारः। ५६९

४४६-४४७ औदारिकादिपुद्गलपरावर्त्तास्तत्कालाल्पबहुत्वे। ५७०

॥ द्वादशे चतुर्थः ॥

४४८-४९ आश्रववर्णादि, क्रोधाद्यभिधानानि (१०-१२-१५-१५) ४४८, विरमणौत्पत्तिकयवग्रहोत्थानावकाशनारकलेश्यायोगसर्वद्रव्यादिवर्णादिविचारः ४४९। ५७४

४५०-५१ गर्भव्युत्क्रान्तौ वर्णादि ४५०, कर्मणो जगद्विभक्तिः ४५१। ५७५

॥ द्वादशे पञ्चमः ॥

४५२ ग्रहणं, राहुनामानि (९) पञ्च वर्णा राहोः, ग्रहणे रीतिरन्तरं च। ५७७

४५३-५४ शश्वन्नित्यार्थः ४५३, आदित्यान्वर्थः ४५४। ५७८

४५५ चन्द्रसूर्यादिकामभोगवर्णनम्। ५७९

॥ द्वादशे षष्ठः ॥

४५६ अजावाटकदृष्टान्तेन जीवानां लोकस्पर्शनम्। ५८०

४५७ नारकाद्यावासेष्वनन्तकृत्व उत्पत्तिः सर्वेषाम्। ५८१

॥ द्वादशे सप्तमः ॥

४५८ च्युतदेवस्य द्विशरीरनागमणिवृक्षेषूत्पत्तिरर्चनादिप्राप्तिश्च। ५८२

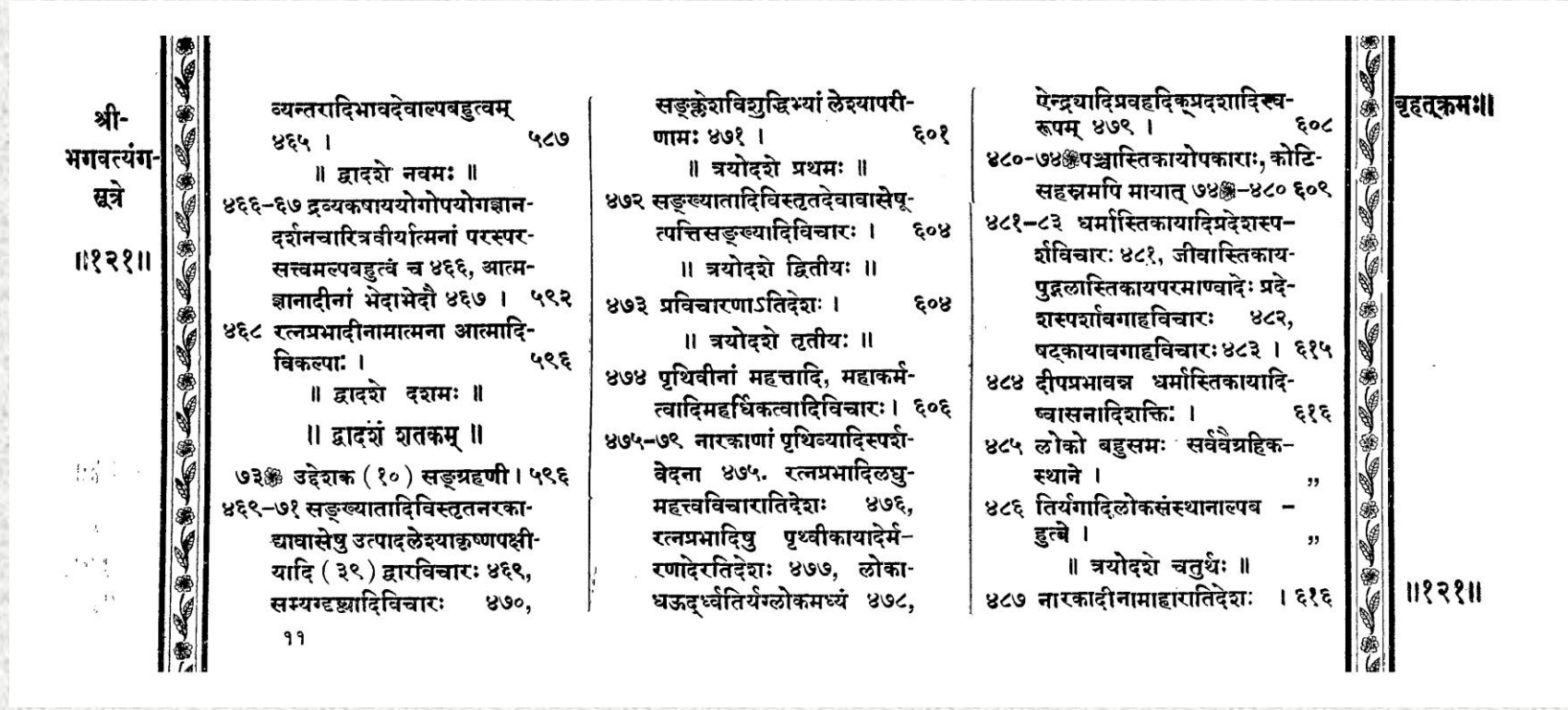
४५९ गोलाङ्गूलवृषभादीनां सागरोपमस्थितिके नरके गतिः। ५८२

॥ द्वादशेऽष्टमः ॥

४६०-६५ भव्यद्रव्यदेवनरदेवधर्मदेवदेवाधिदेवभावदेवानां स्वरूपं ४६०, तेषामुत्पत्तिः ४६१ स्थितिः ४६२, वैक्रियं ४६३, गतिः स्थितिरन्तरमल्पबहुत्वं च ४६४,

बृहत्क्रमः॥

॥१२०॥



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२१॥

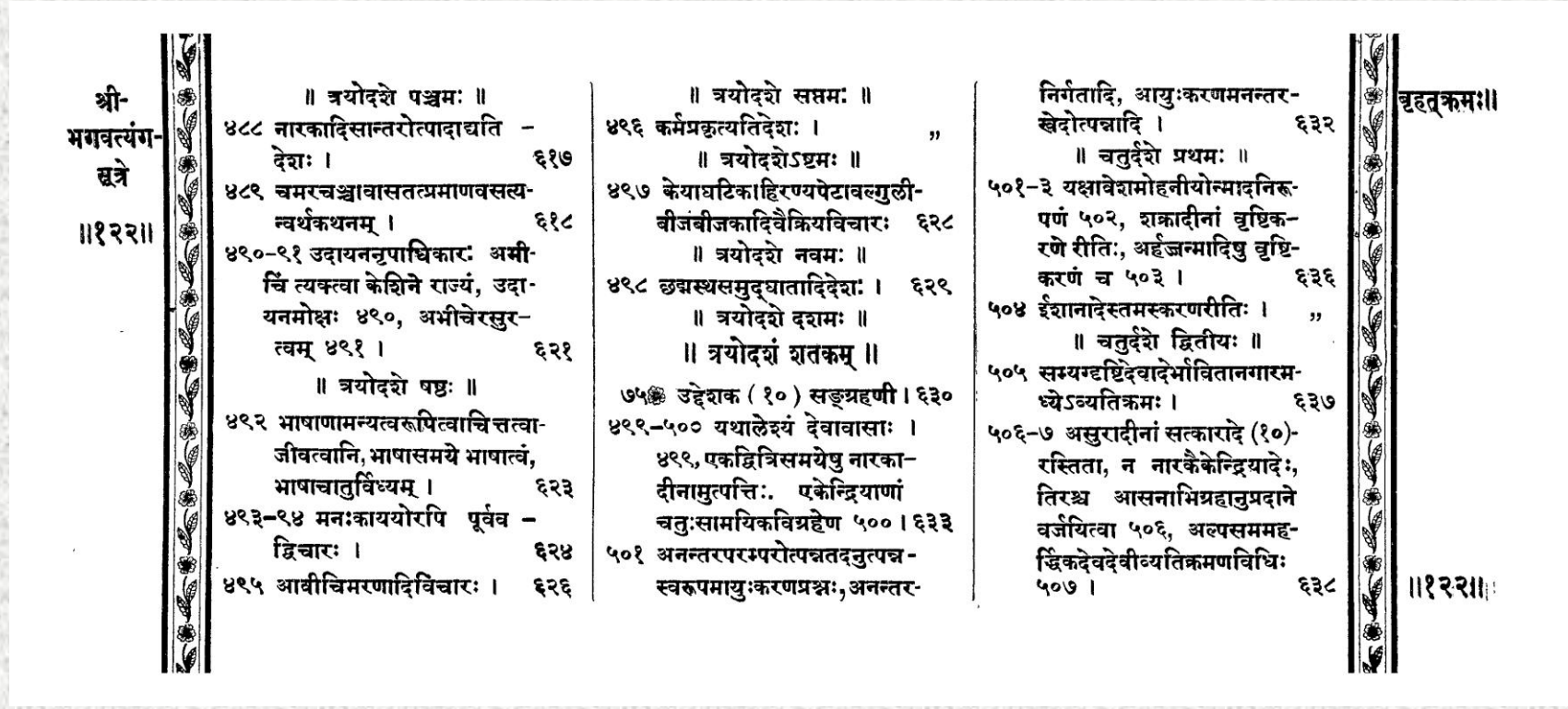
व्यन्तरादिभावदेवाल्पबहुत्वम् ४६५ । ५८७
॥ द्वादशे नवमः ॥
४६६-६७ द्रव्यकषाययोगोपयोगज्ञान-दर्शनचारित्रवीर्यात्मनां परस्पर-सत्त्वमल्पबहुत्वं च ४६६, आत्म-ज्ञानादीनां भेदाभेदौ ४६७ । ५९२
४६८ रत्नप्रभादीनामात्मना आत्मादि-विकल्पाः । ५९६
॥ द्वादशे दशमः ॥
॥ द्वादशं शतकम् ॥
७३ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी । ५९६
४६९-७१ सङ्ख्यातादिविस्तृतनरका-द्यावासेषु उत्पादलेश्याकृष्णपक्षी-यादि (३९) द्वारविचारः ४६९, सम्यग्दृष्ट्यादिविचारः ४७०,
सङ्क्लेशविशुद्धिभ्यां लेश्यापरी-णामः ४७१ । ६०१
॥ त्रयोदशे प्रथमः ॥
४७२ सङ्ख्यातादिविस्तृतदेवावासेषू-त्पत्तिसङ्ख्यादिविचारः । ६०४
॥ त्रयोदशे द्वितीयः ॥
४७३ प्रविचारणाऽतिदेशः । ६०४
॥ त्रयोदशे तृतीयः ॥
४७४ पृथिवीनां महत्तादि, महाकर्म-त्वादिमहर्धिकत्वादिविचारः । ६०६
४७५-७९ नारकाणां पृथिव्यादिस्पर्श-वेदना ४७५. रत्नप्रभादिलघु-महत्त्वविचारातिदेशः ४७६, रत्नप्रभादिषु पृथ्वीकायादेर्म-रणादेरतिदेशः ४७७, लोका-धऊर्ध्वतिर्यग्लोकमध्यं ४७८,
ऐन्द्र्यादिप्रवहदिक्प्रदशादिस्व-रूपम् ४७९ । ६०८
४८०-७४ पञ्चास्तिकायोपकाराः, कोटि-सहस्रमपि मायात् ७४-४८० ६०९
४८१-८३ धर्मास्तिकायादिप्रदेशस्प-र्शविचारः ४८१, जीवास्तिकाय-पुद्गलास्तिकायपरमाण्वादेः प्रदे-शस्पर्शावगाहविचारः ४८२, षट्कायावगाहविचारः ४८३ । ६१५
४८४ दीपप्रभावन्न धर्मास्तिकायादि-ष्वासनादिशक्तिः । ६१६
४८५ लोको बहुसमः सर्ववैग्रहिक-स्थाने । ,,
४८६ तिर्यगादिलोकसंस्थानाल्पब-हुत्वे । ,,
॥ त्रयोदशे चतुर्थः ॥
४८७ नारकादीनामाहारातिदेशः । ६१६

बृहत्क्रमः॥ ॥१२१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२२॥

॥ त्रयोदशे पञ्चमः ॥
४८८ नारकादिसान्तरोत्पादाद्यति - देशः । ६१७
४८९ चमरचञ्चावासतत्प्रमाणवसत्य-न्वर्थकथनम् । ६१८
४९०-९१ उदायननृपाधिकारः अभीचिं त्यक्त्वा केशिने राज्यं, उदायनमोक्षः ४९०, अभीचेरसुरत्वम् ४९१ । ६२१
॥ त्रयोदशे षष्ठः ॥
४९२ भाषाणामन्यत्वरूपित्वाचित्तत्वाजीवत्वानि, भाषासमये भाषात्वं, भाषाचातुर्विध्यम् । ६२३
४९३-९४ मनःकाययोरपि पूर्ववद्विचारः । ६२४
४९५ आवीचिमरणादिविचारः । ६२६
॥ त्रयोदशे सप्तमः ॥
४९६ कर्मप्रकृत्यतिदेशः । ,,
॥ त्रयोदशेऽष्टमः ॥
४९७ केयाघटिकाहिरण्यपेटावल्गुलीबीजबीजकादिवैक्रियविचारः ६२८
॥ त्रयोदशे नवमः ॥
४९८ छद्मस्थसमुद्घातादिदेशः । ६२९
॥ त्रयोदशे दशमः ॥
॥ त्रयोदशं शतकम् ॥
७५ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी । ६३०
४९९-५०० यथालेश्यं देवावासाः । ४९९, एकद्वित्रिसमयेषु नारकादीनामुत्पत्तिः. एकेन्द्रियाणां चतुःसामयिकविग्रहेण ५०० । ६३३
५०१ अनन्तरपरम्परोत्पन्नतदनुत्पन्नस्वरूपमायुःकरणप्रश्नः, अनन्तरनिर्गतादि, आयुःकरणमनन्तरखेदोत्पन्नादि । ६३२
॥ चतुर्दशे प्रथमः ॥
५०१-३ यक्षावेशमोहनीयोन्मादनिरूपणं ५०२, शक्रादीनां वृष्टिकरणे रीतिः, अर्हज्जन्मादिषु वृष्टिकरणं च ५०३ । ६३६
५०४ ईशानादेस्तमस्करणरीतिः । ,,
॥ चतुर्दशे द्वितीयः ॥
५०५ सम्यग्दृष्टिदेवादेर्भावितानगारमध्येऽव्यतिक्रमः । ६३७
५०६-७ असुरादीनां सत्कारादे (१०)रस्तिता, न नारकैकेन्द्रियादेः, तिरश्च आसनाभिग्रहानुप्रदाने वर्जयित्वा ५०६, अल्पसममहर्द्धिकदेवदेवीव्यतिक्रमणविधिः ५०७ । ६३८

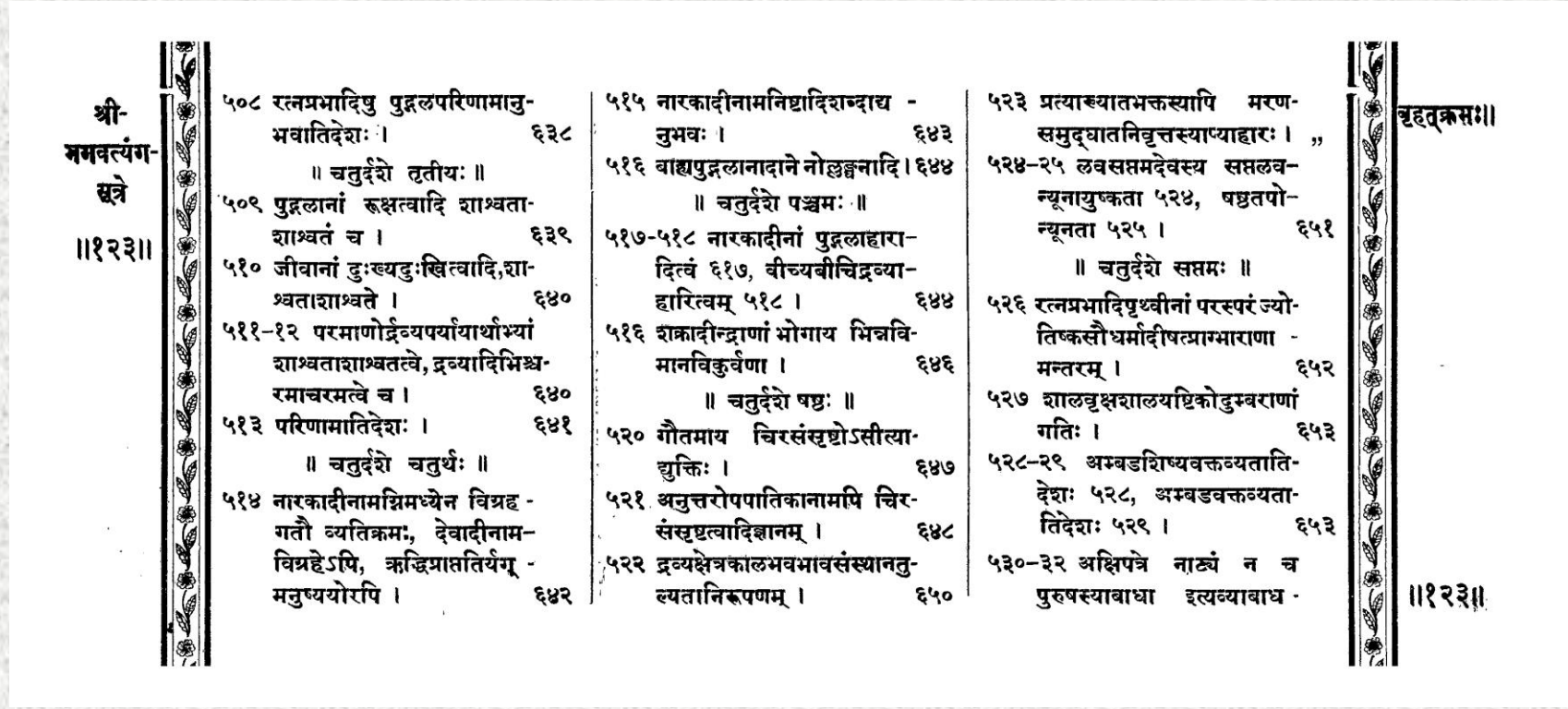
बृहत्क्रमः॥

॥१२२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२३॥

५०८ रत्नप्रभादिषु पुद्गलपरिणामानुभवातिदेशः । ६३८

॥ चतुर्दशे तृतीयः ॥

५०९ पुद्गलानां रूक्षत्वादि शाश्वताशाश्वतं च । ६३९

५१० जीवानां दुःख्यदुःखित्वादि,शाश्वताशाश्वते । ६४०

५११-१२ परमाणोर्द्रव्यपर्यायार्थाभ्यां शाश्वताशाश्वतत्वे, द्रव्यादिभिश्चरमाचरमत्वे च । ६४०

५१३ परिणामातिदेशः । ६४१

॥ चतुर्दशे चतुर्थः ॥

५१४ नारकादीनामग्निमध्येन विग्रहगतौ व्यतिक्रमः, देवादीनामविग्रहेऽपि, ऋद्धिप्राप्ततिर्यग्मनुष्ययोरपि । ६४२

५१५ नारकादीनामनिष्टादिशब्दाद्यनुभवः । ६४३

५१६ बाह्यपुद्गलानादाने नोल्लङ्घनादि । ६४४

॥ चतुर्दशे पञ्चमः ॥

५१७-५१८ नारकादीनां पुद्गलाहारादित्वं ६१७, वीच्यबीचिद्रव्याहारित्वम् ५१८ । ६४४

५१९ शक्रादीन्द्राणां भोगाय भिन्नविमानविकुर्वणा । ६४६

॥ चतुर्दशे षष्ठः ॥

५२० गौतमाय चिरसंसृष्टोऽसीत्याद्युक्तिः । ६४७

५२१ अनुत्तरोपपातिकानामपि चिरसंसृष्टत्वादिज्ञानम् । ६४८

५२२ द्रव्यक्षेत्रकालभवभावसंस्थानतुल्यतानिरूपणम् । ६५०

५२३ प्रत्याख्यातभक्तस्यापि मरणसमुद्घातनिवृत्तस्याप्याहारः । ,,

५२४-२५ लवसप्तमदेवस्य सप्तलवन्यूनायुष्कता ५२४, षष्ठतपोन्यूनता ५२५ । ६५१

॥ चतुर्दशे सप्तमः ॥

५२६ रत्नप्रभादिपृथ्वीनां परस्परं ज्योतिष्कसौधर्मादीषत्प्राग्भाराणामन्तरम् । ६५२

५२७ शालवृक्षशालयष्टिकोदुम्बराणां गतिः । ६५३

५२८-२९ अम्बडशिष्यवक्तव्यतातिदेशः ५२८, अम्बडवक्तव्यतातिदेशः ५२९ । ६५३

५३०-३२ अक्षिपत्रे नाट्यं न च पुरुषस्याबाधा इत्यव्याबाध-

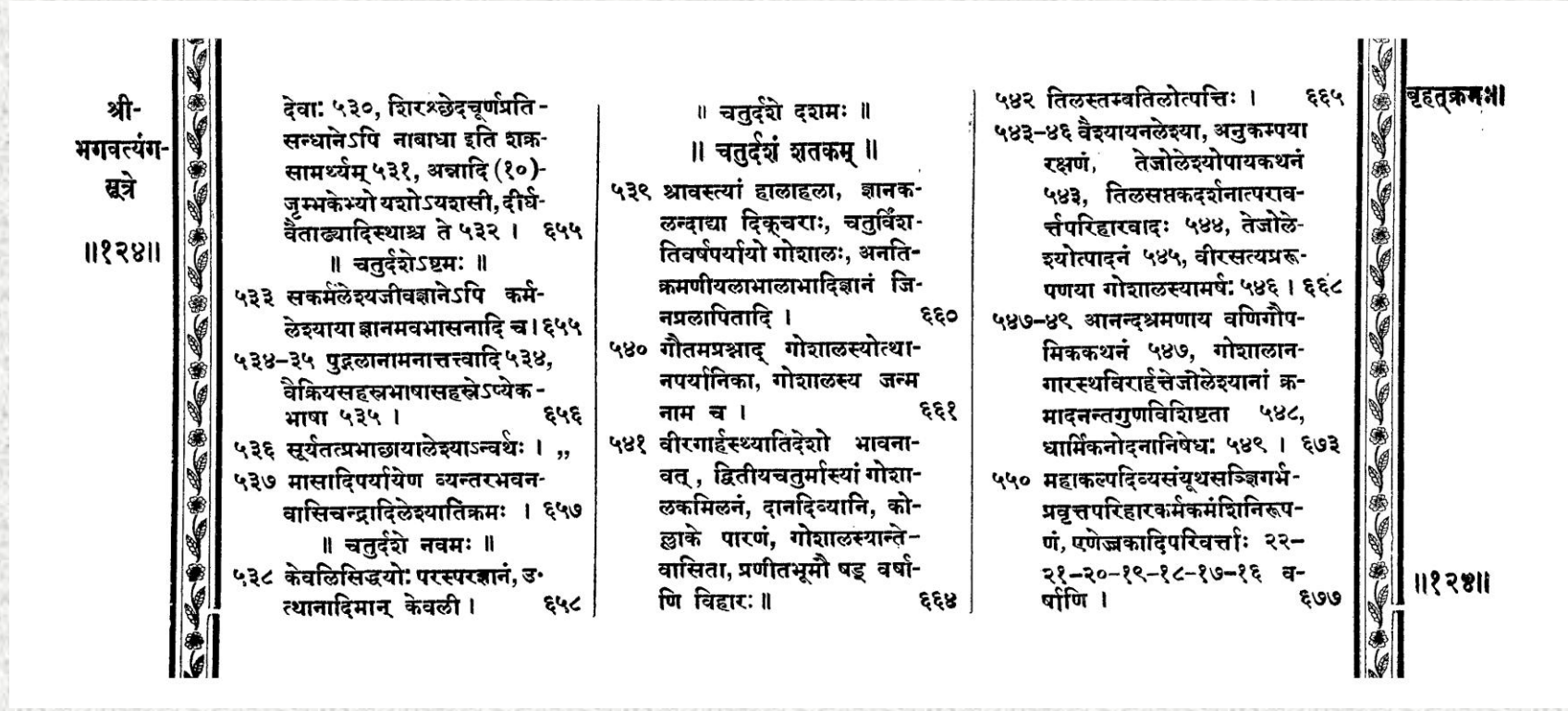
बृहत्क्रमः॥

॥१२३॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२४॥

देवा: ५३०, शिरश्छेदचूर्णप्रतिसन्धानेऽपि नाबाधा इति शक्रसामर्थ्यम् ५३१, अन्नादि (१०)-जृम्भकेभ्यो यशोऽयशसी, दीर्घवैताढ्यादिस्थाश्च ते ५३२ । ६५५

॥ चतुर्दशेऽष्टमः ॥

५३३ सकर्मलेश्यजीवज्ञानेऽपि कर्मलेश्याया ज्ञानमवभासनादि च। ६५५

५३४-३५ पुद्गलानामनात्तत्वादि ५३४, वैक्रियसहस्रभाषासहस्रेऽप्येकभाषा ५३५ । ६५६

५३६ सूर्यतत्प्रभाछायालेश्याऽन्वर्थः । ,,

५३७ मासादिपर्यायेण व्यन्तरभवनवासिचन्द्रादिलेश्यातिक्रमः । ६५७

॥ चतुर्दशे नवमः ॥

५३८ केवलिसिद्धयोः परस्परज्ञानं, उत्थानादिमान् केवली । ६५८

॥ चतुर्दशे दशमः ॥

॥ चतुर्दशं शतकम् ॥

५३९ श्रावस्त्यां हालाहला, ज्ञानकलन्दाद्या दिक्चराः, चतुर्विंशतिवर्षपर्यायो गोशालः, अनतिक्रमणीयलाभालाभादिज्ञानं जिनप्रलापितादि । ६६०

५४० गौतमप्रश्नाद् गोशालस्योत्थानपर्यानिका, गोशालस्य जन्म नाम च । ६६१

५४१ वीरगार्हस्थ्यातिदेशो भावनावत्, द्वितीयचतुर्मास्यां गोशालकमिलनं, दानदिव्यानि, कोल्लाके पारणं, गोशालस्यान्तेवासिता, प्रणीतभूमौ षड् वर्षाणि विहारः ॥ ६६४

५४२ तिलस्तम्बतिलोत्पत्तिः । ६६५

५४३-४६ वैश्यायनलेश्या, अनुकम्पया रक्षणं, तेजोलेश्योपायकथनं ५४३, तिलसप्तकदर्शनात्परावर्त्तपरिहारवादः ५४४, तेजोलेश्योत्पादनं ५४५, वीरसत्यप्ररूपणया गोशालस्यामर्षः ५४६ । ६६८

५४७-४९ आनन्दश्रमणाय वणिगौपमिककथनं ५४७, गोशालानगारस्थविरार्हत्तेजोलेश्यानां क्रमादनन्तगुणविशिष्टता ५४८, धार्मिकनोदनानिषेधः ५४९ । ६७३

५५० महाकल्पदिव्यसंयूथसञ्जिगर्भप्रवृत्तपरिहारकर्मकमंशिनिरूपणं, एणेज्जकादिपरिवर्त्ताः २२-२१-२०-१९-१८-१७-१६ वर्षाणि । ६७७

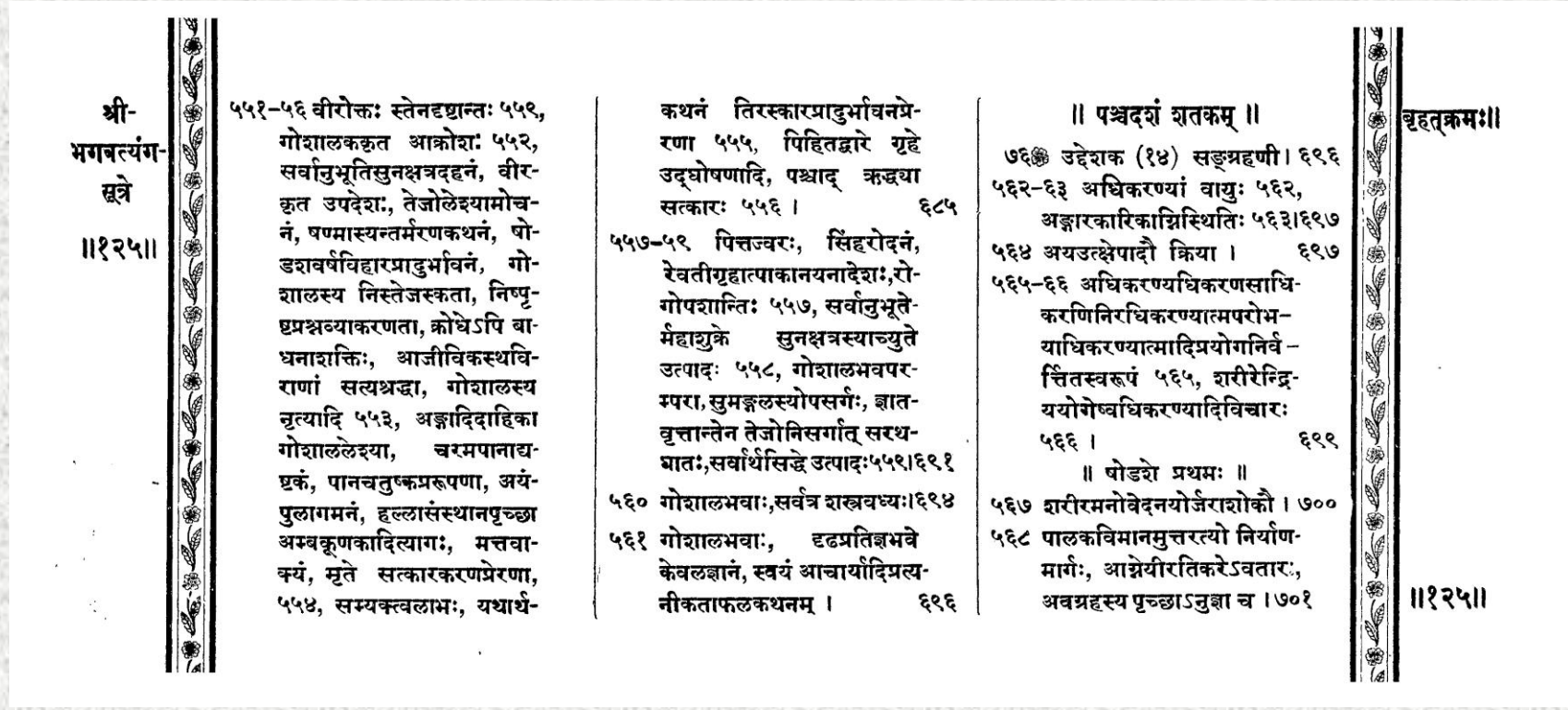
बृहत्क्रमः ॥

॥१२४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२५॥

५५१–५६ वीरोक्तः स्तेनदृष्टान्तः ५५९, गोशालककृत आक्रोशः ५५२, सर्वानुभूतिसुनक्षत्रदहनं, वीरकृत उपदेशः, तेजोलेश्यामोचनं, षण्मास्यन्तर्मरणकथनं, षोडशवर्षविहारप्रादुर्भावनं, गोशालस्य निस्तेजस्कता, निष्पृष्टप्रश्नव्याकरणता, क्रोधेऽपि बाधनाशक्तिः, आजीविकस्थविराणां सत्यश्रद्धा, गोशालस्य नृत्यादि ५५३, अङ्गादिदाहिका गोशाललेश्या, चरमपानाद्यष्टकं, पानचतुष्कप्ररूपणा, अयंपुलागमनं, हल्लासंस्थानपृच्छा अम्बकूणकादित्यागः, मत्तवाक्यं, मृते सत्कारकरणप्रेरणा, ५५४, सम्यक्त्वलाभः, यथार्थकथनं तिरस्कारप्रादुर्भावनप्रेरणा ५५५, पिहितद्वारे गृहे उद्घोषणादि, पश्चाद् ऋद्धया सत्कारः ५५६ । ६८५

५५७–५९ पित्तज्वरः, सिंहरोदनं, रेवतीगृहात्पाकानयनादेशः, रोगोपशान्तिः ५५७, सर्वानुभूतेर्महाशुक्रे सुनक्षत्रस्याच्युते उत्पादः ५५८, गोशालभवपरम्परा, सुमङ्गलस्योपसर्गः, ज्ञातवृत्तान्तेन तेजोनिसर्गात् सरथभातः, सर्वार्थसिद्धे उत्पादः ५५९।६९१

५६० गोशालभवाः, सर्वत्र शस्त्रवध्यः।६९४

५६१ गोशालभवाः, दृढप्रतिज्ञभवे केवलज्ञानं, स्वयं आचार्यादिप्रत्यनीकताफलकथनम् । ६९६

॥ पञ्चदशं शतकम् ॥

७६ उद्देशक (१४) सङ्ग्रहणी। ६९६

५६२–६३ अधिकरण्यां वायुः ५६२, अङ्गारकारिकाग्निस्थितिः ५६३।६९७

५६४ अयउत्क्षेपादौ क्रिया । ६९७

५६५–६६ अधिकरण्यधिकरणसाधिकरणिनिरधिकरण्यात्मपरोभयाधिकरण्यात्मादिप्रयोगनिर्वर्त्तितस्वरूपं ५६५, शरीरेन्द्रिययोगेष्वधिकरण्यादिविचारः ५६६ । ६९९

॥ षोडशे प्रथमः ॥

५६७ शरीरमनोवेदनयोर्जराशोकौ । ७००

५६८ पालकविमानमुत्तरत्यो निर्याणमार्गः, आग्नेयीरतिकरेऽवतारः, अवग्रहस्य पृच्छाऽनुज्ञा च । ७०१

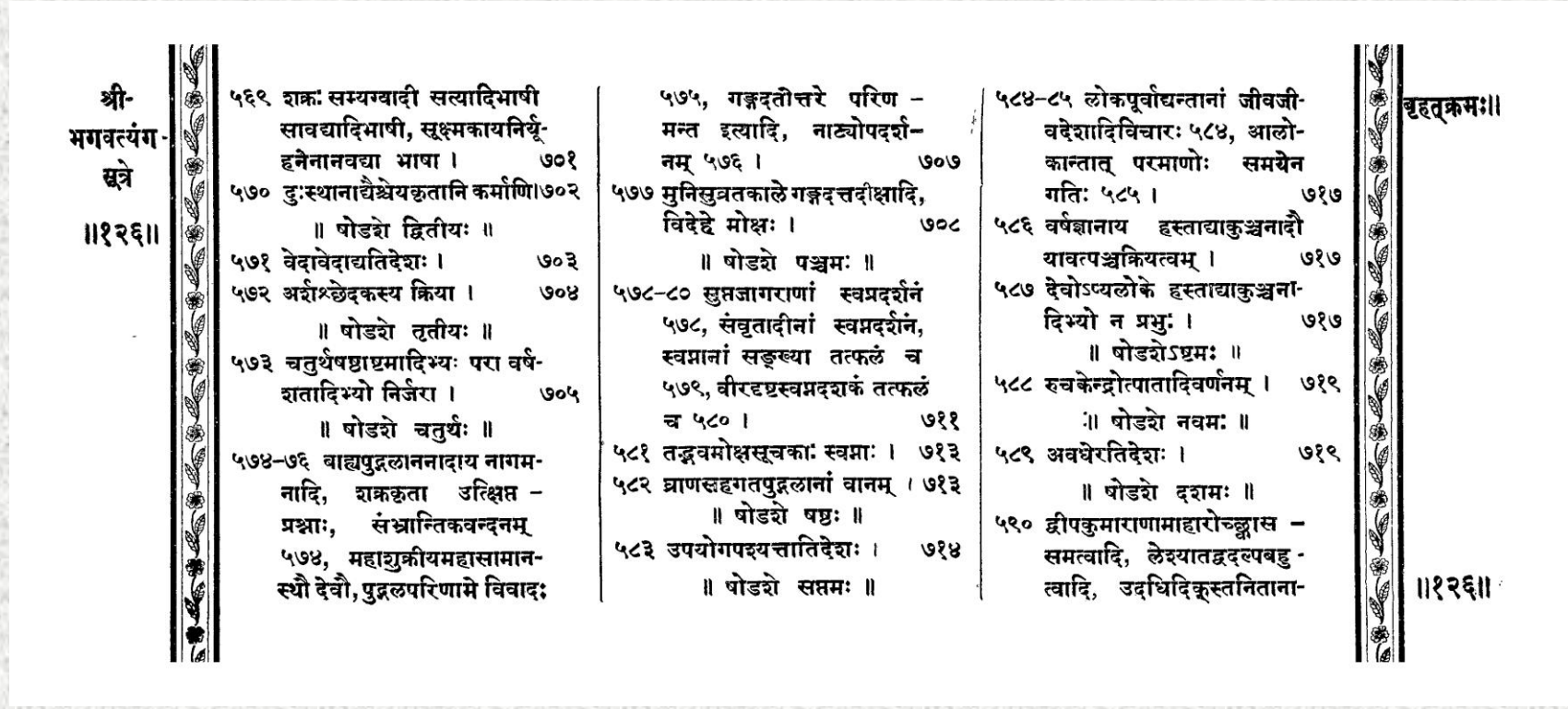
बृहत्क्रमः॥

॥१२५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

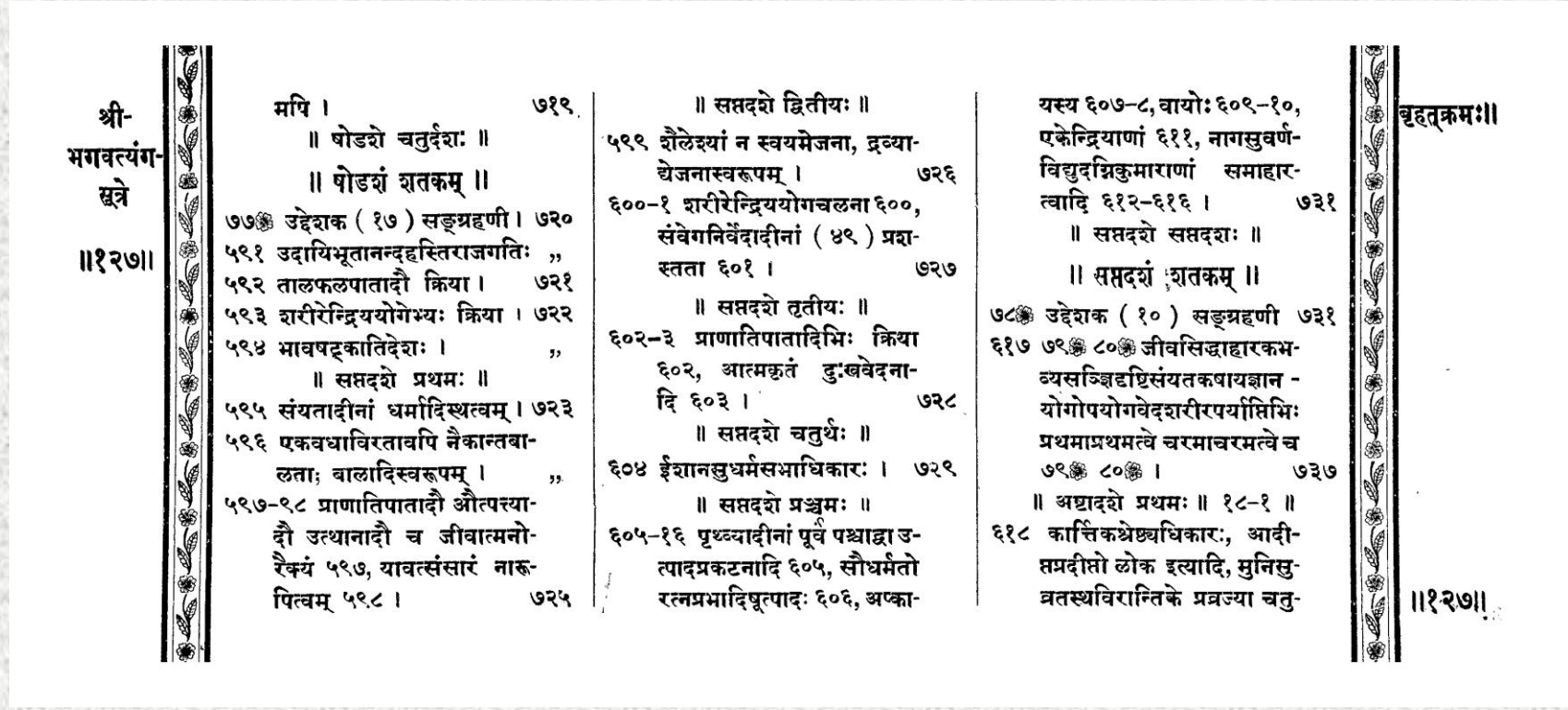


श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२६॥

५६९ शक्रः सम्यग्वादी सत्यादिभाषी सावद्यादिभाषी, सूक्ष्मकायनिर्यू-हनेनानवद्या भाषा । ७०१
५७० दुःस्थानाद्यैश्चेयकृतानि कर्माणि।७०२
॥ षोडशे द्वितीयः ॥
५७१ वेदावेदाद्यतिदेशः । ७०३
५७२ अर्शश्छेदकस्य क्रिया । ७०४
॥ षोडशे तृतीयः ॥
५७३ चतुर्थषष्ठाष्टमादिभ्यः परा वर्ष-शतादिभ्यो निर्जरा । ७०५
॥ षोडशे चतुर्थः ॥
५७४–७६ बाह्यपुद्गलाननादाय नागम-नादि, शक्रकृता उत्क्षिप्त – प्रश्नाः, संभ्रान्तिकवन्दनम् ५७४, महाशुक्रीयमहासामान-स्थौ देवौ, पुद्गलपरिणामे विवादः ५७५, गङ्गदत्तोत्तरे परिण – मन्त इत्यादि, नाट्योपदर्श– नम् ५७६ । ७०७
५७७ मुनिसुव्रतकाले गङ्गदत्तदीक्षादि, विदेहे मोक्षः । ७०८
॥ षोडशे पञ्चमः ॥
५७८–८० सुप्तजागराणां स्वप्नदर्शनं ५७८, संवृतादीनां स्वप्नदर्शनं, स्वप्नानां सङ्ख्या तत्फलं च ५७९, वीरदृष्टस्वप्नदशकं तत्फलं च ५८० । ७११
५८१ तद्भवमोक्षसूचकाः स्वप्नाः । ७१३
५८२ घ्राणसहगतपुद्गलानां वानम् । ७१३
॥ षोडशे षष्ठः ॥
५८३ उपयोगपश्यत्तातिदेशः । ७१४
॥ षोडशे सप्तमः ॥
५८४–८५ लोकपूर्वाद्यन्तानां जीवजी-वदेशादिविचारः ५८४, आलो-कान्तात् परमाणोः समयेन गतिः ५८५ । ७१७
५८६ वर्षज्ञानाय हस्ताद्याकुञ्चनादौ यावत्पञ्चक्रियत्वम् । ७१७
५८७ देवोऽप्यलोके हस्ताद्याकुञ्चना-दिभ्यो न प्रभुः । ७१७
॥ षोडशेऽष्टमः ॥
५८८ रुचकेन्द्रोत्पातादिवर्णनम् । ७१९
॥ षोडशे नवमः ॥
५८९ अवधेरतिदेशः । ७१९
॥ षोडशे दशमः ॥
५९० द्वीपकुमाराणामाहारोच्छ्वास – समत्वादि, लेश्यातद्वदल्पबहु-त्वादि, उदधिदिक्स्तनिताना-

बृहत्क्रमः॥

॥१२६॥



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२७॥

मपि । ७१९

॥ षोडशे चतुर्दशः ॥

॥ षोडशं शतकम् ॥

७७ उद्देशक (१७) सङ्ग्रहणी । ७२०
५९१ उदायिभूतानन्दहस्तिराजगतिः ,,
५९२ तालफलपातादौ क्रिया । ७२१
५९३ शरीरेन्द्रिययोगेभ्यः क्रिया । ७२२
५९४ भावषट्कातिदेशः । ,,

॥ सप्तदशे प्रथमः ॥

५९५ संयतादीनां धर्मादिस्थत्वम् । ७२३
५९६ एकवधाविरतावपि नैकान्तबालता; बालादिस्वरूपम् । ,,
५९७-९८ प्राणातिपातादौ औत्पत्त्यादौ उत्थानादौ च जीवात्मनोरैक्यं ५९७, यावत्संसारं नारूपित्वम् ५९८ । ७२५

॥ सप्तदशे द्वितीयः ॥

५९९ शैलेश्यां न स्वयमेजना, द्रव्याद्येजनास्वरूपम् । ७२६
६००-१ शरीरेन्द्रिययोगचलना ६००, संवेगनिर्वेदादीनां (४९) प्रशस्तता ६०१ । ७२७

॥ सप्तदशे तृतीयः ॥

६०२-३ प्राणातिपातादिभिः क्रिया ६०२, आत्मकृतं दुःखवेदनादि ६०३ । ७२८

॥ सप्तदशे चतुर्थः ॥

६०४ ईशानसुधर्मसभाधिकारः । ७२९

॥ सप्तदशे प्रश्नमः ॥

६०५-१६ पृथ्व्यादीनां पूर्वं पश्चाद्वा उत्पादप्रकटनादि ६०५, सौधर्मतो रत्नप्रभादिषूत्पादः ६०६, अप्कायस्य ६०७-८, वायोः ६०९-१०, एकेन्द्रियाणां ६११, नागसुवर्णविद्युदग्निकुमाराणां समाहारत्वादि ६१२-६१६ । ७३१

॥ सप्तदशे सप्तदशः ॥

॥ सप्तदशं शतकम् ॥

७८ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी ७३१
६१७ ७९ ८० जीवसिद्धाहारकभव्यसञ्ज्ञिदृष्टिसंयतकषायज्ञानयोगोपयोगवेदशरीरपर्याप्तिभिः प्रथमाप्रथमत्वे चरमाचरमत्वे च ७९ ८० । ७३७

॥ अष्टादशे प्रथमः ॥ १८-१ ॥

६१८ कार्त्तिकश्रेष्ठ्यधिकारः, आदीसप्तदीपो लोक इत्यादि, मुनिसुव्रतस्थविरान्तिके प्रव्रज्या चतु-

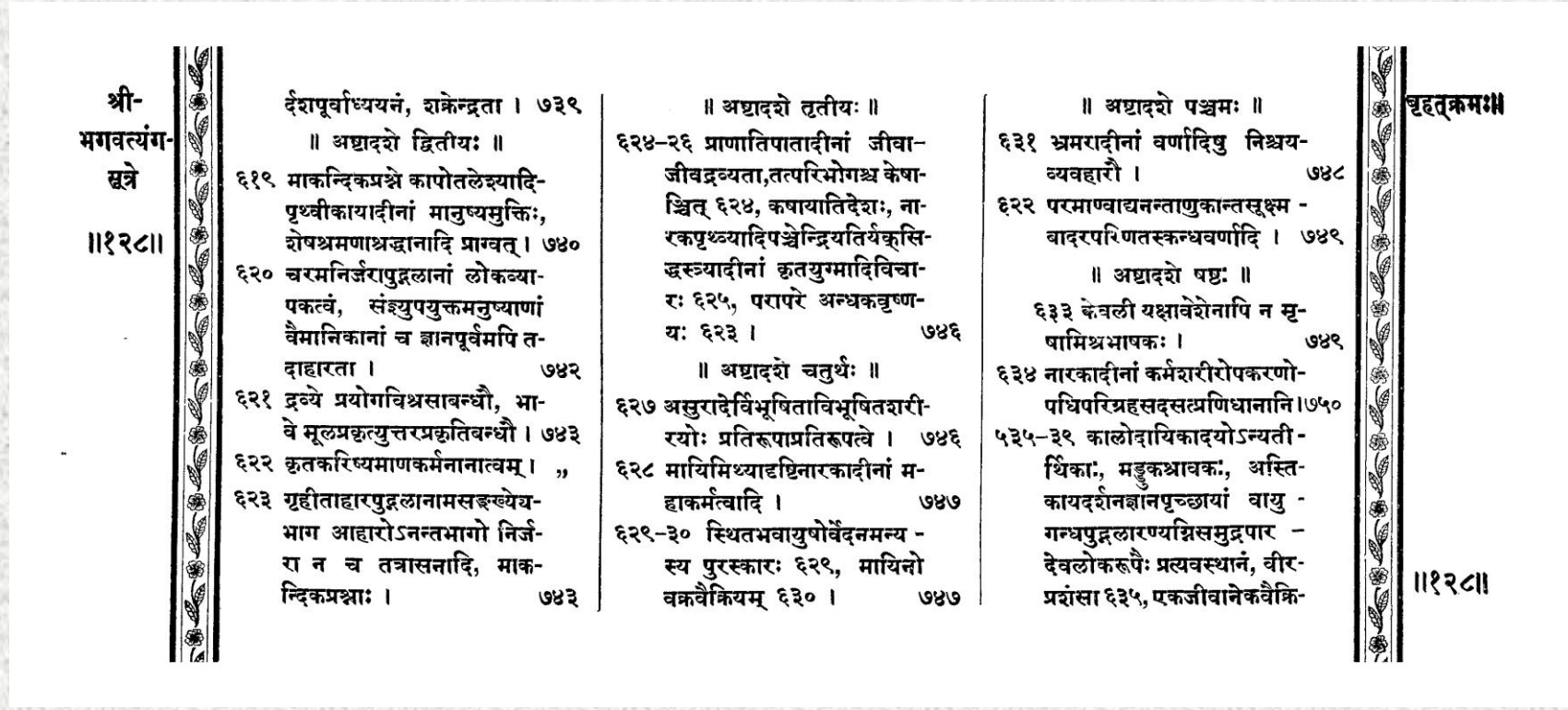
बृहत्क्रमः॥

॥१२७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२८॥

दर्शपूर्वाध्ययनं, शक्रेन्द्रता । ७३९

॥ अष्टादशे द्वितीयः ॥

६१९ माकन्दिकप्रश्ने कापोतलेश्यादि-पृथ्वीकायादीनां मानुष्यमुक्तिः, शेषश्रमणाश्रद्धानादि प्राग्वत् । ७४०

६२० चरमनिर्जरापुद्गलानां लोकव्यापकत्वं, संज्युपयुक्तमनुष्याणां वैमानिकानां च ज्ञानपूर्वमपि तदाहारता । ७४२

६२१ द्रव्ये प्रयोगविश्रसाबन्धौ, भावे मूलप्रकृत्युत्तरप्रकृतिबन्धौ । ७४३

६२२ कृतकरिष्यमाणकर्मनानात्वम् । „

६२३ गृहीताहारपुद्गलानामसङ्ख्येयभाग आहारोऽनन्तभागो निर्जरा न च तत्रासनादि, माकन्दिकप्रश्नाः । ७४३

॥ अष्टादशे तृतीयः ॥

६२४–२६ प्राणातिपातादीनां जीवाजीवद्रव्यता,तत्परिभोगश्च केषाञ्चित् ६२४, कषायातिदेशः, नारकपृथ्व्यादिपञ्चेन्द्रियतिर्यक्सिद्धस्त्र्यादीनां कृतयुग्मादिविचारः ६२५, परापरे अन्धकवृष्णयः ६२३ । ७४६

॥ अष्टादशे चतुर्थः ॥

६२७ असुरादेर्विभूषिताविभूषितशरीरयोः प्रतिरूपाप्रतिरूपत्वे । ७४६

६२८ मायिमिथ्यादृष्टिनारकादीनां महाकर्मत्वादि । ७४७

६२९–३० स्थितभवायुषोर्वेदनमन्यस्य पुरस्कारः ६२९, मायिनो वक्रवैक्रियम् ६३० । ७४७

॥ अष्टादशे पञ्चमः ॥

६३१ भ्रमरादीनां वर्णादिषु निश्चयव्यवहारौ । ७४८

६३२ परमाण्वाद्यनन्ताणुकान्तसूक्ष्म - बादरपरिणतस्कन्धवर्णादि । ७४९

॥ अष्टादशे षष्ठः ॥

६३३ केवली यक्षावेशेनापि न मृषामिश्रभाषकः । ७४९

६३४ नारकादीनां कर्मशरीरोपकरणोपधिपरिग्रहसदसत्प्रणिधानानि।७५०

५३५–३९ कालोदायिकादयोऽन्यतीर्थिकाः, मद्दुकश्रावकः, अस्तिकायदर्शनज्ञानपृच्छायां वायु - गन्धपुद्गलारण्यग्निसमुद्रपार – देवलोकरूपैः प्रत्यवस्थानं, वीरप्रशंसा ६३५, एकजीवानेकवैक्रि-

बृहत्क्रमः॥

॥१२८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१२९॥

वयुद्धं ६३६, देवानां तृणाद्यपि प्रहरणमसुराणां तु वैक्रियं ६३७, रुचकवरं यावदनुपर्यटनं पश्चाद्गमनं ६३८, पञ्चशत्या पञ्चशतसहस्रया च देवानां कर्मांशक्षयः - ६३९ । ७५४

॥ अष्टादशे सप्तमः ॥

६४० समितस्य कुक्कुटादिव्यापत्ता - वपीर्यापथिकी । ७५४

६४१-४२ समितस्यैकान्तपण्डितत्वं, ६४१, परमावधिकेवलिनोः परमाणुज्ञानदर्शने समयविशिष्टे न ६४२ । ७५६

॥ अष्टादशेऽष्टमः ॥

६४३ भव्यद्रव्यदेवतिर्यङ्मनुष्यना - रकाणां स्थितिः । ७५७

॥ अष्टादशे नवमः ॥

६४४ भावितात्मनोऽसिधारादिना न छेदादिः । ७५७

६४५ सूक्ष्मानन्ताणुकान्तो वातेन स्पृष्टः, न तु तेन सः, बस्तिवायुवत् । ७५७

६४६ पृथ्व्यादेरधः कालादिगुणवत्पुद्गला अन्योऽन्यसमुदायतया । ७५८

६४७ सोमिलाधिकारः, व्याकरणे वन्दनप्रतिज्ञा, यात्रायापनीयाव्याबाधप्रासुकविहारसर्षपमाषकुलत्थप्रश्नाः । ७६०

६४८ एकाक्षयाव्ययादिप्रश्नाः, श्रावकधर्माङ्गीकारः । ७६१

॥ अष्टादशे दशमः ॥

॥ अष्टादशं शतकम् ॥

८१ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी । ७६९

६४९ लेश्यातिदेशः ६४९ । ,,

॥ एकोनविंशतौ प्रथमः ॥

६५० लेश्यागर्भातिदेशः ६५० । ७६२

॥ एकोनविंशे द्वितीयः ॥

६५१ पृथ्व्यादीनां प्रत्येकता, लेश्या दृष्ट्याहारसज्ज्ञादिप्राणातिपाता - द्युपाख्यानोत्पत्तिस्थितिसमुद्घाताः । ७६४

६५२ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तजघन्योत्कृष्टावगाहना (४४)ऽल्पबहुत्वम् । ७६५

६५३ पृथ्व्यादीनां सर्वसूक्ष्मबादरप्ररूपणा । (अनन्तसूक्ष्मवनस्पतिप्रमितः सूक्ष्मवायुः, शेषेष्वसङ्ख्यतागुणत्वम्) । ७६६

६५४ पृथ्व्यादिकायस्वल्पत्वे वेदनायां च वर्णकपेशिकादि । ७६७

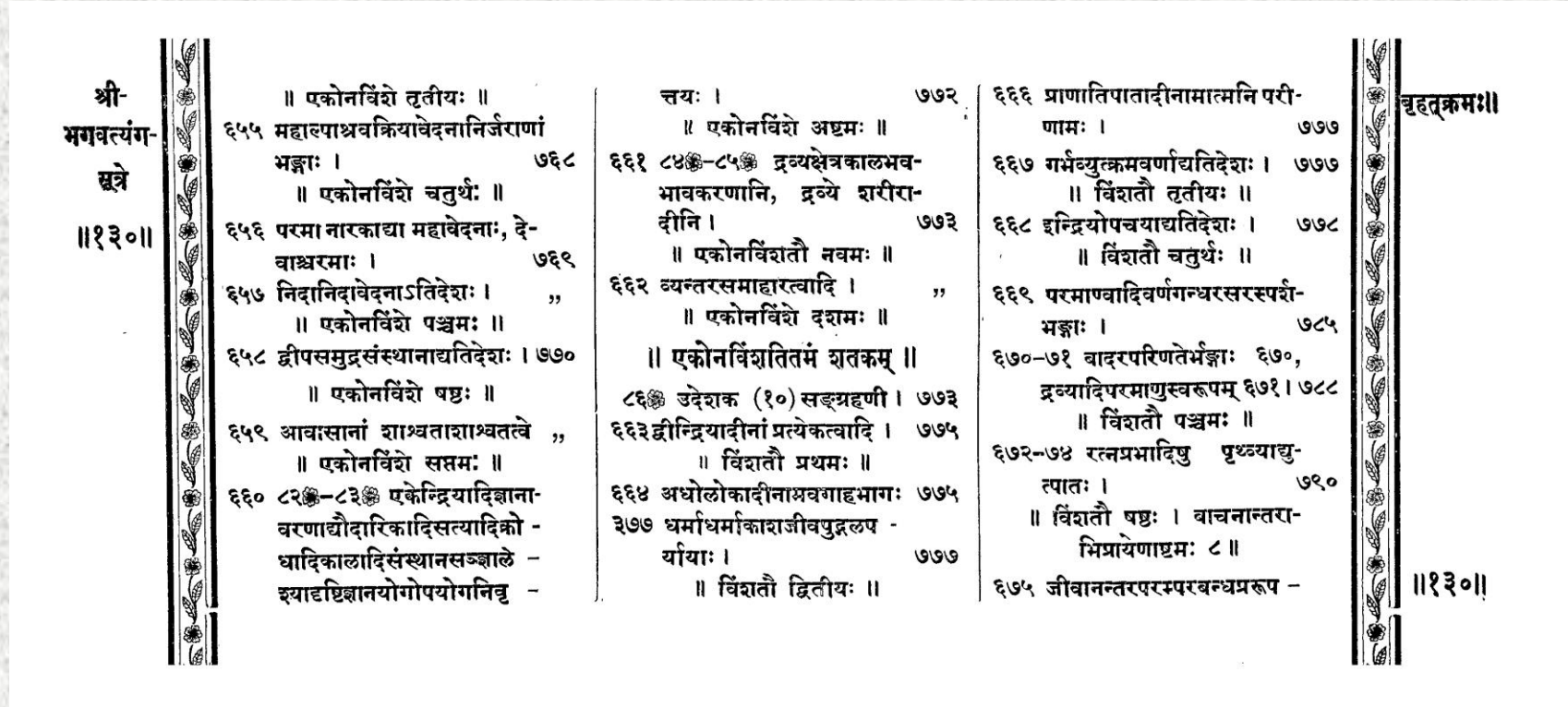
बृहत्क्रमः ।

॥१२९॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३०॥

॥ एकोनविंशे तृतीयः ॥

६५५ महाल्पाश्रवक्रियावेदनानिर्जराणां भङ्गाः । ७६८

॥ एकोनविंशे चतुर्थः ॥

६५६ परमा नारकाद्या महावेदनाः, देवाश्चरमाः । ७६९

६५७ निदानिदावेदनाऽतिदेशः । ,,

॥ एकोनविंशे पञ्चमः ॥

६५८ द्वीपसमुद्रसंस्थानाद्यतिदेशः । ७७०

॥ एकोनविंशे षष्ठः ॥

६५९ आवासानां शाश्वताशाश्वतत्वे ,,

॥ एकोनविंशे सप्तमः ॥

६६० ८२–८३ एकेन्द्रियादिज्ञानावरणाद्यौदारिकादिसत्यादिक्रोधादिकालादिसंस्थानसञ्ज्ञाले श्यादृष्टिज्ञानयोगोपयोगनिवृत्तयः । ७७२

॥ एकोनविंशे अष्टमः ॥

६६१ ८४–८५ द्रव्यक्षेत्रकालभवभावकरणानि, द्रव्ये शरीरादीनि । ७७३

॥ एकोनविंशतौ नवमः ॥

६६२ व्यन्तरसमाहारत्वादि । ,,

॥ एकोनविंशे दशमः ॥

॥ एकोनविंशतितमं शतकम् ॥

८६ उद्देशक (१०) सङ्ग्रहणी । ७७३

६६३ द्वीन्द्रियादीनां प्रत्येकत्वादि । ७७५

॥ विंशतौ प्रथमः ॥

६६४ अधोलोकादीनाश्रवगाहभागः ७७५

३७७ धर्माधर्माकाशजीवपुद्गलपर्यायाः । ७७७

॥ विंशतौ द्वितीयः ॥

६६६ प्राणातिपातादीनामात्मनि परिणामः । ७७७

६६७ गर्भव्युत्क्रमवर्णाद्यतिदेशः । ७७७

॥ विंशतौ तृतीयः ॥

६६८ इन्द्रियोपचयाद्यतिदेशः । ७७८

॥ विंशतौ चतुर्थः ॥

६६९ परमाण्वादिवर्णगन्धरसस्पर्शभङ्गाः । ७८५

६७०–७१ बादरपरिणतेर्भङ्गाः ६७०, द्रव्यादिपरमाणुस्वरूपम् ६७१ । ७८८

॥ विंशतौ पञ्चमः ॥

६७२–७४ रत्नप्रभादिषु पृथ्व्याद्युत्पातः । ७९०

॥ विंशतौ षष्ठः । वाचनान्तराभिप्रायेणाष्टमः ८ ॥

६७५ जीवानन्तरपरम्परबन्धप्ररूप –

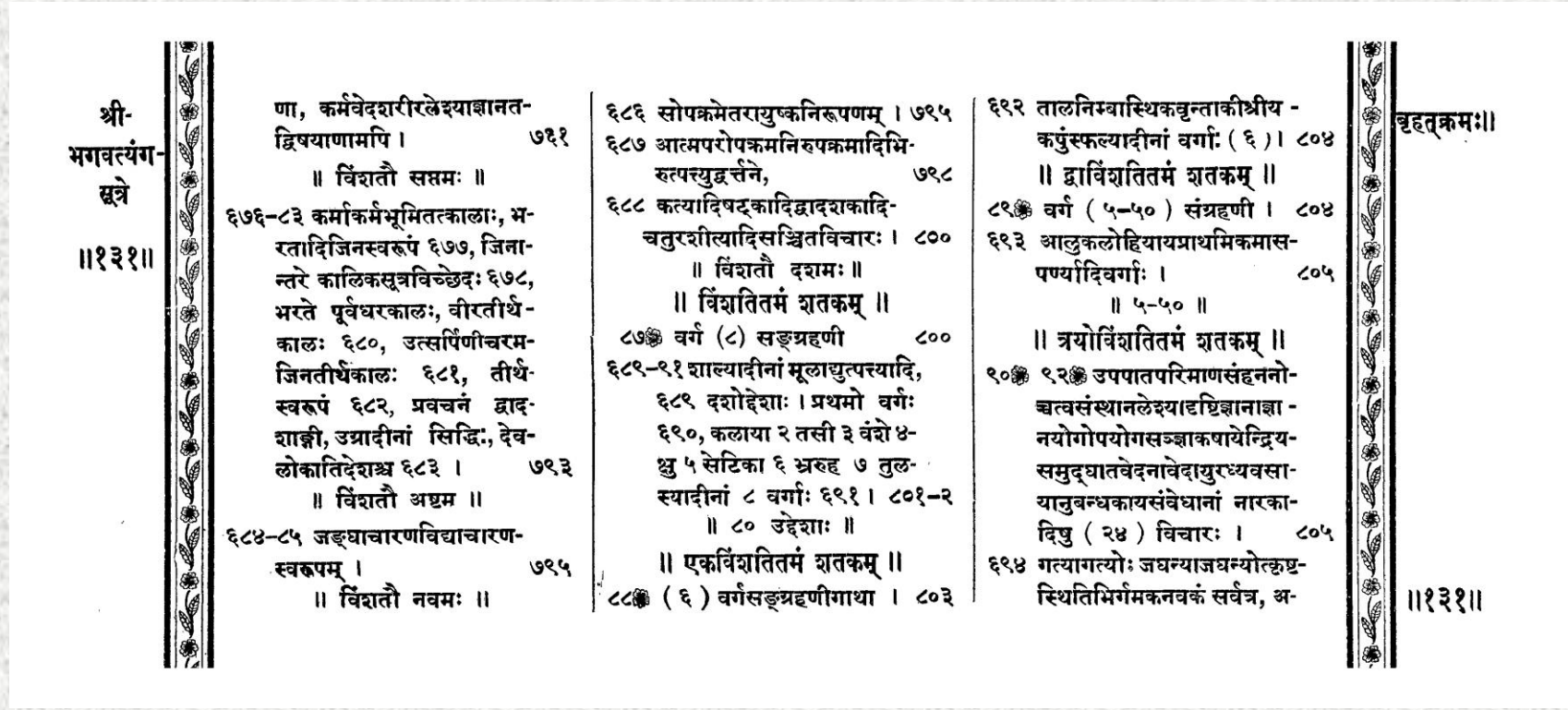
बृहत्क्रमः॥

॥१३०॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३१॥

णा, कर्मवेदशरीरलेश्याज्ञानत-द्विषयाणामपि । ७९१
॥ विंशतौ सप्तमः ॥
६७६-८३ कर्माकर्मभूमितत्कालाः, भ-रतादिजिनस्वरूपं ६७७, जिना-न्तरे कालिकसूत्रविच्छेदः ६७८, भरते पूर्वधरकालः, वीरतीर्थ-कालः ६८०, उत्सर्पिणीचरम-जिनतीर्थकालः ६८१, तीर्थ-स्वरूपं ६८२, प्रवचनं द्वाद-शाङ्गी, उग्रादीनां सिद्धिः, देव-लोकातिदेशश्च ६८३ । ७९३
॥ विंशतौ अष्टम ॥
६८४-८५ जङ्घाचारणविद्याचारण-स्वरूपम् । ७९५
॥ विंशतौ नवमः ॥
६८६ सोपक्रमेतरायुष्कनिरूपणम् । ७९५
६८७ आत्मपरोपक्रमनिरुपक्रमादिभि-रुत्पत्युद्वर्त्तने, ७९८
६८८ कत्यादिषट्कादिद्वादशकादि-चतुरशीत्यादिसञ्चितविचारः । ८००
॥ विंशतौ दशमः ॥
॥ विंशतितमं शतकम् ॥
८७ वर्ग (८) सङ्ग्रहणी ८००
६८९-९१ शाल्यादीनां मूलाद्युत्पत्त्यादि, ६८९ दशोद्देशाः । प्रथमो वर्गः ६९०, कलाया २ तसी ३ वंशे ४-क्षु ५ सेटिका ६ भ्रुरुह ७ तुल-स्यादीनां ८ वर्गाः ६९१ । ८०१-२
॥ ८० उद्देशाः ॥
॥ एकविंशतितमं शतकम् ॥
८८ (६) वर्गसङ्ग्रहणीगाथा । ८०३
६९२ तालनिम्बास्थिकवृन्ताकीश्रीय - कपुंस्फल्यादीनां वर्गाः (६) । ८०४
॥ द्वाविंशतितमं शतकम् ॥
८९ वर्ग (५-५०) संग्रहणी । ८०४
६९३ आलुकलोहियायप्राथमिकमास-पर्ण्यादिवर्गाः । ८०५
॥ ५-५० ॥
॥ त्रयोविंशतितमं शतकम् ॥
९०-९२ उपपातपरिमाणसंहननो-च्चत्वसंस्थानलेश्यादृष्टिज्ञानाज्ञा - नयोगोपयोगसञ्ज्ञाकषायेन्द्रिय-समुद्घातवेदनावेदायुरध्यवसा-यानुबन्धकायसंवेधानां नारका-दिषु (२४) विचारः । ८०५
६९४ गत्यागत्योः जघन्याजघन्योत्कृष्ट-स्थितिभिर्गमकनवकं सर्वत्र, अ-

बृहत्क्रमः॥ ॥१३१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३२॥

सञ्ज्ञितिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामधिकारः । ८०९
६९५ सञ्ज्ञितिर्यक्पञ्चेन्द्रियाधिकारः।८१२
६९६ शर्करादिषु पञ्चेन्द्रियतिर्यगधिकारः । ८१४
६९७-९८ रत्नप्रभायां मनुष्योत्पत्त्यधिकारः ६९७, शर्करादिषु मनुष्योत्पत्त्यधिकार ६९८ । ८१७
॥ २४ प्रथमः ॥
६९९ असुरोत्पत्त्यधिकारः । ८२१
॥ २४ द्वितीयः ॥
७०० नागोत्पत्त्यधिकारः । ८२२
॥ २४ तृतीयः ॥
७०१ सुवर्णाद्युत्पत्त्यधिकाराः । ८२३
॥ २४ एकादशः ॥
७०२ पृथ्वीकायेषु पृथ्वीकायाद्युत्पत्त्यधिकारः । ८२६
७०३ द्वीन्द्रियादितिर्यग्भ्यः । ८३०
७०४ मनुष्यदेवेभ्यः । ८३२
॥ २४ द्वादशः ॥
७०५-८ अप्तेजोवनस्पतीनामुत्पत्त्यधिकाराः । ८३३
॥ २४ षोडशः ॥
७०९-११ द्वित्रिचतुरिन्द्रियोत्पत्त्यधिकारः १३४
॥ २४ एकोनविंशतितमः ॥
७१२ पञ्चेन्द्रियतिर्यगुत्पत्त्यधिकारः । ८४२
॥ २४ विंशतितमः ॥
७१३ मनुष्योत्पत्त्यधिकारः । ८४६
॥ २४ एकविंशतितमः ॥
७१४ व्यन्तरोत्पत्त्यधिकारः । ८४७
॥ २४-२२ ॥
७१५ ज्योतिष्कोत्पत्त्यधिकारः । ८४८
॥ २४-२३ ॥
७१६ सौधर्मेशानादिदेवोत्पत्त्यधिकारः। ८५२
॥ २४-२४ ॥
॥ चतुर्विंशतितमं शतकम् ॥
९३ उद्देशक (१२) सङ्ग्रहणी । ८५२
७१७ लेश्यातिदेशः । ,,
७१८ सूक्ष्मैकेन्द्रियापर्याप्तादिजघन्योत्कृष्टयोगाऽ (२८) ल्पबहुत्वम् । ८५४
७१९ प्रथमसमयोत्पन्ननारकादीनां समविषमयोगिता । ८५४
७२० पञ्चदशयोगजघन्योत्कृष्टाल्प – बहुत्वम् । ८५५
॥ २५-१ ॥
७२१ जीवाजीवद्रव्यसञ्ज्ञा । ८५६
७२२ औदारिकादिभिरजीवद्रव्याणामेव परिभोगः । ,,

बृहत्क्रमः॥

॥१३२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३३॥

७२३ एकप्रदेशे निर्व्याघाते षड्दिक्-पुद्गलोपचयादि । ८५७
७२४ स्थितास्थितपुद्गलानामौदारिकादितया ग्रहणम् । ८५८

॥ २५ शतके २ उद्देशः ॥

७२५ परिमण्डलादिसंस्थानषट्कद्रव्यप्रदेशाल्पबहुत्वम् । ८५९
७२६ परिमण्डलाधिकारः । ८६०
७२७ वृत्तादिसंस्थानाधिकारः । ८६२
७२८ संस्थानेषु कृतयुग्माद्यधिकारः । ८६६
७२९-३४ लोकाकाशश्रेण्याद्यधिकारः ७२९, सादिसपर्यवसितादिश्रेण्यधिकारः ७३०, ऋज्वायतादिश्रेण्यधिकारः ७३१, नरकावासाद्यधिकारातिदेशः ७३२, गणिपिटकातिदेशः ७३३, नारकादिगति (५-८) एकेन्द्रियादिजाति (६) पृथ्व्यादिकायादि (७) जीवपुद्गलादिसर्वपर्यायान्तायुर्बन्धकानामल्पबहुत्वातिदेशः ७३४-९४ ८७२

॥ २५ शतके ३ उद्देशः ॥

७३५ नारकादीनां धर्मास्तिकायतत्प्रदेशावगाहादीनां रत्नप्रभादीनां च कृतयुग्मादिविचारः । ८७४
७३६ जीवनारकादिसिद्धानामेकत्वपृथक्त्वाभ्यां विचारः । ८७५
७३७ जीवादीनामवगाहस्थितिभ्यां विचारः । ८७६
७३८ जीवे मतिज्ञानादिपर्यायेषु कृतयुग्मादिविचारः । ८७७
७३९-४० शरीराधिकारातिदेशः ७३९, जीवसिद्धशैलेशीप्रतिपन्ननारकादिसैजनिरेजदेशसर्वैजत्वाधिकारः ७४० । ८७८
७४१ परमाण्वादीनामवगाहस्थित्यादिभिरल्पबहुत्वम् । ८७९
७४२ परमाणुसङ्ख्यातासङ्ख्यातानन्ताणुकानामेकादिसमयस्थित्यवगाहगुणानां द्रव्यप्रदेशोभयार्थैरल्पबहुत्वम् । ८८१
७४३-४४ परमाण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाहनादिषु कृतयुग्मत्वादि ७४३, परमाण्वादेः सार्द्धत्वादि ७४४ । ८८३
७४५-४६ परमाणुद्व्यणुकादेः सैजनिरेजयोः कालान्तरमल्पबहुत्वं द्रव्यप्रदेशोभयार्थैश्चाल्पबहुत्वं, देशैजसर्वैजनिरेजकालाद्यपि ७४५,

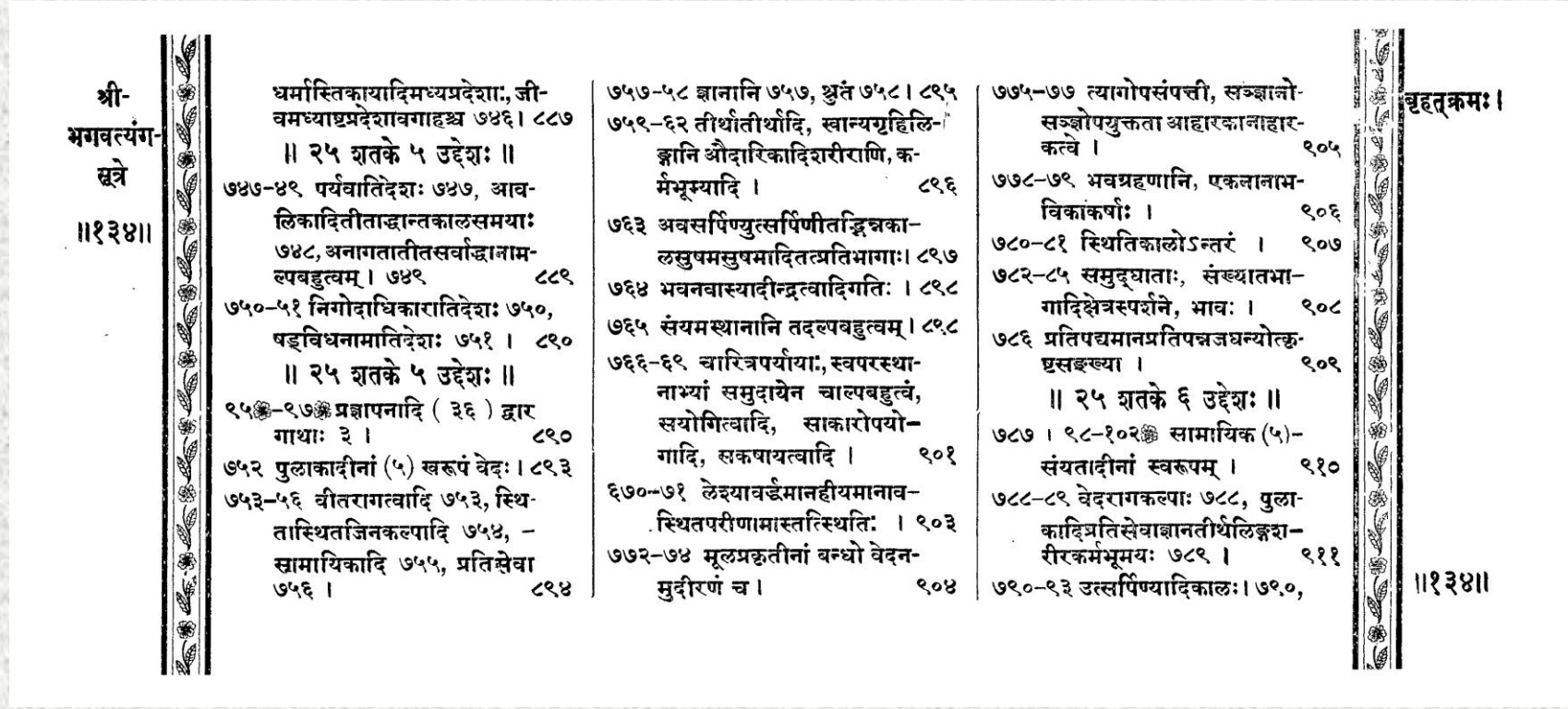
बृहत्क्रमः॥

॥१३३॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३४॥

धर्मास्तिकायादिमध्यप्रदेशाः, जीवमध्याष्टप्रदेशावगाहश्च ७४६। ८८७

॥ २५ शतके ५ उद्देशः ॥

७४७-४९ पर्यवातिदेशः ७४७, आवलिकादितीताद्धान्तकालसमयाः ७४८, अनागतातीतसर्वाद्धानामल्पबहुत्वम् । ७४९ ८८९

७५०-५१ निगोदाधिकारातिदेशः ७५०, षड्विधनामातिदेशः ७५१ । ८९०

॥ २५ शतके ५ उद्देशः ॥

९५-९७ प्रज्ञापनादि (३६) द्वार गाथाः ३ । ८९०

७५२ पुलाकादीनां (५) स्वरूपं वेदः । ८९३

७५३-५६ वीतरागत्वादि ७५३, स्थितास्थितजिनकल्पादि ७५४, – सामायिकादि ७५५, प्रतिसेवा ७५६ । ८९४

७५७-५८ ज्ञानानि ७५७, श्रुतं ७५८ । ८९५

७५९-६२ तीर्थातीर्थादि, स्वान्यगृहिलिङ्गानि औदारिकादिशरीराणि, कर्मभूम्यादि । ८९६

७६३ अवसर्पिण्युत्सर्पिणीतद्भिन्नकालसुषमसुषमादितत्प्रतिभागाः। ८९७

७६४ भवनवास्यादीन्द्रत्वादिगतिः । ८९८

७६५ संयमस्थानानि तदल्पबहुत्वम् । ८९८

७६६-६९ चारित्रपर्यायाः, स्वपरस्थानाभ्यां समुदायेन चाल्पबहुत्वं, सयोगित्वादि, साकारोपयोगादि, सकषायत्वादि । ९०१

६७०-७१ लेश्यावर्द्धमानहीयमानावस्थितपरीणामास्तत्स्थितिः । ९०३

७७२-७४ मूलप्रकृतीनां बन्धो वेदनमुदीरणं च । ९०४

७७५-७७ त्यागोपसंपत्ती, सज्ञानोसज्ञोपयुक्तता आहारकानाहारकत्वे । ९०५

७७८-७९ भवग्रहणानि, एकलानाभविकाकर्षाः । ९०६

७८०-८१ स्थितिकालोऽन्तरं । ९०७

७८२-८५ समुद्घाताः, संख्यातभागादिक्षेत्रस्पर्शने, भावः । ९०८

७८६ प्रतिपद्यमानप्रतिपन्नजघन्योत्कृष्टसङ्ख्या । ९०९

॥ २५ शतके ६ उद्देशः ॥

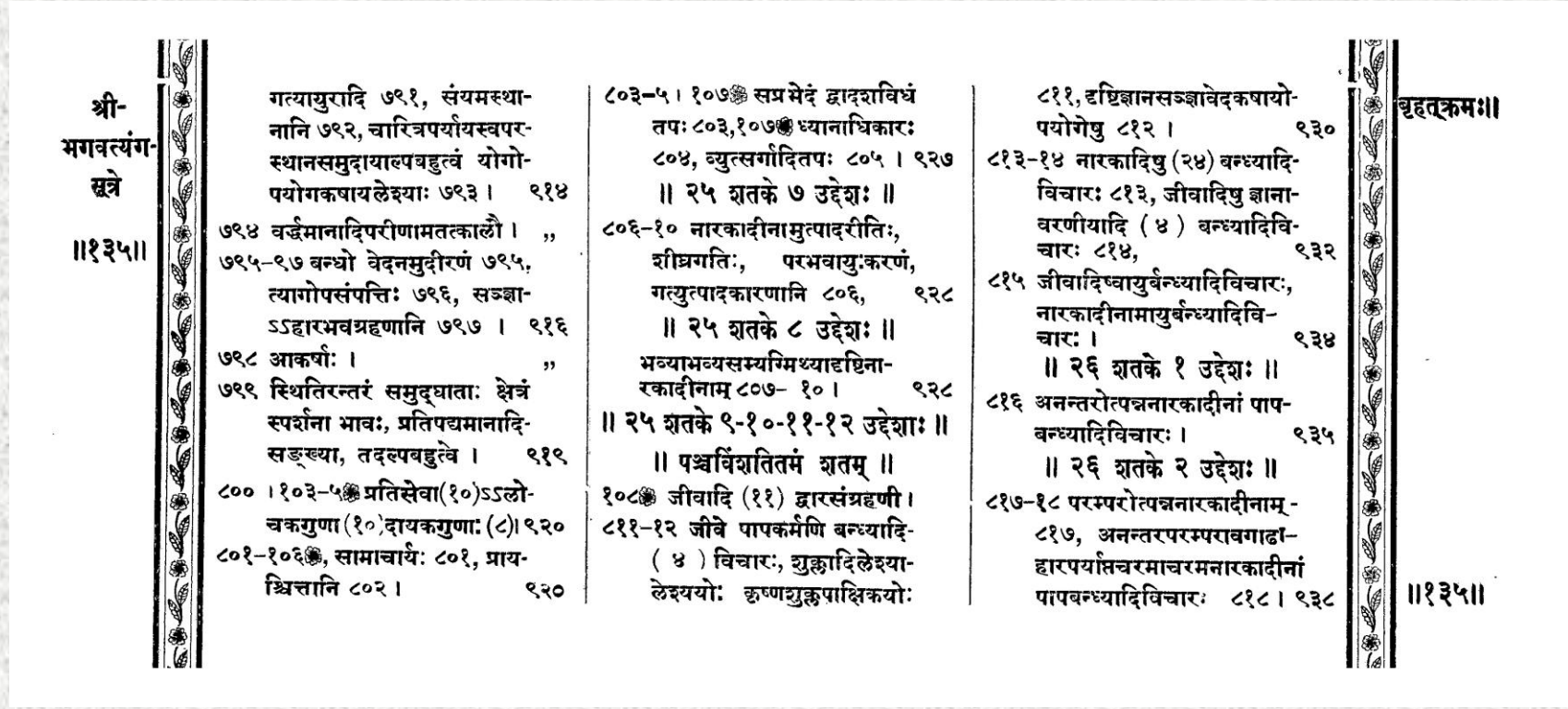
७८७ । ९८-१०२ सामायिक (५)-संयतादीनां स्वरूपम् । ९१०

७८८-८९ वेदरागकल्पाः ७८८, पुलाकादिप्रतिसेवाज्ञानतीर्थलिङ्गशरीरकर्मभूमयः ७८९ । ९११

७९०-९३ उत्सर्पिण्यादिकालः । ७९०,

बृहत्क्रमः ।

॥१३४॥



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

॥१३५॥

गत्यायुरादि ७९१, संयमस्थानानि ७९२, चारित्रपर्यायस्वपरस्थानसमुदायाल्पबहुत्वं योगोपयोगकषायलेश्याः ७९३। ९१४

७९४ वर्द्धमानादिपरीणामतत्कालौ। ,,

७९५-९७ बन्धो वेदनमुदीरणं ७९५, त्यागोपसंपत्तिः ७९६, सञ्ज्ञाऽऽहारभवग्रहणानि ७९७। ९१६

७९८ आकर्षाः। ,,

७९९ स्थितिरन्तरं समुद्घाताः क्षेत्रं स्पर्शना भावः, प्रतिपद्यमानादिसङ्ख्या, तदल्पबहुत्वे। ९१९

८०० । १०३-५ प्रतिसेवा(१०)ऽऽलोचकगुणा(१०)दायकगुणाः(८)। ९२०

८०१-१०६, सामाचार्यः ८०१, प्रायश्चित्तानि ८०२। ९२०

८०३-५। १०७ सप्रभेदं द्वादशविधं तपः ८०३, १०७ ध्यानाधिकारः ८०४, व्युत्सर्गादितपः ८०५। ९२७

॥ २५ शतके ७ उद्देशः ॥

८०६-१० नारकादीनामुत्पादरीतिः, शीघ्रगतिः, परभवायुःकरणं, गत्युत्पादकारणानि ८०६, ९२८

॥ २५ शतके ८ उद्देशः ॥

भव्याभव्यसम्यग्मिथ्यादृष्टिनारकादीनाम् ८०७-१०। ९२८

॥ २५ शतके ९-१०-११-१२ उद्देशाः ॥

॥ पञ्चविंशतितमं शतम् ॥

१०८ जीवादि (११) द्वारसंग्रहणी।

८११-१२ जीवे पापकर्मणि बन्ध्यादि(४) विचारः, शुक्लादिलेश्यालेश्ययोः कृष्णशुक्लपाक्षिकयोः ८११, दृष्टिज्ञानसञ्ज्ञावेदकषायोपयोगेषु ८१२। ९३०

८१३-१४ नारकादिषु (२४) बन्ध्यादिविचारः ८१३, जीवादिषु ज्ञानावरणीयादि (४) बन्ध्यादिविचारः ८१४, ९३२

८१५ जीवादिष्वायुर्बन्ध्यादिविचारः, नारकादीनामायुर्बन्ध्यादिविचारः। ९३४

॥ २६ शतके १ उद्देशः ॥

८१६ अनन्तरोत्पन्ननारकादीनां पापबन्ध्यादिविचारः। ९३५

॥ २६ शतके २ उद्देशः ॥

८१७-१८ परम्परोत्पन्ननारकादीनाम्-८१७, अनन्तरपरम्परावगाढाहारपर्याप्तचरमाचरमनारकादीनां पापबन्ध्यादिविचारः ८१८। ९३८

बृहत्क्रमः॥

॥१३५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥१३६॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

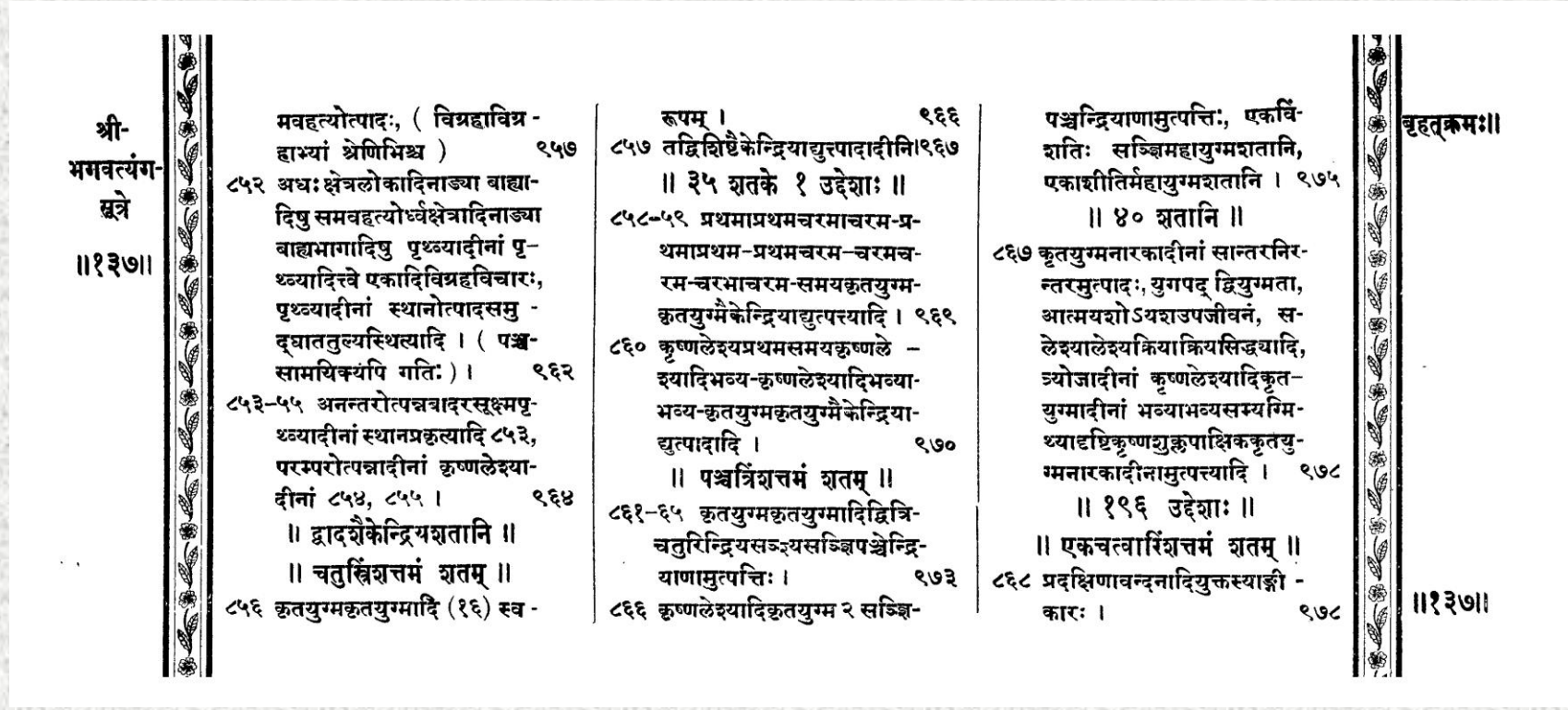
श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

॥ २६ शतके ३–११ उद्देशाः ॥
॥ षड्विंशतितमं शतम् ॥
८१६ करिंसुशतम् । ९३८
॥ २७ शतके ११ उद्देशाः ॥
८२०–२२ समज्जिणिंसुशतम् । ९४०
॥ २८ शतके ११ उद्देशाः ॥
८२३–२४ समकप्रस्थापननिष्ठापनशतम् । ९४२
॥ २९ शतके ११ उद्देशाः ॥
८२५ जीवलेश्यजीवादिषु नारकलेश्यनारकादिषु क्रियावाद्यादिविचारः, केवलसलेश्यादिक्रियावाद्यादीनामायुर्बन्धविचारः । (क्रियावाद्यादिभेदाः) ९४५
८२६ क्रियावाद्यादिनारकादिषु (२४) कृष्णलेश्यादिक्रियावाद्यादिषु आयुर्बन्धविचारः, केवलसलेश्यादिक्रियावाद्यादिषु भव्याभव्यत्वादिविचारः । ९४७
॥ ३० शतके १ उद्देशः ॥
८२७–२९ अनन्तरोत्पन्नादिनारकादीनां क्रियावादित्वादिविचारः । ९४०
॥ ३० शतके ११ ॥
॥ त्रिंशत्तमं शतम् ॥
८३०–४२ क्षुल्लककृतयुग्मनारकाणामुत्पत्त्यादि । ८३०, कृष्ननीलकापोतभव्याभव्यसम्यग्मिथ्यादृष्टिकृष्णशुक्लपाक्षिकक्षुद्रकृतयुग्मनारकोत्पत्त्यधिकारः ८३१–४२ । ९५०
॥ ३१ शतके २८ उद्देशाः ॥
॥ एकत्रिंशत्तमं शतम् ॥
८४३–४४ क्षुद्रकृतयुग्मादिनारकाणामुद्वर्त्तना, कृष्णलेश्यादिविशिष्टानामपि । ९५१
॥ ३२ शतके २८ उद्देशाः ॥
॥ द्वात्रिंशत्तमं शतम् ॥
८४५–५० एकेन्द्रियाणां पृथ्वीकायानां च भेदाः, कर्मप्रकृतयस्तद्बन्धो वेदनं (चतुर्दशमेदं) ८४५, अनन्तरोत्पन्नादिविशेषणानाम् ८४६–४८, प्रथममेकेन्द्रियशतं, कृष्णलेश्यादिविशिष्टानां ८४९–५९ द्वादशाऽवान्तरशतानि ॥ ९५४
॥ त्रयस्त्रिंशत्तमं शतम् ॥
८५१ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्मबादरपृथ्व्यादीनां रत्नप्रभादिपूर्वान्तादिषु स- बृहत्क्रमः॥ ॥१३६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३७॥

मवहत्योत्पादः, (विग्रहाविग्रहाभ्यां श्रेणिभिश्च) ९५७
८५२ अधः क्षेत्रलोकादिनाड्या बाह्यादिषु समवहत्योर्ध्वक्षेत्रादिनाड्या बाह्यभागादिषु पृथ्व्यादीनां पृथ्व्यादित्वे एकादिविग्रहविचारः, पृथ्व्यादीनां स्थानोत्पादसमुद्घाततुल्यस्थित्यादि । (पञ्चसामयिकत्वंपि गतिः) । ९६२
८५३-५५ अनन्तरोत्पन्नबादरसूक्ष्मपृथ्व्यादीनां स्थानप्रकृत्यादि ८५३, परम्परोत्पन्नादीनां कृष्णलेश्यादीनां ८५४, ८५५ । ९६४
॥ द्वादशैकेन्द्रियशतानि ॥
॥ चतुस्त्रिंशत्तमं शतम् ॥
८५६ कृतयुग्मकृतयुग्मादि (१६) स्वरूपम् । ९६६
८५७ तद्विशिष्टैकेन्द्रियाद्युत्पादादीनि ९६७
॥ ३५ शतके १ उद्देशाः ॥
८५८-५९ प्रथमाप्रथमचरमाचरम-प्रथमाप्रथम-प्रथमचरम-चरमचरम-चरमाचरम-समयकृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाद्युत्पत्त्यादि । ९६९
८६० कृष्णलेश्यप्रथमसमयकृष्णलेश्यादिभव्य-कृष्णलेश्यादिभव्याभव्य-कृतयुग्मकृतयुग्मैकेन्द्रियाद्युत्पादादि । ९७०
॥ पञ्चत्रिंशत्तमं शतम् ॥
८६१-६५ कृतयुग्मकृतयुग्मादिद्वित्रिचतुरिन्द्रियसञ्ज्ञ्यसञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामुत्पत्तिः । ९७३
८६६ कृष्णलेश्यादिकृतयुग्म २ सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियाणामुत्पत्तिः, एकविंशतिः सञ्ज्ञिमहायुग्मशतानि, एकाशीतिर्महायुग्मशतानि । ९७५
॥ ४० शतानि ॥
८६७ कृतयुग्मनारकादीनां सान्तरनिरन्तरमुत्पादः, युगपद् द्वियुग्मता, आत्मयशोऽयशउपजीवनं, सलेश्यालेश्यक्रियाक्रियसिद्ध्यादि, त्र्योजादीनां कृष्णलेश्यादिकृतयुग्मादीनां भव्याभव्यसम्यग्मिथ्यादृष्टिकृष्णशुक्लपाक्षिककृतयुग्मनारकादीनामुत्पत्त्यादि । ९७८
॥ १९६ उद्देशाः ॥
॥ एकचत्वारिंशत्तमं शतम् ॥
८६८ प्रदक्षिणावन्दनादियुक्तस्याङ्गीकारः । ९७८

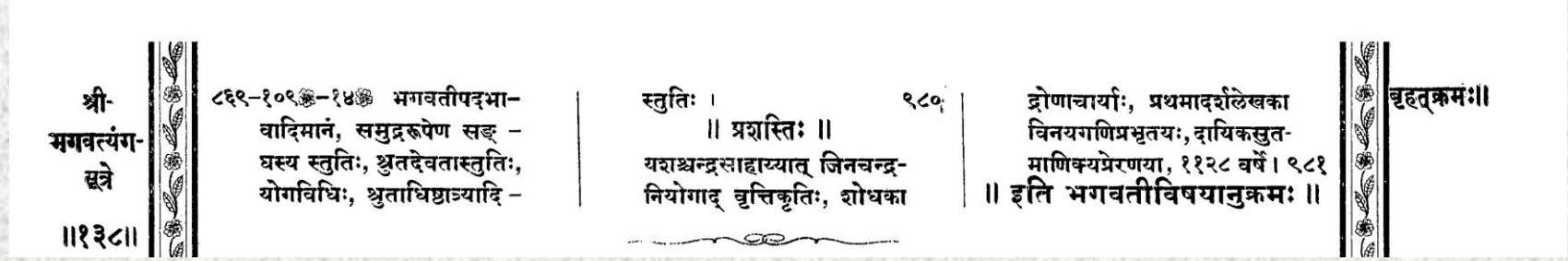
बृहत्क्रमः॥

॥१३७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३८॥

८६९-१०९-१४ भगवतीपदभा-
वादिमानं, समुद्ररूपेण सङ्-
घस्य स्तुतिः, श्रुतदेवतास्तुतिः,
योगविधिः, श्रुताधिष्ठाय्यादि-
स्तुतिः । ९८०
॥ प्रशस्तिः ॥
यशश्चन्द्रसाहाय्यात् जिनचन्द्र-
नियोगाद् वृत्तिकृतिः, शोधका
द्रोणाचार्याः, प्रथमादर्शलेखका
विनयगणिप्रभृतयः, दायिकसुत-
माणिक्यप्रेरणया, ११२८ वर्षे । ९८१
॥ इति भगवतीविषयानुक्रमः ॥
बृहत्क्रमः॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

ज्ञाताधर्मकथायाः विषयानुक्रमः

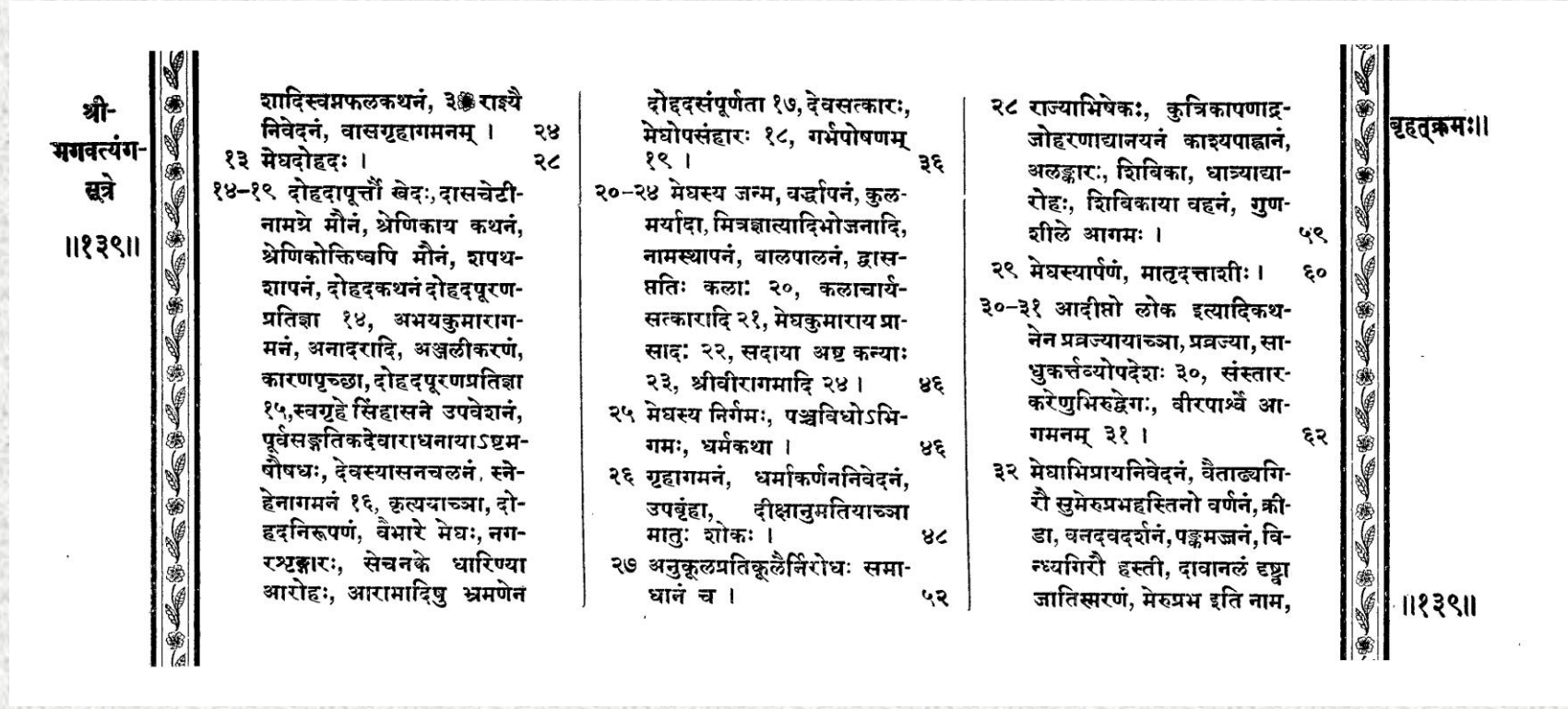
सूत्राणि १५६ सूत्रागाथाः ११४

मङ्गलादि ॥
१ चम्पावर्णनातिदेशः (वर्णनम्)। १
२ पूर्णभद्रचैत्यातिदेशः(वर्णनम्)। २
३ कोणिकनृपवर्णनातिदेशः (वर्णनम्) । ३
४ सुधर्मगणभृद्वर्णनम् । ७
५, १–२ पर्षन्निर्गमादि, जम्बूपृच्छा, उपोद्घातः, उत्क्षिप्तज्ञातादि (१९) नामानि १ २ । १०
६–७ नन्दावर्णनातिदेशः (वर्णनम्) ६, अभयकुमारवर्णनम् ७ । १२
८–९ धारिणीवर्णनातिदेशः (वर्णनम्)८,वासगृहवर्णनं,गजस्वप्नः, निवेदनं, फलपृच्छा च ९। १७
१०–११ उपबृंहणा १०, स्वप्नप्रतीच्छा, धार्मिककथाभिः स्वप्नजागरिका११।१८
१२ । ३ श्रेणिकस्य स्नानं, भद्रासनरचनं, स्वप्नपाठकाह्वानं, चतुर्द- ॥१३८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१३९॥

शादिस्वप्नफलकथनं, ३ राज्ञे निवेदनं, वासगृहागमनम् । २४
१३ मेघदोहदः । २८
१४–१९ दोहदापूर्त्तौ खेदः, दासचेटी-नामग्रे मौनं, श्रेणिकाय कथनं, श्रेणिकोक्तिष्वपि मौनं, शपथ-शापनं, दोहदकथनं दोहदपूरण-प्रतिज्ञा १४, अभयकुमारागमनं, अनादरादि, अञ्जलीकरणं, कारणपृच्छा, दोहदपूरणप्रतिज्ञा १५, स्वगृहे सिंहासने उपवेशनं, पूर्वसङ्गतिकदेवाराधनायाऽष्टमपौषधः, देवस्यासनचलनं, स्नेहेनागमनं १६, कृत्यायाच्ञा, दोहदनिरूपणं, वैभारे मेघः, नगरश्रृङ्गारः, सेचनके धारिण्या आरोहः, आरामादिषु भ्रमणेन दोहदसंपूर्णता १७, देवसत्कारः, मेघोपसंहारः १८, गर्भपोषणम् १९ । ३६
२०–२४ मेघस्य जन्म, वर्द्धापनं, कुलमर्यादा, मित्रज्ञात्यादिभोजनादि, नामस्थापनं, बालपालनं, द्वासप्ततिः कलाः २०, कलाचार्यसत्कारादि २१, मेघकुमाराय प्रासादः २२, सदाया अष्ट कन्याः २३, श्रीवीरागमादि २४ । ४६
२५ मेघस्य निर्गमः, पञ्चविधोऽभिगमः, धर्मकथा । ४६
२६ गृहागमनं, धर्माकर्णननिवेदनं, उपबृंहा, दीक्षानुमतियाच्ञा मातुः शोकः । ४८
२७ अनुकूलप्रतिकूलैर्निरोधः समाधानं च । ५२
२८ राज्याभिषेकः, कुत्रिकापणाद्रजोहरणाद्यानयनं काश्यपाह्वानं, अलङ्कारः, शिबिका, धात्र्याद्यारोहः, शिबिकाया वहनं, गुणशीले आगमः । ५९
२९ मेघस्यार्पणं, मातृदत्ताशीः । ६०
३०–३१ आदीत्तो लोक इत्यादिकथनेन प्रव्रज्यायाच्ञा, प्रव्रज्या, साधुकर्त्तव्योपदेशः ३०, संस्तारकरेणुभिरुद्वेगः, वीरपार्श्वे आगमनम् ३१ । ६२
३२ मेघाभिप्रायनिवेदनं, वैताढ्यगिरौ सुमेरुप्रभहस्तिनो वर्णनं, क्रीडा, वनदवदर्शनं, पङ्कमज्जनं, विन्ध्यगिरौ हस्ती, दावानलं दृष्ट्वा जातिस्मरणं, मेरुप्रभ इति नाम,

बृहत्क्रमः॥

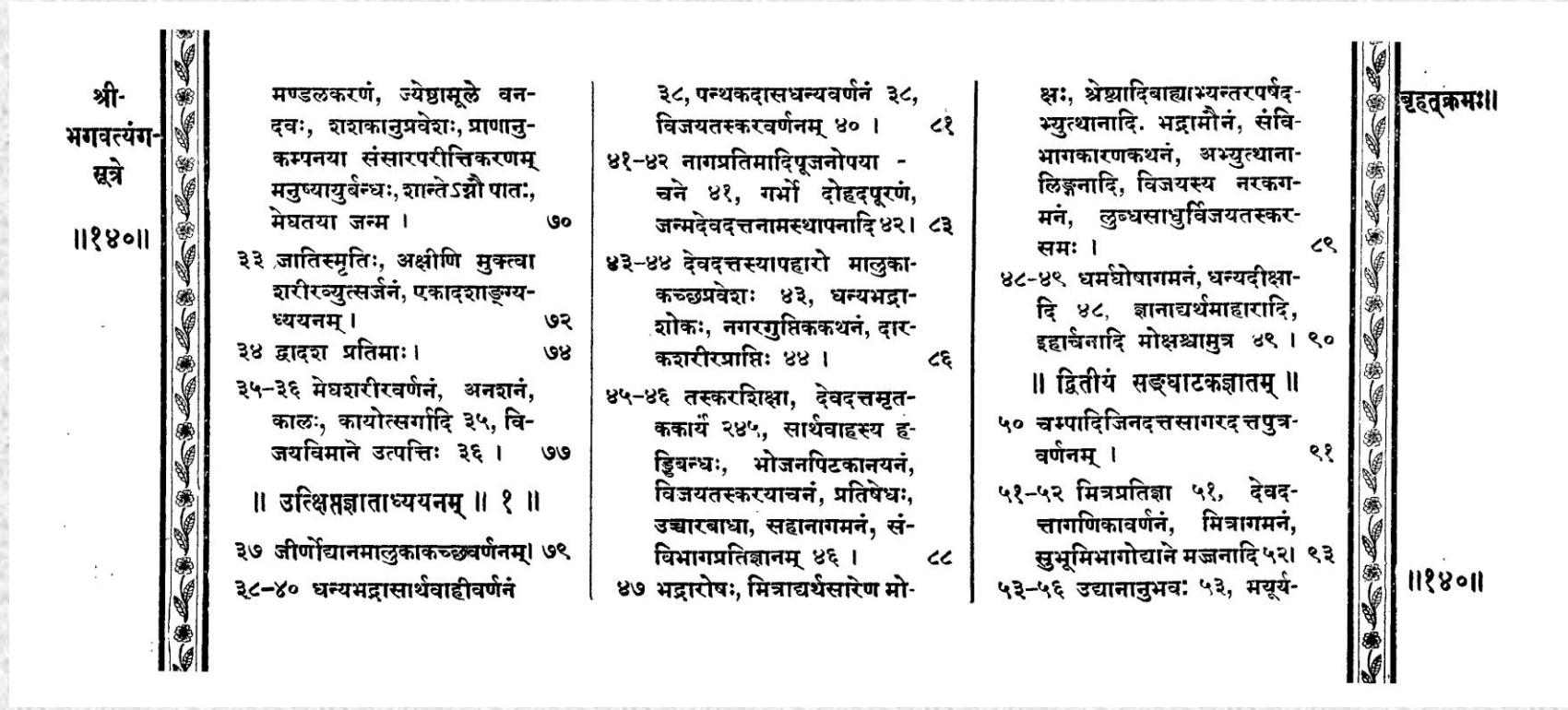
॥१३९॥

*** अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'भगवत्यंग' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१४०॥

मण्डलकरणं, ज्येष्ठामूले वनदवः, शशकानुप्रवेशः, प्राणानुकम्पनया संसारपरीत्तिकरणम् मनुष्यायुर्बन्धः, शान्तेऽग्नौ पातः, मेघतया जन्म । ७०

३३ जातिस्मृतिः, अक्षीणि मुक्त्वा शरीरव्युत्सर्जनं, एकादशाङ्ग्यध्ययनम् । ७२

३४ द्वादश प्रतिमाः । ७४

३५-३६ मेघशरीरवर्णनं, अनशनं, कालः, कायोत्सर्गादि ३५, विजयविमाने उत्पत्तिः ३६ । ७७

॥ उत्क्षिप्तज्ञाताध्ययनम् ॥ १ ॥

३७ जीर्णोद्यानमालुकाकच्छवर्णनम् । ७९

३८-४० धन्यभद्रासार्थवाहीवर्णनं ३८, पन्थकदासधन्यवर्णनं ३८, विजयतस्करवर्णनम् ४० । ८१

४१-४२ नागप्रतिमादिपूजनोपयाचने ४१, गर्भो दोहदपूरणं, जन्मदेवदत्तनामस्थापनादि ४२। ८३

४३-४४ देवदत्तस्यापहारो मालुकाकच्छप्रवेशः ४३, धन्यभद्राशोकः, नगरगुप्तिककथनं, दारकशरीरप्राप्तिः ४४ । ८६

४५-४६ तस्करशिक्षा, देवदत्तमृतककार्यं २४५, सार्थवाहस्य हड्डिबन्धः, भोजनपिटकानयनं, विजयतस्करयाचनं, प्रतिषेधः, उच्चारबाधा, सहानागमनं, संविभागप्रतिज्ञानम् ४६ । ८८

४७ भद्रारोषः, मित्राद्यर्थसारेण मोक्षः, श्रेष्ठ्यादिबाह्याभ्यन्तरपर्षद्भ्युत्थानादि. भद्रामौनं, संविभागकारणकथनं, अभ्युत्थानालिङ्गनादि, विजयस्य नरकगमनं, लुब्धसाधुर्विजयतस्करसमः । ८९

४८-४९ धर्मघोषागमनं, धन्यदीक्षादि ४८, ज्ञानाद्यर्थमाहारादि, इहार्चनादि मोक्षश्चामुत्र ४९ । ९०

॥ द्वितीयं सङ्घाटकज्ञातम् ॥

५० चम्पादिजिनदत्तसागरदत्तपुत्रवर्णनम् । ९१

५१-५२ मित्रप्रतिज्ञा ५१, देवदत्तागणिकावर्णनं, मित्रागमनं, सुभूमिभागोद्याने मज्जनादि ५२। ९३

५३-५६ उद्यानानुभवः ५३, मयूर्य-

बृहत्क्रमः॥

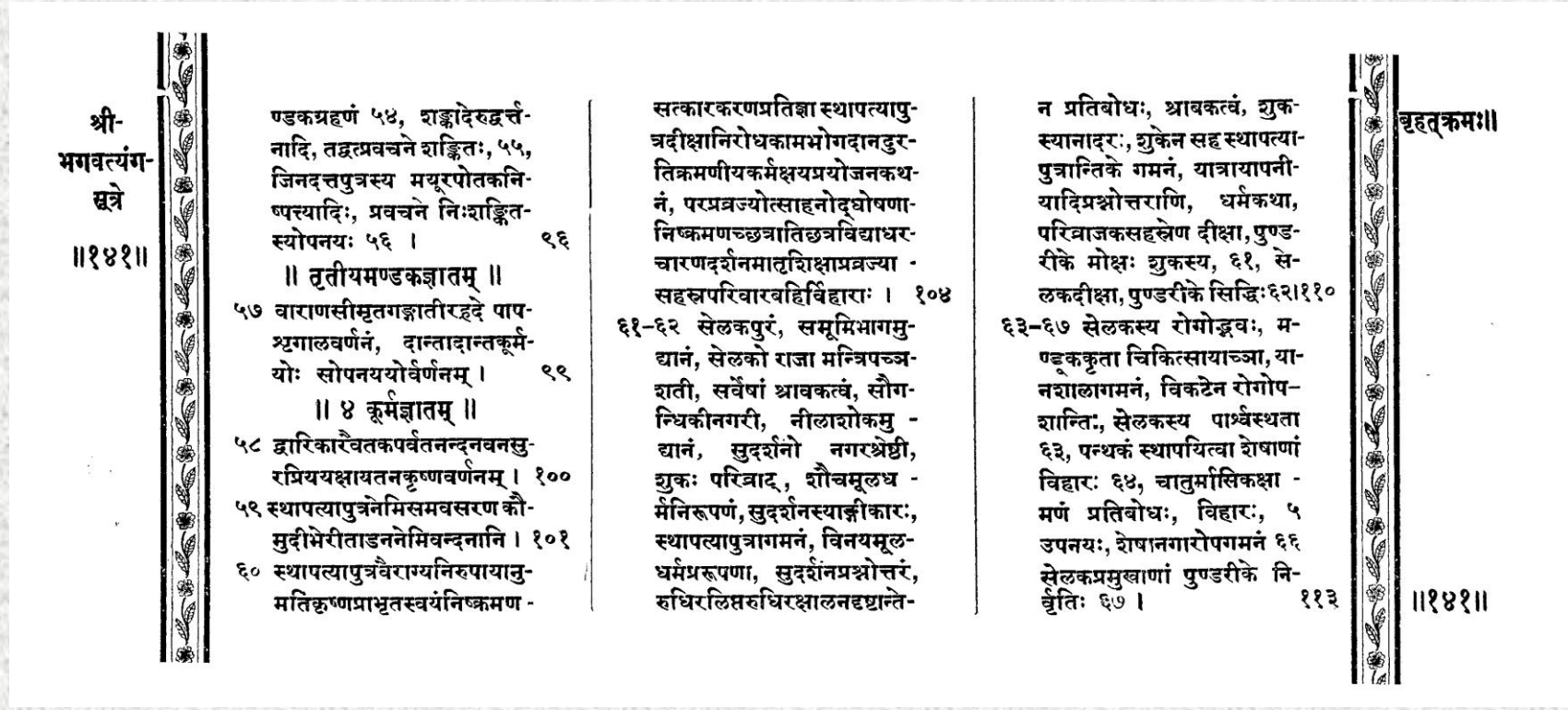
॥१४०॥

*** अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'भगवत्यंग' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१४१॥

ण्डकग्रहणं ५४, शङ्कादेरुद्धर्त्त-
नादि, तद्वत्प्रवचने शङ्कितः, ५५,
जिनदत्तपुत्रस्य मयूरपोतकनि-
ष्पत्त्यादिः, प्रवचने निःशङ्कित-
स्योपनयः ५६ । ९६

॥ तृतीयमण्डकज्ञातम् ॥

५७ वाराणसीमृतगङ्गातीरहृदे पाप-
श्रृगालवर्णनं, दान्तादान्तकूर्म-
योः सोपनययोर्वर्णनम् । ९९

॥ ४ कूर्मज्ञातम् ॥

५८ द्वारिकारैवतकपर्वतनन्दनवनसु-
रप्रिययक्षायतनकृष्णवर्णनम् । १००
५९ स्थापत्यापुत्रनेमिसमवसरण कौ-
मुदीभेरीताडननेमिवन्दनानि । १०१
६० स्थापत्यापुत्रवैराग्यनिरुपायानु-
मतिकृष्णप्राभृतस्वयंनिष्क्रमण -
सत्कारकरणप्रतिज्ञा स्थापत्यापु-
त्रदीक्षानिरोधकामभोगदानदुर-
तिक्रमणीयकर्मक्षयप्रयोजनकथ-
नं, परप्रव्रज्योत्साहनोद्घोषणा-
निष्क्रमणच्छत्रातिछत्रविद्याधर-
चारणदर्शनमातृशिक्षाप्रव्रज्या -
सहस्रपरिवारबहिर्विहाराः । १०४
६१-६२ सेलकपुरं, समूमिभागमु-
द्यानं, सेलको राजा मन्त्रिपञ्च-
शती, सर्वेषां श्रावकत्वं, सौग-
न्धिकीनगरी, नीलाशोकमु -
द्यानं, सुदर्शनो नगरश्रेष्ठी,
शुकः परिव्राट्, शौचमूलध -
र्मनिरूपणं, सुदर्शनस्याङ्गीकारः,
स्थापत्यापुत्रागमनं, विनयमूल-
धर्मप्ररूपणा, सुदर्शनप्रश्नोत्तरं,
रुधिरलिप्तरुधिरक्षालनदृष्टान्ते-
न प्रतिबोधः, श्रावकत्वं, शुक-
स्यानादरः, शुकेन सह स्थापत्या-
पुत्रान्तिके गमनं, यात्रायापनी-
यादिप्रश्नोत्तराणि, धर्मकथा,
परिव्राजकसहस्रेण दीक्षा, पुण्ड-
रीके मोक्षः शुकस्य, ६१, से-
लकदीक्षा, पुण्डरीके सिद्धिः६२।११०
६३-६७ सेलकस्य रोगोद्भवः, म-
ण्डूककृता चिकित्सायाच्ञा, या-
नशालागमनं, विकटेन रोगोप-
शान्तिः, सेलकस्य पार्श्वस्थता
६३, पन्थकं स्थापयित्वा शेषाणां
विहारः ६४, चातुर्मासिकक्षा -
मणं प्रतिबोधः, विहारः, ५
उपनयः, शेषानगारोपगमनं ६६
सेलकप्रमुखाणां पुण्डरीके नि-
र्वृतिः ६७ । ११३

बृहत्क्रमः॥

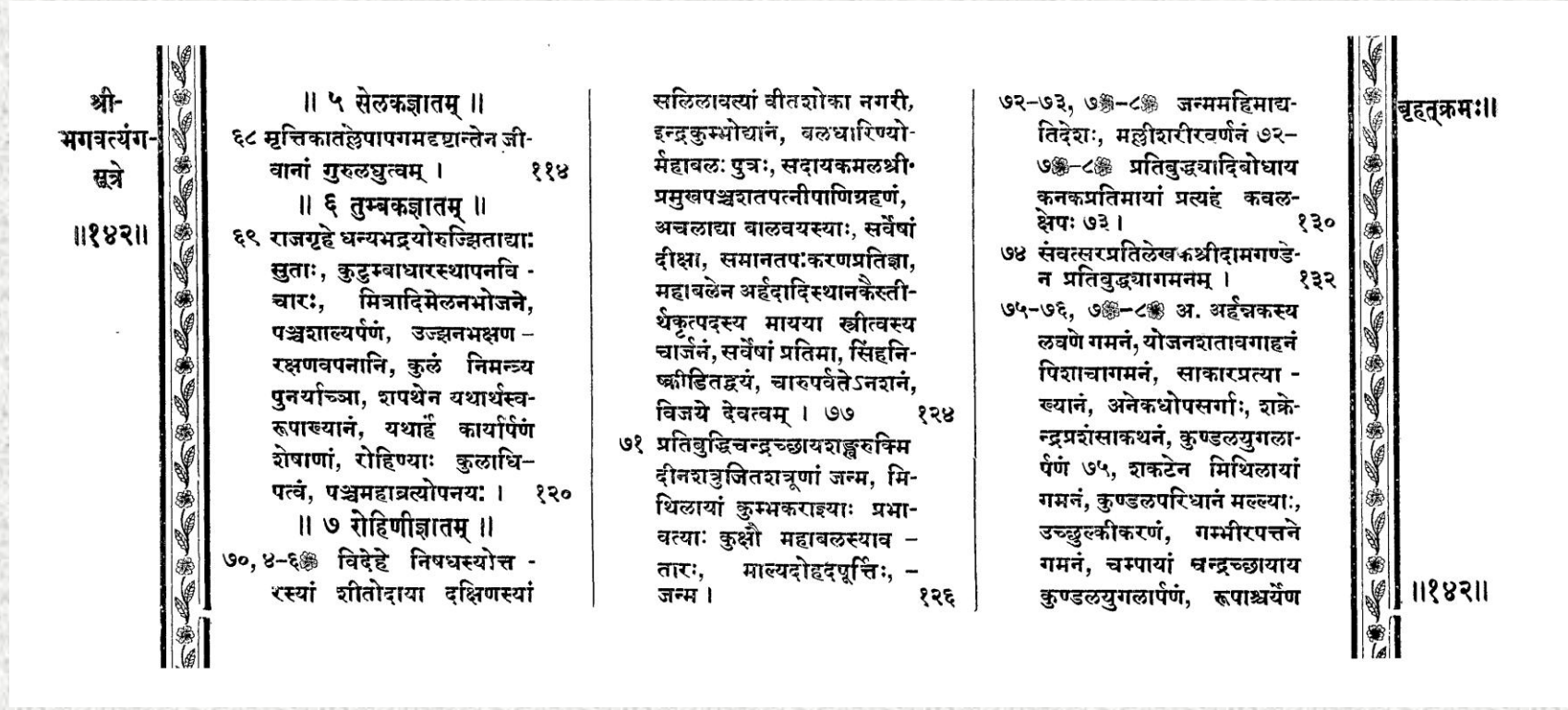
॥१४१॥

*** अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'भगवत्यंग' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१४२॥

॥ ५ सेलकज्ञातम् ॥

६८ मृत्तिकातलेपापगमदृष्टान्तेन जीवानां गुरुलघुत्वम् । ११४

॥ ६ तुम्बकज्ञातम् ॥

६९ राजगृहे धन्यभद्रयोरुज्झिताद्याः सुताः, कुटुम्बाधारस्थापनविचारः, मित्रादिमेलनभोजने, पञ्चशाल्यर्पणं, उज्झनभक्षण–रक्षणवपनानि, कुलं निमन्त्र्य पुनर्याच्ञा, शपथेन यथार्थस्वरूपाख्यानं, यथार्हं कार्यार्पणं शेषाणां, रोहिण्याः कुलाधिपत्वं, पञ्चमहाव्रत्योपनयः । १२०

॥ ७ रोहिणीज्ञातम् ॥

७०, ४–६ विदेहे निषधस्योत्तरस्यां शीतोदाया दक्षिणस्यां सलिलावत्यां वीतशोका नगरी, इन्द्रकुम्भोद्यानं, बलधारिण्योर्महाबलः पुत्रः, सदायकमलश्रीप्रमुखपञ्चशतपत्नीपाणिग्रहणं, अचलाद्या बालवयस्याः, सर्वेषां दीक्षा, समानतपःकरणप्रतिज्ञा, महाबलेन अर्हदादिस्थानकैस्तीर्थकृत्पदस्य मायया स्त्रीत्वस्य चार्जनं, सर्वेषां प्रतिमा, सिंहनिष्क्रीडितद्वयं, चारुपर्वतेऽनशनं, विजये देवत्वम् । ७७ १२४

७१ प्रतिबुद्धिचन्द्रच्छायशङ्खरुक्मिदीनशत्रुजितशत्रूणां जन्म, मिथिलायां कुम्भकराज्ञ्याः प्रभावत्याः कुक्षौ महाबलस्यावतारः, माल्यदोहदपूर्त्तिः, –जन्म । १२६

७२–७३, ७–८ जन्ममहिमाद्यतिदेशः, मल्लीशरीरवर्णनं ७२–७–८ प्रतिबुद्ध्यादिबोधाय कनकप्रतिमायां प्रत्यहं कवलक्षेपः ७३ । १३०

७४ संवत्सरप्रतिलेखकश्रीदामगण्डेन प्रतिबुद्ध्यागमनम् । १३२

७५–७६, ७–८ अ. अर्हन्नकस्य लवणे गमनं, योजनशतावगाहनं पिशाचागमनं, साकारप्रत्याख्यानं, अनेकधोपसर्गाः, शक्रेन्द्रप्रशंसाकथनं, कुण्डलयुगलार्पणं ७५, शकटेन मिथिलायां गमनं, कुण्डलपरिधानं मल्ल्याः, उच्छुल्कीकरणं, गम्भीरपत्तने गमनं, चम्पायां चन्द्रच्छायाय कुण्डलयुगलार्पणं, रूपाश्चर्येण

बृहत्क्रमः॥

॥१४२॥

*** अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'भगवत्यंग' इति मुद्रितं

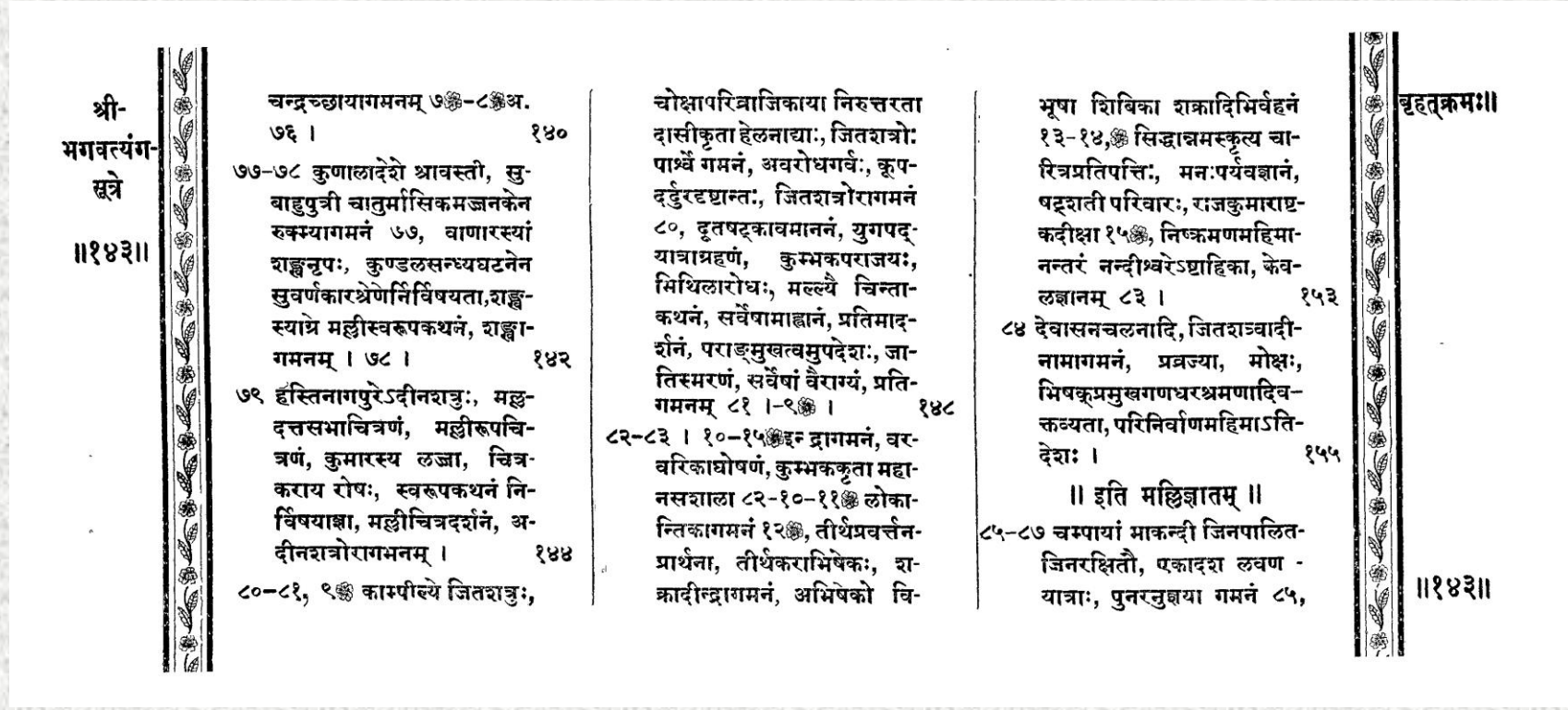
[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-६. "ज्ञाताधर्मकथा"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-भगवत्यंग-सूत्रे

॥१४३॥

चन्द्रच्छायागमनम् ७॥-८॥अ. ७६ । १४०

७७-७८ कुणालादेशे श्रावस्ती, सुबाहुपुत्री चातुर्मासिकमज्जनकेन रुक्म्यागमनं ७७, वाणारस्यां शङ्खनृपः, कुण्डलसन्ध्यघटनेन सुवर्णकारश्रेणेर्निर्विषयता,शङ्खस्याग्रे मल्लीस्वरूपकथनं, शङ्खागमनम् । ७८ । १४२

७९ हस्तिनागपुरेऽदीनशत्रुः, मल्लदत्तसभाचित्रणं, मल्लीरूपचित्रणं, कुमारस्य लज्जा, चित्रकराय रोषः, स्वरूपकथनं निर्विषयाज्ञा, मल्लीचित्रदर्शनं, अदीनशत्रोरागभनम् । १४४

८०-८१, ९॥ काम्पील्ये जितशत्रुः, चोक्षापरिव्राजिकाया निरुत्तरता दासीकृता हेलनाद्याः, जितशत्रोः पार्श्वे गमनं, अवरोधगर्वः, कूपदर्दुरदृष्टान्तः, जितशत्रोरागमनं ८०, दूतषट्कावमाननं, युगपद्यात्राग्रहणं, कुम्भकपराजयः, मिथिलारोधः, मल्ल्यै चिन्ताकथनं, सर्वेषामाह्वानं, प्रतिमादर्शनं, पराङ्मुखत्वमुपदेशः, जातिस्मरणं, सर्वेषां वैराग्यं, प्रतिगमनम् ८१ ।-९॥ । १४८

८२-८३ । १०-१५॥इन्द्रागमनं, वरवरिकाघोषणं, कुम्भककृता महानसशाला ८२-१०-११॥ लोकान्तिकागमनं १२॥, तीर्थप्रवर्त्तनप्रार्थना, तीर्थकराभिषेकः, शक्रादीन्द्रागमनं, अभिषेको विभूषा शिबिका शक्रादिभिर्वहनं १३-१४॥ सिद्धान्तमस्कृत्य चारित्रप्रतिपत्तिः, मनःपर्यवज्ञानं, षट्शती परिवारः, राजकुमाराष्टकदीक्षा १५॥, निष्क्रमणमहिमानन्तरं नन्दीश्वरेऽष्टाह्निका, केवलज्ञानम् ८३ । १५३

८४ देवासनचलनादि, जितशत्रुवादीनामागमनं, प्रव्रज्या, मोक्षः, भिषक्प्रमुखगणधरश्रमणादिवक्तव्यता, परिनिर्वाणमहिमाऽतिदेशः । १५५

॥ इति मल्लिज्ञातम् ॥

८५-८७ चम्पायां माकन्दी जिनपालितजिनरक्षितौ, एकादश लवण - यात्राः, पुनरनुज्ञया गमनं ८५,

बृहत्क्रमः॥

॥१४३॥

*** अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'भगवत्यंग' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-भगवत्यंग-सूत्रे ॥१४४॥

उपद्रवः, नौभङ्गः ८६, रत्न-द्वीपः, फलाहारः, नालिकेर-तैलाभ्यङ्गः, देवतागमनं, भो-गाः ८७। १५९

८८। १६-२१ लवणशुद्ध्यै गमनं, पूर्वादिवनखण्डतदृक्षतुवर्णनम् १६-२१, दक्षिणवनखण्डग-मननिषेधः ८८। १६२

८९-९५। २२-३१ प्रासादादिष्वर-तिः, दक्षिणवनखण्डे आघातन-दर्शनं, शूलायितकाकन्दिकाश्व-वणिग्वृत्तान्तः, सेलकयक्षस्ता-रकः ८९., यक्षपार्श्वे गमनं, पूजा, प्रार्थना, दृढत्वप्रतिज्ञा, वैक्रियं, चम्पायै गमनं ९०, देवताऽऽग-मनं, कुमारादर्शनं, लवणे आग-मनं, विलापः २२-२९ जिनर-क्षितस्य मोहः, शनैर्यक्षेणोत्तारि-तः, देव्या बलीकृतः ९१, कामभो-गासक्तश्रमणैरुपनयः ३०-३१ ९२, जिनपालितस्य दृढता, चम्पागमनं ९३, जिनरक्षितवृ-त्तान्तनिवेदनं ९४, प्रव्रज्या, सौधर्मे देवः, अनासक्तस्योप-नयः। १६९

॥ ९ माकन्दीज्ञातम् ॥

९६ चन्द्रवृद्धिहानिदृष्टान्तेन जीववृ-द्धिहानिकथनम्। १७१

॥ १० चन्द्रज्ञातम् ॥

९७ द्वीपगवातेन दावद्रवा इवान्य-तीर्थिकासहनादेशविराधकः,स-मुद्रवातवत् श्रमणाद्यसहनादेशा-राधकः, उभयाभावात्सर्वविरा-धकः, उभयभावात्सर्वाराधकः।१७३

॥ ११ दावद्रवज्ञातम् ॥

९८-९९ जितशत्रू राजा, धारिणी देवी, अदीनशत्रुर्युवराजः, सुबुद्धिरमा-त्यः, परिखोदकवर्णनं ९८, भोज-नस्य वर्णनं, सुबुद्धिकृतं पुद्गल-स्वरूपवर्णनं, नृपस्याश्रद्धानं, अ-श्ववाहनिका, परिखोदकनिन्दा, तत्त्वाभिगमनविचारः, परिखो-दकानयनसंस्कारौ, जितशत्रो-रुपनयनं, स्थानपृच्छा, यथार्था-ख्यानं, प्रतीतिः, जिनभावश्रवणे-च्छा, द्वादशव्रतग्रहणं, स्थविरा-गमनं, प्रव्रज्येच्छा, द्वादशवर्ष-रोधः, उभयोर्दीक्षादि ९९। १७७

बृहत्क्रमः॥

॥१४४॥

*** अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'भगवत्यंग' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ इति १२ उदकज्ञातम् ॥

१०० दर्दुरदेवागमः,नन्दस्य श्रावकत्वं, साध्वदर्शनादिना मिथ्यात्वं, ज्येष्ठेऽष्टमभक्तपौषधः, तृषाऽभिभवः, पुष्करिणीखननविचारः, राजाऽनुज्ञा, पुष्करिणीवनखण्डचित्रसभामहानसशालाचिकित्सकशालाअलङ्कारिकसभाकरणं,प्रशंसा । १८१

१०१–३२ षोडश रोगाः, उद्वलनादिभिरनुपशमः, पुष्करिणीमूर्च्छया दर्दुरता, प्रशंसा, स्मरणाज्जातिस्मृतिः, पूर्वप्रतिपन्नव्रताङ्गीकारः, षष्ठषष्ठाभिग्रहः, वन्दनाय गमनं, श्रेणिकराजाश्वेनाक्रमणं, सर्ववधादिप्रत्याख्यानम् । १८४

॥ इति १३ दर्दुरज्ञातम् ॥

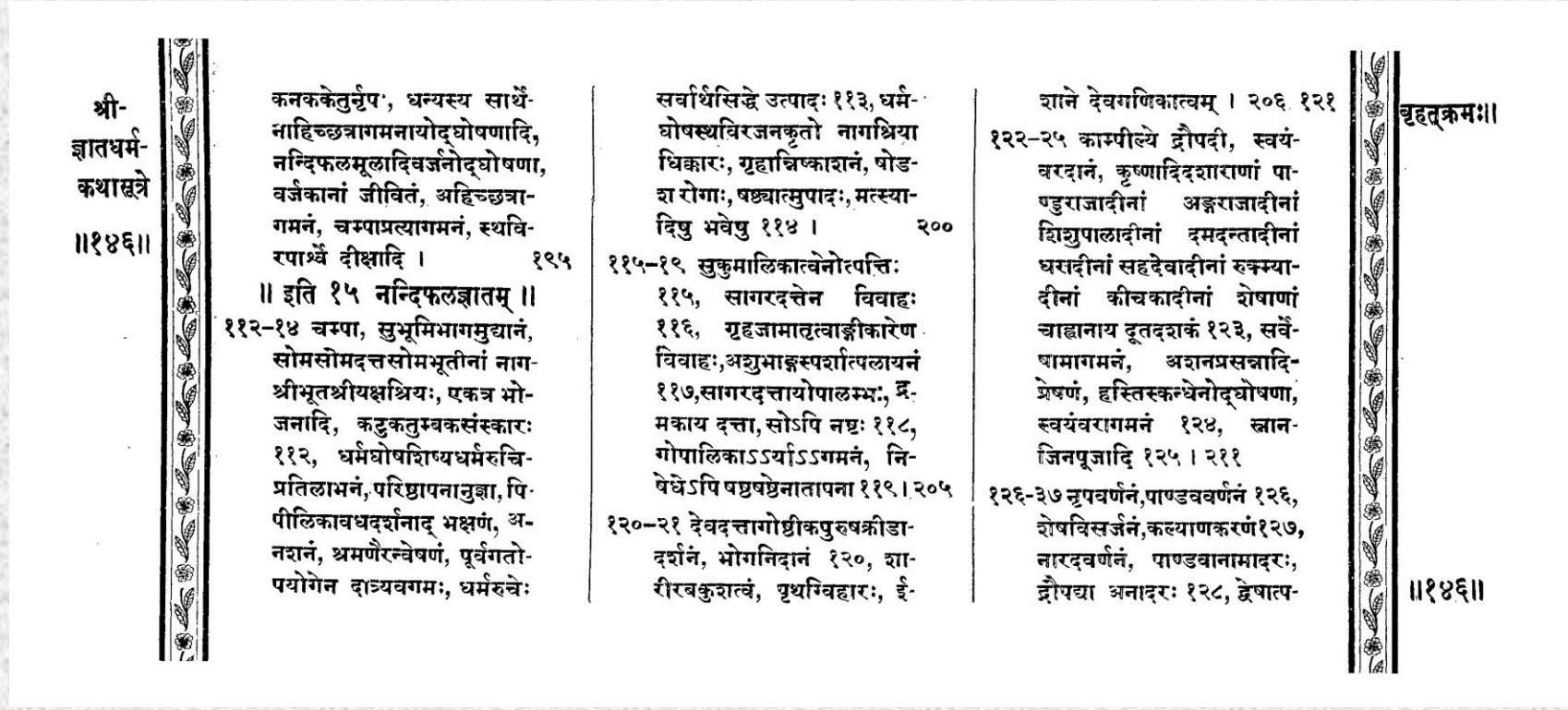
१०२–५ तेतलिपुरं, कनकरथो देवः, पद्मावती देवी, तेतलिरमात्यः, कलादो मूषिकारः, पोट्टिला पुत्री, अभ्यन्तरस्थानीयेन पुत्रीयाचना, सत्कार्य विसर्जनं, गत्वा पोट्टिलादानं १०२, पुत्रव्यङ्गनं, अमात्याय कुमारार्पणं, पोट्टिलाकृतं मृतदारिकादर्शनं, कनकध्वजनामकरणं, १०३, अनिष्टया पोट्टिलया दानादिकारणं १०४, सुव्रताऽऽर्याऽऽगमनं, चूर्णयोगादिपृच्छा, धर्मकथा, श्राविकात्वम् १०५ । १८८

१०६–७ देवीभूतेनागमनस्य प्रतिज्ञानात्प्रव्रज्याऽनुज्ञा, देवत्वं १०६, नृपमरणं,नृपयाच्ञा,रहस्यकथनं अभिषेकः, अमात्योपकारनिवेदनं, अर्धासनेनोपनिमंत्रणादि १०७ । १८९

१०८–१० अबोधान्नृपरुष्टताकरणं, बाह्याभ्यन्तरपर्षदोरनादरः,तालपुटादिनाऽप्यमरणं,प्रपातहस्तिनद्यादिदर्शनं, प्रव्रज्याशरणाभिसन्धिः १०८, जातिस्मरणं, स्वयं महाव्रतारोपः, चतुर्दशपूर्वाभिसमागमः, केवलं १०९, व्यन्तरकृतौ दुन्दुभिनादपुष्पवर्षौ, कनकध्वजागमनं, द्वादश व्रतानि, तेतलिसिद्धिः ११० । १९२

॥ इति १४ तेतलिज्ञातम् ॥

१११ चम्पा, धन्यः, ईशानेऽहिच्छत्रा,



श्री-ज्ञातधर्म-कथासूत्रे ॥१४६॥

कनककेतुर्नृप', धन्यस्य सार्थे-नाहिच्छत्रागमनायोद्घोषणादि, नन्दिफलमूलादिवर्जनोद्घोषणा, वर्जकानां जीवितं, अहिच्छत्रा-गमनं, चम्पाप्रत्यागमनं, स्थवि-रपार्श्वे दीक्षादि । १९५

॥ इति १५ नन्दिफलज्ञातम् ॥

११२-१४ चम्पा, सुभूमिभागमुद्यानं, सोमसोमदत्तसोमभूतीनां नाग-श्रीभूतश्रीयक्षश्रियः, एकत्र भो-जनादि, कटुकतुम्बकसंस्कारः ११२, धर्मघोषशिष्यधर्मरुचि-प्रतिलाभनं, परिष्ठापनानुज्ञा, पि-पीलिकावधदर्शनाद् भक्षणं, अ-नशनं, श्रमणैरन्वेषणं, पूर्वगतो-पयोगेन दात्र्यवगमः, धर्मरुचेः सर्वार्थसिद्धे उत्पादः ११३, धर्म-घोषस्थविरजनकृतो नागश्रिया धिक्कारः, गृहान्निष्काशनं, षोड-श रोगाः, षष्ठ्यात्मुपादः, मत्स्या-दिषु भवेषु ११४ । २००

११५-१९ सुकुमालिकात्वेनोत्पत्तिः ११५, सागरदत्तेन विवाहः ११६, गृहजामातृत्वाङ्गीकारेण विवाहः, अशुभाङ्गस्पर्शात्पलायनं ११७, सागरदत्तायोपालम्भः, द्रु-मकाय दत्ता, सोऽपि नष्टः ११८, गोपालिकाऽऽर्याऽऽगमनं, नि-षेधेऽपि षष्ठषष्ठेनातापना ११९ । २०५

१२०-२१ देवदत्तागोष्ठीकपुरुषक्रीडा-दर्शनं, भोगनिदानं १२०, शा-रीरबकुशत्वं, पृथग्विहारः, ई-शाने देवगणिकात्वम् । २०६ १२१

१२२-२५ काम्पील्ये द्रौपदी, स्वयं-वरदानं, कृष्णादिदशाराणां पा-ण्डुराजादीनां अङ्गराजादीनां शिशुपालादीनां दमदन्तादीनां धरादीनां सहदेवादीनां रुक्म्या-दीनां कीचकादीनां शेषाणां चाह्वानाय दूतदशकं १२३, सर्वे-षामागमनं, अशनप्रसन्नादि-प्रेषणं, हस्तिस्कन्धेनोद्घोषणा, स्वयंवरागमनं १२४, स्नान-जिनपूजादि १२५ । २११

१२६-२७ नृपवर्णनं, पाण्डववर्णनं १२६, शेषविसर्जनं, कल्याणकरणं १२७, नारदवर्णनं, पाण्डवानामादरः, द्रौपद्या अनादरः १२८, द्वेषात्प-

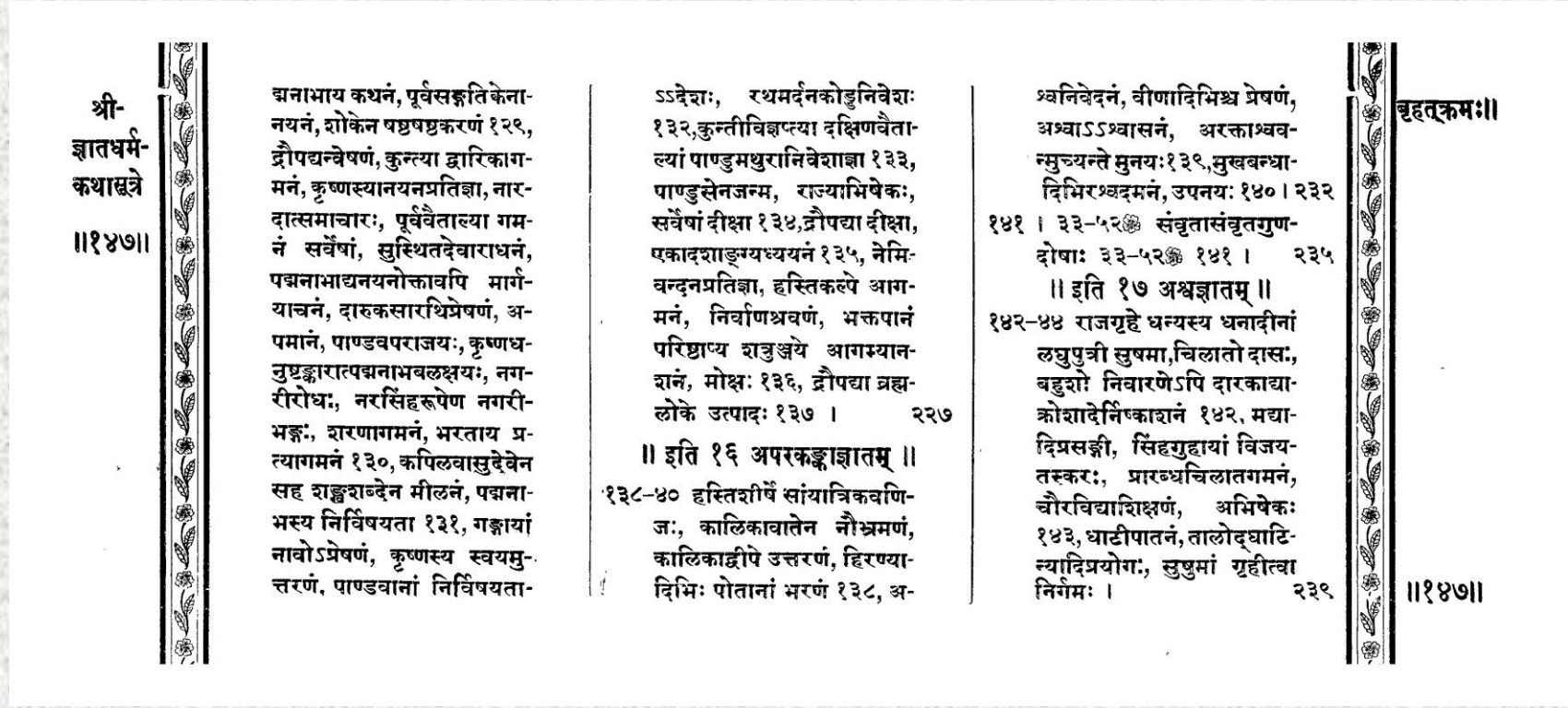
बृहत्क्रमः॥

॥१४६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-ज्ञातधर्म-कथासूत्रे ॥१४७॥

बृहत्क्रमः॥

द्मनाभाय कथनं, पूर्वसङ्गतिकेना-
नयनं, शोकेन षष्ठषष्ठकरणं १२९,
द्रौपद्यन्वेषणं, कुन्त्या द्वारिकाग-
मनं, कृष्णस्यानयनप्रतिज्ञा, नार-
दात्समाचारः, पूर्ववैताल्या गम-
नं सर्वेषां, सुस्थितदेवाराधनं,
पद्मनाभाद्यनयनोक्तावपि मार्ग-
याचनं, दारुकसारथिप्रेषणं, अ-
पमानं, पाण्डवपराजयः, कृष्णध-
नुष्टङ्कारात्पद्मनाभबलक्षयः, नग-
रीरोधः, नरसिंहरूपेण नगरी-
भङ्गः, शरणागमनं, भरताय प्र-
त्यागमनं १३०, कपिलवासुदेवेन
सह शङ्खशब्देन मीलनं, पद्मना-
भस्य निर्विषयता १३१, गङ्गायां
नावोऽप्रेषणं, कृष्णस्य स्वयमु-
त्तरणं, पाण्डवानां निर्विषयता-
ऽऽदेशः, रथमर्दनकोडुनिवेशः
१३२, कुन्तीविज्ञप्त्या दक्षिणवैता-
ल्यां पाण्डुमथुरानिवेशाज्ञा १३३,
पाण्डुसेनजन्म, राज्याभिषेकः,
सर्वेषां दीक्षा १३४, द्रौपद्या दीक्षा,
एकादशाङ्गयध्ययनं १३५, नेमि-
वन्दनप्रतिज्ञा, हस्तिकल्पे आग-
मनं, निर्वाणश्रवणं, भक्तपानं
परिष्ठाप्य शत्रुञ्जये आगम्यान-
शनं, मोक्षः १३६, द्रौपद्या ब्रह्म-
लोके उत्पादः १३७ । २२७

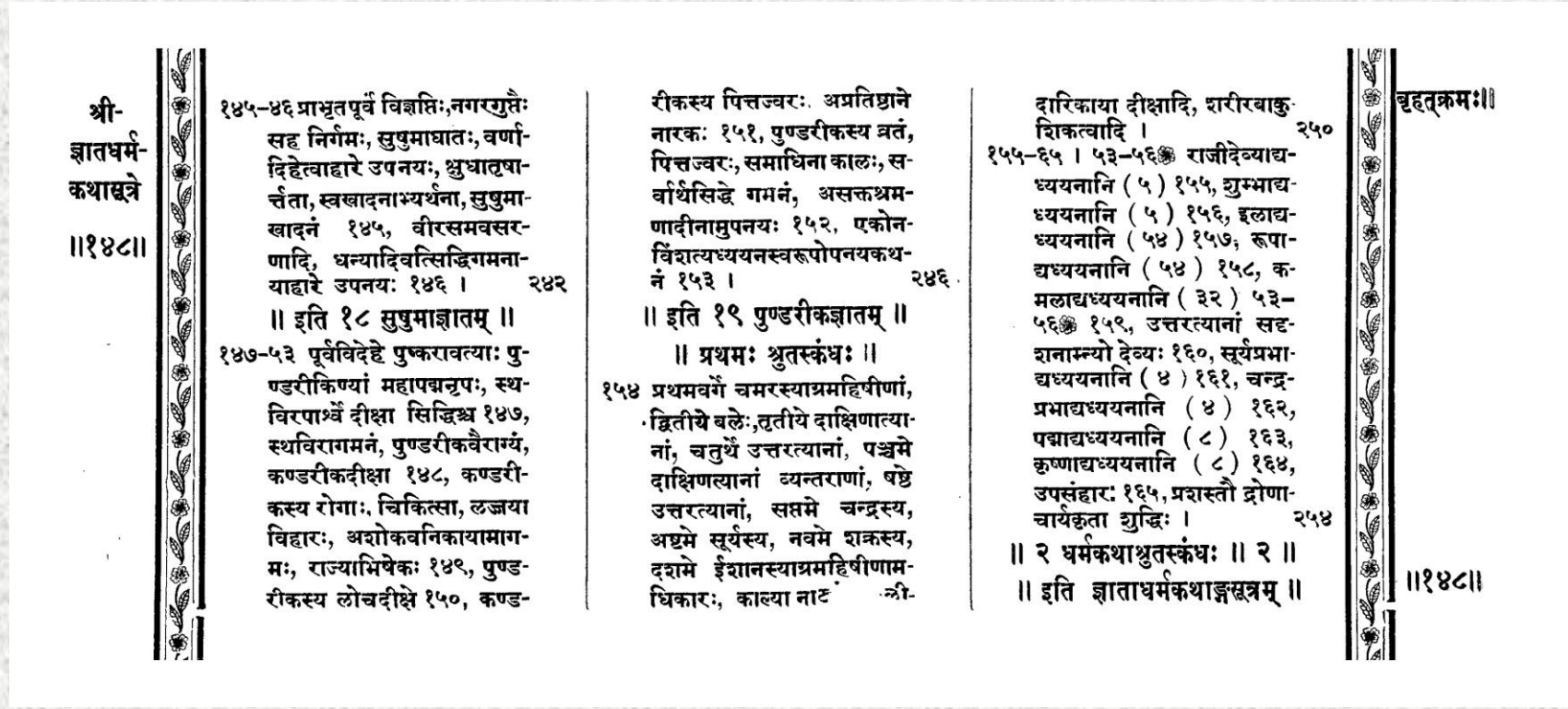
॥ इति १६ अपरकङ्काज्ञातम् ॥

१३८-४० हस्तिशीर्षे सांयात्रिकवणि-
जः, कालिकावातेन नौभ्रमणं,
कालिकाद्वीपे उत्तरणं, हिरण्या-
दिभिः पोतानां भरणं १३८, अ-
श्वनिवेदनं, वीणादिभिश्च प्रेषणं,
अश्वाऽऽश्वासनं, अरक्ताश्चव-
न्मुच्यन्ते मुनयः १३९, मुखबन्धा-
दिभिरश्वदमनं, उपनयः १४० । २३२
१४१ । ३३-५२ संवृतासंवृतगुण-
दोषाः ३३-५२ १४१ । २३५

॥ इति १७ अश्वज्ञातम् ॥

१४२-४४ राजगृहे धन्यस्य धनादीनां
लघुपुत्री सुषमा, चिलातो दासः,
बहुशो निवारणेऽपि दारकाद्या-
क्रोशादेर्निष्काशनं १४२, मद्या-
दिप्रसङ्गी, सिंहगुहायां विजय-
तस्करः, प्रारब्धचिलातगमनं,
चौरविद्याशिक्षणं, अभिषेकः
१४३, धाटीपातनं, तालोद्घाटि-
न्यादिप्रयोगः, सुषुमां गृहीत्वा
निर्गमः । २३९

॥१४७॥



श्री-ज्ञातधर्म-कथासूत्रे ॥१४८॥

१४५-४६ प्राभृतपूर्वं विज्ञप्तिः, नगरगुप्तैः सह निर्गमः, सुषुमाघातः, वर्णादिहेत्वाहारे उपनयः, क्षुधातृषार्त्तता, स्वखादनाभ्यर्थना, सुषुमाखादनं १४५, वीरसमवसरणादि, धन्यादिवत्सिद्धिगमनाद्याहारे उपनयः १४६ । २४२

॥ इति १८ सुषुमाज्ञातम् ॥

१४७-५३ पूर्वविदेहे पुष्करावत्याः पुण्डरीकिण्यां महापद्मनृपः, स्थविरपार्श्वे दीक्षा सिद्धिश्च १४७, स्थविरागमनं, पुण्डरीकवैराग्यं, कण्डरीकदीक्षा १४८, कण्डरीकस्य रोगाः, चिकित्सा, लज्जया विहारः, अशोकवनिकायामागमः, राज्याभिषेकः १४९, पुण्डरीकस्य लोचदीक्षे १५०, कण्डरीकस्य पित्तज्वरः, अप्रतिष्ठाने नारकः १५१, पुण्डरीकस्य व्रतं, पित्तज्वरः, समाधिना कालः, सर्वार्थसिद्धे गमनं, असक्तश्रमणादीनामुपनयः १५२, एकोनविंशत्यध्ययनस्वरूपोपनयकथनं १५३ । २४६

॥ इति १९ पुण्डरीकज्ञातम् ॥

॥ प्रथमः श्रुतस्कंधः ॥

१५४ प्रथमवर्गे चमरस्याग्रमहिषीणां, द्वितीये बलेः, तृतीये दाक्षिणात्यानां, चतुर्थे उत्तरत्यानां, पञ्चमे दाक्षिणत्यानां व्यन्तराणां, षष्ठे उत्तरत्यानां, सप्तमे चन्द्रस्य, अष्टमे सूर्यस्य, नवमे शक्रस्य, दशमे ईशानस्याग्रमहिषीणामधिकारः, काल्या नाट्यश्री-दारिकाया दीक्षादि, शरीरबाकुशिकत्वादि । २५०

१५५-६५ । ५३-५६ राजीदेव्याद्यध्ययनानि (५) १५५, शुम्भाद्यध्ययनानि (५) १५६, इलाद्यध्ययनानि (५४) १५७, रूपाद्यध्ययनानि (५४) १५८, कमलाद्यध्ययनानि (३२) ५३-५६ १५९, उत्तरत्यानां सदृशनाम्न्यो देव्यः १६०, सूर्यप्रभाद्यध्ययनानि (४) १६१, चन्द्रप्रभाद्यध्ययनानि (४) १६२, पद्माद्यध्ययनानि (८) १६३, कृष्णाद्यध्ययनानि (८) १६४, उपसंहारः १६५, प्रशस्तौ द्रोणाचार्यकृता शुद्धिः । २५४

॥ २ धर्मकथाश्रुतस्कंधः ॥ २ ॥

॥ इति ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम् ॥

बृहत्क्रमः॥

॥१४८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥१४९॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-उपासकांग सूत्रे

सूत्राणि ५८ ॥ उपासकदशाङ्गे विषयानुक्रमः ॥ सूत्रगाथाः १३❀

मङ्गलादि ।
१ चम्पापूर्णभद्राऽतिदेशः । १
२–१॥❀ दशाध्ययनानि । १
६–५ वाणिज्यग्रामे आनन्दश्रावकः, शिवानन्दा भार्या, कोल्लाके मित्रादि, वीरागमनं, पर्युपासना ३, धर्मकथादि ४, द्वादशव्रतयाच्ञा ५ । २
६ द्वादशव्रतोच्चारः । ५
७ सम्यक्त्वाद्यतिचाराः (देशविरतावतिचारसिद्धिः) । १२
८ सम्यक्त्वोच्चारः, शिवानन्दादेशः।१३
९ शिवानन्दाया व्रताद्युच्चारः । १४
१०–१२ आनन्दस्य प्रव्रज्याया अभावः, अरुणे देवत्वं भावि, वीरविहारः १०, आनन्दस्य शिवानन्दायाश्च धर्मपालनं ११, चतुर्दशवर्षातिक्रमे प्रतिमाविचारः १२ १५
१३ प्रतिमाऽऽराधनम् । १६
१४–१६ भक्तपानप्रत्याख्यानं, अवधेरुत्पादः १४, गौतमागमनं १५, अवधिज्ञानप्रश्नोत्तरे, आनन्दक्षामणम् १६ । १८
१७ अनशनेन कालः, देवत्वं सिद्धिश्च । १९
॥ इति १ आनन्दाध्ययनम् ॥
१८–१९ कामदेवस्य ऋद्ध्यादि धर्मपालनान्तं १८, पिशाचोपसर्गेऽचलता १९ । २३
२० खड्गच्छेदवेदना । ,,
२१ हस्तिरूपेणोपसर्गः । २४
२२ सर्परूपेणोपसर्गः । २५
२३ देवप्रादुर्भावशक्रप्रशंसोदित्यादि। २६
२४ वीरवन्दनानन्तरं पौषधपालनप्रतिज्ञा, शुद्धवस्त्रपरिधानादि, पर्युपासना,धर्मकथा (धर्मकथास्वरूपम्) । ३०
२५ वीरेणोपसर्गवृत्तान्तकथनं, श्रमणानामनुशास्तिः, । ३०

बृहत्क्रमः॥

॥१४९॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

॥१५०॥

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्री-उपासकांग सूत्रे

२६ प्रतिमाप्रतिपत्त्यादि । ३१
॥ इति २ कामदेवाध्ययनम् ॥
२७ चुल्लनीपितृवर्णनादि । ३२
२८-२९ मांससोल्लज्येष्ठपुत्रादि - भद्रामातृघातेरुपसर्गः, कोलाहलः, मातृशिक्षयाऽऽलोचनादि २८, प्रतिमादि (श्रावकस्य प्रायश्चित्तसिद्धिः) २९ । ३४
॥ इति ३ चुल्लनीपित्रध्ययनं ॥
३० सुरादेवस्य ऋद्ध्यादि । ३४
३१ स्वस्य पुत्राणां च पञ्च २ सोल्लकाः, षोडशरोगोद्भवे चलनादि । ३५
॥ ४ इति सुरादेवाध्ययनम् ॥
३२-३४ चुल्लशतकस्य ऋद्ध्यादि, सप्त मांससोल्लकाः, ऋद्धिनयने चलनम् । अरुणशिष्टे देवत्वम् ३४। ३६
॥ इति ५ चुल्लशतकाध्य० ॥
३५-३६ कुण्डकोलिकस्य ऋद्ध्यादि ३५, आजीविकदेवस्य निरुत्तरता ३६ । ३८
३७-३८ कुण्डकोलिकवृत्तान्तेन श्रमणानां वीरशिक्षा ३७, अरुणध्वजे देवत्वम् ३८ । ३९
॥ ६ इति कुण्डकोलिकाध्ययनम् ॥
३९ सद्दालपुत्रस्याजीविकोपासकता । ४०
४० देवेन महामाहनागमनकथनं, पर्युपासनाविचारः । ४६
४१-४२ वीरागमनं पर्युपासनं, देववाक्योदितिः, पीठादिनोपनिमन्त्रणं ४१, भाजनभङ्गप्रिया - भोगशिक्षावचनेन प्रतिबोधनम् ४२ । ४३
४३ धर्मप्रतिपत्तिः, अग्निमित्राभार्याऽऽदेशः, धर्मप्रतिपत्तिः, महावीरविहारः । ४४
४४ गोशालागमः, वीरगुणकीर्त्तनं, वीरेण सह वादकरणासामर्थ्यं, वीरस्तुत्या पीठादिनः निमन्त्रणं, श्रान्तस्य गोशालस्य विहारः। ४७
४५ उपसर्गे नव मांससोल्लकाः, पुत्रत्रिकघातः, अग्निमित्राघाते चलनादि, अरुणभूते देवत्वम् । ४८
॥ इति ७ सद्दालपुत्राध्ययनम् ॥
४६-४७ महाशतकस्य तद्भार्याणां च ऋद्ध्यादि ४६, व्रतप्रतिपत्त्यादि ४७ । ४८

बृहत्क्रमः॥

॥१५०॥

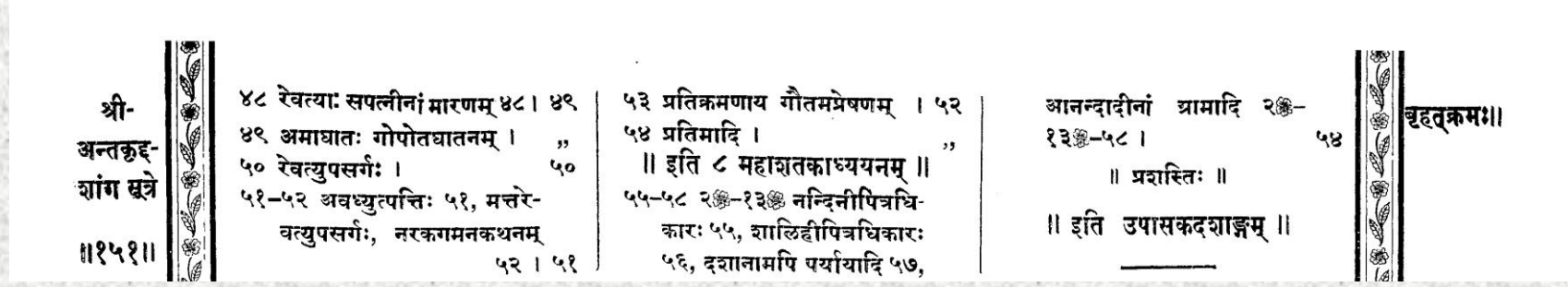
[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-७. "उपासकदशा"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-अन्तकृद्-शांग सूत्रे

॥१५१॥

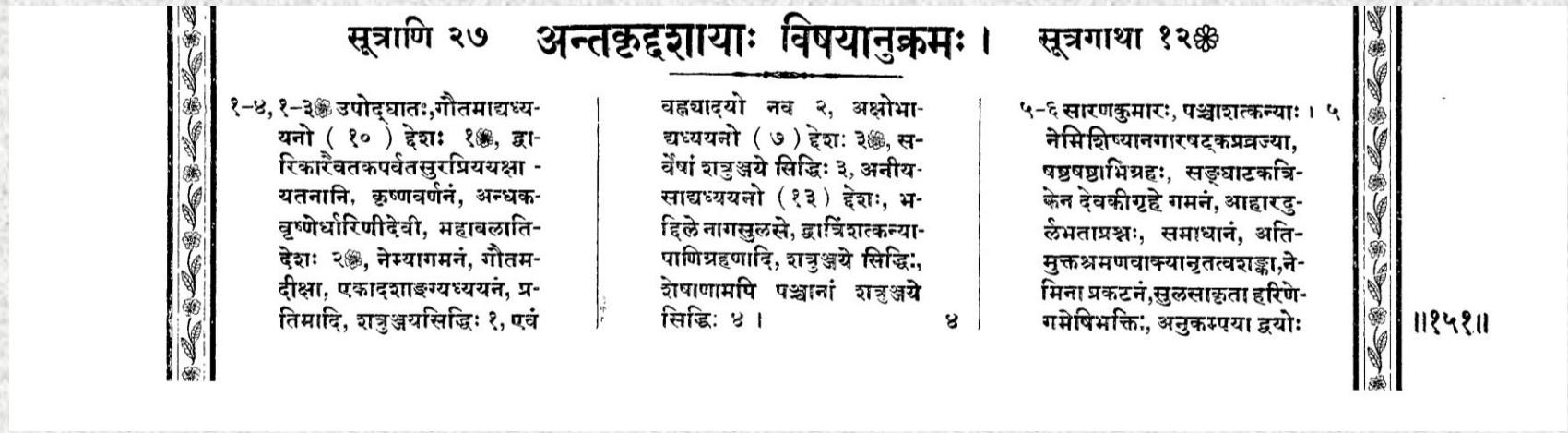
४८ रेवत्याः सपत्नीनां मारणम् ४८। ४९
४९ अमाघातः गोपोतघातनम् । ,,
५० रेवत्युपसर्गः । ५०
५१–५२ अवध्युत्पत्तिः ५१, मत्तेरवत्युपसर्गः, नरकगमनकथनम् ५२ । ५१

५३ प्रतिक्रमणाय गौतमप्रेषणम् । ५२
५४ प्रतिमादि । ,,
॥ इति ८ महाशतकाध्ययनम् ॥
५५–५८ २–१३ नन्दिनीपित्रधिकारः ५५, शालिहीपित्रधिकारः ५६, दशानामपि पर्यायादि ५७,

आनन्दादीनां ग्रामादि २–१३–५८ । ५४
॥ प्रशस्तिः ॥
॥ इति उपासकदशाङ्गम् ॥

बृहत्क्रमः॥

*** अत्र 'उपासकदशा' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'अन्त्कृद्दशांग इति मुद्रितं



सूत्राणि २७ **अन्तकृद्दशायाः विषयानुक्रमः।** सूत्रगाथा १२❀

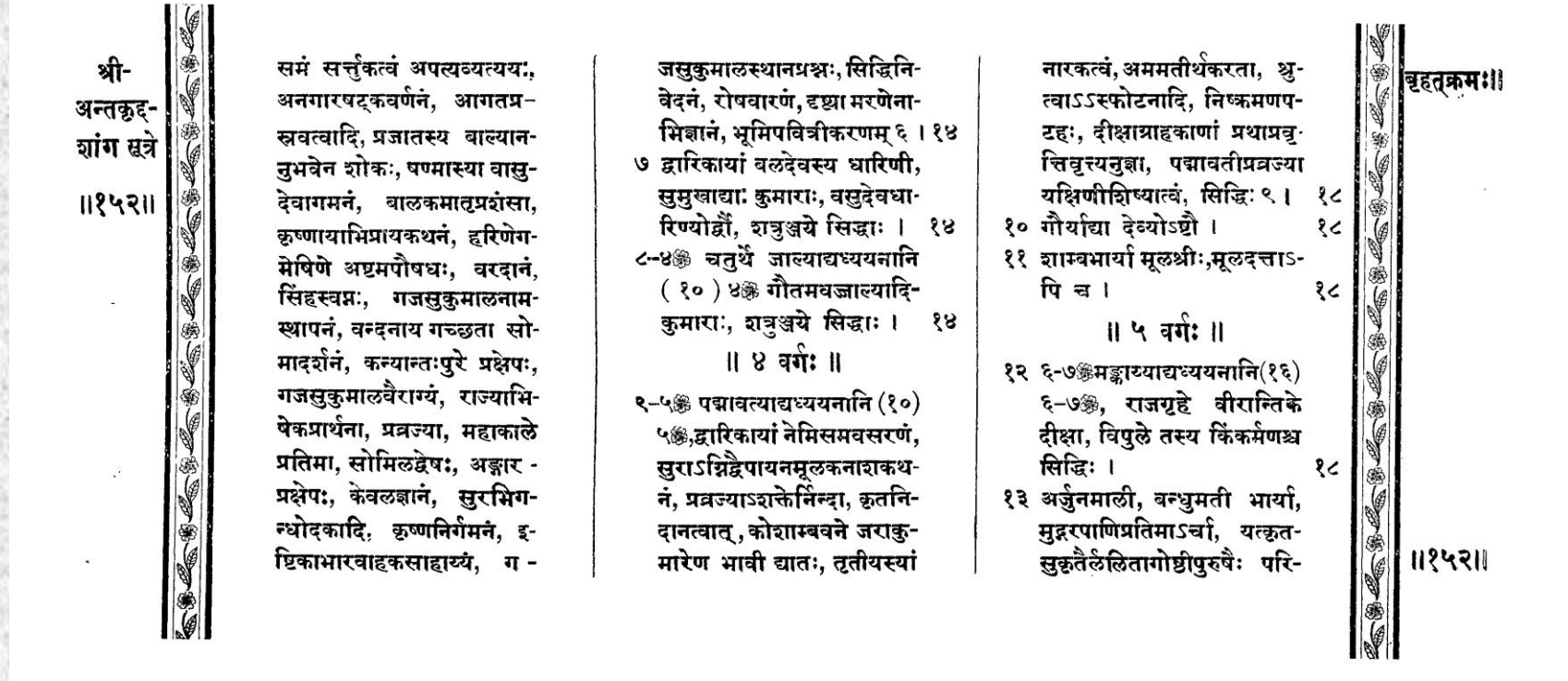
१-४, १-३❀ उपोद्घातः, गौतमाद्यध्ययनो (१०) देशः १❀, द्वारिकारैवतकपर्वतसुरप्रिययक्षा - यतनानि, कृष्णवर्णनं, अन्धकवृष्णेर्धारिणीदेवी, महाबलातिदेशः २❀, नेम्यागमनं, गौतमदीक्षा, एकादशाङ्ग्यध्ययनं, प्रतिमादि, शत्रुञ्जयसिद्धिः १, एवं वह्न्यादयो नव २, अक्षोभाद्यध्ययनो (७) देशः ३❀, सर्वेषां शत्रुञ्जये सिद्धिः ३, अनीयसाद्यध्ययनो (१३) देशः, भद्दिले नागसुलसे, द्वात्रिंशत्कन्यापाणिग्रहणादि, शत्रुञ्जये सिद्धिः, शेषाणामपि पञ्चानां शत्रुञ्जये सिद्धिः ४। ४

५-६ सारणकुमारः, पञ्चाशत्कन्याः। ५ नेमिशिष्यानगारषट्कप्रव्रज्या, षष्ठषष्ठाभिग्रहः, सङ्घाटकत्रिकेन देवकीगृहे गमनं, आहारदुर्लभताप्रश्नः, समाधानं, अतिमुक्तश्रमणवाक्यानृतत्वशङ्का, नेमिना प्रकटनं, सुलसाकृता हरिणेगमेषिभक्तिः, अनुकम्पया द्वयोः ॥१५१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-अन्तकृद्-शांग सूत्रे ॥१५२॥

समं सर्त्तृकत्वं अपत्यव्यत्ययः, अनगारषट्कवर्णनं, आगतप्रस्रवत्वादि, प्रजातस्य बाल्यानुभवेन शोकः, षण्मास्या वासुदेवागमनं, बालकमातृप्रशंसा, कृष्णायाभिप्रायकथनं, हरिणेगमेषिणे अष्टमपौषधः, वरदानं, सिंहस्वप्नः, गजसुकुमालनामस्थापनं, वन्दनाय गच्छता सोमादर्शनं, कन्यान्तःपुरे प्रक्षेपः, गजसुकुमालवैराग्यं, राज्याभिषेकप्रार्थना, प्रव्रज्या, महाकाले प्रतिमा, सोमिलद्वेषः, अङ्गार-प्रक्षेपः, केवलज्ञानं, सुरभिगन्धोदकादि, कृष्णनिर्गमनं, इष्टिकाभारवाहकसाहाय्यं, गजसुकुमालस्थानप्रश्नः, सिद्धिनिवेदनं, रोषवारणं, दृष्ट्वा मरणेनाभिज्ञानं, भूमिपवित्रीकरणम् ६ । १४

७ द्वारिकायां बलदेवस्य धारिणी, सुमुखाद्याः कुमाराः, वसुदेवधारिण्योर्द्वौ, शत्रुञ्जये सिद्धाः । १४

८-४ चतुर्थे जालाद्यध्ययनानि (१०) ४ गौतमवज्जालादिकुमाराः, शत्रुञ्जये सिद्धाः । १४

॥ ४ वर्गः ॥

९-५ पद्मावत्याद्यध्ययनानि (१०) ५,द्वारिकायां नेमिसमवसरणं, सुराऽग्निद्वैपायनमूलकनाशकथनं, प्रव्रज्याऽशक्तेर्निन्दा, कृतनिदानत्वात्, कोशाम्बवने जराकुमारेण भावी घातः, तृतीयस्यां नारकत्वं, अममतीर्थकरता, श्रुत्वाऽऽस्फोटनादि, निष्क्रमणपटहः, दीक्षाग्राहकाणां प्रथाप्रवृत्तिवृत्त्यनुज्ञा, पद्मावतीप्रव्रज्या यक्षिणीशिष्यात्वं, सिद्धिः ९ । १८

१० गौर्याद्या देव्योऽष्टौ । १८

११ शाम्बभार्या मूलश्रीः,मूलदत्ताऽपि च । १८

॥ ५ वर्गः ॥

१२ ६-७मङ्कायाद्यध्ययनानि(१६) ६-७, राजगृहे वीरान्तिके दीक्षा, विपुले तस्य किंकर्मणश्च सिद्धिः । १८

१३ अर्जुनमाली, बन्धुमती भार्या, मुद्गरपाणिप्रतिमाऽर्चा, यत्कृतसुकृतैर्ललितागोष्ठीपुरुषैः परि-

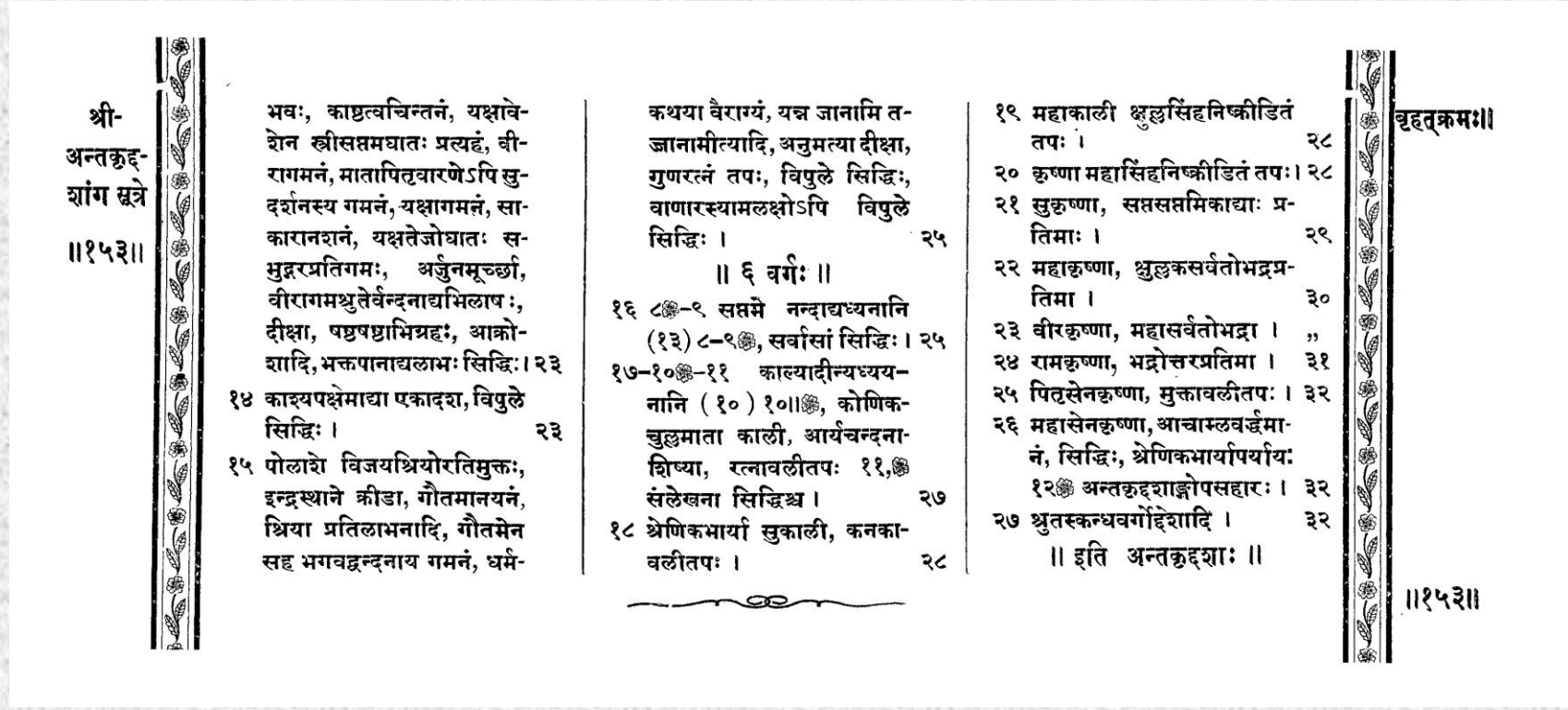
बृहत्क्रमः॥

॥१५२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-अन्तकृद्-शांग सूत्रे ॥१५३॥

भवः, काष्ठत्वचिन्तनं, यक्षावेशेन स्त्रीसप्तमघातः प्रत्यहं, वीरागमनं, मातापितृवारणेऽपि सुदर्शनस्य गमनं, यक्षागमनं, साकारानशनं, यक्षतेजोघातः समुद्गरप्रतिगमः, अर्जुनमूर्च्छा, वीरागमश्रुतेर्वन्दनाद्यभिलाषः, दीक्षा, षष्ठषष्ठाभिग्रहः, आक्रोशादि, भक्तपानाद्यलाभः सिद्धिः। २३

१४ काश्यपक्षेमाद्या एकादश, विपुले सिद्धिः। २३

१५ पोलाशे विजयश्रियोरतिमुक्तः, इन्द्रस्थाने क्रीडा, गौतमानयनं, श्रिया प्रतिलाभनादि, गौतमेन सह भगवद्वन्दनाय गमनं, धर्मकथया वैराग्यं, यन्न जानामि तज्जानामीत्यादि, अनुमत्या दीक्षा, गुणरत्नं तपः, विपुले सिद्धिः, वाणारस्यामलक्षोऽपि विपुले सिद्धिः। २५

॥ ६ वर्गः ॥

१६ ८-९ सप्तमे नन्दाद्यध्यनानि (१३) ८-९, सर्वासां सिद्धिः। २५

१७-१०-११ काल्यादीन्यध्ययनानि (१०) १०॥, कोणिकचुल्लमाता काली, आर्यचन्दनाशिष्या, रत्नावलीतपः ११, संलेखना सिद्धिश्च। २७

१८ श्रेणिकभार्या सुकाली, कनकावलीतपः। २८

१९ महाकाली क्षुल्लसिंहनिष्क्रीडितं तपः। २८

२० कृष्णा महासिंहनिष्क्रीडितं तपः। २८

२१ सुकृष्णा, सप्तसप्तमिकाद्याः प्रतिमाः। २९

२२ महाकृष्णा, क्षुल्लकसर्वतोभद्रप्रतिमा। ३०

२३ वीरकृष्णा, महासर्वतोभद्रा। ,,

२४ रामकृष्णा, भद्रोत्तरप्रतिमा। ३१

२५ पितृसेनकृष्णा, मुक्तावलीतपः। ३२

२६ महासेनकृष्णा, आचाम्लवर्द्धमानं, सिद्धिः, श्रेणिकभार्यापर्यायः १२ अन्तकृद्दशाङ्गोपसहारः। ३२

२७ श्रुतस्कन्धवर्गोद्देशादि। ३२

॥ इति अन्तकृद्दशाः ॥

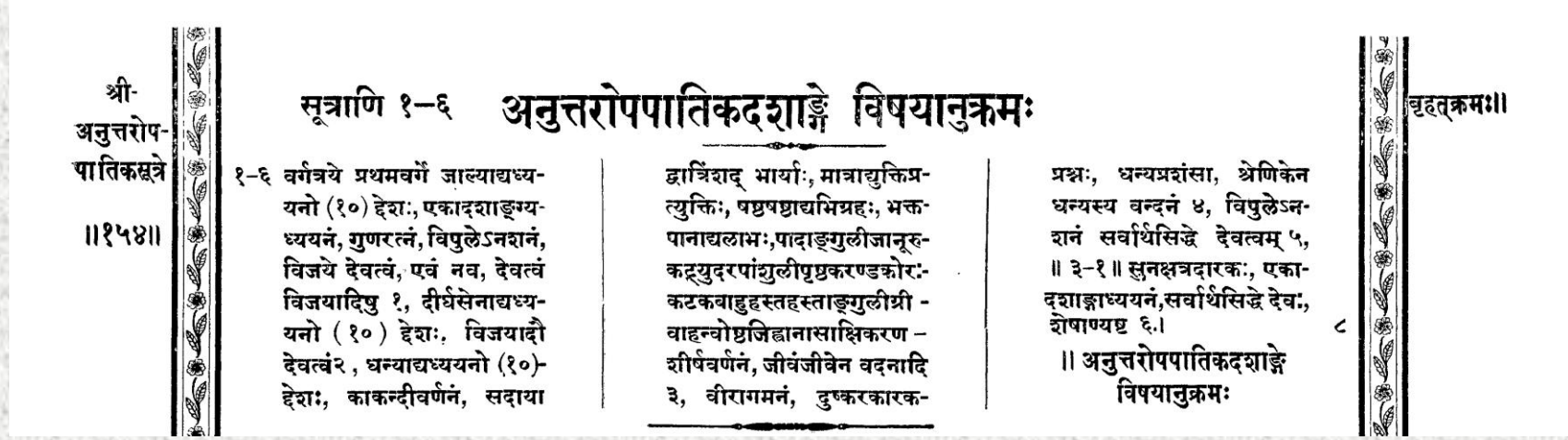
बृहत्क्रमः॥

॥१५३॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-अनुत्तरोप-पातिकसूत्रे ॥१५४॥

सूत्राणि १–६ अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गे विषयानुक्रमः

१–६ वर्गत्रये प्रथमवर्गे जाल्याद्यध्ययनो (१०) देशः, एकादशाङ्ग्यध्ययनं, गुणरत्नं, विपुलेऽनशनं, विजये देवत्वं, एवं नव, देवत्वं विजयादिषु १, दीर्घसेनाद्यध्ययनो (१०) देशः, विजयादौ देवत्वं२, धन्याद्यध्ययनो (१०)-देशः, काकन्दीवर्णनं, सदाया द्वात्रिंशद् भार्याः, मात्राद्युक्तिप्रत्युक्तिः, षष्ठषष्ठाद्यभिग्रहः, भक्तपानाद्यलाभः, पादाङ्गुलीजानूरुकट्युदरपांशुलीपृष्ठकरण्डकोरःकटकबाहुहस्तहस्ताङ्गुलीग्रीवाहन्वोष्ठजिह्वानासाक्षिकरण–शीर्षवर्णनं, जीवंजीवेन वदनादि ३, वीरागमनं, दुष्करकारकप्रश्नः, धन्यप्रशंसा, श्रेणिकेन धन्यस्य वन्दनं ४, विपुलेऽनशनं सर्वार्थसिद्धे देवत्वम् ५, ॥ ३–१ ॥ सुनक्षत्रदारकः, एकादशाङ्गाध्ययनं, सर्वार्थसिद्धे देवः, शेषाण्यष्ट ६।

॥ अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गे विषयानुक्रमः

८

बृहत्क्रमः॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

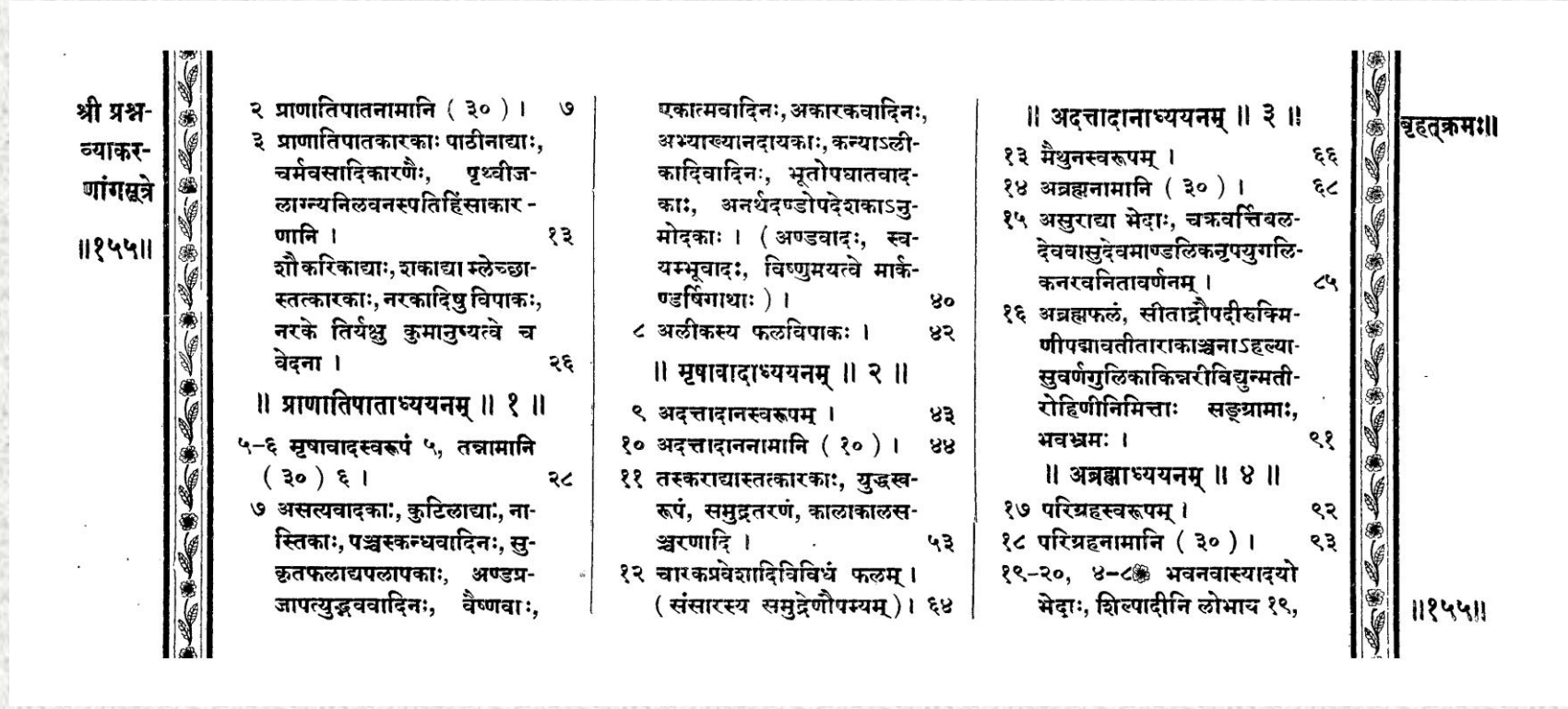
प्रश्नव्याकरणांगे विषयानुक्रमः ।

मङ्गलादि, पूर्वं विद्याप्रतिपादकत्वेऽप्यधुनाऽऽश्रवसंवरप्रतिपादकत्वम् ।	१ आश्रवसंवरकथनप्रतिज्ञा १ (प्रत्यन्तरस्थ उपोद्घातः) ।	३
	२ आश्रवोद्देशः ।	४
	३ यादृशकादि (५) द्वारोद्देशः ।	५
	१ प्राणातिपातस्वरूपं द्वाविंशत्या विशेषणैः ।	५ ॥१५४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री प्रश्नव्याकरणांगसूत्रे ॥१५५॥

२ प्राणातिपातनामानि (३०) । ७
३ प्राणातिपातकारकाः पाठीनाद्याः, चर्मवसादिकारणैः, पृथ्वीजलाग्न्यनिलवनस्पतिहिंसाकारणानि । १३
शौकरिकाद्याः, शकाद्या म्लेच्छास्तत्कारकाः, नरकादिषु विपाकः, नरके तिर्यक्षु कुमानुष्यत्वे च वेदना । २६

॥ प्राणातिपाताध्ययनम् ॥ १ ॥

५-६ मृषावादस्वरूपं ५, तन्नामानि (३०) ६ । २८
७ असत्यवादकाः, कुटिलाद्याः, नास्तिकाः, पञ्चस्कन्धवादिनः, सुकृतफलाद्यपलापकाः, अण्डप्रजापत्युद्भववादिनः, वैष्णवाः, एकात्मवादिनः, अकारकवादिनः, अभ्याख्यानदायकाः, कन्याऽलीकादिवादिनः, भूतोपघातवादकाः, अनर्थदण्डोपदेशकाऽनुमोदकाः । (अण्डवादः, स्वयम्भूवादः, विष्णुमयत्वे मार्कण्डर्षिगाथाः) । ४०
८ अलीकस्य फलविपाकः । ४२

॥ मृषावादाध्ययनम् ॥ २ ॥

९ अदत्तादानस्वरूपम् । ४३
१० अदत्तादाननामानि (१०) । ४४
११ तस्कराद्यास्तत्कारकाः, युद्धस्वरूपं, समुद्रतरणं, कालाकालसञ्चरणादि । ५३
१२ चारकप्रवेशादिविविधं फलम् । (संसारस्य समुद्रेणौपम्यम्) । ६४

॥ अदत्तादानाध्ययनम् ॥ ३ ॥

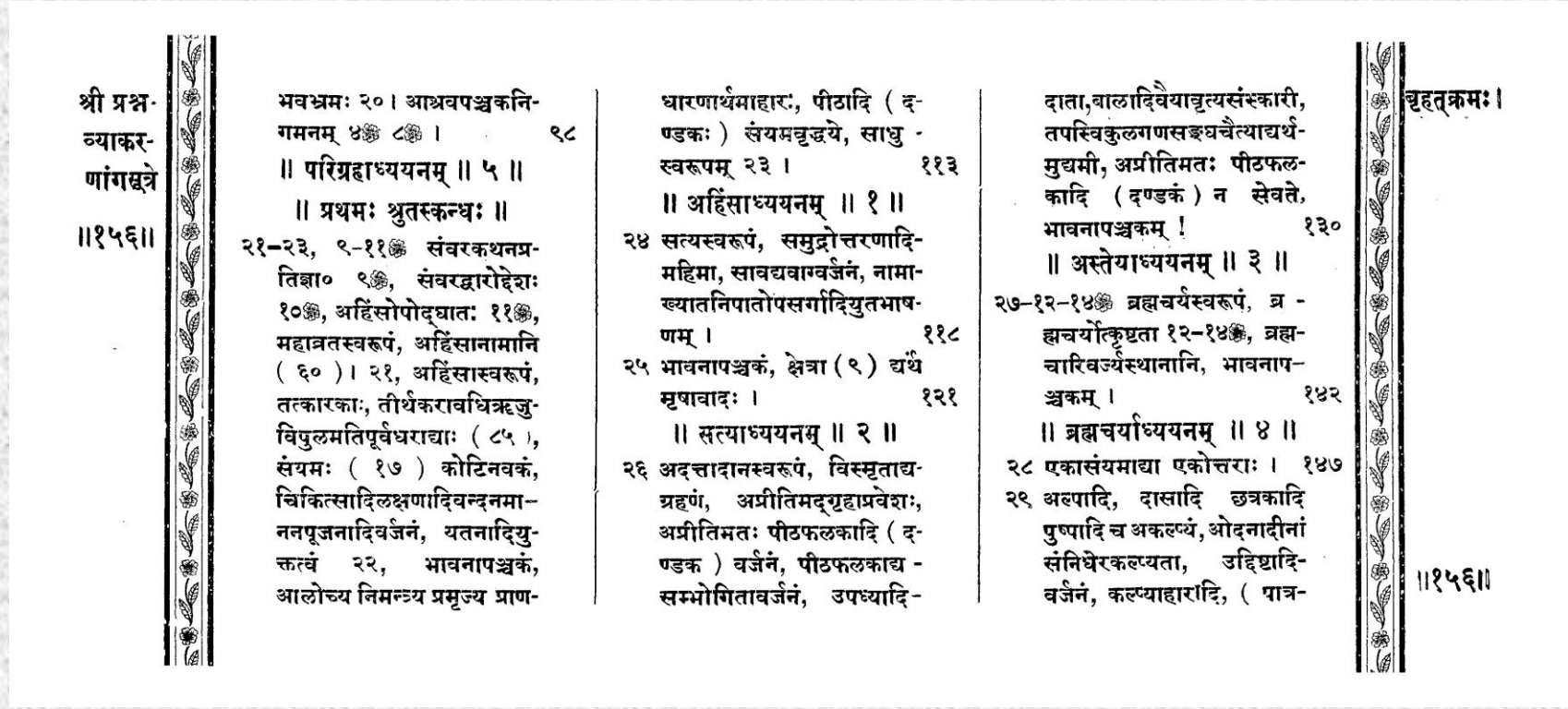
१३ मैथुनस्वरूपम् । ६६
१४ अब्रह्मनामानि (३०) । ६८
१५ असुराद्या भेदाः, चक्रवर्त्तिबलदेववासुदेवमाण्डलिकनृपयुगलिकनरवनितावर्णनम् । ८५
१६ अब्रह्मफलं, सीताद्रौपदीरुक्मिणीपद्मावतीताराकाञ्चनाऽहल्यासुवर्णगुलिकाकिन्नरीविद्युन्मतीरोहिणीनिमित्ताः सङ्ग्रामाः, भवभ्रमः । ९१

॥ अब्रह्माध्ययनम् ॥ ४ ॥

१७ परिग्रहस्वरूपम् । ९२
१८ परिग्रहनामानि (३०) । ९३
१९-२०, ४-८ भवनवास्यादयो भेदाः, शिल्पादीनि लोभाद्य १९,

बृहत्क्रमः॥

॥१५५॥



श्री प्रश्न-व्याकर-णांगसूत्रे ॥१५६॥

भवभ्रमः २०। आश्रवपञ्चकनिगमनम् ४ ८ । ९८

॥ परिग्रहाध्ययनम् ॥ ५ ॥

॥ प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥

२१–२३, ९–११ संवरकथनप्रतिज्ञा० ९, संवरद्वारोद्देशः १०, अहिंसोपोद्घातः ११, महाव्रतस्वरूपं, अहिंसानामानि (६०)। २१, अहिंसास्वरूपं, तत्कारकाः, तीर्थकरावधिऋजुविपुलमतिपूर्वधराद्याः (८५), संयमः (१७) कोटिनवकं, चिकित्सादिलक्षणादिवन्दनमाननपूजनादिवर्जनं, यतनादियुक्तत्वं २२, भावनापञ्चकं, आलोच्य निमन्त्र्य प्रमृज्य प्राणधारणार्थमाहारः, पीठादि (दण्डकः) संयमवृद्धये, साधुस्वरूपम् २३ । ११३

॥ अहिंसाध्ययनम् ॥ १ ॥

२४ सत्यस्वरूपं, समुद्रोत्तरणादिमहिमा, सावद्यवाग्वर्जनं, नामाख्यातनिपातोपसर्गादियुतभाषणम् । ११८

२५ भावनापञ्चकं, क्षेत्रा (९) द्यर्थं मृषावादः । १२१

॥ सत्याध्ययनम् ॥ २ ॥

२६ अदत्तादानस्वरूपं, विस्मृताद्यग्रहणं, अप्रीतिमद्गृहाप्रवेशः, अप्रीतिमतः पीठफलकादि (दण्डक) वर्जनं, पीठफलकाद्यसम्भोगितावर्जनं, उपध्यादिदाता,बालादिवैयावृत्यसंस्कारी, तपस्विकुलगणसङ्घचैत्याद्यर्थमुद्यमी, अप्रीतिमतः पीठफलकादि (दण्डकं) न सेवते, भावनापञ्चकम् ! १३०

॥ अस्तेयाध्ययनम् ॥ ३ ॥

२७–१२–१४ ब्रह्मचर्यस्वरूपं, ब्रह्मचर्योत्कृष्टता १२–१४, ब्रह्मचारिवर्ज्यस्थानानि, भावनापञ्चकम् । १४२

॥ ब्रह्मचर्याध्ययनम् ॥ ४ ॥

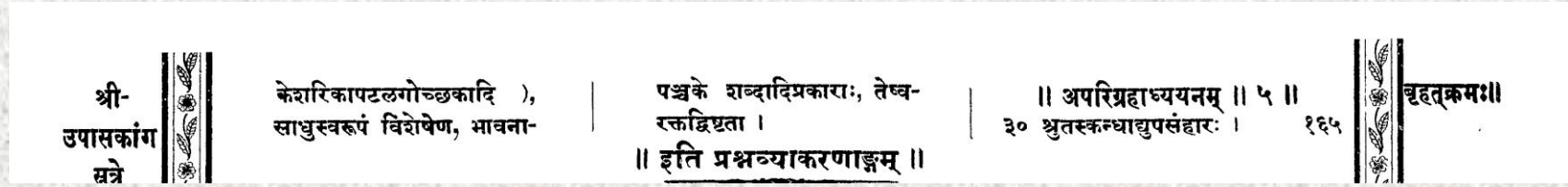
२८ एकासंयमाद्या एकोत्तराः । १४७

२९ अल्पादि, दासादि छत्रकादि पुष्पादि च अकल्प्यं, ओदनादीनां संनिधेरकल्प्यता, उद्दिष्टादिवर्जनं, कल्प्याहारादि, (पात्र-

बृहत्क्रमः ।

॥१५६॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)


श्री-उपासकांग सूत्रे

केशरिकापटलगोच्छकादि), साधुस्वरूपं विशेषेण, भावना-

पञ्चके शब्दादिप्रकाराः, तेष्व-रक्तद्विष्टता ।

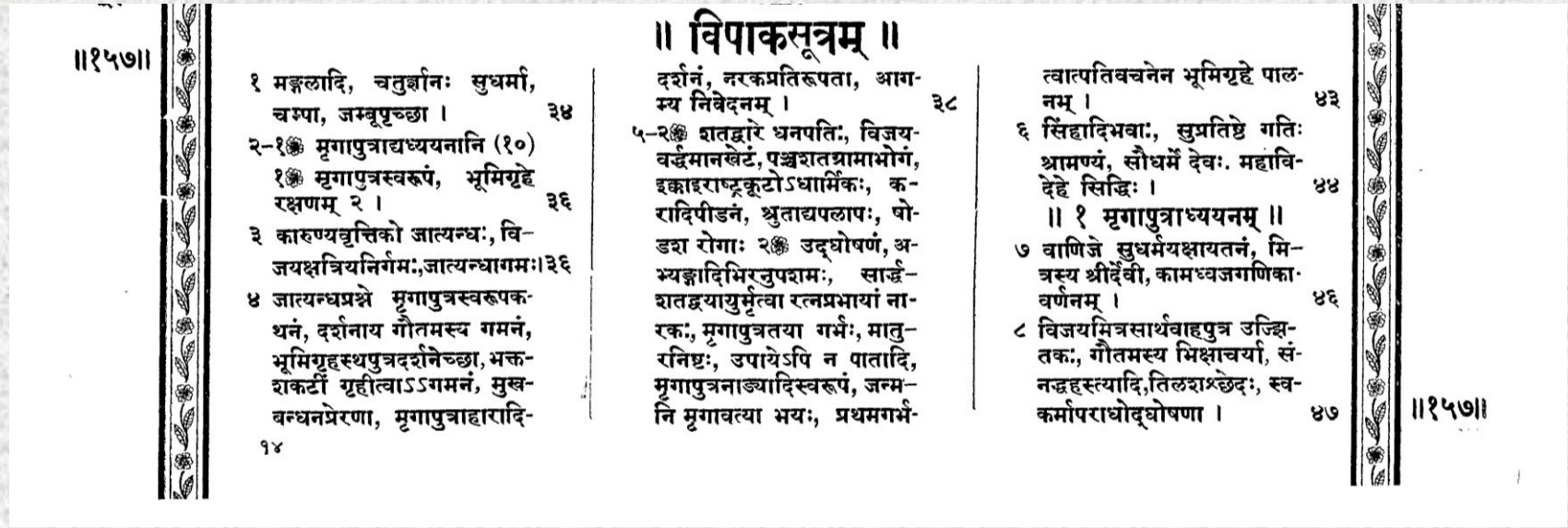
॥ इति प्रश्नव्याकरणाङ्गम् ॥

॥ अपरिग्रहाध्ययनम् ॥ ५ ॥

३० श्रुतस्कन्धाद्युपसंहारः । १६५

बृहत्क्रमः॥

	*** अत्र 'प्रश्नव्याकरणांग' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'उपासकदशांग' इति मुद्रितं



॥१५७॥

॥ विपाकसूत्रम् ॥

१ मङ्गलादि, चतुर्ज्ञानः सुधर्मा, चम्पा, जम्बूपृच्छा । ३४
२-१ मृगापुत्राद्यध्ययनानि (१०) १ मृगापुत्रस्वरूपं, भूमिगृहे रक्षणम् २ । ३६
३ कारुण्यवृत्तिको जात्यन्धः, विजयक्षत्रियनिर्गमः, जात्यन्धागमः ३६
४ जात्यन्धप्रश्ने मृगापुत्रस्वरूपकथनं, दर्शनाय गौतमस्य गमनं, भूमिगृहस्थपुत्रदर्शनेच्छा, भक्तशकटीं गृहीत्वाऽऽगमनं, मुखबन्धनप्रेरणा, मृगापुत्राहारादिदर्शनं, नरकप्रतिरूपता, आगम्य निवेदनम् । ३८
५-२ शतद्वारे धनपतिः, विजयवर्द्धमानखेटं, पञ्चशतग्रामाभोगं, इक्काइराष्ट्रकूटोऽधार्मिकः, करादिपीडनं, श्रुताद्यपलापः, षोडश रोगाः २ उद्घोषणं, अभ्यङ्गादिभिरनुपशमः, सार्द्धशतद्वयायुर्मृत्वा रत्नप्रभायां नारकः, मृगापुत्रतया गर्भः, मातुरनिष्टः, उपायेऽपि न पातादि, मृगापुत्रनाड्यादिस्वरूपं, जन्मनि मृगावत्या भयः, प्रथमगर्भत्वात्पतिवचनेन भूमिगृहे पालनम् । ४३
६ सिंहादिभवाः, सुप्रतिष्ठे गतिः श्रामण्यं, सौधर्मे देवः. महाविदेहे सिद्धिः । ४४

॥ १ मृगापुत्राध्ययनम् ॥

७ वाणिजे सुधर्मयक्षायतनं, मित्रस्य श्रीर्देवी, कामध्वजगणिकावर्णनम् । ४६
८ विजयमित्रसार्थवाहपुत्र उज्झितकः, गौतमस्य भिक्षाचर्या, संनद्धहस्त्यादि, तिलशश्छेदः, स्वकर्मापराधोद्घोषणा । ४७

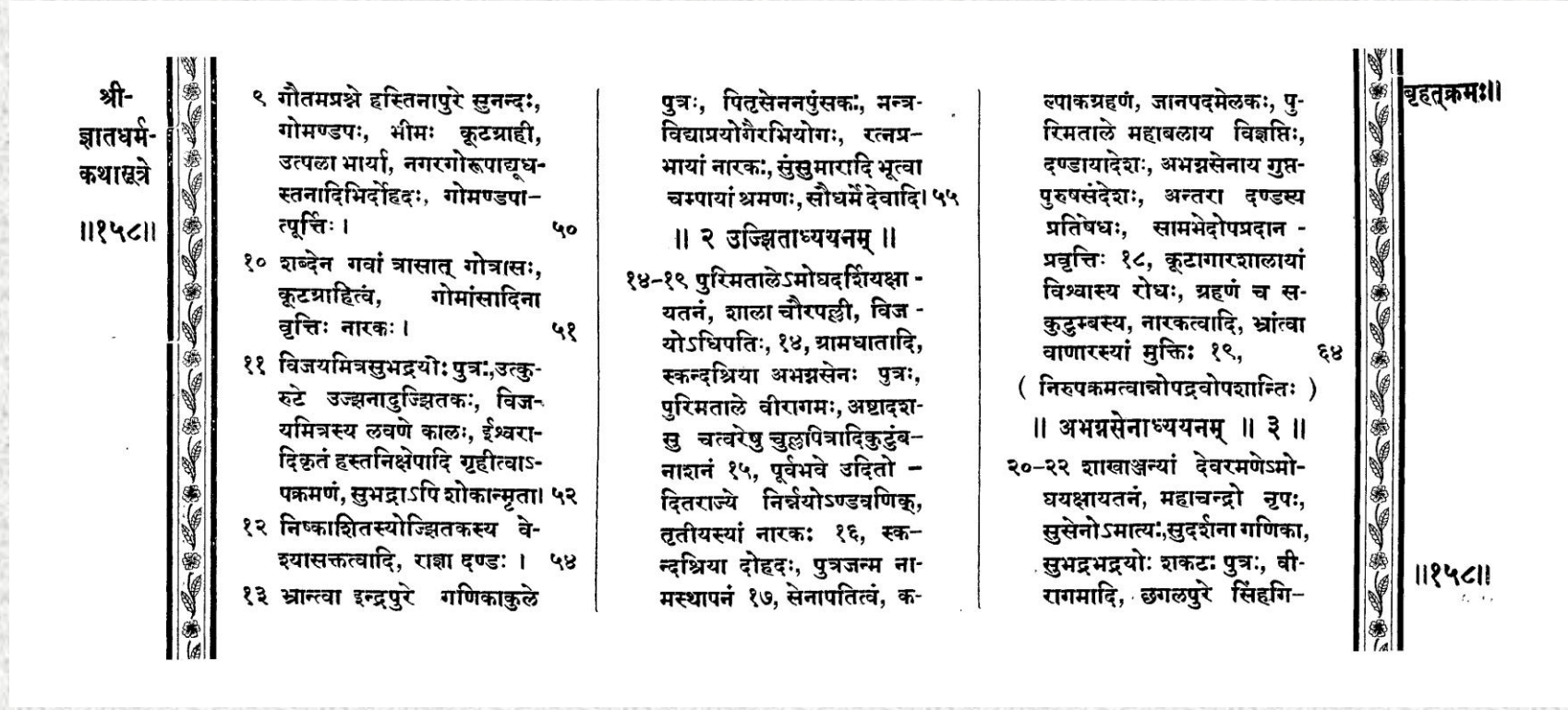
१४

॥१५७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-ज्ञातधर्म-कथासूत्रे ॥१५८॥

९ गौतमप्रश्ने हस्तिनापुरे सुनन्दः, गोमण्डपः, भीमः कूटग्राही, उत्पला भार्या, नगरगोरूपाद्यूधस्तनादिभिर्दोहदः, गोमण्डपात्पूर्त्तिः। ५०

१० शब्देन गवां त्रासात् गोत्रासः, कूटग्राहित्वं, गोमांसादिना वृत्तिः नारकः। ५१

११ विजयमित्रसुभद्रयोः पुत्रः,उत्कुरुटे उज्झनादुज्झितकः, विजयमित्रस्य लवणे कालः, ईश्वरादिकृतं हस्तनिक्षेपादि गृहीत्वाऽपक्रमणं, सुभद्राऽपि शोकान्मृता। ५२

१२ निष्काशितस्योज्झितकस्य वेश्यासक्तत्वादि, राज्ञा दण्डः। ५४

१३ भ्रान्त्वा इन्द्रपुरे गणिकाकुले पुत्रः, पितृसेननपुंसकः, मन्त्रविद्याप्रयोगैरभियोगः, रत्नप्रभायां नारकः, सुंसुमारादि भूत्वा चम्पायां श्रमणः, सौधर्मे देवादि। ५५

॥ २ उज्झिताध्ययनम् ॥

१४-१९ पुरिमतालेऽमोघदर्शियक्षायतनं, शाला चौरपल्ली, विजयोऽधिपतिः, १४, ग्रामघातादि, स्कन्दश्रिया अभग्नसेनः पुत्रः, पुरिमतालेवीरागमः, अष्टादशसु चत्वरेषु चुल्लपित्रादिकुटुंबनाशनं १५, पूर्वभवे उदितो – दितराज्ये निर्नामोऽण्डवणिक्, तृतीयस्यां नारकः १६, स्कन्दश्रिया दोहदः, पुत्रजन्म नामस्थापनं १७, सेनापतित्वं, कल्पाकग्रहणं, जानपदमेलकः, पुरिमताले महाबलाय विज्ञप्तिः, दण्डायादेशः, अभग्नसेनाय गुप्तपुरुषसंदेशः, अन्तरा दण्डस्य प्रतिषेधः, सामभेदोपप्रदानप्रवृत्तिः १८, कूटागारशालायां विश्वास्य रोधः, ग्रहणं च सकुटुम्बस्य, नारकत्वादि, भ्रांत्वा वाणारस्यां मुक्तिः १९, ६४

(निरुपक्रमत्वान्नोपद्रवोपशान्तिः)

॥ अभग्नसेनाध्ययनम् ॥ ३ ॥

२०-२२ शाखाञ्चन्यां देवरमणेऽमोघयक्षायतनं, महाचन्द्रो नृपः, सुसेनोऽमात्यः,सुदर्शना गणिका, सुभद्रभद्रयोः शकटः पुत्रः, वीरागमादि, छगलपुरे सिंहगि-

बृहत्क्रमः॥

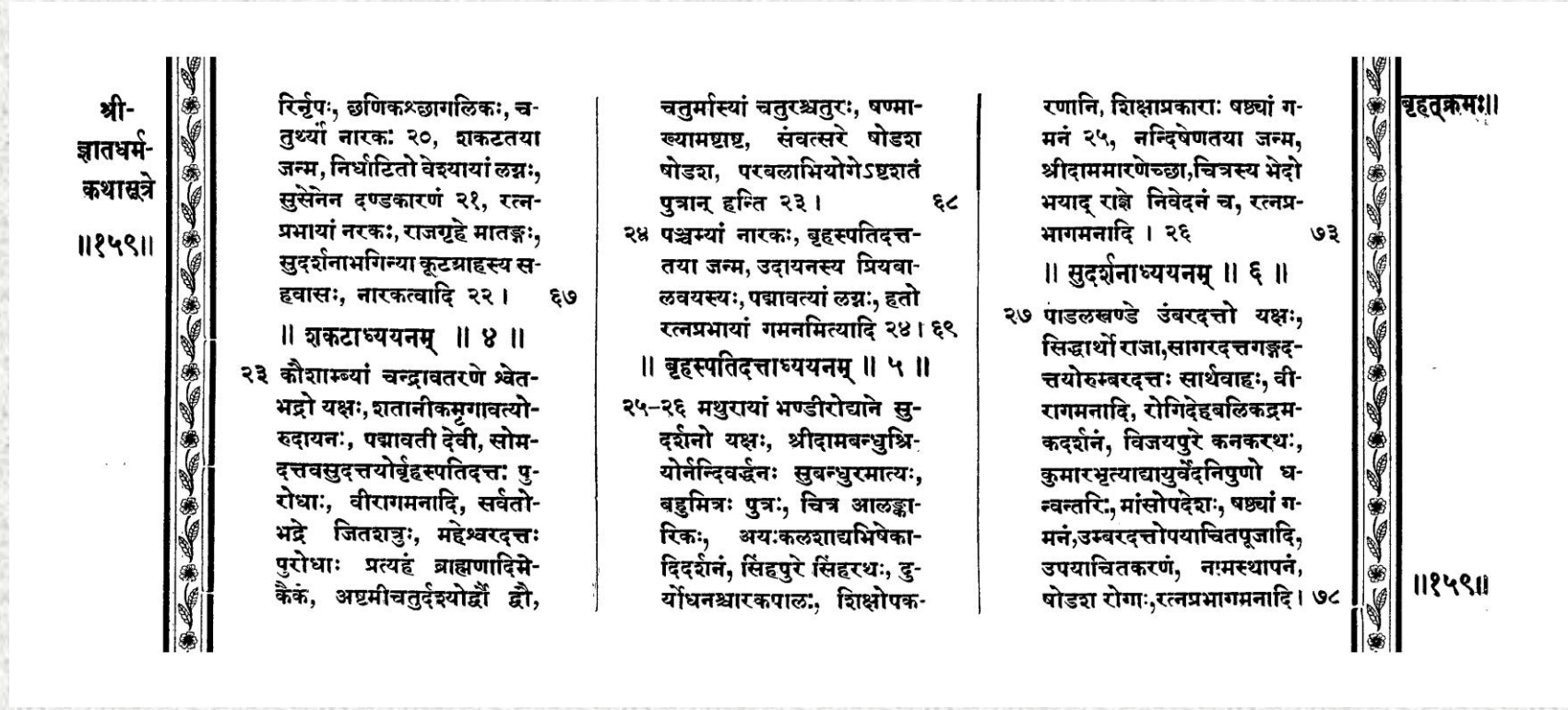
॥१५८॥

*** अत्र 'विपाकसूत्र' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-ज्ञातधर्म-कथासूत्रे ॥१५९॥

रिर्नृपः, छणिकश्छागलिकः, चतुर्थ्यां नारकः २०, शकटतया जन्म, निर्घाटितो वेश्यायां लग्नः, सुसेनेन दण्डकारणं २१, रत्नप्रभायां नरकः, राजगृहे मातङ्गः, सुदर्शनाभगिन्या कूटग्राहस्य सहवासः, नारकत्वादि २२। ६७

॥ शकटाध्ययनम् ॥ ४ ॥

२३ कौशाम्ब्यां चन्द्रावतरणे श्वेतभद्रो यक्षः, शतानीकमृगावत्योरुदायनः, पद्मावती देवी, सोमदत्तवसुदत्तयोर्बृहस्पतिदत्तः पुरोधाः, वीरागमनादि, सर्वतोभद्रे जितशत्रुः, महेश्वरदत्तः पुरोधाः प्रत्यहं ब्राह्मणादिभेकैकं, अष्टमीचतुर्दश्योर्द्वौ द्वौ, चतुर्मास्यां चतुरश्चतुरः, षण्मास्यामष्टाष्ट, संवत्सरे षोडश षोडश, परबलाभियोगेऽष्टशतं पुत्रान् हन्ति २३। ६८

२४ पञ्चम्यां नारकः, बृहस्पतिदत्ततया जन्म, उदायनस्य प्रियबालवयस्यः, पद्मावत्यां लग्नः, हतो रत्नप्रभायां गमनमित्यादि २४। ६९

॥ बृहस्पतिदत्ताध्ययनम् ॥ ५ ॥

२५-२६ मथुरायां भण्डीरोद्याने सुदर्शनो यक्षः, श्रीदामबन्धुश्रियोर्नन्दिवर्द्धनः सुबन्धुरमात्यः, बहुमित्रः पुत्रः, चित्र आलङ्कारिकः, अयःकलशाद्यभिषेकादिदर्शनं, सिंहपुरे सिंहरथः, दुर्योधनश्चारकपालः, शिक्षोपकरणानि, शिक्षाप्रकाराः षष्ठ्यां गमनं २५, नन्दिषेणतया जन्म, श्रीदाममारणेच्छा, चित्रस्य भेदो भयाद् राज्ञे निवेदनं च, रत्नप्रभागमनादि। २६ ७३

॥ सुदर्शनाध्ययनम् ॥ ६ ॥

२७ पाडलखण्डे उंबरदत्तो यक्षः, सिद्धार्थो राजा, सागरदत्तगङ्गदत्तयोरुम्बरदत्तः सार्थवाहः, वीरागमनादि, रोगिदेहबलिकद्रमकदर्शनं, विजयपुरे कनकरथः, कुमारभृत्याद्यायुर्वेदनिपुणो धन्वन्तरिः, मांसोपदेशः, षष्ठ्यां गमनं, उम्बरदत्तोपयाचितपूजादि, उपयाचितकरणं, नाम्नस्थापनं, षोडश रोगाः, रत्नप्रभागमनादि। ७८

बृहत्क्रमः॥

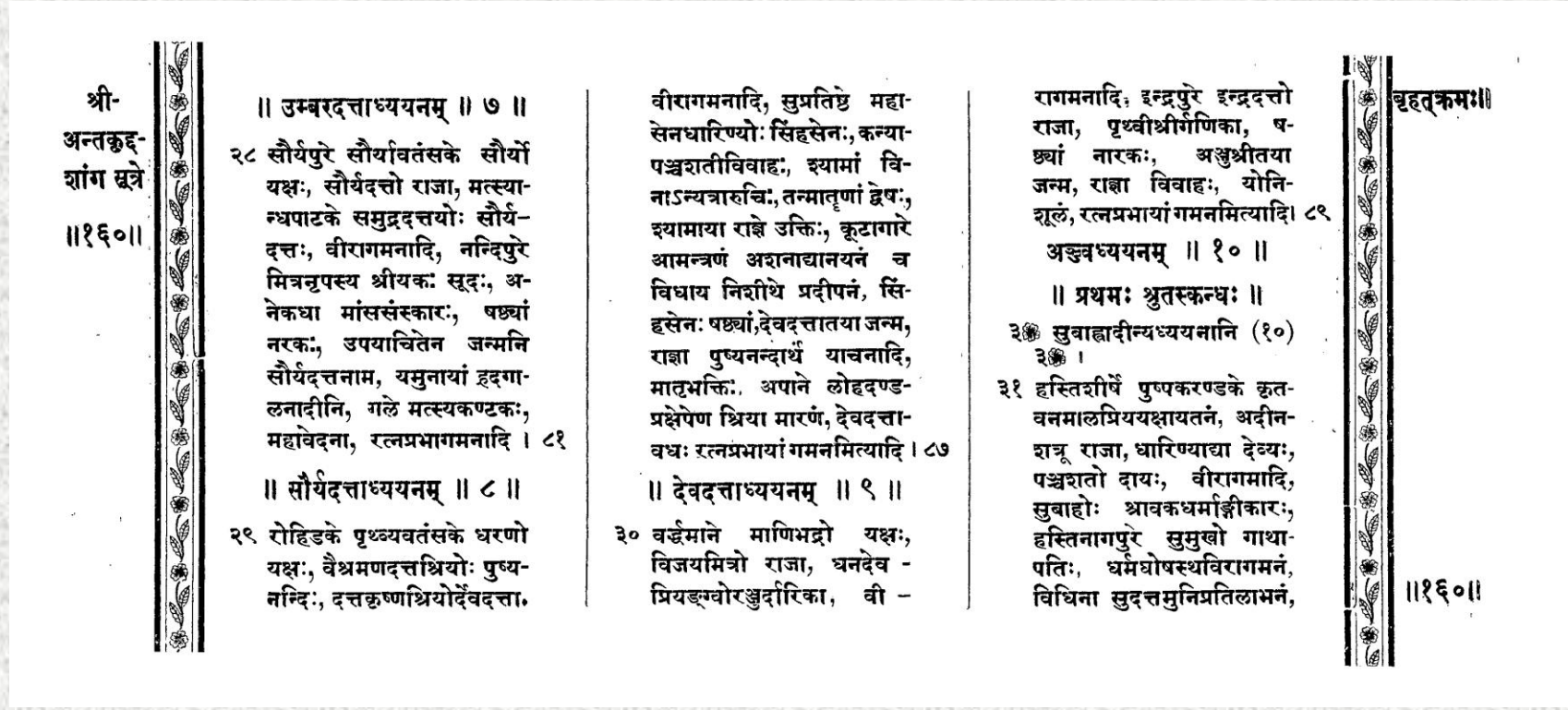
॥१५९॥

*** अत्र 'विपाकसूत्र' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'ज्ञाताधर्मकथा' इति मुद्रितं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-अन्तकृद्-शांग सूत्रे ॥१६०॥

॥ उम्बरदत्ताध्ययनम् ॥ ७ ॥

२८ सौर्यपुरे सौर्यावतंसके सौर्यो यक्षः, सौर्यदत्तो राजा, मत्स्यान्धपाटके समुद्रदत्तयोः सौर्यदत्तः, वीरागमनादि, नन्दिपुरे मित्रनृपस्य श्रीयकः सूदः, अनेकधा मांससंस्कारः, षष्ठ्यां नरकः, उपयाचितेन जन्मनि सौर्यदत्तनाम, यमुनायां ह्रदगालनादीनि, गले मत्स्यकण्टकः, महावेदना, रत्नप्रभागमनादि । ८१

॥ सौर्यदत्ताध्ययनम् ॥ ८ ॥

२९ रोहिडके पृथ्व्यवतंसके धरणो यक्षः, वैश्रमणदत्तश्रियोः पुष्यनन्दिः, दत्तकृष्णश्रियोर्देवदत्ता. वीरागमनादि, सुप्रतिष्ठे महासेनधारिण्योः सिंहसेनः, कन्यापञ्चशतीविवाहः, श्यामां विनाऽन्यत्रारुचिः, तन्मातृणां द्वेषः, श्यामाया राज्ञे उक्तिः, कूटागारे आमन्त्रणं अशनाद्यानयनं च विधाय निशीथे प्रदीपनं, सिंहसेनः षष्ठ्यां,देवदत्तातया जन्म, राज्ञा पुष्यनन्दार्थं याचनादि, मातृभक्तिः. अपाने लोहदण्डप्रक्षेपेण श्रिया मारणं, देवदत्तावधः रत्नप्रभायां गमनमित्यादि । ८७

॥ देवदत्ताध्ययनम् ॥ ९ ॥

३० वर्द्धमाने माणिभद्रो यक्षः, विजयमित्रो राजा, धनदेव - प्रियङ्ग्वोरङ्गदारिका, वी - रागमनादि, इन्द्रपुरे इन्द्रदत्तो राजा, पृथ्वीश्रीर्गणिका, षष्ठ्यां नारकः, अञ्जुश्रीतया जन्म, राज्ञा विवाहः, योनिशूलं, रत्नप्रभायां गमनमित्यादि। ८९

अञ्जूवध्ययनम् ॥ १० ॥

॥ प्रथमः श्रुतस्कन्धः ॥

३१ सुबाह्वादीन्यध्ययनानि (१०) ३१ ।

३१ हस्तिशीर्षे पुष्पकरण्डके कृतवनमालप्रिययक्षायतनं, अदीनशत्रू राजा, धारिण्याद्या देव्यः, पञ्चशतो दायः, वीरागमादि, सुबाहोः श्रावकधर्माङ्गीकारः, हस्तिनागपुरे सुमुखो गाथापतिः, धर्मघोषस्थविरागमनं, विधिना सुदत्तमुनिप्रतिलाभनं,

बृहत्क्रमः॥

॥१६०॥

*** अत्र 'विपाकसूत्र' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'अन्तकृद्दशांग' इति मुद्रितं

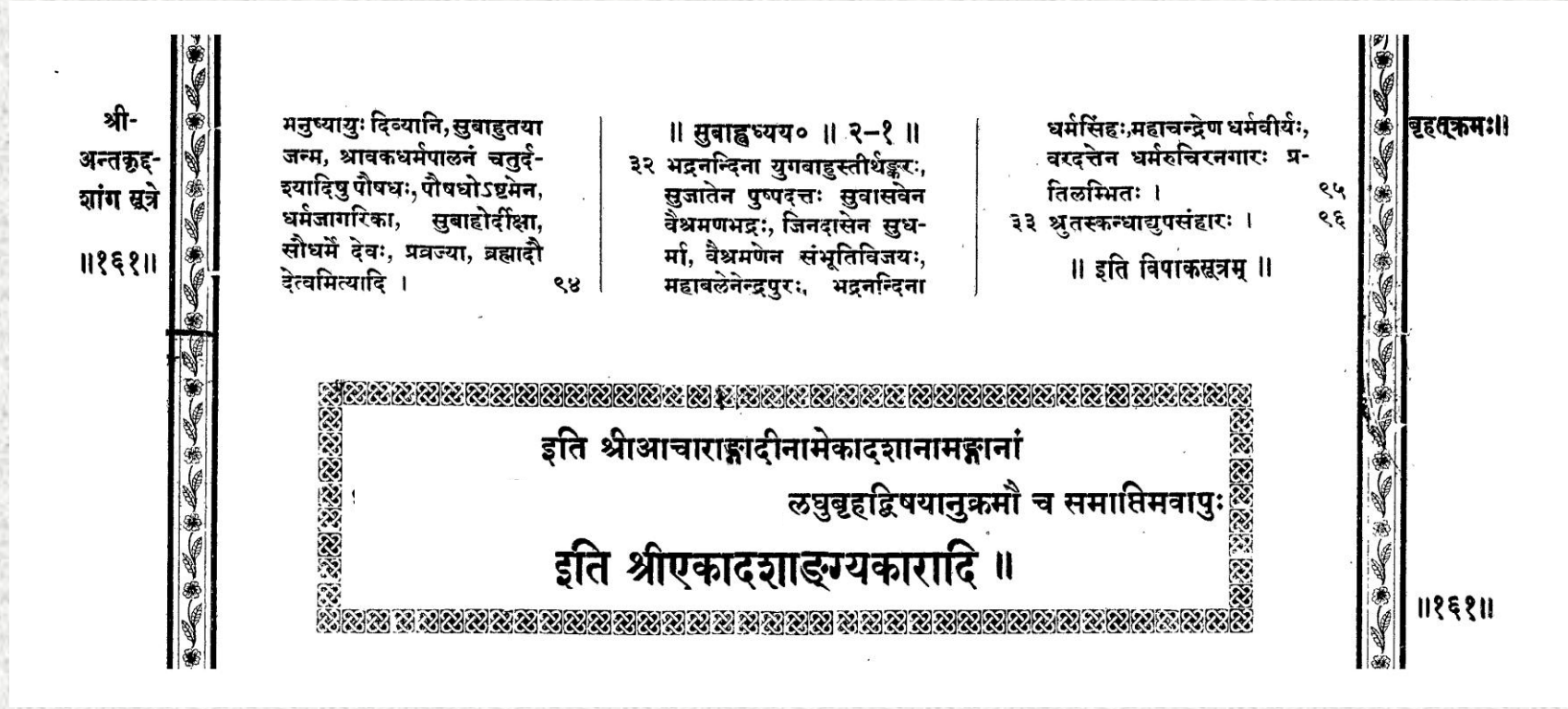
[भाग-4] अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[अंगसूत्र-११. "विपाकसूत्र"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: अंग-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्री-अन्तकृद्-शांग सूत्रे ॥१६१॥

मनुष्यायुः दिव्यानि, सुबाहुतया जन्म, श्रावकधर्मपालनं चतुर्द-श्यादिषु पौषधः, पौषधोऽष्टमेन, धर्मजागरिका, सुबाहोर्दीक्षा, सौधर्मे देवः, प्रव्रज्या, ब्रह्मादौ देत्वमित्यादि । ९४

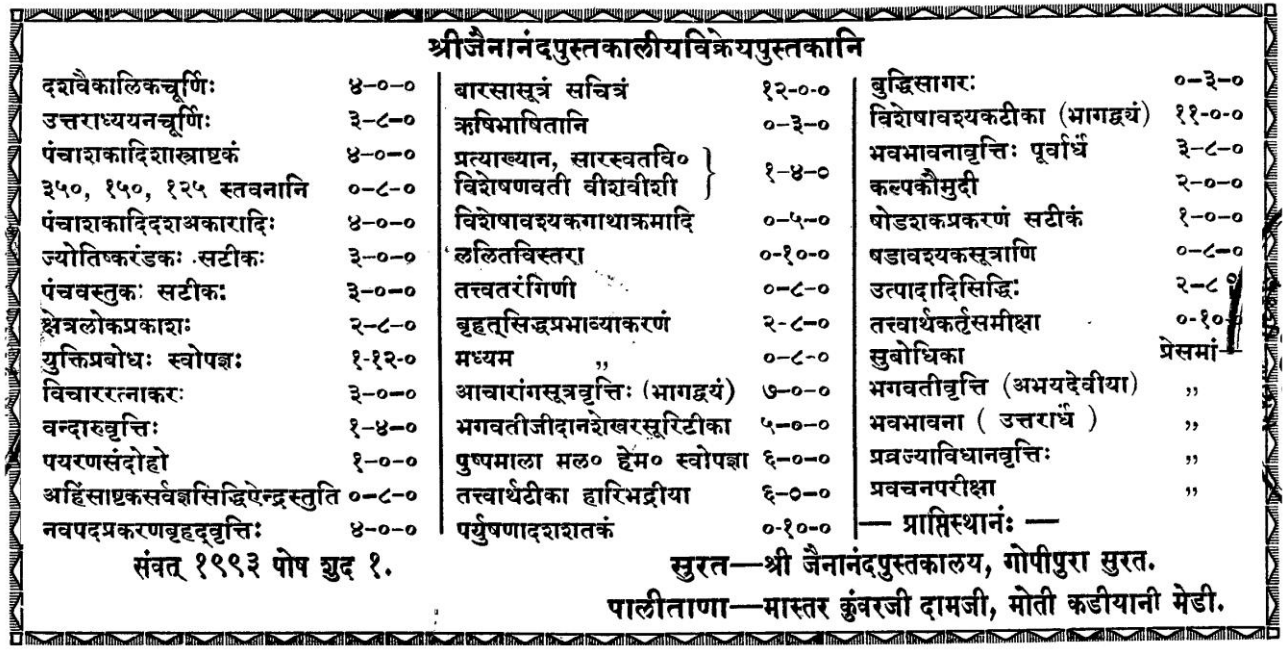
॥ सुबाहूध्यय० ॥ २–१ ॥
३२ भद्रनन्दिना युगबाहुस्तीर्थङ्करः, सुजातेन पुष्पदत्तः सुवासवेन वैश्रमणभद्रः, जिनदासेन सुध-र्मा, वैश्रमणेन संभूतिविजयः, महाबलेनेन्द्रपुरः, भद्रनन्दिना

धर्मसिंहः, महाचन्द्रेण धर्मवीर्यः, वरदत्तेन धर्मरुचिरनगारः प्र-तिलम्भितः । ९५
३३ श्रुतस्कन्धाद्युपसंहारः । ९६
॥ इति विपाकसूत्रम् ॥

इति श्रीआचाराङ्गादीनामेकादशानामङ्गानां
लघुबृहद्विषयानुक्रमौ च समाप्तिमवापुः
इति श्रीएकादशाङ्ग्यकारादि ॥

बृहत्क्रमः॥ ॥१६१॥

*** अत्र 'विपाकसूत्र' आगमस्य विषयानुक्रम एव वर्तते, मुद्रण अशुद्धित्वात् अत्र 'अन्तकृद्दशांग' इति मुद्रितं



श्रीजैनानंदपुस्तकालीयविक्रेयपुस्तकानि

दशवैकालिकचूर्णिः	४-०-०	बारसासूत्रं सचित्रं	१२-०-०	बुद्धिसागरः	०-३-०
उत्तराध्ययनचूर्णिः	३-८-०	ऋषिभाषितानि	०-३-०	विशेषावश्यकटीका (भागद्वयं)	११-०-०
पंचाशकादिशास्त्राष्टकं	४-०-०	प्रत्याख्यान, सारस्वतवि० विशेषणवती वीशवीशी	१-४-०	भवभावनावृत्तिः पूर्वार्धं	३-८-०
३५०, १५०, १२५ स्तवनानि	०-८-०			कल्पकौमुदी	२-०-०
पंचाशकादिदशअकारादिः	४-०-०	विशेषावश्यकगाथाक्रमादि	०-५-०	षोडशकप्रकरणं सटीकं	१-०-०
ज्योतिष्करंडकः सटीकः	३-०-०	ललितविस्तरा	०-१०-०	षडावश्यकसूत्राणि	०-८-०
पंचवस्तुकः सटीकः	३-०-०	तत्त्वतरंगिणी	०-८-०	उत्पादादिसिद्धिः	२-८-०
क्षेत्रलोकप्रकाशः	२-८-०	बृहत्सिद्धप्रभाव्याकरणं	२-८-०	तत्त्वार्थकर्तृसमीक्षा	०-१०-०
युक्तिप्रबोधः स्वोपज्ञः	१-१२-०	मध्यम ,,	०-८-०	सुबोधिका	प्रेसमां
विचाररत्नाकरः	३-०-०	आचारांगसूत्रवृत्तिः (भागद्वयं)	७-०-०	भगवतीवृत्ति (अभयदेवीया)	,,
वन्दारुवृत्तिः	१-४-०	भगवतीजीदानशेखरसूरिटीका	५-०-०	भवभावना (उत्तरार्धं)	,,
पयरणसंदोहो	१-०-०	पुष्पमाला मल० हेम० स्वोपज्ञा	६-०-०	प्रव्रज्याविधानवृत्तिः	,,
अर्हिसाष्टकसर्वज्ञसिद्धिऐन्द्रस्तुति	०-८-०	तत्त्वार्थटीका हारिभद्रीया	६-०-०	प्रवचनपरीक्षा	,,
नवपदप्रकरणबृहद्वृत्तिः	४-०-०	पर्युषणादशशतकं	०-१०-०	— प्राप्तिस्थानः —	

संवत् १९९३ पोष शुद १.

सुरत—श्री जैनानंदपुस्तकालय, गोपीपुरा सुरत.

पालीताणा—मास्तर कुंवरजी दामजी, मोती कडीयानी मेडी.

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः

अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः परिसमाप्तः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-4

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

अंगसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:” नाम्ना परिसमाप्त:

आगम-संबंधी-साहित्य’-श्रेणि, भाग-४

उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

[आगम-संबंधी-साहित्य]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

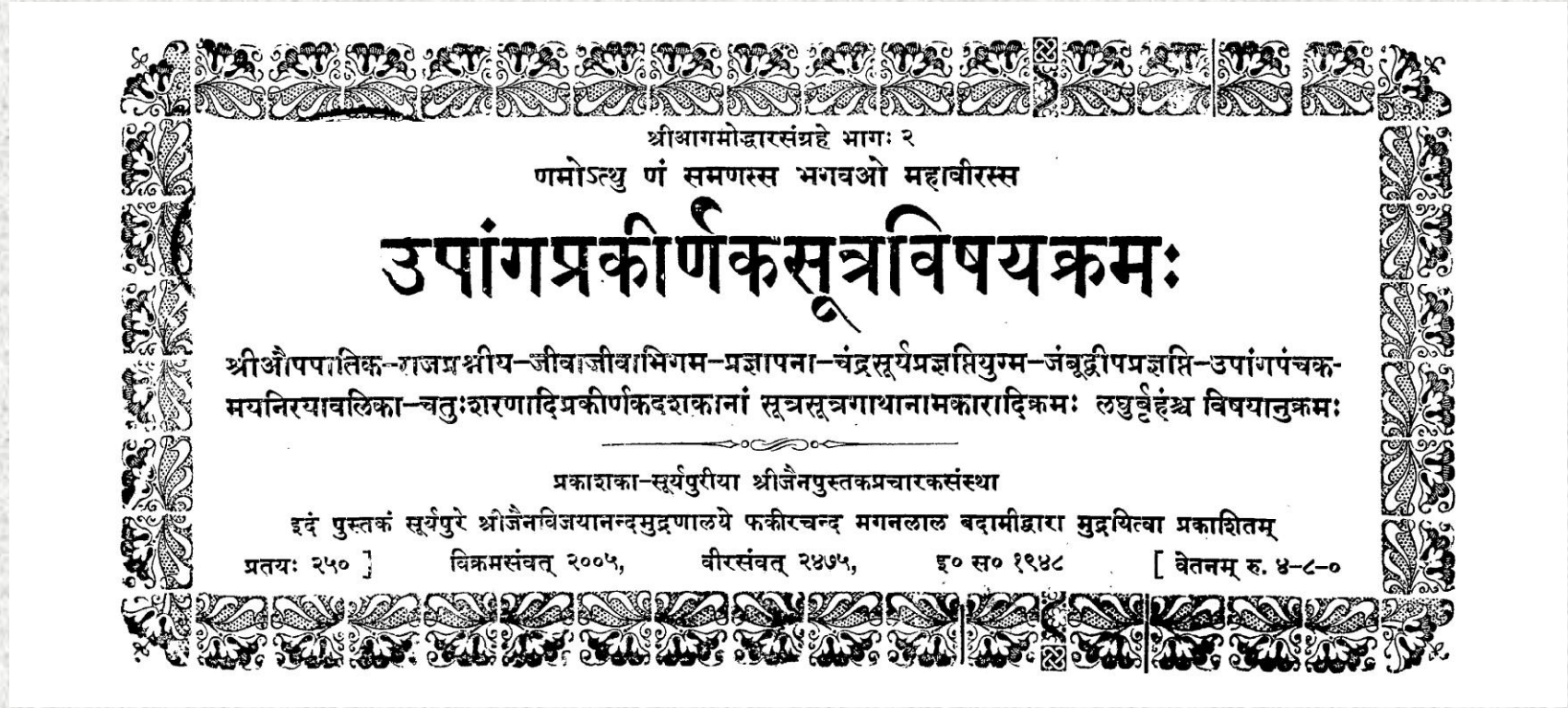
(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ 'आगम-संबंधी-साहित्य' श्रेणि भाग-४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

उपांगप्रकीर्णकसूत्रविषयक्रमः

श्रीऔपपातिक-राजप्रश्नीय-जीवाजीवाभिगम-प्रज्ञापना-चंद्रसूर्यप्रज्ञप्तियुग्म-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-उपांगपंचक-मयनिरयावलिका-चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां सूत्रसूत्रगाथानामकारादिक्रमः लघुर्बृहंश्च विषयानुक्रमः

प्रकाशका-सूर्यपुरीया श्रीजैनपुस्तकप्रचारकसंस्था

इदं पुस्तकं सूर्यपुरे श्रीजैनविजयानन्दमुद्रणालये फकीरचन्द मगनलाल बदामीद्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितम्

प्रतयः २५०] विक्रमसंवत् २००५, वीरसंवत् २४७५, इ० स० १९४८ [वेतनम् रु. ४-८-०

	*** मूल संपादकेन प्रकाशित उपांग-प्रकीर्णकसूत्र-विषयक्रमस्य 'ओरिजिनल टाइटल'

प्रस्तावः

श्रीऔपपातिकादीनां द्वादशानामुपांगानां चतुःशरणादिकानां दशानां प्रकीर्णकानां च गाथाद्यनुक्रमः

भोः परमपुरुषपरमेश्वरप्रणीताव्याबाधाविरुद्धहितोपदेशमात्रप्रवचनप्रवणागमामृतपानपुष्टान्तःकरणाः कृतिनः ! सफलयन्त्वेतस्य शास्त्रस्य साचरणश्रद्धानवृद्धिक्रियाद्वारा ग्रहणेन मे परिश्रमलेशं, प्राक्तावत् १ नन्दी २ अनुयोगद्वार ३ आवश्यक-४ ओघनिर्युक्ति ५ दशवैकालिक ६ पिण्डनिर्युक्ति ७ उत्तराध्ययनसूत्राणां गाथाकारादिक्रमविषयानुक्रमयुगलान्युन्मुद्राप्य निर्णय-सागरमुद्रणालये श्रीमत्याऽऽगमोदयसमित्या प्रतीनां सार्धद्वादशशती प्रचारिता, पण्यं च रूप्यकद्वयं स्थापितं पश्चात्तु श्रीमालव-देशान्तर्गतश्रीऋषभदेवजीकेशरीमलेत्यभिधया श्वेतांबरसंस्थया ८ आचारांग ९ सूत्रकृतांग १० स्थानांग ११ समवायांग १२ श्रीभगवत्यपराभिधव्याख्याप्रज्ञप्ति १३ ज्ञातधर्मकथा १४ उपासक १५ अन्तकृद्दशा १६ अनुत्तरौपपातिकदशा १७ विपाकश्रुत १८ प्रश्नव्याकरणांगसूत्राणां गाथाकारादिविषयानुक्रमयुगलानि श्रीइंद्रपुरीयश्रीजैनबंधुमुद्रणालयश्रीभावनगरीयमहोदयमुद्रणालय-द्वारा मुद्रापयित्वा पंचशती पुस्तकानां प्रचारिता, पण्यं च चतुष्टयं रुप्यकाणां धृतं, ततः शेषाणां गाथाकारादिविषयानुक्रम-युगलानामुन्मुद्रणायायमुपक्रमः श्रीसुरतद्गंगीयजैनपुस्तकप्रचाराख्यसंस्थया क्रियते। प्रत्यश्चात्र सार्धद्विशतीमात्राः पण्यं च सार्धं रुप्यकचतुष्टयं ध्रियते। एतच्च वर्तमानयुगस्थितिप्रेक्षिणां सुज्ञानामवभासिष्यतेऽल्पतममेव। अत्र च १९ श्रीऔपपातिक-२० श्रीराजप्रश्नीय २१ जीवाजीवाभिगम २२ प्रज्ञापना २३-२४ सूर्यचंद्रप्रज्ञप्तियुग्म २५ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति २६ उपांगपंचकमयनिर-यावलिका २७ चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां गाथाकाराद्यनुक्रमो लघुर्बृहन् विषयानुक्रमश्च समुन्मुद्रिताः, तत एतत्प्रयोगं यथार्हं कृत्वा सफलयन्तु सज्जना मे ज्ञानाभ्याससहायमनोरथमित्याशासे।

२००५ कार्तिकशुक्ला पूर्णिमा, सुरत. श्रीश्रमणसंघसेवक **आनन्दसागरः**

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:		क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:
अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:								
०१	❁ आचार				०७	❁ उपासकदशा		
०२	❁ सूत्रकृत्				०८	❁ अंतकृद्दशा		
०३	❁ स्थान				०९	❁ अनुत्तरोपपातिकदशा		
०४	❁ समवाय				१०	❁ प्रश्नव्याकरण		
०५	❁ भगवती				११	❁ विपाकश्रुत		
०६	❁ ज्ञाताधर्मकथा				-----	----------		
उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:								
१२	❁ औपपातिक	१९७	२०६		१८	❁ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	२०२	२७६
१३	❁ राजप्रश्नीय	१९८	२१०		१९	❁ निरयावलिका	२०३	२९२
१४	❁ जीवाजीवाभिगम	१९९	२१४		२०	❁ कल्पवतंसिका	२०३	२९२
१५	❁ प्रज्ञापना	२००	२३५		२१	❁ पुष्पिता	२०३	२९२
१६+१७	❁ सूर्य+चन्द्र-प्रज्ञप्ति	२०१	२६६		२२	❁ पुष्पचूलिका	२०३	२९२
-----	----------				२३	❁ वृष्णिदशा	२०३	२९२

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:		क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:
			प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
२४	❁ चतु:शरण	२०४	२९६		२९	❁ संस्तारक	२०४	३०३
२५	❁ आतुरप्रत्याख्यान	२०४	२९७		३०	❁ गच्छाचार	२०४	३०४
२६	❁ महाप्रत्याख्यान	२०४	२९८		३१	❁ गणिविज्जा	२०४	३०६
२७	❁ भक्तपरिज्ञा	२०४	२९९		३२	❁ देवेन्द्रस्तव	२०४	३०७
२८	❁ तंदुलवैचारिक	२०४	३०१		३३	❁ मरणसमाधि	२०४	३०९
	*** [३४-३९] छेदसूत्र-वृत्ति का विषयानुक्रम पूज्य आगमोद्धारकश्रीने नही बनाया ***							
			मूल-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
४०	❁ आवश्यक				४२	❁ दशवैकालिक		
४१/१	❁ पिंडनिर्युक्ति				४३	❁ उत्तराध्ययन		
४१/२	❁ ओघनिर्युक्ति				-----	----------		
			चूलिका-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
४४	❁ नन्दी				४५	❁ अनुयोगद्वार		

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांक: एवं दीप-क्रमांक:

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्र
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-	
०१	❁ आचार	४०२	१४७	५५२	१६	❁ सूर्यप्रज्ञप्ति	१०७	१०३	२१४
०२	❁ सूत्रकृत्	०८२	७२३	८०६	१७	❁ चन्द्रप्रज्ञप्ति	१०७	१०७	२१८
०३	❁ स्थान	७८३	१६९	१०१०	१८	❁ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१७८	१३१	३६५
०४	❁ समवाय	१६०	०९३	३८३	१९	❁ निरयावलिका	०२०	----	०२१
०५	❁ भगवती	८६९	११४	१०८७	२०	❁ कल्पवतंसिका	००२	००१	००५
०६	❁ ज्ञाताधर्मकथा	१६५	०५७	२४१	२१	❁ पुष्पिता	००६	००२	०११
०७	❁ उपासकदशा	०५८	०१३	०७३	२२	❁ पुष्पचूलिका	००१	००१	००३
०८	❁ अंतकृद्दशा	०२७	०१२	०६२	२३	❁ वृष्णिदशा	००२	००१	००५
०९	❁ अनुत्तरोपपातिकदशा	००६	००२	०१३	२४	❁ चतु:शरण	-----	०६३	०६३
१०	❁ प्रश्नव्याकरण	०३०	०१४	०४७	२५	❁ आतुरप्रत्याख्यान	००१	०७०	०७१
११	❁ विपाकश्रुत	०३४	००३	०४७	२६	❁ महाप्रत्याख्यान	-----	१४२	१४२
१२	❁ औपपातिक	०४३	०३०	०७७	२७	❁ भक्तपरिज्ञा	-----	१७२	१७२
१३	❁ राजप्रश्नीय	०८५	-----	०८५	२८	❁ तंदुलवैचारिक	०२०	१३९	१६१
१४	❁ जीवाजीवाभिगम	२७३	०९३	३९८	२९	❁ संस्तारक	-----	१३३	१३३
१५	❁ प्रज्ञापना	३५२	२३१	६२२	३०	❁ गच्छाचार	-----	१३७	१३७

❁ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नही किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांक: एवं दीप-क्रमांक:

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-गाथा	
३१	❁ गणिविज्जा	-----	०८२	०८२	४१/२	❁ ओघनिर्युक्ति	-----	८१२	११६५
३२	❁ देवेन्द्रस्तव	-----	३०७	३०७	४२	❁ दशवैकालिक	०२१	५१५	५४०
३३	❁ मरणसमाधि	-----	६६३	६६४	४३	❁ उत्तराध्ययन	०८८	१६४०	१७३१
❁४०	❁ आवश्यक	०५०	०२१	०९२	४४	❁ नन्दीसूत्र	०५९	०९०	१६३
४१/१	❁ पिंडनिर्युक्ति	-----	६७१	७१२	४५	❁ अनुयोगद्वार	१५२	१४१	३५०

❁ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नही किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

[उपांगसूत्र + प्रकीर्णक-सूत्रलघुबृहद्विषयानुक्रमौ] इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

✣ यह प्रत "उपांगसूत्र + प्रकीर्णक-सूत्र लघुबृहद्विषयानुक्रमौ" नामसे सन १९४८ (विक्रम-संवत २००५) में 'सूर्यपूरीया श्री जैन पुस्तक प्रचारक संस्था' द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराजसाहेब |

✣ पूज्यपाद् आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने 'औपपातिक' वगैरेह उपांगसूत्रो तथा "चतु:शरण" वगैरेह प्रकीर्णको के मूलसूत्र एवं उस पर पूर्वाचार्य रचित वृत्ति आदि का संपादन किया था | उन प्रतोमे जो मूलसूत्र, गाथा, वृत्ति आदि थे उन सभी सूत्रादि के विषयो का अनुक्रम संक्षेप और विस्तार से लिखकर इस प्रतमे प्रकाशित करवाया है | अर्थात् १२ उपांग और १० प्रकीर्णकसूत्रो के लघु और बृहत् विषयानुक्रम के रचयिता, संपादक और प्रकाशक श्री आगमोद्धारक आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब ही है |

✣ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्रीने इसी तरह अंगसूत्रो और नन्दी आदि अन्य आगमसूत्रो के सूत्र-आदि के विषयो का अनुक्रम भी संक्षेप और विस्तार से लिखकर संपादन और प्रकाशन करवाया है |

✣ हमारा ये प्रयास क्यों?✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, अब तक मेरे प्रकाशित किये हुए पुस्तको के १,००,००० से ज्यादा पृष्ठ हो चुके है, किन्तु लोगो की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिस के बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे प्रत संबंधी उपयोगी माहिती लिख दी है, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसे वर्ण का क्रम चल रहा है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके |

✣ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री ने आगम संबंधी ५२ विषयो को वर्गीकृत किया था, आज भी उनमे से ऐसी कइं प्रते मिलती है, जिसमे ये विभाजन-क्रमांक देखने को मिलते है, उनमे से थोडे विषयो का काम हुआ भी है, जो मुद्रित स्थितिमे भी प्राप्त है |

✣ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणा से और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'आगम-संबंधी-साहित्य' भाग-4 का मुद्रण हुआ है, हम उनके प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है|

.... मुनि दीपरत्नसागर.

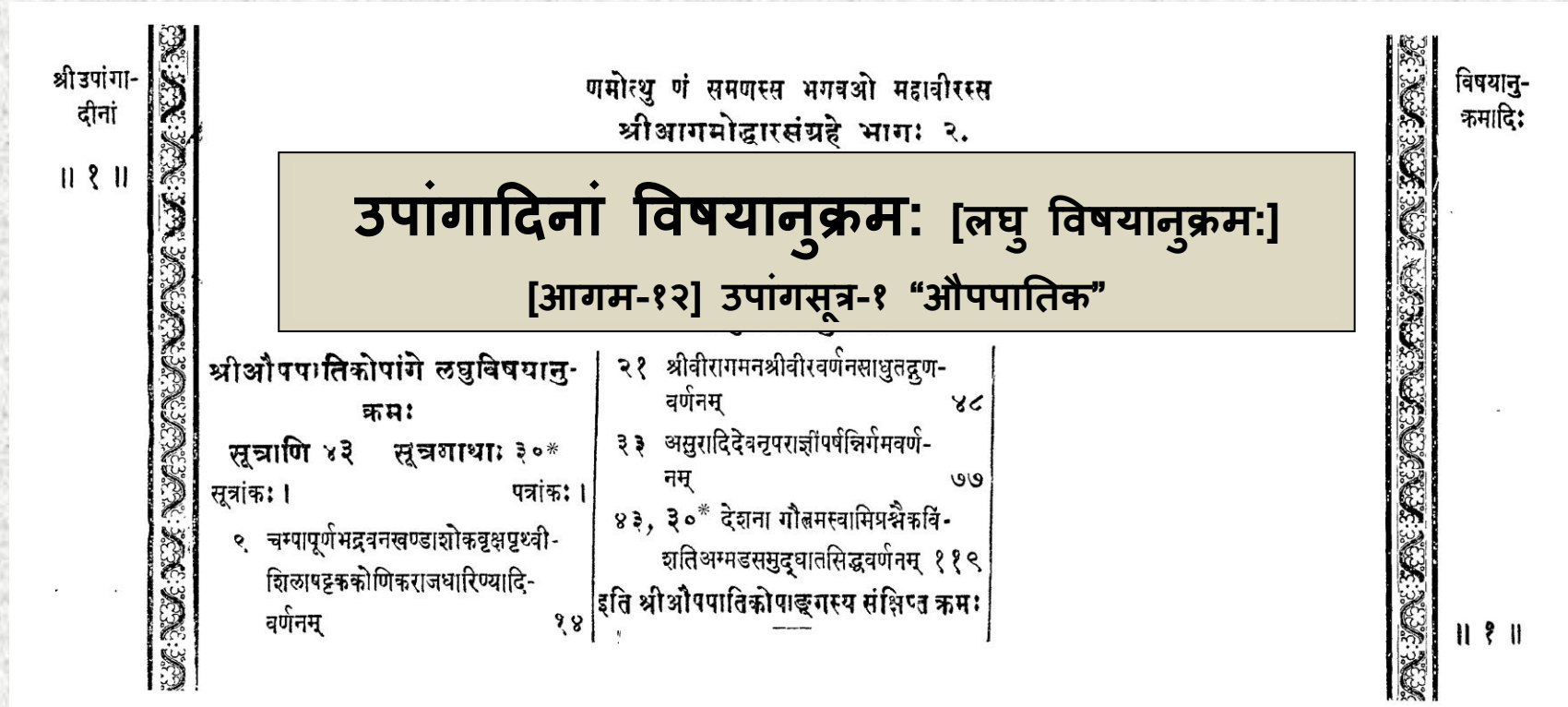
[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म॰ सा॰]

उपांग + प्रकीर्णकसूत्र

लघु-विषयानुक्रम:

← पुन: संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर **मुनि दीपरत्नसागर**(M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि)



श्रीउपांगादीनां ॥ १ ॥

णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २.

उपांगादिनां विषयानुक्रम: [लघु विषयानुक्रम:]

[आगम-१२] उपांगसूत्र-१ "औपपातिक"

श्रीऔपपातिकोपांगे लघुविषयानुक्रमः

सूत्राणि ४३ सूत्रगाथाः ३०*

सूत्रांकः। पत्रांकः।

१. चम्पापूर्णभद्रवनखण्डाशोकवृक्षपृथ्वीशिलापट्टककोणिकराजधारिण्यादिवर्णनम् १४

२१ श्रीवीरागमनश्रीवीरवर्णनसाधुतद्गुणवर्णनम् ४८

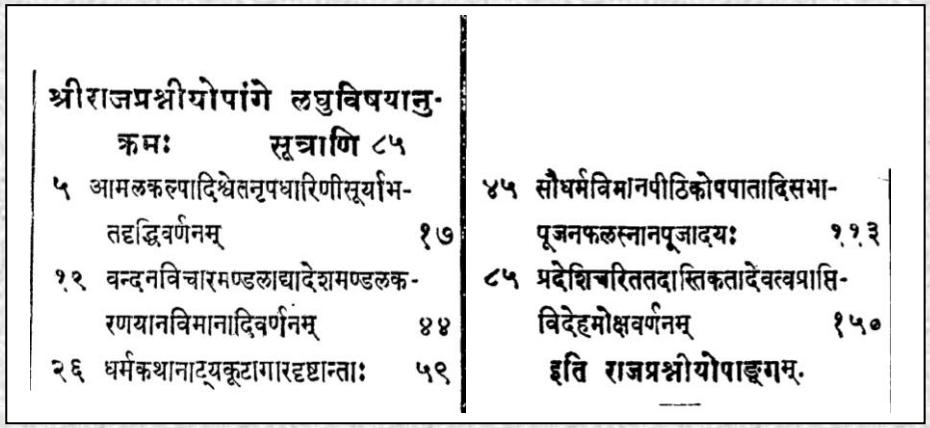
३३ असुरादिदेवनृपराज्ञीपर्षन्निर्गमवर्णनम् ७७

४३, ३०* देशना गौतमस्वामिप्रश्नैकविंशतिअम्मडसमुद्घातसिद्धवर्णनम् ११९

इति श्रीऔपपातिकोपाङ्गस्य संक्षिप्त क्रमः

विषयानुक्रमादिः ॥ १ ॥

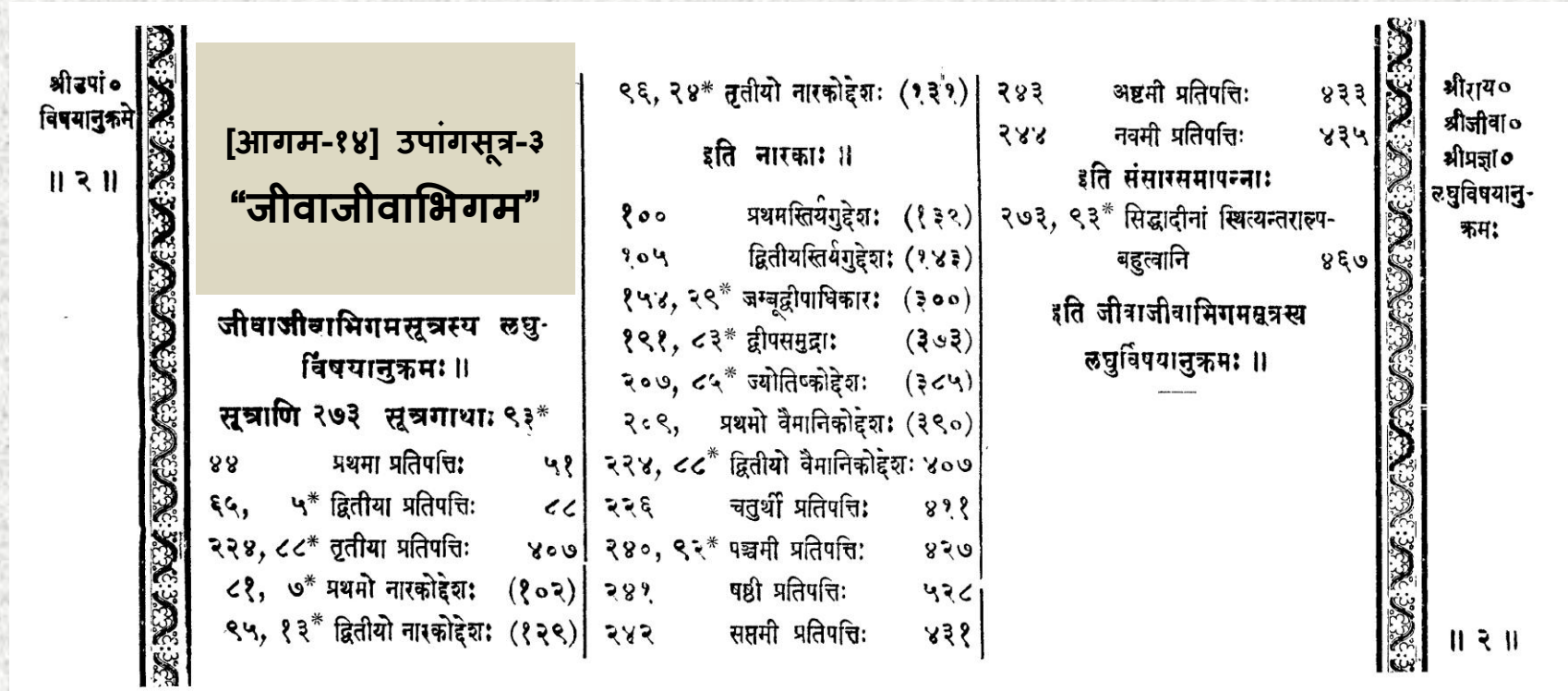
आगम संबंधी साहित्य	[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-२ "राजप्रश्नीय"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य) **[आगम-१३] उपांगसूत्र-२ "राजप्रश्नीय"**



श्रीराजप्रश्नीयोपांगे लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ८५

५ आमलकल्पादिश्वेतनृपधारिणीसूर्याभतद्ऋद्धिवर्णनम् १७
१२ वन्दनविचारमण्डलाद्यादेशमण्डलकरणयानविमानादिवर्णनम् ४४
२६ धर्मकथानाट्यकूटागारदृष्टान्ताः ५९
४५ सौधर्मविमानपीठिकोपपातादिसभापूजनफलस्नानपूजादयः ११३
८५ प्रदेशिचरिततदास्तिकतादेवत्वप्राप्तिविदेहमोक्षवर्णनम् १५०

इति राजप्रश्नीयोपाङ्गम्.



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २ ॥

[आगम-१४] उपांगसूत्र-३

"जीवाजीवाभिगम"

जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य लघु-विषयानुक्रमः ॥

सूत्राणि २७३ सूत्रगाथाः ९३*

४४ प्रथमा प्रतिपत्तिः ५१
६९, ५* द्वितीया प्रतिपत्तिः ८८
२२४, ८८* तृतीया प्रतिपत्तिः ४०७
८१, ७* प्रथमो नारकोद्देशः (१०२)
९५, १३* द्वितीयो नारकोद्देशः (१२९)
९६, २४* तृतीयो नारकोद्देशः (१३१)

इति नारकाः ॥

१०० प्रथमस्तिर्यगुद्देशः (१३१)
१०५ द्वितीयस्तिर्यगुद्देशः (१४३)
१५४, २९* जम्बूद्वीपाधिकारः (३००)
१९१, ८३* द्वीपसमुद्राः (३७३)
२०७, ८५* ज्योतिष्कोद्देशः (३८५)
२०९, प्रथमो वैमानिकोद्देशः (३९०)
२२४, ८८* द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ४०७
२२६ चतुर्थी प्रतिपत्तिः ४११
२४०, ९२* पञ्चमी प्रतिपत्तिः ४२७
२४१ षष्ठी प्रतिपत्तिः ५२८
२४२ सप्तमी प्रतिपत्तिः ४३१
२४३ अष्टमी प्रतिपत्तिः ४३३
२४४ नवमी प्रतिपत्तिः ४३५

इति संसारसमापन्नाः

२७३, ९३* सिद्धादीनां स्थित्यन्तराल्प-बहुत्वानि ४६७

इति जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य लघुर्विषयानुक्रमः ॥

श्रीराय० श्रीजीवा० श्रीप्रज्ञा० लघुविषयानु-क्रमः ॥ २ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

सूत्राणि ३५२ — **प्रज्ञापनासूत्रस्य लघु-विषयानुक्रम:** — सूत्रगाथा: २३१

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

[आगम-१५] उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"

३८, १३३* प्रज्ञापनापदम् १ ७१
५४, १७९* स्थानपदम् २ ११३
९३, १८१* बहुवक्तव्यतापदम् ३ १६८
१०२ स्थितिपदम् ४ १७८
१२१ विशेषपदम् ५ २०४
१४५,१८४* व्युत्क्रान्तिपदम् ६ २१८
१४६ उच्छ्वासपदम् ७ २२१
१४८ सञ्ज्ञापदम् ८ २२४
१५३ योनिपदम् ९ २२८
१६०, १९१* चरमाचरमपदम् १० २४६
१७५, १९८* भाषापदम् ११ २६८
१८० शरीरपदम् १२ २८४
१८५, २००* परिणामपदम् १३ २८९
१९०, २०१* कषायपदम् १४ २९२
२०१, २०८* इन्द्रियपदम् १५ ३१७
१९८, २०६* प्रथम इन्द्रियोद्देश: (३०८)
२०१,२०८ द्वितीय इन्द्रियोद्देश: (३१७)
२०५ प्रयोगपदम् १६ ३१०
२३२, २१०* १७ लेश्यापदम् ३७३
२१३, २०९* प्रथमो लेश्योद्देश: (३४३)
२२१ द्वितीयो लेश्योद्देश: (३५२)
२२४ तृतीयो लेश्योद्देश: (३५८)
२३०, २१०* चतुर्थो लेश्योद्देश: (३७०)
२३१ पञ्चमो लेश्योद्देश: (३७२)
२३२ षष्ठो लेश्योद्देश: (३७३)
२५४, २१२* कायस्थितिपदम् १८ ३९५
२५५ सम्यक्त्वपदम् १९ ३९५
२६७, २१३* अन्तक्रियापदम् २० ४०७
२७९, २१६* शरीरपदम् २१ ४३५
२८८ क्रियापदम् २२ ४५२
२९९, २१७* कर्मप्रकृतिपदम् २३ ४२१
२९३,२१७*प्रथम:कर्मप्रकृत्युद्देश:(४६५)
२९९ द्वितीय: कर्मप्रकृत्युद्देश: (४९२)
३०० कर्मबन्धपदम् २४ ४९४
३०१ कर्मवेदपदम् २५ ४९४
३०२ कर्मवेदबन्धपदम् २६ ४९७
३०३ कर्मवेदवेदपदम् २७ ४९८
३१२, २२०* आहारपदम् २८ ५२४
३०९, २१२* प्रथम आहारोद्देश: (५११)
३१२ २२०* द्वितीय आहारोद्देश:(५२४)
३१३ उपयोगपदम् २९ ५२८
३१५ पश्यत्तापदम् ३० ५३३
३१६ २२१* सञ्ज्ञिपदम् ३१ ५३४
३१७, २२२* संयतपदम् ३२ ५३८
३२१, २२३* अवधिपदम् ३३ ५४३
३२९, २२५* प्रवीचारपदम् ३४ ५५३
३३२, २२७* वेदनापदम् ३५ ५५८
३५२, २३१* समुद्घातपदम् ३६ ६११
इति प्रज्ञापनाया लघुर्विषयानुक्रम:।

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४ ॥

[आगम-१६+१७]

उपांग- ५ + ६

सूर्य+चन्द्रप्रज्ञप्ति

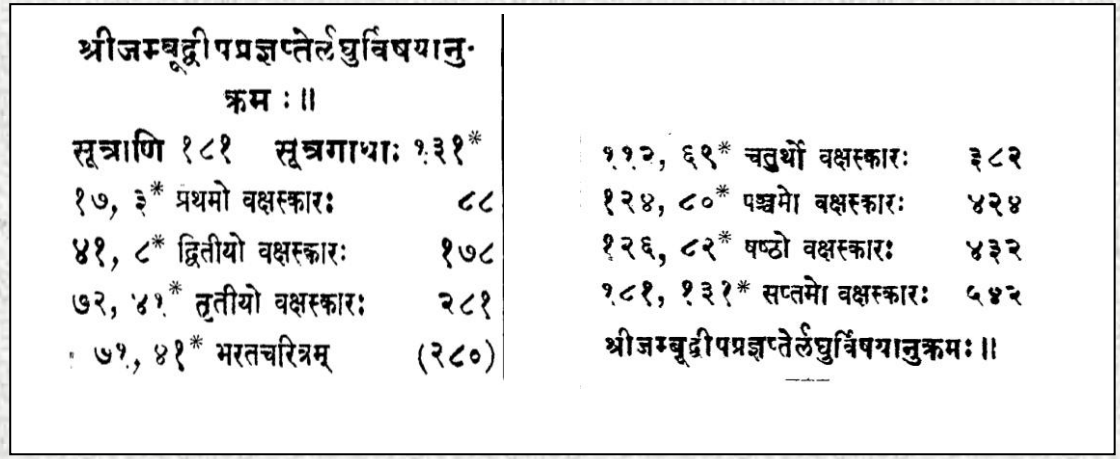
श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानुक्रमः ॥

सूत्राणि १०७ सूत्रगाथाः १०२*

२०, १५* प्रथमं प्राभृतम् १ ४४
११, १५* प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (१६)
१३ द्वितीयं प्रा० ,, (२१)
१४ तृतीयं प्रा० ,, (२४)
१५ चतुर्थं प्रा० ,, (२८)
१७ पञ्चमं प्रा० ,, (३१)
१८ षष्ठं प्रा० ,, (३५)
१९ सप्तमं प्रा० ,, (३७)
२० अष्टमं प्रा० ,, (४४)
२३ द्वितीयं प्राभृतं ६३
२१ प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (४८)
२२ द्वितीयं प्रा० ,, (५०)
२३ तृतीयं प्रा० ,, (६३)
२४ तृतीयं प्राभृतं ६६
२५ चतुर्थं प्रा० ७६
२६ पञ्चमं प्रा० ७९
२७ षष्ठं प्रा० ८३
२८ सप्तमं प्रा० ८४
२९ अष्टमं प्रा० ९२
३१ नवमं प्रा० ९९
७०, २०* दशमं प्रा० १९७
३२ प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (१००)
३४ द्वितीयं प्रा० ,, (१०४)
३५ तृतीयं प्रा० ,, (१०५)
३६ चतुर्थं प्रा० ,, (११०)
३७ पंचमं प्रा० ,, (१११)
३९ षष्ठं प्रा० ,, (१२८)
४० सप्तमं प्रा० ,, (१२९)
४१ अष्टमं प्रा० ,, (१३०)
४२ नवमं प्रा० ,, (१३१)
४३ दशमं प्रा० ,, (१३७)
४५ एकादशं प्रा० ,, (१४५)
४६ द्वादशं प्रा० ,, (१४६)
४७, १८* त्रयोदशं प्रा० ,, (१४७)

श्रीप्रज्ञा० श्रीसूर्य० लघुविषयानुक्रमः ॥ ४ ॥

आगम संबंधी साहित्य	[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ "जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य) **[आगम-१७] उपांगसूत्र-७ "जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति"**



श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानु-
क्रम : ॥

सूत्राणि १८१ सूत्रगाथाः १३१*

१७, ३* प्रथमो वक्षस्कारः ८८
४१, ८* द्वितीयो वक्षस्कारः १७८
७२, ४१* तृतीयो वक्षस्कारः २८१
७१, ४१* भरतचरित्रम् (२८०)
११२, ६९* चतुर्थो वक्षस्कारः ३८२
१२४, ८०* पञ्चमो वक्षस्कारः ४२४
१२६, ८२* षष्ठो वक्षस्कारः ४३२
१८१, १३१* सप्तमो वक्षस्कारः ५४२

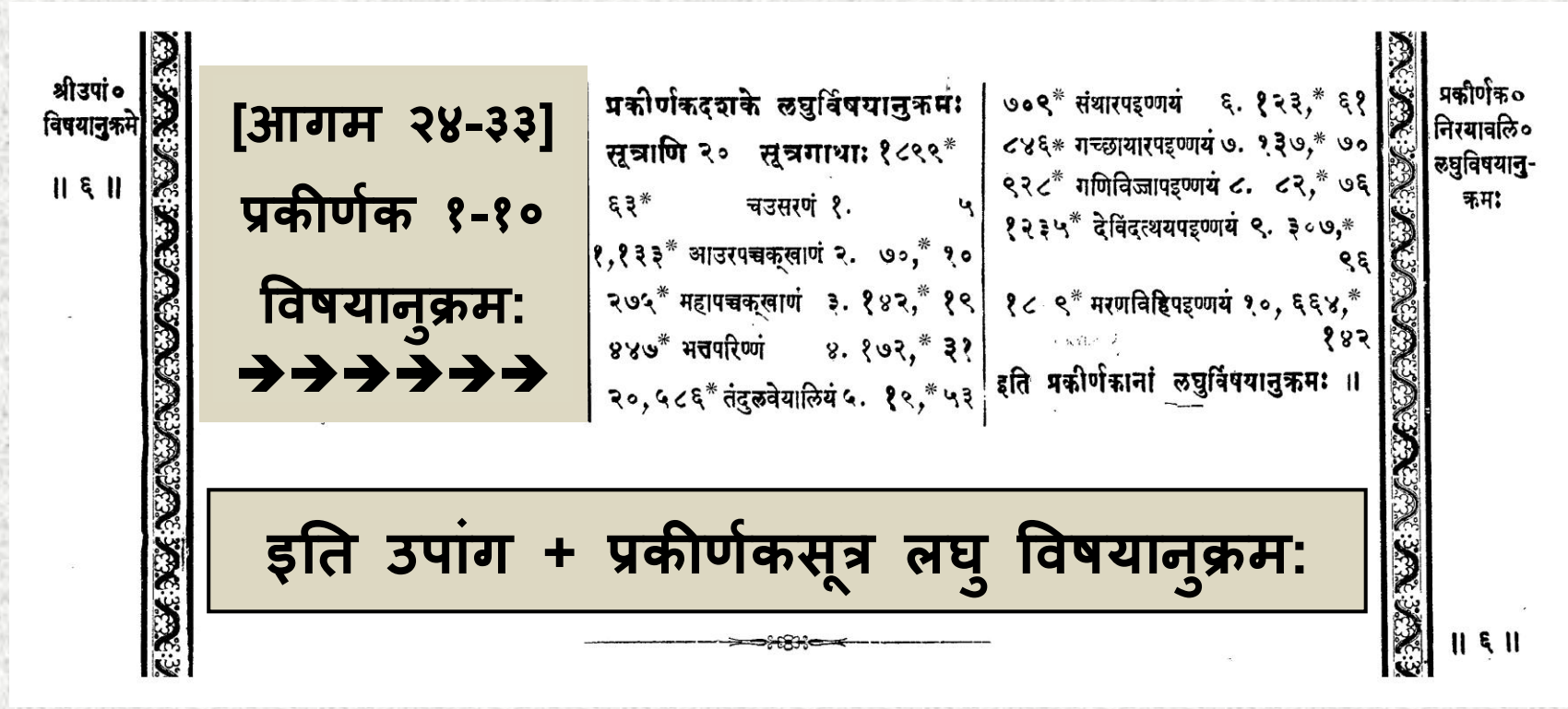
श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानुक्रमः ॥

आगम संबंधी साहित्य	[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- ८ से १२ "निरयावलिका-पंचक"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य) **[आगम १८-२३] उपांगसूत्र ८-१२ निरयावलिका-आदि पंचक**

निरयावलिकानां लघुर्विषयानुक्रमः
सूत्राणि ३१ सूत्रगाथाः ५*

२० प्रथमो वर्गः	१९
१९ प्रथमाध्ययनम्	(१९)
२० अध्ययनचतुस्कम्	(१९)
२२, १* द्वितीयो वर्गः	२१
२८, २* तृतीयो वर्गः	३६
२३, २* प्रथमाध्ययनम्	(२३)
२४ द्वितीयमध्ययनम्	(२३)
२५ तृतीयमध्ययनम्	(२९)
२६ चतुर्थमध्ययनम्	(३५)
२७ पञ्चममध्ययनम्	(३६)
२९ ४* चतुर्थो वर्गः	३८
३१. ५* पञ्चमो वर्गः	४२

इति निरयावलिकानां लघुर्विषयानुक्रमः ॥


श्रीउपां० विषयानुक्रमे
॥ ६ ॥
[आगम २४-३३]
प्रकीर्णक १-१०
विषयानुक्रम:
➔➔➔➔➔➔
प्रकीर्णकदशके लघुर्विषयानुक्रमः
सूत्राणि २० सूत्रगाथाः १८९९*
६३* चउसरणं १. ५
१,१३३* आउरपच्चक्खाणं २. ७०,* १०
२७५* महापच्चक्खाणं ३. १४२,* १९
४४७* भत्तपरिण्णं ४. १७२,* ३१
२०,५८६* तंदुलवेयालियं ५. १९,* ५३
७०९* संथारपइण्णयं ६. १२३,* ६१
८४६* गच्छायारपइण्णयं ७. १३७,* ७०
९२८* गणिविज्जापइण्णयं ८. ८२,* ७६
१२३५* देविंदत्थयपइण्णयं ९. ३०७,* ९६
१८ ९* मरणविहिपइण्णयं १०, ६६४,* १४२
इति प्रकीर्णकानां लघुर्विषयानुक्रमः ॥
इति उपांग + प्रकीर्णकसूत्र लघु विषयानुक्रम:
प्रकीर्णक० निरयावलि० लघुविषयानु-क्रमः
॥ ६ ॥

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म॰ सा॰]

उपांग + प्रकीर्णकसूत्र

बृहद्विषयानुक्रम:

← पुन: संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर **मुनि दीपरत्नसागर**(M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

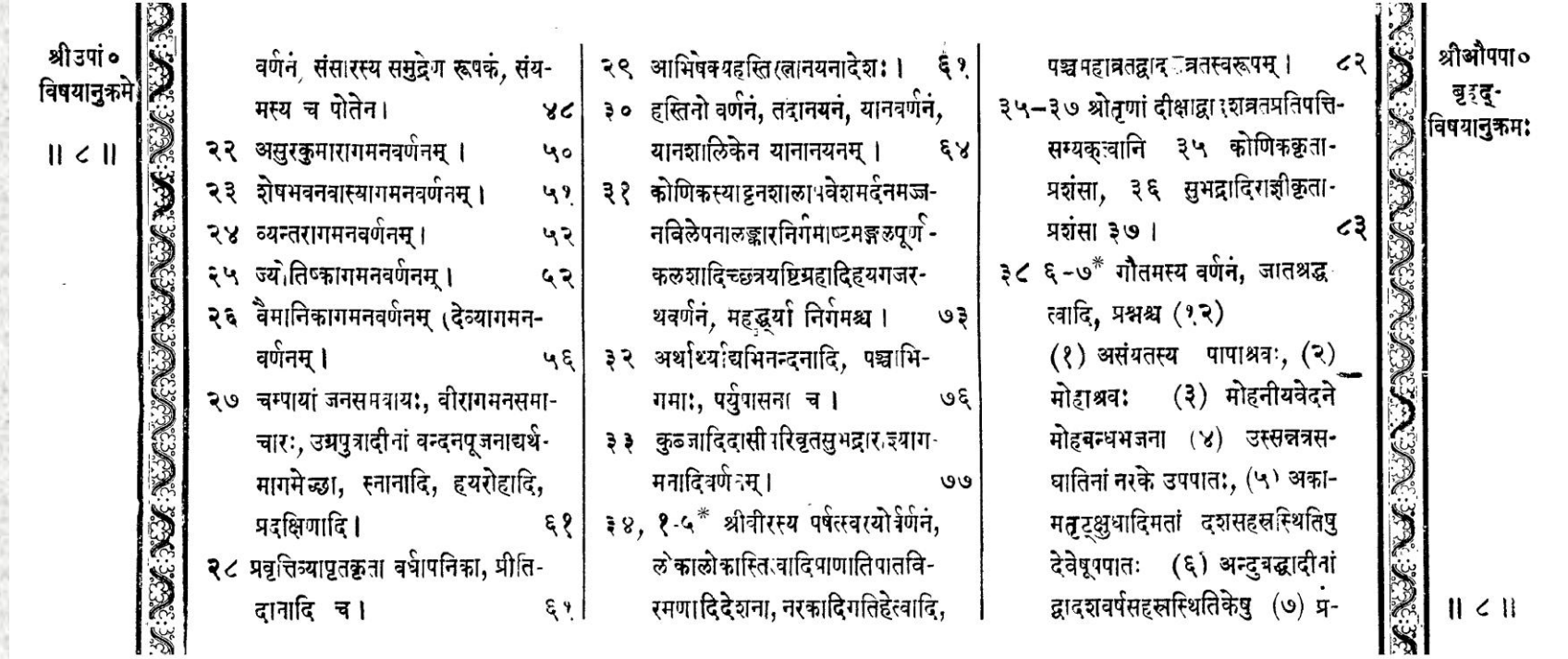
॥ श्रीउपांगादीनां बृहद्विषयानुक्रमः

[आगम-१२] उपांग-१ औपपातिक

श्रीऔपपातिकोपांगस्य बृहद्-विषयानुक्रमः

सूत्राणि ४३; सूत्रगाथाः ३०*.

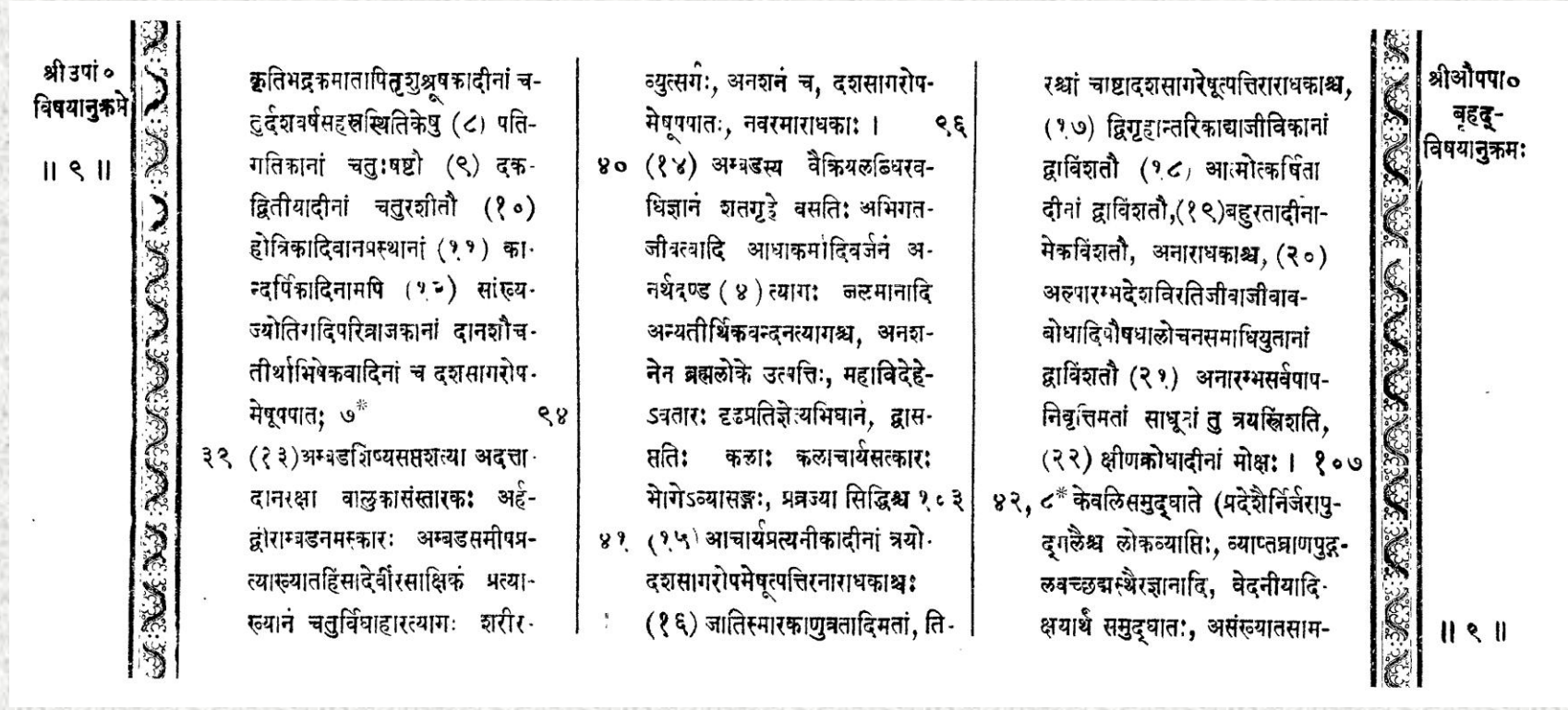
मङ्गलोपोद्घातादि । १
१ चम्पावर्णनम् । ४
२ पूर्णभद्रचैत्यवर्णनम् । ६
३ वनखण्डवर्णनम् । ८
४ अशोकवृक्षवर्णनम् । १०
५ पृथ्वीशिलापट्टकवर्णनम् । ११
६ कोणिकराजवर्णनम् । १२
७ धारिणीराज्ञीवर्णनम् । १३
८ प्रवृत्तिव्यापृतिवर्णनम् । १४
९ कोणिकराजोपस्थानशालोपवेशनम् । १४
१० श्रीमहावीरवर्णनं, उपग्रामे श्रीवीरागमनं च । २२
११ प्रवृत्तिव्यापृतकृता वर्द्धापनिका । २४
१२ कोणिककृतमभ्युत्थाननमस्कारप्रीतिदानादि । २६
१३ श्रीवीरस्य पूर्णभद्रे समवसरणम् । २६
१६ उग्रप्रव्रजितादिसाधुवर्णनं मतिज्ञान्यादि, कनकावल्यादितपो, मासिक्यादिप्रतिमाकारकसाधुवर्णनं, जात्यादिसाधुगुणवर्णनम् । ३४
१७ ईर्यासमित्यादिगुणानामप्रतिबद्धतायाश्च वर्णनम् । ३७
१८ बाह्याभ्यन्तरे तपसी । ३७
१९ अनशनादीनां बाह्यभेदानां वर्णनम् । ४१
२० प्रायश्चित्तादीनामभ्यन्तरभेदानां वर्णनम् । ४५
२१ मुनीनां वाचनापृच्छाधर्मकथादि-



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ८ ॥

वर्णनं, संसारस्य समुद्रेण रूपकं, संयमस्य च पोतेन। ४८
२२ असुरकुमारागमनवर्णनम्। ५०
२३ शेषभवनवास्यागमनवर्णनम्। ५१
२४ व्यन्तरागमनवर्णनम्। ५२
२५ ज्योतिष्कागमनवर्णनम्। ५२
२६ वैमानिकागमनवर्णनम् (देव्यागमनवर्णनम्। ५६
२७ चम्पायां जनसमवायः, वीरागमनसमाचारः, उग्रपुत्रादीनां वन्दनपूजनार्थमागमेच्छा, स्नानादि, हयरोहादि, प्रदक्षिणादि। ६१
२८ प्रवृत्तिव्यापृतकृता वर्धापनिका, प्रीतिदानादि च। ६१
२९ आभिषेक्यहस्तिरत्नानयनादेशः। ६१
३० हस्तिनो वर्णनं, तदानयनं, यानवर्णनं, यानशालिकेन यानानयनम्। ६४
३१ कोणिकस्याट्टनशालाप्रवेशमर्दनमज्जनविलेपनालङ्कारनिर्गमाष्टमङ्गलपूर्णकलशादिच्छत्रयष्टिग्रहादिहयगजरथवर्णनं, महद्ध्यां निर्गमश्च। ७३
३२ अर्थार्थ्यादिभिनन्दनादि, पञ्चाभिगमाः, पर्युपासना च। ७६
३३ कुब्जादिदासीपरिवृतसुभद्रादिस्यागमनादिवर्णनम्। ७७
३४, १-५* श्रीवीरस्य पर्षत्स्वरयोर्वर्णनं, लोकालोकास्तित्ववादिप्राणातिपातविरमणादिदेशना, नरकादिगतिहेत्वादि, पञ्चमहाव्रतद्वादशव्रतस्वरूपम्। ८२
३५-३७ श्रोतृणां दीक्षाद्वादशव्रतप्रतिपत्तिसम्यक्त्वानि ३५ कोणिककृताप्रशंसा, ३६ सुभद्रादिराज्ञीकृताप्रशंसा ३७। ८३
३८ ६-७* गौतमस्य वर्णनं, जातश्रद्धत्वादि, प्रश्नश्च (१२)
(१) असंयतस्य पापाश्रवः, (२) मोहाश्रवः (३) मोहनीयवेदने मोहबन्धभजना (४) उत्सन्नत्रसघातिनां नरके उपपातः, (५) अकामतृट्क्षुधादिमतां दशसहस्रस्थितिषु देवेषूपपातः (६) अन्दुबद्धादीनां द्वादशवर्षसहस्रस्थितिकेषु (७) प्र-

श्रीऔपपा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ८ ॥



श्री उपां० विषयानुक्रमे ॥ ९ ॥

कृतिभद्रकमातापितृशुश्रूषकादीनां च- तुर्दशवर्षसहस्रस्थितिकेषु (८) पति- गतिकानां चतु:षष्टौ (९) दक- द्वितीयादीनां चतुरशीतौ (१०) होत्रिकादिवानप्रस्थानां (११) का- न्दर्पिकादिनामपि (१२) सांख्य- ज्योतिर्गदिपरिव्राजकानां दानशौच- तीर्थाभिषेकवादिनां च दशसागरोप- मेषूपपात; ७* ९४

३९ (१३)अम्बडशिष्यसप्तशत्या अदत्ता- दानरक्षा वालुकासंस्तारकः अर्ह- द्वीराम्बडनमस्कारः अम्बडसमीपप्र- त्याख्यातहिंसादेर्वीरसाक्षिकं प्रत्या- ख्यानं चतुर्विधाहारत्यागः शरीर- व्युत्सर्गः, अनशनं च, दशसागरोप- मेषूपपातः, नवरमाराधकाः । ९६

४० (१४) अम्बडस्य वैक्रियलब्धिरव- धिज्ञानं शतगृहे वसतिः अभिगत- जीवत्वादि आधाकर्मादिवर्जनं अ- नर्थदण्ड (४) त्यागः जलमानादि अन्यतीर्थिकवन्दनत्यागश्च, अनश- नेन ब्रह्मलोके उत्पत्तिः, महाविदेहे- ऽवतारः दृढप्रतिज्ञेत्यभिधानं, द्वास- प्ततिः कलाः कलाचार्यसत्कारः भोगेऽव्यासङ्गः, प्रव्रज्या सिद्धिश्च १०३

४१ (१५) आचार्यप्रत्यनीकादीनां त्रयो- दशसागरोपमेषूत्पत्तिरनाराधकाश्च: (१६) जातिस्मारकाणुव्रतादिमतां, ति- रश्चां चाष्टादशसागरेषूत्पत्तिराराधकाश्च, (१७) द्विगृहान्तरिकाद्याजीविकानां द्वाविंशतौ (१८) आत्मोत्कर्षिता दीनां द्वाविंशतौ,(१९)बहुरतादीना- मेकविंशतौ, अनाराधकाश्च, (२०) अल्पारम्भदेशविरतिजीवाजीवाव- बोधादिपौषधालोचनसमाधियुतानां द्वाविंशतौ (२१) अनारम्भसर्वपाप- निवृत्तिमतां साधूनां तु त्रयस्त्रिंशति, (२२) क्षीणक्रोधादीनां मोक्षः । १०७

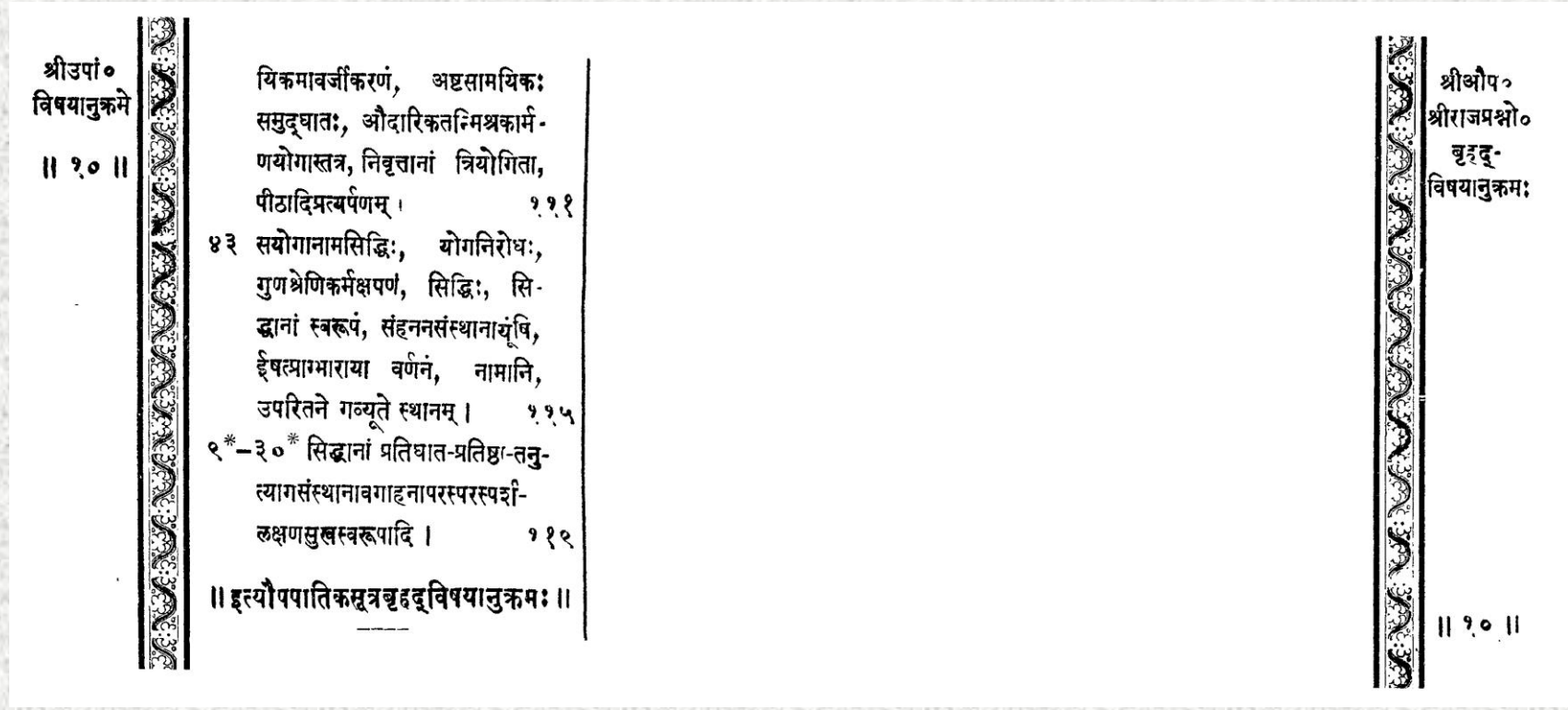
४२, ८* केवलिसमुद्घाते (प्रदेशैर्निर्जरापु- द्गलैश्च लोकव्याप्तिः, व्याप्तप्राणपुद्ग- लवच्छद्मस्थैरज्ञानादि, वेदनीयादि- क्षयार्थं समुद्घातः, असंख्यातसाम-

श्रीऔपपा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ९ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-१ "औपपातिक"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



यिकमावर्जीकरणं, अष्टसामयिकः समुद्घातः, औदारिकतन्मिश्रकार्मणयोगास्तत्र, निवृत्तानां त्रियोगिता, पीठादिप्रत्यर्पणम् । ११११

४३ सयोगानामसिद्धिः, योगनिरोधः, गुणश्रेणिकर्मक्षपणं, सिद्धिः, सिद्धानां स्वरूपं, संहननसंस्थानायूंषि, ईषत्प्राग्भाराया वर्णनं, नामानि, उपरितने गव्यूते स्थानम् । ११५

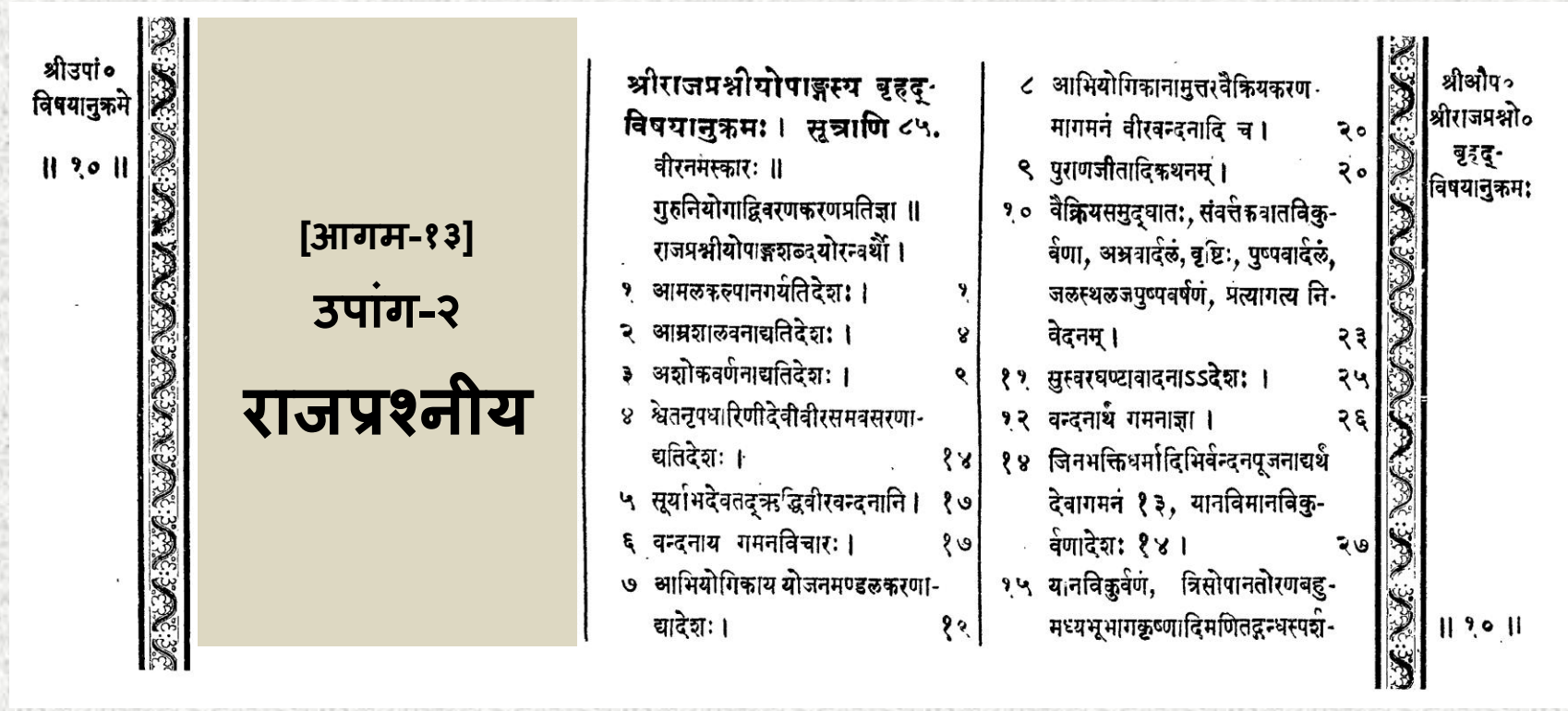
९*–३०* सिद्धानां प्रतिघात-प्रतिष्ठा-तनुत्यागसंस्थानावगाहनापरस्परस्पर्श-लक्षणसुखस्वरूपादि । ११९

॥ इत्यौपपातिकसूत्रबृहद्विषयानुक्रमः ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-२ "राजप्रश्नीय"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १० ॥

[आगम-१३]

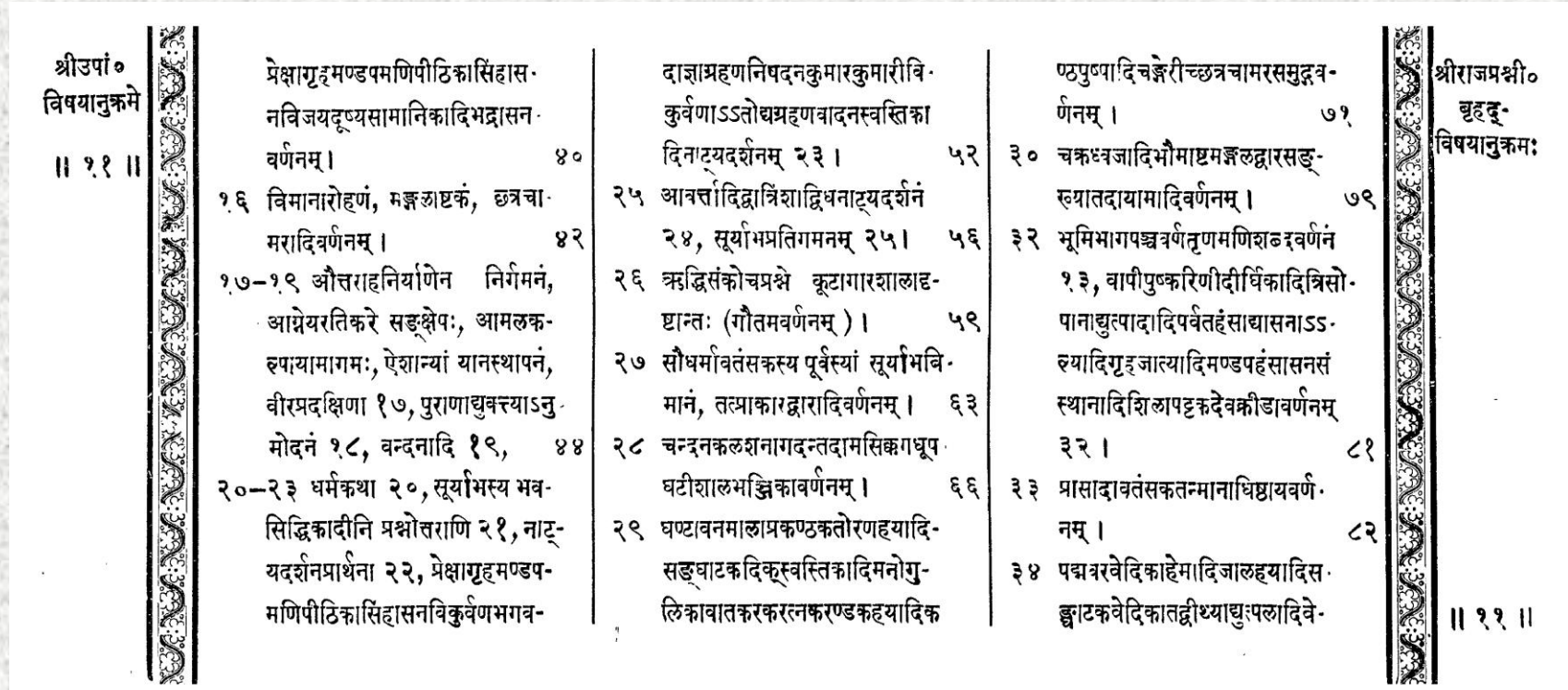
उपांग-२

राजप्रश्नीय

श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गस्य बृहद्-विषयानुक्रमः । सूत्राणि ८५.

वीरनमस्कारः ॥
गुरुनियोगाद्विवरणकरणप्रतिज्ञा ॥
राजप्रश्नीयोपाङ्गशब्दयोरन्वर्थौ ।
१ आमलकल्पानगर्यतिदेशः । १
२ आम्रशालवनाद्यतिदेशः । ४
३ अशोकवर्णनाद्यतिदेशः । ९
४ श्वेतनृपधारिणीदेवीवीरसमवसरणाद्यतिदेशः । १४
५ सूर्याभदेवतद्ऋद्धिवीरवन्दनानि । १७
६ वन्दनाय गमनविचारः । १७
७ आभियोगिकाय योजनमण्डलकरणाद्यादेशः । १९
८ आभियोगिकानामुत्तरवैक्रियकरणमागमनं वीरवन्दनादि च । २०
९ पुराणजीतादिकथनम् । २०
१० वैक्रियसमुद्घातः, संवर्त्तकवातविकुर्वणा, अभ्रवार्दलं, वृष्टिः, पुष्पवार्दलं, जलस्थलजपुष्पवर्षणं, प्रत्यागत्य निवेदनम् । २३
११ सुस्वरघण्टावादनाऽऽदेशः । २५
१२ वन्दनार्थं गमनाज्ञा । २६
१४ जिनभक्तिधर्मादिभिर्वन्दनपूजनाद्यर्थं देवागमनं १३, यानविमानविकुर्वणादेशः १४ । २७
१५ यानविकुर्वणं, त्रिसोपानतोरणबहुमध्यभूभागकृष्णादिमणितद्वन्धस्पर्श-

श्रीऔप० श्रीराजप्रश्नी० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ १० ॥



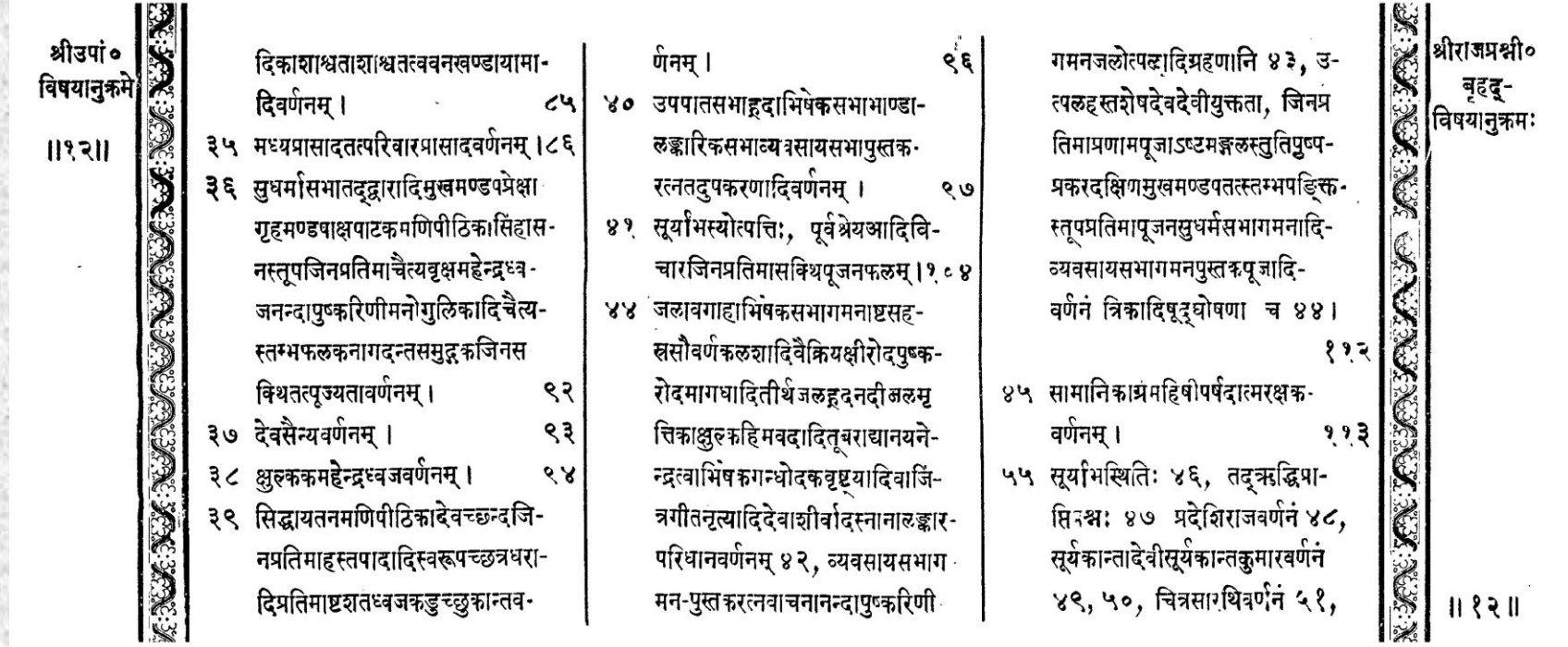
श्रीउपां० विषयानुक्रमे

॥ ११ ॥

प्रेक्षागृहमण्डपमणिपीठिकासिंहास-
नविजयदूष्यसामानिकादिभद्रासन-
वर्णनम्। ४०
१६ विमानारोहणं, मङ्गलाष्टकं, छत्रचा-
मरादिवर्णनम्। ४२
१७–१९ औत्तराहनिर्याणेन निर्गमनं,
आग्नेयरतिकरे सङ्क्षेपः, आमलक-
रूपायामागमः, ऐशान्यां यानस्थापनं,
वीरप्रदक्षिणा १७, पुराणाद्युक्त्याऽनु-
मोदनं १८, वन्दनादि १९, ४४
२०–२३ धर्मकथा २०, सूर्याभस्य भव-
सिद्धिकादीनि प्रश्नोत्तराणि २१, नाट्-
यदर्शनप्रार्थना २२, प्रेक्षागृहमण्डप-
मणिपीठिकासिंहासनविकुर्वणभगव-
दाज्ञाग्रहणनिषदनकुमारकुमारीवि-
कुर्वणाऽऽतोद्यग्रहणवादनस्वस्तिका
दिनाट्यदर्शनम् २३। ५२
२५ आवर्त्तादिद्वात्रिंशद्विधनाट्यदर्शनं
२४, सूर्याभप्रतिगमनम् २५। ५६
२६ ऋद्धिसंकोचप्रश्ने कूटागारशालाद-
ष्टान्तः (गौतमवर्णनम्)। ५९
२७ सौधर्मावतंसकस्य पूर्वस्यां सूर्याभवि-
मानं, तत्प्राकारद्वारादिवर्णनम्। ६३
२८ चन्दनकलशनागदन्तदामसिक्कगधूप-
घटीशालभञ्जिकावर्णनम्। ६६
२९ घण्टावनमालाप्रकण्ठकतोरणहयादि-
सङ्घाटकदिक्स्वस्तिकादिमनोगु-
लिकावातकरकरत्नकरण्डकहयादिक
ष्ठपुष्पादिचङ्गेरीच्छत्रचामरसमुद्गव-
र्णनम्। ७१
३० चक्रध्वजादिभौमाष्टमङ्गलद्वारसङ्-
ख्यातदायामादिवर्णनम्। ७९
३२ भूमिभागपञ्चवर्णतृणमणिशब्दवर्णनं
१३, वापीपुष्करिणीदीर्घिकादित्रिसो-
पानाद्युत्पादादिपर्वतहंसाद्यासनाऽऽ-
ख्यादिगृहजात्यादिमण्डपहंसासनसं
स्थानादिशिलापट्टकदेवक्रीडावर्णनम्
३२। ८१
३३ प्रासादावतंसकतन्मानाधिष्ठायवर्ण-
नम्। ८२
३४ पद्मवरवेदिकाहेमादिजालहयादिस-
ङ्घाटकवेदिकातद्वीथ्याद्युत्पलादिवे-

श्रीराजप्रश्नी० बृहद्-विषयानुक्रमः

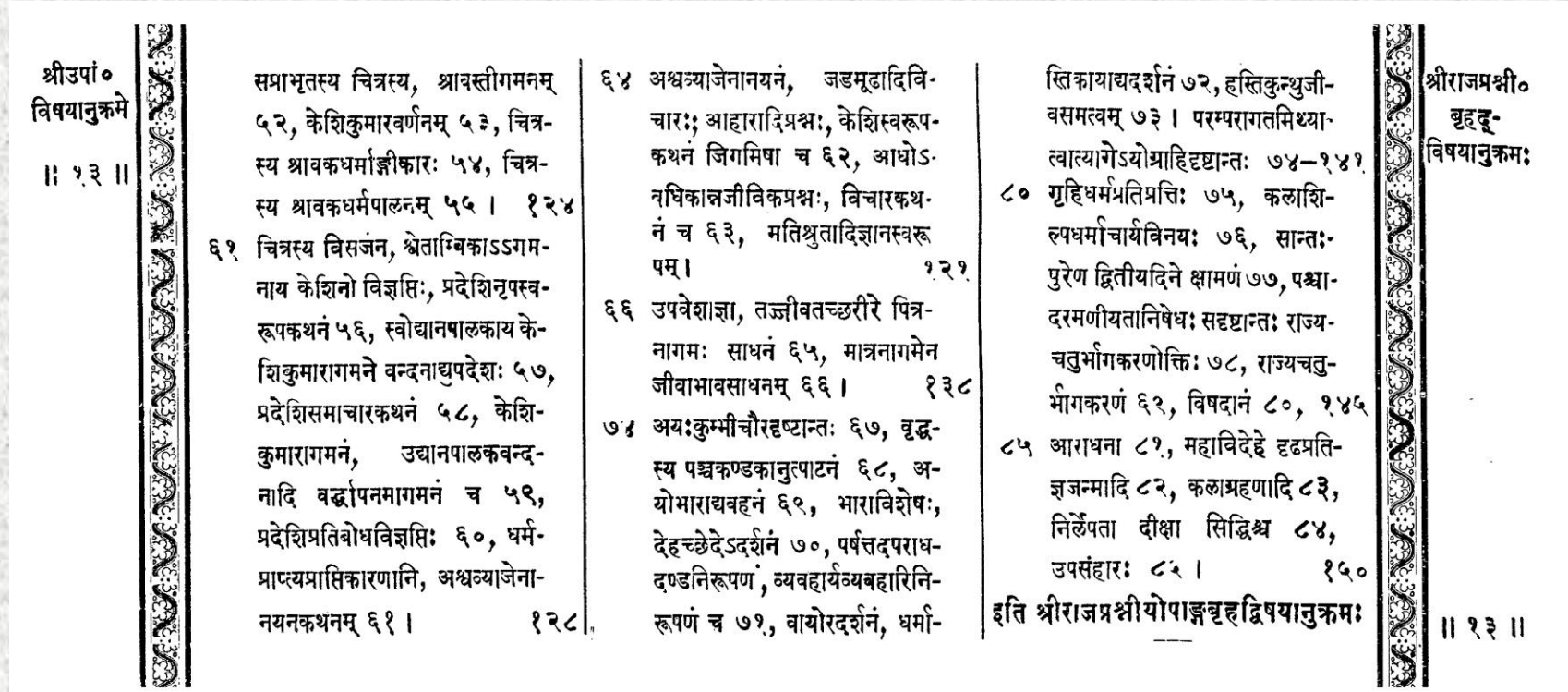
॥ ११ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥१२॥

दिकाशाश्वताशाश्वतत्ववनखण्डायामादिवर्णनम् । ८५
३५ मध्यप्रासादतत्परिवारप्रासादवर्णनम् । ८६
३६ सुधर्मासभातद्द्वारादिमुखमण्डपप्रेक्षागृहमण्डपाक्षपाटकमणिपीठिकासिंहासनस्तूपजिनप्रतिमाचैत्यवृक्षमहेन्द्रध्वजनन्दापुष्करिणीमनोगुलिकादिचैत्यस्तम्भफलकनागदन्तसमुद्गकजिनसक्थितत्पूज्यतावर्णनम् । ९२
३७ देवसैन्यवर्णनम् । ९३
३८ क्षुल्लकमहेन्द्रध्वजवर्णनम् । ९४
३९ सिद्धायतनमणिपीठिकादेवच्छन्दजिनप्रतिमाहस्तपादादिस्वरूपच्छत्रधरादिप्रतिमाष्टशतध्वजकडुच्छुकान्तवर्णनम् । ९६
४० उपपातसभाह्रदाभिषेकसभाभाण्डालङ्कारिकसभाव्यवसायसभापुस्तकरत्नतदुपकरणादिवर्णनम् । ९७
४१ सूर्याभस्योत्पत्तिः, पूर्वश्रेयआदिविचारजिनप्रतिमासक्थिपूजनफलम् । १०४
४४ जलावगाहाभिषेकसभागमनाष्टसहस्रसौवर्णकलशादिवैक्रियक्षीरोदपुष्करोदमागधादितीर्थजलह्रदनदीजलमृत्तिकाक्षुल्लहिमवदादितूबराद्यानयनेन्द्रत्वाभिषेकगन्धोदकवृष्ट्यादिवार्जित्रगीतनृत्यादिदेवाशीर्वादस्नानालङ्कारपरिधानवर्णनम् ४२, व्यवसायसभागमन-पुस्तकरत्नवाचनानन्दापुष्करिणीगमनजलोत्पलादिग्रहणानि ४३, उत्पलहस्तशेषदेवदेवीयुक्तता, जिनप्रतिमाप्रणामपूजाऽष्टमङ्गलस्तुतिपुष्पप्रकरदक्षिणमुखमण्डपतत्स्तम्भपङ्क्तिस्तूपप्रतिमापूजनसुधर्मसभागमनादिव्यवसायसभागमनपुस्तकपूजादिवर्णनं त्रिकादिषूद्घोषणा च ४४। ११२
४५ सामानिकाग्रमहिषीपर्षदात्मरक्षकवर्णनम् । ११३
५५ सूर्याभस्थितिः ४६, तद्ऋद्धिप्राप्तिश्च: ४७ प्रदेशिराजवर्णनं ४८, सूर्यकान्तादेवीसूर्यकान्तकुमारवर्णनं ४९, ५०, चित्रसारथिवर्णनं ५१,

श्रीराजप्रश्नी० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ १२ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १३ ॥

सप्राभृतस्य चित्रस्य, श्रावस्तीगमनम् ५२, केशिकुमारवर्णनम् ५३, चित्रस्य श्रावकधर्माङ्गीकारः ५४, चित्रस्य श्रावकधर्मपालनम् ५५। १२४

६१ चित्रस्य विसर्जन, श्वेताम्बिकाऽऽगमनाय केशिनो विज्ञप्तिः, प्रदेशिनृपस्वरूपकथनं ५६, स्वोद्यानपालकाय केशिकुमारागमने वन्दनाद्युपदेशः ५७, प्रदेशिसमाचारकथनं ५८, केशिकुमारागमनं, उद्यानपालकवन्दनादि वर्द्धापनमागमनं च ५९, प्रदेशिप्रतिबोधविज्ञप्तिः ६०, धर्मप्राप्त्यप्राप्तिकारणानि, अश्वव्याजेनानयनकथनम् ६१। १२८

६४ अश्वव्याजेनानयनं, जडमूढादिविचारः; आहारादिप्रश्नः, केशिस्वरूपकथनं जिगमिषा च ६२, आधोऽवधिकान्नजीविकप्रश्नः, विचारकथनं च ६३, मतिश्रुतादिज्ञानस्वरूपम्। १२१

६६ उपवेशाज्ञा, तज्जीवतच्छरीरे पित्रनागमः साधनं ६५, मात्रनागमेन जीवाभावसाधनम् ६६। १३८

७४ अयःकुम्भीचौरदृष्टान्तः ६७, वृद्धस्य पञ्चकण्डकानुत्पाटनं ६८, अयोभाराद्यवहनं ६९, भाराविशेषः, देहच्छेदेऽदर्शनं ७०, पर्षत्तदपराधदण्डनिरूपणं, व्यवहार्यव्यवहारिनिरूपणं च ७१, वायोरदर्शनं, धर्मास्तिकायाद्यदर्शनं ७२, हस्तिकुन्थुजीवसमत्वम् ७३। परम्परागतमिथ्यात्वात्यागेऽयोग्राहिदृष्टान्तः ७४–१४१

८० गृहिधर्मप्रतिपत्तिः ७५, कलाशिल्पधर्माचार्यविनयः ७६, सान्तःपुरेण द्वितीयदिने क्षामणं ७७, पश्चादरमणीयतानिषेधः सदृष्टान्तः राज्यचतुर्भागकरणोक्तिः ७८, राज्यचतुर्भागकरणं ६२, विषदानं ८०, १४५

८५ आराधना ८१, महाविदेहे दृढप्रतिज्ञजन्मादि ८२, कलाग्रहणादि ८३, निर्लेपता दीक्षा सिद्धिश्च ८४, उपसंहारः ८५। १५०

इति श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गबृहद्विषयानुक्रमः

श्रीराजप्रश्नी० बृहद्विषयानुक्रमः ॥ १३ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-३ "जीवाजीवाभिगम"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

[आगम-१४] उपांग-३ "जीवाजीवाभिगम

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥१४॥

श्रीजीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचि:

१ शास्त्रभूमिका प्रामाण्यं च २
२ अभिगमभेदौ ४
३ अजीवाभिगमभेदा: ४
४ अरूप्यजीवाभिगमभेदा: ५
५ रूप्यजीवाभि० ६
६ जीवाभिगमभेदा: ७
७ असंसारसमापन्नभेदा: ८
८ संसारसमापन्नभेदा: ८
९ प्रतिपत्तिभेदा: ९
१० स्थावरभेदा: ९
११ पृथ्वीकायिकभेदा: १०
१२–१३ सूक्ष्मपृथ्वीकायिकभेदा: १०
१४–१५ श्लक्ष्णबादरपृथ्वीकायौ २२
१६ अप्कायभेदा: २४
१७ बादराप्कायभेदा: २४
१७–१८ वनस्पतिभेदा:, सूक्ष्मवनस्पति-भेदा: २५
१९ बादरवनस्पतिभेदा: २६
२० प्रत्येकवनस्पतिभेदा: २६
२१ साधारणबादरवनस्पतिभेदा: २७
२२ त्रसभेदा: २७
२३ तेजस्कायभेदा: २८
२४ सूक्ष्मतेजस्कायभेदा: २८
२५ बादरतेजस्कायभेदा: २८
२६ वायुकायभेदा: २९
२७ औदारिकत्रसभेदा: ३०
२८ द्वीन्द्रियभेदा: ३०
२९ त्रींद्रियभेदा: ३१
३० चतुरिंद्रियभेदा: ३२
३१ पंचेंद्रियभेदा: ३२
३२ नैरयिकभेदा: ३३
३३ तिर्यक्पंचेंद्रियभेदा: ३५
३४ समूर्च्छिमभेदा: ३५
३५ जलचरभेदा: ३६
३६ समूर्च्छिमपंचद्रियतिर्यग्भेदा: ३७
३७ गर्भजतिर्यग्भेदा: ४१
३८ गर्भजजलचरतिर्यग्भेदा: ४२
३९ गर्भजस्थलचरभेदा: ४३
४० गर्भजखेचरभेदा: ४४
४१ मनुष्यभेदा: ४५
४२ देवभेदा: ४८

श्रीजीवा० विषयसूचि: ॥१४॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १५ ॥

४३ त्रसस्थावरस्थितिभेदाः ५०
इति प्रथमा प्रतिपत्तिः
४४ जीवास्त्रिभेदाः ५२
४५ स्त्रीभेदाः ५२
४६ स्त्रीवेदस्थित्यादिभेदाः ५३
४७ तिर्यक्स्त्रीस्थित्यादिभेदाः ५४
४८ सामान्यविशेषतया स्त्रीत्वस्थितिभेदाः ५७
४९ स्त्रीणामन्तरभेदाः ६१
५० स्त्रीणामल्पबहुत्वभेदाः ६२
५१ स्त्रीवेदबन्धस्थितिभेदाः ६४
५२ पुरुषभेदाः ६५
५३ पुरुषस्थितिभेदाः ६५
५४ पुरुषवेदस्य स्थितिभेदाः ६७
५५ पुरुषवेदस्यान्तरभेदाः ६९
५६ पुरुषाल्पबहुत्वभेदाः ७१
५७ पुरुषवेदस्य स्थितिभेदाः ७४
५८ नपुंसकभेदाः ७४
५९ नपुंसकस्थित्यन्तरभेदाः ७५
६० नपुंसकानामल्पबहुत्वभेदाः ७९
६१ नपुंसके बन्धस्थितिभेदाः ८२
६२ वेदानामल्पबहुत्वभेदाः ८३
६३ वेदानां स्थितिभेदाः ८७
६४ वेदानामल्पबहुत्वभेदाः ८७
इति द्वितीया प्रतिपत्तिः
६५ जीवाश्चतुर्भेदाः ८८
६६ नारकाणां पृथ्वीनां भेदाः ८८
६७ नारकाणां पृथ्वीनां नामगोत्रभेदाः ८८
६८ ,, बाहल्यभेदाः ८८
६९ पृथ्वीकाण्डादिभेदाः ८८
७० नारकावाससंख्याभेदाः ८९
७१ घनोदध्यादिभेदाः ९०
७२ काण्डाद्यन्तरभेदाः ९०
७३ रत्नप्रभाकाण्डादिद्रव्यस्वरूपभेदाः ९१
७४ रत्नप्रभादिसंस्थानभेदाः ९२
७५ रत्नप्रभादीनामलोकाबाधादिभेदाः ९४
७६ घनोदधिबाहल्यमानभेदाः ९५
७७ रत्नप्रभासर्वजीवपुद्गलोत्पादः ९७
७८ रत्नप्रभायाः शाश्वतेतरत्रे भेदौ ९८
७९ काण्डाद्यन्तरवर्णनम् १००
८० रत्नप्रभादीनामल्पबहुत्वभेदाः १०१
८१ नरकावासस्थानभेदाः १०२
८२ नरकावाससंस्थानभेदाः १०४

श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १५ ॥

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १६ ॥

८३ नरकावासानां वर्णभेदाः १०६
८४ नरकावासानां महत्त्वं १०८
८५ नरकावासाधिकारः १०९
८६ उपपातसंख्याऽवगाहनाभेदाः ११०
८७ नारकाणां संहननसंस्थानगन्धाद्या भेदाः ११८
८८ नारकाणां श्वासाहारलेश्यादृष्टिज्ञाना-ज्ञानयोगोपयोगसमुद्घातभेदाः ११५
८९ नारकाणां क्षुत्पिपासभेदाः ११६
९० नैरयिकाणां स्थितिभेदाः १२६
९१ नारकाणामुद्वर्त्तनाभेदाः ,,
९२–९५ नरकेषु पृथिव्यादिस्पर्शस्वरूप-भेदाः १२९
९६ तिर्यग्भेदाः १३१
९७–१०२ तिर्यग्योनिभेदाः १३३
१०३–१०४ तिर्यक्स्त्रीपुंभेदाः १४२
१०५ मनुष्यभेदाः १४३
१०६ संमूर्च्छिममनुष्यभेदाः ,,
१०७ गर्भजमनुष्यभेदाः १४४
१०८ अन्तरद्वीपभेदाः ,,
१०९ एकोरुकमनुष्याणां भेदाः ,,
११०–११३ मनुष्याधिकारः १५६
११४ देवभेदाः १५८
११५ भवनवासिभेदाः ,,
११६ भवनवासिभवनभेदाः ,,
११७ असुरकुमाराणां भवनभेदाः ,,
११८ चमरस्य पर्षद्भेदाः १६४
११९ उत्तरत्यानामसुरकुमाराणां भवनानि भेदश्च: १६६
१२० नागादिकुमाराणां भवनभेदाः ,,
१२१ वानमन्तराणां भवनभेदाः १७१
१२२ ज्योतिष्काणां भवनभेदाः १७४
१२३ तिर्यग्लोकद्वीपसमुद्रभेदाः १७६
१२४ आकारभेदाः १७७
१२५ पद्मवरवेदिका १८०
१२६–१२७ वनखण्डवर्णनम् १८५
१२८ विजयद्वारवर्णनम् २०२
१२९ जंबूद्वीपविजयद्वारवर्णनम् २०४
१३० विजयद्वारवर्णनम् २०८
१३१ विजयद्वारतोरणभेदाः २०९
१३२ विजयद्वारचक्रध्वजभेदाः २१५
१३३ विजय० रत्नवर्णनम् २१६

श्रीजी वा० विषयसूचिः ॥ १६ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-३ "जीवाजीवाभिगम"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

१३४	विजय० विजयदेववर्णनम्	२१६	१४६	स्पर्शोत्पाटपृच्छावर्णनम्	२६१	१५९	वेलन्धरभेदाः	३०९	
१३५	विजयदेवराजधानीवर्णनम्	२१८	१४७	उत्तरकुरुवर्णनम्	२६२	१६०	अनुवेलंधरराजभेदाः	३१३	
१३६	विजयद्वारवनखण्डभेदाः	,,	१४८	यमकपर्वतवर्णनम्	२८६	१६१	गौतमद्वीपवर्णनम्	३१४	
१३७	विजयदेवसभावर्णनम्	२२६	१४९	नीलवद्ध्रदादिवर्णनम्	२८७	१६२	जम्बूद्वीपगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	३१५	
१३८	माणवकस्तम्भदेवशयनीय-वर्णनम्	२३०	१५०	काञ्चनपर्वतवर्णनम्	२९१	१६३	लवणगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	३१५	
१३९	सिद्धायतनादिवर्णनम्	२३२	१५१	जम्बूपीठवर्णनम्	२९३	१६४	धातकीखण्डगतचन्द्रसूर्यवर्णनम्	३१७	
१४०	तिर्यगधिकारे सिद्धायतनम्	२३५	१५२	जम्बूवृक्षवर्णनम्	२९५	१६५	कालोदगतचंद्रसूर्यवर्णनम्	,,	
१४१	विजयदेवाभिषेकवर्णनम्	२३७	१५३	जम्बूद्वीपे चन्द्रसूर्याधिकार-वर्णनम्	३००	१६६	द्वीपसमुद्रवर्णनम्	३१८	
१४२	विजयदेवजिनपूजावर्णनम्	२५२	१५४	लवणसमुद्रवर्णनम्	३०१	१६७	देवद्वीपादिचन्द्रसूर्यद्वीपादि-वर्णनम्	३१९	
१४३	बिजयदेवपरिवारस्थित्यादि-वर्णनम्	२५९	१५५	लवणे चन्द्रादीनां वर्णनम्	३०३	१६८	लवणे वेलन्धराद्या उच्छ्रितो दत्वादिवर्णनम्	३२०	
१४४	वैजयन्तद्वारभेदाः	२६०	१५६	लवणे वेलावृद्धिवर्णनम्	३०५	१६९	लवणे चन्द्रसूर्यद्वीपादिवर्णनम्	३२१	
१४५	वैजयन्तस्यान्तरभेदाः	,,	१५७	लवणे जलवृद्धौ कारणं	३०७	१७०	लवणे उद्वेधोत्सेधौ वर्णनम्	३२२	॥१७॥
			१५८	लवणे वेलन्धरवर्णनम्	३०८				

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १८ ॥

१७१	लवणे गोतीर्थवर्णनम्	३२३
१७२	लवणस्य विष्कम्भवर्णनम्	३२४
१७३	लवणसमुद्राधिकारः	३२५
१७४	धातकीखण्डवर्णनम्	३२७
१७५	कालोदधिवर्णनम्	३२९
१७६	पुष्करवरद्वीपवर्णनम्	३३१
१७७	समयक्षेत्रवर्णनम्	३३३
१७८	मानुषोत्तरवर्णनम्	३४१
१७९	अन्तर्बहिश्चन्द्रादीनामूर्ध्वोपपन्नत्वादिभेदाः	३४५
१८०	पुष्करवरवरुणवरौ	३४७
१८१	क्षीरवरक्षीरोदयोर्वर्णनम्	३५२
१८२	घृतवरघृतोदवरक्षोदोदाः	३५३
१८३	नंदीश्वरवर्णनम्	३५७
१८४	नंदीश्वरोदवर्णनम्	३६५
१८५	त्रिप्रत्यवतारा: समुद्रा:	३६६
१८६	सद्दनामानोऽसंख्यद्वीपवर्णनम्	३७०
१८७	लवणोदाद्युदकवर्णनम्	३७१
१८८	समुद्रेषु मत्स्यकच्छपवर्णनम्	३७२
१८९	द्वीपोदधिमानम्	,,
१९०	द्वीपसमुद्रवर्णनम्	३७३
१९१	पुद्गलपरिणामः	,,
१९२	देवकृतः पुद्गलग्रहो बालग्रन्थनं च	३७४
१९३	चन्द्रादेरधःसमोपरिभागेषु ताराः	३७५
१९४	ग्रहादिपरिवारवर्णनम्	३७६
१९५	मेरुलोकान्तपरस्परावाधावर्णनम्	,,
१९६	अन्तर्बाह्योपर्यधस्तनास्ताराः	३७७
१९७	चन्द्रादिसंस्थानायामादिवर्णनम्	३७८
१९८	चन्द्रादिवाहनानि वर्णनम्	३८०
१९९	चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिमत्त्वं	३८२
२००	चन्द्रा० अल्पमहर्द्धिकत्वं	,,
२०१	जम्बूद्वीपे तारान्तरवर्णनम्	३८३
२०२	चन्द्रस्याग्रमहिषीवर्णनम्	,,
२०३	चन्द्रस्य देव्यः	,,
२०४	सूर्यस्य देवीनां वर्णनम्	,,
२०५	चन्द्रस्य स्थितिवर्णनम्	३८५
२०६	चन्द्रसूर्याणामल्पबहुत्वं	,,
२०७	वैमानिकभेदाः	,,
२०८	वैमानिके शक्रस्य पर्षद्वर्णनम्	३८६
२०९	विमानाधारवर्णनम्	३९४
२१०	विमानपृथ्वीबाहल्यवर्णनम	,,

श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १८ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १९ ॥

२११–२१२ विमानानामुच्चत्वसंस्थान-वर्णनम् ३२५
२१३ आयामादिवर्णनम् ,,
२१४ वैमा० संहननसंस्थानवर्णनम् ३२६
२१५ देववर्णादिवर्णनम् ,,
२१६ वैमा० अवधिवर्णनम् ४०२
२१७ समुद्घातवर्णनम् ,,
२१८ वैमानिकानां विभूषावर्णनम् ४०४
२१९ वैमानिकानां कामभोगवर्णनम् ,,
२२० वै० स्थितिवर्णनम् ,,
२२१ वै० उद्वर्त्तनावर्णनम् ४०६
२२२ वै० जीवानां स्थितिवर्णनम् ,,
२२३ ,, अल्पबहुत्वं ,,
॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः

२२४ एकेन्द्रियादिभेदस्थित्यन्तराणि ४०८
२२५ एकेन्द्रियादीनामल्पबहुत्वं ४१०
इति चतुर्थी प्रतिपत्तिः
२२६ पृथ्वीकायभेदाः ४११
२२७ पृथ्व्याः स्थितिः ,,
२२८ ,, कायस्थितिः ,,
२२९ ,, अल्पबहुत्वं ४१३
२३० सूक्ष्मस्य स्थितिः ,,
२३१ सूक्ष्मस्य कायस्थितिवर्णनम् ४१४
२३२ सूक्ष्मस्यान्तरवर्णनम् ,,
२३३ सूक्ष्मस्याल्पबहुत्वं ४१५
२३४ बादरस्य स्थितिवर्णनम् ४१५
२३५ बादरे कायस्थितिवर्णनम् ४१७
२३६ बादरस्यान्तरं ४१८

२३७ सूक्ष्मबादरयोरल्पबहुत्वं ४१८
२३८ निगोदाधिकारः ४२३
२३९ निगोदसंख्या ४२४
इति पंचमी प्रतिपत्तिः
२४० नैरयिकस्थित्यादिवर्णनम् ४२७
इति षष्ठी प्रतिपत्तिः
२४१ प्रथमसमयनैरयिकादिवर्णनम् ४२९
इति सप्तमी प्रतिपत्तिः
२४२ पृथ्यादेः कायादिस्थितिः ४३१
इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः
२४३ प्रथमसमयिकादीनां स्थितिकाय-स्थित्यन्तराल्पबहुत्वं ४३३
२४४ सर्वजीवाभिगमे सिद्धासिद्ध-भेदाः ४३६

श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १९ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २० ॥

२४५ सर्वजीवानां सेन्द्रियकायवेद-कषायलेश्याभेदाः ४३७
२४६ सर्वजीवज्ञानस्थितिः ४३९
२४७ सर्वजीवाहारकेतरस्थिति-वर्णनम् ४४०
२४८ सर्वजीवभाषकसशरीरेतरवर्णनम् ४४३
२४९ सर्व० चरमेतरवर्णनम् ४४४
२५० सम्यग्दृष्ट्यादिवर्णनम् ४४५
२५१ सर्वजीवत्रैविध्ये परित्तादिवर्णनम् ४४६
२५२ सर्व० पर्याप्तापर्याप्तवर्णनम् ४४७
२५३ सूक्ष्मबादरवर्णनम् ४४८
२५४ सर्व० त्रैविध्ये संज्ञित्वादि-वर्णनम् ४४८
२५५ सर्व० भव्यत्वादिवर्णनम् ४४९
२५६ सर्व० त्रसादिवर्णनम् ४४९
२५७ ,, मनोयोगादिवर्णनम् ,,
२५८ ,, स्त्रीवेदादिवर्णनम् ४५०
२५९–२६४ सर्वजीवचातुर्विध्ये चक्षुर्दर्शनादिवर्णनम् ४५१
२६५–२६६ सर्व० सप्तविधत्वं काय-लेश्यावर्णनम् च ४५७
२६७ सर्व० अष्टविधत्वं ज्ञानाज्ञाने ४५९
२६८ सर्व० नारकतिर्यग्योनतिर्यग्-योन्यादिभेदाः ४६०
२६९ सर्व० नवविधत्वमिन्द्रियगति-सिद्धभेदाश्च ४६१
२७० सर्व० प्रथमाप्रथमसमय-नारकादिभिः ४६२
२७१ सर्व० दशविधत्वं पृथ्व्यादिभिः प्रथमाप्रथमसमयनारकादिभिश्च ४६४
२७२ सर्वजीवदशविधत्वमुपसंहारः ४६६

इति जीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः।

श्रीजीवा० विषयसूचि बृहद्विषया-नुक्रमश्च ॥ २० ॥

श्रीजीवाजीवाभिगमस्य बृहद्-विषयानुक्रमः

सूत्राणि २७३; सूत्रगाथाः २३*.

मङ्गलं, प्रयोजनाद्युपन्यासः, द्वीप-समुद्रनामग्रहणस्य मङ्गलता, मङ्गल-त्रयम्। १

१ जिनमतादिविशेषणं जीवाजीवा-भिगमाध्ययनं स्थविरप्रणीतम्। ४

२ जीवाजीवाभिगमौ ५

५ रूप्यरूप्यजीवाभिगमौ ३, धर्मास्तिकायादयोऽरूपिणः (१०) ४, स्कन्धादयो रूपिणः ५, (धर्मास्तिकायादिसिद्धिः क्रमोपन्यासप्रयोजनम्)। ७

७ संसारासंसारसमापन्नजीवाः ६, अनन्तर(१५) परम्परसिद्धभेदाः ७। ८

८ संसारसमापन्न प्रतिपत्तिनवकम्। ९

९ त्रसस्थावराः। ,,

१० पृथिव्यब्वनस्पतयः स्थावराः। ,,

११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीकायिकाः। १०

१२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्माः (पर्याप्तिस्वरूपं, शरीरावगाहनादीनि गत्यागत्यादीनि च द्वाराणि)। ११

१३ शरीरावगाहनसंहननसंस्थानकषाय-सञ्ज्ञालेश्येन्द्रियसमुद्घातसञ्ज्ञिवेद-पर्याप्त्यपर्याप्तदृष्टिदर्शनज्ञानयोगोपयोगाः, अनन्तप्रदेशत्वाद्याहारस्वरूपं आगतिस्थितिमरणसमुद्घात-गतिनिरूपणं(स्वल्पानाभोगसंभवात् पृच्छा, शरीरपञ्चकव्युत्पत्त्यादि, संहननसंस्थानवर्णनं, इन्द्रियस्वरूपं, समुद्घातस्वरूपम्)। २१

१५ श्लक्ष्णखरबादरपृथिवीकायिकाः १४, श्लक्ष्णा सप्तधा, पर्याप्ताऽपर्याप्ता च, शरीरादीनि द्वाराणि, (चत्वारिंशत्-खरपृथ्वीभेदाः) १५। २४

१७ अप्कायस्य सूक्ष्मादिभेदादिः १६, बादरेऽवश्यायादिभेदादिः। २५

२२, १-४* सूक्ष्मबादरवनस्पतयः १८, पर्याप्तापर्याप्ताः १९, प्रत्येकसाधारण-भेदौ २०, वृक्षगुल्मादि(१२)-भेदाः, (एकबहुबीजादि, एकाखण्ड-शरीरसमाधानम्) २१; १-४*, आलुकादिसाधारणभेदादिः २२। २८

२६ तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्यास्त्रसाः २३, सूक्ष्मबादरतेजसी २४, सूचीकलाप-संस्थिताः सूक्ष्माः २५, बादरेऽङ्गारादिभेदादिः २६। २९

२७ सूक्ष्मबादरा वायवः, प्राचीनादि-भेदादिः, पताकासंस्थानं, शरीर-चतुष्कम्। ३०

२९ द्वीन्द्रियाद्याः (४) उदारत्रसाः २८,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २२ ॥

द्वीन्द्रियाणां पुलाकृम्यादिभेदादिः २९। ३१

३१ त्रीन्द्रियाणामौपयिकादिभेदादिः ३०, चतुरिन्द्रियाणामन्धिकादि-भेदादिः ३१। ३२

३३ पञ्चेन्द्रियाणां नारकादयो भेदाः ३२, नारकाणां रत्नप्रभादिभेदादिः संहननविचारः)। ३५

३७ संमूर्च्छिमगर्भजास्तिर्यञ्चः ३४, जल-स्थलखेचराः ३५, संमूर्च्छिमजल-चराणां मत्स्यादिभेदादिः ३६, संमूर्च्छिमस्थलचराणां चतुष्पदोरःपरि-सर्पभुजपरिसर्पभेदाः, चर्मपक्ष्यादि-भेदादिः ३७। ४१

३९ गर्भजा जलचराद्याः ३८, जलचराणां मत्स्यादिभेदादिः ३९, (संहनन-संस्थानवर्णनम्)। ४३

४१ स्थलचराणामेकखुरादिचतुष्पदोरगादि-परिसर्पभेदादिः ४०, चर्मपक्ष्यादयः खेचराः ४१। ४४

४२ संमूर्च्छिमगर्भजमनुष्याणां शरीरादिः (केवले शेषज्ञानागमः)। ४८

४३ असुरकुमारादिभवनपत्यादिदेवानां शरीरादिः। ४९

४४ स्थावराणां त्रसानां च भवकाय-स्थित्यन्तरास्पबहुत्वानि (संव्यवहारे-तरराशी)। ५१

॥ इति प्रथमा प्रतिपत्तिः ॥

४६ स्त्रीपुंनपुंसकाः ४५, मत्स्यादिचतु-ष्पद्यादिपरिसर्प्यादिचर्मपक्षिण्यादि-तिर्यक्कर्मभूमिजादिनारीभवनपत्यादि-देवस्त्रियः ४६, (स्त्रीत्वादिलक्षणम्)। ५३

४८ स्त्रीवेदस्थितावादेशपञ्चकम् ४७, सप्रभेदजलचरस्थलचरखचरकर्म-भूमिजादिभवनपत्यादिस्त्रीस्थितिः ४८। ५७

४९ स्त्रीवेदसप्रभेदतिर्यग्मनुष्यदेवस्त्री-कायस्थितिः। ६१

५० स्त्रीसप्रभेदतिर्यगादिस्त्रीवेदान्तरम्। ६२

५१ तिर्यङ्मनुष्यदेवस्त्रीणां स्वस्थानेऽन्यो-न्यं चाल्पबहुत्वम्। ६४

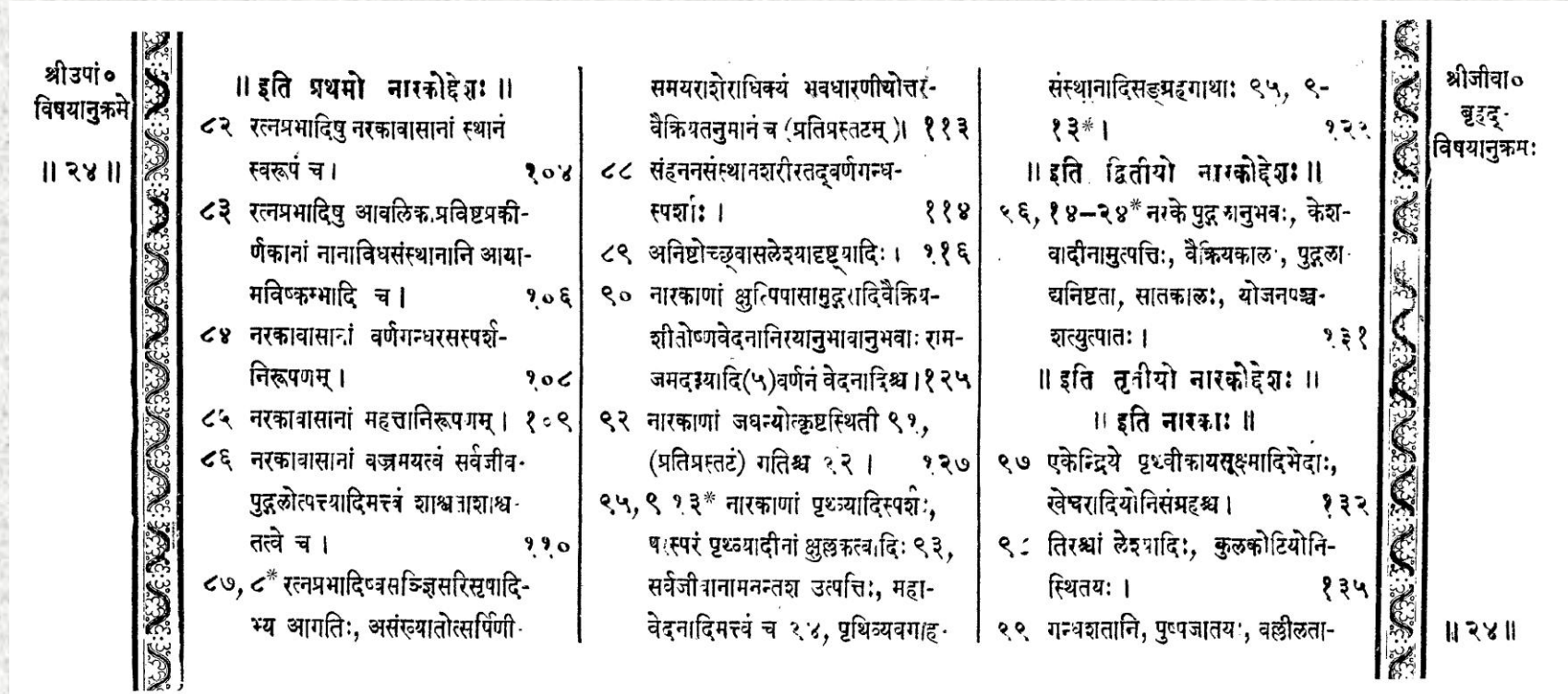
५२ स्त्रीवेदबन्धाबाधानिषेकप्रकाराः। ६५

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २२ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २३ ॥

५४ तिर्यगादयः पुरुषाः ५३, तिर्यक्-पुंवेदादिस्थितिः ५४। ६७
५५ सप्रभेदपुरुषवेदकायस्थितिः। ६९
५६ सप्रभेदानुत्तरान्तपुरुषवेदान्तरम्। ७१
५७ स्वस्थाने परस्परं च पुरुषाणामल्प-बहुत्वम्। (कृष्णपाक्षिकादिलक्षणं, देवानामल्पबहुत्वं च) ७४
५८ पुंवेदबन्धस्थित्यादिः। ,,
५९ नारकादयो नपुंसकभेदाः। ७५
६० सप्रभेदनारकादिनपुंसकस्थिति-रन्तरं च। ७९
६१ स्वस्थाने परस्परं चाल्पबहुत्वम्। ८२
६२ नपुंसकस्थित्यादिः। ,,
६३ सप्रभेदस्त्रीपुंनपुंसकानां स्वस्थाने परस्परं चाल्पबहुत्वम्। ८७
६५, ५* स्त्र्यादिकायस्थितिः ६४, मनुष्यतिर्यग्देवानां स्त्रीपुंसयोरल्प-बहुत्वम् ६५, ५* ८८
॥ इति द्वितीया प्रतिपत्तिः ॥
६९, ६* नारकादयो भेदाः (४) ६६, प्रथमाद्याः पृथिव्यः ६७, पृथ्वीनां नामगोत्राणि ६८, तासां बाहल्यादिः, ६९, ६*। ८९
७०, खरकाण्डपङ्काब्बहुलकाण्डानि, रत्न-काण्डादिभेदाः (१६)। ९०
७२, ७* रत्नप्रभादिषु नरकावाससंख्या ७१, ७* रत्नप्रभाद्यधो घनोदध्यादि। (आवलिकाप्रविष्टप्रकीर्णकनरक-संख्याः) ७२। ९१
७३ खररत्नादिपङ्काब्बहुलरत्नप्रभादि-घनोदधिघनवातादिबाहल्यम्। ९२
७४ रत्नप्रभादिषु सर्ववर्णादिपुद्गलसत्ता। ९३
७६ रत्नप्रभाखररत्नादिकाण्डादिशर्करा-प्रभादिसंस्थानम् ७५, रत्नप्रभादि-पृथिवीलोकान्ताऽबाधाः। ९५
७७ रत्नप्रभादिघनोदध्यादिवलयमानम्। ९७
७८ सर्वजीवपुद्गलानां तद्रूपता। ९८
७९ रत्नप्रभादीनां शाश्वताशाश्वतत्वे। ९८
८० पृथिवीकाण्डघनोदध्याद्यन्तरा-बाधादिः। १०१
८१ पृथ्वीनां परस्परं बाहल्यतुल्य-त्वादिः। १०२

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २३ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २४ ॥

॥ इति प्रथमो नारकोद्देशः ॥

८२ रत्नप्रभादिषु नरकावासानां स्थानं स्वरूपं च। १०४

८३ रत्नप्रभादिषु आवलिकाप्रविष्टप्रकीर्णकानां नानाविधसंस्थानानि आयामविष्कम्भादि च। १०६

८४ नरकावासानां वर्णगन्धरसस्पर्शनिरूपणम्। १०८

८५ नरकावासानां महत्त्वनिरूपणम्। १०९

८६ नरकावासानां वज्रमयत्वं सर्वजीवपुद्गलोत्पत्त्यादिमत्त्वं शाश्वताशाश्वततत्त्वे च। ११०

८७, ८८* रत्नप्रभादिष्वसञ्ज्ञिसरिसृपादिभ्य आगतिः, असंख्यातोत्सर्पिणी-समयराशेराधिक्यं भवधारणीयोत्तरवैक्रियतनुमानं च (प्रतिप्रस्तटम्)। ११३

८८ संहननसंस्थानशरीरतद्वर्णगन्धस्पर्शाः। ११४

८९ अनिष्टोच्छ्वासलेश्यादृष्ट्यादिः। ११६

९० नारकाणां क्षुत्पिपासामुद्वरादिवैक्रियशीतोष्णवेदनानिरयानुभावानुभवाः रामजमदग्न्यादि(५)वर्णनं वेदनादिश्च। १२५

९२ नारकाणां जघन्योत्कृष्टस्थिती ९१, (प्रतिप्रस्तटं) गतिश्च ९२। १२७

९५, ९३* नारकाणां पृथ्व्यादिस्पर्शः, परस्परं पृथ्व्यादीनां क्षुल्लकत्वादिः ९३, सर्वजीवानामनन्तश उत्पत्तिः, महावेदनादिमत्त्वं च ९४, पृथिव्यवगाहसंस्थानादिसङ्ग्रहगाथाः ९५, ९६*। १२९

॥ इति द्वितीयो नारकोद्देशः ॥

९६, १४–२४* नरके पुद्गलानुभवः, केशवादीनामुत्पत्तिः, वैक्रियकालः, पुद्गलानिष्टता, सातकालः, योजनषष्ट्यशत्युत्पातः। १३१

॥ इति तृतीयो नारकोद्देशः ॥

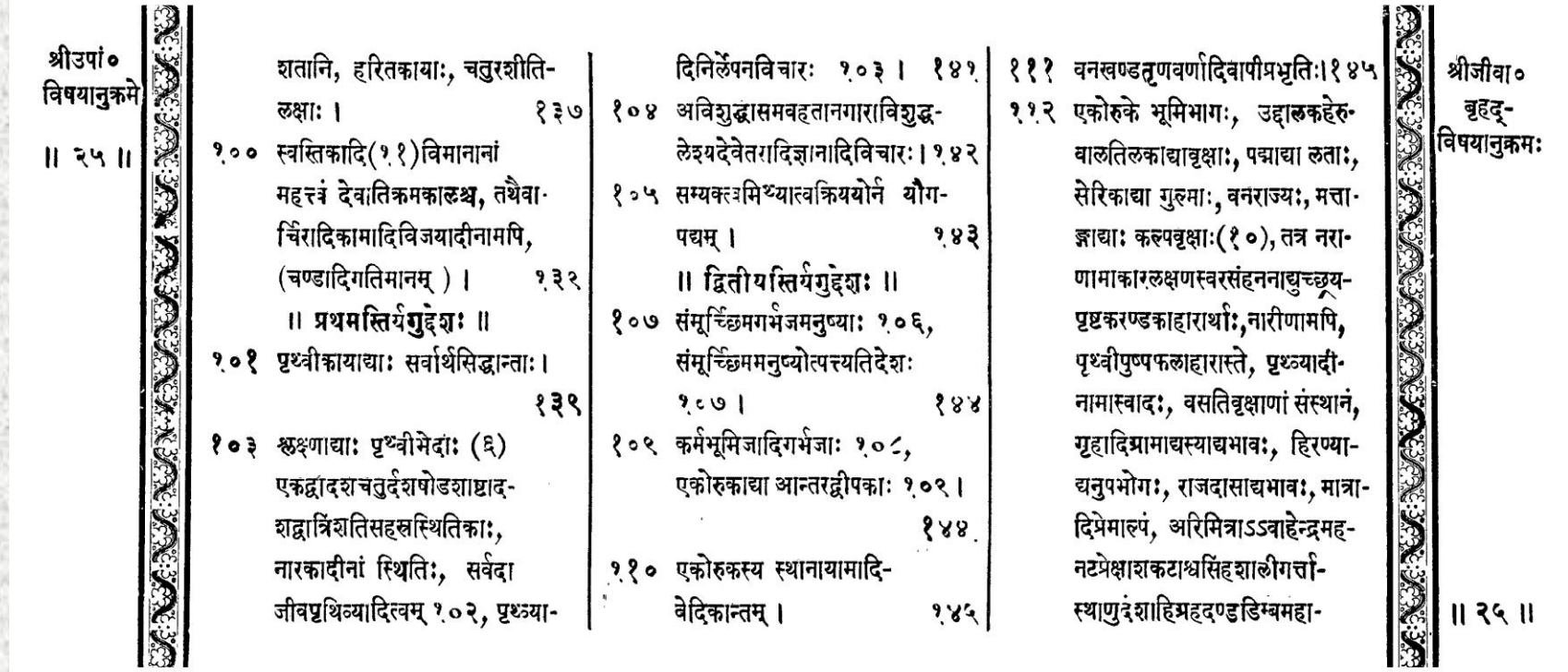
॥ इति नारकाः ॥

९७ एकेन्द्रिये पृथ्वीकायसूक्ष्मादिभेदाः, खेचरादियोनिसंग्रहश्च। १३२

९८ तिरश्चां लेश्यादिः, कुलकोटियोनिस्थितयः। १३५

९९ गन्धशतानि, पुष्पजातयः, वल्लीलता-

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २४ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २५ ॥

शतानि, हरितकायाः, चतुरशीति-
लक्षाः । १३७
१०० स्वस्तिकादि(११)विमानानां
महत्त्वं देवातिक्रमकालश्च, तथैवा-
र्चिरादिकामादिविजयादीनामपि,
(चण्डादिगतिमानम्) । १३९
॥ प्रथमस्तिर्यगुद्देशः ॥
१०१ पृथ्वीकायाद्याः सर्वार्थसिद्धान्ताः ।
१३९
१०३ श्लक्ष्णाद्याः पृथ्वीभेदाः (६)
एकद्वादशचतुर्दशषोडशाष्टाद-
शद्वात्रिंशतिसहस्रस्थितिकाः,
नारकादीनां स्थितिः, सर्वदा
जीवपृथिव्यादित्वम् १०२, पृथ्व्या-
दिनिर्लेपनविचारः १०३ । १४१
१०४ अविशुद्धासमवहतानगाराविशुद्ध-
लेश्यदेवेतरादिज्ञानादिविचारः । १४२
१०५ सम्यक्त्वमिथ्यात्वक्रिययोर्न यौग-
पद्यम् । १४३
॥ द्वितीयस्तिर्यगुद्देशः ॥
१०७ संमूर्च्छिमगर्भजमनुष्याः १०६,
संमूर्च्छिममनुष्योत्पत्त्यतिदेशः
१०७ । १४४
१०९ कर्मभूमिजादिगर्भजाः १०८,
एकोरुकाद्या आन्तरद्वीपकाः १०९ ।
१४४
११० एकोरुकस्य स्थानायामादि-
वेदिकान्तम् । १४५
१११ वनखण्डतृणवर्णादिवापीप्रभृतिः । १४५
११२ एकोरुके भूमिभागः, उद्दालकहेरु-
वालतिलकाद्यावृक्षाः, पद्माद्या लताः,
सेरिकाद्या गुल्माः, वनराज्यः, मत्ता-
ङ्गाद्याः कल्पवृक्षाः(१०), तत्र नरा-
णामाकारलक्षणस्वरसंहननाद्युच्छ्रय-
पृष्टकरण्डकाहारार्थाः, नारीणामपि,
पृथ्वीपुष्पफलाहारास्ते, पृथ्व्यादी-
नामास्वादः, वसतिवृक्षाणां संस्थानं,
गृहादिग्रामाद्यस्याद्यभावः, हिरण्या-
द्यनुपभोगः, राजदासाद्यभावः, मात्रा-
दिप्रेमाल्पं, अरिमित्राऽऽवाहेन्द्रमह-
नटप्रेक्षाशकटाश्वसिंहशालीगर्त्ता-
स्थाणुदंशाहिग्रहदण्डडिम्बमहा-

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २५ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २६ ॥

युद्धातिवर्षायआकरादिभावाभाव-विचारः, आयुर्गतिप्रसवाः, आभाषिकादीनामपि। १५५

११४, २६* ह्यकर्णाद्यन्तरद्वीपानां स्वरूपम् ११३, २५-२६* हैमवतभरतार्यादिभेदाः ११४। १५८

११८ भवनवास्यादयो देवाः ११५, असुरकुमारादिभेदातिदेशः ११६, भवनावासादिस्थानातिदेशः ११७; असुरकुमारादिभवनस्थानातिदेशः ११८। १६४

११९ चमरस्य समिताचण्डाजाताः पर्षदः, तद्देवसाहस्र्यः, तद्देवदेवीस्थितिश्च। १६६

१२० बलिनः पर्षत्तद्देवस्थित्यादयः। १६७

१२१ नागकुमारादिभवनादिः, धरणादिपर्षदादिः। १७१

१२२ व्यन्तरतदिन्द्रस्थानपर्षदादिः। १७४

१२३ ज्योतिष्कानां स्थानादिः। १७६

१२४ द्वीपसमुद्रस्थानसंख्यामहत्त्वसंस्थानाऽऽकारादिः। १७७

१२५ जम्बूद्वीपाऽऽयामादिजगतिजालकटकवर्णनम्। १७८

१२६ पद्मवरवेदिकावर्णनम्। १८३

१२७ वनखण्डवर्णनम्। १९५

१२८ वापीत्रिसोपानतोरणाष्टमङ्गलोत्पातादिपर्वतहंसासनाद्यादिगृहादिजातिमण्डपादिहंसासनादिवर्णनम्। २०१

१३० विजयादीनि द्वाराणि १२९, विजयद्वारकपाटादिनैषेधिक्यादिवर्णनम् १३०। २०८

१३१ प्रकण्ठकप्रासादावतंसकमणिपीठिकासिंहासनादिवर्णनम्। २११

१३२ नैषेधिक्यां तोरणनागदन्तहयसंघाटकभृङ्गारादर्शस्थालपात्रीसुप्रतिष्ठकमनोगुलिकाफलकशिक्कगवातकरकरत्नकरण्डकहयकण्ठपुष्पचङ्गेर्यादिपुष्पपटलसिंहासनच्छत्रचामरतिलसमुद्गादिवर्णनम्। २१५

१३३ अष्टशतचक्रध्वजादि-भौमनवक-सिंहासनविजयदेव-तत्सामानिकाग्रमहिषीपर्षदारक्षकदेवदेवी-

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २६ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २७ ॥

भद्रासनवर्णनम् । २१६
१३४ अष्टमङ्गलकृष्णचामरादिवर्णनम् । २१७
१३५ विजयदेवसामानिकादिवर्णनम् ,,
१३६ विजयदेवराजधानीतत्प्राकारकपिशीर्षकद्वारनैषेधिकीप्रकण्ठकसप्तदशभौमादिवर्णनम् । २२०
१३७ अशोकसप्तपर्णचम्पकचूतवनप्रासादावतंसकतदधिष्ठायकवर्णनम्, उपरिकालयनायामादिमणिपीठिकादिप्रासादावतंसकतत्परिवारप्रासादोच्चत्वादिवर्णनम् । २२३
१३८ सुधर्मसभाऽऽयामादितद्द्वारमुखमण्डपाष्टमङ्गलप्रेक्षागृहाक्षाटकमणिपीठिकाचैत्यस्तूपजिनप्रतिमाचैत्यवृक्षतिलकलवकादिवृक्षमहेन्द्रध्वजपुष्करिणीत्रिसोपानमनोगुलिकागोमानसीफलकधूपघटिकावर्णनम् । २३०
१३९ माणवकचैत्यस्तम्भायामादिफलकसिक्कगसमुद्गकार्चनीयजिनसक्थिमहामणिपीठिकामहासिंहासनदेवशयनीयादिवर्णनम् । २३२
१४० सिद्धायतनादिदेवच्छन्दकजिनप्रतिमातदवयवचामरधारादिप्रतिमाघण्टाचन्दनकलशादिवर्णनम् । २३५
१४१ उपपातसभादेवशयनीयाभिषेकालङ्कारव्यवसायसभावर्णनं, पुस्तकरत्नवर्णनं च । २३७
१४२ विजयदेवस्योपपातः, सङ्कल्पः, जिनप्रतिमासक्थ्यर्चातासंकल्पः, देवदूष्यपरिधानजलमज्जनेन्द्राभिषेकोपस्थापनाऽऽज्ञासौवर्णिकादिकलशादिवैक्रियपुष्करोदकादिमागधादितीर्थमृत्तिकागङ्गादिजलहिमवदादितूवरादिपद्महृदाद्युदकादिभद्रशालादितूवरादिग्रहणोपस्थापनसामानिकाद्यभिषेकगन्धोदकवर्षाद्रिद्रुतादि(३२)नाट्याशीर्वादाः । २४८
१४३ अलङ्कारसभाप्रवेशगात्रूक्षणयुगलनिवेशहारादिपरिधानचतुर्विधालङ्कारविभूषाव्यवसायसभाप्रवेश-

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २७ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २८ ॥

पुस्तकरत्नवाचनधार्मिकव्यवसाय-ग्रहणनन्दापुष्करिणीप्रवेशहस्तादि-प्रक्षालनपद्मादिग्रहणसिद्धायतना-गमनपरिवारानुगमनदेवच्छन्दा-गमनजिनप्रतिमाप्रणामप्रमार्जन-स्नानदेवदूष्यनिवेशपुष्पाद्यभरणा-न्तारोहणाष्टमङ्गलालेखनधूपोत्क्षेप-महावृत्तस्तुतिशक्रस्तवपाठमण्डला-लेखनद्वारचेटीप्रमार्जनादिचैत्यस्तूप प्रमार्जनादिजिनप्रतिमाप्रणामादि-सुधर्मासभाप्रवेशजिनसक्थिप्रक्षा-लनार्चनादिशृङ्गाटकाद्यर्चनादेश-सिंहासनोपवेशनानि। २५८

१४४ सामानिकाद्युपवेशनं, पल्योपम-स्थितिः। २६०

१४६ वैजयन्तजयन्तापराजितद्वाराणि १४५, परस्परद्वाराबाधा १४६। २६१

१४७ द्वीपसमुद्रप्रदेशस्पर्शजीवोत्पाताद्याः। २६२

१४८ उत्तरकुरुवर्णनं, पद्मगन्धादिमनुष्या-नुसर्जना। २८५

१४९ यमकपर्वताधिकारः। २८७

१५० नीलवद्ध्रदतत्पद्मभवनद्वारमणि-पीठिकापरिवारपद्मकर्णिकापरिरय-त्रयाणि। २९०

१५१ काञ्चनकपर्वताधिकारः, उत्तर-कुरुद्रहाधिकारः। २९२

१५२ जम्बूपीठमणिपीठिकासुदर्शनायामा-दि चैत्यवृक्षवर्णनं च। २९५

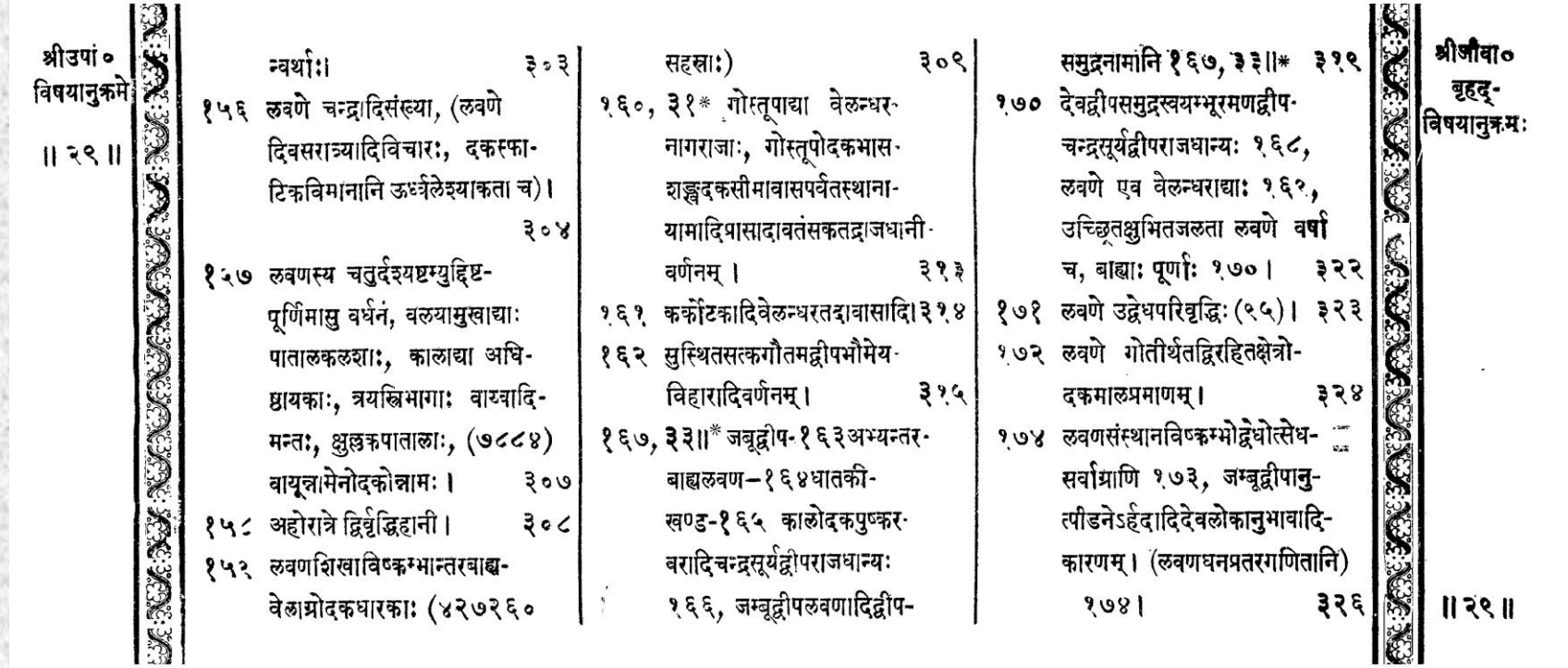
१५३, २७-२८* शालचतुष्कप्रासादा-वतंसकसिद्धायतनादिपरिवारजम्बू-सामानिकादिजम्बूवनखण्डपुष्क-रिणीप्रासादावतंसकसिद्धायतन भवनकूटसिद्धायतनतिलकादिवृक्षा-ष्टमङ्गलानि, द्वादश नामानि, अना-दृतराजधानीवर्णनादिः। ३००

१५४, २९* जम्बूद्वीपे चन्द्रसूर्यादि प्रभासनादिः। ,,

॥ इति जम्बूद्वीपाधिकारः ॥

१५५, ३०* लवणसंस्थानविष्कम्भद्वार-चतुष्कतदबाधाप्रदेशस्पर्शा-

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ २८ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २९ ॥

न्वर्था:। ३०३
१५६ लवणे चन्द्रादिसंख्या, (लवणे दिवसरात्र्यादिविचार:, दकस्फाटिकविमानानि ऊर्ध्वलेश्याकता च)। ३०४
१५७ लवणस्य चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपूर्णिमासु वर्धनं, वलयामुखाद्या: पातालकलशा:, कालाद्या अधिष्ठायका:, त्रयस्त्रिभागा: वाय्वादिमन्त:, क्षुल्लकपातालाः, (७८८४) वायूनामेनोदकोन्नाम: । ३०७
१५८ अहोरात्रे द्विर्वृद्धिहानी। ३०८
१५९ लवणशिखाविष्कम्भान्तरबाह्यवेलाग्रोदकधारका: (४२७२६० सहस्रा:) ३०९
१६०, ३१* गोस्तूपाद्या वेलन्धरनागराजा:, गोस्तूपोदकभासशङ्खदकसीमावासपर्वतस्थानायामादिप्रासादावतंसकतद्राजधानीवर्णनम् । ३१३
१६१ कर्कोटकादिवेलन्धरतदावासादि। ३१४
१६२ सुस्थितसत्कगौतमद्वीपभौमेयविहारादिवर्णनम्। ३१५
१६७, ३३॥* जम्बूद्वीप-१६३अभ्यन्तरबाह्यलवण–१६४धातकीखण्ड-१६५ कालोदकपुष्करवरादिचन्द्रसूर्यद्वीपराजधान्य: १६६, जम्बूद्वीपलवणादिद्वीपसमुद्रनामानि १६७, ३३॥* ३१९
१७० देवद्वीपसमुद्रस्वयम्भूरमणद्वीपचन्द्रसूर्यद्वीपराजधान्य: १६८, लवणे एव वेलन्धराद्या: १६९, उच्छ्रितक्षुभितजलता लवणे वर्षा च, बाह्या: पूर्णा: १७०। ३२२
१७१ लवणे उद्वेधपरिवृद्धि: (९५)। ३२३
१७२ लवणे गोतीर्थतद्विरहितक्षेत्रोदकमालप्रमाणम्। ३२४
१७४ लवणसंस्थानविष्कम्भोद्वेधोत्सेधसर्वाग्राणि १७३, जम्बूद्वीपानुत्पीडनेऽर्हदादिदेवलोकानुभावादिकारणम्। (लवणघनप्रतरगणितानि) १७४। ३२६

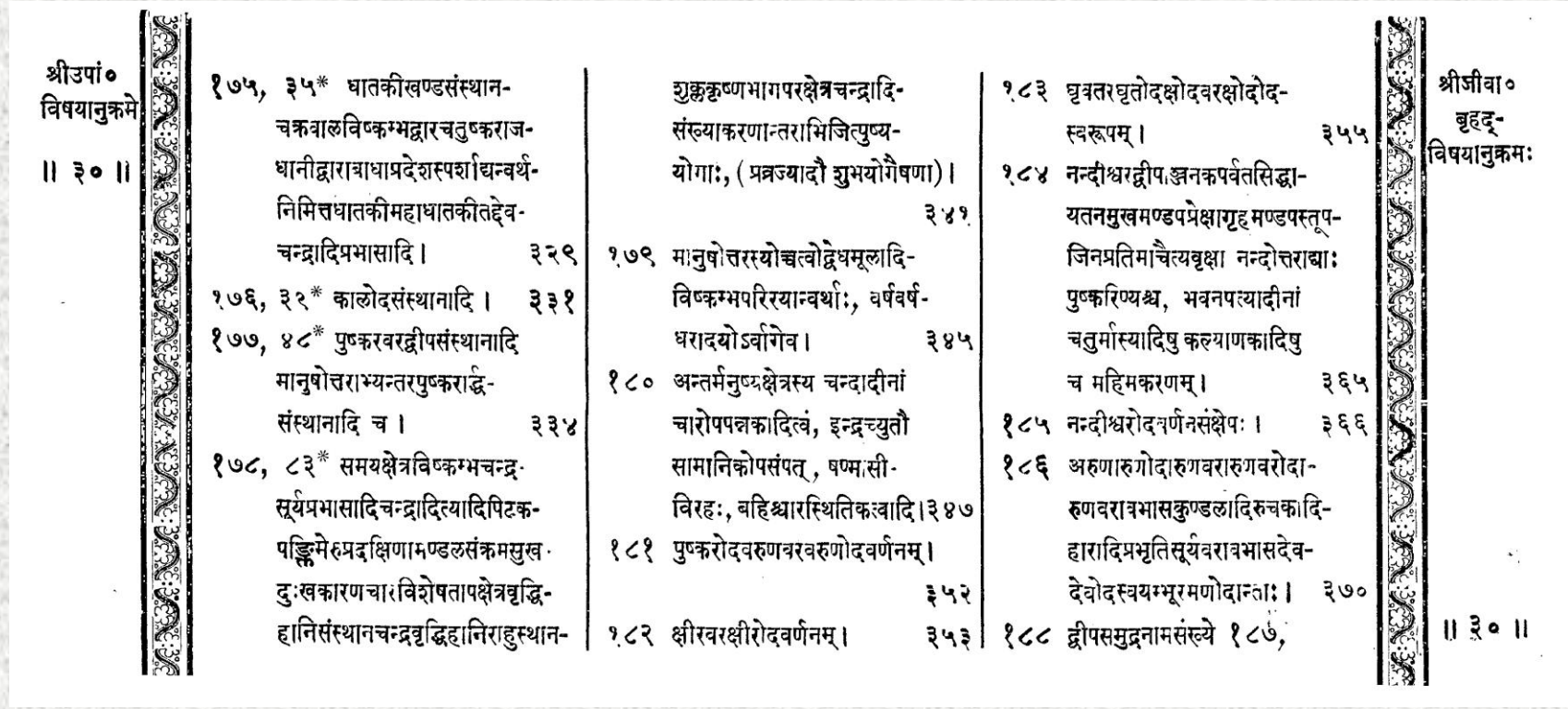
श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रम: ॥ २९ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्रीउपां० विषयानुक्रमे

॥ ३० ॥

१७५, ३५* घातकीखण्डसंस्थान-चक्रवालविष्कम्भद्वारचतुष्कराज-धानीद्वाराबाधाप्रदेशस्पर्शाद्यन्वर्थ-निमित्तधातकीमहाधातकीतद्देव-चन्द्रादिप्रभासादि। ३२९

१७६, ३२* कालोदसंस्थानादि। ३३१

१७७, ४८* पुष्करवरद्वीपसंस्थानादि मानुषोत्तराभ्यन्तरपुष्करार्द्ध-संस्थानादि च। ३३४

१७८, ८३* समयक्षेत्रविष्कम्भचन्द्र-सूर्यप्रभासादिचन्द्रादित्यादिपिटक-पङ्क्तिमेरुप्रदक्षिणामण्डलसंक्रमसुख-दुःखकारणचारविशेषतापक्षेत्रवृद्धि-हानिसंस्थानचन्द्रवृद्धिहानिराहुस्थान-शुक्लकृष्णभागपरक्षेत्रचन्द्रादि-संख्याकरणान्तराभिजित्पुष्य-योगाः, (प्रव्रज्यादौ शुभयोगैषणा)। ३४१

१७९ मानुषोत्तरस्योच्चत्वोद्वेधमूलादि-विष्कम्भपरिरयान्वर्थाः, वर्षवर्ष-धरादयोऽर्वागेव। ३४५

१८० अन्तर्मनुष्यक्षेत्रस्थ चन्दादीनां चारोपपन्नकादित्वं, इन्द्रच्युतौ सामानिकोपसंपत्, षण्मासी-विरहः, बहिश्चारस्थितिकत्वादि। ३४७

१८१ पुष्करोदवरुणवरवरुणोदवर्णनम्। ३५२

१८२ क्षीरवरक्षीरोदवर्णनम्। ३५३

१८३ घृतवरघृतोदक्षोदवरक्षोदोद-स्वरूपम्। ३५५

१८४ नन्दीश्वरद्वीपाञ्जनकपर्वतसिद्धा-यतनमुखमण्डपप्रेक्षागृहमण्डपस्तूप-जिनप्रतिमाचैत्यवृक्षा नन्दोत्तराद्याः पुष्करिण्यश्च, भवनपत्यादीनां चतुर्मास्यादिषु कल्याणकादिषु च महिमकरणम्। ३६५

१८५ नन्दीश्वरोदवर्णनसंक्षेपः। ३६६

१८६ अरुणारुणोदारुणवरारुणवरोदा-रुणवरावभासकुण्डलादिरुचकादि-हारादिप्रभृतिसूर्यवरावभासदेव-देवोदस्वयम्भूरमणोदान्ताः। ३७०

१८८ द्वीपसमुद्रनामसंख्ये १८७,

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः

॥ ३० ॥

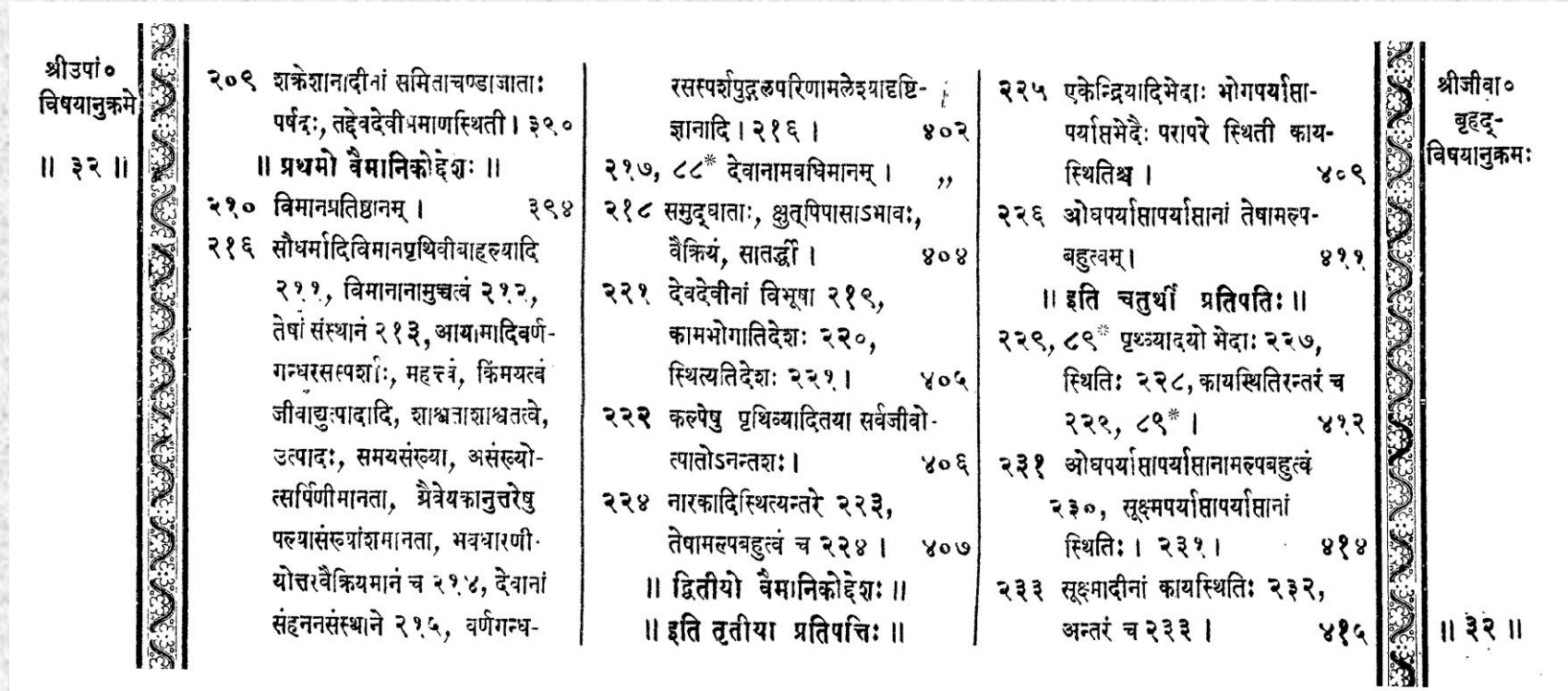
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३१ ॥

लवणपुष्करक्षीरघृतक्षोदस्वयम्भू-
रमणोदजलरसाः, लवणवरुण-
क्षीरघृतोदाः प्रत्येकरसाः, काल-
पुष्करस्वयम्भूरमणोदा उदकरसाः,
शेषाः क्षोदरसाः १८८। ३७२
१८९ लवणकालोदस्वयम्भूरमणा बहु-
मत्स्याः, सप्तनवार्द्धत्रयोदशलक्ष-
मत्स्ययोनिकाः, पञ्चसप्त-
दशयोजनमत्स्याश्च । ३७२
१९१ शुभनामादिमन्तः सार्द्धद्वयोद्धार-
सागरसमयमाना द्वीपसमुद्राः
१९०, पृथ्व्यादिपरिणामाः,
सर्वजीवोत्पादोऽनन्तशः १९१।३७३
॥ इति द्वीपसमुद्राः ॥

१९२ इन्द्रियविषयपरिणामाः । ३७४
१९३ पुद्गलः पूर्वपश्चात्तुल्पशीघ्रमन्दगतिः,
देवस्य ग्रन्थिदीर्घह्रस्वानां करणम्।
३७५
१९५ ८५* यथाऽऽतपश्चन्द्रसूर्ययोरुपर्यादौ
तारकाः १९४, चन्द्रसूर्य-
परिवारे ग्रहनक्षत्रतारकाः १९५,
८५* ३७६
१९७ मेरुलोकान्तज्योतिश्चक्राबाधा,
अधस्तनोपरितनतारकचन्द्रसूर्य-
रत्नप्रभाबाधा १९६, बाह्याभ्यन्तर-
नक्षत्राऽबाधा १९७। ३७८
१९८ चन्द्रादिविमानसंस्थानबाहल्यादि।
३८०

१९९ चन्द्रविमानवाहकदेववर्णनम्। ३८२
२०१ चन्द्रादिषु शीघ्रमन्दगत्योः २००,
अल्पमहर्द्धयोश्च स्वरूपम् २०१।
३८३
२०५ तारकयोरन्तरं २०२, चन्द्र-
स्याग्रमहिष्यः २०३, जिन-
सक्थिसद्भावान्न सुधर्मसभायां
मैथुनं २०४, सूर्यस्याग्रमहिष्यः
२०५। ३८५
२०६ चन्द्रादीनां स्थित्याद्यतिदेशः। ,,
२०७ चन्द्रादीनामल्पबहुत्वम्। ,,
॥ इति ज्योतिष्कोद्देशः ॥
२०८ वैमानिकविमानदेवस्थानाद्यति-
देशः। ३८८

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ३१ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३२ ॥

२०९ शक्रेशानादीनां समिताचण्डाजाताः पर्षदः, तद्देवदेवीप्रमाणस्थिती। ३९०
॥ प्रथमो वैमानिकोद्देशः ॥
२१० विमानप्रतिष्ठानम्। ३९४
२१६ सौधर्मादिविमानपृथिवीबाहल्यादि २११, विमानानामुच्चत्वं २१२, तेषां संस्थानं २१३, आयामादिवर्णगन्धरसस्पर्शाः, महत्त्वं, किंमयत्वं जीवाद्युत्पादादि, शाश्वताशाश्वतत्वे, उत्पादः, समयसंख्या, असंख्योत्सर्पिणीमानता, ग्रैवेयकानुत्तरेषु पल्यासंख्यांशमानता, भवधारणीयोत्तरवैक्रियमानं च २१४, देवानां संहननसंस्थाने २१५, वर्णगन्धरसस्पर्शपुद्गलपरिणामलेश्यादृष्टिज्ञानादि। २१६। ४०२
२१७, ८८* देवानामवधिमानम्। ,,
२१८ समुद्घाताः, क्षुत्पिपासाऽभावः, वैक्रियं, सातर्द्धी। ४०४
२२१ देवदेवीनां विभूषा २१९, कामभोगातिदेशः २२०, स्थित्यतिदेशः २२१। ४०५
२२२ कल्पेषु पृथिव्यादितया सर्वजीवोत्पातोऽनन्तशः। ४०६
२२४ नारकादिस्थित्यन्तरे २२३, तेषामल्पबहुत्वं च २२४। ४०७
॥ द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ॥
॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः ॥
२२५ एकेन्द्रियादिभेदाः भोगपर्याप्तापर्याप्तभेदैः परापरे स्थिती कायस्थितिश्च। ४०९
२२६ ओघपर्याप्तापर्याप्तानां तेषामल्पबहुत्वम्। ४११
॥ इति चतुर्थी प्रतिपत्तिः ॥
२२९, ८९* पृथ्व्यादयो भेदाः २२७, स्थितिः २२८, कायस्थितिरन्तरं च २२९, ८९*। ४१२
२३१ ओघपर्याप्तापर्याप्तानामल्पबहुत्वं २३०, सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानां स्थितिः। २३१। ४१४
२३३ सूक्ष्मादीनां कायस्थितिः २३२, अन्तरं च २३३। ४१५

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ३२ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३३ ॥

२३४ सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानामल्पबहुत्वम्। ४१६
२३५ बादरपर्याप्तापर्याप्तानां स्थितिः। ४१७
२३६, ९२* बादरबादरपृथिव्यादीनां कायस्थितिः। ४१८
२३७ बादरबादरवनस्पतिनिगोदबादर-निगोदानामन्तरम्। ,,
२३८ सप्रभेदसूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम्। ४२३
२३९ निगोदभेदाः। ४२४
२४० सप्रभेदानां निगोदतज्जीवानां द्रव्यप्रदेशाभ्यामल्पबहुत्वम्। ४२७
॥ इति पञ्चमी प्रतिपत्तिः ॥
२४१ नारकतिर्यङ्नरदेवतत्स्त्रीणां स्थित्यन्तरालपबहुत्वानि। ४२८
॥ इति षष्ठी प्रतिपत्तिः ॥
२४२ प्रथमाप्रथमसमयनारकादीनां स्थित्यन्तरालपबहुत्वानि। ४३१
॥ इति सप्तमी प्रतिपतिः ॥
२४३ पृथ्व्यादिद्वीन्द्रियादीनां स्थित्यादि। ४३३
॥ इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः ॥
२४४ प्रथमाप्रथमसमयैकेन्द्रियादिस्थित्यन्तरालपबहुत्वानि। ४३५
॥ इति नवमी प्रतिपत्तिः ॥
॥ इति संसारसमापन्नाः ॥
२४५ सिद्धासिद्धयोः स्थित्यन्तरालपबहुत्वानि। ४३६
२४६ इन्द्रियकायवेदकषायलेश्याभेदैः स्थित्यादि। ४३९
२४७ ज्ञानोपयोगैः स्थित्यादि। ४४०
२४८ छद्मस्थभवस्थसयोग्याहारकेतराणां स्थित्यादि। (क्षुल्लकभवादि-निरूपणम्) ४४३
२४९ भाषकाभाषकशरीर्यशरीरिस्थित्यादि। ४४४
२५० चरमाचरमस्थित्यादि ,,
२५१ सम्यग्दृष्ट्यादिस्थित्यादि। ४४५
२५२ संसारकायपरीत्तादिस्थित्यादि। ४४७
२५३ पर्याप्तादिस्थित्यादि। ,,
२५४ सूक्ष्मादिस्थित्यादि। ४४८
२५५ सञ्ज्ञादिस्थित्यादि। ,,

श्रीजीवा० बृहद्-विषयानुक्रमः

॥ ३३ ॥

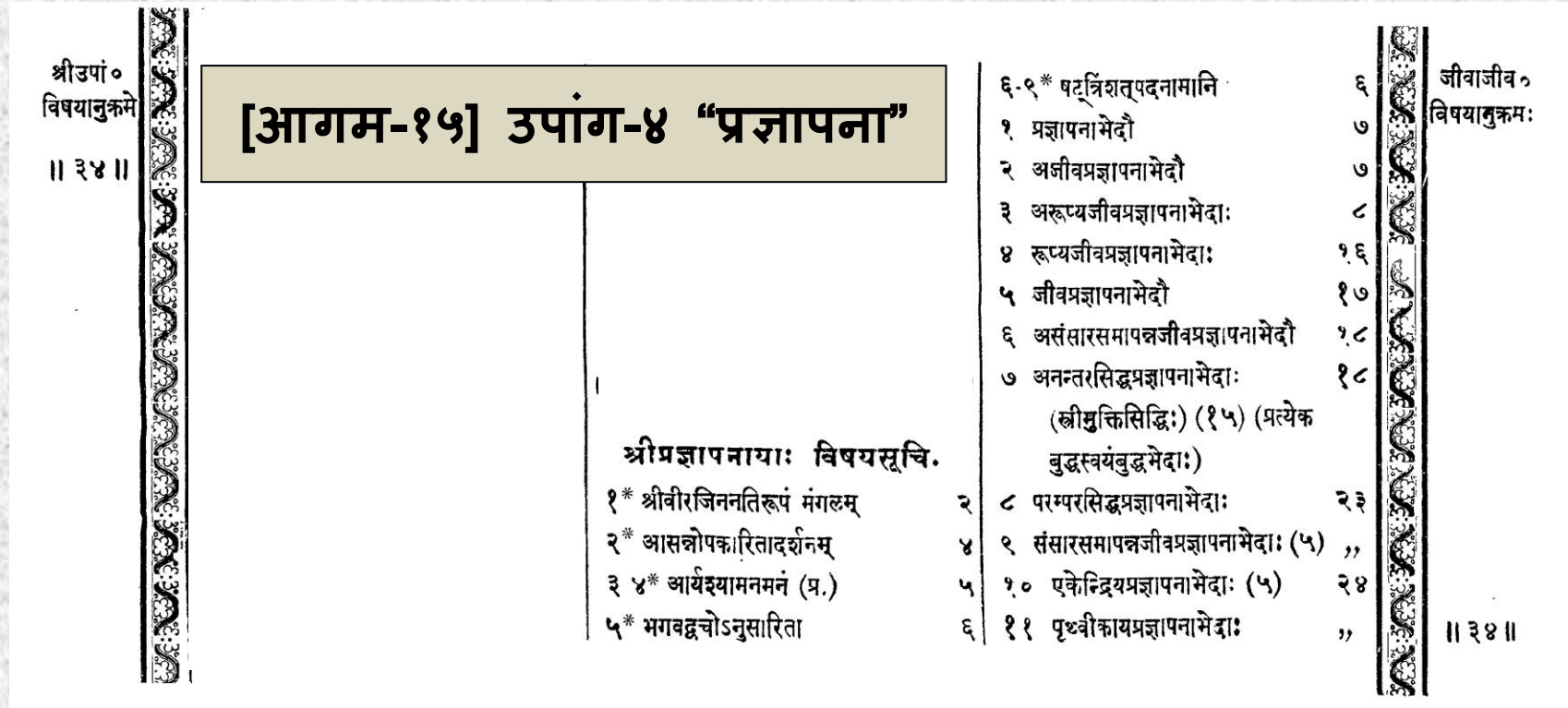
[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-३ "जीवाजीवाभिगम"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

२५७ भव्यादि २५६ त्रसादिस्थित्यादि। ४४१
२५८ मनोयोग्यादिस्थित्यादि। (सम्प्रदायप्रामाण्यम्) ४५०
२५९ स्त्र्यादिस्थित्यादि। ४५१
२६० चक्षुर्दर्शन्यादिस्थित्यादि। ४५२
२६१ संयतादिस्थित्यादि। ४५३
२६२, ९३* क्रोधादिस्थित्यादि। ४५४
२६३ नारकादिस्थित्यादि। ,,
२६४ मतिज्ञान्याद्येकेन्द्रियादि-स्थित्यादि। ४५६
२६५ औदारिकादिस्थित्यादि। ४५७
२६६ पृथ्वीकायिकादिस्थित्यादि। ,,
२६७ कृष्णलेश्यादिस्थित्यादि। ४५९
२६८ मत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थित्यादि। ४६०
२६९ नारकादिस्थित्यादि। ४६१
२७० एकेन्द्रियादिस्थित्यादि। ४६२
२७१ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि। ४६४
२७२ पृथ्व्यादिस्थित्यादि। ४६५
२७३ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि। ४६७
॥ प्रशस्ति: ॥
॥ इति जीवाजीवाभिगमसूत्रविषयानुक्रमः॥

आगम संबंधी साहित्य	[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३४ ॥

[आगम-१५] उपांग-४ "प्रज्ञापना"

श्रीप्रज्ञापनायाः विषयसूचि.

१*	श्रीवीरजिननतिरूपं मंगलम्	२
२*	आसन्नोपकारितादर्शनम्	४
३ ४*	आर्यश्यामनमनं (प्र.)	५
५*	भगवद्वचोऽनुसारिता	६
६-९*	षट्त्रिंशत्पदनामानि	६
१	प्रज्ञापनाभेदौ	७
२	अजीवप्रज्ञापनाभेदौ	७
३	अरूप्यजीवप्रज्ञापनाभेदाः	८
४	रूप्यजीवप्रज्ञापनाभेदाः	१६
५	जीवप्रज्ञापनाभेदौ	१७
६	असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाभेदौ	१८
७	अनन्तरसिद्धप्रज्ञापनाभेदाः (स्त्रीमुक्तिसिद्धिः) (१५) (प्रत्येक बुद्धस्वयंबुद्धभेदाः)	१८
८	परम्परसिद्धप्रज्ञापनाभेदाः	२३
९	संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाभेदाः (५)	,,
१०	एकेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (५)	२४
११	पृथ्वीकायप्रज्ञापनाभेदाः	,,

जीवाजीव० विषयानुक्रमः ॥ ३४ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३५ ॥

१२ सूक्ष्मपृथ्वीकायभेदौ । २५
१३ बादरपृथिवीकायभेदौ । ,,
१४ श्लक्ष्णपृथ्वीकायभेदाः । (७) २६
१५, १०-१३* खरपृथ्वीकायभेदाः (अनन्ताः) । २७
१६ अप्कायभेदौ । २८
१७ तेजस्कायभेदौ । २९
१८ वायुकायभेदौ । ,,
१९ वनस्पतिकायभेदौ । ,,
२० सूक्ष्मवनस्पतिकायभेदौ । ,,
२१ बादरवनस्पतिकायभेदौ । ३०
२२, १४* प्रत्येकबादरवनस्पतिकाय-भेदाः (१२) । ,,
२३, १५-४६* बादरप्रत्येकवनस्पति-कायभेदाः । ३१
२४, ४७-८३* साधारणवनस्पतिकाय-वृक्षादीनां भेदाः (अनन्ताः) । ३४
२५, ८४-९६* अनन्त-प्रत्येकवनस्पति-कायलक्षणम् । (मूलाद्यपत्रवादः) । ३६
२६, ९७-११०* साधारणवनस्पति-लक्षणम् । ३९
२७ द्वीन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः । ४१
२८ त्रीन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः । ४२
२९, १११* चतुरिन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः । ,,
३० पंचेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (४) । ,,
३१ नैरयिकप्रज्ञापनाभेदाः (७) । ४३
३२ तिर्यक्पंचेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (३) । ,,
३३ जलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक-भेदाः (५) । ४४
३४ स्थलचरपंचेन्द्रियतैर्यग्योनिक-भेदाः (२) । ४५
३५ परिसर्पपञ्चेन्द्रियतिर्यग्भेदौ । ४६
३६, ११२* खचरपंचेन्द्रियतिर्यक्-प्रभेदाः (४) । ४९
३७, ११३-१३३* मनुष्यप्रज्ञापनाभेदौ (अन्तरद्वीपाः २०) (द्वाराणि २०) । ५०
३८ देवप्रज्ञापनाभेदाः (४) । ६९
इति प्रथमं प्रज्ञापनारूयं पदम् ।
३९ पृथ्व्यप्तेजःस्थानानि । ७२
४० वायुवनस्पतिस्थानम् । ७७
४१ विकलेन्द्रियस्थानम् । ७८
४२ सामान्यपञ्चेन्द्रियनारकस्थानम् । ७९

प्रज्ञा० विषयसूचिः

॥ ३५ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३६ ॥

४३, १३४-१३७* रत्नप्रभादिनारक-स्थानम्। ८२
४४ तिरश्चां पञ्चेन्द्रियाणां स्थानम्। ८४
४५, १३८* मनुष्याणां स्थानम्। ,,
४६, १३९-१४९* भवनपतीनां स्थानं असुरादीनां च। ९२
४७ व्यन्तरस्थानम्। ९५
४८, १५०-१५१* पिशाचस्थानम्। ९७
४९, १५२-१५४* वानमन्तरस्थानम्। ,,
५० ज्योतिष्कस्थानम्। ९९
५१ वैमानिकस्थानम्। १००
५२ सौधर्मस्थानम्। १०१
५३, १५५-१५८* ईशानादिस्थानम्। १०५
५४, १५९-१७२* सिद्धस्थानादि। १०६

इति द्वितीयं स्थानपदम्।

१८०-१८१* दिगादिभेदाः (२७)। ११३
५५ दिग्द्वारं सामान्येन। ११४
५६ पृथिव्याद्यल्पबहुत्वम्। ११६
५७ नारकादीनां पञ्चानामष्टानां(सवेदानां) चाल्पबहुत्वम्। ११९
५८ एकेन्द्रियाद्यल्पबहुत्वम्। १२०
५९ षट्कायाल्पबहुत्वम्। १२२
६० सूक्ष्मबादरालपबहुत्वम्। १२४
६१ बादरालपबहुत्वम्। १२७
६२ सूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम्। १३१
६३ योन्यालपबहुत्वम्। १३४
६४ वेदैरल्पबहुत्वम्। ,,
६५ कषायैरल्पबहुत्वम्। १३५
६६ लेश्याभिरल्पबहुत्वम्। ,,
६७ दृष्टिभिरल्पबहुत्वम्। १३६
६८ ज्ञानाज्ञानाल्पबहुत्वम्। १३७
६९ दर्शनाल्पबहुत्वम्। ,,
७० संयताल्पबहुत्वम्। ,,
७१ उपयोगाल्पबहुत्वम्। ,,
७२ आहारकेतरालपबहुवम्। ,,
७३ भाषकेतरालपबहुवम्। ,,
७४ परीत्तेतरालपबहुत्वम्। ,,
७५ पर्याप्तेतरालपबहुत्वम्। १३९
७६ सूक्ष्मेतरालपबहुत्वम्। ,,
७७ संज्ञ्यसंज्ञ्यल्पबहुत्वम्। ,,
७८ भवसिद्धिकेतरालपबहुत्वम्। ,,
७९ अस्तिकायाल्पबहुत्वम्। १४०

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३६ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३७ ॥

८० चरमेतरालपबहुत्वम् । १४३
८१ जीवाल्पबहुत्वम् । ,,
८२ क्षेत्रानुपातेन जीवाल्पबहुत्वम् । १४४
८३ गत्यपेक्षयाऽल्पबहुत्वम् । १४५
८४ विशेषेण देवानामल्पबहुत्वम् । १४६
८५ एकेन्द्रियाल्पबहुत्वम् । १५१
८६ क्षेत्रानुपातेन विकलेन्द्रियाल्प-बहुत्वम् । १५२
८७ क्षेत्रानुपातेन पञ्चेन्द्रियाल्पबहुत्वम् । १५३
८८ क्षेत्रानुपातेन पृथ्व्यादीनामल्प-बहुत्वम् । १५४
८९ क्षेत्रानुपातेन त्रसकायिकाल्पबहुत्वम् ।
९० आयुर्बन्धकाद्यल्पबहुत्वम् । १५५
९१ क्षेत्रदिग्भ्यां पुद्गलद्रव्याल्पबहुत्वम् । १५८
९२ द्रव्यक्षेत्रकालभावाल्पबहुत्वम् । १६०
९३ महादण्डकः (९९ भेदानां) । १६२
॥ इति तृतीयमल्पबहुत्वपदम् ॥
९४ सामान्यपर्याप्तापर्याप्तरत्नप्रभादिना-रकाणांस्थितिः । १६९
९५ सामान्यविशेषतो देवानां स्थितिः । १७१
९६ पृथ्व्यादीनां स्थितिः । ,,
९७ द्वीन्द्रियादीनां स्थितिः । ,,
९८ जलस्थलखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्-योनिकानां सामान्यविशेषतः स्थितिः । १७३
९९ मनुष्याणां स्थितिः । १७४
१०० व्यन्तराणां स्थितिः । ,,
१०१ ज्योतिष्काणां स्थितिः । १७५
१०२ वैमानिकानां स्थितिः । १७६
॥ इति चतुर्थं स्थित्याख्यपदम् ॥
१०३ जीवपर्यायाः (पर्यायभेदौ) । १७९
१०४ नारकपर्यायाः द्रव्यप्रदेशस्थिति-भेदौ च । १८०
१०५ असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १८४
१०६ पृथिवीकायिकादीनां पर्यायाः । १८५
१०७ द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । ,,
१०८ पंचेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ,,
१०९ मनुष्याणां पर्यायाः । ,,
११० वानव्यन्तराणां पर्यायाः । ,,
१११ जघन्यावगाहनादीनां नैरयि-काणां पर्यायाः । १८७

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३७ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३८ ॥

११२ ज० असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १८९
११३ ज० पृथ्व्यादीनां पर्यायाः । ,,
११४ ज० द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । १९०
११५ ज० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ,,
११६ ज० मनुष्याणां पर्यायाः । १९२
११७ असुरकुमारादिपर्यायाः । १९५
११८ अजीवपर्यायभेदौ । १९६
११९ रूप्यजीवपर्यायाः (४) । ,,
१२० परमाण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाह-स्थितिगुणैः पर्यायाः । २००
१२१ जघन्यप्रदेशादीनां पर्यायाः । २०१
॥ इति विशेषापरपर्यायं पर्यायाख्यं पञ्चमं पदम् ॥

१२२, १८२* उपपातविरहो गतिषु । २०५
१२३ रत्नप्रभादिभेदैरुपपातविरहः । २०६
१२४ रत्नप्रभादिभेदैरुद्वर्त्तनाविरहः । २०७
१२५ सान्तरनिरन्तरोपपातः । २०७
१२६ सान्तरनिरन्तरोद्वर्त्तना । ,,
१२७ उपपातसंख्या । २०८
१२९, १८३-१८४ नारकाणामागतिः । ,,
१३० असुरकुमाराणामुपपातः । २११
१३१ पृथिवीकायिकानामुपपातः । २१२
१३२ विकलेन्द्रियाणामुपपातः । २१३
१३३ पंचेन्द्रियतिरश्चामुपपातः । ,,
१३४ मनुष्याणामुपपातः । ,,
१३५ वानव्यतराणामुपपातः । २१४
१३६ ज्योतिष्काणामुपपातः । ,,

१३७ वैमानिकानामुपपातः । २१४
१३८ नारकाणामुद्वर्त्तना । २१५
१३९ असुरकुमाराणामुद्वर्त्तना । ,,
१४० पृथ्वीकायिकादीनामुद्वर्त्तना । ,,
१४१ पंचेन्द्रियतिरश्चामुद्वर्त्तना । ,,
१४२ मनुष्याणामुद्वर्त्तना । ,,
१४३ वानव्यन्तरादीनामुद्वर्त्तना । २१६
१४४ परभवायुर्बन्धः । २१६
१४५ जातिनामनिधत्तत्र्यायुर्बन्धभेदाः (६) । २१७
॥ इति व्युत्क्रान्त्याख्यं षष्ठं पदम् ॥
१४६ उच्छ्वासतद्विरहैः । २२०
॥ इति सप्तममुच्छ्वासाख्यं पदम् ॥
१४७ दश संज्ञाः । २२१

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३८ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३९ ॥

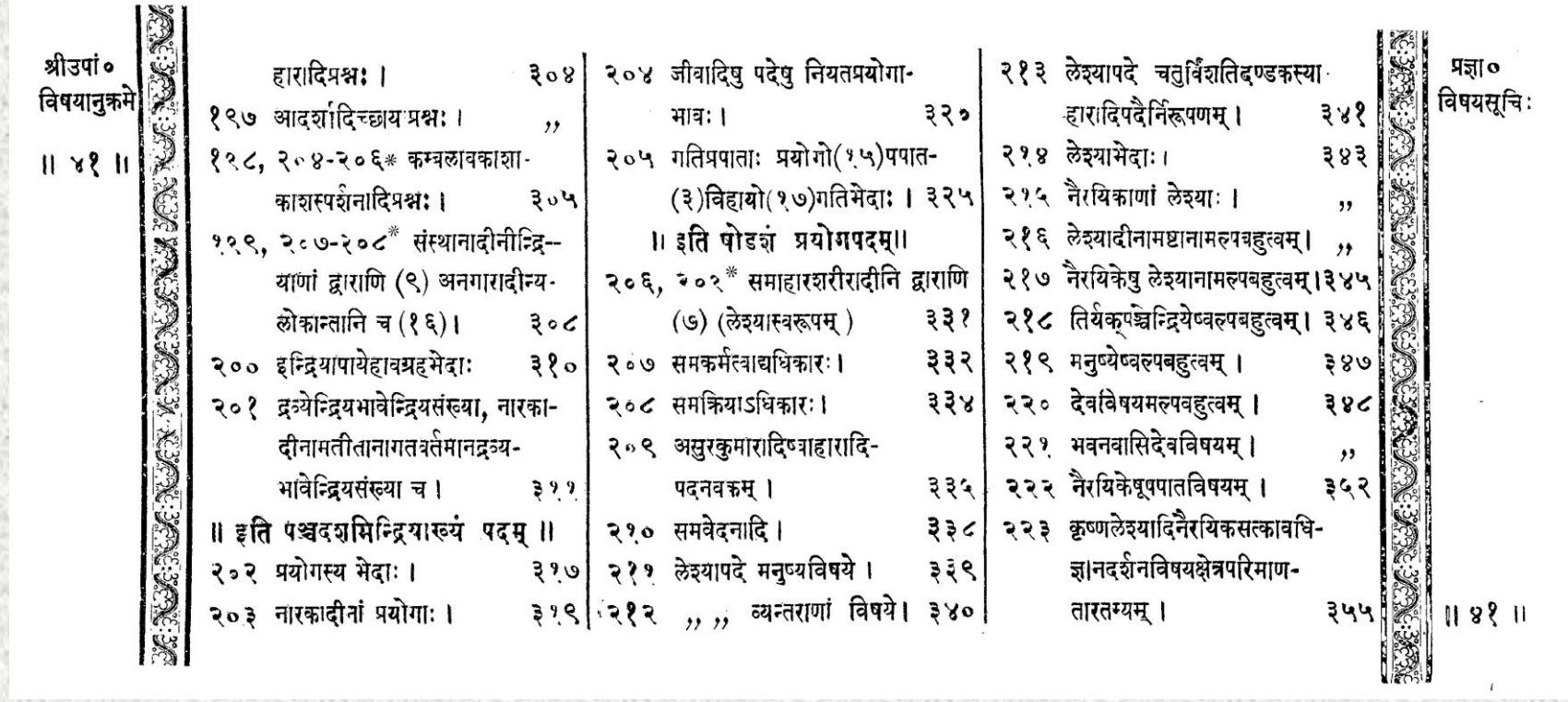
१४८ दण्डकभेदेनाहारसंज्ञादिमतामल्पबहुता। २२३
॥ इत्यष्टमं संज्ञाख्यं पदम् ॥
१४९ योनिभेदाः (३)। २२४
१५० नारकादीनां शीताद्या योनयः।
१५१ नारकादीनां सचित्ताद्या योनयः (३)। २२६
१५२ संवृताद्या योनयः २२७
१५३ मनुष्याणां कूर्मोन्नताद्या योनयः। २२८
॥ इति योन्याख्यं नवमं पदम् ॥
१५४ पृथ्वीनां चरमाचरमते। ,,
१५५ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमाद्यल्पबहुत्वम्। २२९
१५६ अलोकस्य लोकालोकयोश्च चरमाचरमादिभेदेनाल्पबहुत्वम्। २३०
१५७ परमाणोश्चरमतादिविचारः। २३२
१५८, १८५-१९०* द्विप्रदेशादीनां चरमादित्वम्। २३८
१५९ संस्थानभेदाः (५)। २४२
१६०, १९१* जीवादीनां चरमाचरमविभागः। २४४
॥ इति दशमं चरमाख्यं पदम् ॥
१६१ अवधारिण्याः स्वरूपं सत्यारार्थिन्यादित्वं च। २४६
१६२ लिङ्गवाक्सत्यता। २४८
१६३ संज्ञिणां वागाहारादिराजकुलादिवाचनज्ञानम्। २५२
१६४ एकवचनादिका भाषा। २५३
१६५, १९२-१९७* सामान्यतो भाषायाः कारणानि सप्रभेदसत्यादिभेदाश्च:। २५५
१६६ भाषकाभाषकौ। २५९
१६७ नारकादीनां भाषाजातानि। २६०
१६८, १९८* भाषाद्रव्यग्रहणादिविचारः। ,,
१६९ सान्तरनिरन्तरग्रहणनिसर्गभेदादि। २६२
१७० भाषाशब्दद्रव्यभेदाः (५)। २६५
१७१ नारकादिभाषा स्थितभाषाद्रव्यग्रहणं च। २६६
१७२ सत्यादितया गृहीतनिसर्गयोरभेदाः। ,,

प्रज्ञा० विषयसूचि ॥ ३९ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४० ॥

१७३ षोडश वचनानि। २६६
१७४ चतस्रोऽप्याराधिन्यः सत्यभाषका-द्यल्पबहुत्वम्। २६७
१७५ सत्यादिभाषानामल्पबहुत्वम्। २६८
॥ इति भाषारूपमेकादशं पदम् ॥
१७६ शरीरभेदाः (५ दण्डकेषु) २७०
१७७ औदारिकादीनां भेदौ संख्या च। ,,
१७८ नारकाणामौदारिकादिशरीर-तत्संख्याप्रच्छा। २७४
१७९ असुरकुमारादीनामौदारिकादि-शरीरतत्संख्याप्रच्छा। २७५
१८० पृथ्वीकायिकादीनां द्वीन्द्रियादीनां चौदारिकादिशरीरतत्संख्याप्रच्छा (गर्भजमनुष्यसंख्या)। २७७
॥ इति द्वादशं शरीराख्यं पदम् ॥
१८१ परिणामभेदौ। २७९
१८२ जीवपरिणामभेदाः (गत्यादि १०)। २८३
१८३ गतिपरिणामादिनिरूपणं (१०)। २८६
१८४ अजीवपरिणामभेदाः (१०)। २८७
१८५, १९९-२०० बन्धपरिणामादि-भेदाः। (१०) ,,
॥ इति त्रयोदशं परिणामाख्यं पदम् ॥
१८६ कषायभेदाः। २८९
१८७ कषायप्रतिष्ठोत्पत्तिश्च। ,,
१८८ क्रोधादिभेदाः २८९
१८९ आभोगाद्याः क्रोधभेदाः। २९१
१९०, २०० * अष्टकर्मप्रकृतिचयोप-चयादिहेतुता। २९२
॥ इति चतुर्दशं कषायाख्यं पदम् ॥
२०२-२०३* इन्द्रियाणां संस्थानादि-द्वाराणि (१६)। २९३
१९१ इन्द्रियाणां संस्थानबाहल्यपृथक्त्व-प्रदेशाः। ,,
१९२ अवगाहनाल्पबहुत्वे। २९५
१९३ नैरयिकादिषु इंद्रियादीनि। २९७
१९४ शब्दादेः स्पृष्टास्पृष्टत्वादि। २९८
१९५ इन्द्रियाणां विषयपरिमाण-निरूपणम् (इन्द्रियविषयेष्वं-गुलासंख्येयभागादि मानम्)। २९९
१९६ अन्त्यनिर्जरापुद्गलदर्शनज्ञाना-

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४० ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४१ ॥

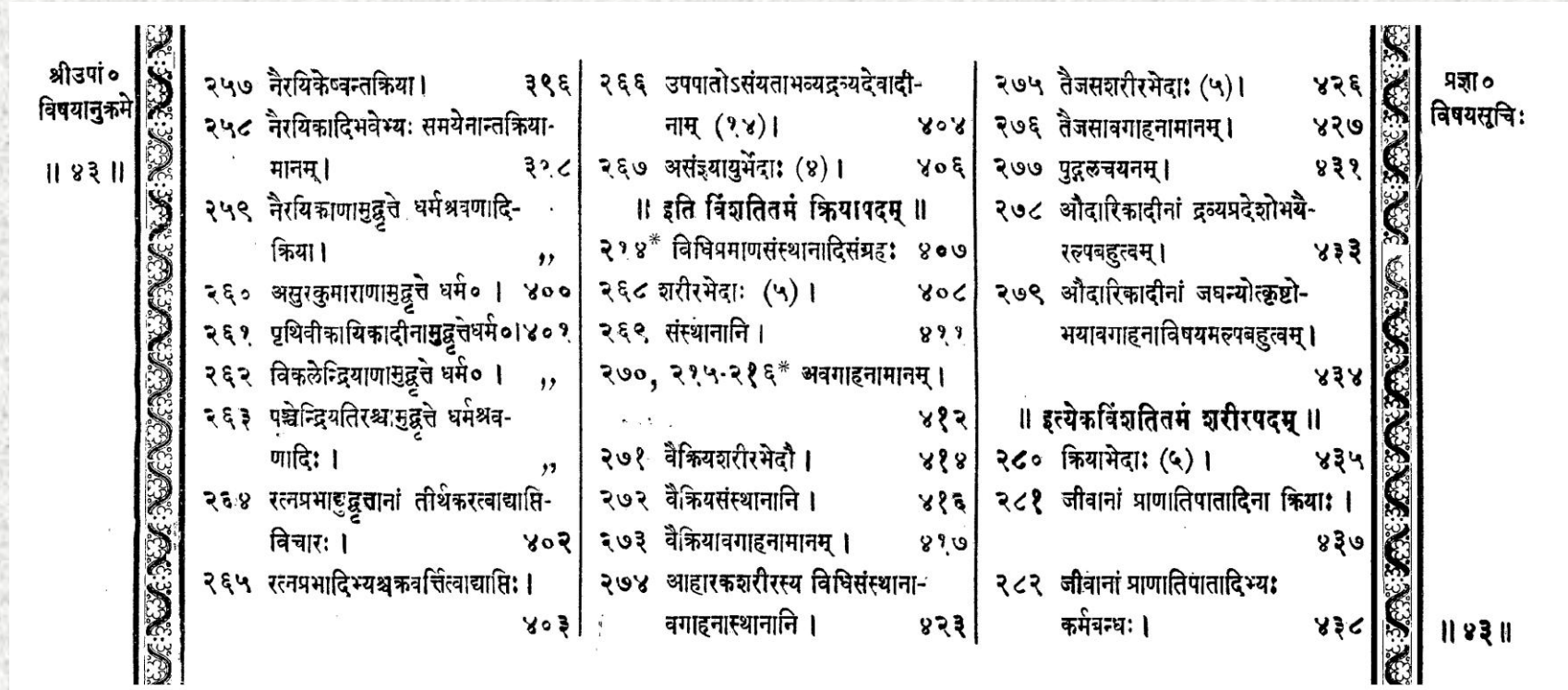
हारादिप्रश्नः । ३०४
१९७ आदर्शादिच्छाय प्रश्नः । ,,
१९८, २०४-२०६* कम्बलावकाशा-
काशस्पर्शनादिप्रश्नः । ३०५
१९९, २०७-२०८* संस्थानादीनीन्द्रि--
याणां द्वाराणि (९) अनगारादीन्य-
लोकान्तानि च (१६)। ३०८
२०० इन्द्रियापायेहावग्रहभेदाः ३१०
२०१ द्रव्येन्द्रियभावेन्द्रियसंख्या, नारका-
दीनामतीतानागतवर्तमानद्रव्य-
भावेन्द्रियसंख्या च । ३११
॥ इति पञ्चदशमिन्द्रियाख्यं पदम् ॥
२०२ प्रयोगस्य भेदाः । ३१७
२०३ नारकादीनां प्रयोगाः । ३१९
२०४ जीवादिषु पदेषु नियतप्रयोगा-
भावः । ३२०
२०५ गतिप्रपाताः प्रयोगो(१५)पपात-
(३)विहायो(१७)गतिभेदाः । ३२५
॥ इति षोडशं प्रयोगपदम्॥
२०६, २०२* समाहारशरीरादीनि द्वाराणि
(७) (लेश्यास्वरूपम्) ३३१
२०७ समकर्मत्वाद्यधिकारः । ३३२
२०८ समक्रियाऽधिकारः । ३३४
२०९ असुरकुमारादिष्वाहारादि-
पदनवकम् । ३३५
२१० समवेदनादि । ३३८
२११ लेश्यापदे मनुष्यविषये । ३३९
२१२ ,, ,, व्यन्तराणां विषये। ३४०
२१३ लेश्यापदे चतुर्विंशतिदण्डकस्या-
हारादिपदैर्निरूपणम् । ३४१
२१४ लेश्याभेदाः । ३४३
२१५ नैरयिकाणां लेश्याः । ,,
२१६ लेश्यादीनामष्टानामल्पबहुत्वम्। ,,
२१७ नैरयिकेषु लेश्यानामल्पबहुत्वम्।३४५
२१८ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वल्पबहुत्वम्। ३४६
२१९ मनुष्येष्वल्पबहुत्वम् । ३४७
२२० देवविषयमल्पबहुत्वम् । ३४८
२२१ भवनवासिदेवविषयम् । ,,
२२२ नैरयिकेषूपपातविषयम् । ३५२
२२३ कृष्णलेश्यादिनैरयिकसत्कावधि-
ज्ञानदर्शनविषयक्षेत्रपरिमाण-
तारतम्यम् । ३५५

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४१ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४२ ॥

२२४ का लेश्याः कतिषु ज्ञानेषु लभ्यन्ते। ३५७
२२५, २१०* लेश्याणां परिणाम-लक्षणम्। ३५८
२२६ लेश्यानां वर्णाधिकारः। ३६०
२२७ लेश्यानां रसाधिकारः। ३६४
२२८ लेश्यानां गन्धाधिकारः। ३६६
२२९ लेश्यानां परिणामद्वारम्। ३६७
२३० लेश्यानां स्थानद्वारम्। ३६८
२३१ देवनैरयिकविषयम्। ३७०
२३२ सामन्यतया लेश्यावर्णनम्। ३७१
॥ इति सप्तदशं लेश्याख्यं पदम् ॥
२३३, २११-२१२* कायस्थितिपरिणामः। ३७४
२३४ कायस्थितीन्द्रियद्वारम्। ३७७
२३५ कायद्वारम्। ३७८
२३६ कायद्वारे सूक्ष्मकायिकादीनां कालनिरूपणम्। ३८१
२३७ योगद्वारम्। ३८२
२३८ वेदद्वारम्। ३८३
२३९ कषायद्वारम्। ३८५
२४० लेश्याद्वारम्। ३८६
२४१ सम्यक्त्वद्वारम्। ३८७
२४२ ज्ञानद्वारम्। ३८९
२४३ दर्शनद्वारम्। ३९०
२४४ संयतद्वारम्। ३९१
२४५ उपयोगद्वारम्। ३९२
२४६ आहारकद्वारम्। ३९३
२४७ भाषाद्वारम्। ३९४
२४८ परीत्तद्वारम्। ३९४
२४९ पर्याप्तद्वारम्। ,,
२५० सूक्ष्मद्वारम्। ,,
२५१ संज्ञिद्वारम्। ,,
२५२ भवसिद्धिकद्वारम्। ,,
२५३ अस्तिकायद्वारम्। ,,
२५४ चरिमद्वारम्। ,,
॥ इत्यष्टादशं कायस्थितिपदम् ॥
१५५ सम्यग्दृष्ट्यादिभेदेन जीवाः। ३९५
इत्येकोनविंशतितमं सम्यक्त्वपदम् ॥
१५६, २१३* अन्तक्रिया, तीर्थकृत्त्वादिप्राप्तिसंग्रहः, जीवादिष्वन्तक्रियाविचारः। ३९६

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४२ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४३ ॥

२५७ नैरयिकेष्वन्तक्रिया। ३९६
२५८ नैरयिकादिभवेभ्यः समयेनान्तक्रियामानम्। ३९८
२५९ नैरयिकाणामुद्वृत्ते धर्मश्रवणादिक्रिया। ,,
२६० असुरकुमाराणामुद्वृत्ते धर्म०। ४००
२६१ पृथिवीकायिकादीनामुद्वृत्तेधर्म०। ४०१
२६२ विकलेन्द्रियाणामुद्वृत्ते धर्म०। ,,
२६३ पञ्चेन्द्रियतिरश्चामुद्वृत्ते धर्मश्रवणादिः। ,,
२६४ रत्नप्रभादिद्वृत्तानां तीर्थकरत्वाद्यास्तिविचारः। ४०२
२६५ रत्नप्रभादिभ्यश्चक्रवर्त्तित्वाद्यास्तिः। ४०३
२६६ उपपातोऽसंयताभव्यद्रव्यदेवादीनाम् (१४)। ४०४
२६७ असंज्ञ्यायुर्भेदाः (४)। ४०६
॥ इति विंशतितमं क्रियापदम् ॥
२१४* विधिप्रमाणसंस्थानादिसंग्रहः ४०७
२६८ शरीरभेदाः (५)। ४०८
२६९ संस्थानानि। ४११
२७०, २१५-२१६* अवगाहनामानम्। ४१२
२७१ वैक्रियशरीरभेदौ। ४१४
२७२ वैक्रियसंस्थानानि। ४१६
२७३ वैक्रियावगाहनामानम्। ४१७
२७४ आहारकशरीरस्य विधिसंस्थानावगाहनास्थानानि। ४२३
२७५ तैजसशरीरभेदाः (५)। ४२६
२७६ तैजसावगाहनामानम्। ४२७
२७७ पुद्गलचयनम्। ४३१
२७८ औदारिकादीनां द्रव्यप्रदेशोभयैरल्पबहुत्वम्। ४३३
२७९ औदारिकादीनां जघन्योत्कृष्टोभयावगाहनाविषयमल्पबहुत्वम्। ४३४
॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥
२८० क्रियाभेदाः (५)। ४३५
२८१ जीवानां प्राणातिपातादिना क्रियाः। ४३७
२८२ जीवानां प्राणातिपातादिभ्यः कर्मबन्धः। ४३८

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४३ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४४ ॥

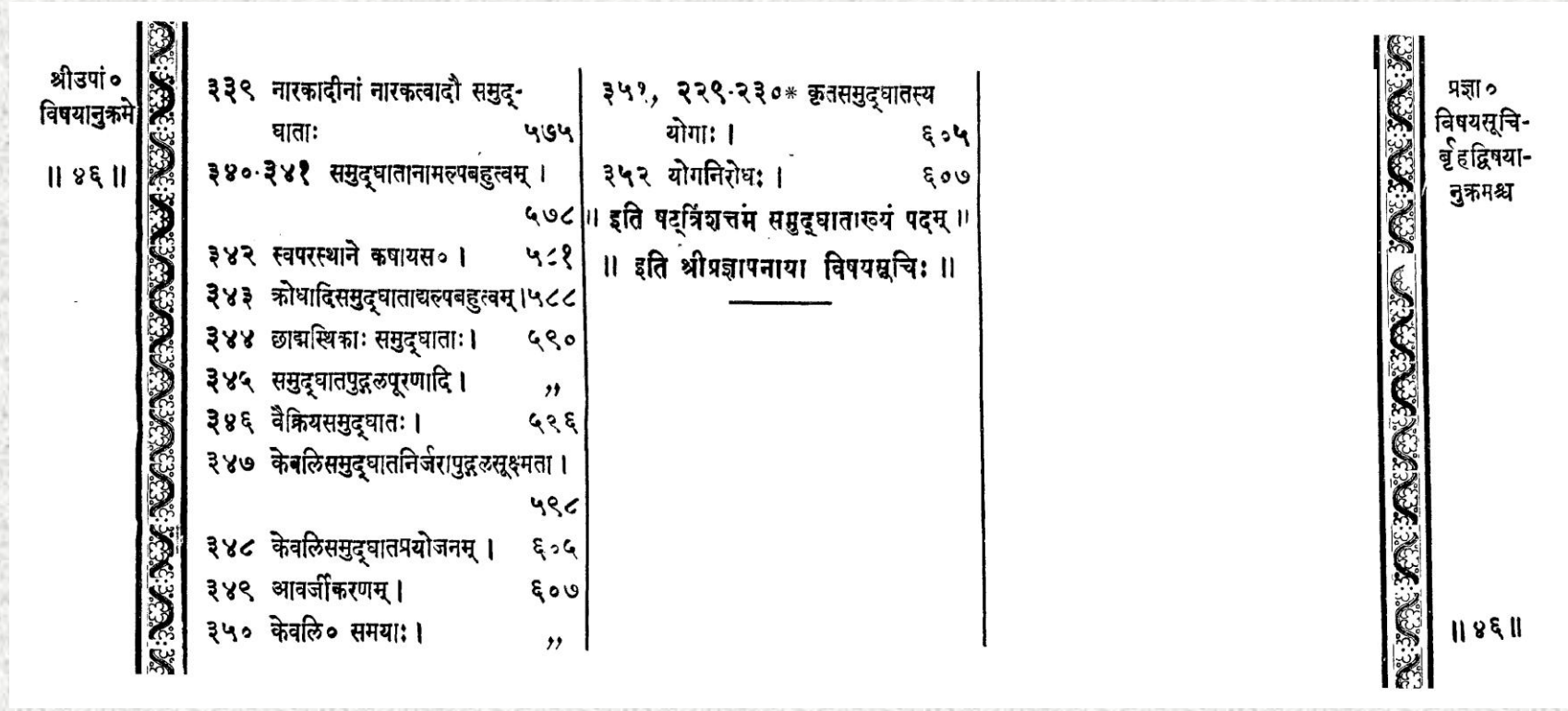
२८३ जीवनारकादीनां जीवनारकादिभ्यः क्रियाः । ४३९
२८४ क्रियासंवेधः । ४४३
२८५ क्रिया(२)णां सहभावविचारः । ४४६
२८६ हिंसादिविरमणहेतुः । ४४८
२८७ प्राणातिपातविरमणे कर्मप्रकृति-बन्धमानम् । ,,
२८८ विरतानां क्रियाभावः । ४५१
॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥
२८९, २१७* कर्मप्रकृतेर्भेदाः (८) । ४५२
२९० कर्मप्रकृतेर्बन्धः । ४५३
२९१ कर्मस्थानानि । ४५५
२९२ कर्मवेदना । ४५७
२९३ कर्मकर्मानुभावः । ४५८
२९४ कर्मप्रकृतिविचारः । ४६५
२९५ पंचविधज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिः । ४७५
२९६ एकेन्द्रियाणां कर्मस्थितिः । ४८५
२९७ द्वीन्द्रियादीनां कर्मस्थितिः । ४८८
२९८ ज्ञानावरणीयादिकर्मणां जघन्य-स्थितिबन्धः ४८८
२९९ ज्ञाना०उत्कृष्टस्थितिबन्धः । ४९०
॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृत्या-ख्यं पदम् ॥
३०० कर्मप्रकृतिबन्धबन्धनम् (८) ४९१
॥ इति कर्मबन्धाख्यं चतुर्विंशति-तमं पदम् ॥
३०१ कर्मबन्धवेदः । ४९४
इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदाख्यं पदम्
३०२ कर्मप्रकृतिवेदबन्धः । ४९५
इति षड्विंशतितमं वेदबन्धाख्यं पदम्
३०३ कर्मवेदवेदः । ४९७
इति वेदवेदाख्यं सप्तविंशतितमं पदम् ॥
३०४ नारकादीनां सचित्ताद्याहारादि । ४९८
३०५, २१८-२१९* असुरकुमारादीना-माहारादि । ४९९
३०६ पृथ्वीकायिकादीनामाहारादि । ५०५
३०७ द्वीन्द्रियाणामाहारादि । ५०७
३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियशरीराद्याहारः । ५०८
३०९ नारकाणामोजआहारादिः । ५१०
२२०* आहारपदाधिकाराः (१३) । ५११

प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४४ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४५ ॥

३१० जीवानामाहारानाहारादि । ५१२
३११ सलेश्यजीवानामाहारादि । ५१६
३१२ गत्यादिष्वाहारकत्वादिः । ५२०
॥ इत्यष्टाविंशतितममाहाराख्यं पदम् ॥
३१३ नारकादीनां सागारोपयोगादिभेदाः । ५२५
॥ इत्येकोनत्रिंशत्तममुपयोगाख्यं पदम् ॥
३१४ पश्यत्तामेदाः (९) (मतिज्ञानाज्ञानयोर्न) । ५२९
३१५ आकारादिज्ञानदर्शनपृथक्त्वम् । ५३१
॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥
३१६, २२१* संज्ञाभेदाः । ५३३
इत्येकत्रिंशत्तमं संज्ञाख्यं पदम् ॥
३१७, २२२* संयतः । ५३४
॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयमाख्यं पदम् ॥
३१८, २२३* अवधिज्ञानभेदौ । ५३६
३१९ अवधिज्ञानविषयः । ५४०
३२० अवधिज्ञानसंस्थानद्वारम् । ५४१
३२१ नैरयिकभवनपतिव्यन्तरज्योतिष्क-वैमानिकानामवधिः । ५४२
॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवध्याख्यं पदम् ॥
३२२, २२४-२२५* परिचारणा । ५४३
३२३ परिचारणा, आहारविषयमाभोगनम् । ५४४
३२४ परिचारणाविषयः । ५४७
३२५ परिचारणाभेदाः । ५४८
३२६ शीतपरिचारणा । ,,
३२७ शुक्रपरिचारणा । ,,
३२८ स्पर्शपरिचारणा । ५४८
३२९ कायपरिचारणा । ,,
॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥
३३०, २२६-२२७* वेदनाभेदाः । ५५३
३३१, ३३२ वेदनाभेदौ । ५५६
॥ इति वेदनाख्यं पञ्चत्रिंशत्तमं पदम् ॥
२२८* वेदनादिसमुद्घाताः । ५५९
३३३ समुद्घातभेदाः । ५६१
३३४ नैरयिकेषु समुद्घाताः । ५६२
३३५ नैरयिकेषु वेदनासमुद्घाताः । ५६५
३३६ स्वपरस्थाने वेदनासमुद्घाताः । ६७५
३३७ स्व० कषायस्य समुद्घाताः । ५६९
३३८ नारकादेर्नारकत्वादौ मारणान्तिकाद्याः समुद्घाताः । ५७३

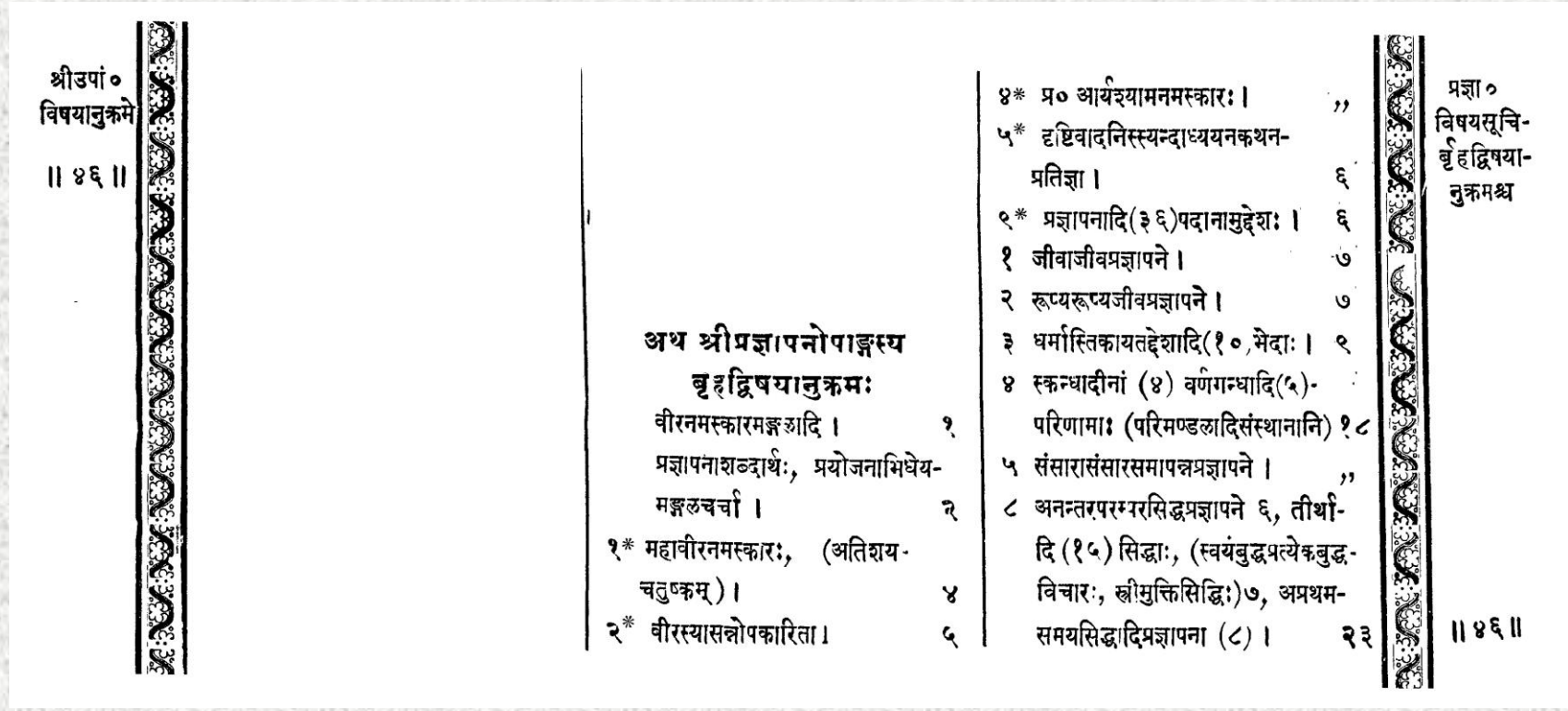
प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४५ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४६ ॥

३३९ नारकादीनां नारकत्वादौ समुद्घाताः ५७५
३४०-३४१ समुद्घातानामल्पबहुत्वम् । ५७८
३४२ स्वपरस्थाने कषायस० । ५८१
३४३ क्रोधादिसमुद्घाताद्यल्पबहुत्वम् । ५८८
३४४ छाद्मस्थिकाः समुद्घाताः । ५९०
३४५ समुद्घातपुद्गलपूरणादि । ,,
३४६ वैक्रियसमुद्घातः । ५९६
३४७ केवलिसमुद्घातनिर्जरापुद्गलसूक्ष्मता । ५९८
३४८ केवलिसमुद्घातप्रयोजनम् । ६०५
३४९ आवर्जीकरणम् । ६०७
३५० केवलि० समयाः । ,,
३५१, २२९-२३०* कृतसमुद्घातस्य योगाः । ६०५
३५२ योगनिरोधः । ६०७
॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्घातारव्यं पदम् ॥
॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया विषयसूचिः ॥

प्रज्ञा० विषयसूचि-बृहद्विषया-नुक्रमश्च ॥ ४६ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे

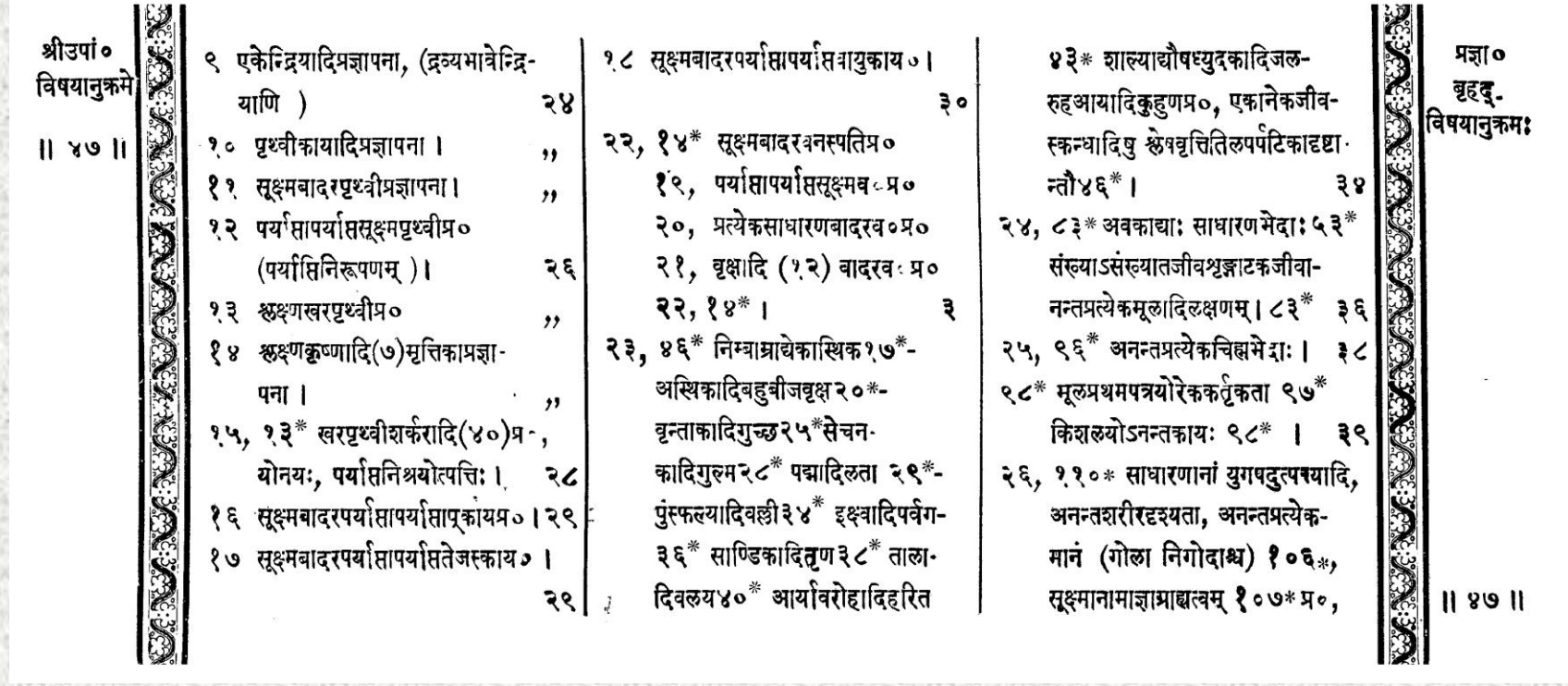
॥ ४६ ॥

अथ श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गस्य बृहद्विषयानुक्रमः

वीरनमस्कारमङ्गलादि । १
प्रज्ञापनाशब्दार्थः, प्रयोजनाभिधेय-मङ्गलचर्चा । २
१* महावीरनमस्कारः, (अतिशय-चतुष्कम्) । ४
२* वीरस्यासन्नोपकारिता । ५
४* प्र० आर्यश्यामनमस्कारः । ,,
५* दृष्टिवादनिस्स्यन्दाध्ययनकथन-प्रतिज्ञा । ६
९* प्रज्ञापनादि(३६)पदानामुद्देशः । ६
१ जीवाजीवप्रज्ञापने । ७
२ रूप्यरूप्यजीवप्रज्ञापने । ७
३ धर्मास्तिकायतद्देशादि(१०,भेदाः । ९
४ स्कन्धादीनां (४) वर्णगन्धादि(५)-परिणामाः (परिमण्डलादिसंस्थानानि) १८
५ संसारासंसारसमापन्नप्रज्ञापने । ,,
८ अनन्तरपरम्परसिद्धप्रज्ञापने ६, तीर्था-दि (१५) सिद्धाः, (स्वयंबुद्धप्रत्येकबुद्ध-विचारः, स्त्रीमुक्तिसिद्धिः)७, अप्रथम-समयसिद्धादिप्रज्ञापना (८) । २३

प्रज्ञा० विषयसूचि-बृहद्विषया-नुक्रमश्च

॥ ४६ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४७ ॥

९ एकेन्द्रियादिप्रज्ञापना, (द्रव्यभावेन्द्रियाणि) २४
१० पृथ्वीकायादिप्रज्ञापना । ,,
११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीप्रज्ञापना। ,,
१२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वीप्र० (पर्याप्तिनिरूपणम्)। २६
१३ श्लक्ष्णखरपृथ्वीप्र० ,,
१४ श्लक्ष्णकृष्णादि(७)मृत्तिकाप्रज्ञापना । ,,
१५, १३* खरपृथ्वीशर्करादि(४०)प्र-, योनयः, पर्याप्तनिश्रयोत्पत्तिः । २८
१६ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्ताप्कायप्र० । २९
१७ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्ततेजस्काय० । २९
१८ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तवायुकाय० । ३०
२२, १४* सूक्ष्मबादरवनस्पतिप्र०
१९, पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्मव-प्र०
२०, प्रत्येकसाधारणबादरव०प्र०
२१, वृक्षादि (१२) बादरव-प्र०
२२, १४* । ३
२३, ४६* निम्बाम्राद्येकास्थिक१७*-अस्थिकादिबहुबीजवृक्ष२०*-वृन्ताकादिगुच्छ२५*सेचनकादिगुल्म२८* पद्मादिलता २९*-पुंस्फल्यादिवल्ली३४* इक्ष्वादिपर्वग-३६* साण्डिकादितृण३८* तालादिवलय४०* आर्यावरोहादिहरित ४३* शाल्याद्यौषध्युदकादिजलरुहआयादिकुहुणप्र०, एकानेकजीवस्कन्धादिषु श्लेषवृत्तितिलपर्पटिकादृष्टान्तौ४६* । ३४
२४, ८३* अवकाद्याः साधारणभेदाः ५३* संख्याऽसंख्यातजीवशृङ्गाटकजीवानन्तप्रत्येकमूलादिलक्षणम् । ८३* ३६
२५, ९६* अनन्तप्रत्येकचिह्नभेदाः । ३८
९८* मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृकता ९७* किशलयोऽनन्तकायः ९८* । ३९
२६, ११०* साधारणानां युगपदुत्पत्त्यादि, अनन्तशरीरदृश्यता, अनन्तप्रत्येकमानं (गोला निगोदाश्च) १०६*, सूक्ष्मानामाज्ञाग्राह्यत्वम् १०७* प्र०, ॥ ४७ ॥

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४८ ॥

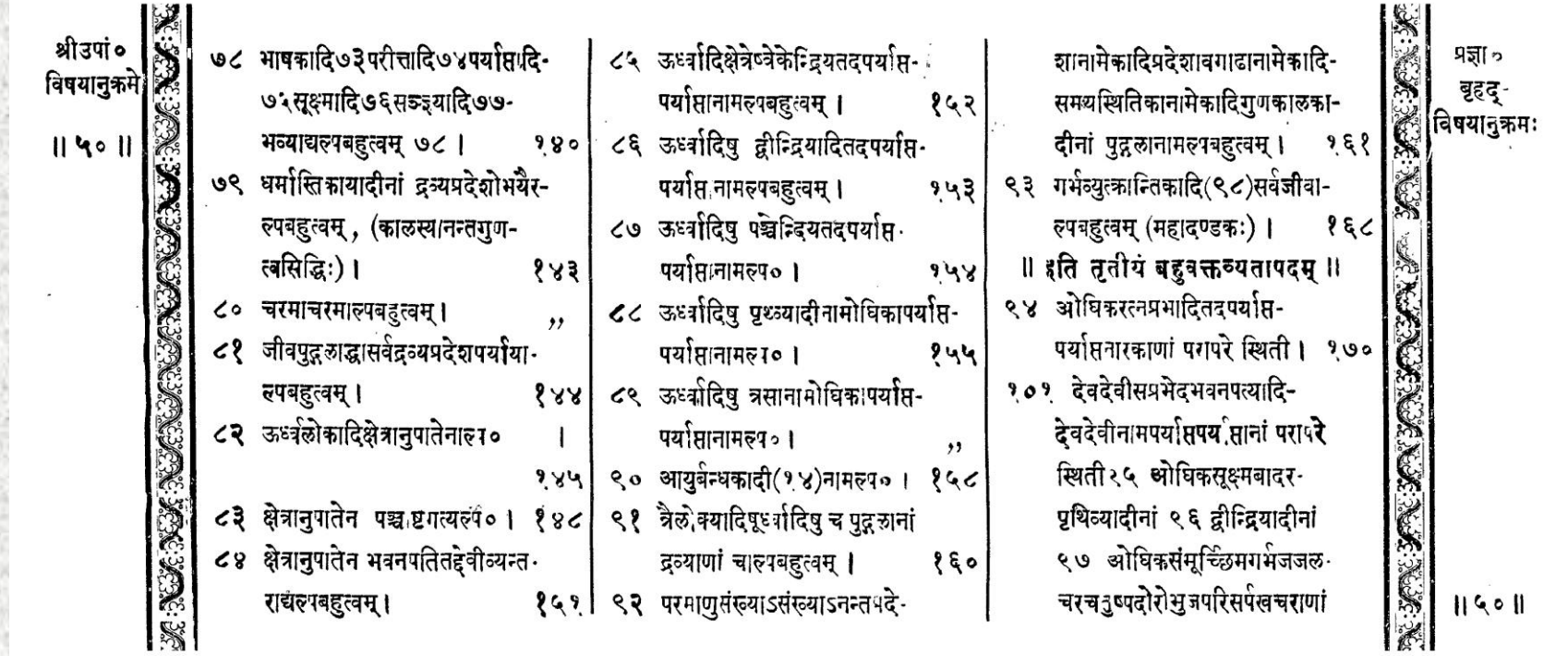
पर्याप्तापर्याप्तवनस्पतिसंख्या, कन्दादीनां त्वगादिष्वनियतादियोनिः ११०* । ४१
२७ पुताकुम्ग्यादिद्वीन्द्रियप्रज्ञापना (योनिकुलयोर्भेदः) ४१
२८ औपयिकादित्रीन्द्रियप्र० । ४२
२९, १११* अन्धिकादिचतुरिन्द्रियप्र० । ,,
३० नैरयिकादिपञ्चेन्द्रियप्र० । ४३
३१ रत्नप्रभादिनारकप्र० । ,,
३२ जलचरादितिर्यक्प्र० । ,,
३३ मत्स्यादि(५) श्लक्ष्णमत्स्याद्यस्थिकच्छपादिदिल्यादिग्राहसोण्डादिमकरादिजलचरप्र० ४४
३४ अश्वाद्येकखुरोष्ट्रादिद्विखुरहस्त्यादिगण्डीपदसिंहादिसनखचतुष्पदप्र० ।४५
३५ आशीविषादिदर्वीकरदिव्याकादिमुकुल्यद्यजगराऽऽशालिकमहोरगोरःपरिसर्पनकुलादिभुजपरिसर्पप्र० । ४६
३६, ११२* वल्गुल्यादिचर्मपक्षिढङ्काादिरोमपक्षिसमुद्गविततपक्षिप्र०, (कुलकोटिसंग्रहः) ११२* । ५०
३७, १३३* संमूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थानकर्माकर्मभूम्यन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्रार्याः, (निसर्गादिभेदाः, निश्शङ्कितादय आचाराः, परिहारविशुद्धिः) । ६८
३८ सप्रभेदभवनवास्यादिदेवप्रज्ञापना । ७१
॥ इति प्रथमं प्रज्ञापनापदम् ॥
३९ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तपृथिव्यप्तेजसां स्थानानि (शिष्यप्रत्ययाय गौतमप्रश्न., तिर्यग्लोकतट्टं च) । ७७
४० बादरादिवायुवनस्पतिस्थानानि । ७८
४१ द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियस्थानानि । ८१
४२ नारकाणां स्थानम् (सवर्णनम्)। ,,
४३, १३७* रत्नप्रभादिनारकस्थानानि सवर्णनानि । ८४
४४ पञ्चेन्द्रियतिर्यक्स्थानानि । ,,
४५ मनुष्यस्थानानि । ,,

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ४८ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४९ ॥

४६, १४९* सवर्णनभवनपत्यादिदक्षिणोत्तरतद्भेदस्थानानि। ९५
४७ सवर्णनव्यन्तरस्थानानि। ९७
४९, १५४* पिशाचतद्भेदस्थानानि ४८, १५१,* अनपर्णिकादिस्थानानि ४९, १५४*। ९८
५० ज्योतिष्कस्थानानि। ९९
५१ वैमानिकस्थानानि। १००
५२ सौधर्मदेवस्थानतदिन्द्रवर्णनम्। १०१
५३, १५८* ईशानादिदेवस्थानवर्णनं, सामानिकात्मरक्षकविमानसंख्या च। १०६
५४, १७९* सिद्धानां स्थानं तन्नामस्वरूपे, अप्रतिघातसंस्थानावगाहनास्पर्शलक्षणसुखपर्यायाश्च। ११३
॥ इति द्वितीयं स्थानपदम् ॥
१८१* दिगादीनि द्वाराणि (२७)। ११४
५५ जीवानां दिगनुपातेनाल्पबहुत्वम्। ११५
५६ पृथिव्यप्तेजोवाय्वादीनां सिद्धान्तानां दिगनुपातेनाल्पबहुत्वम्। ११९
५७ नारकतिर्यग्देवसिद्धानां पञ्चाष्टगतिरूपेणाल्पबहुत्वम्। १२०
५८ सैकादी(७)न्द्रियाल्पबहुत्वं, ओघपर्याप्तापर्याप्तविशेषितं च। १२२
५९ सकायपृथ्वीकायाद्य(८)ल्पबहुत्वम्। १२४
६० सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादितत्पर्याप्तापर्याप्तालपबहुत्वम्। १२६
६१ बादरबादरपृथ्व्याद्यल्पबहुत्वम्। १२९
६२ सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादिबादरबादरपृथ्व्याद्यल्पबहुत्वम्। १३४
६४ सयोगमनोयोग्या(५)द्यल्पबहुत्वम् ६३, सद्वेदस्त्रीवेदाद्यल्पबहुत्वम् ६४। १३५
६६ सकषाय्यादि६५सलेश्याद्यल्पबहुत्वम् ६६। १३६
६८ सम्यग्दृष्ट्यादि ६७ आभिनिबोधिकज्ञान्याद्यल्पबहुत्वम् ६८। १३७
७२ चक्षुर्दर्शन्यादि६९ संयतादि७०साकारोपयुक्तादि७१ आहारकाद्यल्पबहुत्वम् ७२। १३८

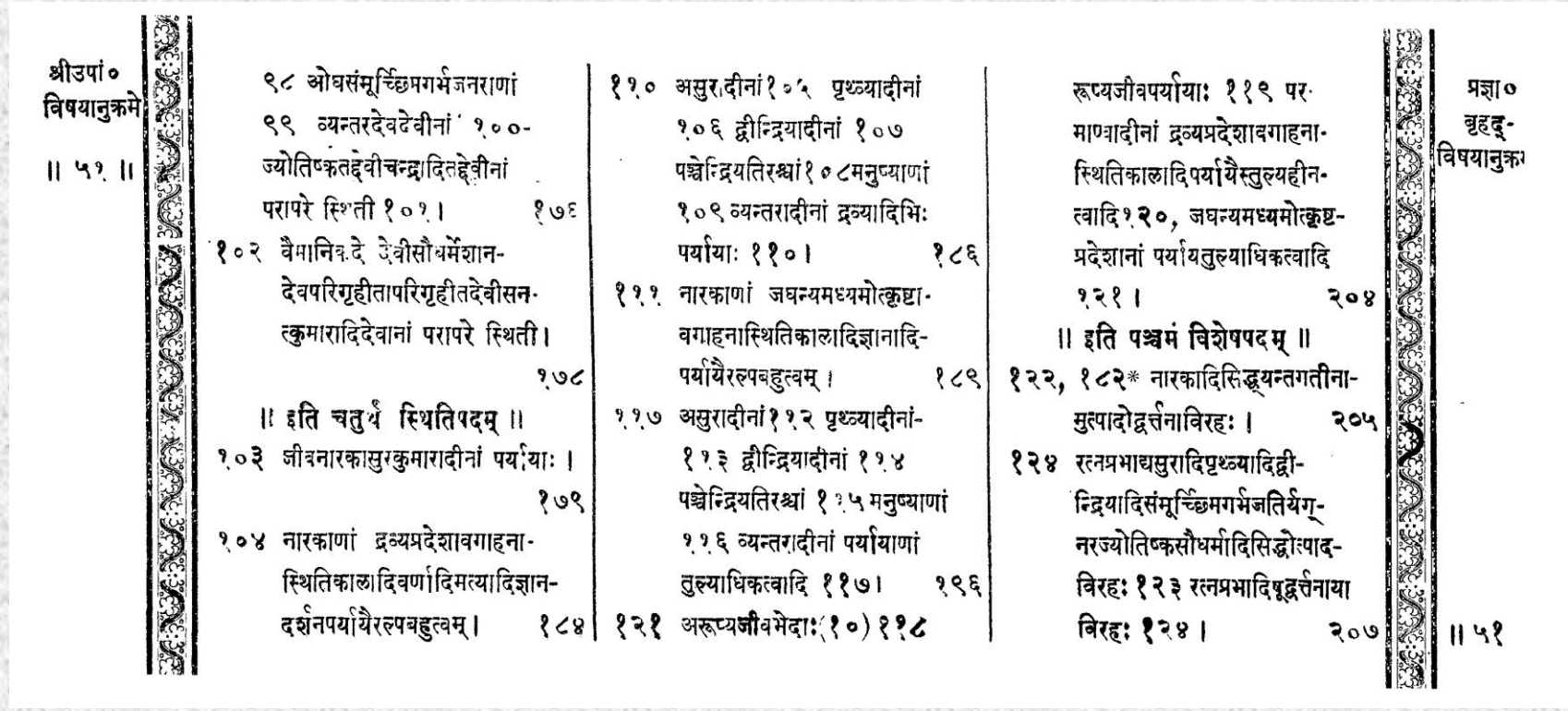
प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ४९ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५० ॥

७८ भाषकादि७३परीत्तादि७४पर्याप्तादि-७५सूक्ष्मादि७६सञ्ज्ञ्यादि७७-भव्याद्यल्पबहुत्वम् ७८ । १४०
७९ धर्मास्तिकायादीनां द्रव्यप्रदेशोभयैर-ल्पबहुत्वम्, (कालस्यानन्तगुण-त्वसिद्धिः)। १४३
८० चरमाचरमाल्पबहुत्वम्। ,,
८१ जीवपुद्गलाद्धासर्वद्रव्यप्रदेशपर्याया-ल्पबहुत्वम्। १४४
८२ ऊर्ध्वलोकादिक्षेत्रानुपातेनाल्प० । १४५
८३ क्षेत्रानुपातेन पञ्चाष्टगत्यल्प० । १४८
८४ क्षेत्रानुपातेन भवनपतिदेवीव्यन्त-राद्यल्पबहुत्वम्। १५१
८५ ऊर्ध्वादिक्षेत्रेष्वेकेन्द्रियतदपर्याप्त-पर्याप्तानामल्पबहुत्वम्। १५२
८६ ऊर्ध्वादिषु द्वीन्द्रियादितदपर्याप्त-पर्याप्तानामल्पबहुत्वम्। १५३
८७ ऊर्ध्वादिषु पञ्चेन्द्रियतदपर्याप्त-पर्याप्तानामल्प०। १५४
८८ ऊर्ध्वादिषु पृथ्व्यादीनामोघिकापर्याप्त-पर्याप्तानामल्प०। १५५
८९ ऊर्ध्वादिषु त्रसानामोघिकापर्याप्त-पर्याप्तानामल्प०। ,,
९० आयुर्बन्धकादी(१४)नामल्प०। १५८
९१ त्रैलोक्यादिषूर्ध्वादिषु च पुद्गलानां द्रव्याणां चाल्पबहुत्वम्। १६०
९२ परमाणुसंख्याऽसंख्याऽनन्तप्रदे-शानामेकादिप्रदेशावगाढानामेकादि-समयस्थितिकानामेकादिगुणकालका-दीनां पुद्गलानामल्पबहुत्वम्। १६१
९३ गर्भव्युत्क्रान्तिकादि(९८)सर्वजीवा-ल्पबहुत्वम् (महादण्डकः)। १६८
॥ इति तृतीयं बहुवक्तव्यतापदम् ॥
९४ ओघिकरत्नप्रभादितदपर्याप्त-पर्याप्तनारकाणां परापरे स्थिती। १७०
१०१ देवदेवीसप्रभेदभवनपत्यादि-देवदेवीनामपर्याप्तपर्याप्तानां परापरे स्थिती २५ ओघिकसूक्ष्मबादर-पृथिव्यादीनां ९६ द्वीन्द्रियादीनां ९७ ओघिकसंमूर्च्छिमगर्भजजलचरचतुष्पदोरोभुजपरिसर्पखचराणां

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ५० ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५१ ॥

९८ ओघसंमूर्च्छिमगर्भजनराणां ९९ व्यन्तरदेवदेवीनां १००-ज्योतिष्कतद्देवीचन्द्रादितद्देवीनां परापरे स्थिती १०१। १७६

१०२ वैमानिकदे देवीसौधर्मेशान-देवपरिगृहीतापरिगृहीतदेवीसनत्कुमारादिदेवानां परापरे स्थिती। १७८

॥ इति चतुर्थं स्थितिपदम् ॥

१०३ जीवनारकासुरकुमारादीनां पर्याया: । १७९

१०४ नारकाणां द्रव्यप्रदेशावगाहना-स्थितिकालादिवर्णादिमत्यादिज्ञान-दर्शनपर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८४

११० असुरादीनां १०५ पृथ्व्यादीनां १०६ द्वीन्द्रियादीनां १०७ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १०८ मनुष्याणां १०९ व्यन्तरादीनां द्रव्यादिभि: पर्याया: ११०। १८६

१११ नारकाणां जघन्यमध्यमोत्कृष्टा-वगाहनास्थितिकालादिज्ञानादि-पर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८९

११७ असुरादीनां ११२ पृथ्व्यादीनां-११३ द्वीन्द्रियादीनां ११४ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां ११५ मनुष्याणां ११६ व्यन्तरादीनां पर्यायाणां तुल्याधिकत्वादि ११७। १९६

१२१ अरूप्यजीवभेदा:(१०) ११८

रूप्यजीवपर्याया: ११९ पर-माण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाहना-स्थितिकालादिपर्यायैस्तुल्यहीन-त्वादि १२०, जघन्यमध्यमोत्कृष्ट-प्रदेशानां पर्यायतुल्याधिकत्वादि १२१। २०४

॥ इति पञ्चमं विशेषपदम् ॥

१२२, १८२* नारकादिसिद्धयन्तगतीना-मुत्पादोद्वर्त्तनाविरह: । २०५

१२४ रत्नप्रभाद्यसुरादिपृथ्व्यादिद्वी-न्द्रियादिसंमूर्च्छिमगर्भजतिर्यग्-नरज्योतिष्कसौधर्मादिसिद्धोत्पाद-विरह: १२३ रत्नप्रभादिषूद्वर्त्तनाया विरह: १२४। २०७

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५२ ॥

१२६ नारकादीनां सान्तरनिरन्तरमुत्पत्तिः १२५ तथोद्वर्त्तना १२६। २०८

१२८ उत्पाते नारकरत्नप्रभाद्यसुरादिसिद्धान्तानामेकसमयसंख्या १२७, उद्वर्त्तनायां संख्या १२८। २०९

१३७, १८४* सप्रभेदनारकाणां १२९, १८४* असुरादीनां १३० पृथ्व्यादीनां १३१ द्वीन्द्रियादीनां १३२ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १३३ मनुष्याणां १३४ व्यन्तराणां १३५ ज्योतिष्काणां १३६ सप्रभेदवैमानिकानां चागतिविचारः १३७। २१४

१४३ नारकाणां १३८ असुरादीनां १३९ पृथ्व्यादीनां १४० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १४१ मनुष्याणां १४२ व्यन्तरादीनां च गतिः १४३। २१६

१४४ नारकादीनां परभवायुर्बन्धकालः। २१७

१४५ जातिनामनिधत्तायुष्कादीनामाकर्षाः। २१८

॥ इति षष्ठं व्युत्क्रान्तिपदम् ॥

१४६ नारकासुरादिपृथिव्यादिमनुष्यव्यन्तरज्योतिष्कसप्रभेदवैमानिकामुच्छ्वासान्तरम्। २२१

॥ इति सप्तममुच्छ्वासपदम् ॥

१४७ आहारादि(१०)सञ्ज्ञा, नारकादीनां १४७ बाहुल्यसन्ततिभ्यां सञ्ज्ञोपयुक्तविचारः, गतिभेदेन सञ्ज्ञाऽल्पबहुत्वं च। २२४

॥ इत्यष्टमं सञ्ज्ञापदम् ॥

१५० शीतोष्णमिश्रा योनयः १४९ नारकासुरपृथ्वीसंमूर्च्छिमगर्भजतिर्यग्मनुष्यव्यन्तरादीनां योनिः शीतयोन्याद्यल्पबहुत्वं च १५०। २२६

१५१ नारकादीनां सचित्तादियोनिः। २२७

१५२ नारकादीनां संवृतादियोनिः। ,,

१५३ कूर्मोन्नतादियोनिविचारः। २२८

॥ इति नवमं योनिपदम् ॥

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः

॥ ५२ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे

॥ ५३ ॥

१५४ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमत्वादि-विचारः। २३०

१५६ रत्नप्रभादीनामचरमचरमतदन्त-प्रदेशानां द्रव्यप्रदेशोभयार्थैरल्प-बहुत्वं १५५ अलोकस्य लोका-लोकयोरचरमचरमाद्यल्पबहुत्वम्। १५६। २३२

१५८, १९०* परमाणोश्चरमाचरमा-वक्तव्यतादिभङ्गाः (२६) १५७, द्विप्रदेशादीनां चरमत्वादि १९०* १५८। २४२

१५९ संस्थानततत्संख्याप्रदेशमानावगाहाः, तच्चरमत्वादि च। २४४

१६०, १९१* जीवनारकादीनां गति-स्थितिभवादिः (११) चरमा-चरमत्वं च। २४६

॥ इति दशमं चरमाचरमपदम् ॥

१६१ अवधारिण्याः भाषायाः सत्यादिता। २४८

१६३ गोमृगादिरुतयाज्ञापन्यादिभाषा २५२

१६३ बालादीनां भाषाऽऽहारयोर-ज्ञानेऽपि प्रवृत्तिः। २५३

१६४ एकबहुवचनस्त्रीपुंनपुंसकादिभाषा। २५५

१६५, १९७* भाषाया आदिप्रवह-संस्थानान्ताः, पर्याप्तापर्याप्तभेदाः, सत्यमृषामिश्रव्यवहारभाषाभेदाः (१०-१०-१०-१२)। २५९

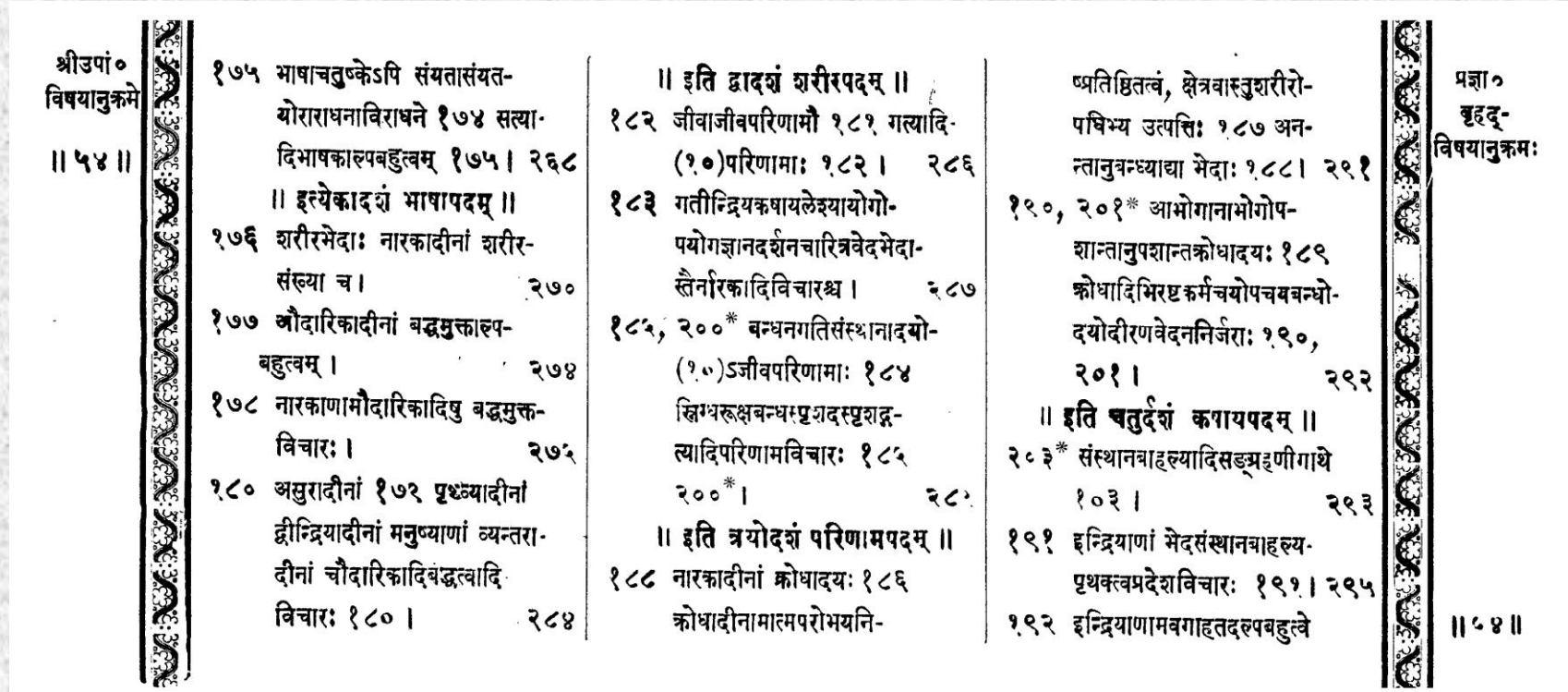
१६७ जीवादीनां भाषकाभाषकविचारः १६६ जीवादीनां सत्यामृषादि-भाषत्वम्। १६७। २६०

१६९, १९८* भाषाया द्रव्यावगाह-स्थितिवर्णादिस्वष्टावगाढादि-विचारः १६८, १९८*, सान्तर-निरन्तरभिन्नाभिन्नग्रहणविचारः १६९। २६६

१७३ खण्डप्रतराद्या(५)भेदाः, तद-रूपत्वादि १७०, नारकादीनां स्थितादिभाषापुद्गलग्रहण १७१ सत्यादितया ग्रहणनिसर्गौ १७२ एकद्विवचनादि(१६)वचनानि १७३। २६७

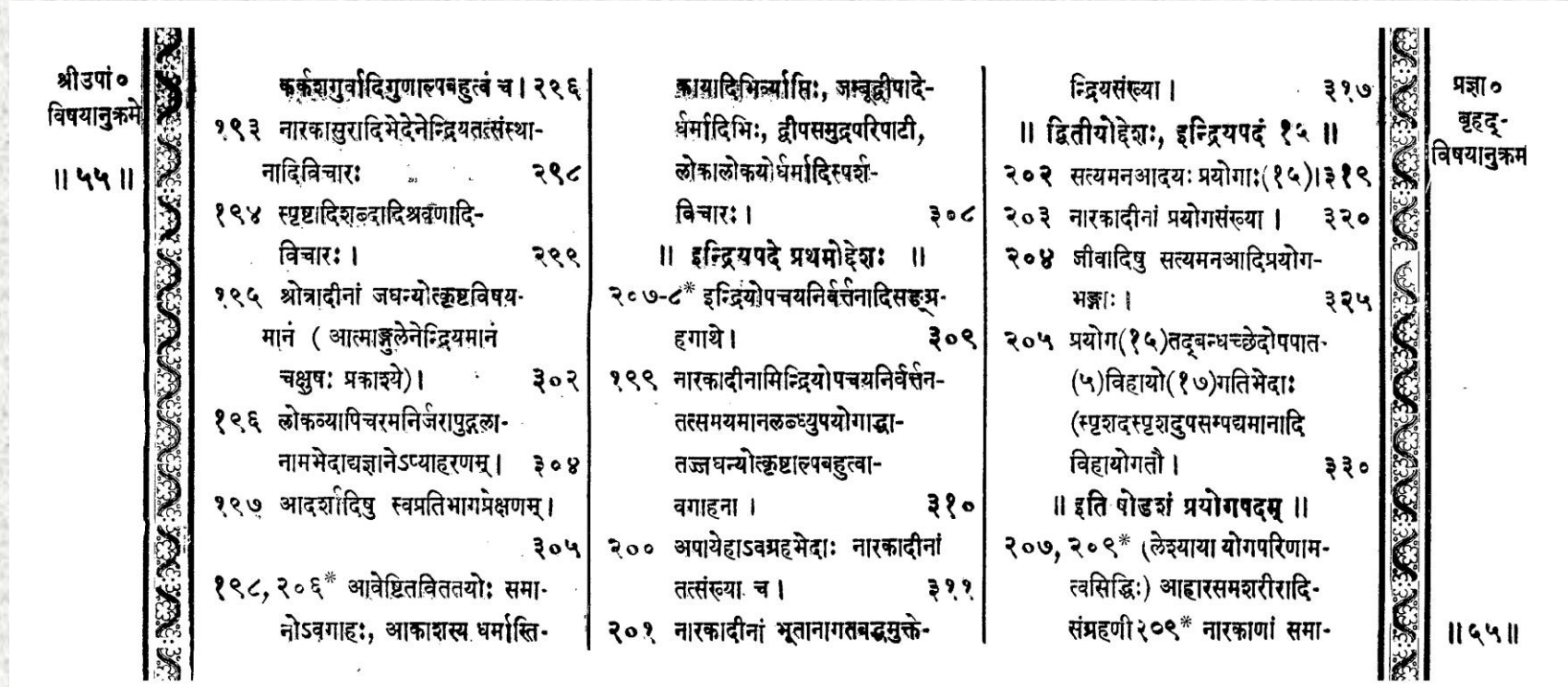
प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः

॥ ५३ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५४ ॥

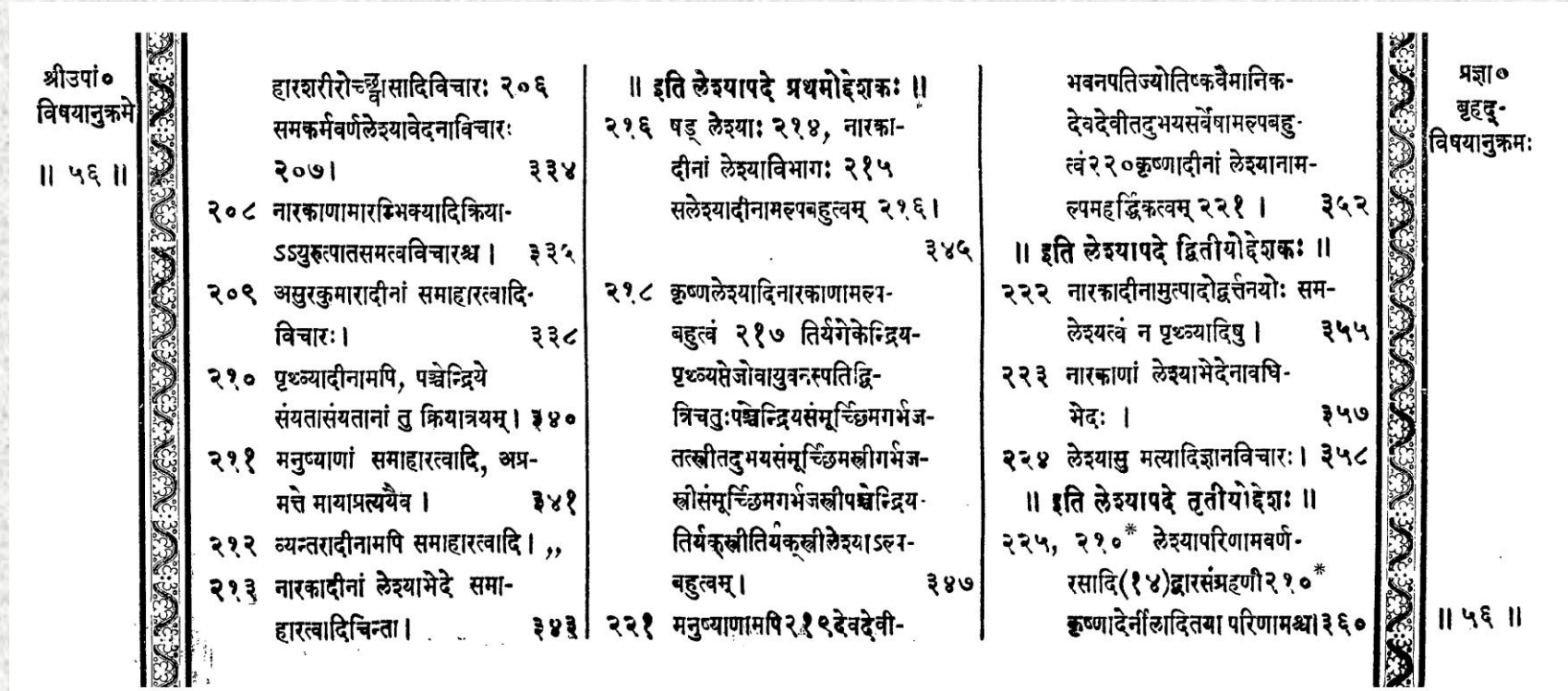
१७५ भाषाचतुष्केऽपि संयतासंयत-योराराधनाविराधने १७४ सत्या-दिभाषकाल्पबहुत्वम् १७५। २६८
॥ इत्येकादशं भाषापदम् ॥
१७६ शरीरभेदाः नारकादीनां शरीर-संख्या च। २७०
१७७ औदारिकादीनां बद्धमुक्ताल्प-बहुत्वम्। २७४
१७८ नारकाणामौदारिकादिषु बद्धमुक्त-विचारः। २७५
१८० असुरादीनां १७९ पृथ्व्यादीनां द्वीन्द्रियादीनां मनुष्याणां व्यन्तरा-दीनां चौदारिकादिबद्धत्वादि विचारः १८०। २८४
॥ इति द्वादशं शरीरपदम् ॥
१८२ जीवाजीवपरिणामौ १८१ गत्यादि-(१०)परिणामाः १८२। २८६
१८३ गतीन्द्रियकषायलेश्यायोगो-पयोगज्ञानदर्शनचारित्रवेदभेदा-स्तैर्नारकादिविचारश्च। २८७
१८४, २००* बन्धनगतिसंस्थानादयो-(१०)ऽजीवपरिणामाः १८४ स्निग्धरूक्षबन्धस्पृशदस्पृशद्ब-त्यादिपरिणामविचारः १८५ २००*। २८९
॥ इति त्रयोदशं परिणामपदम् ॥
१८८ नारकादीनां क्रोधादयः १८६ क्रोधादीनामात्मपरोभयनि-ष्प्रतिष्ठितत्वं, क्षेत्रवास्तुशरीरो-पधिभ्य उत्पत्तिः १८७ अन-न्तानुबन्ध्याद्या भेदाः १८८। २९१
१९०, २०१* आभोगानाभोगोप-शान्तानुपशान्तक्रोधादयः १८९ क्रोधादिभिरष्टकर्मचयोपचयबन्धो-दयोदीरणवेदननिर्जराः १९०, २०१। २९२
॥ इति चतुर्दशं कषायपदम् ॥
२०३* संस्थानबाहल्यादिसङ्ग्रहणीगाथे १०३। २९३
१९१ इन्द्रियाणां भेदसंस्थानबाहल्य-पृथक्त्वप्रदेशविचारः १९१। २९५
१९२ इन्द्रियाणामवगाहतदल्पबहुत्वे



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५५ ॥

कर्कशगुर्वादिगुणाल्पबहुत्वं च। २९६
१९३ नारकासुरादिभेदेनेन्द्रियतत्संस्थानादिविचारः २९८
१९४ स्पृष्टादिशब्दादिश्रवणादिविचारः। २९९
१९५ श्रोत्रादीनां जघन्योत्कृष्टविषयमानं (आत्माङ्गुलेनेन्द्रियमानं चक्षुषः प्रकाश्ये)। ३०२
१९६ लोकव्यापिचरमनिर्जरापुद्गलानामभेदाद्यज्ञानेऽप्याहरणम्। ३०४
१९७ आदर्शादिषु स्वप्रतिभागप्रेक्षणम्। ३०५
१९८, २०६* आवेष्टितविततयोः समानोऽवगाहः, आकाशस्य धर्मास्तिकायादिभिर्व्याप्तिः, जम्बूद्वीपादेर्धर्मादिभिः, द्वीपसमुद्रपरिपाटी, लोकालोकयोर्धर्मादिस्पर्शविचारः। ३०८
॥ इन्द्रियपदे प्रथमोद्देशः ॥
२०७-८* इन्द्रियोपचयनिर्वर्त्तनादिसङ्ग्रहगाथे। ३०९
१९९ नारकादीनामिन्द्रियोपचयनिर्वर्त्तनतत्समयमानलब्ध्युपयोगाद्वातज्जघन्योत्कृष्टाल्पबहुत्ववगाहना। ३१०
२०० अपायेहाऽवग्रहभेदाः नारकादीनां तत्संख्या च। ३११
२०१ नारकादीनां भूतानागतबद्धमुक्तेन्द्रियसंख्या। ३१७
॥ द्वितीयोद्देशः, इन्द्रियपदं १५ ॥
२०२ सत्यमनआदयः प्रयोगाः(१५)। ३१९
२०३ नारकादीनां प्रयोगसंख्या। ३२०
२०४ जीवादिषु सत्यमनआदिप्रयोगभङ्गाः। ३२५
२०५ प्रयोग(१५)तद्बन्धच्छेदोपपात(५)विहायो(१७)गतिभेदाः (स्पृशदस्पृशदुपसम्पद्यमानादि विहायोगतौ। ३३०
॥ इति षोडशं प्रयोगपदम् ॥
२०७, २०९* (लेश्याया योगपरिणामत्वसिद्धिः) आहारसमशरीरादिसंग्रहणी २०९* नारकाणां समा-

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रम ॥ ५५ ॥

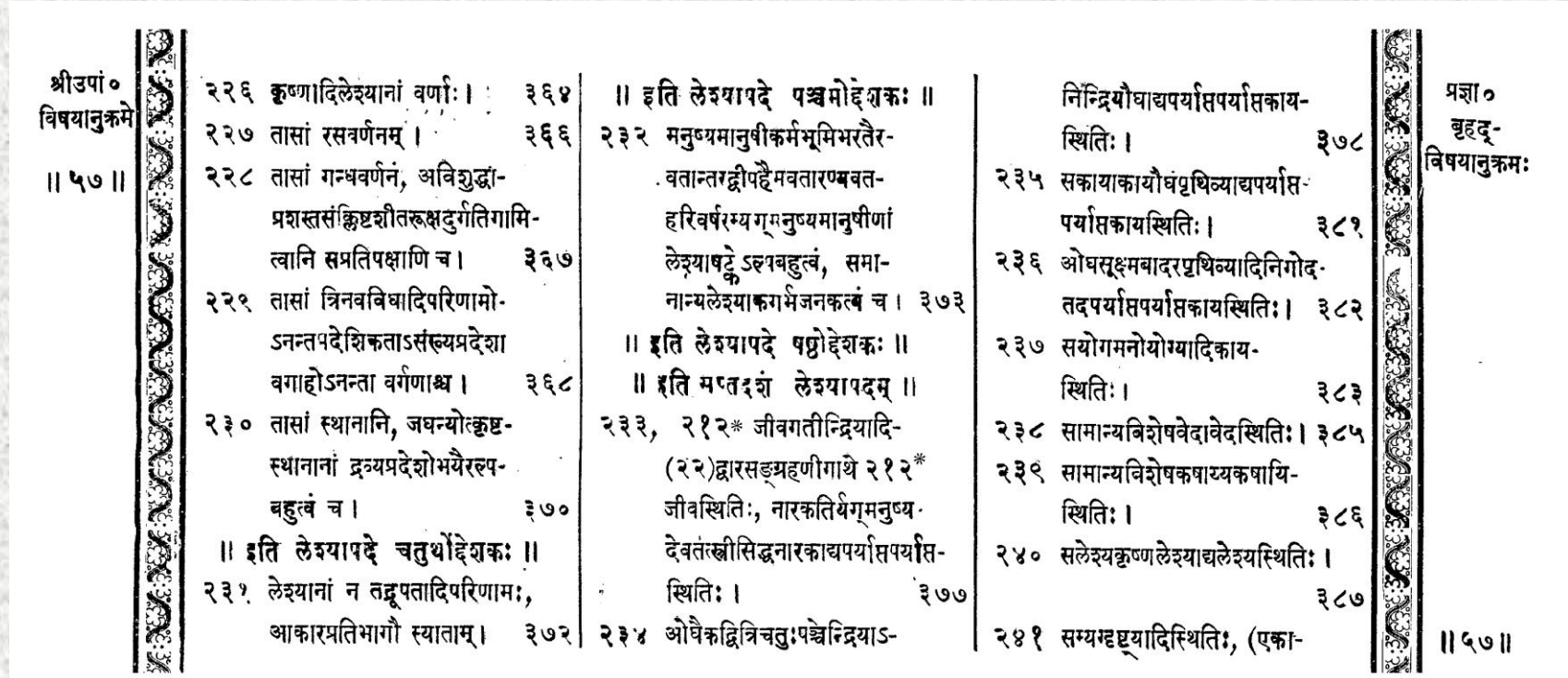


श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५६ ॥

हारशरीरोच्छ्वासादिविचारः २०६ समकर्मवर्णलेश्यावेदनाविचारः २०७। ३३४
२०८ नारकाणामारम्भिक्यादिक्रिया-ऽऽयुरुत्पातसमत्वविचारश्च। ३३५
२०९ असुरकुमारादीनां समाहारत्वादि-विचारः। ३३८
२१० पृथ्व्यादीनामपि, पञ्चेन्द्रिये संयतासंयतानां तु क्रियात्रयम्। ३४०
२११ मनुष्याणां समाहारत्वादि, अप्रमत्ते मायाप्रत्ययैव। ३४१
२१२ व्यन्तरादीनामपि समाहारत्वादि। ,,
२१३ नारकादीनां लेश्याभेदे समाहारत्वादिचिन्ता। ३४३
॥ इति लेश्यापदे प्रथमोद्देशकः ॥
२१६ षड् लेश्याः २१४, नारकादीनां लेश्याविभागः २१५ सलेश्यादीनामल्पबहुत्वम् २१६। ३४५
२१८ कृष्णलेश्यादिनारकाणामल्पबहुत्वं २१७ तिर्यगेकेन्द्रियपृथ्व्यप्तेजोवायुवनस्पतिद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसंमूर्च्छिमगर्भजतत्स्त्रीतदुभयसंमूर्च्छिमस्त्रीगर्भजस्त्रीसंमूर्च्छिमगर्भजस्त्रीपञ्चेन्द्रियतिर्यक्स्त्रीतिर्यक्स्त्रीलेश्याऽल्पबहुत्वम्। ३४७
२२१ मनुष्याणामपि २१९ देवदेवी-भवनपतिज्योतिष्कवैमानिकदेवदेवीतदुभयसर्वेषामल्पबहुत्वं २२० कृष्णादीनां लेश्यानामल्पमहर्द्धिकत्वम् २२१। ३५२
॥ इति लेश्यापदे द्वितीयोद्देशकः ॥
२२२ नारकादीनामुत्पादोद्वर्त्तनयोः समलेश्यत्वं न पृथ्व्यादिषु। ३५५
२२३ नारकाणां लेश्याभेदेनावधिभेदः। ३५७
२२४ लेश्यासु मत्यादिज्ञानविचारः। ३५८
॥ इति लेश्यापदे तृतीयोद्देशः ॥
२२५, २१०* लेश्यापरिणामवर्णरसादि(१४)द्वारसंग्रहणी २१०* कृष्णादेर्नीलादितया परिणामश्च ३६०

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः

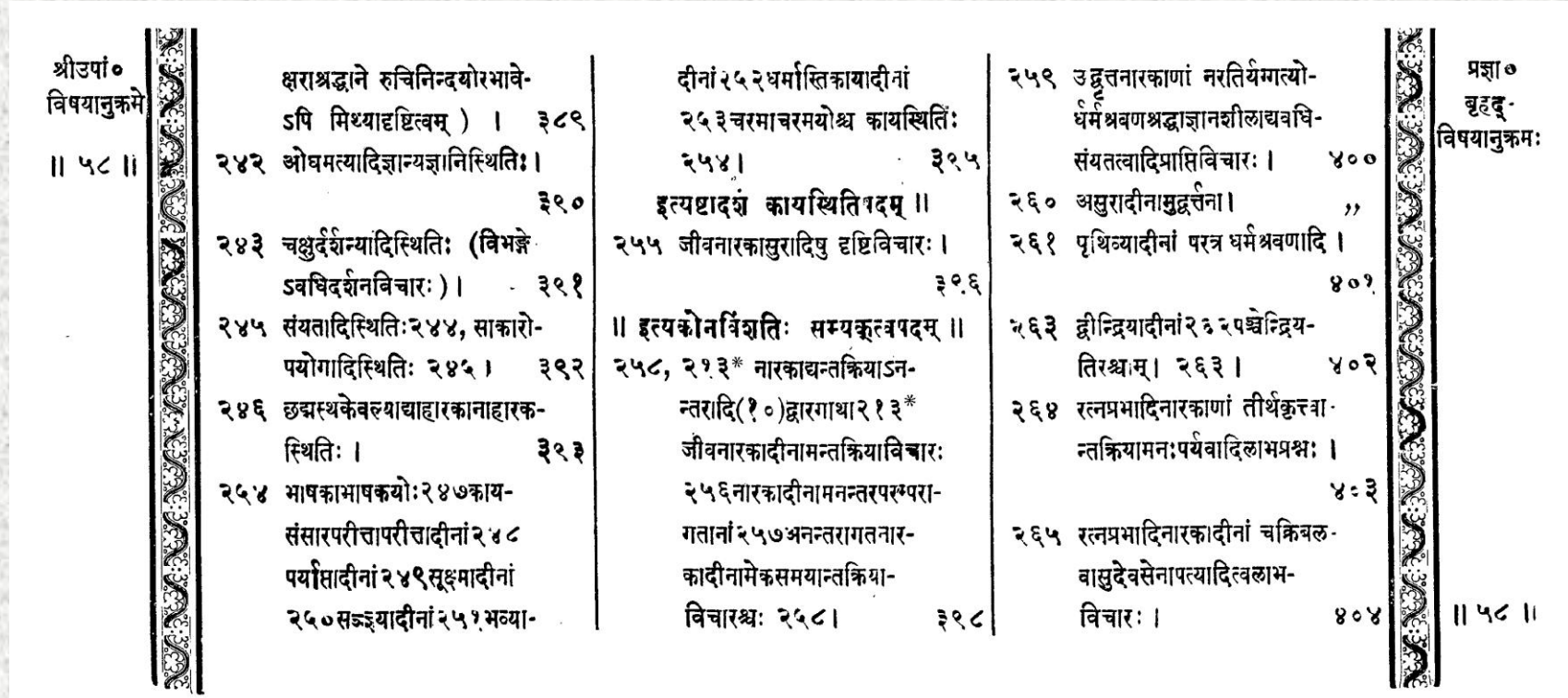
॥ ५६ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५७ ॥

२२६ कृष्णादिलेश्यानां वर्णाः। ३६४
२२७ तासां रसवर्णनम्। ३६६
२२८ तासां गन्धवर्णनं, अविशुद्धा-प्रशस्तसंक्लिष्टशीतरूक्षदुर्गतिगामि-त्वानि सप्रतिपक्षाणि च। ३६७
२२९ तासां त्रिनवविधादिपरिणामो-ऽनन्तप्रदेशिकताऽसंख्यप्रदेशा वगाहोऽनन्ता वर्गणाश्च। ३६८
२३० तासां स्थानानि, जघन्योत्कृष्ट-स्थानानां द्रव्यप्रदेशोभयैरल्प-बहुत्वं च। ३७०
॥ इति लेश्यापदे चतुर्थोद्देशकः ॥
२३१ लेश्यानां न तद्रूपतादिपरिणामः, आकारप्रतिभागौ स्याताम्। ३७२
॥ इति लेश्यापदे पञ्चमोद्देशकः ॥
२३२ मनुष्यमानुषीकर्मभूमिभरतैर-वतान्तरद्वीपहैमवतारण्यवत-हरिवर्षरम्यग्मनुष्यमानुषीणां लेश्याषट्कऽल्पबहुत्वं, समा-नान्यलेश्याकगर्भजनकत्वं च। ३७३
॥ इति लेश्यापदे षष्ठोद्देशकः ॥
॥ इति सप्तदशं लेश्यापदम् ॥
२३३, २१२* जीवगतीन्द्रियादि-(२२)द्वारसङ्ग्रहणीगाथे २१२* जीवस्थितिः, नारकतिर्यग्मनुष्य-देवतंत्स्त्रीसिद्धनारकाद्यपर्याप्तपर्याप्त-स्थितिः। ३७७
२३४ ओघैकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाऽ-निन्द्रियौघाद्यपर्याप्तपर्याप्तकाय-स्थितिः। ३७८
२३५ सकायाकायौघपृथिव्याद्यपर्याप्त-पर्याप्तकायस्थितिः। ३८१
२३६ ओघसूक्ष्मबादरपृथिव्यादिनिगोद-तदपर्याप्तपर्याप्तकायस्थितिः। ३८२
२३७ सयोगमनोयोग्यादिकाय-स्थितिः। ३८३
२३८ सामान्यविशेषवेदावेदस्थितिः। ३८५
२३९ सामान्यविशेषकषाय्यकषायि-स्थितिः। ३८६
२४० सलेश्यकृष्णलेश्याद्यलेश्यस्थितिः। ३८७
२४१ सम्यग्दृष्ट्यादिस्थितिः, (एका-

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ५७ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५८ ॥

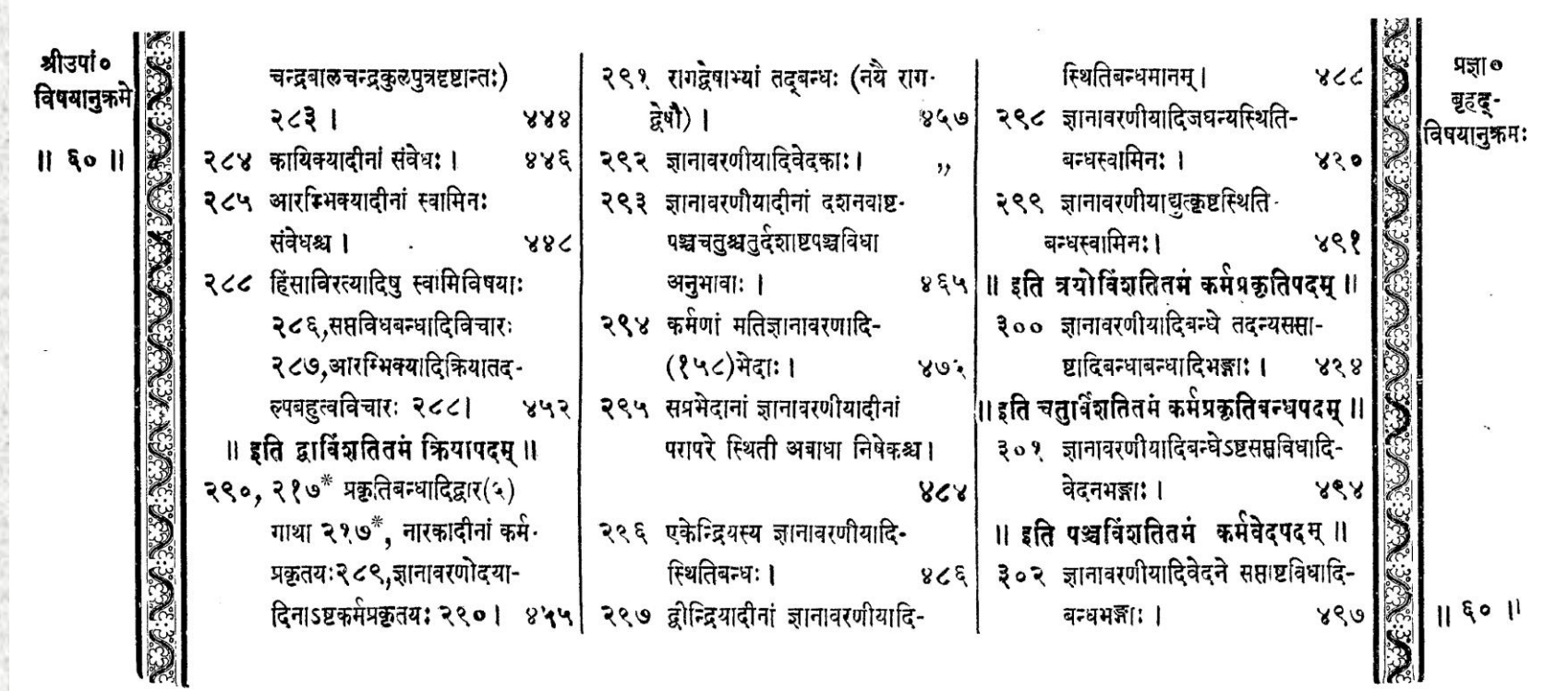
क्षराश्रद्धाने रुचिनिन्दयोरभावे-
ऽपि मिथ्यादृष्टित्वम्) । ३८९
२४२ ओघमत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थितिः । ३९०
२४३ चक्षुर्दर्शन्यादिस्थितिः (विभङ्गे ऽवधिदर्शनविचारः) । ३९१
२४५ संयतादिस्थितिः २४४, साकारो-
पयोगादिस्थितिः २४५ । ३९२
२४६ छद्मस्थकेवल्याद्याहारकानाहारक-
स्थितिः । ३९३
२५४ भाषकाभाषकयोः २४७काय-
संसारपरीत्तापरीत्तादीनां २४८
पर्याप्तादीनां २४९सूक्ष्मादीनां
२५०सञ्ज्ञ्यादीनां २५१भव्या-
दीनां २५२धर्मास्तिकायादीनां
२५३चरमाचरमयोश्च कायस्थितिः
२५४। ३९५
इत्यष्टादशं कायस्थितिपदम् ॥
२५५ जीवनारकासुरादिषु दृष्टिविचारः । ३९६
॥ इत्यकोनविंशतिः सम्यक्त्वपदम् ॥
२५८, २१३* नारकाद्यन्तक्रियाऽन-
न्तरादि(१०)द्वारगाथा २१३*
जीवनारकादीनामन्तक्रियाविचारः
२५६नारकादीनामनन्तरपरम्परा-
गतानां २५७अनन्तरागतनार-
कादीनामेकसमयान्तक्रिया-
विचारश्च: २५८। ३९८
२५९ उद्वृत्तनारकाणां नरतिर्यग्गत्यो-
र्धर्मश्रवणश्रद्धाज्ञानशीलाद्यवधि-
संयतत्वादिप्राप्तिविचारः । ४००
२६० असुरादीनामुद्वर्त्तना । ,,
२६१ पृथिव्यादीनां परत्र धर्मश्रवणादि । ४०१
२६३ द्वीन्द्रियादीनां २६२पञ्चेन्द्रिय-
तिरश्चाम् । २६३ । ४०२
२६४ रत्नप्रभादिनारकाणां तीर्थकृत्त्वा-
न्तक्रियामनःपर्यवादिलाभप्रश्नः । ४०३
२६५ रत्नप्रभादिनारकादीनां चक्रिबल-
वासुदेवसेनापत्यादित्वलाभ-
विचारः । ४०४

प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५८ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५९ ॥

२६६ असंयतभव्यद्रव्यदेवादि(१४) जघन्योत्कृष्टोपपातविचारः। ४०६
२६७ असङ्ख्यायुर्भेदाल्पबहुत्व-विचारः। ४०७
॥ इति विंशतितममन्तक्रियापदम् ॥
२६८, २१४* विधिसंस्थानप्रमाणादि-(१०)द्वारसंग्रहगाथा२१४* शरीरभेदाः, औदारिकस्वामि-विचारश्च। ४१०
२६९ एकेन्द्रियाद्यौदारिकशरीरस्य संस्थानम्। ४१२
२७०, २१६* एकेन्द्रियपृथिव्याद्य-पर्याप्तपर्याप्तभेदेनौदारिकाव-गाहनामानम् २१६*, २७०। ४१४
२७१ वैक्रियशरीरस्य स्वामिनः। ४१६
२७२ तस्य संस्थानम्। ४१७
२७३ वायुकायरत्नप्रभादिनारकासुर-कुमारादीनां वैक्रियमानं(प्रस्तट-भेदेन)। ४२३
२७४ आहारकस्य स्वामिसंस्थाना-वगाहनाः, (मनःपर्यवादिलब्धि-विचारः)। ४२६
२७६ तैजसस्य स्वामिसंस्थाने२७५, जीवैकेन्द्रियपृथिव्यादिनामनु-त्तरान्तानां मरणसमुद्घाते तैज-साऽवगाहना, कार्मणस्य स्वाम्यादि च २७६। ४३१
२७७ औदारिकादीनां चयोपचयदिशः, परस्परं संवेधश्च। ४३३
२७९ तेषां द्रव्यप्रदेशोभयैरल्पबहुत्वं २७८,जघन्योत्कृष्टावगाहनाऽ ल्पबहुत्वम् २७९। ४३५
॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥
२८० कायिक्यादिक्रियाणामनुपरतादि-भेदाः। ४३६
२८१ हिंसामृषावादादिभिः षड्जीव-निकायादिषु क्रिया। ४३९
२८३ प्राणातिपातादीनां सप्तविधबन्धा-दिविचारः२८२,ज्ञानावरणीया-दिबन्धे क्रियात्रयादिविचारः, जीवनारकादीनां जीवनारकादि-भ्यस्क्रियत्वादिविचारः(गुण-

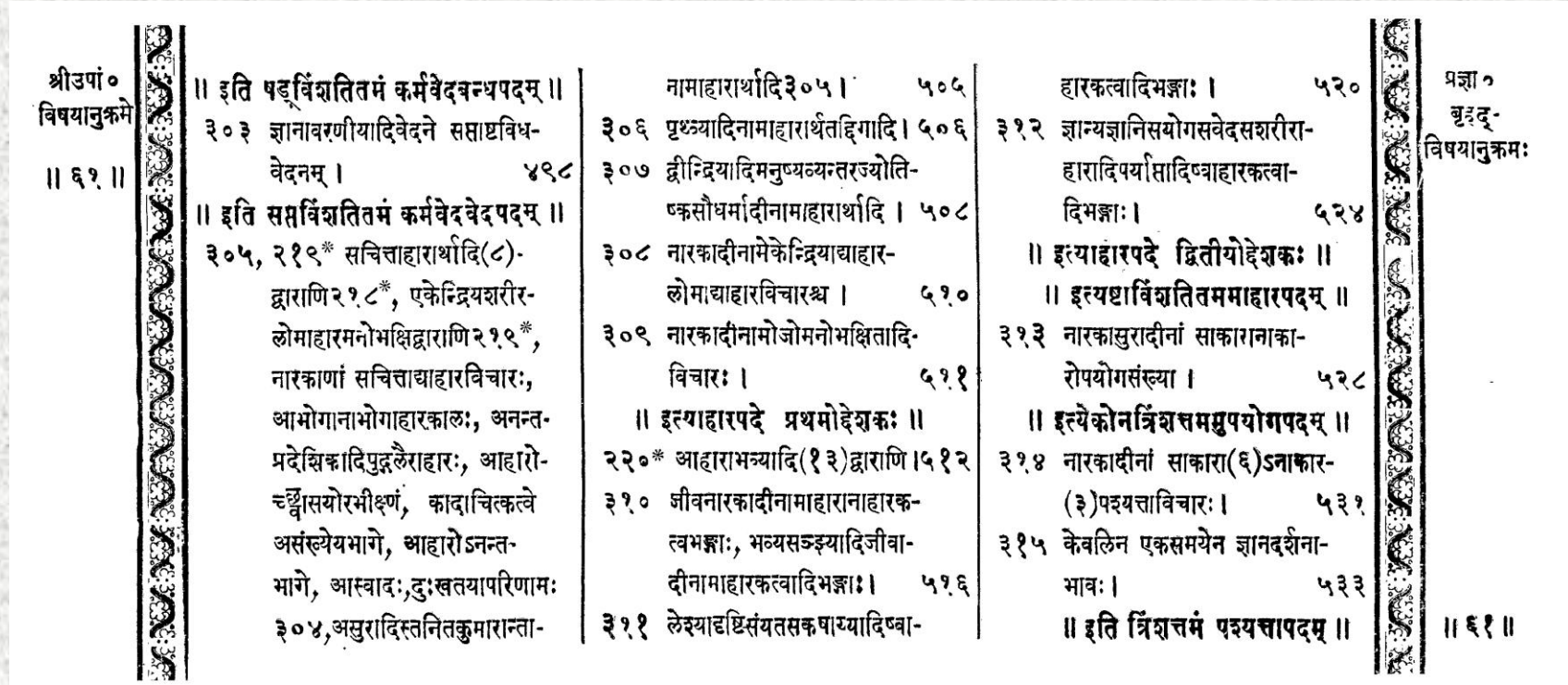
प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ५९ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६० ॥

चन्द्रबालचन्द्रकुलपुत्रदृष्टान्तः) २८३। ४४४
२८४ कायिक्यादीनां संवेधः। ४४६
२८५ आरम्भिक्यादीनां स्वामिनः संवेधश्च। ४४८
२८८ हिंसाविरत्यादिषु स्वामिविषयाः २८६,सप्तविधबन्धादिविचारः २८७,आरम्भिक्यादिक्रियातदल्पबहुत्वविचारः २८८। ४५२
॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥
२९०, २१७* प्रकृतिबन्धादिद्वार(२) गाथा २१७*, नारकादीनां कर्मप्रकृतयः२८९,ज्ञानावरणोदयादिनाऽष्टकर्मप्रकृतयः २९०। ४५५
२९१ रागद्वेषाभ्यां तद्बन्धः (नयै रागद्वेषौ)। ४५७
२९२ ज्ञानावरणीयादिवेदकाः। ,,
२९३ ज्ञानावरणीयादीनां दशनवाष्टपञ्चचतुश्चतुर्दशाष्टपञ्चविधा अनुभावाः। ४६५
२९४ कर्मणां मतिज्ञानावरणादि-(१५८)भेदाः। ४७२
२९५ सप्तभेदानां ज्ञानावरणीयादीनां परापरे स्थिती अबाधा निषेकश्च। ४८४
२९६ एकेन्द्रियस्य ज्ञानावरणीयादिस्थितिबन्धः। ४८६
२९७ द्वीन्द्रियादीनां ज्ञानावरणीयादिस्थितिबन्धमानम्। ४८८
२९८ ज्ञानावरणीयादिजघन्यस्थितिबन्धस्वामिनः। ४९०
२९९ ज्ञानावरणीयाद्युत्कृष्टस्थितिबन्धस्वामिनः। ४९१
॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृतिपदम् ॥
३०० ज्ञानावरणीयादिबन्धे तदन्यसप्ताष्टादिबन्धाबन्धादिभङ्गाः। ४९४
॥ इति चतुर्विंशतितमं कर्मप्रकृतिबन्धपदम् ॥
३०१ ज्ञानावरणीयादिबन्धेऽष्टसप्तविधादिवेदनभङ्गाः। ४९४
॥ इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदपदम् ॥
३०२ ज्ञानावरणीयादिवेदने सप्ताष्टविधादिबन्धभङ्गाः। ४९७

प्रज्ञा० बृहद्वि-षयानुक्रमः ॥ ६० ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६१ ॥

॥ इति षड्विंशतितमं कर्मवेदबन्धपदम् ॥

३०३ ज्ञानावरणीयादिवेदने सप्ताष्टविधवेदनम् । ४९८

॥ इति सप्तविंशतितमं कर्मवेदवेदपदम् ॥

३०५, २१९* सचित्ताहारार्थादि(८)द्वाराणि २१८*, एकेन्द्रियशरीरलोमाहारमनोभक्षिद्वाराणि २१९*, नारकाणां सचित्ताद्याहारविचारः, आभोगानाभोगाहारकालः, अनन्तप्रदेशिकादिपुद्गलैराहारः, आहारोच्छ्वासयोरभीक्ष्णं, कादाचित्कत्वे असंख्येयभागे, आहारोऽनन्तभागे, आस्वादः, दुःखतयापरिणामः ३०४, असुरादिस्तनितकुमारान्तानामाहारार्थादि ३०५। ५०५

३०६ पृथ्व्यादिनामाहारार्थतद्विगादि। ५०६

३०७ द्वीन्द्रियादिमनुष्यव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मादीनामाहारार्थादि । ५०८

३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियाद्याहारलोमाद्याहारविचारश्च । ५१०

३०९ नारकादीनामोजोमनोभक्षितादिविचारः । ५११

॥ इत्याहारपदे प्रथमोद्देशकः ॥

२२०* आहाराभव्यादि(१३)द्वाराणि । ५१२

३१० जीवनारकादीनामाहारानाहारकत्वभङ्गाः, भव्यसञ्ज्ञ्यादिजीवादीनामाहारकत्वादिभङ्गाः। ५१६

३११ लेश्याद्दष्टिसंयतसकषाय्यादिष्वाहारकत्वादिभङ्गाः । ५२०

३१२ ज्ञान्यज्ञानिसयोगसवेदसशरीराहारादिपर्याप्तादिष्वाहारकत्वादिभङ्गाः । ५२४

॥ इत्याहारपदे द्वितीयोद्देशकः ॥

॥ इत्यष्टाविंशतितममाहारपदम् ॥

३१३ नारकासुरादीनां साकारानाकारोपयोगसंख्या । ५२८

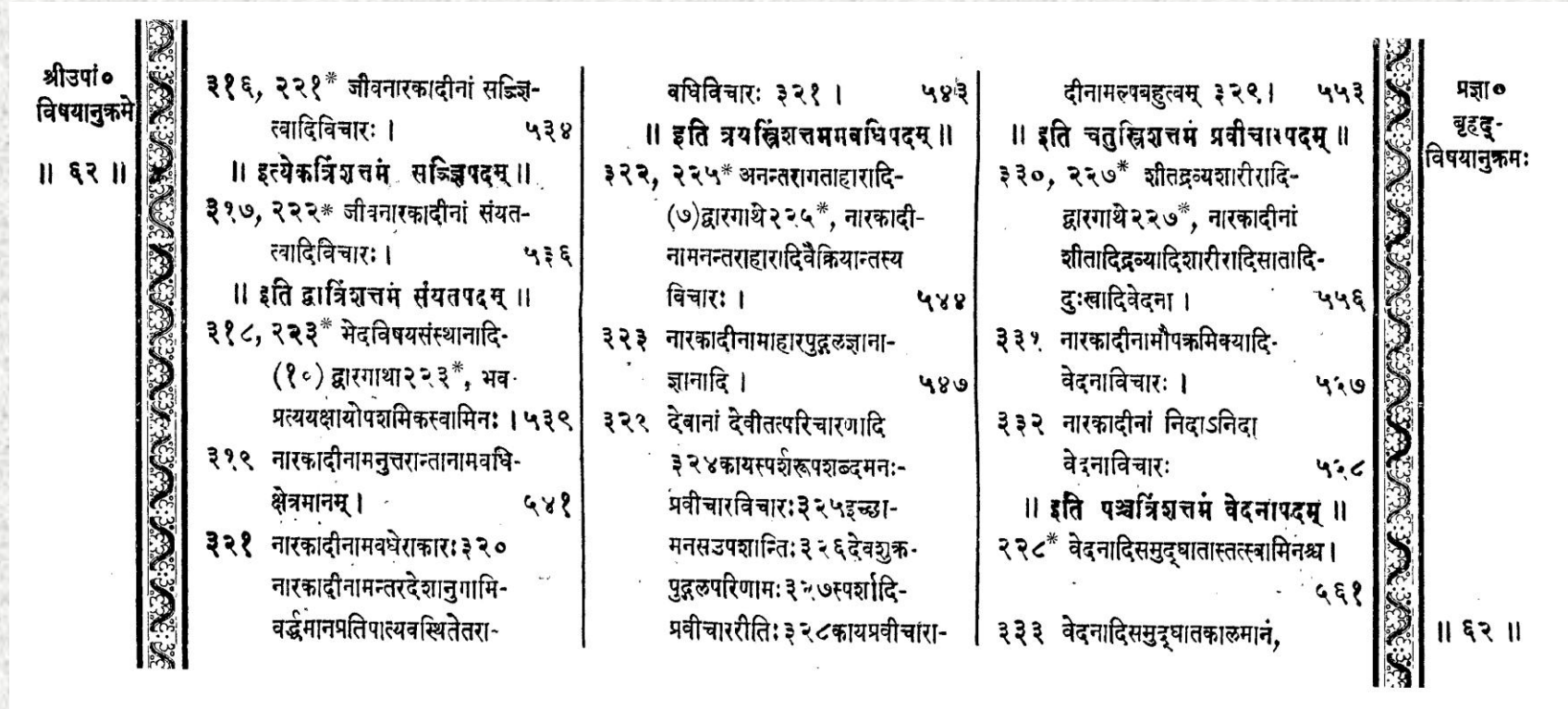
॥ इत्येकोनत्रिंशत्तममुपयोगपदम् ॥

३१४ नारकादीनां साकारा(६)ऽनाकार(३)पश्यत्ताविचारः । ५३१

३१५ केवलिन एकसमयेन ज्ञानदर्शनाभावः । ५३३

॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ६१ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६२ ॥

३१६, २२१* जीवनारकादीनां सञ्ज्ञित्वादिविचारः । ५३४
॥ इत्येकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञिपदम् ॥
३१७, २२२* जीवनारकादीनां संयतत्वादिविचारः । ५३६
॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयतपदम् ॥
३१८, २२३* भेदविषयसंस्थानादि-(१०) द्वारगाथा२२३*, भवप्रत्ययक्षायोपशमिकस्वामिनः । ५३९
३१९ नारकादीनामनुत्तरान्तानामवधिक्षेत्रमानम् । ५४१
३२१ नारकादीनामवधेराकारः३२० नारकादीनामन्तरदेशानुगामिवर्द्धमानप्रतिपात्यवस्थितेतरावधिविचारः ३२१ । ५४३
॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवधिपदम् ॥
३२२, २२५* अनन्तरागताहारादि-(७)द्वारगाथे२२५*, नारकादीनामनन्तराहारादिवैक्रियान्तस्य विचारः । ५४४
३२३ नारकादीनामाहारपुद्गलज्ञानाज्ञानादि । ५४७
३२९ देवानां देवीतत्परिचारणादि ३२४कायस्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचारविचारः३२५इच्छामनसउपशान्तिः३२६देवशुक्रपुद्गलपरिणामः३२७स्पर्शादिप्रवीचाररीतिः३२८कायप्रवीचारादीनामल्पबहुत्वम् ३२९। ५५३
॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥
३३०, २२७* शीतद्रव्यशारीरादि-द्वारगाथे२२७*, नारकादीनां शीतादिद्रव्यादिशारीरादिसातादिदुःखादिवेदना । ५५६
३३१ नारकादीनामौपक्रमिक्यादिवेदनाविचारः । ५५७
३३२ नारकादीनां निदाऽनिदा वेदनाविचारः ५५८
॥ इति पञ्चत्रिंशत्तमं वेदनापदम् ॥
२२८* वेदनादिसमुद्घातास्तत्स्वामिनश्च । ५६१
३३३ वेदनादिसमुद्घातकालमानं,

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ६२ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६३ ॥

नारकादीनां समुद्घातसंख्या च। ५६२
३३४ नारकादीनामतीतानागतवेदना-समुद्घाताः। ५६५
३३५ वेदनाऽऽहारकेवलिसमुद्घाताः। ५६७
३३६ नारकादेर्नारकादित्वेऽतीता-नागतवेदनासमुद्घातमानम्। ५६९
३३७ तथैव कषायसमुद्घातमानम्। ५७२
३३८ सर्वदण्डकानां सर्वदण्डकेषु समुद्घातमानम्। ५७५
३३९ नारकादीनां नारकादित्वे वेद-नादिसमुद्घातमानम्। ५७८
३४१ समुद्घातानां जीवानामल्प-बहुत्वं ३४०, समुद्घातानां नारकादीनामल्पबहुत्वम्। ३४१ ५८१
३४२ नारकादीनामतीतानागतक्रोधादि-समुद्घातसङ्ख्या। ५८८
३४३ क्रोधादिसमुद्घातालपबहुत्वम्। ५९०
३४४ नारकादीनां छाद्मस्थिकसमुद्घात-संख्या। ,,
३४५ वेदनादिसमुद्घातजविश्वव्या-प्तपुद्गलेभ्यश्छिक्रियत्वादि, मारणा-न्तिकसमुद्घातव्याप्तिश्च। ५९६
३४७ वैक्रियसमुद्घाते क्षेत्रकालमानं, तैजससमुद्घाते, आहारके च ३४६,क्षेत्रव्याप्तिक्रिये, लोकव्या-पकचरमनिर्जरापुद्गलज्ञाना-ज्ञानादि ३५७। ६०१
३५०, २३०* केवलिनः समुद्घात-कारणं ३४८, २३०*, आव-र्जीकरणकालमानं ३४९, केवलि-समुद्घातस्तत्र योगश्च ३५०। ६०५
३५१ कृतसमुद्घातस्य मनोवचनकाय-योगाः (न षण्मासी शेषे)। ६०७
३५२, २३१* योगनिरोधादिरीतिः, सिद्धस्वरूपं च। ६११
॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्घातपदम् ॥
॥ प्रशस्तिः ॥ ६१९
॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया बृहद्विषयानुक्रमः ॥

प्रज्ञा० बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ६३ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-५+६ "सूर्यप्रज्ञप्ति+चन्द्रप्रज्ञप्ति"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

[आगम-१६+१७] उपांग-५+६ "सूर्य+चन्द्र-प्रज्ञप्ति"

अथ श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः

वीरस्तुतिः १। १
तीर्थकरस्तुतिः २। ,,
आगमस्तुतिः ३। ,,
सूर्यप्रज्ञप्तिस्तुतिः ४-५। ,,
१ मिथिलानगर्युद्यानवर्णनम्। १
२ समवसरणदिशावर्णनम्। ३
३, १५* प्राभृताधिकाराः ६
४, ६-७* प्रथमप्राभृते प्राभृतप्राभृतनामानि (८)। ७
५, ८* सूर्यस्य प्रतिपत्तयः। ,,
६, ९ ११* सूर्यस्योदये अस्तमयनेषु च विप्रतिपत्तयः। ,,
७, १२-१३* दशमप्राभृताधिकारः। ,,
८ मुहूर्त्तवृद्ध्यपवृद्धी। ९
९ दिवसरात्रिविषये मु०। १०
१० सूर्यमण्डलानि। ,,
११ सूर्यमण्डलविषयः। ११
१२ दक्षिणार्द्धमण्डलसंस्थितिः। २१
१३ उत्तरार्द्धमण्डलसंस्थितिः। ,,
१४ चीर्णचरणम्। ,,
१५ अन्तरपरिमाणं विप्रतिपत्तयश्च (६)। २५
१६ १७ अवगाहनामानम् (५)। ३१
१८ विकम्पनमानविप्रतिपत्तयः (५)। ३२
१९ मण्डलसंस्थानविप्रतिपत्तयः (८)। ३६
२० मण्डलविष्कम्भविप्रतिपत्तयः (३)। ३८
॥ इति प्रथमं प्राभृतम् ॥
२१ सूर्यस्य तिर्यक्परिभ्रमः ४५
२२ भेदघातकर्णकले विप्रतिपत्तयः (२)। ४८
२३ मुहूर्त्तगतिः विप्रतिपत्तयश्च (४)। ५२
॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥
२४ प्रकाश्यक्षेत्रपरिमाणम्। ६३
॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥
२५ प्रकाशसंस्थानम्। ६७
॥ इति चतुर्थं प्राभृतम् ॥
२६ लेश्याप्रतिघातः। ७६
॥ इति पञ्चमं प्राभृतम् ॥
२७ ओजः संस्थितिः। ७९
॥ इति षष्ठं प्राभृतम् ॥
२८ सूर्यावारकः। ८३

श्रीउपां० विषयानुक्रमे

॥ ६५ ॥

॥ इति सप्तमं प्राभृतम् ॥

२९ उदयसंस्थितिः । ८४

॥ इत्यष्टमं प्राभृतम् ॥

३० पौरुषीच्छायाप्रमाणम् । ९२

३१ पौ० निर्वर्त्तनम् । ९३

॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥

३२ योगस्वरूपे नक्षत्राणां विचारः । ९९

३३ नक्षत्रे मुहूर्त्तमानं चन्द्रस्य । १००

३४ नक्षत्राणां सूर्येण योगः । १०१

३५ पूर्वादिभागाः । १०४

३६ योगस्यादिः । १०३

३७ कुलोपकुलानि । १११

३८ पौर्णिमादिनक्षत्रम् । ,,

३९ कुलोपकुलाधिकारः । १२०

४० सन्निपातो द्वयोश्चन्द्रं प्रति । १२८

४१ नक्षत्राणामाकाराः । १२९

४२ नक्षत्रेषु तारामानम् । १३१

४३ नेतॄणि नक्षत्राणि । १३२

४४ चन्द्रमार्गाः । १३७

४५ चन्द्रमण्डलमार्गः । १३८

४६ नक्षत्रदेवाः । १४६

४७, १६-१८* मुहूर्त्तनामानि । ,,

४८, १९-२२।* दिनरात्रिनामानि । १४७

४९ तिथिभेदाः । १४८

५० नक्षत्रगोत्राणि । १५०

५१ नक्षत्रभोजनानि । १५१

५२ युगे सूर्यचन्द्रचाराः । १५२

५३, २३-२४* मासनामानि । १५३

५४ संवत्सराः । १५३

५५ नक्षत्रसंवत्सराः । ,,

५६ युगसंवत्सराः । १५४

५७ प्रमाणसंवत्सराः । १६८

५८, २५-२९* लक्षणसंवत्सराः । १७१

५९ नक्षत्रद्वाराणि । १७३

६० नक्षत्रयोगादि । १७५

६१-६२ नक्षत्रसीमाविष्कम्भादि । १७७

६३ पूर्णिमामावास्याः । १८०

६४ सूर्यस्य पौर्णमासीदेशस्थितिः । १८१

६५ चन्द्रस्य पौर्णमासीदेशस्थितिः । १८२

६६ सूर्यचन्द्रयोर्युनक्ति । ,,

६७ नक्षत्रेण सूर्यचन्द्रयोर्युनक्ति । १८५

६८ अमावास्यानक्षत्राणि । १९०

सूर्य० विषयसूचिः

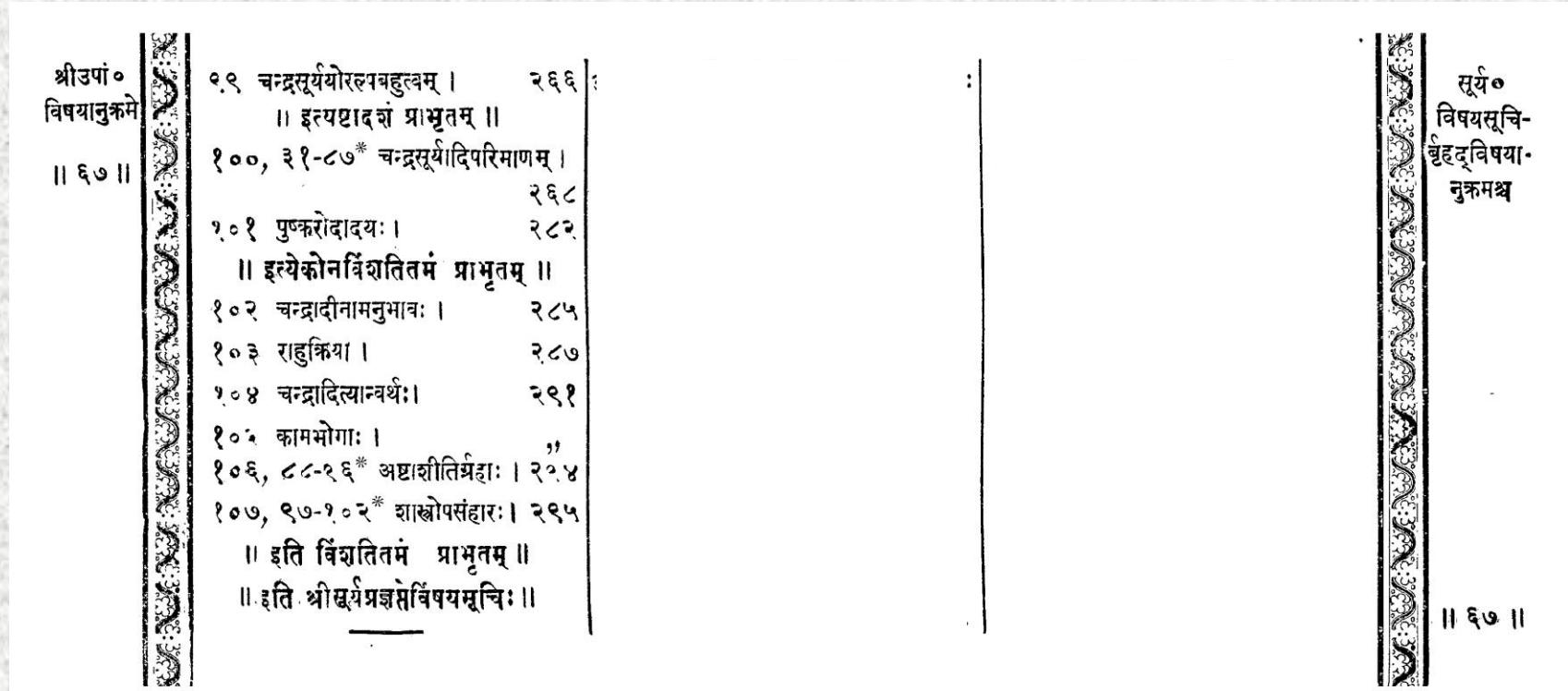
॥ ६५ ॥

श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६६ ॥

६९ तादृगन्यनक्षत्रयोगः। १९४
७० चन्द्रादेः सर्वत्र समयोगिता। १९७
॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥
७१ संवत्सराणामाद्यंतौ। १९८
॥ इति एकादशमं प्राभृतम् ॥
७२ नक्षत्रादिवर्षरात्रिन्दिवमुहूर्त्तमानम्। २०१
७३ नोयुगयुगरात्रिन्दिवमुहूर्त्तमानम्। २०६
७४ सूर्यादीनामाद्यन्तसाम्यम्। २०७
७५, ३०* ऋतुन्यूनाधिकराज्यधिकारः। २०९
७६ आवृत्तयः। २१९
७७ हेमन्त्य आवृत्तयः। २२८
७८ वृषभानुजाताद्या योगाः। २३३
॥ इति द्वादशमं प्राभृतम् ॥
७९ चन्द्रमसो वृद्ध्यपवृद्धी। २३४
८० पूर्णिमामावास्यान्तरं। २३६
८१ चन्द्रायनमण्डलचारः। २३८
॥ इति त्रयोदशमं प्राभृतम् ॥
८२ ज्योत्स्नाप्रमाणम्। २४४
॥ इति चतुर्दशमं प्राभृतम् ॥
८३-८४ चन्द्रादीनां गतितारतम्यम्। २४५
८५ नक्षत्रादिमासैश्चन्द्रादीनां चारः। २५०
८६ चन्द्रादीनामहोरात्रमण्डलयुगगत्तयः। २५३
॥ इति पञ्चदशमं प्राभृतम् ॥
८७ ज्योत्स्नालक्षणम्। २५५
॥ इति षोडशमं प्राभृतम् ॥
८८ च्यवनोपपातौ। २५७
॥ इति सप्तदशमं प्राभृतम् ॥
८९ चन्द्रसूर्याद्युच्चत्वम्। २५८
९० तारकस्याणुतादि। २५९
९१ चन्द्रस्य ग्रहपरिवारः। ,,
९२ अबाधाचाराः। ,,
९३ अभ्यन्तरचाराः। ,,
९४ चन्द्रादेः संस्थानमायामादिवाहिनश्च। २५२
९५ अल्पेतरगतिऋद्धी। ,,
९६ तारान्तरम्। २५३
९७ चन्द्रादिदेवी। ,,
९८ ज्योतिष्कस्थितिः। २६६

सूर्य० विषयसूचिः ॥ ६६ ॥

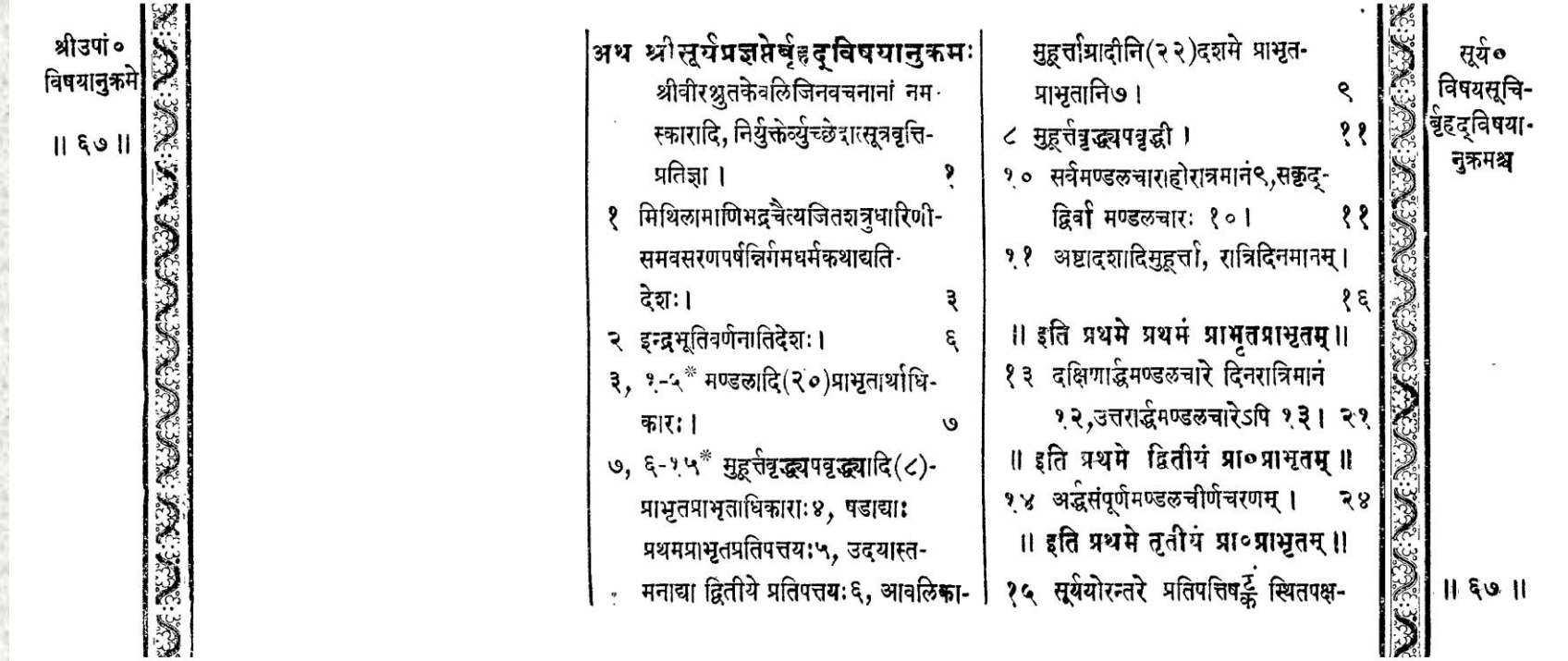
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६७ ॥

९९ चन्द्रसूर्ययोरल्पबहुत्वम् । २६६
॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥
१००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यादिपरिमाणम् । २६८
१०१ पुष्करोदादयः । २८२
॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥
१०२ चन्द्रादीनामनुभावः । २८५
१०३ राहुक्रिया । २८७
१०४ चन्द्रादित्यान्वर्थः । २९१
१०५ कामभोगाः । ,,
१०६, ८८-९६* अष्टाशीतिर्ग्रहाः । २९४
१०७, ९७-१०२* शास्त्रोपसंहारः । २९५
॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥
॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः ॥

सूर्य० विषयसूचि-बृहद्विषयानुक्रमश्च ॥ ६७ ॥

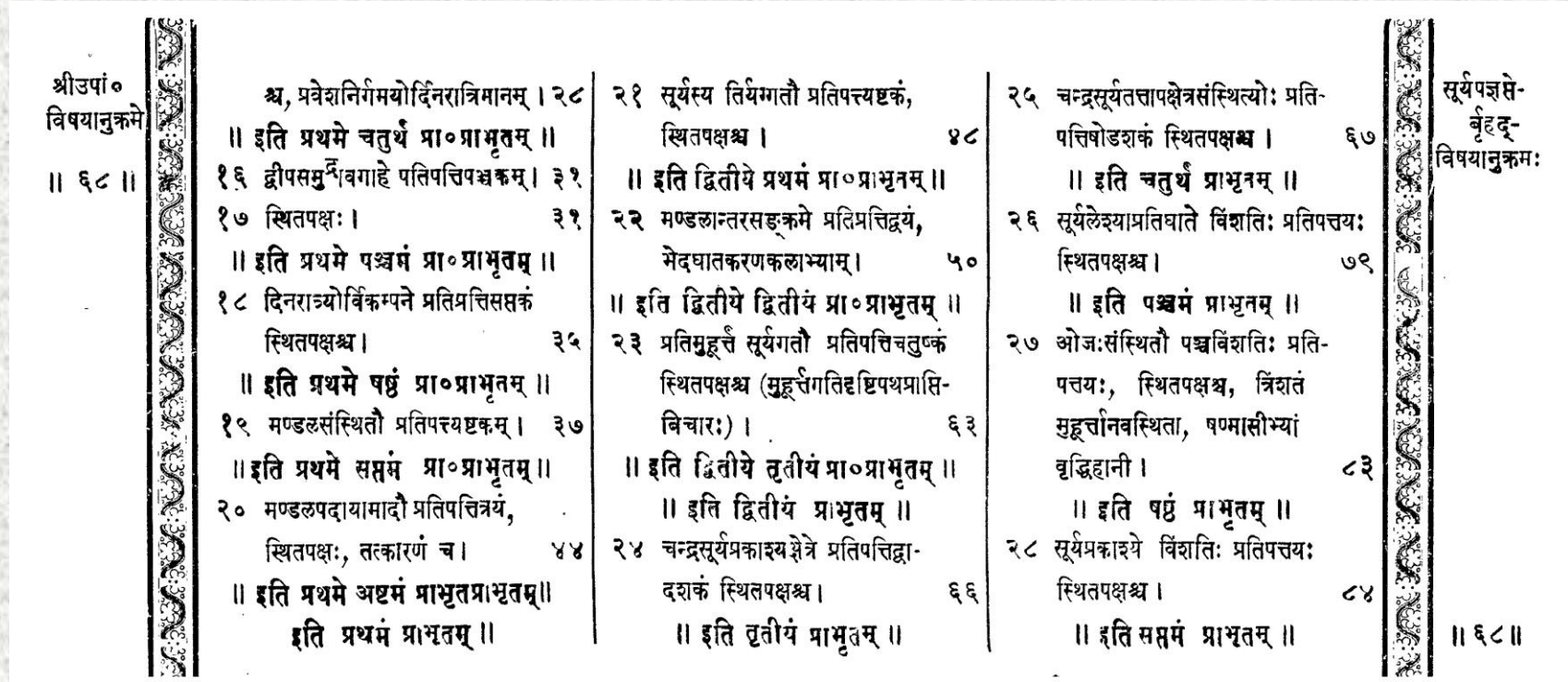


श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६७ ॥

अथ श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्बृहद्विषयानुक्रमः

श्रीवीरश्रुतकेवलिजिनवचनानां नमस्कारादि, निर्युक्तेर्व्युच्छेदात्सूत्रवृत्तिप्रतिज्ञा । १
१ मिथिलामाणिभद्रचैत्यजितशत्रुधारिणीसमवसरणपर्षन्निर्गमधर्मकथाद्यतिदेशः । ३
२ इन्द्रभूतिवर्णनातिदेशः । ६
३, १-५* मण्डलादि(२०)प्राभृतार्थाधिकारः । ७
७, ६-१५* मुहूर्त्तवृद्ध्यपवृद्ध्यादि(८)-प्राभृतप्राभृताधिकाराः४, षडाद्याः प्रथमप्राभृतप्रतिपत्तयः५, उदयास्तमनाद्या द्वितीये प्रतिपत्तयः६, आवलिकामुहूर्त्तादीनि(२२)दशमे प्राभृतप्राभृतानि७ । ९
८ मुहूर्त्तवृद्ध्यपवृद्धी । ११
१० सर्वमण्डलचाराहोरात्रमानं९, सकृद्द्विर्वा मण्डलचारः १० । ११
११ अष्टादशादिमुहूर्त्ता, रात्रिदिनमानम् । १६
॥ इति प्रथमे प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥
१३ दक्षिणार्द्धमण्डलचारे दिनरात्रिमानं १२, उत्तरार्द्धमण्डलचारेऽपि १३ । २१
॥ इति प्रथमे द्वितीयं प्रा०प्राभृतम् ॥
१४ अर्द्धसंपूर्णमण्डलचीर्णचरणम् । २४
॥ इति प्रथमे तृतीयं प्रा०प्राभृतम् ॥
१५ सूर्ययोरन्तरे प्रतिपत्तिषट्कं स्थितपक्ष-

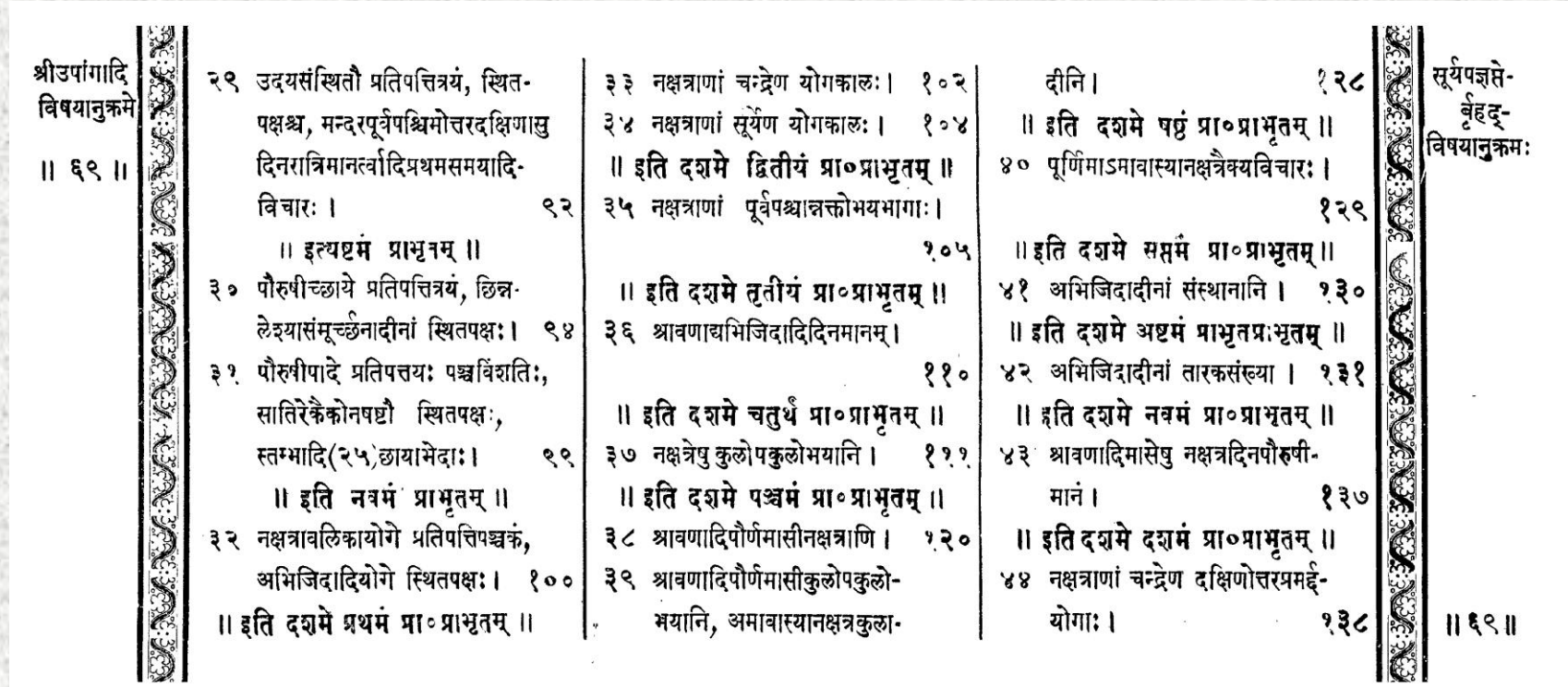
सूर्य० विषयसूचि-बृहद्विषयानुक्रमश्च ॥ ६७ ॥



श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६८ ॥

श्च, प्रवेशनिर्गमयोर्दिनरात्रिमानम् । २८
॥ इति प्रथमे चतुर्थं प्रा०प्राभृतम् ॥
१६ द्वीपसमुद्रावगाहे पतिपत्तिपञ्चकम् । ३१
१७ स्थितपक्षः । ३१
॥ इति प्रथमे पञ्चमं प्रा०प्राभृतम् ॥
१८ दिनरात्र्योर्विकम्पने प्रतिप्रत्तिसप्तकं स्थितपक्षश्च । ३५
॥ इति प्रथमे षष्ठं प्रा०प्राभृतम् ॥
१९ मण्डलसंस्थितौ प्रतिपत्त्यष्टकम् । ३७
॥ इति प्रथमे सप्तमं प्रा०प्राभृतम् ॥
२० मण्डलपदायामादौ प्रतिपत्तित्रयं, स्थितपक्षः, तत्कारणं च । ४४
॥ इति प्रथमे अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥
इति प्रथमं प्राभृतम् ॥
२१ सूर्यस्य तिर्यग्गतौ प्रतिपत्त्यष्टकं, स्थितपक्षश्च । ४८
॥ इति द्वितीये प्रथमं प्रा०प्राभृतम् ॥
२२ मण्डलान्तरसङ्क्रमे प्रतिप्रत्तिद्वयं, भेदघातकरणकलाभ्याम् । ५०
॥ इति द्वितीये द्वितीयं प्रा०प्राभृतम् ॥
२३ प्रतिमुहूर्त्तं सूर्यगतौ प्रतिपत्तिचतुष्कं स्थितपक्षश्च (मुहूर्त्तगतिदृष्टिपथप्राप्ति-विचारः) । ६३
॥ इति द्वितीये तृतीयं प्रा०प्राभृतम् ॥
॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥
२४ चन्द्रसूर्यप्रकाश्यक्षेत्रे प्रतिपत्तिद्वादशकं स्थितपक्षश्च । ६६
॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥
२५ चन्द्रसूर्यतत्तापक्षेत्रसंस्थित्योः प्रतिपत्तिषोडशकं स्थितपक्षश्च । ६७
॥ इति चतुर्थं प्राभृतम् ॥
२६ सूर्यलेश्याप्रतिघाते विंशतिः प्रतिपत्तयः स्थितपक्षश्च । ७९
॥ इति पञ्चमं प्राभृतम् ॥
२७ ओजःसंस्थितौ पञ्चविंशतिः प्रतिपत्तयः, स्थितपक्षश्च, त्रिंशतं मुहूर्त्तानवस्थिता, षण्मासीभ्यां वृद्धिहानी । ८३
॥ इति षष्ठं प्राभृतम् ॥
२८ सूर्यप्रकाश्ये विंशतिः प्रतिपत्तयः स्थितपक्षश्च । ८४
॥ इति सप्तमं प्राभृतम् ॥

सूर्यपज्ञप्ते-बृहद्-विषयानुक्रमः ॥ ६८ ॥



श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे

॥ ६९ ॥

२९ उदयसंस्थितौ प्रतिपत्तित्रयं, स्थित-पक्षश्च, मन्दरपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणासु दिनरात्रिमानत्वादिप्रथमसमयादि-विचारः । ९२

॥ इत्यष्टमं प्राभृतम् ॥

३० पौरुषीच्छाये प्रतिपत्तित्रयं, छिन्न-लेश्यासंमूर्च्छनादीनां स्थितपक्षः। ९४

३१ पौरुषीपादे प्रतिपत्तयः पञ्चविंशतिः, सातिरेकैकोनषष्टौ स्थितपक्षः, स्तम्भादि(२५)छायाभेदाः। ९९

॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥

३२ नक्षत्रावलिकायोगे प्रतिपत्तिपञ्चकं, अभिजिदादियोगे स्थितपक्षः। १००

॥ इति दशमे प्रथमं प्रा०प्राभृतम् ॥

३३ नक्षत्राणां चन्द्रेण योगकालः। १०२

३४ नक्षत्राणां सूर्येण योगकालः। १०४

॥ इति दशमे द्वितीयं प्रा०प्राभृतम् ॥

३५ नक्षत्राणां पूर्वपश्चान्नक्तोभयभागाः। १०५

॥ इति दशमे तृतीयं प्रा०प्राभृतम् ॥

३६ श्रावणाद्यभिजिदादिदिनमानम्। ११०

॥ इति दशमे चतुर्थं प्रा०प्राभृतम् ॥

३७ नक्षत्रेषु कुलोपकुलोभयानि। १११

॥ इति दशमे पञ्चमं प्रा०प्राभृतम् ॥

३८ श्रावणादिपौर्णमासीनक्षत्राणि। १२०

३९ श्रावणादिपौर्णमासीकुलोपकुलो-भयानि, अमावास्यानक्षत्रकुला-दीनि। १२८

॥ इति दशमे षष्ठं प्रा०प्राभृतम् ॥

४० पूर्णिमाऽमावास्यानक्षत्रैक्यविचारः। १२९

॥ इति दशमे सप्तमं प्रा०प्राभृतम् ॥

४१ अभिजिदादीनां संस्थानानि। १३०

॥ इति दशमे अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥

४२ अभिजिदादीनां तारकसंख्या। १३१

॥ इति दशमे नवमं प्रा०प्राभृतम् ॥

४३ श्रावणादिमासेषु नक्षत्रदिनपौरुषी-मानं। १३७

॥ इति दशमे दशमं प्रा०प्राभृतम् ॥

४४ नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरप्रमर्द-योगाः। १३८

सूर्यपज्ञसे-बृहद्-विषयानुक्रमः

॥ ६९ ॥

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ७० ॥

४५ चन्द्रमण्डलानि नक्षत्रैर्युक्तान्ययुक्तानि च। १४५

॥ इति दशमे एकादशं प्रा०प्राभृतम् ॥

४६ नक्षत्राणां देवताः। १४६

॥ इति दशमे द्वादशं प्रा०प्राभृतम् ॥

४७, १८* रौद्रादिमुहूर्त्तनामानि। १४७

॥ इति दशमे त्रयोदशं प्रा०प्राभृतम् ॥

४८, २२॥* दिवसरात्रिनामानि। १४८

॥ इति दशमे चतुर्दशं प्रा०प्राभृतम् ॥

४९ दिवसरात्रितिथिनामानि। १५०

॥ इति दशमे पञ्चदशं प्रा०प्राभृतम् ॥

५० अभिजिदादीनां गोत्राणि। १५१

इति दशमे षोडशं प्रा०प्राभृतम् ॥

५१ नक्षत्रभोजनानि। १५२

॥ इति दशमे सप्तदशं प्रा०प्राभृतम् ॥

५२ युगे नक्षत्रमासादिसंख्या। १५३

॥ इति दशमे अष्टादशं प्रा०प्राभृतम् ॥

५३, २४* अभिनन्दादिमासनामानि। १५३

॥ इति दशमे एकोनविंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥

५५ नक्षत्रादयः संवत्सराः५४, नक्षत्रादि-संवत्सरमासाः५५। १५४

५६ चन्द्रादिसंवत्सरास्तत्पर्वाणि च। १६८

५७ प्रमाणसंवत्सरे नक्षत्रचन्द्रादि-वर्षभेदाः। १७१

५८, २५* लक्षणसंवत्सरभेदाः, नक्षत्र-संवत्सरादीनां लक्षणानि, शनैश्चर-संवत्सरभेदाः। १७३

॥ इति दशमे विंशतितमं प्रा० प्राभृतम् ॥

५९ नक्षत्राणां द्वारेषु प्रतिपत्तिपञ्चकं, अभिजिदादीनां पूर्वादिद्वारेण स्थित-पक्षः। १७५

॥ इति दशमे एकविंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥

६० जम्बूद्वीपे सूर्यचन्द्रनक्षत्राणां मानं नक्षत्राणां योगमानं च। १७६

६२ नक्षत्राणां सीमविष्कम्भः६१, प्रातः-सन्ध्यादियोगश्च ६२। १८०

६३ द्वाषष्टिपूर्णिमाचन्द्रयोगाः। १८१

६६ द्वाषष्टिपूर्णिमासूर्ययोगाः६४, द्वाषष्ट्य-मावास्याचन्द्रयोगाः६५, द्वाषष्ट्य-मावास्यासूर्ययोगाः ६६। १८५

६७ द्वाषष्टिपूर्णिमानक्षत्राणि। १२०

सूर्यपज्ञप्ते-बृहद्विषया-नुक्रमः ॥ ७० ॥

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ७१ ॥

६८ द्वाषष्ट्यमावास्यानक्षत्राणि । १९४
६९ नक्षत्रचन्द्रसूर्ययोगान्तरम् । १९६
७० परस्परचन्द्रगतियोगादिसाम्यम् । १९७
॥ इति दशमे द्वाविंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥
॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥
७१ युगसंवत्सरादिनक्षत्रयोगाः । २०२
॥ इत्येकादशं प्राभृतम् ॥
७२ नक्षत्रसवत्सरादिदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०६
७३ नोयुगदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०७
७४ आदित्यसंवत्सरादीनां समादि-पर्यवसाने । २०९
७५, ३०* प्रावृडादिऋतुदिनरात्रि-मानमवमातिरात्राश्च २१९
७६ प्रावृडाद्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रयोगाः । २२८
७७ हैमन्तिक्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्र-योगाः । २३३
७८ वृषभवेणुक्रमञ्चादि(१०)योगाः । २३४
॥ इति द्वादशं प्राभृतम् ॥
७९ चन्द्रवृद्ध्यपवृद्धिमुहूर्त्तसंख्या । २३६
८० पूर्णमास्यमावास्यामुहूर्त्तानि । ,,
८१ चन्द्रार्द्धमासमण्डलानि । २४३
॥ इति त्रयोदशं प्राभृतम् ॥
८२ ज्योत्स्नान्धकारयोरल्पबहुत्वम् । २४५
॥ इति चतुर्दशं प्राभृतम् ॥
८३ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतित्वम् । २४७
८४ चन्द्रसूर्यादीनां गतिषु विशेषः । २४९
८५ नक्षत्रादिमासेषु चन्द्रादीनां मण्डल-चारसंख्या । २५३
८६ दिनेन चन्द्रमण्डलादिसंख्या, मण्डले-नाहोरात्रसंख्या च । २५६
॥ इति पञ्चदशं प्राभृतम् ॥
८७ ज्योत्स्नासूर्यलेश्यादेर्लक्षणानि । ,,
॥ इति षोडशं प्राभृतम् ॥
८८ चन्द्रादीनां च्यवनोत्पातयोः प्रति-पत्तयः पञ्चविंशतिः, स्थितपक्षे चन्द्रादिस्वरूपम् । २५८
॥ इति सप्तदशं प्राभृतम् ॥
९३ सूर्यस्योच्चत्वे प्रतिपत्तयः पञ्च-विंशतिः, स्थितपक्षे सूर्याद्युच्चत्वं ८९, चन्द्रादेरधस्तनादिषु तारकाः

सूर्यपज्ञसे-बृहद्विषया-नुक्रमः ॥ ७१ ॥

श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७२ ॥

९०, चन्द्रादेर्ग्रहादिपरिवारमानं ९१, मेरुपर्वतज्योतिश्चक्राबाधा ९२, सर्वाभ्यन्तरबाह्यादिनक्षत्राणि ९३। २६०
९५ चन्द्रादिविमानसंस्थानायामवाहक-देवस्वरूपनिरूपणं९४, चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतित्वं ९५। २६५
९९ तारकयोरन्तरं९६, चन्द्रादेरग्रम-हिषी, जिनसक्थ्याशातनाभया-दन्यत्र भोग: ९७, चन्द्रादे: परापरे स्थिती९८, चन्द्राद्यल्प-बहुत्वम् ९९। २६८
॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥
१००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यसङ्ख्यायां द्वादश प्रतिपत्तय:, स्वमते द्व्यादि-चन्द्रसूर्यसङ्ख्या। २८२
१०१ पुष्करवरद्वीपादयस्तच्चन्द्रसूर्यादि-सङ्ख्या च। २८५
॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥
१०२ चन्द्राद्यनुभावे प्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देवस्वरूपम्। २८६
१०३ राहुप्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देव-स्वरूपनाम(१२)विमान(५)-गमनागमनविकुर्वणादि, ध्रुव-पर्वराहुचन्द्रलेश्यावर्णादि। २९१
१०४ चन्द्रसूर्ययो: राश्यादित्यत्वे हेतु: १०४, चन्द्रसूर्यकाम-भोगस्वरूपम् १०५। २९४
१०७, ८८-१०२* अष्टाशीतिर्ग्रहनामानि। १०६, ९६* उपसंहार: १०७, १०२*। २९७
॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥
प्रशस्ति: ,,
॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्विषयानुक्रम: ॥

सूर्यप्रज्ञप्ते-र्बृहद्विषया-नुक्रम: जम्बूद्वीप० विषयसूचिश्च ॥ ७२ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र-७ "जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

अथ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः

वीरस्तुतिः १।	१	
सूरिस्तुतिः २।	,,	
मलयगिरिस्तुतिः ३।	,,	
हीरविजयगुरुस्तुतिः ४-५।	,,	
वाचकानाशीर्वादः ६।	,,	
ग्रन्थनाम ७।	..	

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ७३ ॥

१ नमस्कारनिक्षेपाः।	९	
२ गौतमवर्णनम्।	१४	
३ जम्बूद्वीपस्थानादिः।	१८	
४ वेदिकावर्णनम्।	२०	
५ वनषण्डाधिकारः।	२७	
६ पद्मवरवेदिकावनषण्डवर्णनम्।	३१	
७ जम्बूद्वीप(४)द्वाराधिकारः।	४७	
८ विजयद्वारवर्णनम्।	,,	
९, १* विजयादिद्वारान्तराणि।	६५	
१० भरतक्षेत्रवर्णनम्।	६६	
११ दक्षिणभरतार्द्धवर्णनम्।	६८	
१२ वैताढ्यस्वरूपम्।	७१	
१३ तत्सिद्धायतनवर्णनम्।	७७	
१४, २-३* दक्षिणार्द्धकूटादिवर्णनम्	८२	
१५ वैताढ्यवर्णनम्।	८४	
१६ उत्तरभरतवर्णनम्।	,,	
१७ ऋषभकूटाधिकारः।	८६	
॥ इति भरतक्षेत्रनिरूपणो नाम प्रथमो वक्षस्कारः ॥		
१८, ४-६* समयादिशीर्षप्रहेलिकान्त-कालवर्णनम्।	८९	
१९, ७-८* पल्योपमप्ररूपणा।	९२	
२० सुषमसुषमाधिकारः	९७	
२१ कल्पद्रुमाधिकारः।	९९	
२२ युग्मिस्वरूपम्।	१०८	
२३ प्रथमारकनराहारवर्णनम्।	११८	
२४-२५ प्रथमारकनरवासादिवर्णनम्।	११९	
२६ प्रथमारकनराणां स्थित्यादि।	१२६	
२७ द्वितीयारकस्वरूपम्।	१२८	
२८ तृतीयारकस्वरूपम्।	१३१	
२९ कुलकराः।	१३२	
३० कुलकरनीतिः।	१३३	
३१ कलादि ऋषभदीक्षा च।	१३५	
३२ श्रीऋषभप्रभोः श्रामण्यादि।	१४६	
३३ श्रीऋषभप्रभोः जन्मकल्याणकादि-नक्षत्राणि।	१५५	
३४ प्रभोः संहननादि निर्वाणगमनं च।	१५६	
३५ चतुर्थारकस्वरूपम्।	१६३	
३६ पञ्चमारकस्वरूपम्।	,,	
३७ षष्ठारकस्वरूपम्।	१६४	
३८ उत्सर्पिण्यां प्रथमद्वितीयारकस्व-रूपम्।	१७१	

जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७३ ॥

[आगम-१८] उपांग-७ "जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति"

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७४ ॥

३९ पुष्कलसंवर्त्तक्षीरघृतामृतरसमेघाः। १७३
४० मांसवर्जनव्यवस्था। १७५
४१ शेषोत्सर्पिणीवर्णनम्। १७८
॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥
४२ विनीतावर्णनम्। १७९
४३ भरतराजवर्णनम्। १८१
४४, ९-११* चक्रोत्पत्तितत्पूजोत्सवाः। १८४
४५ सचक्रस्य मागधतीर्थगमनम्। १९४
४६, १२-१५* मागधतीर्थकुमार-साधनम्। १९८
४७ वरदामतीर्थसाधनम्। २०५
४८, १६-१७* वास्तुनिवेशविधिः। २०७
४९ चतुर्घण्टाश्वरथवर्णनम्। २१०
५० सिन्धुदेवीसाधनम्। २१४
५१ वैताढ्यकुमारकृतमालसुरसाधनम्। २१६
५२ सुषेणेन सिन्धुपश्चिमनिष्कूटसाधनम्। २१७
५३ सुषेणेन तिमिश्रगुहादक्षिणकपाटो-द्घाटनम्। २२२
५४ मणिरत्नं, काकिणीरत्नेन मण्डला-लेखनं च। २२४
५५ उन्मग्ननिमग्नास्वरूपम्। २२९
५६ आपातचिलातयुद्धम्। २३१
५७, १८* अश्वरत्नखड्गरत्ने। २३३
५८ मेघमुखदेवाराधना वृष्टिश्च। २३८
५९, १९* छत्ररत्नवर्णनम्। २४१
६०, २०* चर्मरत्ने धान्याद्युत्पादनम्। २४३
६१, २१-२४* आपातकिरातसाधनम्। २४५
६२ क्षुल्लकहिमवद्गिरिदेवसाधनम्। २४८
६३, २५-२६* ऋषभकूटे नामलिख-नम्। २५०
६४, २७* नमिविनमिसाधनं स्त्रीरत्ना-प्तिश्च। २५१
६५ खण्डप्रपाताधिपनृत्तमालसाधनं निर्गमश्च गुहायाः। २५५
६६, २८-४१* गङ्गाकुले निधिप्राप्तिः पश्चिमदिक्साधनं विनीतागमश्च। २५७

जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७४ ॥

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ७५ ॥

६७ भरतस्य विनीतायां प्रवेशः। २६०
६८ भरतस्य चक्रवर्त्तित्वाभिषेकः। २६८
६९ रत्नानि। २७७
७० चक्रिणः समृद्धिः। २७७
७१ भरतस्य केवलं श्रामण्यं मोक्षश्च। २७८
७२ भरतनामान्वर्थम्। २८०
॥ इति भरतचक्रिचरितवर्णनो नाम तृतीयो वक्षस्कारः ॥
७३ क्षुल्लकहिमवत्स्वरूपम्। २८१
७४ पद्महृदस्वरूपम्। २८२
७५ गङ्गासिन्धुरोहितांशा नद्यः। २९०
७६ हिमवति कूटानि। २९६
७७ हैमवतं वर्षम्। २९८
७८ शब्दापातिवैताढ्यः। २९९
७९ हैमवतान्वर्थः। ३००
८० महाहिमवान् पर्वतः। ३०१
८१ महाहिमवति महापद्मादि। ३०२
८२ महाहिमवति कूटानि। ३०३
८३ हरिवर्षम्। ३०४
८४ निषधः। ३०६
८५ सनदीकतिगिंछिद्रहवर्णनम्। ३०७
८६ महाविदेहाः। ३१०
८७ गन्धमादनः। ३१३
८८ उत्तरकुरवः। ,,
८९, ४२-४३* यमकः। ३१६
९०, ४४-४६* नीलवदादिद्रहकाञ्चन-पर्वताः। ३२९
९१, ४७-५३* जम्बूवृक्षः। ३३०
९२, ५४* उत्तरकुरुमाल्यवदादि-वक्षस्काराः। ३३७
९३ सहस्राङ्ककूटं माल्यवदर्थश्च। ३३८
९४, ५५* कच्छविजयः। ३४१
९५ चित्रकूटवक्षस्कारः। ३४४
९६, ५६* शेषविजयादि। ३४६
९७, ५७-५८* विदेहद्वितीयविभागः। ३५२
९८, ५९* सौमनसदेवकुरवः। ३५३
९९ चित्रविचित्रकूटौ। ,,
१०० निषधादिद्रहाः। ,,
१०१ कूटशाल्मली। ३५५
१०२, ६०* विद्युत्प्रभः। ,,
१०३, ६१-६४* विजयाः। ३५७

जम्बूद्वीप० विषयसूचिः

॥ ७५ ॥

श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७६ ॥

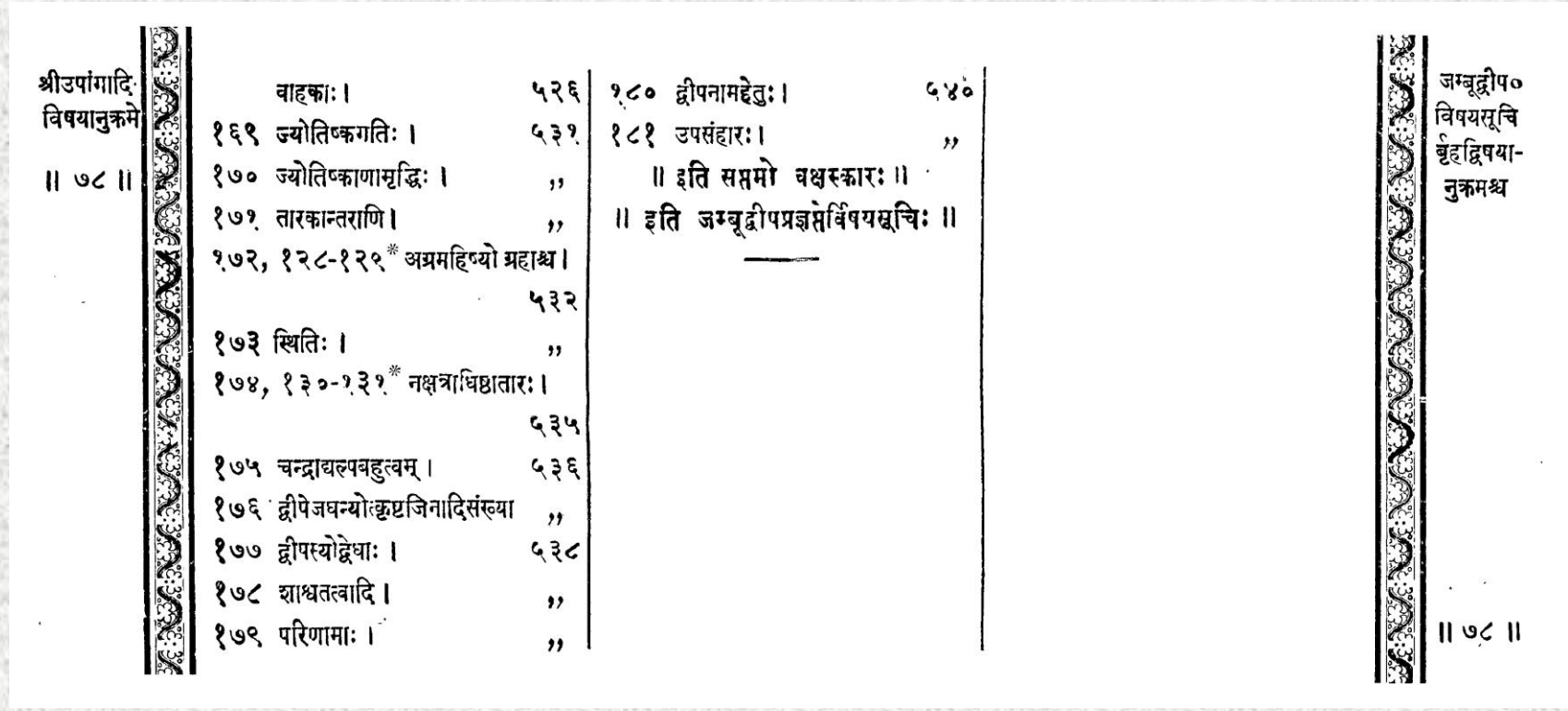
१०४, ६५* मेरुपर्वतः । ३६०
१०५ नन्दनवनम् । ३६६
१०६ सौमनसवनम् । ३६९
१०७ पण्डकवनम् । ३७०
१०८ अभिषेकशिला । ३७२
१०९ मेरुकाण्डानि । ३७३
११०, ६६-६७* मेरुनामानि । ३७५
१११, ६८* नीलवद्गिरिवर्णनम् । ३७६
११२, ६९* रम्यकादीनि । ३७८
॥ इति चतुर्थो वक्षस्कारः ॥
११३, ७०*दिक्कुमार्युत्सवः । ३८३
११४, ७१* ऊर्ध्वलोकदिक्कुमार्युत्सवः । ३८८
११५, ७२-७५* रुचकवासिकुमार्युत्सवः । ३९१
११६ पालकविमानम् । ३९५
११७ जन्ममहोत्सवाय यानविमानम् । ३९९
११८ जन्ममहे शक्रेन्द्रागमः । ४०१
११९, ७६-७८* जन्ममहे ईशानेन्द्राद्यागमः । ४०५
१२०, ७९* जन्ममहे चमराद्यागमः । ४०७
१२१-१२२ जन्ममहे अच्युताभियोगः । ४१२
१२३, ८०* अच्युताशीर्वादः शेषेन्द्राभिषेकश्च । ४१९
१२४ कृताभिषेकजिनानयम् । ४२२
॥ इति पञ्चमो जिनजन्माभिषेकारूयो वक्षस्कारः ॥
१२५, परस्परस्पर्शजीवोत्पादौ । ४२५
१२६, ८१-८२* खण्डयोजनादिपिण्डः । ४२६
॥ इति षष्ठो वक्षस्कारः ॥
१२७, ८३* चन्दौ । ४३३
१२८ सूर्यमण्डलानि । ४३४
१२९ अबाधाः । ,,
१३० सूर्यस्यान्तराबाधाः । ४३५
१३१ सूर्यपरिमाणम् । ,,
१३२ मेरुमण्डलाबाधा । ४३६
१३३ मण्डलायामादि । ४३८
१३४ मुहूर्त्तगतिः । ४४०

जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७६ ॥

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ७७ ॥

१३५ दिनरात्रिमानम् ४४९
१३६, ८४* तापक्षेत्रमानम् । ४५३
१३७ दूरादिदर्शनम् । ४५८
१३८ क्षेत्रगमादिः । ,,
१३९ क्रियाः । ,,
१४० ऊर्ध्वादितापः । ४६२
१४१ ऊर्ध्वोत्पन्नत्वादि । ,,
१४२ असूर्ये स्थितिः विरहादि च। ४६३
१४३ चन्द्रस्य मण्डलम् । ४६४
१४४ ,, क्षेत्रम् । ,,
१४५ चन्द्रयोरबाधाः । ,,
१४६ चंद्रस्यायामः । ,,
१४७ चन्द्रमण्डलाबाधा। ४६६
१४८ चंन्द्रमण्डलायामादि । ४६८
१४९ चन्द्रमुहूर्त्तगतिः । ४७०
१५० नक्षत्रमण्डलादि । ४७४
१५१ सूर्यादेरीशान्यादावुद्गमादिः । ४७१
१५२, ८५-९०* संवत्सरभेदाः । ४८५
१५३, ९१-९९* संवत्सरेषु पंचसु मास-पक्षादिनामानि । ४९०
१५४ करणाधिकारः । ४९३
१५५ संवत्सराद्यधिकारः। ४९४
१५६, १००* नक्षत्राधिकारः । ४९५
१५७, १०१* दक्षिणादियोगाधिकारः । ४९६
१५८ नक्षत्रदेवाः । ४९८
१५९, १०२-१०३* ताराणां संख्या । ,,
१६०, १०४-११०* नक्षत्रगोत्रसंस्थाने । ५००
१६१, १११-११८* नक्षत्रचन्द्रसूर्य-योगकालः । ५०१
१६२, ११९* कुलादिपूर्णिमामावास्याः । ५०४
१६३, १२०* मासंसमापकनक्षत्रवृन्दम् । ५१५
१६४, १२१-१२२* अणुत्वादि । ५२१
१६५ परिवारः । ,,
१६६ अवाधाः । ,,
१६७, १२३-१२५* अभ्यन्तरसंस्थान-विस्तारादि । ५२४
१६८, १२६-१२७* चन्द्रादिविमान-

जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७७ ॥



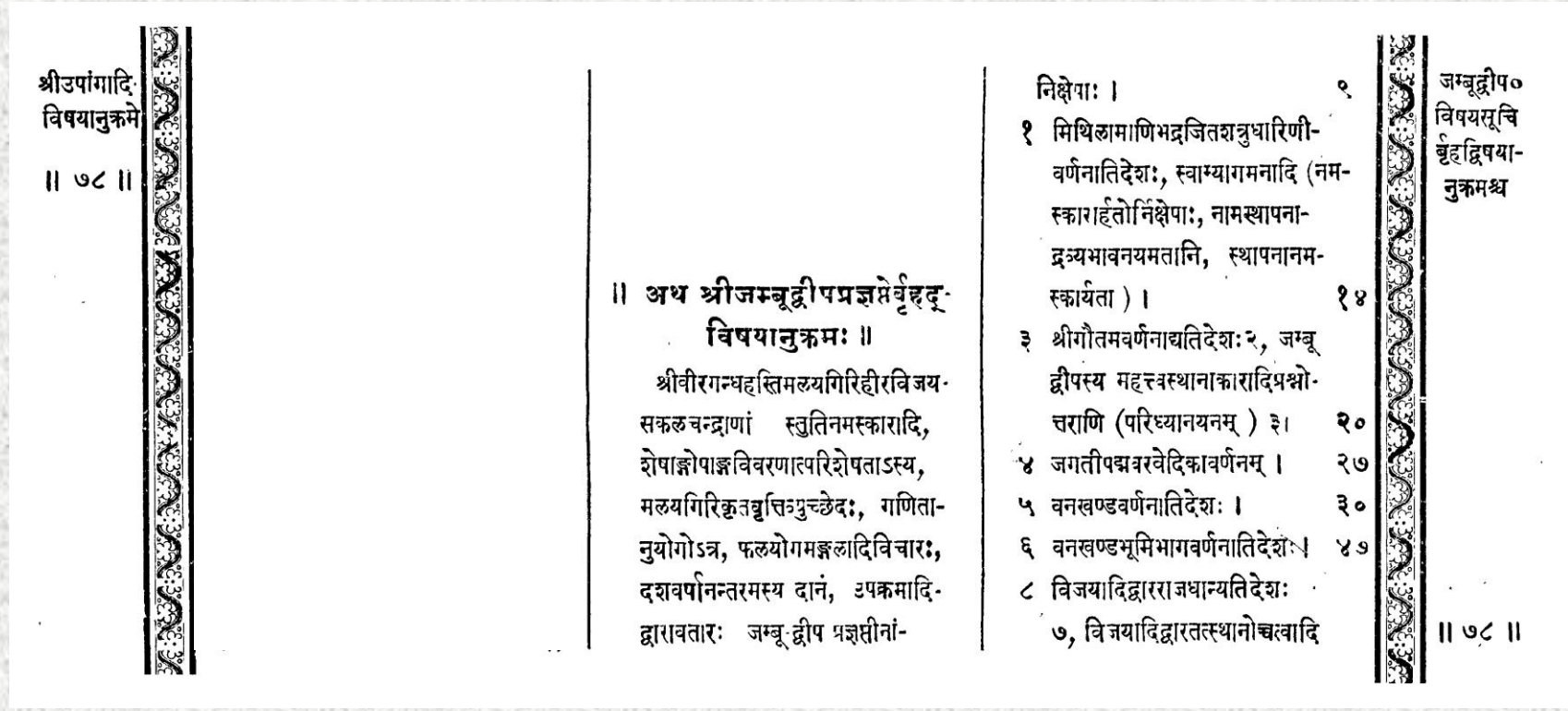
श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे

॥ ७८ ॥

वाहकाः। ५२६
१६९ ज्योतिष्कगतिः। ५३१
१७० ज्योतिष्काणामृद्धिः। ,,
१७१ तारकान्तराणि। ,,
१७२, १२८-१२९* अग्रमहिष्यो ग्रहाश्च। ५३२
१७३ स्थितिः। ,,
१७४, १३०-१३१* नक्षत्राधिष्ठातारः। ५३५
१७५ चन्द्राद्यल्पबहुत्वम्। ५३६
१७६ द्वीपेजघन्योत्कृष्टजिनादिसंख्या ,,
१७७ द्वीपस्योद्वेधाः। ५३८
१७८ शाश्वतत्वादि। ,,
१७९ परिणामाः। ,,
१८० द्वीपनामहेतुः। ५४०
१८१ उपसंहारः। ,,
॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः॥
॥ इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः॥

जम्बूद्वीप० विषयसूचि बृहद्विषयानुक्रमश्च

॥ ७८ ॥



श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे

॥ ७८ ॥

॥ अथ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्बृहद्-विषयानुक्रमः ॥

श्रीवीरगन्धहस्तिमलयगिरिहीरविजय-सकलचन्द्राणां स्तुतिनमस्कारादि, शेषाङ्गोपाङ्गविवरणात्परिशेषताऽस्य, मलयगिरिकृतवृत्तिरुच्छेदः, गणितानुयोगोऽत्र, फलयोगमङ्गलादिविचारः, दशवर्षानन्तरमस्य दानं, उपक्रमादि-द्वारावतारः जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तीनां-

निक्षेपाः । ९
१ मिथिलामाणिभद्रजितशत्रुधारिणी-वर्णनातिदेशः, स्वाम्यागमनादि (नमस्कारार्हतोर्निक्षेपाः, नामस्थापनाद्रव्यभावनयमतानि, स्थापनानमस्कार्यता) । १४
३ श्रीगौतमवर्णनाद्यतिदेशः२, जम्बूद्वीपस्य महत्त्वस्थानाकारादिप्रश्नोत्तराणि (परिध्यानयनम्) ३। २०
४ जगतीपद्मवरवेदिकावर्णनम् । २७
५ वनखण्डवर्णनातिदेशः । ३०
६ वनखण्डभूमिभागवर्णनातिदेशः । ४७
८ विजयादिद्वारराजधान्यतिदेशः ७, विजयादिद्वारतत्स्थानोच्चत्वादि

जम्बूद्वीप० विषयसूचि बृहद्विषयानुक्रमश्च

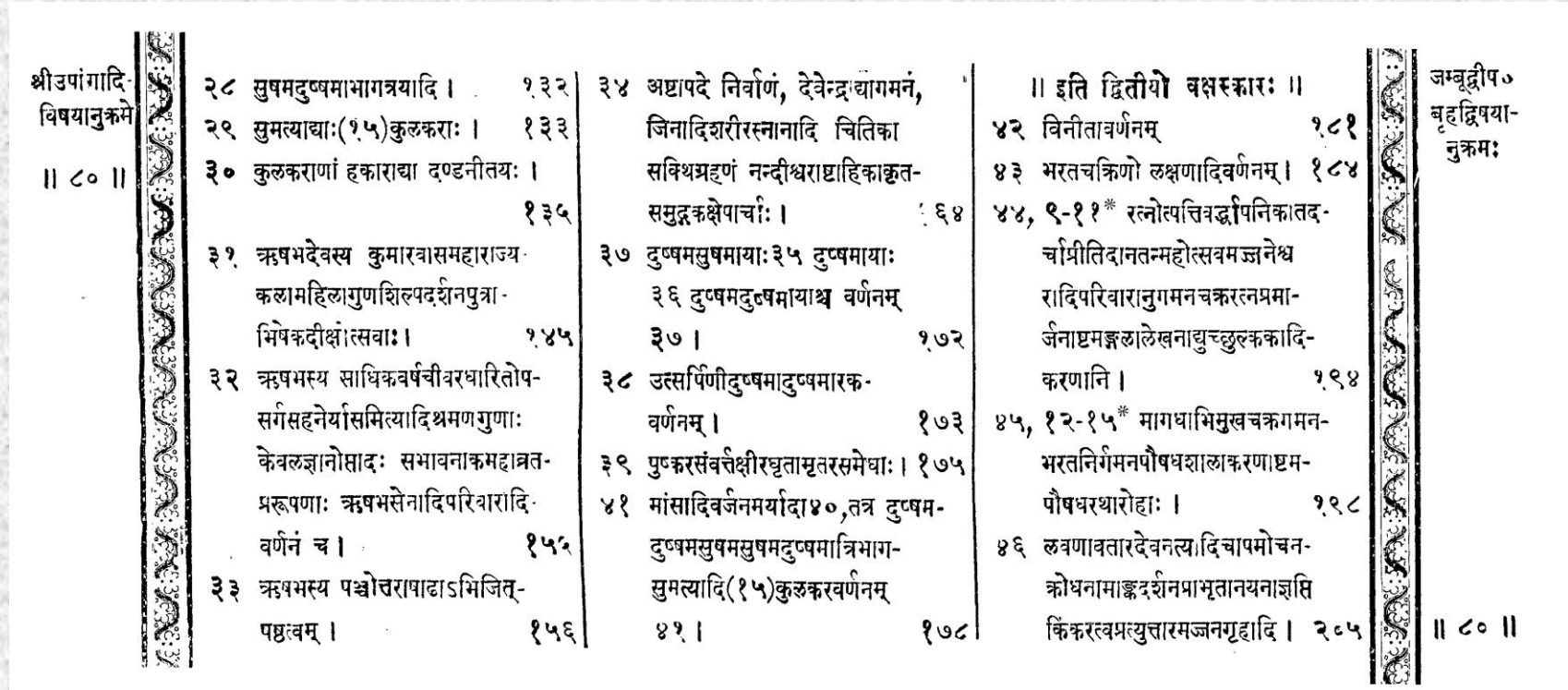
॥ ७८ ॥

श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७९ ॥

वर्णनातिदेश: ८। ६५
९, १* परस्परं द्वाराणामबाधा। ,,
१० भरतक्षेत्रस्थानस्वरूपाकारविभागाः। ६७
११ दक्षिणार्द्धभरतविभागायामादि भूमिभागतन्मनुजवर्णनं च। ७०
१२ वैताढ्यस्य स्थानायामादिवनखण्ड-गुहाविद्याधरश्रेणिनगरतन्मनुजाभियोग्यश्रेणिदेवशिखरतलकूटसङ्ख्याः। ७७
१३ सिद्धायतनकूटदेवच्छन्दकजिनप्रतिमावर्णनादि। ८२
१४, २३* दक्षिणार्द्धभरतकूटादितद्वासिदेवराजधान्यादिवर्णनादि। ८४
१६ वैताढ्यस्यान्वर्थतद्देवनामशाश्वतत्वानि१५, उत्तरभरतार्द्धस्थानाकारभागायामाकारमनुष्याकाराः१६, (जीवानयनयनरीतिर्जीवा च)। ८६
१७ ऋषभकूटवर्णनम्। ८८
॥ इति प्रथमो वक्षस्कारः ॥
१८, ४-६* सुषमसुषमाद्याः कालभेदाः, शीर्षप्रहेलिकान्तानां कालानां वर्णनं च। ९२
१९, ७८-* निश्चयव्यवहारपरमाणोरारभ्य योजनान्तानां पल्योपमसागरोपमादीनां च निरूपणम्। ९३
२० भरतसुषमसुषमारकस्य वर्णनम्। ९९
२१ मत्ताङ्गादिकल्पवृक्षवर्णनातिदेशः। १०८
२२ भरते सुषमसुषमारकनरवर्णनम्। ११८
२३ तन्मनुजानामाहारार्थास्वादौ। ११९
२५ तद्वसतिः२४,गृहग्रामासिहिरण्यराजदासाभ्रातृरिमित्राद्याधेन्द्रमहनट-प्रेक्षाशकटगवाश्वसिंहशार्दूलाहिस्थाणुदंशमशकडिम्बदुर्भूतादिभावाभावविचारः २५। १२५
२६ तद्युग्मिनामायुरुच्चत्वसंहननसंस्थानगतियुगलप्रसवाः पद्मगन्धादि(६)-भेदाश्च। १२८
२७ द्वितीयारकतद्युग्म्युच्चत्वादि, एकादि(४)भेदाश्च। १३१

जम्बूद्वीप० बृहद्विषयानुक्रमः

॥ ७९ ॥



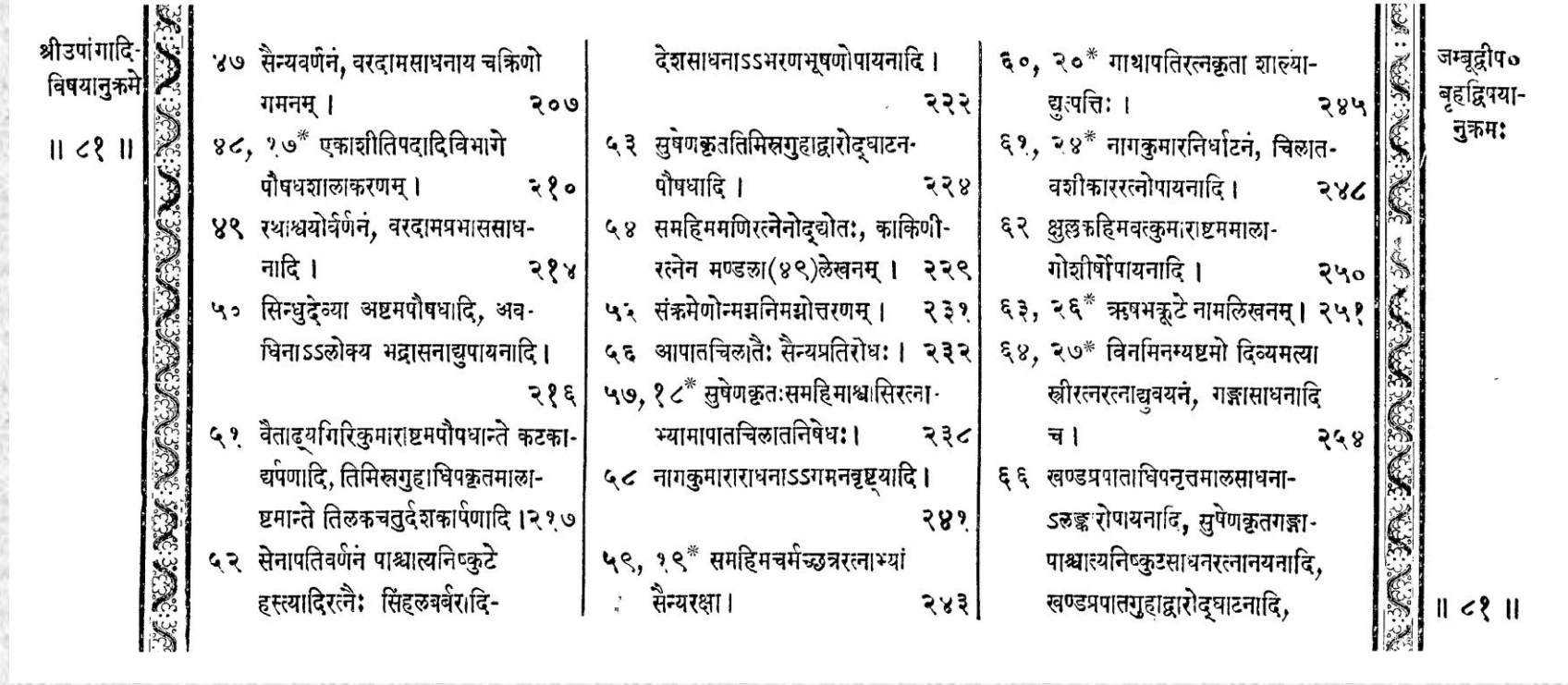
श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे

॥ ८० ॥

२८ सुषमदुष्षमाभागत्रयादि। १३२
२९ सुमत्याद्याः(१५)कुलकराः। १३३
३० कुलकराणां हकाराद्या दण्डनीतयः। १३५
३१ ऋषभदेवस्य कुमारवासमहाराज्य-कलामहिलागुणशिल्पदर्शनपुत्राभिषेकदीक्षोत्सवाः। १४५
३२ ऋषभस्य साधिकवर्षचीवरधारितोपसर्गसहनेर्यासमित्यादिश्रमणगुणाः केवलज्ञानोत्पादः सभावनाकमहाव्रतप्ररूपणाः ऋषभसेनादिपरिवारादिवर्णनं च। १५२
३३ ऋषभस्य पञ्चोत्तराषाढाऽभिजित्-षष्ठत्वम्। १५६
३४ अष्टापदे निर्वाणं, देवेन्द्राद्यागमनं, जिनादिशरीरस्नानादि चितिका सक्थिग्रहणं नन्दीश्वराष्टाहिकाकृतसमुद्गकक्षेपार्चाः। १६४
३७ दुष्षमसुषमायाः३५ दुष्षमायाः ३६ दुष्षमदुष्षमायाश्च वर्णनम् ३७। १७२
३८ उत्सर्पिणीदुष्षमादुष्षमारकवर्णनम्। १७३
३९ पुष्करसंवर्त्तक्षीरघृतामृतरसमेघाः। १७५
४१ मांसादिवर्जनमर्यादा४०,तत्र दुष्षम-दुष्षमसुषमसुषमदुष्षमात्रिभाग-सुमत्यादि(१५)कुलकरवर्णनम् ४१। १७८
॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥
४२ विनीतावर्णनम् १८१
४३ भरतचक्रिणो लक्षणादिवर्णनम्। १८४
४४, ९-११* रत्नोत्पत्तिवर्द्धापनिकातदर्चाप्रीतिदानतन्महोत्सवमज्जनेश्वरादिपरिवारानुगमनचक्ररत्नप्रमार्जनाष्टमङ्गलालेखनाद्युच्छुल्लककादिकरणानि। १९४
४५, १२-१५* मागधाभिमुखचक्रगमन-भरतनिर्गमनपौषधशालाकरणाष्टम-पौषधरथारोहाः। १९८
४६ लवणावतारदेवनत्यादिचापमोचन-क्रोधनामाङ्कदर्शनप्राभृतानयनाज्ञप्ति किंकरत्वप्रत्युत्तारमज्जनगृहादि। २०५

जम्बूद्वीप० बृहद्विषयानुक्रमः

॥ ८० ॥



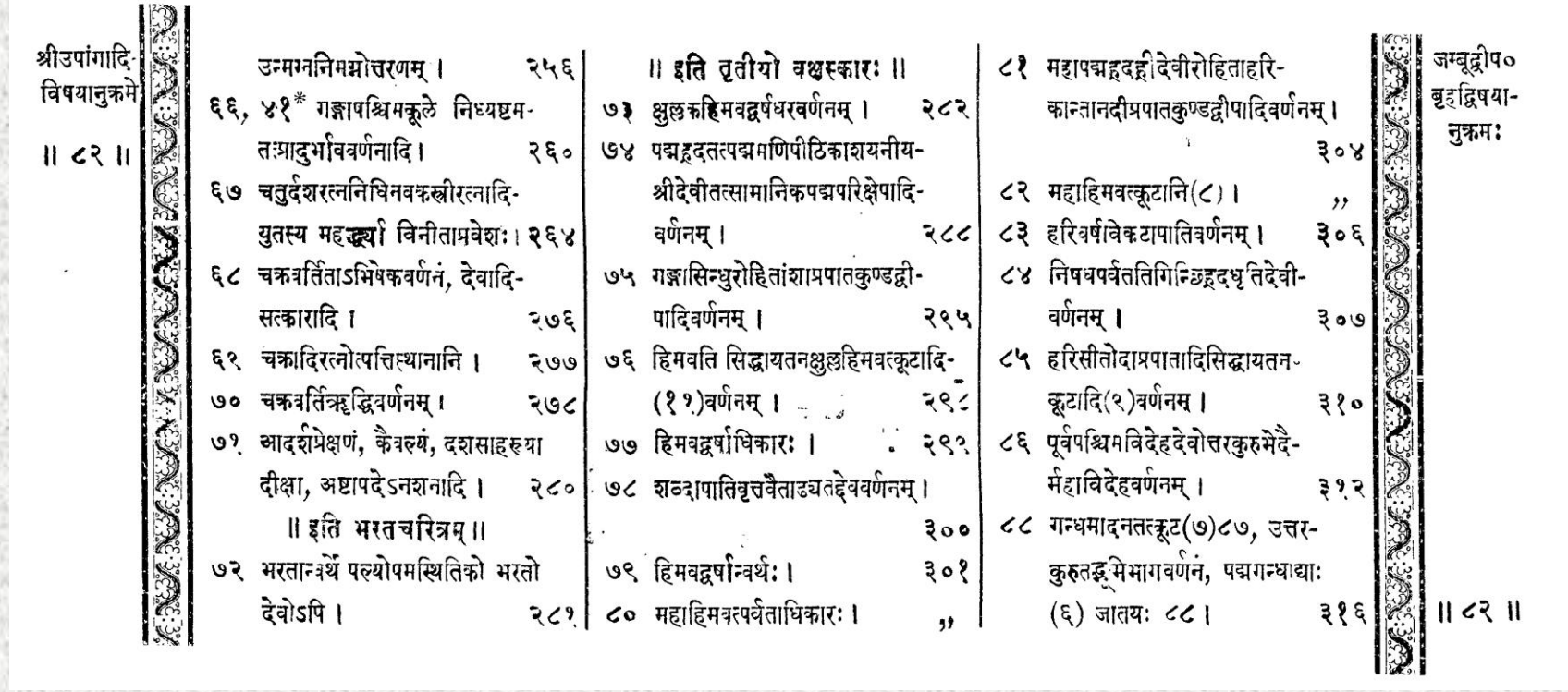
श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे

॥ ८१ ॥

४७ सैन्यवर्णनं, वरदामसाधनाय चक्रिणो गमनम् । २०७
४८, १७* एकाशीतिपदादिविभागे पौषधशालाकरणम् । २१०
४९ रथाश्वयोर्वर्णनं, वरदामप्रभाससाधनादि । २१४
५० सिन्धुदेव्या अष्टमपौषधादि, अवधिनाऽऽलोक्य भद्रासनाद्युपायनादि । २१६
५१ वैताढ्यगिरिकुमाराष्टमपौषधान्ते कटकाद्यर्पणादि, तिमिस्रगुहाधिपकृतमालाष्टमान्ते तिलकचतुर्दशकार्पणादि । २१७
५२ सेनापतिवर्णनं पाश्चात्यनिष्कुटे हस्त्यादिरत्नैः सिंहलबर्बरादिदेशसाधनाऽऽभरणभूषणोपायनादि । २२२
५३ सुषेणकृततिमिस्रगुहाद्वारोद्घाटनपौषधादि । २२४
५४ समहिममणिरत्नेनोद्द्योतः, काकिणीरत्नेन मण्डला(४९)लेखनम् । २२९
५५ संक्रमेणोन्मग्ननिमग्नोत्तरणम् । २३१
५६ आपातचिलातैः सैन्यप्रतिरोधः । २३२
५७, १८* सुषेणकृतःसमहिमाश्वासिरत्नाभ्यामापातचिलातनिषेधः । २३८
५८ नागकुमाराराधनाऽऽगमनवृष्ट्यादि । २४१
५९, १९* समहिमचर्मच्छत्ररत्नाभ्यां सैन्यरक्षा । २४३
६०, २०* गाथापतिरत्नकृता शाल्याद्युत्पत्तिः । २४५
६१, २४* नागकुमारनिर्घाटनं, चिलातवशीकाररत्नोपायनादि । २४८
६२ क्षुल्लकहिमवत्कुमाराष्टममालागोशीर्षोपायनादि । २५०
६३, २६* ऋषभकूटे नामलिखनम् । २५१
६४, २७* विनमिनम्यष्टमो दिव्यमत्या स्त्रीरत्नरत्नाद्युवयनं, गङ्गासाधनादि च । २५४
६६ खण्डप्रपाताधिपनृत्तमालसाधनाऽलङ्कारोपायनादि, सुषेणकृतगङ्गापाश्चात्यनिष्कुटसाधनरत्नानयनादि, खण्डप्रपातगुहाद्वारोद्घाटनादि,

जम्बूद्वीप० बृहद्विषयानुक्रमः

॥ ८१ ॥

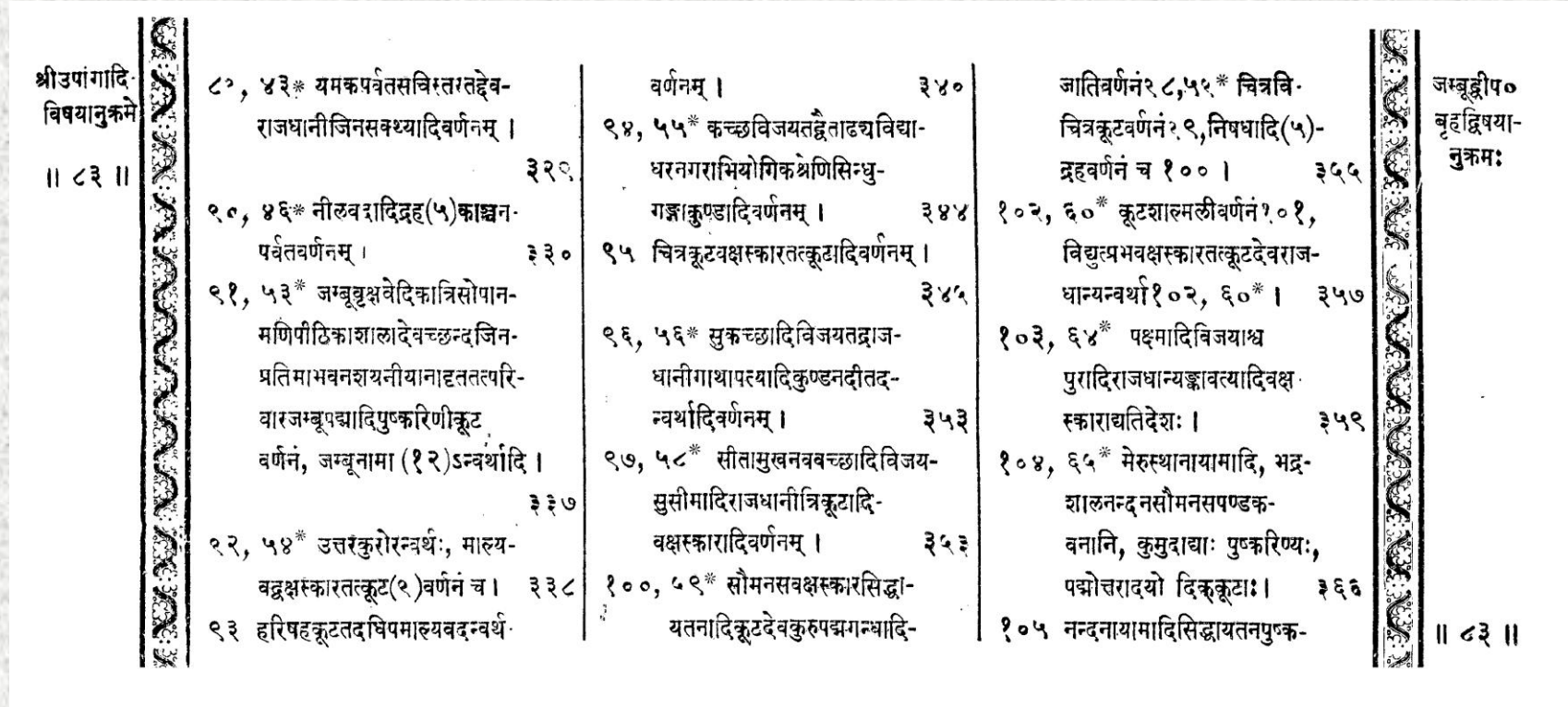


श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ८२ ॥

उन्मग्ननिमग्नोत्तरणम् । २५६
६६, ४१* गङ्गापश्चिमकूले निध्यष्टम-तत्रादुर्भाववर्णनादि। २६०
६७ चतुर्दशरत्ननिधिनवकश्रीरत्नादि-युतस्य महर्द्ध्या विनीताप्रवेशः। २६४
६८ चक्रवर्तिताऽभिषेकवर्णनं, देवादि-सत्कारादि । २७६
६९ चक्रादिरत्नोत्पत्तिस्थानानि । २७७
७० चक्रवर्तिऋद्धिवर्णनम् । २७८
७१ आदर्शप्रेक्षणं, कैवल्यं, दशसाहस्र्या दीक्षा, अष्टापदेऽनशनादि । २८०
॥ इति भरतचरित्रम् ॥
७२ भरतान्वर्थे पल्योपमस्थितिको भरतो देवोऽपि । २८१
॥ इति तृतीयो वक्षस्कारः ॥
७३ क्षुल्लकहिमवद्वर्षधरवर्णनम् । २८२
७४ पद्महृदतत्पद्ममणिपीठिकाशयनीय-श्रीदेवीतत्सामानिकपद्मपरिक्षेपादि-वर्णनम् । २८८
७५ गङ्गासिन्धुरोहितांशाप्रपातकुण्डद्वी-पादिवर्णनम् । २९५
७६ हिमवति सिद्धायतनक्षुल्लहिमवत्कूटादि-(११)वर्णनम् । २९८
७७ हिमवद्वर्षाधिकारः । २९९
७८ शब्दापातिवृत्तवैताढ्यतद्देववर्णनम् । ३००
७९ हिमवद्वर्षान्वर्थः । ३०१
८० महाहिमवत्पर्वताधिकारः । ,,
८१ महापद्महृदह्रीदेवीरोहिताहरि-कान्तानदीप्रपातकुण्डद्वीपादिवर्णनम् । ३०४
८२ महाहिमवत्कूटानि(८) । ,,
८३ हरिवर्षावेकटापातिवर्णनम् । ३०६
८४ निषधपर्वततिगिञ्छिह्रदधृतिदेवी-वर्णनम् । ३०७
८५ हरिसीतोदाप्रपातादिसिद्धायतन-कूटादि(९)वर्णनम् । ३१०
८६ पूर्वपश्चिमविदेहदेवोत्तरकुरुभेदै-र्महाविदेहवर्णनम् । ३१२
८८ गन्धमादनतत्कूट(७)८७, उत्तर-कुरुतद्भूमेभागवर्णनं, पद्मगन्धाद्या: (६) जातय: ८८। ३१६

जम्बूद्वीप० बृहद्विषया-नुक्रमः

॥ ८२ ॥



श्रीउपांगादिविषयानुक्रमे

॥ ८३ ॥

८०, ४३* यमकपर्वतसचिस्तरतद्देवराजधानीजिनसक्थ्यादिवर्णनम् । ३२९

९०, ४६* नीलवदादिद्रह(५)काञ्चनपर्वतवर्णनम् । ३३०

९१, ५३* जम्बूवृक्षवेदिकात्रिसोपानमणिपीठिकाशालादेवच्छन्दजिनप्रतिमाभवनशयनीयानाद्दततत्परिवारजम्बूपद्मादिपुष्करिणीकूटवर्णनं, जम्बूनामा (१२)ऽन्वर्थादि । ३३७

९२, ५४* उत्तरकुरोरन्वर्थः, माल्यवद्वक्षस्कारतत्कूट(९)वर्णनं च । ३३८

९३ हरिषहकूटतदधिपमाल्यवदन्वर्थवर्णनम् । ३४०

९४, ५५* कच्छविजयतद्वैताढ्यविद्याधरनगराभियोगिकश्रेणिसिन्धुगङ्गाकुण्डादिवर्णनम् । ३४४

९५ चित्रकूटवक्षस्कारतत्कूटादिवर्णनम् । ३४५

९६, ५६* सुकच्छादिविजयतद्राजधानीगाथापत्यादिकुण्डनदीतदन्वर्थादिवर्णनम् । ३५३

९७, ५८* सीतामुखनवच्छादिविजयसुसीमादिराजधानीत्रिकूटादिवक्षस्कारादिवर्णनम् । ३५३

१००, ५९* सौमनसवक्षस्कारसिद्धायतनादिकूटदेवकुरुपद्मगन्धादिजातिवर्णनं२८,५५* चित्रविचित्रकूटवर्णनं२९,निषधादि(५)द्रहवर्णनं च १०० । ३५५

१०२, ६०* कूटशाल्मलीवर्णनं१०१, विद्युत्प्रभवक्षस्कारतत्कूटदेवराजधान्यन्वर्था१०२, ६०* । ३५७

१०३, ६४* पक्ष्मादिविजयाश्च पुरादिराजधान्यङ्कावत्यादिवक्षस्कारातिदेशः । ३५९

१०४, ६५* मेरुस्थानायामादि, भद्रशालनन्दनसौमनसपण्डकवनानि, कुमुदाद्याः पुष्करिण्यः, पद्मोत्तरादयो दिक्कूटाः । ३६६

१०५ नन्दनायामादिसिद्धायतनपुष्क-

जम्बूद्वीप० बृहद्विषयानुक्रमः

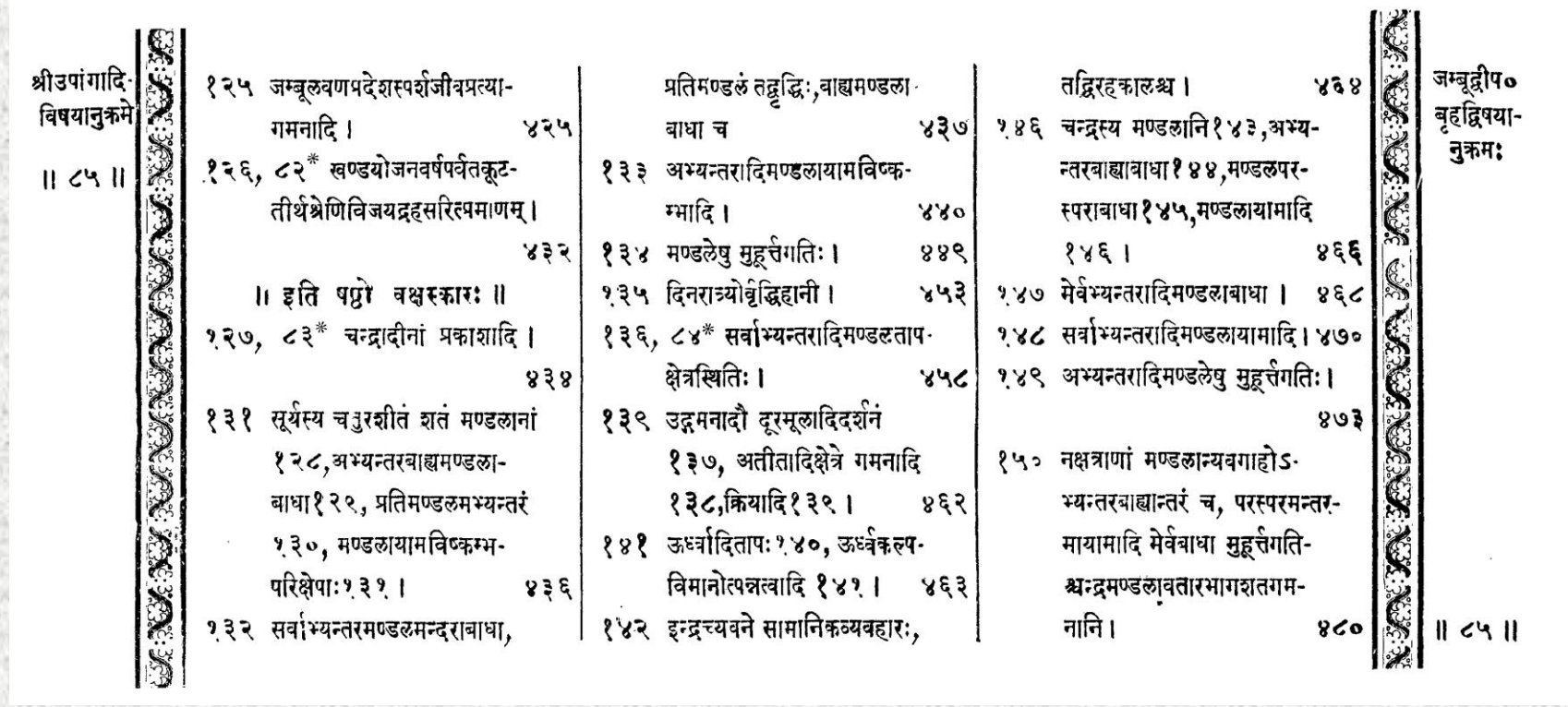
॥ ८३ ॥

श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ८४ ॥

रिणीनन्दनादि(९)कूटानि । ३६९
१०६ सौमनसायामादि । ३७०
१०७ पण्डकचूलिकायामादि । ३७१
१०८ पाण्डुशिलाद्यभिषेकशिलाः । ३७४
१०९ मेरोः काण्डत्रयस्य स्वरूपम् । ३७५
११०, ६७* मेरोर्नामान्यन्वर्थश्च । ३७६
१११, ६८* नील-द्वर्षधरसीतानारी-कान्तानदीसिद्धायतनादि(९)कूट-तदन्वर्थाः । ३७८
११२, ६९* रम्यकगन्धापातिरुक्मि-तत्कूट(८)हैरण्यवतमाल्यवन्त-वृत्तवैताढ्यशिखरितत्कूटैरावत-स्वरूपतदन्वर्थाः । ३८२
॥ इति चतुर्थो वक्षस्कारः ॥
११३, ७०* जिनजन्माभिषेके भोगंकरा-द्यधोलोकवास्तव्यदिक्कुमारी-कृत्यम् । ३८८
११४, ७१* मेघंकराद्यूर्ध्वलोकदिक्कुमारी-कृत्यम् । ३९०
११५, ७५* नन्दोत्तरासमाहारेला-देव्यलाम्बुषादि(३२)पूर्वादिदिक्-चित्रारूपादि(८) विदिग्मध्य-रुचकदिक्कुमारीकृत्यम् । ३९५
११६ शक्रेन्द्रासनकम्पस्तुतिमहिम-चिकीर्षादेवाह्वानोद्घोषणापालक-यानविकुर्वणादेशः । ३९९
११७ पालकविमानरचना । ४०१
११८ शक्रसामानिकादिनिर्गमप्रति-रूपकस्थापनमेरुनयनानि । ४०५
११९, ७८* ईशानादि(९)देवेन्द्रा-गमनम् । ४०७
१२०, ७९* चमरबलीन्द्राद्यागमनम् । ४०९
१२१ अभिषेकसामग्र्यानयनम् । ४१२
१२२ अभिषेकहिरण्यवृष्ट्यादिवाद्यगेय-नृत्यादि । ४१९
१२३, ८०* अलङ्कारविभूषाऽष्टमङ्गला-लेखन, स्तुतिः, वृषभशृङ्गै-रभिषेकश्च । ४२२
१२४ जिनस्य प्रत्यानयनं, हिरण्यादि-वृष्टिरशुभचिन्तननिरोधोद्घोष-णामष्टाह्निका च । ४२४
॥ इति पञ्चमो वक्षस्कारः ॥

जम्बूद्वीप० बृहद्विषया-नुक्रमः

॥ ८४ ॥



श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ८५ ॥

१२५ जम्बूलवणप्रदेशस्पर्शजीवप्रत्यागमनादि। ४२५
१२६, ८२* खण्डयोजनवर्षपर्वततकूटतीर्थश्रेणिविजयद्रहसरित्प्रमाणम्। ४३२
॥ इति षष्ठो वक्षस्कारः ॥
१२७, ८३* चन्द्रादीनां प्रकाशादि। ४३४
१३१ सूर्यस्य चतुरशीतं शतं मण्डलानां १२८, अभ्यन्तरबाह्यमण्डलाबाधा १२९, प्रतिमण्डलमभ्यन्तरं १३०, मण्डलायामविष्कम्भपरिक्षेपाः १३१। ४३६
१३२ सर्वाभ्यन्तरमण्डलमन्दराबाधा, प्रतिमण्डलं तद्वृद्धिः, बाह्यमण्डलाबाधा च ४३७
१३३ अभ्यन्तरादिमण्डलायामविष्कम्भादि। ४४०
१३४ मण्डलेषु मुहूर्त्तगतिः। ४४९
१३५ दिनरात्र्योर्वृद्धिहानी। ४५३
१३६, ८४* सर्वाभ्यन्तरादिमण्डलतापक्षेत्रस्थितिः। ४५८
१३९ उद्गमनादौ दूरमूलादिदर्शनं १३७, अतीतादिक्षेत्रे गमनादि १३८, क्रियादि १३९। ४६२
१४१ ऊर्ध्वादितापः १४०, ऊर्ध्वकल्पविमानोत्पन्नत्वादि १४१। ४६३
१४२ इन्द्रच्यवने सामानिकव्यवहारः, तद्विरहकालश्च। ४६४
१४६ चन्द्रस्य मण्डलानि १४३, अभ्यन्तरबाह्याबाधा १४४, मण्डलपरस्पराबाधा १४५, मण्डलायामादि १४६। ४६६
१४७ मेर्वभ्यन्तरादिमण्डलाबाधा। ४६८
१४८ सर्वाभ्यन्तरादिमण्डलायामादि। ४७०
१४९ अभ्यन्तरादिमण्डलेषु मुहूर्त्तगतिः। ४७३
१५० नक्षत्राणां मण्डलान्यवगाहोऽभ्यन्तरबाह्यान्तरं च, परस्परमन्तरमायामादि मेर्वबाधा मुहूर्त्तगतिश्चन्द्रमण्डलावतारभागशतगमनानि। ४८०

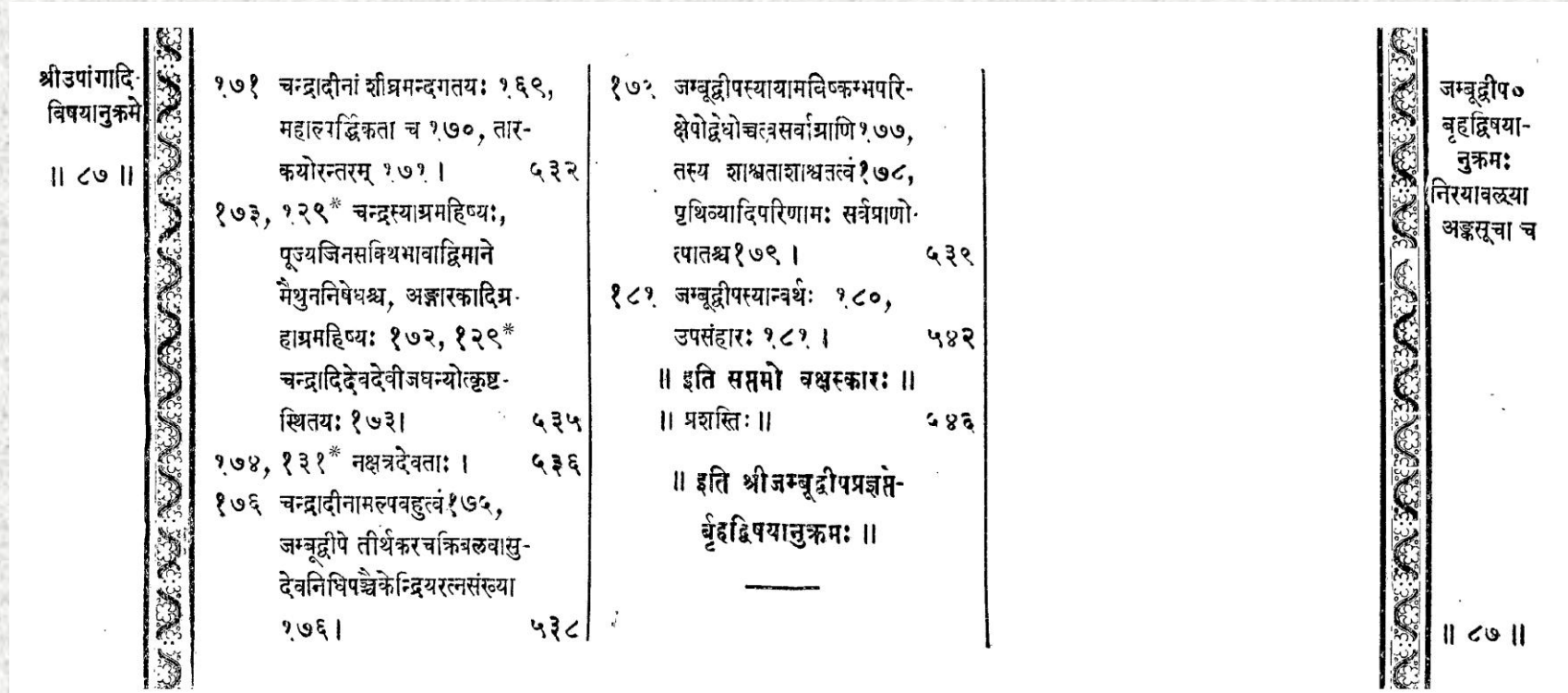
जम्बूद्वीप० बृहद्विषयानुक्रमः ॥ ८५ ॥

श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ८६ ॥

१५१ चन्द्रसूर्ययोरुदक्प्राच्युद्गमनादि-(दिनरात्रिमानाद्यतिदेशः)। ४८५
१५२, ९०* नक्षत्रादिसंवत्सरतन्मास-पर्वलक्षणानि । ४९०
१५३, ९९* लौकिकलोकोत्तरमास-पक्षदिवसतत्तिथिरात्रितत्तिथि मुहूर्त्तनामानि । ४९३
१५४ बवादीनि चलस्थिरकरणानि तत्तिथिनियमश्च । ४९४
१५५ संवत्सरादिषु चन्द्रादयः, युगेऽयनादिमानं च । ४९५
१००* योगादि(१०)द्वारगाथा । ४९५
१५६ नक्षत्रनामानि । ४९६
१५७, १०१* नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरादियोगः । ४९८
१५९, १०३* अभिजिदादीनां देवता १५८तारकाणि च १५९, १०३* । ५००
१६०, ११०* नक्षत्राणां गोत्राणि १०७*, संस्थानानि११०*, १११० । ५०१
१६१, ११८* अभिजिदादीनां चन्द्र-सूर्याभ्यां सह योगकालमानम् । ५०४
१६२, ११९* कुलोपकुलतदुभयानि पूर्णिमाऽमावास्यातन्नक्षत्रकुलो-पकुलादियोगाः । ५१३
१६३, १२०* श्रावणादिषूत्तराषाढादि-नयनदिनमानपौरुषीमानानि योगादिसङ्ग्रहगाथा च । ५२१
१६६, १२२* अधस्तनादित्थान-शशिपरिवारादिसङ्ग्रहगाथे १२२* चन्द्रसूर्ययोरधस्तना-दिषु तारकाः१६४, अष्टाशीति-ग्रहादिनामानि परिवारः१६५, मन्दरधरणीतलपरस्परज्योति-श्चक्रव्यबाधा१६६ । ५२४
१६७, १२७* बाह्याभ्यन्तरोपर्यधो-नक्षत्रचारश्चन्द्रसंस्थानादि च । ५२५
१६८, १२७* चन्द्रविमानवाहकदेव-वर्णनम् । ५३१

जम्बूद्वीप० बृहद्विषया-नुक्रमः

॥ ८६ ॥



श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे

॥ ८७ ॥

१७१ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतयः १६९, महाल्पर्द्धिकता च १७०, तारकयोरन्तरम् १७१। ५३२

१७३, १२९* चन्द्रस्याग्रमहिष्यः, पूज्यजिनसक्थिभावाद्विमाने मैथुननिषेधश्च, अङ्गारकादिग्रहाग्रमहिष्यः १७२, १२९* चन्द्रादिदेवदेवीजघन्योत्कृष्टस्थितयः १७३। ५३५

१७४, १३१* नक्षत्रदेवताः। ५३६

१७६ चन्द्रादीनामल्पबहुत्वं १७५, जम्बूद्वीपे तीर्थकरचक्रिबलवासुदेवनिधिपञ्चैकेन्द्रियरत्नसंख्या १७६। ५३८

१७७ जम्बूद्वीपस्यायामविष्कम्भपरिक्षेपोद्वेधोच्चत्वसर्वाग्राणि १७७, तस्य शाश्वताशाश्वतत्वं १७८, पृथिव्यादिपरिणामः सर्वप्राणोत्पातश्च १७९। ५३९

१८१ जम्बूद्वीपस्यान्वर्थः १८०, उपसंहारः १८१। ५४२

॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥

॥ प्रशस्तिः ॥ ५४६

॥ इति श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्बृहद्विषयानुक्रमः ॥

जम्बूद्वीप० बृहद्विषयानुक्रमः निरयावल्या अङ्गसूचा च

॥ ८७ ॥

[भाग-4] उपांग-सूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[उपांगसूत्र- ८ से १२ "निरयावलिका-पंचक"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

[आगम १९-२३] उपांग ८-१२ "निरयावलिका-आदि पंचक"

अथ श्रीनिरयावलिकासूत्रस्य सूत्रतद्गाथासूचा सान्तशब्दा सूत्राणि ३१; सूत्रगाथाः ५

पत्राङ्क	पंक्तयङ्कः	शब्दान्तः	सूत्राङ्कः
१	१२	पुढविसिलापट्टए	१
२	१७	पडिगया	२
३	१	विहरति	३
३	२१	कण्हे १० उ	४
४	१९	सुरूवे	५
६	१७	ओयाए	६
९	५	पडिगया	७
९	९	उववन्ने	८
९	१७	अणुपविट्ठा	९
११	१८	परिवहति	१०
११	२४	परिवहति	११
१२	१३	संवड्ढेति	१२
१२	२४	दाओ	१३
१३	८	हव्वमागच्छति	१४
१४	६	होत्था	१५
१४	८	विहरति	१६
१७	३	निच्छुहावेइ	१७
१८	२५	उववन्ने	१८
१९	२	पन्नत्ते	१९
१९	११	भाणियव्वो तहा	२०
२०	८	त्तिबेमि ॥१॥	२१
२१	४	सम्मत्तो	२२
२३	५	निक्खेवओ ॥१॥	२३
२३	२०	,, ॥२॥	२४
२९	१०	निक्खेवओ ॥३॥	२५
३५	३०	पण्णत्ते ॥४॥	२६
३६	१४	निक्खेवओ ॥१॥	२७
३६	२२	सम्मत्तो ॥	२८
३८	२५	,,	२९
४२	१०	,,	३०
४२	१५	सम्मत्तं	३१

इति सूत्राङ्कसूचा

अथ सूत्रगाथाङ्कसूचा

१९	१६	परियत्ता ॥१॥	१
२९	२०	॥१॥	२
२६	२१	समादहे।	२॥
२७	१	समादहे ॥	३॥
३७	३	गंधदेवी य ॥१॥	४॥
३९	५	१२ य ॥१॥	१॥

॥ इति सूत्रगाथाङ्कसूचा ॥

इति निरयावलिकासूत्रस्य सूत्रतद्गाथाङ्क-सूचा ॥

॥ अथ श्रीनिरयावलिकाया बृहद्विषयानुक्रमः ॥

१ राजगृहनगरगुणशीलचैत्यादि-वर्णनातिदेशः । १
२ आर्यसुधर्मवर्णनाद्यतिदेशः केशिवत् । २
३ जम्बूस्वामिवर्णनातिदेशः । २
४ निरयावलिकाकल्पावतंसिकापुष्पिका-पुष्पचूलिकावृष्णिदशावर्गाः, निरयावलिकासु कालादी(१०)-न्यध्ययनानि । ३
५ चम्पापूर्णभद्रश्रेणिकपुत्रकोणिक-पद्मावतीकालीकालकुमारवर्णनाति-देशः । ५
६ कालस्य रथमुशलसङ्ग्रामे गमनम् । ६
७ श्रीवीरसमवसरणादि, प्रश्ने रथमुशल-युद्धे कालस्य कालकरणकथनम् । ९
८ कालस्य पङ्कप्रभायां हेमाभे दशसाग-रस्थितिकतयोत्पत्तिः । ,,
९ युद्धनिमित्तकथनेऽभयस्य वर्णने चित्र-स्यातिदेशः चेल्लणायाश्च प्रभावत्याः । ,,
१० गर्भागमनदोहदपूर्त्तिः । ११
११ गर्भस्यानाशः । ,,
१२ कोणिकजन्मोत्कुरुटिकायां त्यागः, श्रेणिकग्रहणं च । १२
१३ कोणिकाङ्गुलीवेधः, मुखे धरणमष्टको दायश्च । १२
१४ श्रेणिकबन्धनं, कोणिकस्य नृप-त्वं च । १३
१५ चेल्लणातुष्टिपृच्छा, स्वरूपकथनं परशुहस्तस्य गतिः, तालपुटभक्षणं, कोणिकविलापः, चम्पानिवेशश्च । १४
१६ कालादीनां राज्यभागदानम् । ,,
१७ विहल्लस्य सेचनकक्रीडा, हार-हस्तियुगलयाचनं, विशालागमनं, त्रिर्दूतप्रेषणम् । १७
१८ अर्द्धराज्यदानेऽर्पणोक्तिः, कालादीनामैकमत्यं, युद्धाय निर्गमः, गण-(१८)राजसभा, युद्धाय निर्गमः । १८
१९ कालस्य दृढप्रतिज्ञवद्विदेहेषु मुक्तिः । १९

॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥

२० सुकालकुमारवर्णनं, शेषाणा(८)-मतिदेशश्च । ,,

॥ इति निरयावलिकायाः प्रथमो वर्गः ॥

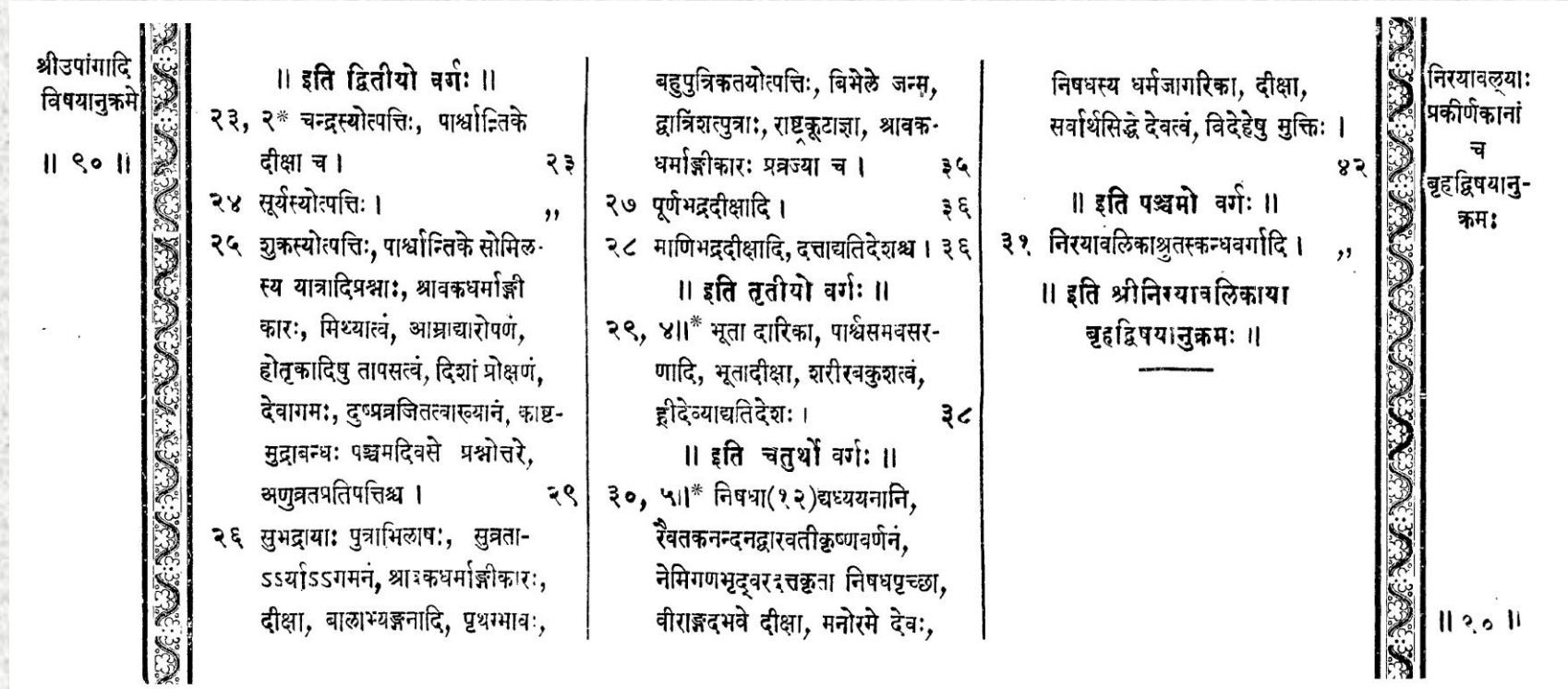
२१ पद्मादी(१०)न्यध्ययनानि, काल-पद्मावत्योः पुत्रः पद्मः, स्थविरान्ते दीक्षा, सौधर्मे देवत्वम् । २०
२२, १* सुकालपुत्रमहापद्मस्येशाने गतिः, शेषाण्यष्ट १* २१

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ९० ॥

॥ इति द्वितीयो वर्गः ॥

२३, २* चन्द्रस्योत्पत्तिः, पार्श्वान्तिके दीक्षा च। २३

२४ सूर्यस्योत्पत्तिः। ,,

२५ शुक्रस्योत्पत्तिः, पार्श्वान्तिके सोमिलस्य यात्रादिप्रश्नाः, श्रावकधर्माङ्गीकारः, मिथ्यात्वं, आम्राद्यारोपणं, होतृकादिषु तापसत्वं, दिशां प्रोक्षणं, देवागमः, दुष्प्रव्रजितत्वाख्यानं, काष्ठमुद्राबन्धः पञ्चमदिवसे प्रश्नोत्तरे, अणुव्रतप्रतिपत्तिश्च। २९

२६ सुभद्रायाः पुत्राभिलाषः, सुव्रतार्याऽऽगमनं, श्रावकधर्माङ्गीकारः, दीक्षा, बालाभ्यङ्गनादि, पृथग्भावः, बहुपुत्रिकतयोत्पत्तिः, बिभेले जन्म, द्वात्रिंशत्पुत्राः, राष्ट्रकूटाज्ञा, श्रावकधर्माङ्गीकारः प्रव्रज्या च। ३५

२७ पूर्णभद्रदीक्षादि। ३६

२८ माणिभद्रदीक्षादि, दत्ताद्यतिदेशश्च। ३६

॥ इति तृतीयो वर्गः ॥

२९, ४॥* भूता दारिका, पार्श्वसमवसरणादि, भूतादीक्षा, शरीरबकुशत्वं, ह्रीदेव्याद्यतिदेशः। ३८

॥ इति चतुर्थो वर्गः ॥

३०, ५॥* निषधा(१२)द्यध्ययनानि, रैवतकनन्दनद्वारवतीकृष्णवर्णनं, नेमिगणभृद्वरदत्तकृता निषधपृच्छा, वीराङ्गदभवे दीक्षा, मनोरमे देवः, निषधस्य धर्मजागरिका, दीक्षा, सर्वार्थसिद्धे देवत्वं, विदेहेषु मुक्तिः। ४२

॥ इति पञ्चमो वर्गः ॥

३१ निरयावलिकाश्रुतस्कन्धवर्गादि। ,,

॥ इति श्रीनिरयावलिकाया बृहद्विषयानुक्रमः ॥

निरयावल्याः प्रकीर्णकानां च बृहद्विषयानुक्रमः

॥ २० ॥

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित:
उपांग-सूत्र लघुबृहत् विषयानुक्रम: परिसमाप्त:

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

प्रकीर्णक-सूत्र बृहत् विषयानुक्रमः

[आगम-संबंधी-साहित्य]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

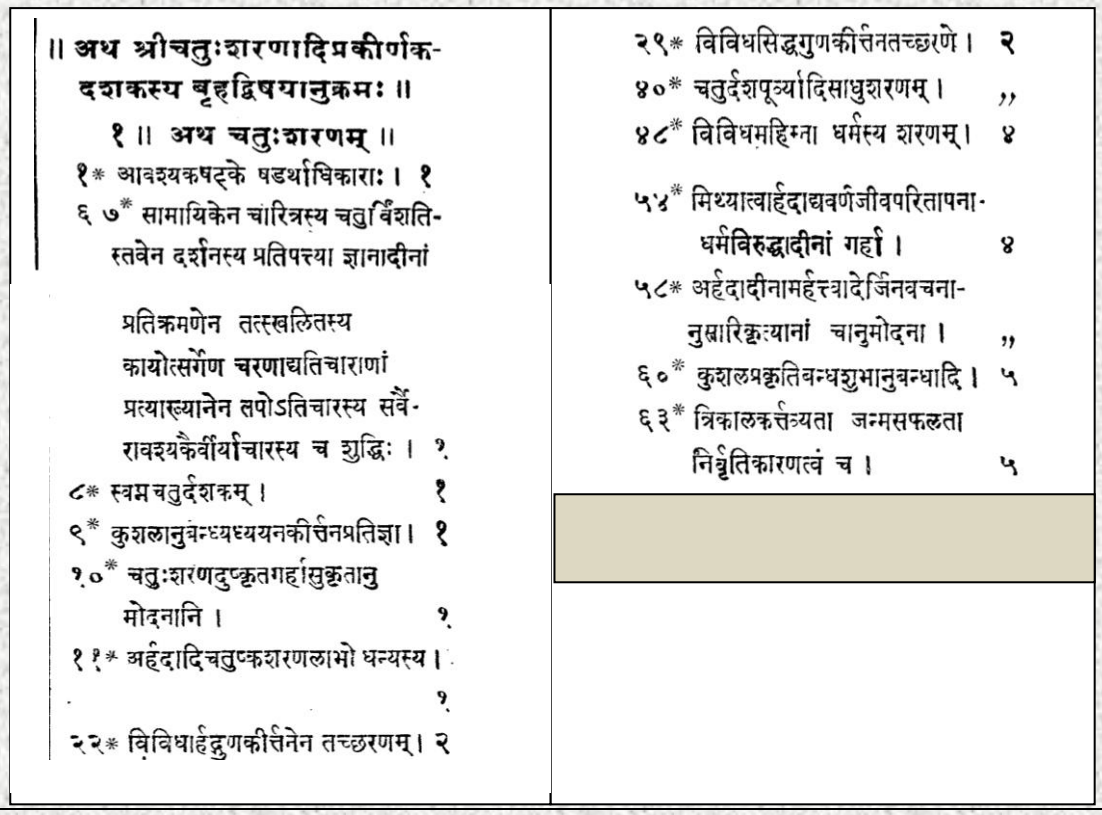
(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ jain_e_library's Net Publications

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

गम संबंधी	प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः [प्रकीर्णकसूत्र- १ "चतुःशरण"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)



॥ अथ श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णक-
दशकस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥

१ ॥ अथ चतुःशरणम् ॥

१* आवश्यकषट्के षडर्थाधिकाराः । १
६ ७* सामायिकेन चारित्रस्य चतुर्विंशति-
स्तवेन दर्शनस्य प्रतिपत्त्या ज्ञानादीनां
प्रतिक्रमणेन तत्स्खलितस्य
कायोत्सर्गेण चरणाद्यतिचाराणां
प्रत्याख्यानेन तपोऽतिचारस्य सर्वै-
रावश्यकैर्वीर्याचारस्य च शुद्धिः । १
८* स्वप्नचतुर्दशकम् । १
९* कुशलानुबन्ध्यध्ययनकीर्त्तनप्रतिज्ञा । १
१०* चतुःशरणदुष्कृतगर्हासुकृतानु
मोदनानि । १
११* अर्हदादिचतुष्कशरणलाभो धन्यस्य । १
२२* विविधार्हद्गुणकीर्त्तनेन तच्छरणम् । २
२९* विविधसिद्धगुणकीर्त्तनतच्छरणे । २
४०* चतुर्दशपूर्व्यादिसाधुशरणम् । ,,
४८* विविधमहिम्ना धर्मस्य शरणम् । ४
५४* मिथ्यात्वार्हदाद्यवर्णजीवपरितापना-
धर्मविरुद्धादीनां गर्हा । ४
५८* अर्हदादीनामर्हत्त्वादेर्जिनवचना-
नुसारिकृत्यानां चानुमोदना । ,,
६०* कुशलप्रकृतिबन्धशुभानुबन्धादि । ५
६३* त्रिकालकर्त्तव्यता जन्मसफलता
निर्वृतिकारणत्वं च । ५

[आगम-२४] प्रकीर्णक-१ "चतुःशरण"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- २ "आतुरप्रत्याख्यान"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ २ अथातुरप्रत्याख्यानम् ॥

६४* बालपण्डितमरणलक्षणम् । ,,
६५* देशविरतिलक्षणम् । ,,
६८* अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतानि । ,,
७०* बालपण्डितमरणे आशुकारमरणादिकारणानि। ५
७१* भक्तपरिज्ञोक्तोपक्रमातिदेशः । ५
७२* कल्पोपपत्त्यादि तत्फलम्। ५
७३* पण्डितपण्डितमरणोपक्रमः। ५
१. उत्तमार्थादिप्रतिक्रमणमज्ञानादि-ध्यानत्रिषष्टिप्रतिक्रमणं च । ६
७८* श्रीवर्द्धमानगणधरनमस्कारः, प्राणारम्भादिप्रत्याख्यानं, साम्यं, वैराशानां व्युत्सर्गः, समाधिपालनमाहार-सञ्ज्ञागौरवकषाययममत्वत्याग-क्षामणानि साकारप्रत्याख्यानं च। ७

८६* सिद्धनमस्कारः, तत्त्वश्रद्धा, पाप-प्रत्याख्यानं, संस्तारकप्रतिज्ञा, दुष्कृतव्युत्सर्गः, सामायिकोच्चारः, उपधिशरीरादिव्युत्सर्गः, साम्यादि, रागाद्युत्सर्गः, आत्मालम्बनं च। ७

८७* आत्मनो ज्ञानादिमयत्वम्। ७
९४* एकशस्यैवोत्पत्त्यादि, आत्मनः शाश्वतत्वं, संयोगमूलं दुःखं, मूलोत्तरगुणानाराधनाप्रतिक्रमणं, भयमदसञ्ज्ञागौरवाशातनारागद्वेषासंयमाज्ञानमिथ्यात्वममत्वनिन्दागर्हादि। ८
९५* बालवदालोचना । ,,
९६* आलोचकगुणाः। ,,
९७* अकृतज्ञताक्षामणम् । ,,
९८* बालादि(३)मरणत्रयलक्षणानि। ,,
९९* अनाराधकलक्षणानि । ,,
१०६* मरणविराधनायां कान्दर्पिकाद्या (५)देवदुर्गतयः, दुर्लभसुलभ-लक्षणम्। ८
१०७* जिनवचनाज्ञास्य बालमरणम्। ,,
१०९* शस्त्रग्रहणादीनि मरणानुबन्धीनि, पण्डितमरणप्रतिज्ञा। ९
११०* उद्वेजकजातिमरणवेदनास्मरणम्। ,,
१११* वेदनोत्पादे स्वभावदर्शनम् । ,,
११४* सर्वपुद्गलाहारादि, सरिद्भिर्लवणवत्कामभोगैरतृप्तिः, सचित्ताहारविपाकेक्षणम्। ,,
११८* परिकर्मण आवश्यकत्वम् । ,,
१२४* भवविमुक्तिलक्षणं, सर्वज्ञोपदेशः, वीतरागहेतुपदस्मृतिः, आराधनाफलम् । १०
१२६* श्रमणत्वसंयतत्वध्यानं, शेषव्युत्सर्गः, जिनवचोमार्गलाभः, मरणे निर्भयत्वम्। ,,

१२८* धीरकापुरुषसुशीलदुःशीलानां मरणम्। ,,
१२९* ज्ञानाद्युपयोगकारकस्य मुक्तिः। ,,
१३०* चिरोषितब्रह्मचर्यादिसिद्धिः। ,,
१३१* निष्कषायादेः शुभप्रत्याख्यानता । ,,
१३३* आतुरप्रत्याख्यानस्य फलमुपसंहारश्च। ,,

[आगम-२५] प्रकीर्णक-२ "आतुरप्रत्याख्यान"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ३ "महाप्रत्याख्यान"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ ३ अथ महाप्रत्याख्यानम् ॥

१५७* तीर्थकरादिनमस्कारः, श्रद्धानं, पापप्रत्याख्यानं, दुष्कृतनिन्दा, सामायिककृतिः, उपध्यादित्यागः, रागादिव्युत्सर्गः, क्षामणा, निन्द्य-निन्दादि, ममत्वपरिज्ञानादि, आत्मनो ज्ञानत्वादि, आराधना-निन्दादि, आत्मन एकत्वादि, संयोग-मूल दुक्खं, असंयममिथ्यात्वादि-परिज्ञानादि, अपराधक्षामणा, बालवन्मायात्यागेन ऋजोर्निर्वाणम्। १२

१६२* भावशल्यदोषाः। ,,

१६५* आलोचनादिना कर्मलघुता, यथावत्प्रायश्चित्तकृतिः, यथावृत्तकथनम्। ,,

१६७* प्राणारम्भादिप्रत्याख्यानम्। ,,

१६९* पालनभावविशुद्धस्वरूपम्। १३

१७१* क्षीरनयनोदकयोः सागरसमत्वम्। १३

१८१* यावल्लोकप्रदेशं प्रतियोनि च मरणं, बालमरणानि, मात्रादिसम्बन्धबहुता, एकस्य कर्मकरणादि, गतिचतुष्क-वेदनादेः स्मरणेन पण्डितमरणम्।,,

२०९* पण्डितमरणे फलं, विधिः, सर्व-पुद्गलानामाहारपरिणामिते, नरक-म्लेच्छजातिभ्रमणम्, कामार्थ-भोजनगन्धशब्दादि, युग्म्यादिसुखैः-रतृप्तिरत्राणं च, राज्यभोगैरपि, तृष्णासुखेच्छायोरच्छेदः, प्रार्थना-निन्दा, मुक्तिकारणानि, महाव्रता-रोपः, क्रोधकलहादित्यागः, इन्द्रिय-संवरणादि, लेश्याभयगुप्त्यादीनां त्यागादाने। १५

२१२* संगशल्यत्यागः, गुप्तिसमितिशरणं, उपदेशबलेन तपःपोतधरणम्। ,,

२१७* कन्दरासु दुर्गेऽप्यर्थसाधनं, किं पुनः सङ्ग्रहबले जिनोक्तिश्रवणे च, शिलातलगता धन्याः। १६

२२१* परिकर्मण आवश्यकता। ,,

२२२* तपसा कर्मनाशः। ,,

२२३* पण्डितमरणान्मरणान्तः। ,,

२२५* अनशनादिना पण्डितमरणम्। ,,

२२६* इन्द्रियसुखसातस्य मोहः। ,,

२२७* लज्जादिनाऽनालोचकाऽनाराधकाः।

२३१* आराधनायाः श्रेयस्त्वं, आत्मनः संस्तारकत्वं, जिनवचनानुगमादिना-ऽमूढसङ्ज्ञता, प्रमोदे तपोलोपः। १६

२३४* संवरेण कर्मदाहः ज्ञानिनः कर्म-क्षयश्च। १७

२३९* मरणे पदस्याप्युपकारः। ,,

२४०* धर्मस्य भूतहितत्वादित्वम्। ,,

२४४* श्रमणत्वाद्यनुध्यानं, निषिद्धत्यागः, उपध्यादेरचिन्तनीयादेरसंयमादेश्च व्युत्सर्गः। ,,

२४६* एकेनापि पदेन प्रत्याख्यानात्समाधिः।

२५१* अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनां मङ्गलत्वादि।

२५३* सिद्धोपसम्पत्त्यादिना आराधकत्वम्। १७

२५८* वेदनासु नरकवेदनानां कृतकर्मणा दुःखविपाकानां च स्मरणम्। ,,

२७२* अभ्युद्यतमरणं महापुरुषसेवितं, तपःस्नेहपानं, आराधनापताकाहरणं, कर्मवल्लीच्छेदः, भवत्रयेण मुक्तिः, रङ्गावतारः, वद्धकक्षता, कषायादि-नाशेन पताकाहरणं, जीवनमरणयो-रचिन्ता, उद्यतभावत्वं उत्कृष्टजघन्य-मध्यमाराधनाफलम्। १९

२७५* सर्वभूतसाम्यादि धीरमरणं प्रत्या-ख्यानफलं च। ,,

[आगम-२६] प्रकीर्णक-३ "महाप्रत्याख्यान"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ४ "भक्तपरिज्ञा"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ ४ अथ भक्तपरिज्ञा ॥

२८०* वीरनमस्कारः शासनस्तुतिः ज्ञानव्यवसायोपदेशः, मोक्षसुखस्याबाध्यता, भवसुखस्य परिणामदारुणता च। २०

२८३* आज्ञाऽऽराधनात् शाश्वतसुखं, ज्ञानाद्याराधनं, अभ्युद्यतमरणेनाविकलाराधनम्। २०

२९०* भक्तपरिज्ञा(३)द्यभ्युतमरणं, सविचाराविचारमाद्यं, धृतिबलविकलानां प्रशमसुखपिपासितादीनां भक्तपरिज्ञा। ,,

२९१* भवस्य दुरन्तता। २०

३०४* नत्वा भक्तपरिज्ञविज्ञप्तिः, आलोचनादिप्रतिपत्तिः, वन्दनं, शुद्धिहेतुराधना, बाल्यादालोचनादानं, प्रायश्चित्तप्रतिपत्तिः,महाव्रताद्यारोपणं, यावज्जीवप्रतिज्ञाप्रत्यर्पणं; उपस्थापना, देशविरतस्याणुव्रतारोपणा २१

३१०* गुरुसङ्घपूजा, जिनेन्द्रभवनादिषु द्रव्यदानादि, संस्तारकप्रव्रज्या, चरमप्रत्याख्यानं, भक्तपरिज्ञाप्रतिपत्तिः। २२

३१४* क्षेत्रप्रतिलेखना, त्रिविधाहारप्रत्याख्यानं, द्रव्यदर्शनं, भुक्त्वाऽपि संवेगः, शुभध्यानम्। ,,

३१७* समाधिपानं तल्लक्षणं फलं च। ,,

३२५* सङ्घनिवेदनमुत्सर्गश्च, चतुर्धाऽऽहारत्यागः, चैत्यवन्दनं, सङ्घक्षामणा, आचार्यादिक्षामणा, अपराधक्षामणा, मृगावतीवत्पापक्षयः। २३

३२७* अनुशास्तिस्वरूपम्। ,,

३३४* मिथ्यात्वच्छेदः, सम्यक्त्वभावना, वीतरागभक्तिः, नमस्काररतिः, स्वाध्यायोद्यमः, व्रतरक्षा, शल्यत्यागः, इन्द्रियदमः, कषायघातः, मिथ्यात्ववर्जनं, दृढसम्यक्त्वता, नमस्कारकुशलता च। ,,

३४९* मृगतृष्णावदधर्मात्सुखेच्छा, अभ्यादेरपि तीव्रं मिथ्यात्वं, दत्त इव साधुद्वेषद्व्यसनं, सम्यक्त्वप्रतिष्ठानि ज्ञानादीनि, जिनशासनरक्तता, सदर्शनस्यापर्यटनं, दर्शनरहितस्यासिद्धिः, सदर्शनस्य जिननामदर्शनस्यानर्घ्यता, अक्षयसुखहेतुता च। २४

३५०* अर्हदादिभक्तिः, दुर्गतिनिवारणं, परम्परसुखप्राप्तिश्च, नाभक्तिमतो निर्वृतिः, अभक्तिमानूषरे शालीवापी अबीजसस्येप्सुः अनभ्रवर्षेप्सुश्च मणिकारदृष्टान्तः। २४

३५६* संसारक्षयकारणो नमस्कारः, संसारोच्छेदः, मेण्ठदृष्टान्तः, तं विना द्रव्यलिङ्गत्वं, आराधनाहस्तः, सुगतौ रथः, सुदर्शनदृष्टान्तः। २५

३६३* ज्ञानं, हृदयपिशाचवशीकरणं, हृदयकृष्णसर्पोपशमनं, मनोमर्कट-

[आगम-२७] प्रकीर्णक-४ "भक्तपरिज्ञा"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ४ "भक्तपरिज्ञा"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

बन्धनं, संसारेऽप्यनाशकारणं, यवर्षेः चिलातिपुत्रस्य च दृष्टान्तः। २५

३७१* जीववधत्यागः, आत्मौपम्येन दया, अनन्यधर्मत्वं, वधे सम्बन्धिवधः, दयायां स्वदया, हिंसाफलं दुःखं, अहिंसाफलमारोग्यादि, चण्डाल-दृष्टान्तः। २६

३७६* यतेरपि भाषादोषेण लेपः, सत्यं प्रशस्तं, सत्यवचसो विश्वासादि, इतरस्य पाषण्डचाण्डालता, वसु-दृष्टान्तः। २६

३८१* अदत्तदन्तशोधनस्यापि त्यागः, अर्थहारी जीवितहारी, अदत्तं लोक-धर्मविरुद्धं, दारिद्र्यादिहेतुः, श्रावकपुत्रो दृष्टान्तः। ,,

४०५* कामा दोषहेतवः, दुःखावहा मैथुन-सञ्ज्ञा, कामो भुजङ्गोपमः, ललक-वेदना, वणिजः कुबेरदत्तस्य च दृष्टान्तः, महिला दोषवत्त्र्यः, दुःख-समुद्रपातहेतुः, नदीवद् गुरुगिरि-भेदिन्यः, महिलासु भुजङ्गीष्वि-वाविश्वासः, निधनकारिकाः, हृदयहारिकाः वध्यमालावद्वि-नाशिकाः मालतीव मर्दनासहाश्च, देवरतिनृपदृष्टान्तः, शोकदुरिता-दिकारिण्यः अपलापनस्थानं घन-मालावन्मोहविषयवर्द्धिन्यः चारित्र-प्राणनाशिकाः मुनिमनोविद्राविकाश्च सिंहगुहावासिमुनिदृष्टान्तः, नदीवन्नि-मज्जिकाः, तारुण्यं महार्णववत्। २८

४०९* सङ्गवर्जनं, सङ्गेन मारणादि, मणि-पतिदृष्टान्तः, निःसङ्गस्य चक्रिणो-ऽप्यधिकं सुखम्। २८

४१६* निदानस्वरूपं, रागद्वेषमोहभेदाः, गङ्गदत्तविश्वभूतिचण्डपिङ्गलदृष्टा-न्ताः, काचेन वैडूर्यहारणं, दुःख-क्षयादिप्रार्थनं, निदानादिरहितः शिवसाधकः। २९

४२४* इन्द्रियासक्तः संसारभ्रमिः, स्वा-स्थिलेहनवद् विषयाः, सङ्गे परिश्रमः, कदलीवन्निस्सारा विषयाः, प्रोषित-प्रियादिका(५)दृष्टान्ताः, विषया-पेक्षस्यं भवः। २९

४२९* इन्द्रियदमः, आराधना, क्रोधा-दिनिग्रहः, सुखदुःखे तद्भावाभावजे, नन्दपरशुरामाद्या दृष्टान्ताः। ३०

४४७* अनुशास्तिप्रार्थना, परीषहादि-संभवे प्रतिज्ञास्मारणं, अवन्ती-सुकुमालदृष्टान्तः, भवनैर्गुण्यं, धर्मयानदुर्लभता, चिन्तामण्यादि-वदपूर्वता, नमस्कारस्मरणेन प्राण-त्यागः, जघन्यतः सौधर्मे उत्कृ-ष्टतोऽच्युते सर्वार्थसिद्धौ वा, उप-संहारः। ३१

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

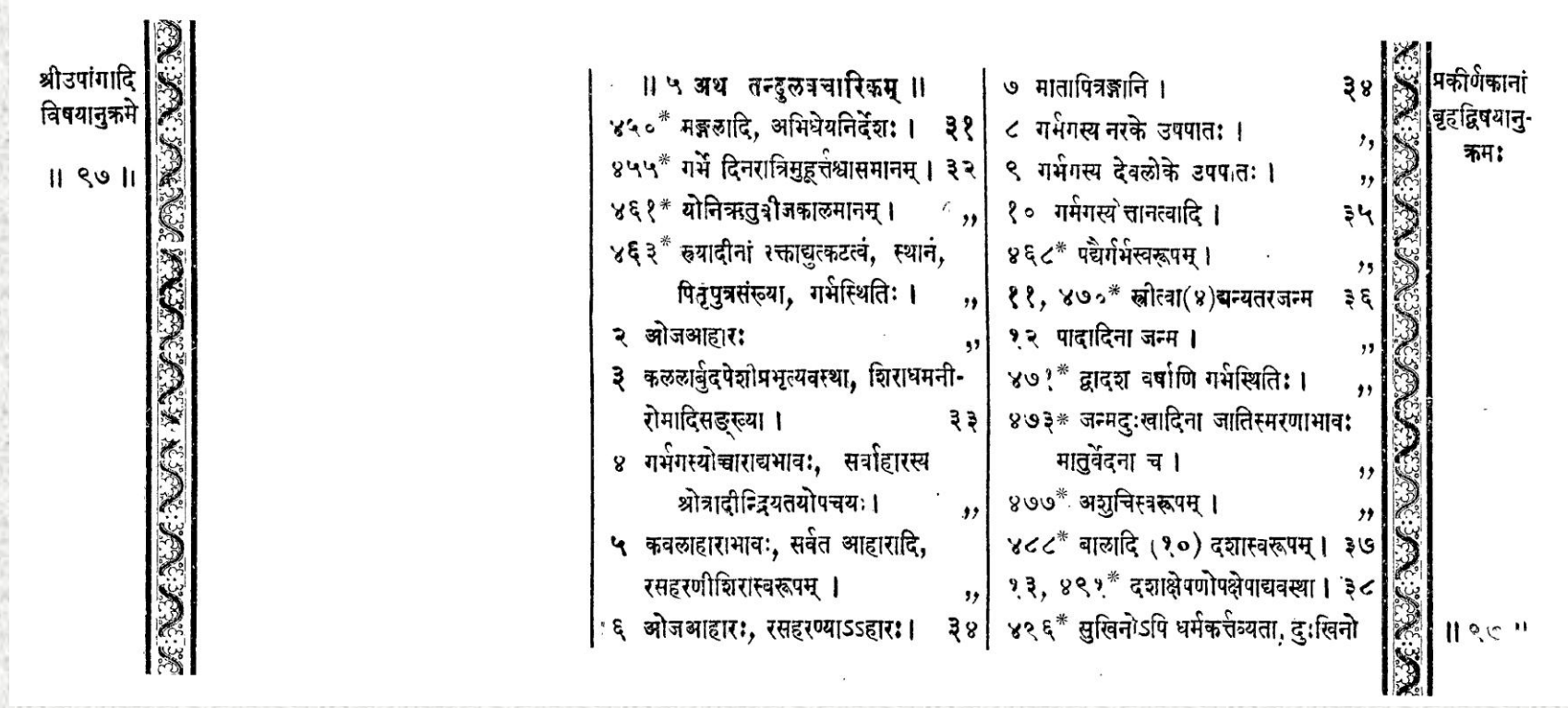
[प्रकीर्णकसूत्र- ५ "तन्दुलवैचारिक"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ९७ ॥

॥ ५ अथ तन्दुलवैचारिकम् ॥

४५०* मङ्गलादि, अभिधेयनिर्देशः । ३१
४५५* गर्भे दिनरात्रिमुहूर्त्तश्वासमानम् । ३२
४६१* योनिऋतुबीजकालमानम् । ,,
४६३* रुधादीनां रक्ताद्युत्कटत्वं, स्थानं, पितृपुत्रसंख्या, गर्भस्थितिः । ,,
२ ओजआहारः ,,
३ कललार्बुदपेशीप्रभृत्यवस्था, शिराधमनी-रोमादिसङ्ख्या । ३३
४ गर्भगस्योच्चाराद्यभावः, सर्वाहारस्य श्रोत्रादीन्द्रियतयोपचयः । ,,
५ कवलाहाराभावः, सर्वत आहारादि, रसहरणीशिरास्वरूपम् । ,,
६ ओजआहारः, रसहरण्याऽऽहारः । ३४
७ मातापित्रङ्गानि । ३४
८ गर्भगस्य नरके उपपातः । ,,
९ गर्भगस्य देवलोके उपपातः । ,,
१० गर्भगस्योत्तानत्वादि । ३५
४६८* पद्मैर्गर्भस्वरूपम् । ,,
११, ४७०* स्त्रीत्वा(४)द्यन्यतरजन्म ३६
१२ पादादिना जन्म । ,,
४७१* द्वादश वर्षाणि गर्भस्थितिः । ,,
४७३* जन्मदुःखादिना जातिस्मरणाभावः मातुर्वेदना च । ,,
४७७* अशुचिस्वरूपम् । ,,
४८८* बालादि (१०) दशास्वरूपम् । ३७
१३, ४९१* दशाक्षेपणोपक्षेपाद्यवस्था । ३८
४९६* सुखिनोऽपि धर्मकर्त्तव्यता, दुःखिनो

प्रकीर्णकानां बृहद्विषयानुक्रमः ॥ ९८ ॥

[आगम-२८] प्रकीर्णक-५ "तन्दुलवैचारिक"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ५ "तन्दुलवैचारिक"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ ९८ ॥

विशेषेण, सुखप्राप्तये दुःखवारणाय च धर्मः, जातिकुलादिपुरस्कारश्च पुण्येन। ३८
१४ वातिकादिरोगबहुलत्वेन शोभना भविष्यन्ती धर्मचिन्ता। ,,
१५ युगलधार्मिकपुरुषवर्णनम्। ४०
१६ संहननसंस्थानवर्णनम्। ४१
५०१* संहननसंस्थानादिहानिः। ,,
५२२* वर्षशताशीर्वादे युगायनर्तुमास-पक्षरात्रिदिवसमुहूर्तोच्छ्वाससंख्या, तन्दुलसङ्ख्या मुद्गलवणस्नेहपट-शाटकसङ्ख्या, समयोच्छ्वासप्राण-स्तोकलवमुहूर्त्तस्वरूपं, नालिका-छिद्रस्य तदुदकस्य च स्वरूपं, वर्षे राज्युच्छ्वासादिमानम्। ४४
५२९* आयुषि निद्रादिविभागः, धर्माकरणे पश्चात्तापः, आत्मज्ञानोपदेशः, जीवि-तादीनां नदीवेगादिसमत्वं, भवस्य जरामरणव्याप्तत्वम्। ४५
१७ पृष्ठकरण्डकपांशुलिकादिमानादि, अधोगामिन्यादिशिरास्वरूपं, पित्तधारि-ण्यादिशिरामानं रुधिरादिमानं च। ४६
५३१* अन्तर्बाह्यपरिवर्त्तजुगुप्सा, आच्छा-दनाद्यै रम्यता। ४७
१८ मनुष्यशरीरस्याशुचिता। ४७
१६८, १९* विषयवैराग्यं, स्त्रीनिन्दा, बहिःपदार्थैर्मनोहरता। ४९
२० स्त्रीणां प्रकृतिविषमत्वादि(९३)स्वरूपं, नार्यादितत्पर्यायव्युत्पत्तिश्च। ५२
५७६* स्त्रीचरित्रस्वरूपे। ,,
५८३* जडस्य सर्वं निरर्थकं, पुत्रादि नालम्बनं, मरणे द्वितीयो धर्मः, धर्म एव त्राणशरणादि प्रीतिकरादिश्च, भोगज्ञाने-न्द्रत्वादि राज्यादि च धर्मफलम्। ५३
५८६* उपसंहारः, उपदेशश्च। ,,

प्रकीर्णकानां बृहद्विषया-नुक्रमः ॥ ९८ ॥

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ६ "संस्तारक"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ ६ अथ संस्तारकप्रकीर्णकम् ॥

५८७* वर्धमाननमस्कारादि । ,,

६००* संस्तारकस्याराधनादिस्वरूपत्वं, भूतग्रहणाद्युपमा च, देवेन्द्रध्येयत्वं, सत्यस्मिन् सिद्धिपताका, शुक्लध्यान-केवलज्ञाननिर्वाणलाभः, श्रामण्यस्योत्कृष्टता । ६४

६१४* संस्तारकस्य परममङ्गलता, तद्वतः, शौर्यं, परमार्थलाभः, वसुधारोपमा, कल्याणरत्नमालारत्नाहरणं, निर्वाण-लाभाश्रवनिरोधाद्यर्थत्रिकत्वात्तीर्थ-त्वं, निर्वाणस्य राज्यत्वं, राज्याभिषेकता, परमार्थता, देवानामपि विनयः, चन्द्रादिवत्प्रेक्षणीयत्वादि । ५२

६२९* संस्तारके श्रमणस्वरूपं, शुद्धा शुद्धसंस्तारकस्वरूपम् । ५६

६३७* संस्तारके प्रथमदिवसे लाभबहुता, प्रतिसमयं कर्मक्षयः, तत्र चक्रिणोऽप्यधिकं सुखं, नाट्याञ्जिनवचने परा रतिः, वीतरागस्य विशुद्धं सुखं, सेवितगच्छा अपि भवे मग्नाः । ५६

६३८* अन्तेऽपि संस्तारकादात्मनः पथ्यम् । ५६

६४०* आत्मैव संस्तारकः, संस्तारके यथास्थातत्वम् । ५७

६४१* वर्षारात्रे तत्त्वा हेमन्ते संस्तारकः । ५७

७७४* अर्णिकापुत्रस्य स्कन्धकशिष्याणां दण्डकस्य सुकोशलर्षेः, अवन्तीसुकुमालस्य कार्तिकार्यस्य धर्मसिंहस्य चाणक्यस्य अमृतघोषस्य चण्डवेगस्य ललितघटायाः सिंहसेनस्य कुरुदत्तस्य चिलातीपुत्रस्य मजसुकुमालस्य वीरशिष्ययोश्चाराधनायां दृष्टान्ताः । ५९

६७८* सागारप्रत्याख्यानं, पानकव्युत्सर्जनं च सर्वसङ्घक्षामणा, सर्वापराधक्षामणा ,,

६८४* उत्तमार्थानुमोदनं, चतुर्गतिसुखदुःखस्मरणं, नरकेऽवशातनं, देवमनुजत्वे पराभियोगः, तिर्यक्त्वे भीमवेदनादि, अतीतजन्ममरणानन्त्यम् । ५९

६८६* मरणभयजन्मदुःखचिन्तनाच्छरीरात्मान्यत्वचिन्तनाच्च ममत्वोच्छेदः । ,,

६८८* कायममत्वेन निर्विशेषदुःखम् । ६०

६९२* सङ्घस्य आचार्यादेः श्रमणसङ्घस्य जीवराशेश्च क्षामणम् । ,,

६९४* क्षामितातिचारादिरनन्तभवकर्मक्षपणम् । ६०

७०९* अनुशास्तिः, गिरावप्युत्तमार्थसाधनं, धर्मार्थे शरीरत्यागः, संस्तारात्कर्मवल्लीकम्प, ज्ञानिनो बहुकर्मक्षयः, संस्तारात्तृतीये भवे मुक्तिः, सङ्घस्य महामुकुटत्वं चन्द्रकवेधसमत्व संस्तारकस्य, उपसंहारश्च । ६१

[आगम-२९] प्रकीर्णक-६ "संस्तारक"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रम:

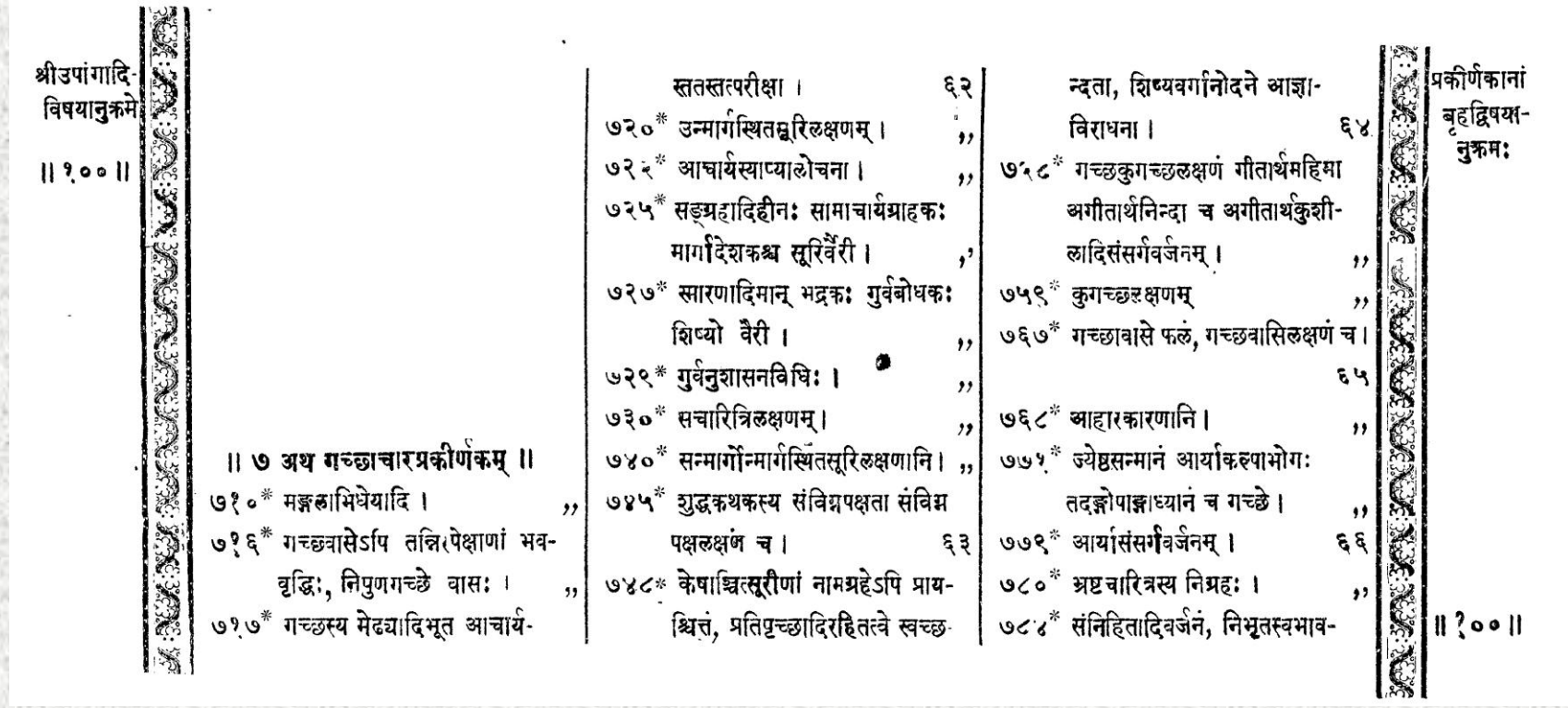
[प्रकीर्णकसूत्र- ७ "गच्छाचार"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ १०० ॥

॥ ७ अथ गच्छाचारप्रकीर्णकम् ॥

७१०* मङ्गलाभिधेयादि । ,,
७१६* गच्छवासेऽपि तन्निरपेक्षाणां भव-वृद्धिः, निपुणगच्छे वासः । ,,
७१७* गच्छस्य मेढ्यादिभूत आचार्य-स्ततस्तत्परीक्षा । ६२
७२०* उन्मार्गस्थितसूरिलक्षणम् । ,,
७२२* आचार्यस्याप्यालोचना । ,,
७२५* सङ्ग्रहादिहीनः सामाचार्यग्राहकः मार्गादेशकश्च सूरिर्वैरी । ,,
७२७* स्मारणादिमान् भद्रकः गुर्वबोधकः शिष्यो वैरी । ,,
७२९* गुर्वनुशासनविधिः । ,,
७३०* सचारित्रिलक्षणम् । ,,
७४०* सन्मार्गोन्मार्गस्थितसूरिलक्षणानि । ,,
७४५* शुद्धकथकस्य संविग्नपक्षता संविग्न पक्षलक्षणं च । ६३
७४८* केषाञ्चित्सूरीणां नामग्रहेऽपि प्राय-श्चित्तं, प्रतिपृच्छादिरहितत्वे स्वच्छन्दता, शिष्यवर्गानोदने आज्ञा-विराधना । ६४
७५८* गच्छकुगच्छलक्षणं गीतार्थमहिमा अगीतार्थनिन्दा च अगीतार्थकुशी-लादिसंसर्गवर्जनम् । ,,
७५९* कुगच्छलक्षणम् ,,
७६७* गच्छावासे फलं, गच्छवासिलक्षणं च । ६५
७६८* आहारकारणानि । ,,
७७१* ज्येष्ठसन्मानं आर्याकल्पाभोगः तदङ्गोपाङ्गाध्यानं च गच्छे । ,,
७७९* आर्यासंसर्गवर्जनम् । ६६
७८०* भ्रष्टचारित्रस्य निग्रहः । ,,
७८४* संनिहितादिवर्जनं, निभृतस्वभाव-

प्रकीर्णकानां बृहद्विषयानुक्रमः ॥ २०० ॥

[आगम-३०] प्रकीर्णक-७ "गच्छाचार"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ७ "गच्छाचार"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

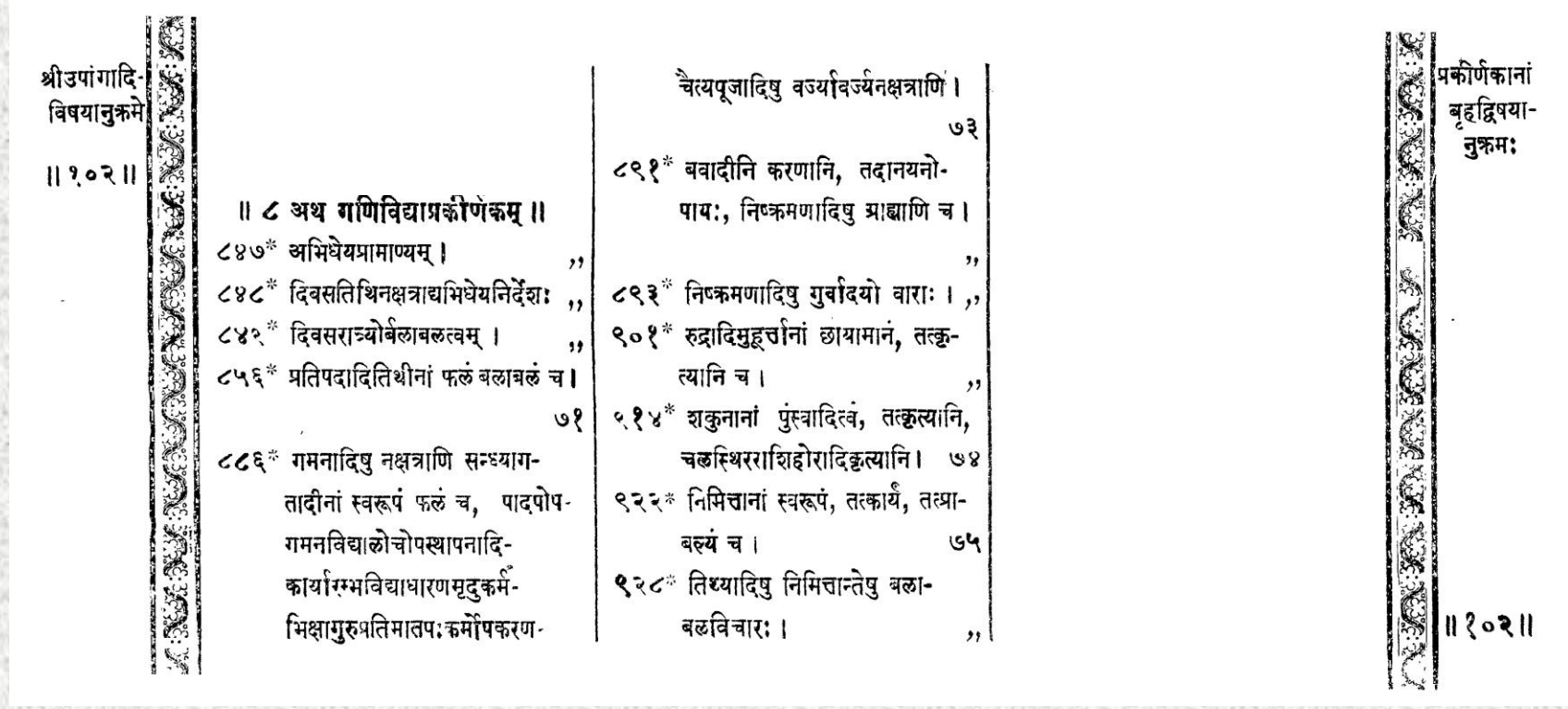
'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥१०१॥

त्वादि, नानाभिग्रहाः, पृथ्व्याद्य-पीडकत्वं च। ६६
७८५* खर्जूर्याप्रमार्जनेन दयाहीनत्वम्। ,,
७८६* जलवर्जनं, ज्वलनोज्ज्वालनवर्जनं, यतनया सरूपिकादिभिः कारणं, पुष्पादिसंघट्टनादिवर्जनं, हास्यक्रीडादेः स्त्रिया बालादिकानामपि करतनुस्पर्शस्य च वर्जनम्। ६७
७९४* अर्हतोऽपि स्त्रीकरस्पर्शे निर्गुणत्वम्। ,,
८१४* अयोग्यादीक्षणं, निर्गुणनिर्धाटनं, शुषिराणामपरिभोगः, शुक्लं वस्त्रं, हिरण्याद्यस्पर्शाः, आर्या प्रतिग्रहाभोगः, तदौषधाभोगः, एकस्त्रीसङ्गवर्जनं, आर्याऽध्यापनवर्जनं, स्त्रीराज्यकुत्सा, मण्डल्यामार्याऽनागमः, कषायानुदीरकत्वं, कषायरोधः, बहवो गीतार्थाः, अशून्यत्वं, चारित्रोज्ज्वलत्वं, क्रयविक्रयवर्जनं, सुविहिते वासश्च। ६८
८१६* उपाश्रयस्यैकक्षुल्लादिना क्षुल्लिकादिना वा न रक्षा। ,,
८१७* बहिःश्रमणीवसतौ दुर्गच्छत्वम्। ,,
८२०* एकाकिश्रमणश्रमणीजल्पे जकारमकारादिजल्पे गृहस्थभाषाजल्पे च दुर्गच्छत्वम्। ,,
८२८* चित्ररूपत्वं, सीवनादि, सविलासगत्यादि, गृहस्थगृहे कथा, रात्रीकथा, क्लेशः, अनालोचनं, वेष्टलादिप्रयोगे दुर्गच्छता आर्याणाम्। ६९
८३१* प्राघूर्णकाबत्सलत्वं गतिविभ्रमादियुतत्वं बहुश उच्छोलनादि च न गच्छे। ६९
८४०* तरुणी स्थविरान्तरा, धावनादिवर्जिका, समीपे न खराद्याः, पशवः न भुक्तयोगादि, अनालस्यादिगुणाश्चार्याः संविग्नादिगुणाः, उत्तरप्रत्युत्तरवर्जिकाः गणिनीपृष्ठिस्थितभाषिका, गुप्तिविभेदानाख्यायिकाश्च। ७०
८४२* विहारभेदेऽदर्शनादि, धर्मोपदेशं मुक्त्वा न भाषणम्। ,,
८४३* गृहस्थभाषायां मासोपवासाद्यपि निष्फलम्। ७०
८४६* महानिशीथादेरुद्धारः, उत्तमता गच्छाचारस्य फलं च। ,,

प्रकीर्णकानां बृहद्विषयानुक्रमः ॥१०१॥

आगम संबंधी साहित्य	**प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रम:** **[प्रकीर्णकसूत्र- ८ "गणिविज्जा"]**
प्रत सूत्रांक यहां देखीए **दीप क्रमांक के लिए देखीए** **'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'**	**पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)**



श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥ १०२ ॥

॥ ८ अथ गणिविद्याप्रकीर्णकम् ॥

८४७* अभिधेयप्रामाण्यम् । ,,
८४८* दिवसतिथिनक्षत्राद्यभिधेयनिर्देशः ,,
८४९* दिवसरात्र्योर्बलाबलत्वम् । ,,
८५६* प्रतिपदादितिथीनां फलं बलाबलं च। ७१
८८६* गमनादिषु नक्षत्राणि सन्ध्याग-तादीनां स्वरूपं फलं च, पादपोप-गमनविद्यालोचोपस्थापनादि-कार्यारम्भविद्याधारणमृदुकर्म-भिक्षागुरुप्रतिमातपःकर्मोपकरण-चैत्यपूजादिषु वर्ज्यावर्ज्यनक्षत्राणि। ७३
८९१* बवादीनि करणानि, तदानयनो-पायः, निष्क्रमणादिषु ग्राह्याणि च। ,,
८९३* निष्क्रमणादिषु गुर्वादयो वाराः । ,,
९०१* रुद्रादिमुहूर्त्तानां छायामानं, तत्कृ-त्यानि च । ,,
९१४* शकुनानां पुंस्त्वादित्वं, तत्कृत्यानि, चलस्थिरराशिहोरादिकृत्यानि। ७४
९२२* निमित्तानां स्वरूपं, तत्कार्यं, तत्प्रा-बल्यं च । ७५
९२८* तिथ्यादिषु निमित्तान्तेषु बला-बलविचारः । ,,

प्रकीर्णकानां बृहद्विषया-नुक्रमः ॥ १०२ ॥

[आगम-३१] प्रकीर्णक-८ "गणिविज्जा"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ९ "देवेन्द्रस्तव"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ ९ अथ देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकम् ॥

९२९* मङ्गलाभिधेयादि । ,,

९३४* श्रावककृता वीरस्तुतिः । ,,

९३८* देवेन्द्रतद्वाससंख्यास्थिति–भवनबाहल्यादिरतिलयनोच्छ्वासावध्यादिप्रश्नाः । ,,

९४२* उत्तरस्योपक्रमः । ,,

९७३* भवनपतीनामिन्द्राः, तद्भवनसङ्ख्या, उत्तरदक्षिणभेदेन स्थितिः । तद्भवनस्थानं, तद्भवनस्वरूपाऽऽयामादि, दक्षिणोत्तरभेदेनेन्द्राणां नामानि, भवनसङ्ख्या, अग्रमहिषीसङ्ख्या । ७९

९७८* जम्बूद्वीपादिसमश्रेण्या आवासादीसङ्ख्या, असुरादीनामावासस्थानम् । ७९

९९४* चमरादीनां(२०)वैक्रियशक्तिमानम् । ८०

१००८ व्यन्तराणां भेदास्तन्नामानि च, तद्वसतिः, भवनस्थान, भवनविस्तारः, दक्षिणोत्तरभेदेनेन्द्राः, तत्स्थितिश्च । ८१

१०१२* ज्योतिष्कानां भेदाः, विमानाकारः, ज्योतिश्चक्रबाहल्यं, चन्द्रसूर्यनक्षत्रग्रहताराणां विष्कम्भादि । ८१

१०२१* विमानवाहकामराः । ८२

१०२६* चन्द्रादीनां मन्दशीघ्रगतित्वं, महाऽल्पर्द्धिकत्वं, अभ्यन्तरबाह्यनक्षत्रत्वं च । ८२

१०२८* जघन्योत्कृष्टनिर्व्याघातेतरत्तारकान्तरम् । ,,

१०३६* अभिजिदादीनां चन्द्रसूर्यैर्योगकालः । ८३

१०६३* जम्बूद्वीपादिषु चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारकसङ्ख्या, पिटकानि, पङ्क्तयः, मेर्वनुचराः । ८५

१०६७* ज्योतिष्कचारेण सुखदुःखविधिः । ,,

१०६९* तापक्षेत्रस्य वृद्धिहानी, बहिरन्तः संस्थानम् । ,,

१०७५* चन्द्रस्य वृद्धिहान्यादि, राहुणाऽऽवरणं च । ८५

१०८६* नृक्षेत्रादबहिरवस्थिता ज्योतिष्काः, परस्परान्तरितत्वं, अन्तरमानं, एकशशिपरिवारश्च । ८६

१०९०* ज्योतिष्काणां परापरे स्थिती । ,,

१०९६* द्वादश कल्पाः, ग्रैवेयकेषु नान्यलिङ्गेनोत्पादः, व्यापन्नदर्शनानां ग्रैवेयकेषूत्पादः । ८७

१११९* सौधर्मादिषु विमानसङ्ख्या, स्थितिः, नवग्रैवेयकनामानि, तद्विमानसङ्ख्या, स्थितिश्च । ८८

१११४* अनुत्तराणां नामानि, दिग्व्यवस्था, स्थितिश्च । ,,

१११८* कल्पग्रैवेयकानुत्तरसंस्थानानि,

[आगम-३२] प्रकीर्णक-९ "देवेन्द्रस्तव"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ९ "देवेन्द्रस्तव"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे ॥१०४॥

तदाधारः। ,,
११२५* भवनपत्यादीनां लेश्यावर्णः, शरीरमानं, स्थित्यनुसारेण शरीर-मानकरणम्। ८९
११२६* विमानपृथ्व्योर्मानं द्वात्रिंशच्छ-तानि। ,,
११३०* कायस्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचारा-प्रवीचाराः। ,,
११४४* विमानानां गन्धस्पर्शवर्णनं, ऊर्ध्वलोकविमानानां आवलिका-प्रविष्टानां पुष्पावकीर्णानां च सङ्ख्या स्थानं संस्थानं पर-स्परस्थितिः प्राकारादिभेदाश्च। ९०
११४७* भवनानां भौमनगराणां ज्योतिष्क-विमानानां सङ्ख्या, वैमानिका-द्यल्पबहुत्वं च। ९०
११५२* सौधर्मेशानयोर्देवीविमानसङ्ख्या, अनुत्तराणां सुखस्पर्शगन्धाः, एकगर्भाश्च। ९०
११६०* स्थितिविशेषेण देवानामाहारो-च्छ्वासकालः। ९१
११६८* सौधर्मादीनामवधिविषयः, नारकाद्या अवधेरबाह्याः। ,,
१२००* सौधर्मादिषु पृथ्व्या बाहल्यं, विमानानां वर्णः देवदेवीवर्णनं, प्रासादासनवर्णनं च। ९३
१२०६* सिद्धशिलाया अन्तरं संस्थान-मायामादि बाहल्यं च। ९४
१२३०* सिद्धानां स्थानं, प्रतिघातादि, संस्थानं, त्रिभेदावगाहना, अन्यो-न्यावगाहना, लक्षणं, स्पर्शना, ज्ञानदर्शने, सुखं, म्लेच्छदृष्टान्तः, नामानि, अव्याबाधत्वं च। ९५
१२३५* अर्हतां वन्दनमहिमस्तुति-सिद्धिदानकीर्त्तनेनोपसंहारः। ९६

प्रकीर्णकानां बृहद्विषयानु-क्रमः ॥१०४॥

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ९ "मरणसमाधि"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ १० अथ मरणसमाधिप्रकीर्णकम् ॥

१२३६* मङ्गलाभिधेयादि । ९६
१२४५* अभ्युद्यतमरणे गुणवदाचार्याय शिष्यपृच्छादि । ९७
१२५१* आराधनोपदेशः दर्शनज्ञाना-द्याराधना च । ,,
१२५५* दर्शनाऽऽराधना तत्फलं च । ,,
१२५८* बालपण्डितमरणानां फलं, पण्डित-मरणस्वरूपम् । ९७
१२७७* परिकर्मविधिः । ९९
१२९३* पण्डितमरणविधिः । १००
१३०१* कान्दर्पिकाद्या(५)भावनाः । ,,
१३०४* समाधिप्राप्त्यप्राप्तियोग्याः । १०१
१३१०* धर्मप्राप्तिदुर्लभता, कामानां तुच्छता, विषयतृष्णानिन्दा च । ,,
१३१२* बालमरणस्वरूपम् । ,,
१३१३* मोहिनोऽप्यालोचनायामाराधक-त्वम् । १०२
१३२७* आलोचनसंलेखनाक्षामणादि-(१४)मरणविधिः । १०२
१३३२* विनयफलं, शुद्धिकारकस्वरूपं, अष्टादशविधः, कल्पः आलोचक-गुणाः, उपस्थापनास्थानानि(१०), अतिचारालोचना, यथावत्कथनं, द्रव्यभावशल्यवर्जनं च । १०२
१३४४* अनाराधकाराधकलक्षणं आलो-चनायाः तत्फलं तद्विधिश्च । १०३
१३५७* शस्त्रादिभ्योऽधिकं शल्यं दुर्लभ-बोधित्वहेतुश्च, शल्यभेदाः, व्रति-सेवाकारणानि, अज्ञातापराधक्षा-मणा च । १०४
१३६१* आलोचनादोषाः(१०),प्रायश्चित्त-विधिश्च । ,,
१३६३* द्वादशभेदं तपः । १०५
१३८४* स्वाध्यायप्रशंसा, श्रुतयोगफलं च । १०६
१३९३* सम्यक्त्वचारित्रप्रशंसा । १०७
१४२३* शुद्धिरुपध्यादित्यागः, तप-उद्यमः, परिकर्म, विषयत्यागः, संलेखना च । १०९
१४४२* कषायविषयवर्जनं, समिति-गुप्तियुक्तता, रागादेर्दुःखादि-हेतुत्वं, अनिदानता च । ११०
१५३५* आतुरप्रत्याख्यानाध्ययनम् । ११६
१५५८* सिद्धाद्युपसंपत्तिः, वेदनायां सालम्बनं, अभ्युद्यतमरणं, आराधना-विधिः, उत्कृष्टमध्यमजघन्या-राधनाफलं, धीराधीरयोर्मरणं सुविहितस्य वैमानिकत्वादि । ११८

[आगम-३३] प्रकीर्णक-१० "मरणसमाधि"

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रमः

[प्रकीर्णकसूत्र- ९ "मरणसमाधि"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए

'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

उपांगादि-षयानुक्रमे १०६॥

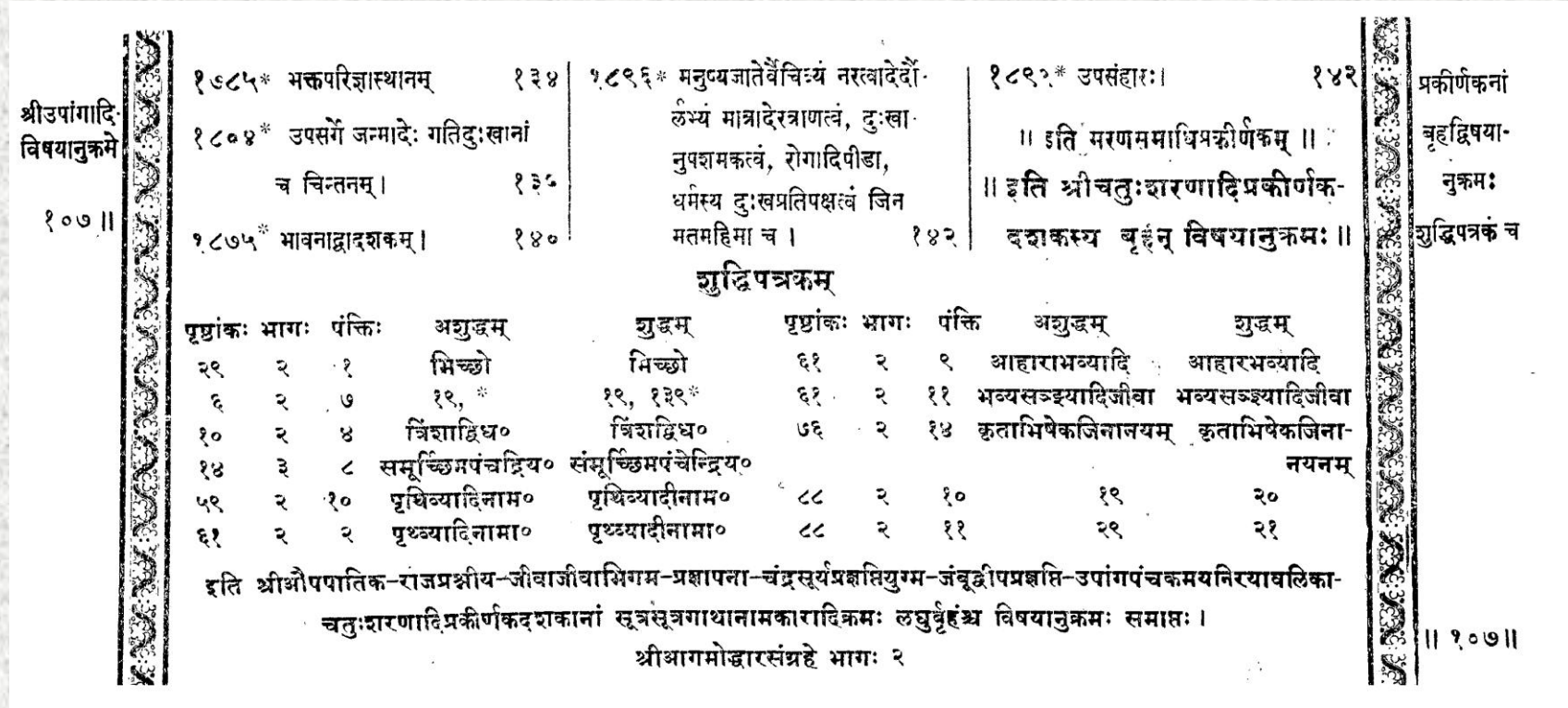
१५६९* अविचारानशनकारकगुणाः, निर्यामकगुणाश्च। ,,
१५८९* आचार्यादिक्षामणा, अनशन-कारकस्वरूपं, स्नेहदीपक्षयवत्क्षयः संस्तारकस्य, तस्य विधिः स्थानं, चतुर्विधाहारव्युत्सर्गश्च। १२०
१६१४* निर्यामणाविधिः, अप्रमादक्षमादि कुटुम्बवैराग्यं च। १२२
१६३९* गतिषु सुखदुःखे वेदना क्लेशः जन्ममरणे च गर्भवासदुःखं, जन्म-दुःखं, गर्भेऽशुचिता, वैमानिक-स्यापि योन्यन्धकारे कलमले भैरवे-ऽवतारः गिरिगुफायां वासः, नरके त्रप्वादिपानं उद्दामशब्दश्रवणं घातादि वैतरण्यादि च, तिर्यक्षूद्वेगः, नरत्वे भीषणता, समुद्रे वृक्षाग्रे च वासः, कृतं मातुर्दुग्धं नयनोदकं च चिन्तयित्वा ममत्वच्छेदश्च। १३१
१७३०* आराधकलक्षणं आर्त्तरौद्रयोः रागद्वेषयोश्च वर्जनं वेदनासहनं, सनत्कुमारस्य, जिनधर्मश्रेष्ठिनः मेतार्यस्य चिलातीपुत्रस्य गजसुकुमालस्य नभःसेनस्य अवन्तीसुकुमालस्य चन्द्रावतंसकस्य दमदन्तस्य स्कन्दकशिष्याणां धन्यशालिभद्रयोः सुरचितादीनां पाण्डवानां दण्डस्य सुकोशलस्य वर्ज्रषेः क्षुल्लकस्य धर्मयशसः अर्हन्नकस्य चाणाक्यस्य द्वात्रिंशद्घटायाः इलापुत्रस्य हस्तिमित्रस्य सुमनोभद्रर्ष्यादेः जातिमूकस्य स्थूलभद्रस्य दत्तस्य कुरुदत्तसुतस्य सोमदत्तस्य अर्जुनस्य कृष्णस्य दण्डनस्य कालवेश्यस्य नन्दकस्य इन्ददत्तस्य अशकटपितुः आषाढभूतेः तिरश्चः वानरयूथपतेः सिंहसेनगजस्य गन्धहस्तिनः भुजङ्गयोश्च दृष्टान्ताः। १३२
१७७२* पादपोपगमनविधिः। १३३
१७७८* इङ्गिनीमरणविधिः। ,,
१७८४* आहारत्यागोपदेशः शिलातलादावनशनं च। १३४

प्रकीर्णकांन बृहद्विषयानुक्रमः ॥१०६॥

प्रकीर्णकसूत्र-बृहद्विषयानुक्रम:

[प्रकीर्णकसूत्र- ९ "मरणसमाधि"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



श्रीउपांगादि-विषयानुक्रमे १०७ ॥

१७८५* भक्तपरिज्ञास्थानम् १३४
१८०४* उपसर्गे जन्मादे: गतिदुःखानां च चिन्तनम्। १३५
१८७५* भावनाद्वादशकम्। १४०
१८९६* मनुष्यजातेर्वैचित्र्यं नरत्वादेर्दौर्लभ्यं मात्रादेरत्राणत्वं, दुःखानुपशमकत्वं, रोगादिपीडा, धर्मस्य दुःखप्रतिपक्षत्वं जिनमतमहिमा च। १४२
१८९२* उपसंहारः। १४२
॥ इति मरणसमाधिप्रकीर्णकम् ॥
॥ इति श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकस्य बृहन् विषयानुक्रमः ॥

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठांकः	भागः	पंक्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठांकः	भागः	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
२९	२	१	भिच्छो	भिच्छो	६१	२	९	आहाराभव्यादि	आहारभव्यादि
६	२	७	१९, *	१९, १३९*	६१	२	११	भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा	भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा
१०	२	४	त्रिंशाद्विध०	त्रिंशद्विध०	७६	२	१४	कृताभिषेकजिनानयम्	कृताभिषेकजिनानयनम्
१४	३	८	समूर्च्छिमपंचद्रिय०	संमूर्च्छिमपंचेन्द्रिय०					
५९	२	१०	पृथिव्यादिनाम०	पृथिव्यादीनाम०	८८	२	१०	१९	२०
६१	२	२	पृथ्व्यादिनामा०	पृथ्व्यादीनामा०	८८	२	११	२९	२१

इति श्रीऔपपातिक-राजप्रश्नीय-जीवाजीवाभिगम-प्रज्ञापना-चंद्रसूर्यप्रज्ञप्तियुग्म-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-उपांगपंचकमयनिरयावलिका-चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां सूत्रसूत्रगाथानामकारादिक्रमः लघुर्बृहंश्च विषयानुक्रमः समाप्तः।

श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २

प्रकीर्णकनां बृहद्विषयानुक्रमः शुद्धिपत्रकं च

॥ १०७॥

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित:

उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघुबृहत् विषयानुक्रम: परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-4

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:"

नाम्ना परिसमाप्त:

आगम-संबंधी-साहित्य'-श्रेणि, भाग-४

नन्द्यादिनां विषयानुक्रम:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

'नन्दी-आदि-सप्तसूत्र' लघु-बृहद्विषयानुक्रम:

[आगम-संबंधी-साहित्य]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

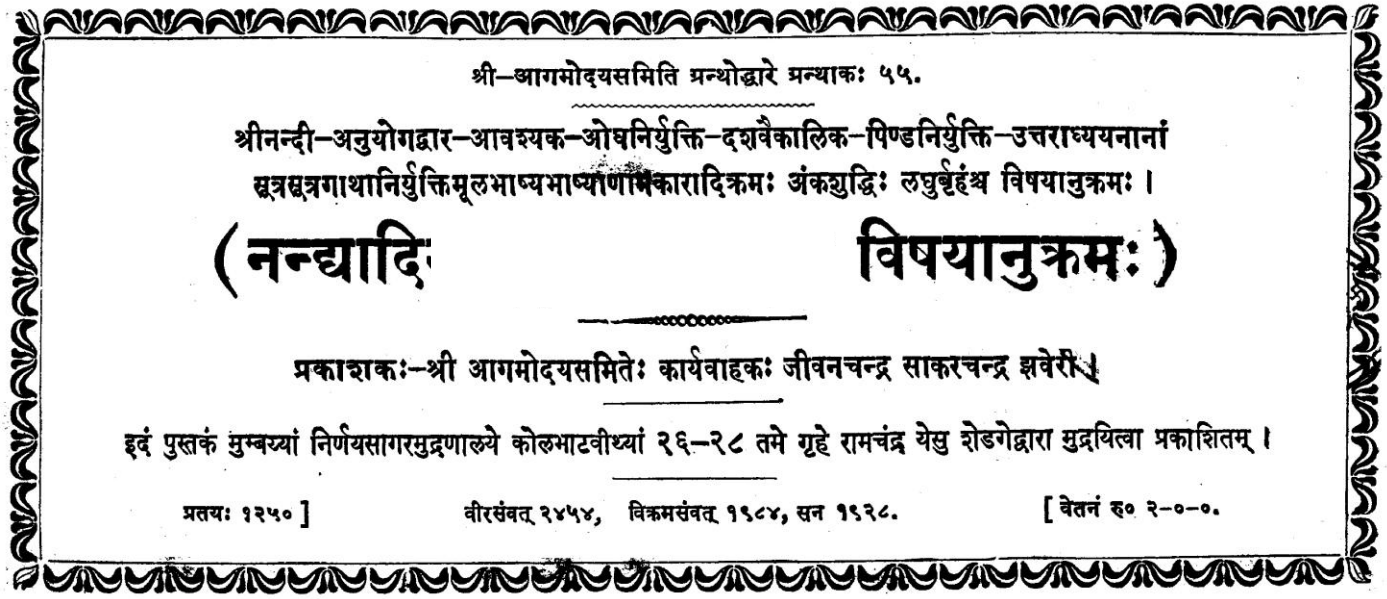
(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ 'आगम-संबंधी-साहित्य' श्रेणि भाग-४

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["---"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)
	*** मूल संपादकेन संपादित: 'ओरिजिनल टाईटल' पेज



श्री–आगमोदयसमिति ग्रन्थोद्धारे ग्रन्थाकः ५५.

श्रीनन्दी–अनुयोगद्वार–आवश्यक–ओघनिर्युक्ति–दशवैकालिक–पिण्डनिर्युक्ति–उत्तराध्ययनानां
सूत्रसूत्रगाथानिर्युक्तिमूलभाष्यभाष्याणामकारादिक्रमः अंकशुद्धिः लघुबृहंश्च विषयानुक्रमः ।

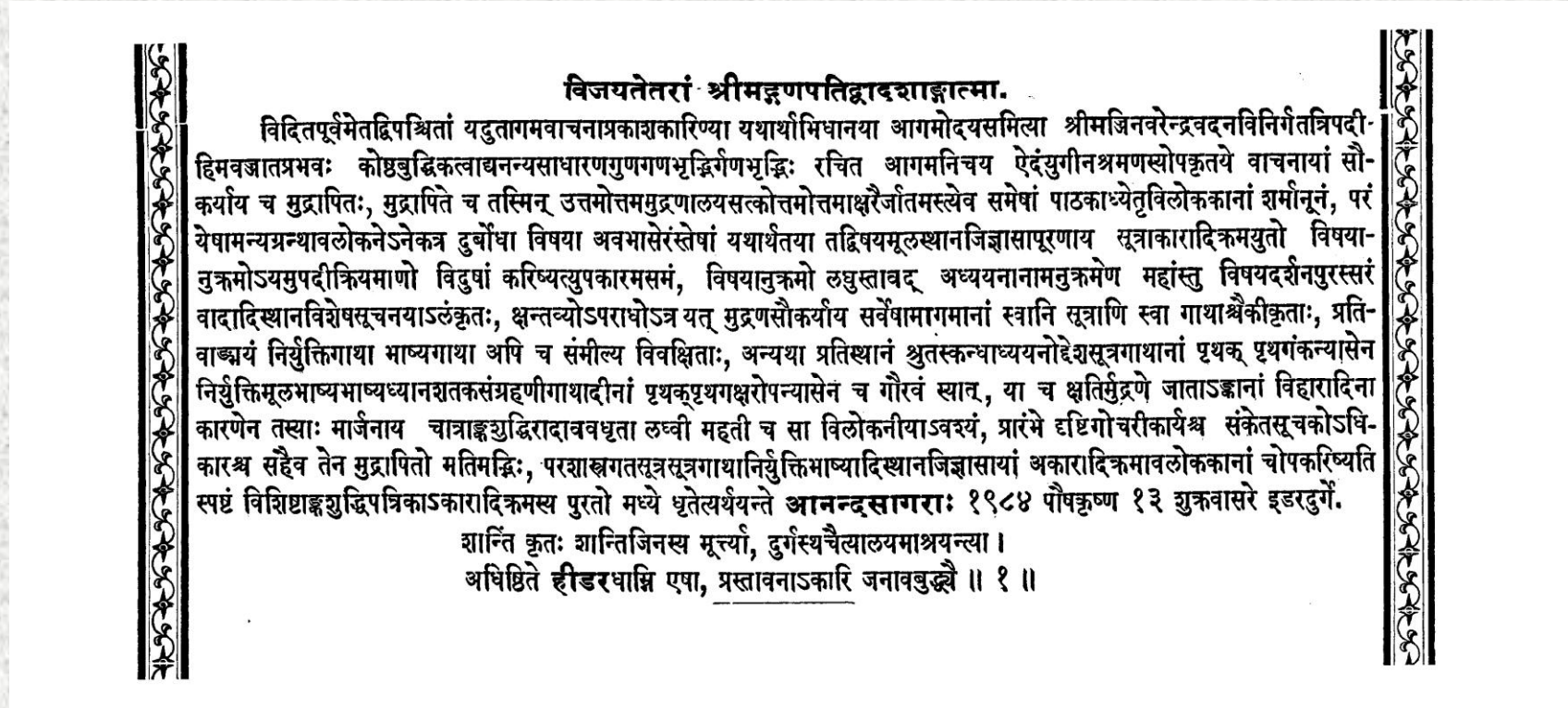
(नन्द्यादि विषयानुक्रमः)

प्रकाशकः–श्री आगमोदयसमितेः कार्यवाहकः जीवनचन्द्र साकरचन्द्र झवेरी।

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां निर्णयसागरमुद्रणालये कोलभाटवीथ्यां २६–२८ तमे गृहे रामचंद्र येसु शेडगेद्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

प्रतयः १२५०] वीरसंवत् २४५४, विक्रमसंवत् १९८४, सन १९२८. [वेतनं रु० २–०–०.

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["---"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)
	*** पूज्यपाद आनन्दसागरसूरीश्वरेण लिखितं प्रास्ताविक-कथनं



विजयतेतरां श्रीमद्गणपतिद्वादशाङ्गात्मा.

विदितपूर्वमेतद्विपश्चितां यदुतागमवाचनाप्रकाशकारिण्या यथार्थाभिधानया आगमोदयसमित्या श्रीमज्जिनवरेन्द्रवदनविनिर्गतत्रिपदी-हिमवज्जातप्रभवः कोष्ठबुद्धिकत्वाद्यनन्यसाधारणगुणगणभृद्भिर्गणभृद्भिः रचित आगमनिचय ऐदंयुगीनश्रमणस्योपकृतये वाचनायां सौ-कर्याय च मुद्रापितः, मुद्रापिते च तस्मिन् उत्तमोत्तममुद्रणालयसत्कोत्तमोत्तमाक्षरैर्जातमस्त्येव समेषां पाठकाध्येतृविलोककानां शर्मानूनं, परं येषामन्यग्रन्थावलोकनेऽनेकत्र दुर्बोधा विषया अवभासेरंस्तेषां यथार्थतया तद्विषयमूलस्थानजिज्ञासापूरणाय सूत्राकारादिक्रमयुतो विषया-नुक्रमोऽयमुपदीक्रियमाणो विदुषां करिष्यत्युपकारमसमं, विषयानुक्रमो लघुस्तावद् अध्ययनानामनुक्रमेण महांस्तु विषयदर्शनपुरस्सरं वादादिस्थानविशेषसूचनयाऽलंकृतः, क्षन्तव्योऽपराधोऽत्र यत् मुद्रणसौकर्याय सर्वेषामागमानां स्वानि सूत्राणि स्वा गाथाश्चैकीकृताः, प्रति-वाच्चयं निर्युक्तिगाथा भाष्यगाथा अपि च संमील्य विवक्षिताः, अन्यथा प्रतिस्थानं श्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशसूत्रगाथानां पृथक् पृथगंकन्यासेन निर्युक्तिमूलभाष्यभाष्यध्यानशतकसंग्रहणीगाथादीनां पृथक्पृथगक्षरोपन्यासेन च गौरवं स्यात्, या च क्षतिर्मुद्रणे जाताऽङ्कानां विहारादिना कारणेन तस्याः मार्जनाय चात्राङ्कशुद्धिरादाववधृता लघ्वी महती च सा विलोकनीयाऽवश्यं, प्रारंभे दृष्टिगोचरीकार्यश्च संकेतसूचकोऽधि-कारश्च सहैव तेन मुद्रापितो मतिमद्भिः, परशास्त्रगतसूत्रसूत्रगाथानिर्युक्तिभाष्यादिस्थानजिज्ञासायां अकारादिक्रमावलोककानां चोपकरिष्यति स्पष्टं विशिष्टाङ्कशुद्धिपत्रिकाऽकारादिक्रमस्य पुरतो मध्ये धृतेत्यर्थयन्ते **आनन्दसागराः** १९८४ पौषकृष्ण १३ शुक्रवासरे इडरदुर्गे.

शान्तिं कृतः शान्तिजिनस्य मूर्त्या, दुर्गस्थचैत्यालयमाश्रयन्त्या।
अधिष्ठिते **हीडर**धाम्नि एषा, प्रस्तावनाऽकारि जनावबुद्ध्यै ॥ १ ॥

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:		क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:
अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:								
०१	❁ आचार				०७	❁ उपासकदशा		
०२	❁ सूत्रकृत्				०८	❁ अंतकृद्दशा		
०३	❁ स्थान				०९	❁ अनुत्तरोपपातिकदशा		
०४	❁ समवाय				१०	❁ प्रश्नव्याकरण		
०५	❁ भगवती				११	❁ विपाकश्रुत		
०६	❁ ज्ञाताधर्मकथा				-----	----------		
उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:								
१२	❁ औपपातिक				१८	❁ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति		
१३	❁ राजप्रश्नीय				१९	❁ निरयावलिका		
१४	❁ जीवाजीवाभिगम				२०	❁ कल्पवतंसिका		
१५	❁ प्रज्ञापना				२१	❁ पुष्पिता		
१६+१७	❁ सूर्य+चन्द्र-प्रज्ञप्ति				२२	❁ पुष्पचूलिका		
-----	----------				२३	❁ वृष्णिदशा		

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

क्रमांक:	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:		क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांक:	बृहदनुक्रम पृष्ठांक:
			प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
२४	❁ चतु:शरण				२९	❁ संस्तारक		
२५	❁ आतुरप्रत्याख्यान				३०	❁ गच्छाचार		
२६	❁ महाप्रत्याख्यान				३१	❁ गणिविज्जा		
२७	❁ भक्तपरिज्ञा				३२	❁ देवेन्द्रस्तव		
२८	❁ तंदुलवैचारिक				३३	❁ मरणसमाधि		
	*** [३४-३९] छेदसूत्र-वृत्ति का विषयानुक्रम पूज्य आगमोद्धारकश्रीने नही बनाया ***							
			मूल-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
४०	❁ आवश्यक	३३७	३४७		४२	❁ दशवैकालिक	३२५	३७८
४१/१	❁ पिंडनिर्युक्ति	३९४	०८६		४३	❁ उत्तराध्ययन	३२६	४०२
४१/२	❁ ओघनिर्युक्ति	३६५	०५७		-----	----------		
			चूलिका-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:					
४४	❁ नन्दी	३२३	३२८		४५	❁ अनुयोगद्वार	३२३	३३१

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांक: एवं दीप-क्रमांक:

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्र
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-	
०१	❁ आचार	४०२	१४७	५५२	१६	❁ सूर्यप्रज्ञप्ति	१०७	१०३	२१४
०२	❁ सूत्रकृत्	०८२	७२३	८०६	१७	❁ चन्द्रप्रज्ञप्ति	१०७	१०७	२१८
०३	❁ स्थान	७८३	१६९	१०१०	१८	❁ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१७८	१३१	३६५
०४	❁ समवाय	१६०	०९३	३८३	१९	❁ निरयावलिका	०२०	----	०२१
०५	❁ भगवती	८६९	११४	१०८७	२०	❁ कल्पवतंसिका	००२	००१	००५
०६	❁ ज्ञाताधर्मकथा	१६५	०५७	२४१	२१	❁ पुष्पिता	००६	००२	०११
०७	❁ उपासकदशा	०५८	०१३	०७३	२२	❁ पुष्पचूलिका	००१	००१	००३
०८	❁ अंतकृद्दशा	०२७	०१२	०६२	२३	❁ वृष्णिदशा	००२	००१	००५
०९	❁ अनुत्तरोपपातिकदशा	००६	००२	०१३	२४	❁ चतु:शरण	-----	०६३	०६३
१०	❁ प्रश्नव्याकरण	०३०	०१४	०४७	२५	❁ आतुरप्रत्याख्यान	००१	०७०	०७१
११	❁ विपाकश्रुत	०३४	००३	०४७	२६	❁ महाप्रत्याख्यान	-----	१४२	१४२
१२	❁ औपपातिक	०४३	०३०	०७७	२७	❁ भक्तपरिज्ञा	-----	१७२	१७२
१३	❁ राजप्रश्नीय	०८५	-----	०८५	२८	❁ तंदुलवैचारिक	०२०	१३९	१६१
१४	❁ जीवाजीवाभिगम	२७३	०९३	३९८	२९	❁ संस्तारक	-----	१३३	१३३
१५	❁ प्रज्ञापना	३५२	२३१	६२२	३०	❁ गच्छाचार	-----	१३७	१३७

❁ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नही किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांक: एवं दीप-क्रमांक:

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-गाथा	
३१	❁ गणिविज्जा	-----	०८२	०८२	४१/२	❁ ओघनिर्युक्ति	-----	८१२	११६५
३२	❁ देवेन्द्रस्तव	-----	३०७	३०७	४२	❁ दशवैकालिक	०२१	५१५	५४०
३३	❁ मरणसमाधि	-----	६६३	६६४	४३	❁ उत्तराध्ययन	०८८	१६४०	१७३१
❁४०	❁ आवश्यक	०५०	०२१	०९२	४४	❁ नन्दीसूत्र	०५९	०९०	१६३
४१/१	❁ पिंडनिर्युक्ति	-----	६७१	७१२	४५	❁ अनुयोगद्वार	१५२	१४१	३५०

❁ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नही किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

[नन्दी-आदि-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ] इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

✣ यह प्रत "नन्द्यादि-सूत्र लघुबृहद्विषयानुक्रमौ" नामसे सन १९२८ (विक्रम-संवत १९८४) में 'आगमोदय समिति' नामक संस्था' द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराजसाहेब |

✣ पूज्यपाद् आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने 'नन्दी, अनुयोगद्वार, आवश्यक' वगैरेह मूल तथा चूलिका-सूत्रो के सूत्र एवं उस पर पूर्वाचार्य रचित वृत्ति आदि का संपादन किया था | उन प्रतोमे जो मूलसूत्र, गाथा, वृत्ति आदि थे उन सभी सूत्रादि के विषयो का अनुक्रम संक्षेप और विस्तार से लिखकर इस प्रतमे प्रकाशित करवाया है | अर्थात् ४+१ मूलसूत्र और नन्दी आदि चूलिका-सूत्रो के लघु और बृहत् विषयानुक्रम के रचयिता, संपादक और प्रकाशक श्री आगमोद्धारक आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब ही है

✣ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्रीने इसी तरह अंगसूत्रो, उपांगसूत्रो और प्रकीर्णक सूत्रो के सूत्र-आदि के विषयो का अनुक्रम भी संक्षेप और विस्तार से लिखकर संपादन और प्रकाशन करवाया है |

✣ हमारा ये प्रयास क्यों? ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, अब तक मेरे प्रकाशित किये हुए पुस्तको के १,००,००० से ज्यादा पृष्ठ हो चुके है, किन्तु लोगो की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे प्रत संबंधी उपयोगी माहिती लिख दी है, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौन से वर्ण का क्रम चल रहा है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके |

✣ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री ने आगम संबंधी ५२ विषयो को वर्गीकृत किया था, आज भी उनमे से ऐसी कइं प्रते मिलती है, जिसमे ये विभाजन-क्रमांक देखने को मिलते है, उनमे से थोडे विषयो का काम हुआ भी है, जो मुद्रित स्थितिमे भी प्राप्त है |

✣ शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणा से और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'आगम-संबंधी-साहित्य' भाग-4 का मुद्रण हुआ है, हम उनके प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है|

. मुनि दीपरत्नसागर...

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म॰ सा॰]

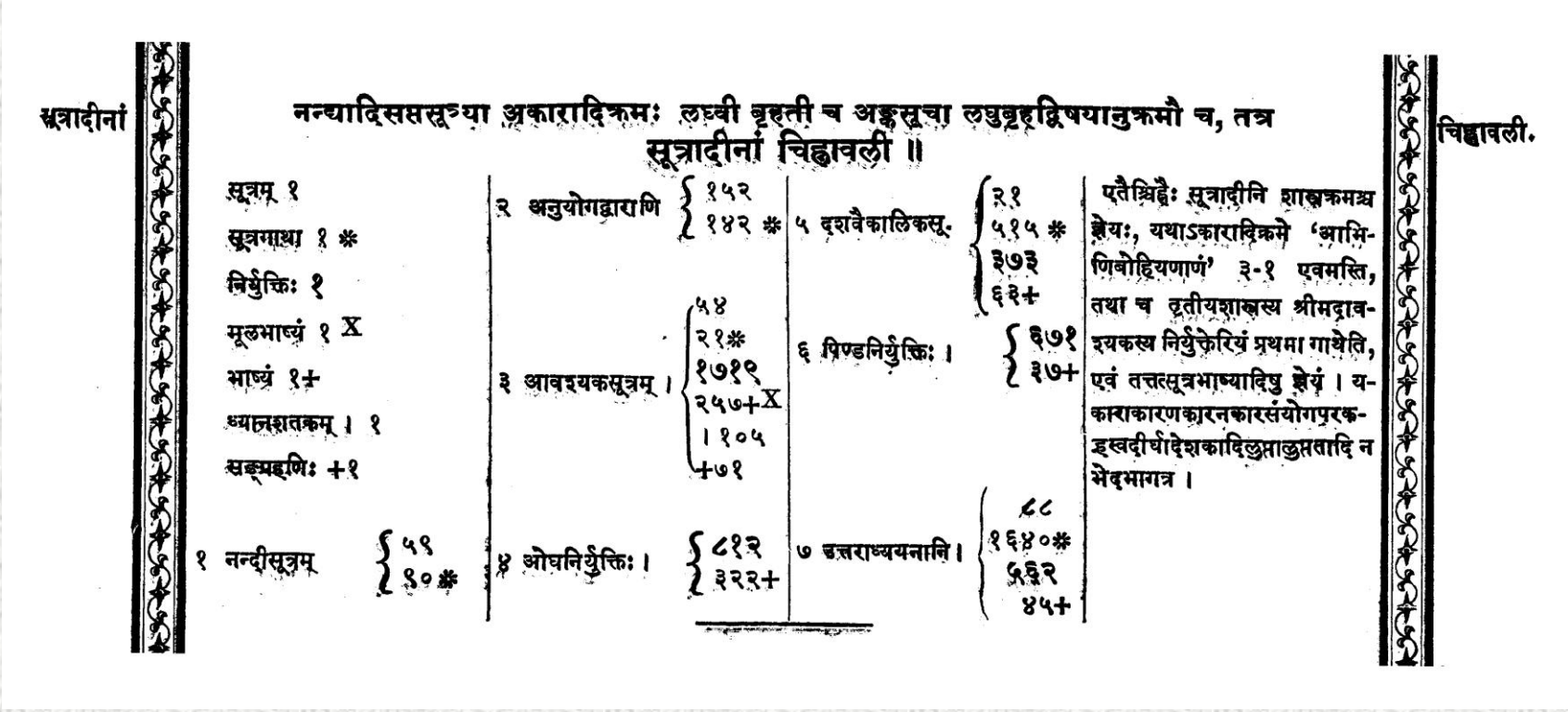
नन्दी-आदि सप्त-सूत्राणाम्

लघु-विषयानुक्रम:

← पुन: संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर मुनि दीपरत्नसागर(M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

आगम संबंधी साहित्य	**नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ** ["---"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए **दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'**	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



सूत्रादीनां

नन्द्यादिससंख्या अकारादिक्रमः लघ्वी बृहती च अङ्कसूचा लघुबृहद्विषयानुक्रमौ च, तत्र

सूत्रादीनां चिह्नावली ॥

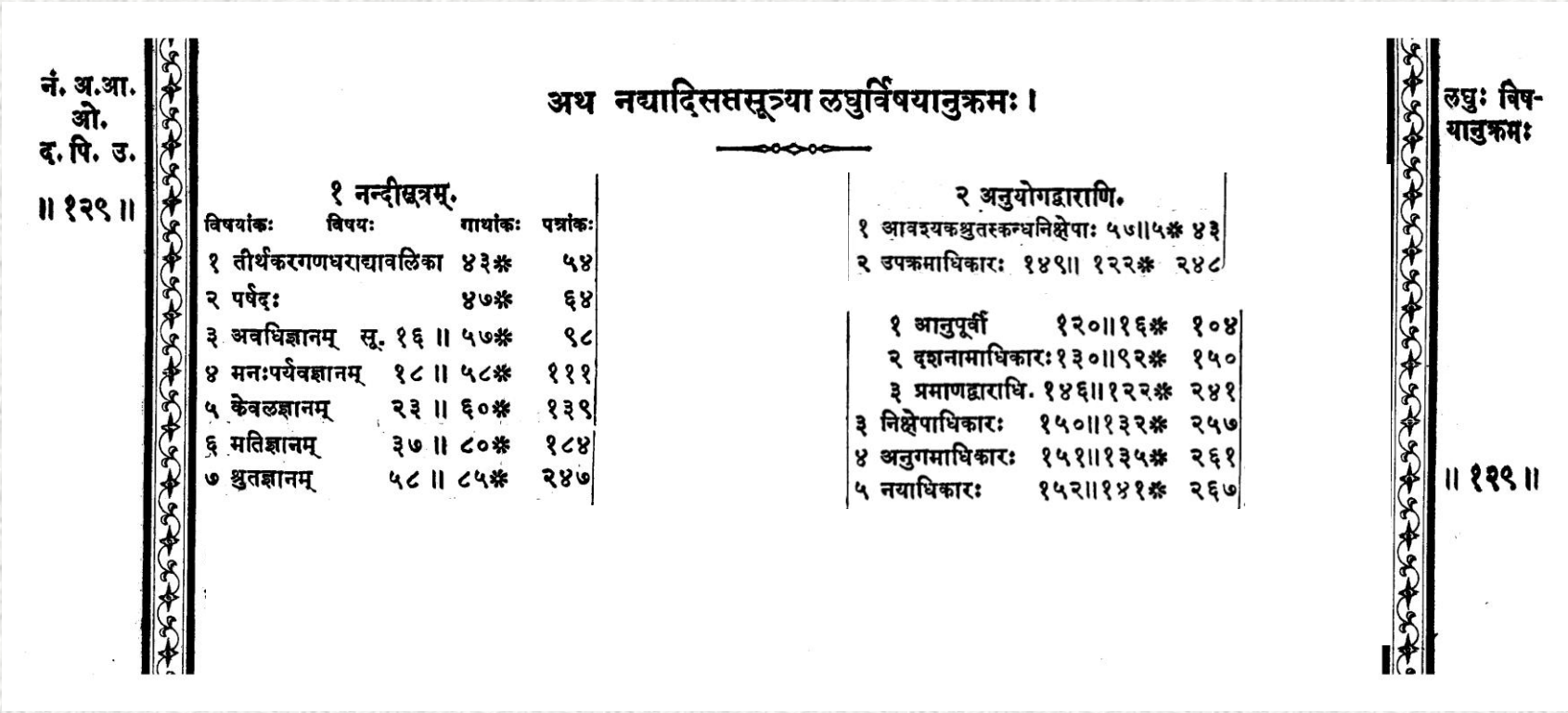
सूत्रम् १		२ अनुयोगद्वाराणि	१५२ १४२ *	५ दशवैकालिकसू.	२१ ५१५ * ३७३ ६३+	एतैश्चिह्नैः सूत्रादीनि शास्त्रक्रमश्च ज्ञेयः, यथाऽकारादिक्रमे 'आभिणिबोहियणाणं' ३-१ एवमस्ति, तथा च तृतीयशास्त्रस्य श्रीमदावश्यकस्य निर्युक्तेरियं प्रथमा गाथेति, एवं तत्तत्सूत्रभाष्यादिषु ज्ञेयं । यकाराकारणकारनकारसंयोगपरकह्रस्वदीर्घादेशकादिलुप्तालुप्ततादि न भेदभागत्र ।	
सूत्रगाथा १ *							
निर्युक्तिः १							
मूलभाष्यं १ X		३ आवश्यकसूत्रम् ।	५४ २१* १७१९ २५७+X । १०५ +७१	६ पिण्डनिर्युक्तिः ।	६७१ ३७+		
भाष्यं १+							
ध्यानशतकम् । १							
सङ्ग्रहणिः +१							
१ नन्दीसूत्रम्	५९ ९०*	४ ओघनिर्युक्तिः ।	८१२ ३२२+	७ उत्तराध्ययनानि ।	८८ १६४०* ५६२ ४५+		

चिह्नावली.

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

["नन्दी + अनुयोग"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नं. अ.आ. ओ. द. पि. उ. ॥ १२९ ॥

अथ नद्यादिसप्तसूत्र्या लघुर्विषयानुक्रमः ।

१ नन्दीसूत्रम्.

विषयांकः	विषयः	गाथांकः	पत्रांकः
१	तीर्थकरगणधरावलिका	४३*	५४
२	पर्षदः	४७*	६४
३	अवधिज्ञानम् सू. १६ ॥	५७*	९८
४	मनःपर्यवज्ञानम् १८ ॥	५८*	१११
५	केवलज्ञानम् २३ ॥	६०*	१३९
६	मतिज्ञानम् ३७ ॥	८०*	१८४
७	श्रुतज्ञानम् ५८ ॥	८५*	२४७

२ अनुयोगद्वाराणि.

१	आवश्यकश्रुतस्कन्धनिक्षेपाः	५७॥५*	४३
२	उपक्रमाधिकारः	१४९॥ १२२*	२४८
	१ आनुपूर्वी	१२०॥१६*	१०४
	२ दर्शनाभाधिकारः	१३०॥९२*	१५०
	३ प्रमाणद्वाराधि.	१४६॥१२२*	२४१
३	निक्षेपाधिकारः	१५०॥१३२*	२५७
४	अनुगमाधिकारः	१५१॥१३५*	२६१
५	नयाधिकारः	१५२॥१४१*	२६७

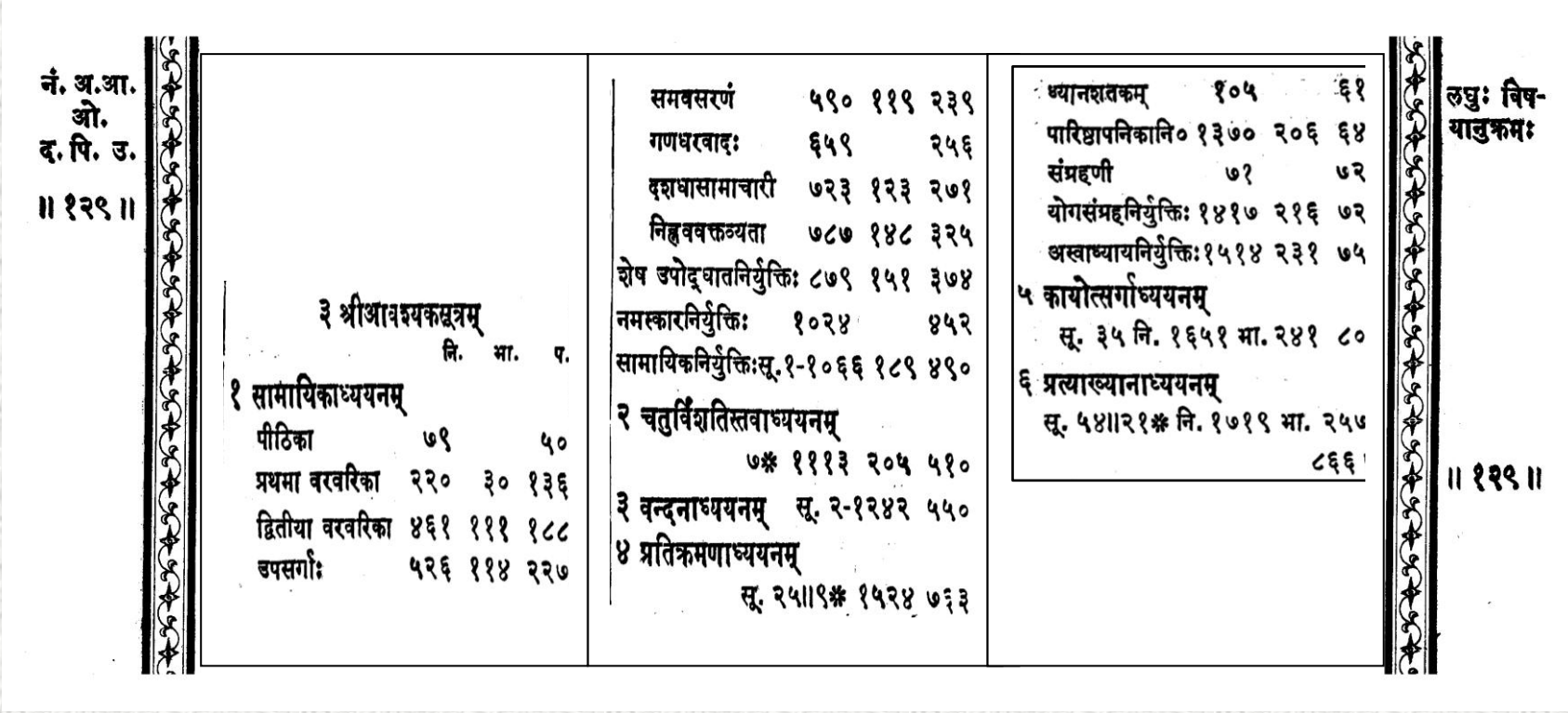
लघुः विषयानुक्रमः

॥ १२९ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

["आवश्यक"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नं. अ.आ. ओ. द. पि. उ.

॥ १२९ ॥

३ श्रीआवश्यकसूत्रम्

	नि.	भा.	प.
१ सामायिकाध्ययनम्			
पीठिका	७९		५०
प्रथमा वरवरिका	२२०	३०	१३६
द्वितीया वरवरिका	४६१	१११	१८८
उपसर्गाः	५२६	११४	२२७
समवसरणं	५९०	११९	२३९
गणधरवादः	६५९		२५६
दशधासामाचारी	७२३	१२३	२७१
निह्नववक्तव्यता	७८७	१४८	३२५
शेष उपोद्घातनिर्युक्तिः	८७९	१५१	३७४
नमस्कारनिर्युक्तिः	१०२४		४५२
सामायिकनिर्युक्तिःसू.१-१०६६	१८९		४९०
२ चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनम्			
७*	१११३	२०५	५१०
३ वन्दनाध्ययनम् सू. २-१२४२			५५०
४ प्रतिक्रमणाध्ययनम्			
सू. २५॥९*	१५२४	७३३	
ध्यानशतकम्	१०५		६१
पारिष्ठापनिकानि०	१३७०	२०६	६४
संग्रहणी	७१		७२
योगसंग्रहनिर्युक्तिः	१४१७	२१६	७२
अस्वाध्यायनिर्युक्तिः	१५१४	२३१	७५
५ कायोत्सर्गाध्ययनम्			
सू. ३५ नि. १६५१	भा. २४१		८०
६ प्रत्याख्यानाध्ययनम्			
सू. ५४॥२१* नि. १७१९	भा. २५७		
			८६६

लघुः विष-यानुक्रमः

॥ १२९ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

["ओघनिर्युक्ति, दशवैकालिक, पिंदनिर्युक्ति"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

४ ओघनिर्युक्तिः

प्रतिलेखनादीनि द्वाराणि	३३०	१९१	१२७
पिण्डद्वारं	६६६	३१२	२०७
उपधिनिरूपणं	७६३	३२२	२२२
अनायतनवर्जनं	७८५		२२४
प्रतिषेवणाद्वारम्	७८९		२२४
आलोचनाद्वारं	७९२		२२५
विशुद्धिद्वारम्	८१२		२२७

५ दशवैकालिकं

१ द्रुमपुष्पिकाध्ययनम्	५	१५३	८२
२ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम्	१६	१७९	९९
३ क्षुल्लिकाचारकथा	३१	२१७	११८
४ षड्जीवनिकाध्ययनम्	सू. १५॥५९		नि. २३५ भा. ६० प. १६०
५ पिण्डैषणाध्ययनम्			
१ प्रथम उद्देशः	१५९	२३६	६१ १८०
२ द्वितीय उद्देशः	२०९	२४६	६२ १९०
६ महाचारकथा (धर्मार्थकामाध्ययनम्)	२७७	२७०	२०६
७ वाक्यशुद्धयध्ययनम्	३३४	२९४	२२३
८ आचारप्रणिध्यध्ययनम्	३९८	३१०	२३८
९ विनयाध्ययनम्			
१ प्रथम उद्देशकः	४१५	३२९	२४५
२ द्वितीय उद्देशकः	४३८		२५१
३ तृतीय उद्देशकः	४५३		२५४
४ चतुर्थ उद्देशकः सू.२०॥४६०			२५८
१० समिक्षवध्ययनम्	४८१	३६०	२६८
११रतिवाक्यचूडा सू.२१	४९९	३६९	२७७
१२ विविक्तचर्याचूडा	५१५	३७३	६३ २८४

६ पिंडनिर्युक्तिः

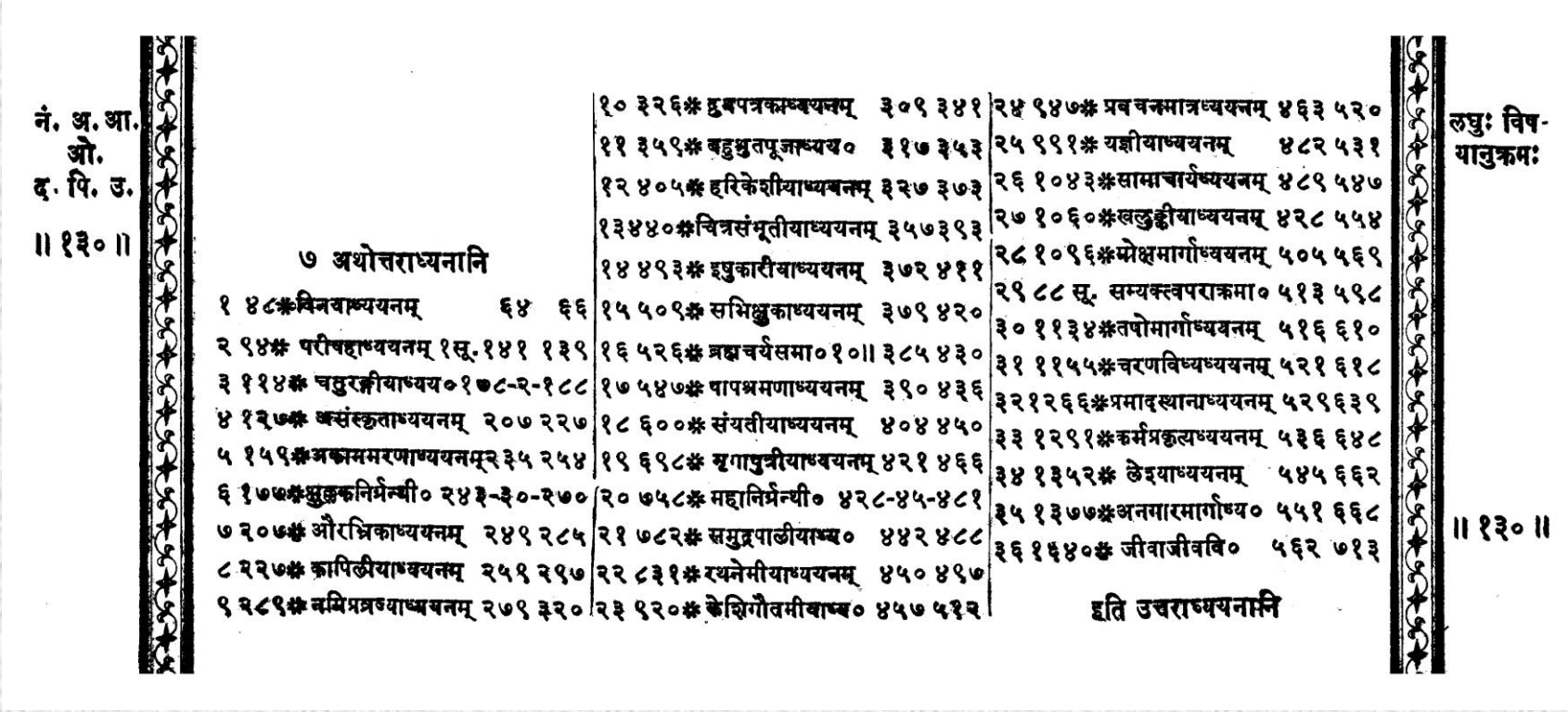
	नि.	भा.	प.
१ पिण्डनिरूपणम्	७२	१५	२८
२ उद्गमदोषाः	४०३	३०	११९
३ उत्पादनादोषाः	५१५	३७	१४६
४ एषणादोषाः	६२८		१७०
५ ग्रासैषणादोषाः	६७१		१७८

-- X -- X -- X -- X --

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

["उत्तराध्ययन"]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नं. अ. आ. ओ. द. पि. उ. ॥ १३० ॥

७ अथोत्तराध्ययनानि

१ ४८* विनयाध्ययनम् ६४ ६६
२ ९४* परीषहाध्ययनम् १सू.१४१ १३९
३ ११४* चतुरङ्गीयाध्ययन० १७८-२-१८८
४ १२७* असंस्कृताध्ययनम् २०७ २२७
५ १५९* अकाममरणाध्ययनम् २३५ २५४
६ १७७* क्षुल्लकनिर्ग्रन्थी० २४३-३०-२७०
७ २०७* औरभ्रिकाध्ययनम् २४९ २८५
८ २२७* कापिलीयाध्ययनम् २५१ २९७
९ २८९* नमिप्रव्रज्याध्ययनम् २७९ ३२०
१० ३२६* द्रुमपत्रकाध्ययनम् ३०९ ३४१
११ ३५९* बहुश्रुतपूजाध्यय० ३१७ ३५३
१२ ४०५* हरिकेशीयाध्ययनम् ३२७ ३७३
१३ ४४०* चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ३५७ ३९३
१४ ४९३* इषुकारीयाध्ययनम् ३७२ ४११
१५ ५०९* सभिक्षुकाध्ययनम् ३७९ ४२०
१६ ५२६* ब्रह्मचर्यसमा० १०॥ ३८५ ४३०
१७ ५४७* पापश्रमणाध्ययनम् ३९० ४३६
१८ ६००* संयतीयाध्ययनम् ४०४ ४५०
१९ ६९८* मृगापुत्रीयाध्ययनम् ४२१ ४६६
२० ७५८* महानिर्ग्रन्थी० ४२८-४५-४८१
२१ ७८२* समुद्रपालीयाध्य० ४४२ ४८८
२२ ८३१* रथनेमीयाध्ययनम् ४५० ४९७
२३ ९२०* केशिगौतमीयाध्य० ४५७ ५१२
२४ ९४७* प्रवचनमात्राध्ययनम् ४६३ ५२०
२५ ९९१* यज्ञीयाध्ययनम् ४८२ ५३१
२६ १०४३* सामाचार्यध्ययनम् ४८९ ५४७
२७ १०६०* खलुङ्कीयाध्ययनम् ४२८ ५५४
२८ १०९६* मोक्षमार्गाध्ययनम् ५०५ ५६९
२९ ८८ सू. सम्यक्त्वपराक्रमा० ५१३ ५९८
३० ११३४* तपोमार्गाध्ययनम् ५१६ ६१०
३१ ११५५* चरणविध्यध्ययनम् ५२१ ६१८
३२ १२६६* प्रमादस्थानाध्ययनम् ५२९ ६३९
३३ १२९१* कर्मप्रकृत्यध्ययनम् ५३६ ६४८
३४ १३५२* लेश्याध्ययनम् ५४५ ६६२
३५ १३७७* अनगारमार्गाध्य० ५५१ ६६८
३६ १६४०* जीवाजीवावि० ५६२ ७१३

इति उत्तराध्ययनानि

लघुः विषयानुक्रमः ॥ १३० ॥

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म॰ सा॰]

नन्दी-आदि सप्त-सूत्राणाम्

बृहत्-विषयानुक्रम:

← पुन: संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर **मुनि दीपरत्नसागर**(M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि)

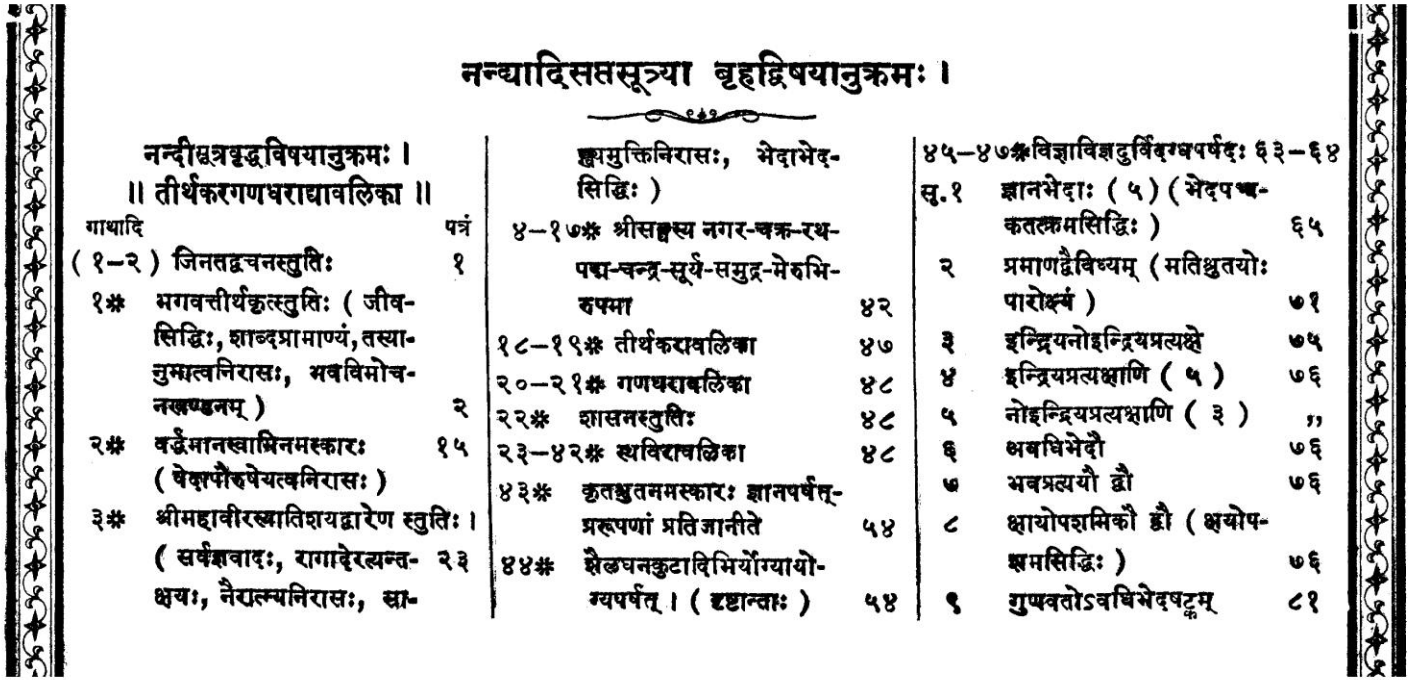
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादिसप्तसूत्र्या बृहद्विषयानुक्रमः ।

नन्दीसूत्रवृद्धविषयानुक्रमः ।

॥ तीर्थकरगणधराद्यावलिका ॥

गाथादि		पत्रं
(१–२)	जिनस्तद्वचनस्तुतिः	१
१*	भगवत्तीर्थकृत्स्तुतिः (जीव-सिद्धिः, शाब्दप्रामाण्यं, तस्या-नुमात्वनिरासः, भवविमोच-नखण्डनम्)	२
२*	वर्द्धमानस्वामिनमस्कारः (वेदापौरुषेयत्वनिरासः)	१५
३*	श्रीमहावीरस्यातिशयद्वारेण स्तुतिः । (सर्वज्ञवादः, रागादेरत्यन्त-क्षयः, नैरात्म्यनिरासः, सा-क्षामुक्तिनिरासः, भेदाभेद-सिद्धिः)	२३
४–१७*	श्रीसङ्घस्य नगर-चक्र-रथ-पद्म-चन्द्र-सूर्य-समुद्र-मेरुभि-रुपमा	४२
१८–१९*	तीर्थकरावलिका	४७
२०–२१*	गणधरावलिका	४८
२२*	शासनस्तुतिः	४८
२३–४२*	स्थविरावलिका	४८
४३*	कृतश्रुतनमस्कारः ज्ञानपर्यन्त-प्ररूपणां प्रतिजानीते	५४
४४*	शैलघनकुटादिभिर्योग्यायो-ग्यपर्यन्त् । (दृष्टान्ताः)	५४
४५–४७*	विज्ञाविज्ञदुर्विदग्धपर्षदः	६३–६४
सू.१	ज्ञानभेदाः (५) (भेदपञ्च-कतत्क्रमसिद्धिः)	६५
२	प्रमाणद्वैविध्यम् (मतिश्रुतयोः पारोक्ष्यं)	७१
३	इन्द्रियनोइन्द्रियप्रत्यक्षे	७५
४	इन्द्रियप्रत्यक्षाणि (५)	७६
५	नोइन्द्रियप्रत्यक्षाणि (३)	,,
६	अवधिभेदौ	७६
७	भवप्रत्ययौ द्वौ	७६
८	क्षायोपशमिकौ द्वौ (क्षयोप-क्षमसिद्धिः)	७६
९	गुणवतोऽवधिभेदषट्कम्	८१

[आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'

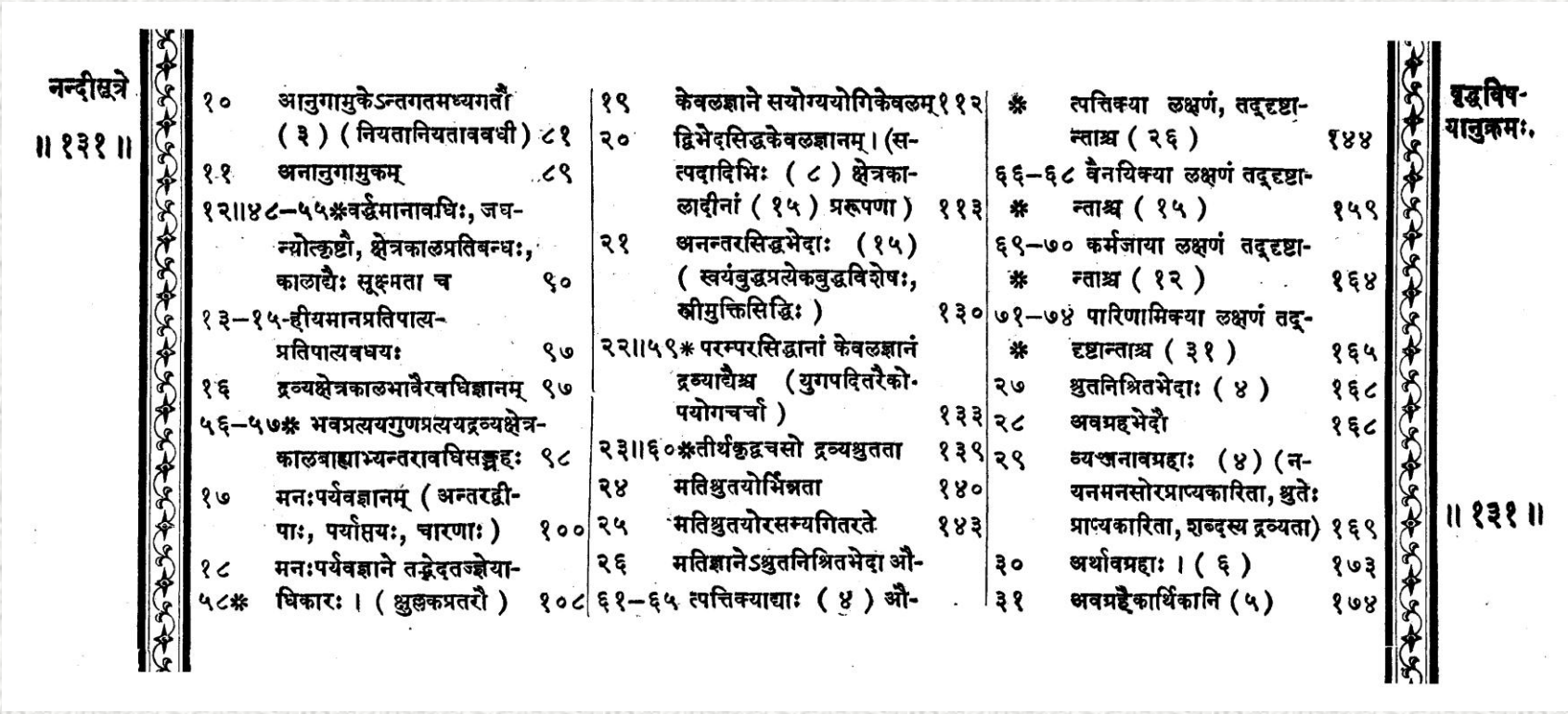
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्दीसूत्रे ॥ १३१ ॥

१० आनुगामुकेऽन्तगतमध्यगतौ (३) (नियतानियतावधी) ८१
११ अनानुगामुकम् ८९
१२॥४८–५५* वर्द्धमानावधिः, जघन्योत्कृष्टौ, क्षेत्रकालप्रतिबन्धः, कालाद्यैः सूक्ष्मता च ९०
१३–१५ हीयमानप्रतिपात्यप्रतिपात्यवधयः ९७
१६ द्रव्यक्षेत्रकालभावैरवधिज्ञानम् ९७
५६–५७* भवप्रत्ययगुणप्रत्ययद्रव्यक्षेत्रकालबाह्याभ्यन्तरावधिसङ्ग्रहः ९८
१७ मनःपर्यवज्ञानम् (अन्तरद्वीपाः, पर्याप्तयः, चारणाः) १००
१८ मनःपर्यवज्ञाने तद्भेदतज्ज्ञेया-
५८* धिकारः । (क्षुल्लकप्रतरौ) १०८
१९ केवलज्ञाने सयोग्ययोगिकेवलम् ११२
२० द्विभेदसिद्धकेवलज्ञानम् । (सत्पदादिभिः (८) क्षेत्रकालादीनां (१५) प्ररूपणा) ११३
२१ अनन्तरसिद्धभेदाः (१५) (स्वयंबुद्धप्रत्येकबुद्धविशेषः, स्त्रीमुक्तिसिद्धिः) १३०
२२॥५९* परम्परसिद्धानां केवलज्ञानं द्रव्याद्यैश्च (युगपदितरैकोपयोगचर्चा) १३३
२३॥६०* तीर्थकृद्वचसो द्रव्यश्रुतता १३९
२४ मतिश्रुतयोर्भिन्नता १४०
२५ मतिश्रुतयोरसम्यगितरते १४३
२६ मतिज्ञानेऽश्रुतनिश्रितभेदा औ-
६१–६५ त्पत्तिक्याद्याः (४) औ-
* त्पत्तिक्या लक्षणं, तद्दृष्टान्ताश्च (२६) १४४
६६–६८ वैनयिक्या लक्षणं तद्दृष्टा-
* न्ताश्च (१५) १५९
६९–७० कर्मजाया लक्षणं तद्दृष्टा-
* न्ताश्च (१२) १६४
७१–७४ पारिणामिक्या लक्षणं तद्-
* दृष्टान्ताश्च (३१) १६५
२७ श्रुतनिश्रितभेदाः (४) १६८
२८ अवग्रहभेदौ १६८
२९ व्यञ्जनावग्रहाः (४) (नयनमनसोरप्राप्यकारिता, श्रुतेः प्राप्यकारिता, शब्दस्य द्रव्यता) १६९
३० अर्थावग्रहाः । (६) १७३
३१ अवग्रहैकार्थिकानि (५) १७४

वृद्धविषयानुक्रमः. ॥ १३१ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

३२	ईहाभेदास्तदेकार्थिकानि च (५)	१७५
३३	षड्विधोऽपायस्तदेकार्थिकानि च (५)	१७६
३४	षड्विधा धारणा तदेकार्थिकानि च (६)	१७६
३५	अवग्रहादेः कालः	१७७
३६	व्यञ्जनावग्रहे प्रतिबोधकमल्लकदृष्टान्तौ	१७८
३७	द्रव्यादेराभिनिबोधिकभेदाः,	
७५–८०	कालः, स्पष्टत्वादि, मिश्रशब्दादि, तदेकार्थिकानि च	१८४
३८	श्रुतज्ञानभेदाः	१८७
३९॥८१*	अक्षरानक्षरश्रुते	१८७
४०	सञ्ज्ञयसञ्ज्ञिश्रुते (कालिकहेतुदृष्टिवादसञ्ज्ञाः)	१८९
४१	सम्यक्श्रुतम्	१९२
४२	मिथ्याश्रुतं, (सम्यग्मिथ्याश्रुतत्वे हेतुश्चारो द्रव्यादैः (४) पर्यवाक्षरमक्षरानन्तभागः, कालचक्रस्वरूपं च)	१९४
४३	साद्यवसानेतरश्रुताधिकारः	१९५
४४	गमिकेतरौ, आवश्यकोत्कालिककालिकप्रकीर्णकभेदाः	२०२
४५-५६	अङ्गप्रविष्टभेदाः आचाराङ्ग १ सूत्रकृताङ्ग २-(३६३ पाखण्डा धिकारः)-स्थानाङ्ग ३ समवायाङ्ग ४-व्याख्याप्रज्ञप्ति ५ ज्ञाताधर्म०-६ उपासकदशाङ्गा ७ ऽन्तकृद्दशाङ्गा ८ऽनुत्तरौपपातिक-९ प्रश्नव्याकरण १० विपाकश्रुता ११ नामधिकाराः	२०९
५७॥८२-८४*	दृष्टिवादःसप्रभेदःपरि० ७–८६ सूत्र २२–८८ पूर्वगत १व.२०चू.४, २ व. १४ चू.१२,३व.८, चू.८,४ व.१८चू. १०,५ व. १२,६-२, ७-१६,८-३०,९-२०, १०-१५,११-१२,१२-१३,१३-३०,१४-२५, अनुयोग २ चूलिका ४ भेदाः । (सिद्धपञ्चाशिका)	२३५
५८ ८५*	द्वादशाङ्गीविराधनाऽऽराधना-फलं नित्यत्वविषयश्च	२४७
५९	सङ्ग्रहगाथा (श्रुतभेदाः (१४)	
८६-९०	बुद्धिगुणा (८) ऽनुयोगाः (७) (३) (अनुज्ञानन्दिर्योगनन्दिश्च)	२४९

इति नन्दीविषयाः

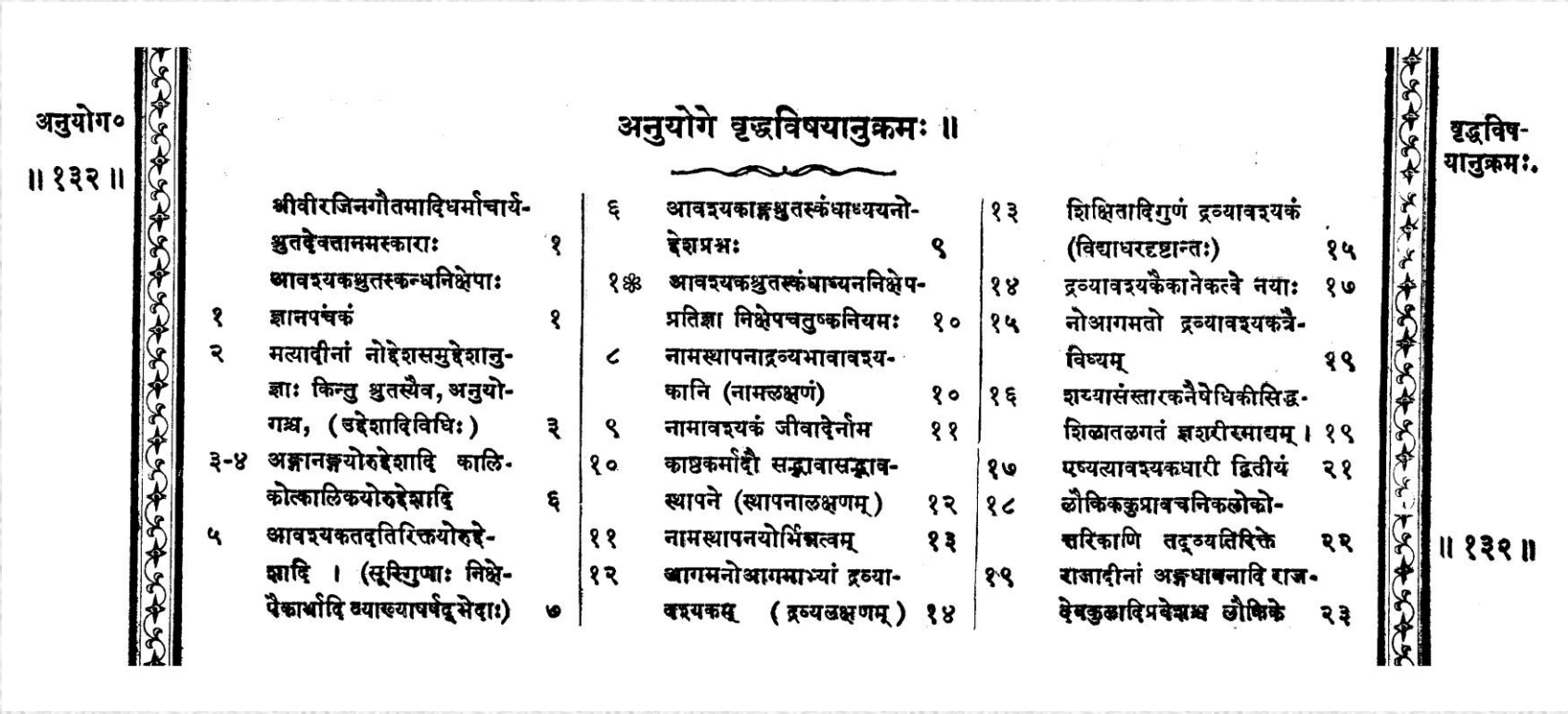
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



अनुयोग० ॥ १३२ ॥

अनुयोगे वृद्धविषयानुक्रमः ॥

श्रीवीरजिनगौतमादिधर्माचार्य-श्रुतदेवतानमस्काराः १
आवश्यकश्रुतस्कन्धनिक्षेपाः
१ ज्ञानपंचकं १
२ मत्यादीनां नोदेशसमुद्देशानुज्ञाः किन्तु श्रुतस्यैव, अनुयोगश्च, (उद्देशादिविधिः) ३
३-४ अक्षानक्षयोरुद्देशादि कालिकोत्कालिकयोरुद्देशादि ६
५ आवश्यकतदतिरिक्तयोरुद्देशादि । (सूस्त्रिणाः निक्षेपैकार्थादि व्याख्याषर्षद्भेदाः) ७
६ आवश्यकाङ्गश्रुतस्कंधाध्ययनोद्देशप्रश्नः ९
१* आवश्यकश्रुतस्कंधाध्ययननिक्षेप-प्रतिज्ञा निक्षेपचतुष्कनियमः १०
८ नामस्थापनाद्रव्यभावावश्यकानि (नामलक्षणं) १०
९ नामावश्यकं जीवादेर्नाम ११
१० काष्ठकर्मादौ सद्भावासद्भावस्थापने (स्थापनालक्षणम्) १२
११ नामस्थापनयोर्भिन्नत्वम् १३
१२ आगमनोआगमाभ्यां द्रव्यावश्यकम् (द्रव्यलक्षणम्) १४
१३ शिक्षितादिगुणं द्रव्यावश्यकं (विद्याधरदृष्टान्तः) १५
१४ द्रव्यावश्यकैकानेकत्वे नयाः १७
१५ नोआगमतो द्रव्यावश्यकत्रैविध्यम् १९
१६ शय्यासंस्तारकनैषेधिकीसिद्धशिलातलगतं ज्ञशरीरभाव्यम् । १९
१७ एष्यत्यावश्यकधारी द्वितीयं २१
१८ लौकिककुप्रावचनिकलोकोत्तरिकाणि तद्व्यतिरिक्ते २२
१९ राजादीनां अङ्गधावनादि राजदेवकुलादिप्रवेशश्च लौकिके २३

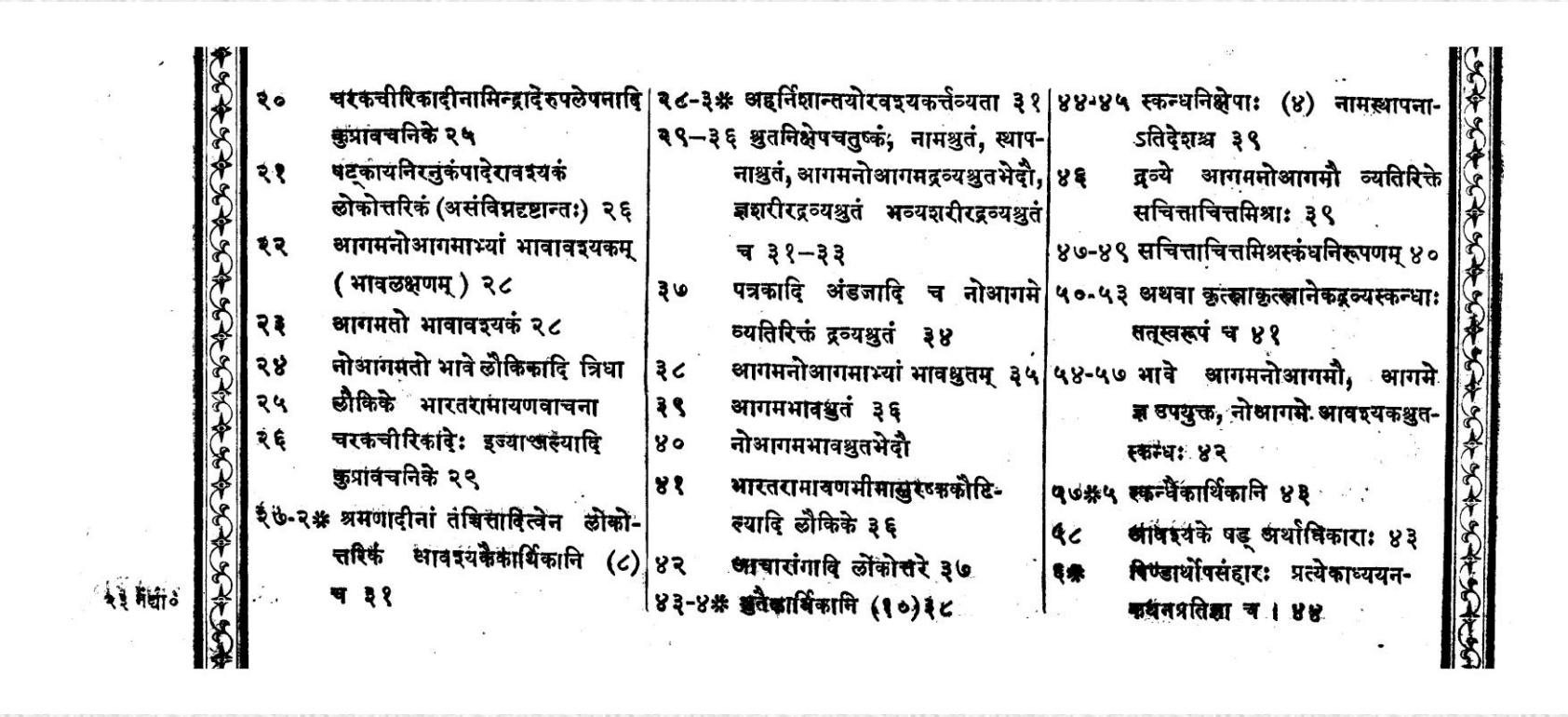
वृद्धविषयानुक्रमः. ॥ १३२ ॥

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



२० चरकचीरिकादीनामिन्द्रादेरुपलेपनादि कुप्रावचनिके २५
२१ षट्कायनिरनुकंपादेरावश्यकं लोकोत्तरिकं (असंविग्नदृष्टान्तः) २६
२२ आगमनोआगमाभ्यां भावावश्यकम् (भावलक्षणम्) २८
२३ आगमतो भावावश्यकं २८
२४ नोआगमतो भावे लौकिकादि त्रिधा
२५ लौकिके भारतरामायणवाचना
२६ चरकचीरिकादेः इज्याअञ्जल्यादि कुप्रावचनिके २९
२७-२* श्रमणादीनां तद्व्यतिरिक्तत्वेन लोकोत्तरिकं आवश्यकैकार्थिकानि (८) च ३१
२८-३* अहर्निशान्तयोरवश्यकर्त्तव्यता ३१
२९–३६ श्रुतनिक्षेपचतुष्कं; नामश्रुतं, स्थापनाश्रुतं, आगमनोआगमद्रव्यश्रुतभेदौ, ज्ञशरीरद्रव्यश्रुतं भव्यशरीरद्रव्यश्रुतं च ३१–३३
३७ पत्रकादि अंडजादि च नोआगमे व्यतिरिक्तं द्रव्यश्रुतं ३४
३८ आगमनोआगमाभ्यां भावश्रुतम् ३५
३९ आगमभावश्रुतं ३६
४० नोआगमभावश्रुतभेदौ
४१ भारतरामायणभीमासुरोक्तकौटिल्यादि लौकिके ३६
४२ आचारांगादि लोकोत्तरे ३७
४३-४* श्रुतैकार्थिकानि (१०) ३८
४४-४५ स्कन्धनिक्षेपाः (४) नामस्थापनाऽतिदेशश्च ३९
४६ द्रव्ये आगमनोआगमौ व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिश्राः ३९
४७-४९ सचित्ताचित्तमिश्रस्कंधनिरूपणम् ४०
५०-५३ अथवा कृत्स्नाकृत्स्नानेकद्रव्यस्कन्धाः तत्स्वरूपं च ४१
५४-५७ भावे आगमनोआगमौ, आगमे ज्ञ उपयुक्त, नोआगमे आवश्यकश्रुतस्कन्धः ४२
५७*-५ स्कन्धैकार्थिकानि ४३
५८ आवश्यके षड् अर्थाधिकाराः ४३
६* पिण्डार्थोपसंहारः प्रत्येकाध्ययनकथनप्रतिज्ञा च । ४४

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

अनुयोग० ॥ १३३ ॥

५९ अध्ययननामानि अनुयोगनामानि च

अथ उपक्रमाधिकारः

६० लौकिकोपक्रमाः (६) द्रव्ये व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिश्राः ४५

६१ सचित्ते द्विपदचतुष्पदापदेषु परिकर्मणि नाशे च ४६

६२ नटादिमागधान्तानां द्विपदः

६३ अश्वादीनां चतुष्पदः

६४ आम्रादीनामपदः

६५ स्कन्धादीनामचित्तः

६६ स्थासकादियुक्ताश्वादेर्मिश्रः ४७

६७ हलकुलिकादिः क्षेत्रस्योपक्रमः, नालिकादिभिः कालस्य ४८

६९ भावे आगमनोआगमौ, नोआगमे प्रशस्ताप्रशस्तौ, अप्रशस्ते ब्राह्मण्यादीनां, प्रशस्ते गुर्वादीनां (ब्राह्मणीगणिकामात्यकथाः) ४९

७० शास्त्रीयोपक्रमे आनुपूर्वीनामप्रमाणवक्तव्यतार्थाधिकारसमावतारः ५१

७१ नामाद्यानुपूर्व्यः (१०), आगमद्रव्यानुपूर्वी नोआगमद्रव्यानुपूर्वी, व्यतिरिक्ते औपनिधिक्यनौपनिधिकी च नैगमव्यवहारयोः, संग्रहस्य चान्त्या ५२

७३ आद्ययोः अर्थपदप्ररूपणाभङ्गकथनभङ्गदर्शनसमवतारानुगमाः ५३

७४ अर्थपदप्ररूपणा ५४

७५ प्ररूपणाप्रयोजनं ५५

७६ षट्विंशतिभङ्गकीर्त्तनानि ५६

७७ भङ्गकीर्त्तनप्रयोजनम् ५७

७८ भङ्गदर्शनम् (२६) ५८

७९ आनुपूर्वीद्रव्यसमवतारः ५९

८०*८ अनुगमे सत्पदप्ररूपणाद्याः (९) ५९

८१-८९ सत्पदप्ररूपणा, द्रव्यप्रमाणं क्षेत्रं स्पर्शना कालः अंतरं भागो भावः द्रव्यप्रदेशोभयार्थैरल्पबहुत्वम् ६९

९० संग्रहानौपनिधिक्या अर्थपदप्ररूपणाद्याः (५)

९१ अर्थपदप्ररूपणा ७०

९२ तत्प्रयोजनं भङ्गकीर्तनं तत्प्रयोजनं च

९३-९४ भङ्गदर्शनं समवतारश्च ७१

९५,९* सत्पदप्ररूपणादीनि अष्टौ ७२

वृद्धविषयानुक्रमः ॥ १३३ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

९६ औपनिधिक्यां त्रयम् ७३
९७ पूर्वानुपूर्वीपश्चानुपूर्व्यानुपूर्व्यः ७४
९८ (षड्द्रव्यसिद्धिः) पुद्गलास्तिकाये पूर्वानुपूर्व्याद्याः ७७
९९- क्षेत्रानुपूर्वीभेदौ नैगमव्यवहारयोः
१०० संग्रहस्य च ७८
१०१,१०* नैगमव्यवहारयोरनौपनिधिक्यामर्थप्ररूपणताद्याः (५) अर्थप्ररूपणा भङ्गदर्शनं समवतारः, अनुगमे सत्पदाद्याः (९) ८५
१०२-११* संग्रहेणानौपनिधिकीक्षेत्रानुपूर्व्यामर्थपदप्ररूपणताद्याः (५) ८७
१०३ औपनिधिकीक्षेत्रानुपूर्व्यः (३) अधोलोके रत्नप्रभाद्याः (८)तिर्यग्लोके जम्बूद्वीपाद्याः,
१२-१४* ऊर्ध्वलोके सौधर्माद्याः(१५)९२
१०४-१११ कालानुपूर्व्यौ, नैगमव्यवहारयोरनौपनिधिकी, अर्थपदप्ररूपणताद्याः, अर्थपदप्ररूपणता भङ्गकीर्त्तनं भङ्गदर्शनं समवतारोऽनुगमः (अर्थपदप्ररूपणताद्याः ९) ९७
११२-११३ सङ्ग्रहेऽनौपनिधिकी अर्थपदप्ररूपणताद्याः (५)
११४ औपनिधिकी कालानुपूर्व्या समयादिः सर्वाद्धान्तः ९९
११५ उत्कीर्तनानुपूर्व्या वृषभाद्याः(२४)१००
११६ गणनानुपूर्व्या दशकोटिशतान्ताः १०१
११७-११८,१६* स्थानानुपूर्वी, सामाचार्यानुपूर्वी इच्छामिच्छाद्याः (१०) १०२
११९ भावानुपूर्व्या औदयिकाद्याः(६)१०४
१२० एकादिदशान्तनामोपदेशः
॥ १० नामाधिकारः ॥
१२१,१७* एकनाम १०५
१२२ एकानेकाक्षरनाम्नी जीवाजीवनाम्नी सामान्यविशेषनाम्नी (सभेदनारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः) १०९
१२३ द्रव्य (६) गुण (२६) पर्यायना-
१८-२३* मानि, लिङ्गभेदेन वा अन्त्याक्षरोद्बोधितानि
१२४ आगमलोपप्रकृतिविकारैश्चतुर्नाम११२

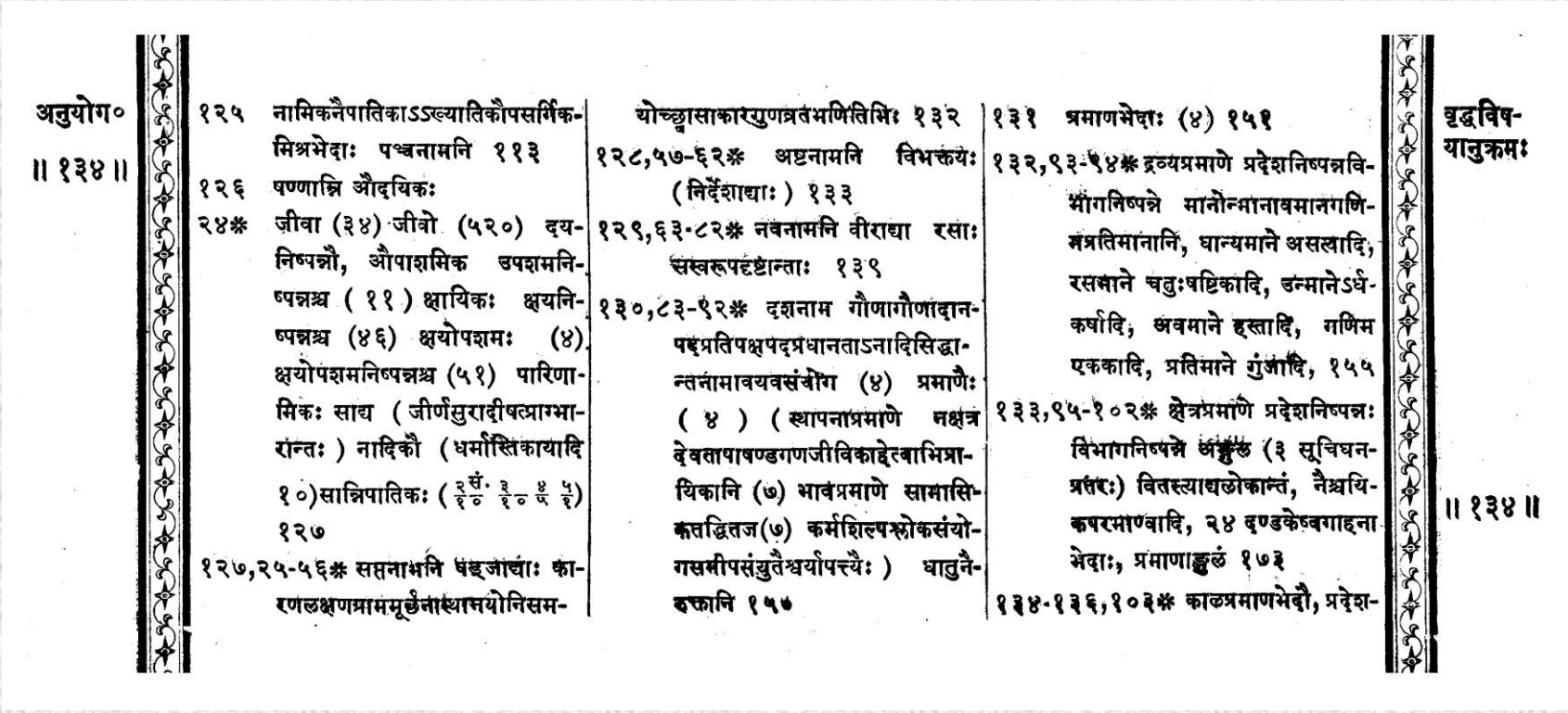
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



अनुयोग० ॥ १३४ ॥

१२५ नामिकनैपातिकाऽऽख्यातिकौपसर्गिक-मिश्रभेदाः पञ्चनामनि ११३
१२६ षण्णाम्नि औदयिकः
२४* जीवा (३४) जीवो (५२०) दय-निष्पन्नौ, औपाशमिक उपशमनि-ष्पन्नश्च (११) क्षायिकः क्षयनि-ष्पन्नश्च (४६) क्षयोपशमः (४) क्षयोपशमनिष्पन्नश्च (५१) पारिणा-मिकः साद्य (जीर्णसुरादीषत्प्राग्भा-रान्तः) नादिकौ (धर्मास्तिकायादि १०)सान्निपातिकः (२सं. ३ १० ४ ५ १) १२७
१२७,२५-५६* सप्तनामनि षड्जाद्याः का-रणलक्षणग्राममूर्छनास्थानयोनिसम-योच्छ्वासाकारगुणव्रतभणितिभिः १३२
१२८,५७-६२* अष्टनामनि विभक्तयः (निर्देशाद्याः) १३३
१२९,६३-८२* नवनामनि वीराद्या रसाः सस्वरूपदृष्टान्ताः १३९
१३०,८३-९२* दशनाम गौणागौणादान-पदप्रतिपक्षपदप्रधानताऽनादिसिद्धा-न्तनामावयवसंयोग (४) प्रमाणैः (४) (स्थापनाप्रमाणे नक्षत्र देवतापाषण्डगणजीविकादेत्वाभिप्रा-यिकानि (७) भावप्रमाणे सामासि-कतद्धितज(७) कर्मशिल्पश्लोकसंयो-गसमीपसंयुतैश्वर्यापत्त्यैः) धातुनै-रुक्तानि १५७
१३१ प्रमाणभेदाः (४) १५१
१३२,९३-९४* द्रव्यप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नवि-भागनिष्पन्ने मानोन्मानावमानगणि-मप्रतिमानानि, धान्यमाने असत्यादि, रसमाने चतुःषष्टिकादि, उन्मानेऽर्ध-कर्षादि, अवमाने हस्तादि, गणिम एककादि, प्रतिमाने गुंजादि, १५५
१३३,९५-१०२* क्षेत्रप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नः विभागनिष्पन्ने अङ्गुल (३ सूचिघन-प्रतरः) वितस्त्याद्यलोकान्तं, नैश्चयि-कपरमाण्वादि, २४ दण्डकेष्ववगाहना भेदाः, प्रमाणाङ्गुलं १७३
१३४-१३६,१०३* कालप्रमाणभेदौ, प्रदेश-

बृद्धविष-यानुक्रमः

॥ १३४ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

निष्पन्नः, विभागनिष्पन्ने समयादि पुद्गलपरावर्त्तान्तं १७५
१३७,१०४-१०६* समयप्ररूपणा, आवलिकादि पल्योपमान्तं १८३
१३८,१०७-११०* उद्धाराद्धाक्षेत्रपल्यसागरोपमाणि।
१३९,१११-११२* दण्डकेषु स्थितिः १८४
१४०,११३* सूक्ष्मेतरक्षेत्रपल्यसागरोपमाः १९२
१४१ षट् द्रव्याणि १९३
१४२ शरीरभेदा बद्धमुक्ताभ्यां दण्डकेषु२०९
१४३ भावप्रमाणानि(३)गुणनयसंख्याः११०
१४४,११४-११६* गुणा जीवा(८)ऽजीवयोः, अजीवे वर्ण (५) गंध (२) रस(५) स्पर्श (८) संस्थानानि (५) जीवे ज्ञाने प्रत्यक्षादि (४) प्रत्यक्षे इन्द्रिय-
(५) नोइन्द्रिये (३) अनुमाने पूर्ववत् क्षतवर्णादिना शेषवत् (कार्यकारणगुणावयवाश्रयैः) दृष्टसाधर्म्यवत् (सामान्यविशेषाभ्यां) (अतीताऽनागतवर्तमानाः) औपम्ये साधर्म्यवैधर्म्ये आगमे लौकिकलोकोत्तरौ सूत्रार्थोभये, दर्शने (४) चारित्रे (५) २२१
१४५ नयप्रमाणे प्रस्थकवसतिप्रदेशदृष्टान्ताः २२७
१४६,११९-१२२* संख्यायां नामस्थापनाद्रव्यौ (एकभविकादि) पल्यपरिमाणजाणणा (कालिकश्रुतादि) (सदसदादिना) गणनाभावाः, जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि संख्यातानि, परित्तयुक्तअसंख्यासंख्येषु जघन्याद्याः, परित्तयुक्तानन्तानन्तकेषु जघन्याद्याः२४१
१४७ वक्तव्यताः (३) २४३
१४८,१२३* अर्थाधिकाराः २४५
१४९,१२४* समवतारे नामाद्याः (६)२४७
॥ अथ निक्षेपाधिकारः ॥
१५०,१२५-१३१* निक्षेपे ओघनामसूत्रालापकाः, ओघे अध्ययनाक्षीणाक्षपणानिक्षेपाः, नाम्नि सामायिकनिक्षेपः, उरगाद्युपमाः (१२) २५७
॥ अनुगमाधिकारः ॥
१५१-१३२-१३* अनुगमे सूत्रानुगमनिर्युक्त्यनुगमौ, अन्त्ये निक्षेपोपोद्घात(२७) सूत्रस्पर्शाः (संहितादि) २६१
॥ नयाधिकारः ॥
१५२-१३६-१४३* नये नैगमाद्याः, ज्ञानक्रिये च। २६७
इति श्रीअनुयोगद्वाराणि

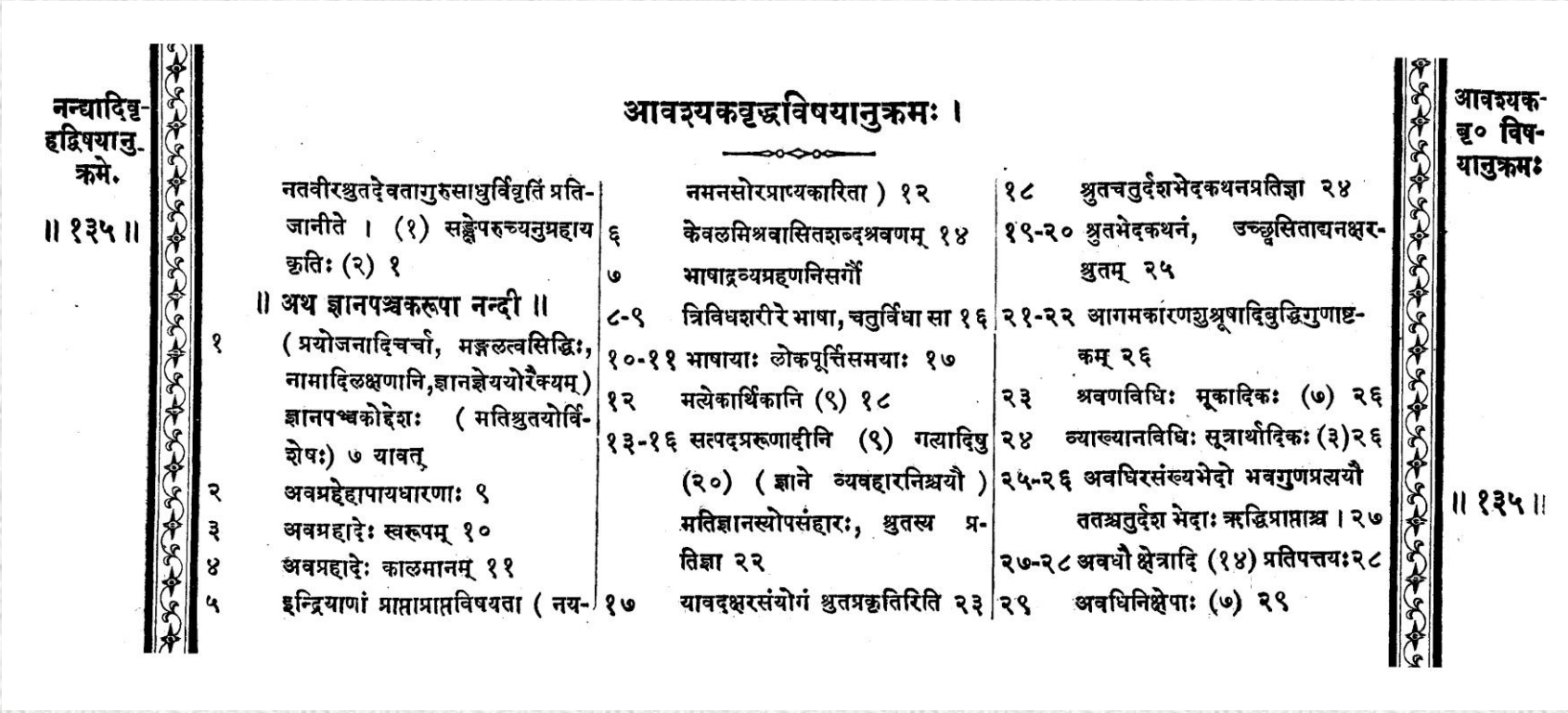
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादिबृहद्विषयानुक्रमे. ॥ १३५ ॥

आवश्यकवृद्धविषयानुक्रमः ।

नतवीरश्रुतदेवतागुरुसाधुर्विवृतिं प्रतिजानीते । (१) सङ्क्षेपरुच्यनुग्रहाय कृतिः (२) १

॥ अथ ज्ञानपञ्चकरूपा नन्दी ॥

१ (प्रयोजनादिचर्चा, मङ्गलत्वसिद्धिः, नामादिलक्षणानि, ज्ञानज्ञेययोरैक्यम्) ज्ञानपञ्चकोद्देशः (मतिश्रुतयोर्विशेषः) ७ यावत्

२ अवग्रहेहापायधारणाः ९

३ अवग्रहादेः स्वरूपम् १०

४ अवग्रहादेः कालमानम् ११

५ इन्द्रियाणां प्राप्ताप्राप्तविषयता (नयनमनसोरप्राप्यकारिता) १२

६ केवलमिश्रवासितशब्दश्रवणम् १४

७ भाषाद्रव्यग्रहणनिसर्गौ

८-९ त्रिविधशरीरे भाषा, चतुर्विधा सा १६

१०-११ भाषायाः लोकपूर्त्तिसमयाः १७

१२ मत्येकार्थिकानि (९) १८

१३-१६ सत्पदप्ररूणादीनि (९) गत्यादिषु (२०) (ज्ञाने व्यवहारनिश्चयौ) मतिज्ञानस्योपसंहारः, श्रुतस्य प्रतिज्ञा २२

१७ यावदक्षरसंयोगं श्रुतप्रकृतिरिति २३

१८ श्रुतचतुर्दशभेदकथनप्रतिज्ञा २४

१९-२० श्रुतभेदकथनं, उच्छ्वसिताद्यनक्षरश्रुतम् २५

२१-२२ आगमकारणशुश्रूषादिबुद्धिगुणाष्टकम् २६

२३ श्रवणविधिः मूकादिकः (७) २६

२४ व्याख्यानविधिः सूत्रार्थादिकः (३)२६

२५-२६ अवधिरसंख्यभेदो भवगुणप्रत्ययौ ततश्चतुर्दश भेदाः ऋद्धिप्राप्ताश्च । २७

२७-२८ अवधौ क्षेत्रादि (१४) प्रतिपत्तयः२८

२९ अवधिनिक्षेपाः (७) २९

आवश्यक-बृ० विषयानुक्रमः ॥ १३५ ॥

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

३० जघन्यावधिक्षेत्रम्
३१ उत्कृष्टावधिक्षेत्रम् ३०
३२-३५ अवधेः क्षेत्रकालप्रतिबन्धः । (मध्यमः) ३१
३६-३७ द्रव्यादिवृद्धिप्रतिबन्धास्तत्सूक्ष्मता च ३३
३८ अवधेः प्रारम्भसमाप्तिद्रव्यम्
३९-४० औदारिकादिवर्गणाः (१९)
४१ गुरुलघ्वगुरुलघुद्रव्याणि ३६
४२-४३ द्रव्यक्षेत्रकालप्रतिबन्धोऽवधेः
४४-४५ परमावधेर्द्रव्यक्षेत्रकालभावाः ३८
४६-४७ नारकतिरश्चोरवधिः
४८-५२ देवानामवधिः ३९
५३ जघन्योत्कृष्टौ प्रतिपात्यप्रातिनौ च४१
५४-५५ स्तिबुकाद्या अवधेराकाराः
५६ देवनारकयोरनुगामी, शेषयोस्त्रिधा ४२
५७-५८ क्षेत्रद्रव्यपर्यायकाले त्रयस्त्रिंशत्सागरान्तर्मुहूर्तसप्ताष्टसमयषट्षष्टिसागराणि
५९ द्रव्यादिषु वृद्धिहानी ४३
६०-६१ स्पर्धकाः, अनुगामि (३) प्रतिपात्यादयः (३)
६२-६३ बाह्ये उत्पादप्रतिपातौ नान्तरे समयेन ४४
६४ असंख्येयाश्चत्वारश्च पर्यायाः परापरावध्योः ४५
६५ नानुत्तरे विभंगः
६६ बाह्याभ्यन्तरावधिमन्तः
६७ सम्बद्धाऽसंबद्धाववधी ४६
६८ गत्याद्यतिदेश ऋद्धिकथनप्रतिज्ञा च
६९-७० आमर्षौषध्याद्याः (१६) लब्धयः४७
७१-७५ वासुदेवचक्रितीर्थकरबलानि ४८
७६ चारित्रवतां नरक्षेत्रविषयं मनःपर्यायम् ४९
७७ केवलज्ञानस्वरूपम्
७८ प्रज्ञापनीयदेशना, वाग्योगश्च सा ५०
७९ स्वान्यानुयोगित्वाच्छ्रुतेनाधिकारः

॥ इति ज्ञानपञ्चकरूपा नन्दी ॥

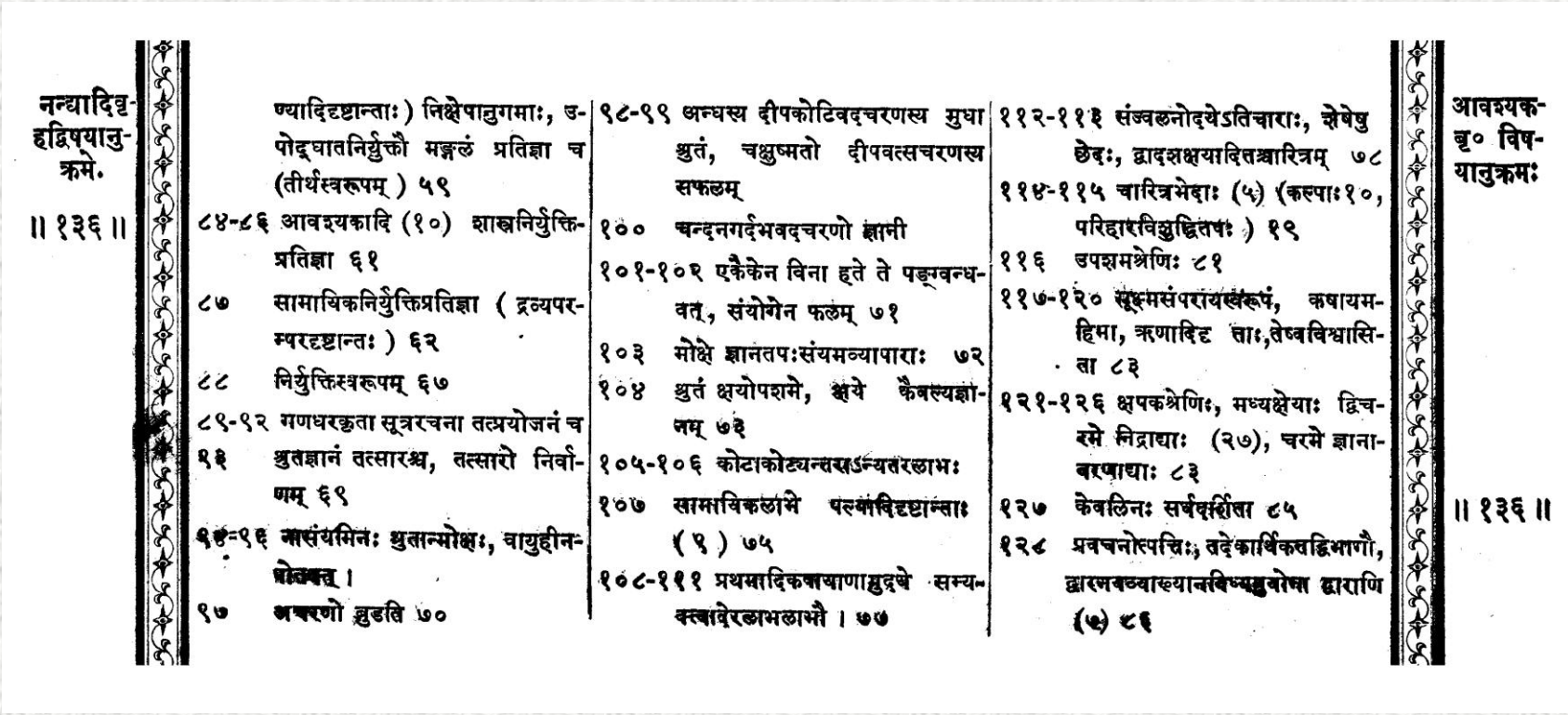
॥ अथ उपक्रमादि ॥

८०-८३ आवश्यकनिक्षेपाः अगीतासंविग्नदृष्टान्तः, आवश्यैकार्थिकानि १०, अर्थाधिकारः, सभेदा उपक्रम (बाह्य-

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादिबृहद्विषयानुक्रमे.

॥ १३६ ॥

ण्यादिदृष्टान्ताः) निक्षेपानुगमाः, उपोद्घातनिर्युक्तौ मङ्गलं प्रतिज्ञा च (तीर्थस्वरूपम्) ५९

८४-८६ आवश्यकादि (१०) शास्त्रनिर्युक्तिप्रतिज्ञा ६१

८७ सामायिकनिर्युक्तिप्रतिज्ञा (द्रव्यपरम्परदृष्टान्तः) ६२

८८ निर्युक्तिस्वरूपम् ६७

८९-९२ गणधरकृता सूत्ररचना तत्प्रयोजनं च

९३ श्रुतज्ञानं तत्सारश्च, तत्सारो निर्वाणम् ६९

९४-९६ नासंयमिनः श्रुतान्मोक्षः, वायुहीनबोधवत् ।

९७ अक्षरणो श्रुतलि ७०

९८-९९ अन्धस्य दीपकोटिवद्चरणस्य मुधा श्रुतं, चक्षुष्मतो दीपवत्सचरणस्य सफलम्

१०० चन्दनगर्दभवद्चरणो ज्ञानी

१०१-१०२ एकैकेन विना हते ते पङ्ग्वन्धवत्, संयोगेन फलम् ७१

१०३ मोक्षे ज्ञानतपःसंयमव्यापाराः ७२

१०४ श्रुतं क्षयोपशमे, क्षये कैवल्यज्ञानम् ७३

१०५-१०६ कोटाकोट्यन्तरतऽन्यतरलाभः

१०७ सामायिकलाभे पल्यादिदृष्टान्ताः (९) ७५

१०८-१११ प्रथमादिकषायाणामुदये सम्यक्त्वादेरलाभलाभौ । ७७

११२-११३ संज्वलनोदयेऽतिचाराः, शेषेषु छेदः, द्वादशक्षयादितश्चारित्रम् ७८

११४-११५ चारित्रभेदाः (५) (कल्पाः१०, परिहारविशुद्धितपः) ७९

११६ उपशमश्रेणिः ८१

११७-१२० सूक्ष्मसंपरायस्वरूपं, कषायमहिमा, ऋणादिदृष्टान्ताः, तेष्वविश्वासिता ८३

१२१-१२६ क्षपकश्रेणिः, मध्यक्षेपाः द्विचरमे निद्राद्याः (२७), चरमे ज्ञानावरणाद्याः ८३

१२७ केवलिनः सर्वदर्शिता ८५

१२८ प्रवचनोत्पत्तिः, तदेकार्थिकतद्विभागौ, द्वारमवयवाख्यानविध्युपोद्घातद्वाराणि (७) ८६

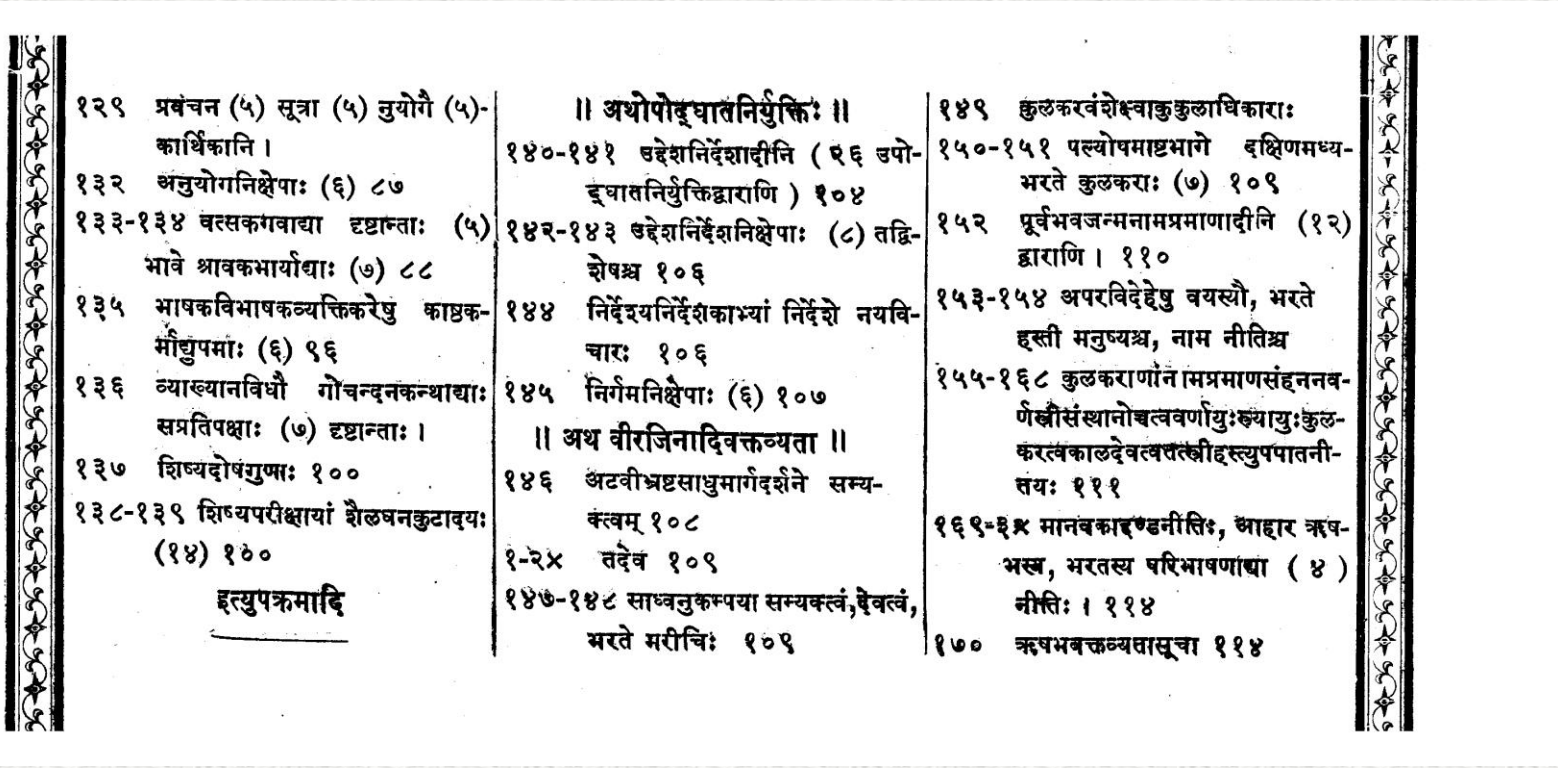
आवश्यक-बृ० विषयानुक्रमः

॥ १३६ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



१२९ प्रवचन (५) सूत्रा (५) नुयोगै (५)-कार्थिकानि ।
१३२ अनुयोगनिक्षेपाः (६) ८७
१३३-१३४ वत्सकगवाद्या दृष्टान्ताः (५) भावे श्रावकभार्याद्याः (७) ८८
१३५ भाषकविभाषकव्यक्तिकरेषु काष्ठक-मौद्गुपमाः (६) ९६
१३६ व्याख्यानविधौ गोचन्दनकन्थाद्याः सप्रतिपक्षाः (७) दृष्टान्ताः ।
१३७ शिष्यदोषगुणाः १००
१३८-१३९ शिष्यपरीक्षायां शैलघनकुटादयः (१४) १००

इत्युपक्रमादि

॥ अथोपोद्घातनिर्युक्तिः ॥
१४०-१४१ उद्देशनिर्देशादीनि (२६ उपोद्घातनिर्युक्तिद्वाराणि) १०४
१४२-१४३ उद्देशनिर्देशनिक्षेपाः (८) तद्विशेषश्च १०६
१४४ निर्देश्यनिर्देशकाभ्यां निर्देशे नयविचारः १०६
१४५ निर्गमनिक्षेपाः (६) १०७

॥ अथ वीरजिनादिवक्तव्यता ॥
१४६ अटवीभ्रष्टसाधुमार्गदर्शने सम्यक्त्वम् १०८
१-२× तदेव १०९
१४७-१४८ साध्वनुकम्पया सम्यक्त्वं, देवत्वं, भरते मरीचिः १०९

१४९ कुलकरवंशेक्ष्वाकुकुलाधिकाराः
१५०-१५१ पल्योपमाष्टभागे दक्षिणमध्यभरते कुलकराः (७) १०९
१५२ पूर्वभवजन्मनामप्रमाणादीनि (१२) द्वाराणि । ११०
१५३-१५४ अपरविदेहेषु वयस्यौ, भरते हस्ती मनुष्यश्च, नाम नीतिश्च
१५५-१६८ कुलकराणां नामप्रमाणसंहननवर्णस्त्रीसंस्थानोच्चत्ववर्णायुःक्यायुःकुलकरत्वकालदेवत्वतत्स्त्रीहस्त्युपपातनीतयः १११
१६९-१× मानवकादण्डनीतिः, आहार ऋषभस्य, भरतस्य परिभाषणाद्या (४) नीतिः । ११४
१७० ऋषभवक्तव्यतासूचा ११४

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादिबृहद्विषयानुक्रमे. ॥ १३७ ॥

१७१-१७२ धनसार्थवाहः, अटवीवासः, घृतदानं च । ऋषभपूर्वभवाः(प्र,) उत्तरकुरुषु, सौधर्मे, विदेहेषु वैद्यपुत्रो राजपुत्रादिवयस्यः ११४
१७३-१७४ कुष्ठिसाधुचिकित्सा ११७
१७५-१७८ देवलोकः, पुण्डरीकिण्यां वज्रसेनपुत्रो वज्रनाभो बाहुसुबाहुपीठमहापीठाश्च, चतुर्दशपूर्वित्ता, तीर्थकरत्वं, द्वयोः वैयावृत्त्यादि, अप्रीतिश्च ११८
१७९-१८१ अर्हदादिस्थानकानि(२०) ११९
१८१-१८४ आद्यान्तयोः सर्वाणि, मध्यमानामनियतानि, अग्लान्या वेदनम्, अर्वाक् तृतीये नरत्वादौ बन्धः
१८५ सर्वार्थे, आषाढबहुलचतुर्थ्यां च्यवनम् १२०
१८६ जन्मनामवृद्ध्यादीनि(८)द्वाराणि १२१
१८७ चैत्रकृष्णाष्टम्यां जन्म, तन्महश्च ।
१८८ दिक्कुमारीकृत्यम् १२३
१८९ वंशस्थापना, अङ्गुल्यामाहारकान्तिः १२५
१९० इक्षुभक्षकत्वादिक्ष्वाकवः
१९१-१९२ नन्दासुमङ्गलायुतस्य वृद्धिः १२६
१९३ जातिस्मरत्रिज्ञानोऽधिककान्तिबुद्धिः
१९४ अकालमृत्युः, कन्याग्रहणं च
१९५ विवाहः १२७
१९६-४+ षट्पूर्वलक्षेषु भरतादिजन्म
१९७-१९८ एकोनपञ्चाशद्युगलजन्म, नीत्यतिक्रमः, नृपयाच्ञा, नाभेरनुज्ञा
१९९-२०० राज्याभिषेकः, विनीतानिवेशश्च १२८
२०१-२०२ अश्वादि (३)उग्रादि(४)सङ्ग्रहः
२०३-२०६ आहारादीनि (४०)द्वाराणि १२८
५-९ नराः कन्दाद्याहाराः, क्षत्रिया इक्षुधान्यभोजिनः, जिनोक्तं घर्षणतीमनादि
१०-११ अग्नेरुत्पत्तिः पाकारम्भश्च १३१
२०७ शिल्पशतम् १३२
१२-३० कर्मादीनि (४०) द्वाराणि १३२
२०८-२११ जिनसंबोधनादि (२१) द्वाराणि १३४
२१२-२१३ जीतेन बोधिताः, सांवत्सरिकं, त्यागः, परिवारः, उपधिः १३५
२१४-२१५ लोकान्तिकनामानि तैर्बोधनं च

आवश्यक-बृ० विषयानुक्रमः ॥ १३७ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

२१६-२२० अर्वाक् संवत्सरात्कोट्यधिकं वरवरिकापूर्वं दानं, संवत्सरदानद्रव्यसंख्या

२२१-२२३ जिनानाममिषेकस्त्रीराज्यविचारः । १३६

२२४-२३२ दीक्षापरिवारो वय उपधितपःस्थानकालाः

२३३-२३७ विषयसेवाविहारपरीषहजीवाद्युपलम्भश्रुतोपलम्भव्रतसंयमाः १३७

२३८-३०५ छद्मस्थकालतपोज्ञानोत्पादतत्क्षेत्रतपःपरिवारतीर्थगणगणधरदेशनापर्यायकुमारत्वादिश्रामण्यद्वाराणि १३८

३०६-३१३ निर्वाणतपःस्थानपरिवाराः (प्रथमानुयोगात्) प्रकृतं च १४२

३१४-३१६ चैत्रकृष्णाष्टम्यां सुदर्शनया चतुःसहस्रीयुतस्य प्रव्रज्या विहारश्च

३१७-३२२ आहारालाभात्तापसाः, नमिविनम्योर्विद्याधरत्वं, कन्यादिभिर्निमन्त्रणं, संवत्सरेणेक्षुरसभिक्षा पञ्च दिव्यानि श्रेयांसात्पारणं, तक्षशिलागमनम् १४३

३२३-३३४ जिनपारणस्थानदातृवृष्टिदातृगतयः १४६

३३५-३४१ धर्मचक्रमनार्यविहारः पुरिमतालेकेवलं पञ्च महाव्रतानि, ज्ञानमहिमा च। १४८

३४२-३४७ ज्ञानचक्रोत्पातौ, तातपूजा, मरुदेवीनिर्गमः, पुत्रादेर्मरीचेश्च दीक्षा

३४८-३४९ षट्खण्डविजयः, सुन्दरीप्रव्रज्या, भ्रातृदीक्षा च १५२

३२-३७× युद्धपञ्चकं बाहुबलिनो दीक्षा भगिन्यागमः, केवलं, भरतभोगाः, मरीचेर्दीक्षाध्ययने ५५२

३५०-३६१ उद्वेगः, पारिव्राज्यं, उपदेशः, शिष्यार्पणं च। १५४

३६२-३६५ समवसरणं, ब्राह्मणानुवृत्तिरर्द्धभरताधिपता च दण्डवीर्यं यावत्, कालेन मिथ्यात्वं, षष्ठे मास्यनुयोगः १५७

३६६ ब्राह्मणदानं वेदकृति(९)द्वाराणि।१५८

३६७-३६८ चक्रिपृच्छा, चक्रयादीनां (१०), जिनपृच्छा।

३८×३६९-३७५ तीर्थङ्कराः (२३) चक्रिणां प्रश्नो नामानि च. १५९

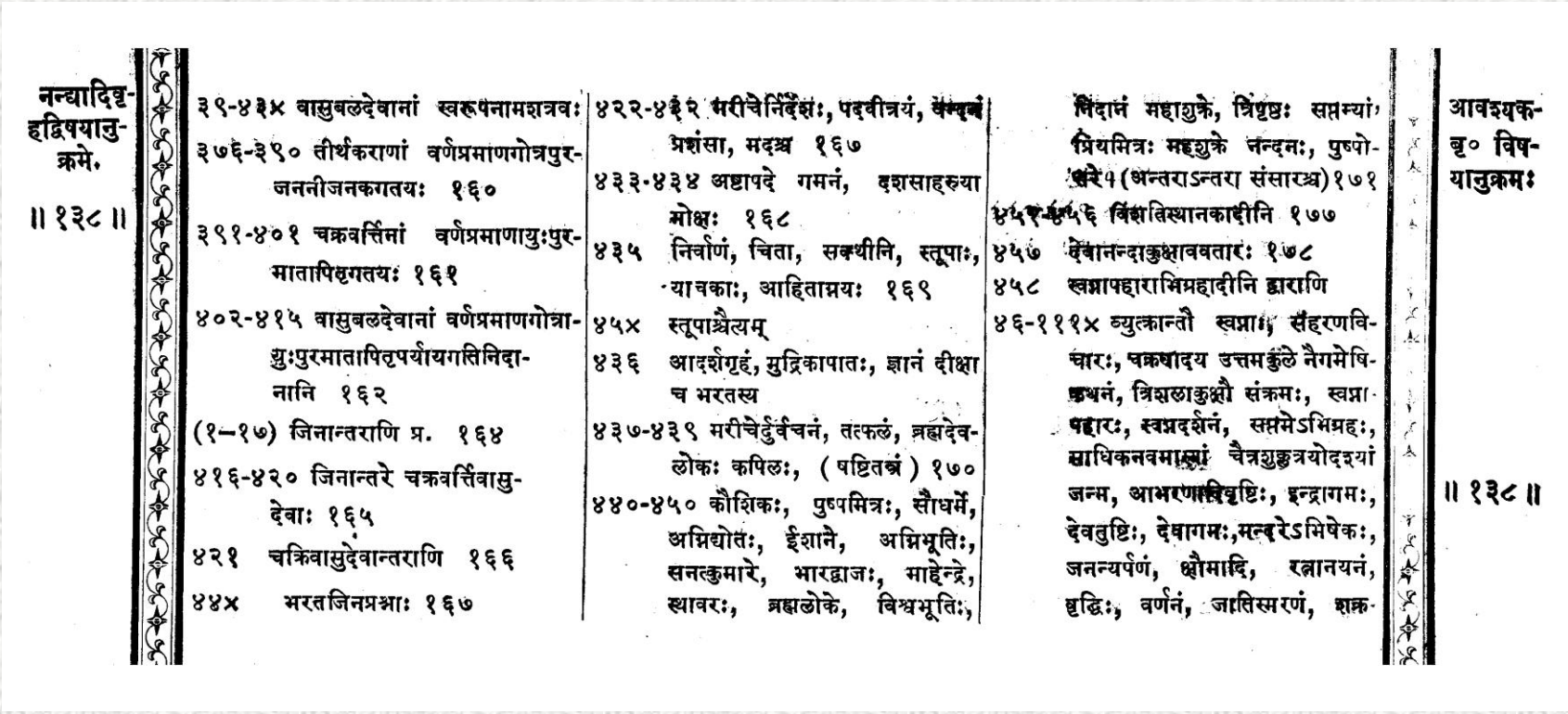
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादिबृहद्विषयानुक्रमे. ॥ १३८ ॥

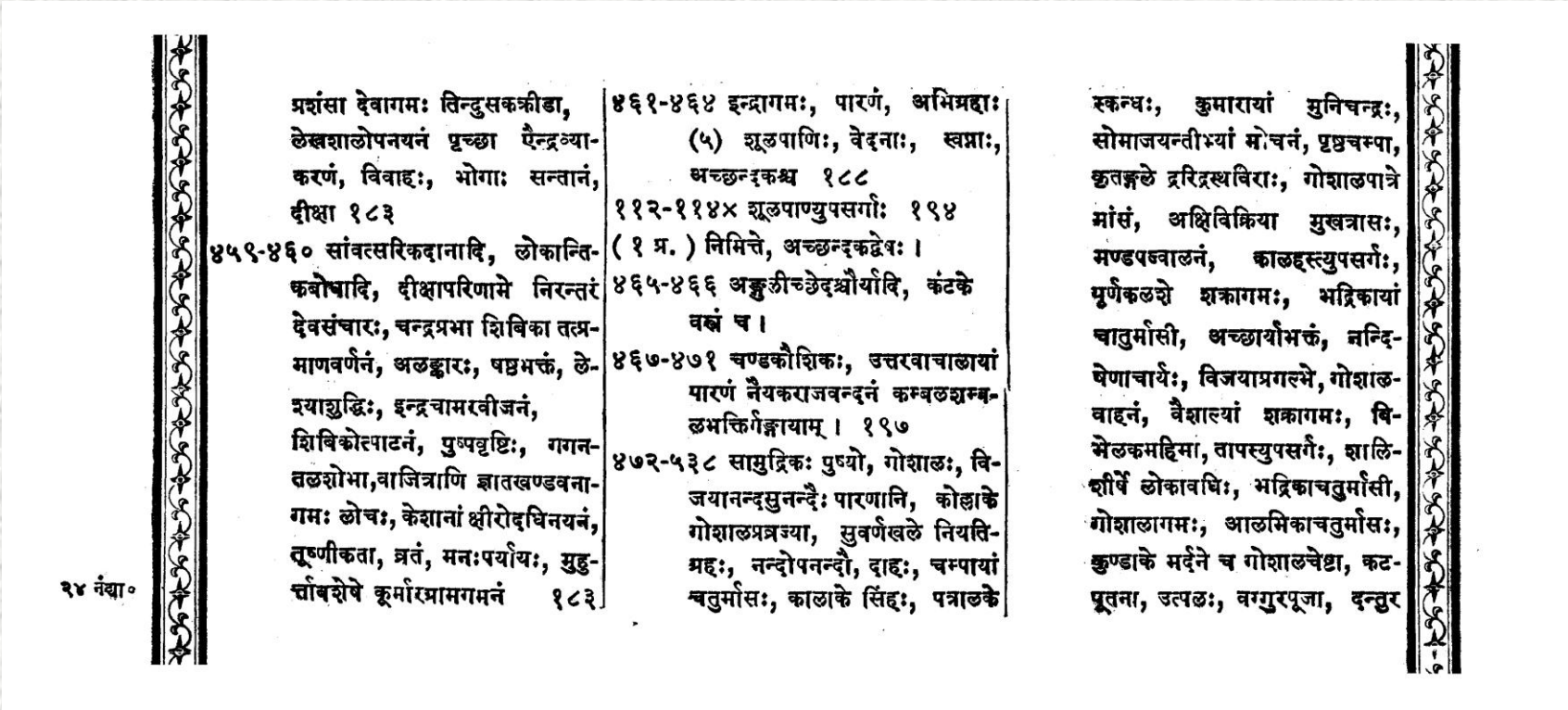
३९-४३× वासुबलदेवानां स्वरूपनामशत्रवः
३७६-३९० तीर्थकराणां वर्णप्रमाणगोत्रपुरजननीजनकगतयः १६०
३९१-४०१ चक्रवर्त्तिनां वर्णप्रमाणायुःपुरमातापितृगतयः १६१
४०२-४१५ वासुबलदेवानां वर्णप्रमाणगोत्रायुःपुरमातापितृपर्यायगतिनिदानानि १६२
(१–१७) जिनान्तराणि प्र. १६४
४१६-४२० जिनान्तरे चक्रवर्त्तिवासुदेवाः १६५
४२१ चक्रिवासुदेवान्तराणि १६६
४४× भरतजिनप्रभाः १६७
४२२-४३२ मरीचेर्निर्देशः, पदवीत्रयं, वन्दनं प्रशंसा, मदश्च १६७
४३३-४३४ अष्टापदे गमनं, दशसाहस्र्या मोक्षः १६८
४३५ निर्वाणं, चिता, सक्थीनि, स्तूपाः, याचकाः, आहिताग्नयः १६९
४५× स्तूपाश्चैत्यम्
४३६ आदर्शगृहं, मुद्रिकापातः, ज्ञानं दीक्षा च भरतस्य
४३७-४३९ मरीचेर्दुर्वचनं, तत्फलं, ब्रह्मदेवलोकः कपिलः, (षष्टितन्त्रं) १७०
४४०-४५० कौशिकः, पुष्पमित्रः, सौधर्मे, अग्निद्योतः, ईशाने, अग्निभूतिः, सनत्कुमारे, भारद्वाजः, माहेन्द्रे, स्थावरः, ब्रह्मलोके, विश्वभूतिः, निदानं महाशुक्रे, त्रिपृष्ठः सप्तम्यां, प्रियमित्रः महाशुक्रे नन्दनः, पुष्पोत्तरे५ (अन्तराऽन्तरा संसारश्च) १७१
४५१-४५६ विंशतिस्थानकादीनि १७७
४५७ देवानन्दाकुक्षाववतारः १७८
४५८ स्वप्नापहाराभिग्रहादीनि द्वाराणि
४६-१११× व्युत्क्रान्तौ स्वप्नाः, संहरणविचारः, चक्रधादय उत्तमकुले नैगमेषिस्मरणं, त्रिशलाकुक्षौ संक्रमः, स्वप्नापहारः, स्वप्नदर्शनं, सप्तमेऽभिग्रहः, साधिकनवमासां चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्म, आभरणवृष्टिः, इन्द्रागमः, देवतुष्टिः, देवागमः, मन्दरेऽभिषेकः, जनन्यर्पणं, क्षौमादि, रत्नानयनं, वृद्धिः, वर्णनं, जातिस्मरणं, शक्र-

आवश्यक-बृ० विषयानुक्रमः ॥ १३८ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



२४ नंद्या०

प्रशंसा देवागमः तिन्दुसकक्रीडा, लेखशालोपनयनं पृच्छा ऐन्द्रव्याकरणं, विवाहः, भोगाः सन्तानं, दीक्षा १८३

४५९-४६० सांवत्सरिकदानादि, लोकान्तिकबोधादि, दीक्षापरिणामे निरन्तरं देवसंचारः, चन्द्रप्रभा शिबिका तत्प्रमाणवर्णनं, अलङ्कारः, षष्ठभक्तं, लेश्याशुद्धिः, इन्द्रचामरवीजनं, शिबिकोत्पाटनं, पुष्पवृष्टिः, गगनतलशोभा,वाजित्राणि ज्ञातखण्डवनागमः लोचः, केशानां क्षीरोदधिनयनं, तूष्णीकता, व्रतं, मनःपर्यायः, मुहुर्त्तावशेषे कूर्मारग्रामगमनं १८३

४६१-४६४ इन्द्रागमः, पारणं, अभिग्रहाः (५) शूलपाणिः, वेदनाः, स्वप्नाः, अच्छन्दकश्च १८८

११२-११४× शूलपाण्युपसर्गाः १९४

(१ प्र.) निमित्ते, अच्छन्दकद्वेषः ।

४६५-४६६ अङ्गुलीच्छेदश्चौर्यादि, कंटके वस्त्रं च ।

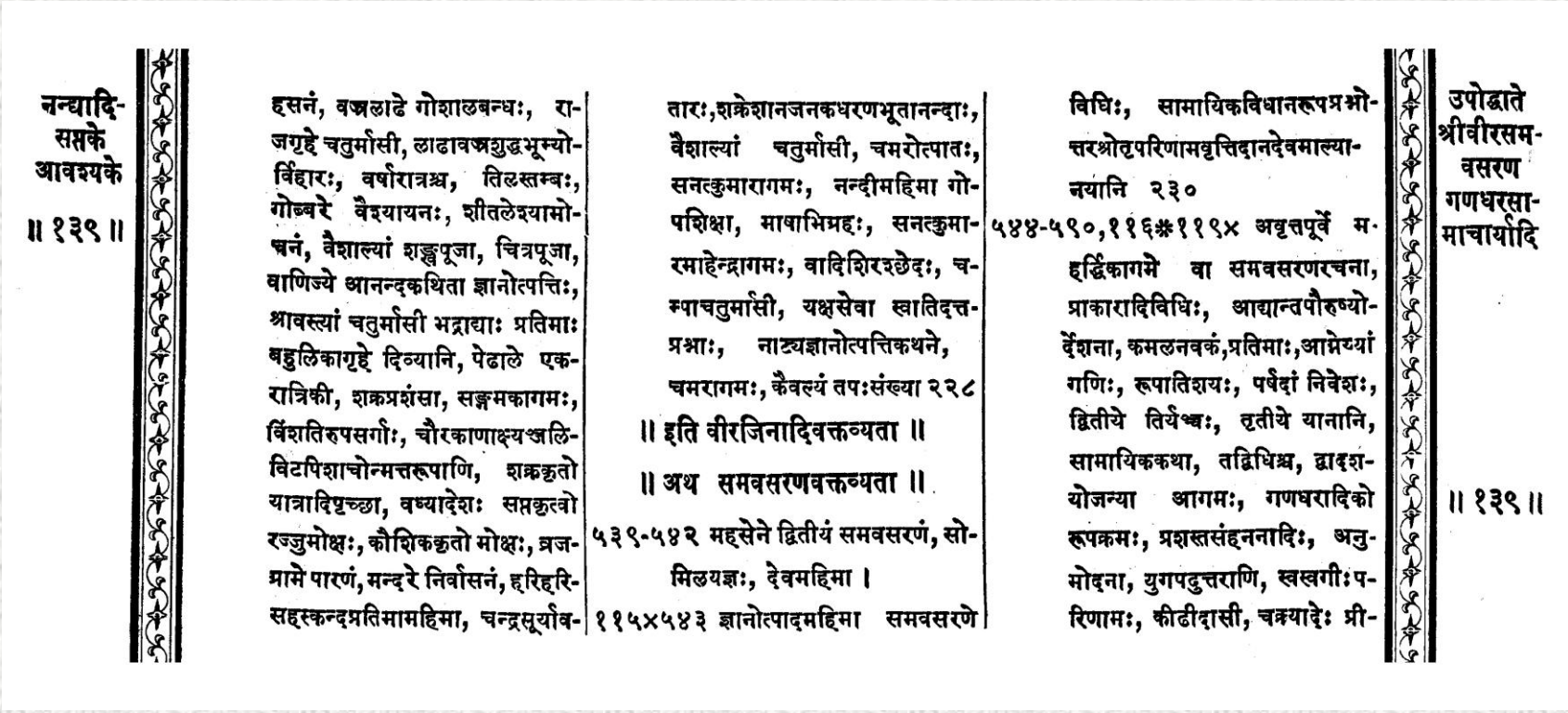
४६७-४७१ चण्डकौशिकः, उत्तरवाचालायां पारणं नैयकराजवन्दनं कम्बलशम्बलभक्तिर्गङ्गायाम् । १९७

४७२-५३८ सामुद्रिकः पुष्यो, गोशालः, विजयानन्दसुनन्दैः पारणानि, कोल्लाके गोशालप्रव्रज्या, सुवर्णखले नियतिग्रहः, नन्दोपनन्दौ, दाहः, चम्पायां चतुर्मासः, कालाके सिंहः, पत्रालके स्कन्धः, कुमारायां मुनिचन्द्रः, सोमाजयन्तीभ्यां मोचनं, पृष्ठचम्पा, कृतङ्गले द्वरिद्रस्थविराः, गोशालपात्रे मांसं, अक्षिविक्रिया मुखत्रासः, मण्डपज्वालनं, कालहस्त्युपसर्गः, पूर्णकलशे शक्रागमः, भद्रिकायां चातुर्मासी, अच्छार्यामक्तं, नन्दिषेणाचार्यः, विजयाप्रगल्भे, गोशालवाहनं, वैशाल्यां शक्रागमः, विभेलकमहिमा, तापस्युपसर्गः, शालिशीर्षे लोकावधिः, भद्रिकाचतुर्मासी, गोशालागमः, आलभिकाचतुर्मासः, कुण्डाके मर्दने च गोशालचेष्टा, कटपूतना, उत्पलः, वग्गुरपूजा, दन्तुर

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके

॥ १३९ ॥

हसनं, वज्रलाढे गोशालबन्धः, राजगृहे चतुर्मासी, लाढावज्रशुद्धभूम्यो-र्विहारः, वर्षारात्रश्च, तिलस्तम्बः, गोब्बरे वैश्यायनः, शीतलेश्यामोक्षनं, वैशाल्यां शङ्खपूजा, चित्रपूजा, वाणिज्ये आनन्दकथिता ज्ञानोत्पत्तिः, श्रावस्त्यां चतुर्मासी भद्राद्याः प्रतिमाः बहुलिकागृहे दिव्यानि, पेढाले एकरात्रिकी, शक्रप्रशंसा, सङ्गमकागमः, विंशतिरुपसर्गाः, चौरकाणाक्ष्यञ्जलिविटपिशाचोन्मत्तरूपाणि, शक्रकृतो यात्रादिपृच्छा, वध्यादेशः सप्तकृत्वो रज्जुमोक्षः, कौशिककृतो मोक्षः, व्रजग्रामे पारणं, मन्दरे निर्वासनं, हरिहरिसहस्कन्दप्रतिमामहिमा, चन्द्रसूर्यावतारः, शक्रेशानजनकधरणभूतानन्दाः, वैशाल्यां चतुर्मासी, चमरोत्पातः, सनत्कुमारागमः, नन्दीमहिमा गोपशिक्षा, माषाभिग्रहः, सनत्कुमारमाहेन्द्रागमः, वादिशिरश्छेदः, चम्पाचतुर्मासी, यक्षसेवा स्वातिदत्तप्रभाः, नाट्यज्ञानोत्पत्तिकथने, चमरागमः, कैवल्यं तपःसंख्या २२८

॥ इति वीरजिनादिवक्तव्यता ॥

॥ अथ समवसरणवक्तव्यता ॥

५३९-५४२ महसेने द्वितीयं समवसरणं, सोमिलयज्ञः, देवमहिमा ।

११५×५४३ ज्ञानोत्पादमहिमा समवसरणे विधिः, सामायिकविधानरूपप्रश्नोत्तरश्रोतृपरिणामवृत्तिदानदेवमाल्यानयानि २३०

५४४-५९०,११६*११९× अवृत्तपूर्वे महर्द्धिकागमे वा समवसरणरचना, प्राकारादिविधिः, आद्यान्तपौरुष्योर्देशना, कमलनवकं,प्रतिमाः,आग्नेय्यां गणिः, रूपातिशयः, पर्षदां निवेशः, द्वितीये तिर्यञ्चः, तृतीये यानानि, सामायिककथा, तद्विधिश्च, द्वादशयोजन्या आगमः, गणधरादिको रूपक्रमः, प्रशस्तसंहननादिः, अनुमोदना, युगपदुत्तराणि, स्वस्वगीःपरिणामः, कीढीदासी, चक्रयादेः श्री-

उपोद्घाते श्रीवीरसमवसरण गणधरसामाचार्यादि

॥ १३९ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

तिदानं भक्तयादि फलं, बलितन्दुल-च्छटनवासप्रवेशभागविधिः, गणि-देशनायां गुणा विधिः, तज्ज्ञानं च । २३९

॥ इति समवसरणव० ॥

॥ अथ गणधरवक्तव्यता ॥

५९१-६४१ देवघोषः, गणधरा(११)ऽऽगमः, जीव-कर्म-तज्जीव-भूत-तादृश-बन्ध-देव-नारक-पुण्य-परलोक-निर्वाणसं-शयाः,परिवारः, अमर्षः, वेदपदार्थः, दीक्षा २५४

६४२-६५९ गणीनां ग्रामनक्षत्रमातापितृगो-त्रागारच्छद्मस्थकेवलिपर्यायायुरागम-मोक्षनिर्वाणतपांसि २५४

॥ इति गणधराः ॥

॥ दशधासामाचारी ॥

६६०-६६५ कालनिक्षेपाः (११)द्रव्ये स्थितिः (४) अद्धायां समयाद्याः, यथायुष्के निर्वर्त्तितानुभवः, उपक्रमे त्रिविधा सामाचारी ओघाद्या (३) २५७

६६६-६६७ इच्छामिथ्याद्युद्देशः २५८

६६८ अभ्यर्थनायां कारणजाते चेच्छा-कारः २५९

६६८-६७६ अनिगूहितबलवीर्येऽज्ञे व्या-पृते, विनाशे तत्कुर्वति, ज्ञानवैया-वृत्त्यादिकारणान्तरे इच्छाकारः ।

६७७-६७९ अश्ववद्विनीते आज्ञाबलाभि-योगौ । २६०

६८० प्रार्थनायां ब्राह्मणवानरौ, स्वयंकरणे वणिजौ २६२

६८१ असंपादनेऽपीच्छाकारे लाभः २६३

६८२-६८७ वितथे मिथ्या, अकरणं, भू-योऽकारः, करणे माया, मिथ्यादु-ष्कृताक्षरार्थः ।

६८८-६९० तथाकारस्य योग्यो विषयः, इ-च्छादेः फलं च २६४

६९१-६९४ आवश्यकीनैषिधिक्योर्भेदे प्रश्नः, अर्थैक्यं, गुप्तस्थेर्यादिमतः गमने आवश्यिकी । २६५

६९५-६९७,१२०-१२३× शय्यादौ नैषे-धिकी निषिद्धात्मत्वात् । आपृच्छा द्याः (४) २६७

६९८-७२३ ज्ञानदर्शनचारित्रोपसम्पदः त्रित्रिद्विभेदाः, संदिष्टादिचतुर्भङ्गी,

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४० ॥

वर्तनासन्धनाग्रहणस्वरूपं, प्रमार्जननिषद्यादिविधिः, श्रवणविधिस्तत्फलं, चिन्तकस्य लघोरपि वन्दनसिद्धिः, इत्वरिकादि वैयावृत्त्ये, विकृष्टाविकृष्टतपस्युपसंपत् ,गणपृच्छया, समाप्तौ स्मारणा विसर्गो वा, अवग्रहयाच्चा, उपसंहारः फलं च २७०

॥ इति सामाचारीवक्तव्यता ॥

॥ अथोपक्रमादि ॥

७२४-७२६ आयुरुपक्रमाः (७) सदृष्टान्ताः, दण्डकशाद्या हेतवः २७२

७२७-७३५ प्रशस्ताप्रशस्तदेशकालौ, दिवसरात्री प्रमाणकालौ, वर्णकालः, भावस्थितिः (४), प्रमाणकालेन प्रथमपौरुष्याऽधिकारः,भावे भगवत्क्षायिकगणिक्षायोपशमिकाभ्याम् २७४

७३६ पुरुषनिक्षेपाः (८) २७७

७३७-७४८ कारणनिक्षेपाः (४) तदन्यद्रव्ये निमित्तनैमित्तिनौ समवाय्यसमवायिनौ, कर्त्रादि (६) द्रव्ये, भावेऽज्ञानज्ञानादि, प्रकृते प्राकृतीयमनुष्यभवबद्धजिननाम, गणिनो ज्ञानाद्यव्याबाधान्तम् २७७

७४९-७५० प्रत्ययनिक्षेपाः (४) द्रव्ये तन्मात्रादिः, भावेऽवध्यादिः । २८०

७५१-७५३ लक्षणनिक्षेपाः (१२), भावे श्रद्धानादि (४) २८२

७५४-७६१ नयसप्तकं, तल्लक्षणभेदाः, त्रिभिः श्रोत्रपेक्षयाऽधिकारः २८२

७६२-७६४ आर्यवज्रात्परतोऽसमवतारः, वज्रस्तुतिः (तच्चरित्रम्) २८५

७६५-७७२ द्विर्गुल्मकनिमन्त्रणा, वाचकत्वे देवमहः, रुक्मिणीप्रतिबोधनं, आकाशगामिनी, तद्विषयः, परानर्पणं, माहेश्वरीगमनम् । २९०

७७३-७७६ पृथक्त्वकृत आर्यरक्षिताः, मात्राद्याचार्यादि (आर्यरक्षितचरित्रम्) २९६

१२४× अनुयोगचतुष्क सूत्राणि ३०९

७७७ महाकल्पच्छेदाः कालिके । ३०९

॥ अथ निह्नववक्तव्यता ॥

७७८-७८३ निह्नवमतानि, तदादिपुरुषग्रामकालाः ३११

उपक्रमो निह्नवाश्च-

॥ १४० ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

१२५-१४८× निह्नवाधिकारः सविशेषः, सपूर्वोत्तरपक्षः ३२४
७८४-७८८ निह्नवदृष्टयुपसंहारः, प्रत्येकदोषास्तत्फलं च, तन्निमित्तान्नादिग्रहणभजना, न बोटिके ३२५
॥ इति निह्नववक्तव्यता ॥
७८९ नैगमसंग्रहव्यवहारान्त्रिविधं, शब्दाद्याः संयमं मन्वते । ३२६
७९० आत्मा सामायिकम्
१४९× नयविचारः ३२७
७९१ व्रतविषयः सर्वजीवादिः
७९२-७९५ द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकयोर्द्रव्यगुणसामायिकत्वे वादः ३२७
७९६,१५०× सम्यक्त्वश्रुत (३) चारित्राणि (२) सामायिकम् ३२९
७९७-८०३ सामायिकस्वरूपं, बहुशो देशसामायिकम् ३२९
८०४-८०६ क्षेत्रदिक्कालगतिभव्यसंज्ञ्युच्छ्वासदृष्ट्याहारपर्याप्तसुप्तजन्मस्थितिवेदसज्ञ्याकषायायुर्ज्ञानयोगोपयोगशरीरसंस्थानसंहननमानलेश्यापरिणामवेदनासमुद्घातकर्मतन्निर्वेष्टनोद्वेष्टनाश्वावलङ्गारशयनासनस्थानचङ्क्रमणैः सामायिकविचारः ३३०
८०७-८०८ सम्यक्त्वश्रुतयोस्त्रिषु, विरतिर्नेरे मिश्रं तिर्यक्ष्वपि, प्रतिपन्नास्त्रयाणां त्रिषु, चरणस्य द्वयोः, भजनोर्द्ध्वलोके ३३१
८०९-८११ दिग्निक्षेपाः (१८) दिक्षु प्रतिपद्यमानः, प्रतिपन्नोऽन्यतरस्याम् ।
८१२-८२९ सम्यक्त्वश्रुते चतसृषु व्रतं नरे मिश्रं तिर्यक्षु भव्यश्चत्वारि संज्ञ्युच्छ्वासकौ च, दृष्टौ नयौ, आहारकः पर्याप्तकश्च, सम्यक्त्वश्रुतेऽनाहारकापर्याप्तकावपि प्रतिपन्नौ, जागरोऽन्यतरत्, अण्डपोतजयोस्त्रिकं जरायौ चतुष्कं, मध्यमस्थितौ उभयं, आयुष उत्कृष्टायामपि, वेदत्रयसज्ञ्याचतुष्कयोः प्रतिपत्तिः, अप्रथमे कषाये संख्यायुश्चत्वारीतरः सम्यक्त्वश्रुते, चतुर्ज्ञानी त्रियोगी उपयोगद्विक औदारिकं चत्वारि वैक्रियं द्वे, सर्वसंस्थानसंहननमध्यममाने चत्वारि, षट्सु लेश्यासु द्वे तिसृषु चारित्रं, पूर्वप्रतिपन्नोऽन्यतरस्यां, वर्द्धमानावस्थितौ

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४१ ॥

द्विविधवेदनाऽसमवहतः, निर्वेष्टय-न्नुद्वृत्तः निश्रावयन् चत्वारि ३४०
८३० सम्यक्त्वादिविषयः
८३१-८३५ मानुष्यार्यक्षेत्रादिदुर्लभत्वे चोल्लकादिदृष्टान्ताः, युगदृष्टान्तो गाथाभिः ३४१
८३६-८४४ धर्मकरणे उपदेशः, आलस्याद्याः (१३) श्रुतिविघ्नाः, ज्ञानावरणादिवद्, व्रतक्षान्त्यादि, दृष्टादौ कर्मक्षये शुभयोगे च बोधिः ३४५
८४५-८४८ अनुकम्पाऽकामनिर्जराद्यैर्वैद्यमिण्ठादीनां (११) सम्यक्त्वलाभः (वैद्यवानरदेवः) अभ्युत्थानविनयाद्यैश्च ३४७
८४९-८६० सम्यक्त्वस्थितिः, प्रतिपत्तृप्रतिपन्नप्रतिपतितानामल्पबहुत्वं तत्संख्या, अन्तरमविरहविरहौ भवाकर्षौ क्षेत्रस्पर्शना तत्स्पर्शना ३६१
८६१-८६५ सम्यक्त्व(७) श्रुत (७) देश(६) सर्व (८) विरतिनिरुक्तयः, दमदन्ताद्याः (८) दृष्टान्ताः ३६३
१५१+ दमदन्तवृत्तम् ३६५
८६६-६८ मुनित्वस्वरूपम्
८६९-७० मेतार्यस्तुतिः ३६९
८७१ कालिकाचार्यस्तुतिः ३७०
८७२-७५ चिलातीपुत्रस्तुतिः ३७१
८७६-८७९ लक्षश्लोकसङ्क्षेपः, धर्मरुचिरनाकुट्टयाम्, इलापुत्रः परिज्ञायां, प्रत्याख्याने तेतलिः ३७२
॥ इत्युपोद्घातनिर्युक्तिः ॥

॥ अथ सूत्रस्वरूपम् ॥
८८०-८८६ सूत्रस्वरूपं, दोषाः (३२) गुणाः (८–६) ३७४
॥ इति सूत्रस्वरूपम् ॥
॥ अथ नमस्कारव्याख्या ॥
८८७ नमस्कारे उत्पत्तिनिक्षेपपदपदार्थप्ररूपणावस्त्वाक्षेपप्रसिद्धिक्रमप्रयोजनफलानि (११) ३७७
८८८-८९० आदिनैगमेऽनुत्पन्नः, शेषाणां समुत्थानवाचनालब्धित उत्पन्नः, ऋजावनाद्ये, शेषा लब्धिं मन्वते, निह्नवादि द्रव्ये (द्रमकदृष्टान्तः) नैपातिकात् द्रव्यभावसङ्कोचः ३७७
८९१-९०२ किं कस्य केन कियच्चिरं कतिवि-

नयः प्रतिपन्नादिः नमस्कारः

॥ १४१ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

धमिति षट्पदा, सत्पदाद्यैर्गतीन्द्रियादिषु नवपदा, आरोपणाम-जनापृच्छादापनानिर्यापनाभिः पञ्चविधा प्ररूपणा ३७९

९०३ मार्गाद्या नमस्कारहेतवः ३८३

९०४-२६ महासार्थवाहत्वादि, दृष्टान्ताः सविशेषाः, रागद्वेषकषायेन्द्रियाणि (सदृष्टान्तानि) कषायनिक्षेपाः (८) (षण्णयमार्गणा च) परीषहोपसर्गाः (श्लोका दृष्टान्तानि च) अर्हच्छब्द-निरुक्तिः, तन्नमस्कारफलम्। ४०६

९२७-३० कर्मशिल्पादिभिः (११) सिद्ध-निक्षेपाः, कर्मशिल्पयोर्भेदः, सह्य-गिरिसिद्धः, कोकासो वर्द्धकिश्च दृष्टान्तौ ४०८

९३१-९३३ विद्यामन्त्रयोर्विशेषः, आर्यखपुटस्तम्भाकर्षकदृष्टान्तौ ४११

९३४-९३६ योगे आर्यसमितः, आगमे गौतमः, अर्थे मम्मणः, यात्रायां त्रुटितः ४१२

९३७-९५१ बुद्धिसिद्धलक्षणम्, औत्पत्तिक्यादिभेदाः, लक्षणानि दृष्टान्ताश्च, भरतशिलापण्यवृक्षाद्याः (१६) भरतशिलामेषाद्याः (२६) निमित्तार्थशास्त्राद्याः (१४) सुवर्णकारकर्षकाद्याः (१२) अभयाद्याः (२२) दृष्टान्ताः ४३७

९५२ तपःसिद्धे दृढप्रहारी ४३८

९५३-९५९ सिद्धस्य निरुक्तिः, समुद्घातः, शैलेशी, अलाबुकादिवद्गतिः, अलोके स्खलनेत्यादि ४३८

९६०-९९२ सिद्धशिलावर्णनं, सिद्धावगाहनादेशप्रदेशस्पर्शलक्षणसुख (म्लेच्छदृष्टान्तः) एकार्थिक (८) नमस्कारफलानि ४४२

९९३-९९९ आचार्यनिक्षेपाः (४) ४४८

१०००-१००७ उपाध्यायनिक्षेपाः (४) अक्षरार्थादि ४४९

१००८-१०१७ साधोर्निक्षेपाः, स्वरूपादि ४४९

१०१८-१०२१ पञ्चविधत्वे क्रमे च शङ्कासमाधानम् ४५०

१०२२-१०२४ प्रयोजनफले, कर्मक्षयादि,

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४२ ॥

अर्थकामादि (८) (त्रिदण्ड्यादि-दृष्टान्ताः ५) ४५१

॥ इति नमस्कारव्याख्या ॥

१०२५-२६ नन्द्यनुयोगोपोद्घातान् ज्ञात्वा पञ्चमङ्गलं पठित्वा सूत्रारम्भः ४५४

॥ अथ सामायिकव्याख्या ॥

१ सू० सामायिकसूत्रम् ।

१०२७-२८ सूत्रस्पर्शे करणभयान्तसामायिकसर्वद्वयोगप्रत्याख्यानयावज्जीवत्रिविधानां निरूपणम् ४५६

१५२-१७४× करणनिक्षेपाः (६), सञ्ज्ञायां कटकरणादि, नोसञ्ज्ञायां धर्मादेः करणादि, अभ्राण्वादिषु चाक्षुषाचाक्षुषी संघातभेदोभयादि विश्रसाकरणे अजीवप्रयोगे वर्णादि जीवस्य मूले शरीरपञ्चकमङ्गोपाङ्गादि, उत्तरे केशरचनादि, सङ्घातशाटोभयानि विस्तरेण,पटादिषु सामान्येन ४६२

१०२९-१०३८ क्षेत्रकालकरणे, जीवभावकरणे श्रुते बद्धाबद्धनिशीथानिशीथे (अनादेशाः, द्वैपायनाः) नोश्रुते गुणे तपःसंयमौ, योजनायां मनोवाक्कायाः (४-४-७) अधिकारश्च ४६२

१०३९ कृताकृतं केन केषु कदा नयः कतिविधं कथं द्वाराणि ४६७

१७५-१७७× कृताकृतादिद्वारविवेचनम् ।

१७८-१८२× आलोचनाविनयक्षेत्रदिक्कालक्षेगुणाभिव्याहाराः । ४६९

१८३× उद्देशवाचना(समुद्देशा)ऽनुज्ञा । ४७१

१०४०-४१ देशविधातिशुद्धौ ककारलाभः ४७२

१८४-१८५× भयसर्वौ ।

१०४२-४४ साम्न एकार्थिकानि (सामसमस्म्यगिकाः) निक्षेपाश्च प्रत्येकस्य, द्रव्ये शर्करावुलायोगचितयः, भावे दुःखाकरणं माध्यस्थ्यं ज्ञानादि तत्प्रोतनं च ४७४

१०४५ सामायिकैकार्थिकानि ४७४

१०४६-४८ कर्त्ताऽऽत्मा, कर्म सामायिकं, करणमात्मा

१०४९ सर्वनिक्षेपाः (७) ४७६

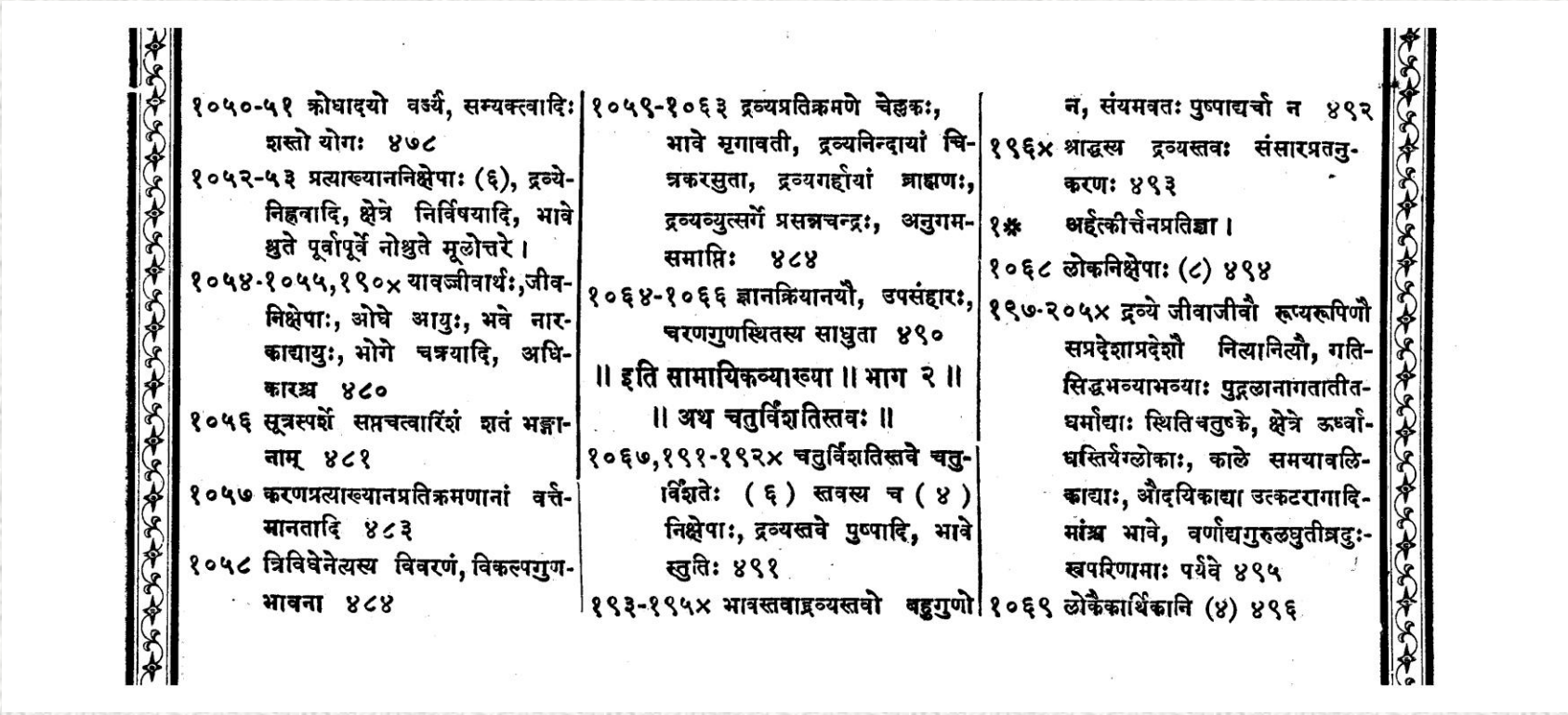
१८६-१८९× द्रव्ये सर्वासर्वद्रव्यदेशैर्भङ्गाः, सर्वधत्तनिरूपणं, भावसर्वं च ४७६

सामायिकाधिकाराः ॥ १४२ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



१०५०-५१ क्रोधादयो वर्ज्यं, सम्यक्त्वादिः शस्तो योगः ४७८
१०५२-५३ प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६), द्रव्ये-निह्नवादि, क्षेत्रे निर्विषयादि, भावे श्रुते पूर्वापूर्वे नोश्रुते मूलोत्तरे।
१०५४-१०५५,१९०× यावज्जीवार्थः,जीव-निक्षेपाः, ओघे आयुः, भवे नार-काद्यायुः, भोगे चक्रयादि, अधि-कारश्च ४८०
१०५६ सूत्रस्पर्शे सप्तचत्वारिंशं शतं भङ्गा-नाम् ४८१
१०५७ करणप्रत्याख्यानप्रतिक्रमणानां वर्त्त-मानतादि ४८३
१०५८ त्रिविधेनेत्यस्य विवरणं, विकल्पगुण-भावना ४८४
१०५९-१०६३ द्रव्यप्रतिक्रमणे चेल्लकः, भावे मृगावती, द्रव्यनिन्दायां चि-त्रकरसुता, द्रव्यगर्हायां ब्राह्मणः, द्रव्यव्युत्सर्गे प्रसन्नचन्द्रः, अनुगम-समाप्तिः ४८४
१०६४-१०६६ ज्ञानक्रियानयौ, उपसंहारः, चरणगुणस्थितस्य साधुता ४९०
॥ इति सामायिकव्याख्या ॥ भाग २ ॥
॥ अथ चतुर्विंशतिस्तवः ॥
१०६७,१९१-१९२× चतुर्विंशतिस्तवे चतु-र्विंशतेः (६) स्तवस्य च (४) निक्षेपाः, द्रव्यस्तवे पुष्पादि, भावे स्तुतिः ४९१
१९३-१९५× भावस्तवाद्द्रव्यस्तवो बहुगुणो न, संयमवतः पुष्पाद्यर्चा न ४९२
१९६× श्राद्धस्य द्रव्यस्तवः संसारप्रतनु-करणः ४९३
१* अर्हत्कीर्त्तनप्रतिज्ञा।
१०६८ लोकनिक्षेपाः (८) ४९४
१९७-२०५× द्रव्ये जीवाजीवौ रूप्यरूपिणौ सप्रदेशाप्रदेशौ नित्यानित्यौ, गति-सिद्धभव्याभव्याः पुद्गलानागतातीत-धर्माद्याः स्थितिश्चतुष्के, क्षेत्रे ऊर्ध्वा-धस्तिर्यग्लोकाः, काले समयावलि-काद्याः, औदयिकाद्या उत्कटरागादि-मांश्च भावे, वर्णाद्यगुरुलघुतीव्रदुः-खपरिणामाः पर्यवे ४९५
१०६९ लोकैकार्थिकानि (४) ४९६

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

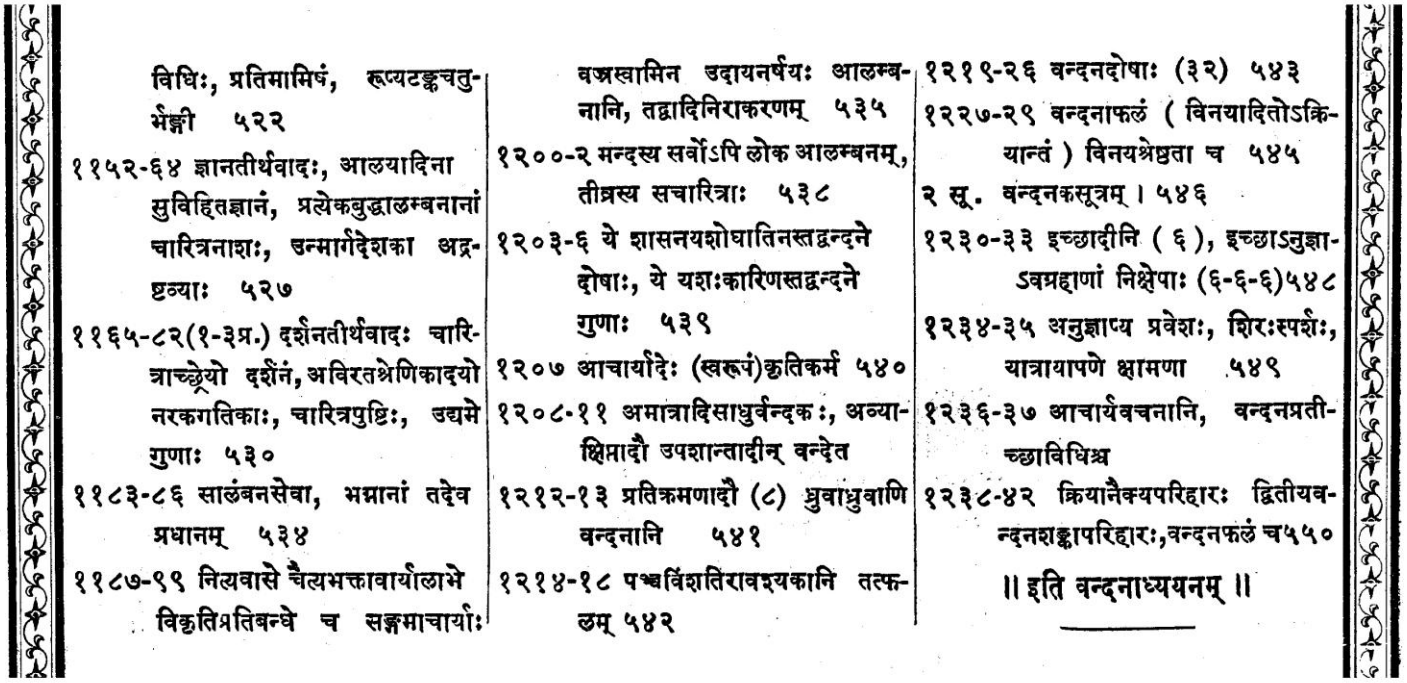
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४३ ॥

१०७०-१०७३ द्रव्योद्द्योतेऽध्यादि, भावे ज्ञानं, लोकालोकयोर्जिना भावोद्द्योतकराः ४९६
१०७४-१०७५ द्रव्यधर्मे गम्यादि कुलिङ्गश्च, भावे श्रुतचरणम् ४९७
१०७६-१०८०तीर्थनिक्षेपाः(४),द्रव्ये दाहोपशमादियुतं, भावे क्रोधाद्यष्टविधकर्मच्छेदि दर्शनादियुतम् ४९८
१०८१-१०८६ करनिक्षेपाः (६),द्रव्ये गोमहिष्यादेः (१८), भावेऽप्रशस्तः कलहादिकरः, शस्तेऽर्थहितादिकरः ४९९
१०८७-१०९० जिनत्वार्हत्त्वे,दर्शनादि, देशनाकीर्त्तिः, अपिशब्दादन्यजिनाः, केवलित्वं च ५००
२-४* चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः ५०१
१०९१-११०२ जिनानां सामान्यविशेषनामहेतवः ५०२
५-६* जिनप्रसादप्रार्थना, आरोग्यबोधिसमाधिप्रार्थना च ५०७
११०३ नतिकीर्त्येकार्थिकानि (४–४) ५०८
११०४ मिथ्यात्वाज्ञानात्रततमोभ्यो मुक्ता उत्तमाः ५०८
११०५-१११२ प्रार्थनाया अनिदानता, भक्त्या व्यवहारभाषा, उपदेशदास्ते, भक्त्या कर्मक्षयः, तत आरोग्यादिलाभः, निर्भक्तिकोऽनायतिः, चैत्यादेः संयमः श्रेयः ।
७* सिद्धिप्रार्थना ५१०
१११३ केवलेन लोकालोकप्रकाशः ५१०
॥ इति चतुर्विंशतिस्तवः ॥

॥ अथ वन्दनाध्ययनम् ॥
१११४-१५ वन्दनैकार्थिकानि (४) कस्येत्यादीनि (९) द्वाराणि च ५११
१११६ वन्दनचित्यादिषु शीतलक्षुल्लकादिदृष्टान्ताः ५१२
१११७-१९वन्दनीयावन्दनीये मालादृष्टान्तः, ज्ञानादितीर्थाद्यधिकार सूचा ५१६
(१ प्र.) पार्श्वस्थादिभेदाः ५१७
११२०-३३ पार्श्वस्थादेर्वन्दने दोषाः, तस्य च दुर्लभा बोधिः चारित्रनाशः, चम्पकमाला-शकुनीपारग-वैडूर्यदृष्टान्ताः (असत्सङ्गदोषाः) ५१९
२०६×११३४-५१ लिङ्गाप्रामाण्यचर्चा, अपूर्वदृष्टे लिङ्गावशेषे च पर्यायादिमति

चतुर्विंशतिस्तवा० वन्दनाध्य. ॥ १४३ ॥



विधिः, प्रतिमामिषं, रूप्यटङ्कचतुर्भङ्गी ५२२

११५२-६४ ज्ञानतीर्थवादः, आलयादिना सुविहितज्ञानं, प्रत्येकबुद्धालम्बनानां चारित्रनाशः, उन्मार्गदेशका अद्रष्टव्याः ५२७

११६५-८२(१-३प्र.) दर्शनतीर्थवादः चारित्राच्छ्रेयो दर्शनं, अविरतश्रेणिकादयो नरकगतिकाः, चारित्रपुष्टिः, उद्यमे गुणाः ५३०

११८३-८६ सालंबनसेवा, भग्नानां तदेव प्रधानम् ५३४

११८७-९९ नित्यवासे चैत्यभक्तावार्यालाभे विकृतिप्रतिबन्धे च सङ्गमाचार्यः वज्रस्वामिन उदायनर्षयः आलम्बनानि, तद्वादिनिराकरणम् ५३५

१२००-२ मन्दस्य सर्वोऽपि लोक आलम्बनम्, तीव्रस्य सचारित्राः ५३८

१२०३-६ ये शासनयशोघातिनस्तद्वन्दने दोषाः, ये यशःकारिणस्तद्वन्दने गुणाः ५३९

१२०७ आचार्यादेः (स्वरूपं)कृतिकर्म ५४०

१२०८-११ अमात्रादिसाधुर्वन्दकः, अव्याक्षिप्तादौ उपशान्तादीन् वन्देत

१२१२-१३ प्रतिक्रमणादौ (८) ध्रुवाध्रुवाणि वन्दनानि ५४१

१२१४-१८ पञ्चविंशतिरावश्यकानि तत्फलम् ५४२

१२१९-२६ वन्दनदोषाः (३२) ५४३

१२२७-२९ वन्दनाफलं (विनयादितोऽक्रियान्तं) विनयश्रेष्ठता च ५४५

२ सू. वन्दनकसूत्रम् । ५४६

१२३०-३३ इच्छादीनि (६), इच्छाऽनुज्ञाऽवग्रहाणां निक्षेपाः (६-६-६)५४८

१२३४-३५ अनुज्ञाप्य प्रवेशः, शिरःस्पर्शः, यात्रायापणे क्षामणा ५४९

१२३६-३७ आचार्यवचनानि, वन्दनप्रतीच्छाविधिश्च

१२३८-४२ क्रियानैक्यपरिहारः द्वितीयवन्दनशङ्कापरिहारः,वन्दनफलं च५५०

॥ इति वन्दनाध्ययनम् ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४४ ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणाध्ययनम् ॥

१२४३-४४ प्रतिक्रमणप्रतिक्रमकप्रतिक्रान्तध्यानि, आद्ये त्रिकालिकं, द्वितीये प्रशस्तयोगवान् ५५१

१२४५-५४ कृतिक्रमणैकार्थिकानि (८)प्रतिक्रमण-प्रतिचरणा-परिहरणा-वारणा-निवृत्ति-निन्दा-गर्हा-शुद्धीनां निक्षेपाः, अध्वादिनिक्षेपाः (६) अध्वादिदृष्टान्ताः (८) ५५७

१२५५ अधिकमासे चूतोपालम्भः

१२५६ साध्यं साधनीयं समरे वा मर्त्तव्यम्

१२५७-६० आलोचने आराधना, आद्यान्तयोः सदा चारित्रे च द्वे, मध्यमानामापन्ने चारित्रं चैकम् ५६२

१२६१-६३ दैवसिकरात्रिके, इत्वरयावत्कथिके, पाक्षिकचातुर्मासिकसांवत्सरिकोत्तमार्थानि, महाव्रतानि भक्तपरिज्ञा च यावत्कथिके, उच्चारादावित्वरम् ५६३

१२६४-८४ मिथ्यात्वासंयमकषाययोगेभ्यः संसाराद्वा भावप्रतिक्रमणं, गन्धर्वदत्तदृष्टान्ते क्रोधाद्या नागाः, विषोत्तारणे अनत्याहारादिविद्याप्रयोगः५६४

३ सू. चत्तारि मंगलं सूत्रं

४ सू. चत्तारि लोगुत्तमा सूत्रं

५ सू. चत्तारिसरणं सूत्रं

६ सू. इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे देव० ५६९

१२८५ प्रतिषिद्धकरणादिषु प्रतिक्रमणम् ५७३

७ सू. इच्छामि पडिक्कमिउं, इरिया० ।

८ सू. इच्छामि पडिक्कमिउं पगाम० । ४७४

९ सू. पडिक्कमामि गोयर० । ५७५

१०सू. पडिक्कमामि चाउ० (अतिक्रमादि) ५७६

११सू. पडिक्कमामि एग० । (दण्डगुप्तिषूदाहरणानि) ५७७

१२सू. पडि० तीहिं सल्लेहिं । (गौरवे मङ्गाचार्यः, ज्ञानादिप्रत्यनीकता, सञ्ज्ञाहेतवः, विकथाः (१६) ५७९

॥ अथ ध्यानशतकम् ॥

।१ मङ्गलं प्रतिज्ञा च (योगीश्वरः)५८२

।२ ध्यानचित्तयोर्लक्षणे, भावनानुप्रेक्षाचिन्ताचित्तानि ५८३

प्रतिक्रमणाध्यानशतकं च. ॥ १४४ ॥

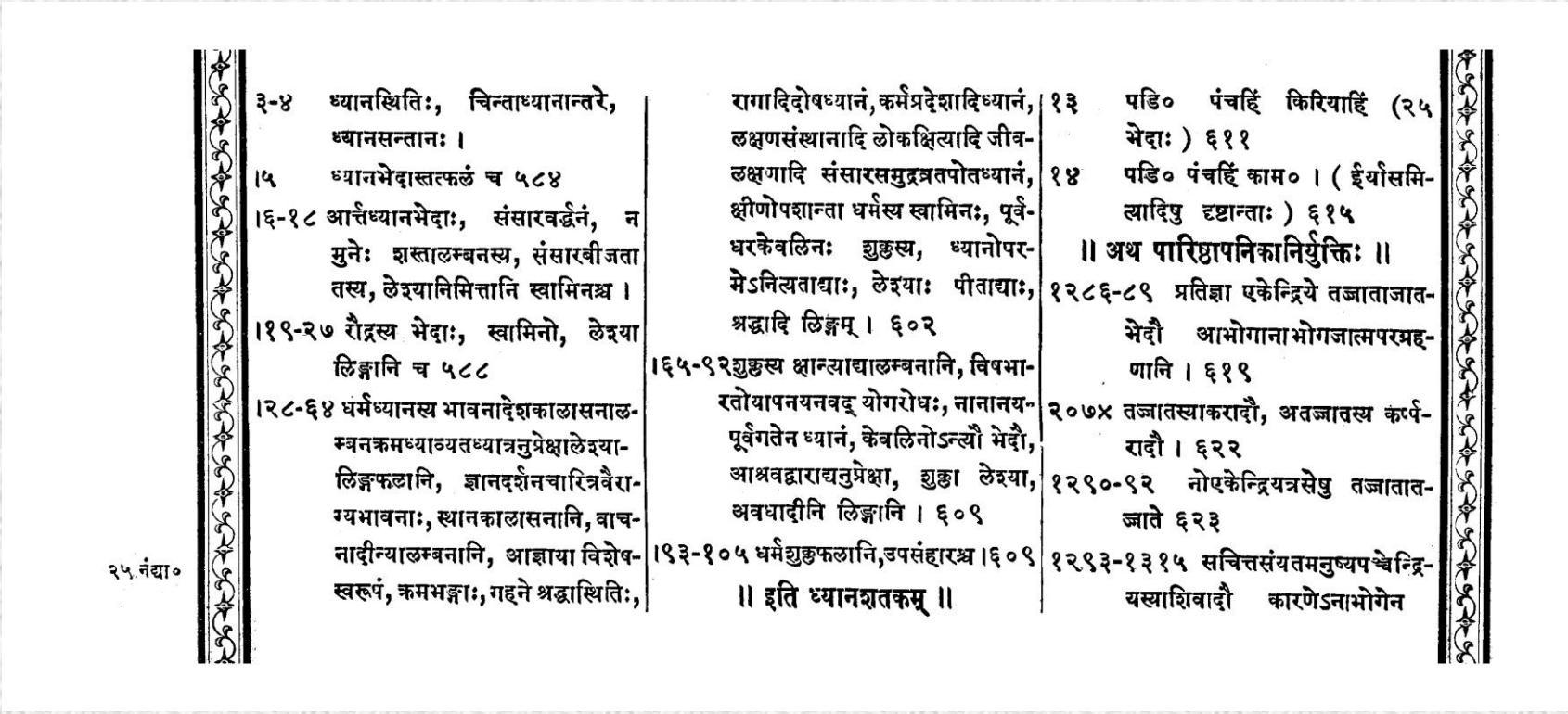
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



२५ नंद्या०

३-४ ध्यानस्थितिः, चिन्ताध्यानान्तरे, ध्यानसन्तानः ।

।५ ध्यानभेदास्तत्फलं च ५८४

।६-१८ आर्त्तध्यानभेदाः, संसारवर्द्धनं, न मुनेः शस्तालम्बनस्य, संसारबीजता तस्य, लेश्यानिमित्तानि स्वामिनश्च ।

।१९-२७ रौद्रस्य भेदाः, स्वामिनो, लेश्या लिङ्गानि च ५८८

।२८-६४ धर्मध्यानस्य भावनादेशकालासनालम्बनक्रमध्याव्यतध्यात्रनुप्रेक्षालेश्यालिङ्गफलानि, ज्ञानदर्शनचारित्रवैराग्यभावनाः, स्थानकालासनानि, वाचनादीन्यालम्बनानि, आज्ञाया विशेषस्वरूपं, क्रमभङ्गाः, गहने श्रद्धास्थितिः, रागादिदोषध्यानं, कर्मप्रदेशादिध्यानं, लक्षणसंस्थानादि लोकक्षित्यादि जीवलक्षणादि संसारसमुद्रव्रतपोतध्यानं, क्षीणोपशान्ता धर्मस्य स्वामिनः, पूर्वधरकेवलिनः शुक्लस्य, ध्यानोपरमेऽनित्यताद्याः, लेश्याः पीताद्याः, श्रद्धादि लिङ्गम् । ६०२

।६५-९२ शुक्लस्य क्षान्त्याद्यालम्बनानि, विषभारतोयापनयनवद् योगरोधः, नानानयपूर्वगतेन ध्यानं, केवलिनोऽन्त्यौ भेदौ, आश्रवद्वाराद्यनुप्रेक्षा, शुक्ला लेश्या, अवधादीनि लिङ्गानि । ६०९

।९३-१०५ धर्मशुक्लफलानि, उपसंहारश्च । ६०९

॥ इति ध्यानशतकम् ॥

१३ पडि० पंचहिं किरियाहिं (२५ भेदाः) ६११

१४ पडि० पंचहिं काम० । (ईर्यासमित्यादिषु दृष्टान्ताः) ६१५

॥ अथ पारिष्ठापनिकानिर्युक्तिः ॥

१२८६-८९ प्रतिज्ञा एकेन्द्रिये तज्जाताजातभेदौ आभोगानाभोगजात्मपरग्रहणानि । ६१९

२०७× तज्जातस्याकरादौ, अतज्जातस्य कर्परादौ । ६२२

१२९०-९२ नोएकेन्द्रियत्रसेषु तज्जातातज्जाते ६२३

१२९३-१३१५ सचित्तसंयतमनुष्यपञ्चेन्द्रियस्याशिवादौ कारणेऽनाभोगेन

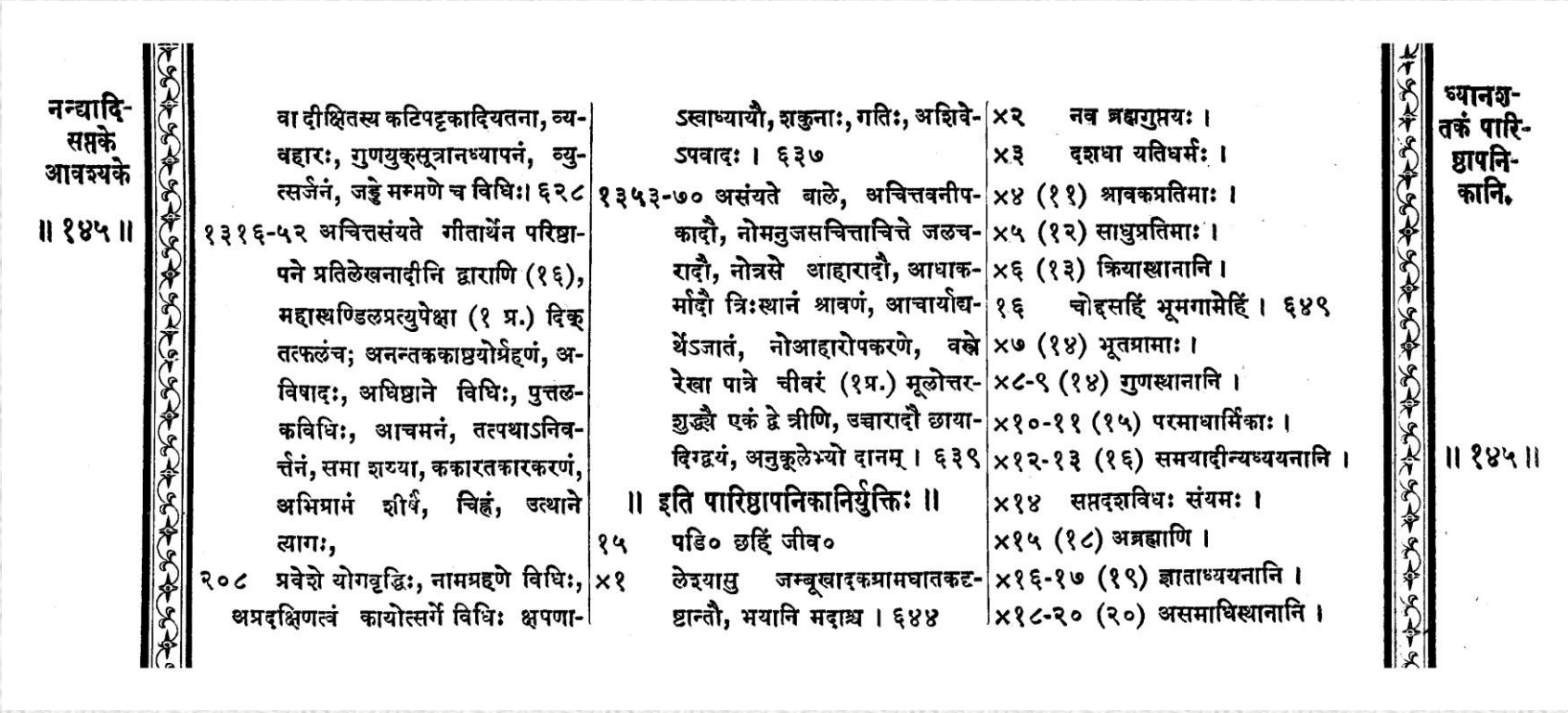
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४५ ॥

वा दीक्षितस्य कटिपट्टकादियतना, व्यवहारः, गुणयुक्तसूत्रानध्यापनं, व्युत्सर्जनं, जड्डे मम्मणे च विधिः। ६२८

१३१६-५२ अचित्तसंयते गीतार्थेन परिष्ठापने प्रतिलेखनादीनि द्वाराणि (१६), महास्थण्डिलप्रत्युपेक्षा (१ प्र.) दिक् तत्फलंच; अनन्तककाष्ठयोर्ग्रहणं, अविषादः, अधिष्ठाने विधिः, पुत्तलकविधिः, आचमनं, तत्पथाऽनिवर्त्तनं, समा शय्या, ककारतकारकरणं, अभिग्रामं शीर्षं, चिह्नं, उत्थाने त्यागः,

२०८ प्रवेशे योगवृद्धिः, नामग्रहणे विधिः, अप्रदक्षिणत्वं कायोत्सर्गे विधिः क्षपणा-

ऽस्वाध्यायौ, शकुनाः, गतिः, अशिवेऽपवादः । ६३७

१३५३-७० असंयते बाले, अचित्तवनीपकादौ, नोमनुजसचित्ताचित्ते जलचरादौ, नोत्रसे आहारादौ, आधाकर्मादौ त्रिःस्थानं श्रावणं, आचार्यार्थ-र्थेऽजातं, नोआहारोपकरणे, वस्त्रे रेखा पात्रे चीवरं (१प्र.) मूलोत्तरशुद्धौ एकं द्वे त्रीणि, उच्चारादौ छायादिग्द्वयं, अनुकूलेभ्यो दानम् । ६३९

॥ इति पारिष्ठापनिकानिर्युक्तिः ॥

१५ पडि० छहिं जीव०

×१ लेश्यासु जम्बूखादकग्रामघातकदृष्टान्तौ, भयानि मदाश्च । ६४४

×२ नव ब्रह्मगुप्तयः ।

×३ दशधा यतिधर्मः ।

×४ (११) श्रावकप्रतिमाः ।

×५ (१२) साधुप्रतिमाः ।

×६ (१३) क्रियास्थानानि ।

१६ चोद्दसहिं भूमगामेहिं । ६४९

×७ (१४) भूतग्रामाः ।

×८-९ (१४) गुणस्थानानि ।

×१०-११ (१५) परमाधार्मिकाः ।

×१२-१३ (१६) समयादीन्यध्ययनानि ।

×१४ सप्तदशविधः संयमः ।

×१५ (१८) अब्रह्माणि ।

×१६-१७ (१९) ज्ञाताध्ययनानि ।

×१८-२० (२०) असमाधिस्थानानि ।

ध्यानशतकं पारिष्ठापनिकानि.

॥ १४५ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

१७ एक्कवीसाए सबलेहिं । ६५५
×२१-३० एकविंशतिः शबलाः ।
×३१-३३ त एव प्रकारान्तरेण ।
×३४-३५ (२२) परीषहाः ।
×३६ (२३) पुण्डरीकादीनि अध्ययनानि
×३७ (२४) देवाः ।
×३८-४२ पञ्चविंशतिर्भावनाः ।
+४३ (२६) उद्देशानां कालाः
×४४-४५ (२७) अनगारगुणाः
×४६-४८ (२८) आचारप्रकल्पाः ।
×४९-५० (२९) पापश्रुतानि ।
×५१-६५ (३०) मोहनीयस्थानानि ।
×६६ (३१) सिद्धगुणाः ।
×६७ त एव प्रकारान्तरेण ।

॥ अथ योगसङ्ग्रहाः ॥
१३७१-७५ आलोचनानिरपलापतादयो योगसंग्रहाः (३२) ६६३
१३७६ आलोचनायामदृनः दृष्टान्तः ६६४
१३७७ निरपलापतायां दृढमित्रः । ६६६
१३७८ द्रव्यापदि धर्मघोषः । ६६७
१३७९ भावापदि दण्डः ।
१३८० अनिश्रितोपधाने महागिरिः । ६६८
१३८१ शिक्षायां स्थूलभद्रः, (क्षितिप्रतिष्ठितचनकपुरऋषभपुरकुशाग्रपुरराजगृहचम्पापाटलिपुत्राणि नन्दशकटालादयश्च) ६९८
१३८२ निष्प्रतिकर्मत्वे नागदत्तः
१३८३-१३८४ अज्ञातत्वे धर्मवसुशिष्यौ,

पालकसुतराष्ट्रवर्धनसुतावन्तीसेनमणिप्रभौ । ६९९
१३८५-१३८९ अलोभे क्षुल्लकः । यशोभद्रराज्यादीनां 'सुट्ठु वाइय'मिति गीतिकायां दानं, तितिक्षायां सुरेन्द्रदत्तः । ७०२
१३९० आर्जवेऽङ्गर्षिः । ७०४
१३९१-१३९३ शौचे यज्ञयशःपुत्रयज्ञदत्तपुत्रनारदः (सीमन्धराद्या जिनाः) ७०५
१३९४ सम्यक्त्वे विमलप्रभाकरौ ७०६
१३९५ समाधौ सुव्रतर्षिः । ७०७
१३९६ आचारे ज्वलनदहनौ ।
१३९७ विनये निम्बकः । ७०८
१३९८ धृतिमत्योर्मतिसुमत्यौ ।

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४६ ॥

१३९९-१४०० संवेगे वारत्रकर्षिः । ७०९
१४०१ द्रव्यप्रणिधौ गुग्गुलः, भावप्रणिधौ भदन्तमित्रकुणालौ । ७१२
१४०२-३ सुविधौ वैतरणिः । ७१३
१४०४ संवरे नन्दश्रीः ।
१४०५ आत्मदोषोपसंहारे जिनदेवः । ७१४
१४०६ विरक्तत्वे देवलासुतः ।
१४०७-०८ मूलगुणप्रत्याख्याने शत्रुञ्जयः, उत्तरगुणप्रत्याख्याने धर्मघोषधर्मयशसौ । ७१५
२०९-२१६× व्युत्सर्गे प्रत्येकबुद्धाः (४), वृषभेन्द्रध्वजवलयचूतवृक्षस्वरूपम् । ७१६
१४०९-१० ऋजुवक्रयोर्गुणदोषाः । ७२१
१४११-१२ अप्रमादे मगधसुन्दरी, 'पत्ते वसंतमासे' गीतिका ।
१४१३ लवालवे विजयः । ७२१
१४१४ ध्याने पुष्पभूतिः । ७२२
१४१५ मारणान्तिके धर्मरुचिः ७२३
१४१६ स्नेहत्यागे जिनदेवः ।
१४१७ प्रायश्चित्ते धनगुप्तः, आराधनायां मरुदेवी । ७२४
॥ इति योगसङ्ग्रहाः ॥
१८ तेत्तीसाए आसायणाहिं । ७२५
×६८-७१ त्रयस्त्रिंशदाशातनाः, अर्हदाशातनादिकाः सूत्रोक्ता वा ७२७
१९ अर्हदाद्याशातनाः (१९) ७२८
२१७-२१९× सप्तद्वीपोदधिः प्रजापतिकृतः प्रकृतिपुरुषरूपो वा लोक इत्यस्य खण्डनम् । ७३०
२० व्याविद्धादिकाः (१४) श्रुताशातनाः । ७३१
॥ अथ अस्वाध्यायनिर्युक्तिः ॥
१४१८-२३ अस्वाध्यायनिर्युक्तिप्रतिज्ञा संयमघातौपपातिकसादिव्यव्युद्ग्रहशारीरैः परसमुत्थं पञ्चधा । (म्लेच्छराजदृष्टान्तः सोपनयः) ३१७
१४२४-२६ महिकाभिन्नवर्षसचित्तरजांसि द्रव्यक्षेत्रकालभावैः त्याज्यानि, सोपनयपञ्चपुरुषीदृष्टान्तः ७३२
२२०-२२१× महिकादिस्वरूपम् । ७३३
१४२७ संयमौपघातिके यतना । ७३४

योगसंग्रहाः अस्वाध्यायनि.

॥ १४६ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

१४२८-३० पांशुमांसादिवर्षेऽहोरात्रं, पांश्वादिस्वरूपं, स्वाभाविके चैत्रीयकायोत्सर्गे स्वाध्यायः ।
१४३१-४० गन्धर्वनगरादि सादिव्यं, ग्रहणे आचीर्णानाचीर्णादि, महामहाः (४), अकालस्वाध्याये दोषाः ७३५
१४४१-४५ दण्डिकादिव्युद्ग्रहे अर्हते मृतके विकीर्णे च विधिः । ७३८
१४४६-५०,२२२×जलस्थलखचराणां शोणितादौ विधिः, अन्तर्बहिर्धौतपक्वयोर्महाकाये च विधिः । ७४१
१४५१, २२३-२२५× अण्डभेदे विधिः, अस्वाध्यायिकप्रमाणं, जरायोः पौरुषीत्रयं, रुधिरस्पर्शेऽस्वाध्यायः ।
१४५२-९९,२२६-२३१× मानुष्यरुधिरादौ, जन्मनि सप्ताष्ट दिनाः, ऋतौ त्रयं, दन्ते त्यागः, अस्थि द्वादश वर्षाणि, अस्थिशोधने मृतकनयने च विधिः । कालप्रतिलेखनायां भूमि (२७) प्रतिलेखना, श्राद्धादिकथाऽभावे सर्वे कायोत्सर्गस्थाः, प्रतिक्रमणं, कालग्रहणविधिः, गण्डकदृष्टान्तः, कालग्राहिगुणाः,
१-२ प्र(सिद्ध). व्याघाताः, सर्वैः प्रस्थापनं, शङ्काविधिः, उल्कादिविधिः, तारादर्शनं कालग्रहणकालप्रमाणं, प्रोषितपतिविधिः, हते नववेला ग्रहणं, व्याघातिमे न गण्डकमरुकदृष्टान्तौ । ७५४
१५००-१४ आत्मसमुत्थेऽस्वाध्याये व्रणविधिः, श्रमण्या इतरस्मिन् सप्त बन्धाः, अस्वाध्याये श्रुताभक्त्यादि, उपसंहारश्च । (चतुस्त्रिंशतः शतं यावत्स्थानानि) ७५७
॥ इति अस्वाध्यायनिर्युक्तिः ॥
२१ जिननमस्कारः । ७६०
२२ प्रवचनवर्णनम् ।
२३ श्रद्धानादिस्वरूपं, असंयमादित्यागः । ७६१
२४ अस्मृतप्रतिक्रमणम् । ७६२
२५ मुनिवन्दनम्। (१८०००शीलाङ्गानि)
८-९* सर्वजीवक्षामणानि ७६३
॥ इति प्रतिक्रमणाध्ययनम् । भाग ३ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४७ ॥

॥ अथ कायोत्सर्गाध्ययनम् ॥

१५१५ प्रायश्चित्तभेदाः (१०)

१५१६-२४ तदुद्भवागन्तुकव्रणदृष्टान्तः सोपनयः । ७६४

१५२५ कायोत्सर्गे निक्षेपैकार्थिकादीनि (११) द्वाराणि । ७६६

२३२-२३५× कायस्योत्सर्गस्य च निक्षेपाः (१२–६)

(१प्र.)१५२६-४३ गतिकायस्तैजसकार्मणं, निकायकायो जीवनिकायः, द्रव्यकायचर्चा, पर्यायकायः समूहः, भारकायः कापोती, कायैकार्थिकानि (१३)

१५४४-४९ उत्सर्गस्य निक्षेपाः (६)

(१प्र.) एकार्थिकानि (११) च, भिक्षाचर्यायां चेष्टा, उपसर्गेऽभिभवः । ७७१

१५५०-५५ सांवत्सरिकोऽभिभवः, योद्धृदृष्टान्तश्च । ७७१

१५५६-५८उच्छ्रितोच्छ्रितादिभेदाः(९)७७२

१५५९-७५ कायोत्सर्गगुणाः, ध्यानलक्षणफले, ध्यानस्थानं, न केवलं मनःपरिणामो ध्यानं, भङ्गिकश्रुते त्रिविधं ध्यानम् । ७७३

१५७६-९३ उच्छ्रितोच्छ्रितादि (९) स्वरूपं, ध्यानचित्तयोर्भेदः । ७७६

२६ इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं । ७७८

२७ तस्स उत्तरीकरणेणं० अन्नत्थ० ७७९

(१-२प्र.)१५९४ एकमनसोऽतिचारज्ञानं ततः शुद्धिश्च । ७८०

१५९५ दिवसातिचाराः ।

१५९६-९७ मुखवस्त्रिकादितोऽतिचारचिन्तनं ध्यानं च । ७८१

१५९८-१६०१ दैवसिकादौ गमत्रयं,तच्छङ्कासमाधाने ।

१६०२-३ मिथ्यादुष्कृताक्षरार्थः ।

१६०४-६ उत्तरप्रायश्चित्तादिव्याख्या ७८२

१६०७-१३ उच्छ्वासाद्यनिरुंभणं, वातनिसर्गादौ यतना, अश्वाद्याकाराः । ७८३

१६१४-२० ससूर्ये भूमिं प्रेक्ष्य काले कायोत्सर्गः, गुरोर्द्विगुणं दैवसिकं, प्रतिक्रमणविधिः । ७८४

२८ सव्वलोए अरिहंत० ७८६

२९, १०-१३* पुक्खरवरदीवड्ढे ७८८

कायोत्स-र्गाध्य. ॥ १४७ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

३०, १४-१८* सिद्धाणं बुद्धाणं। ७८९
१६२१ वर्द्धमानस्तुतित्रयम् । ७९०
१६२२-२४ दैवसिकरात्रिकयोः कायोत्सर्गव्यत्ययः, षण्मासीतपश्चिंतनम्। ७९१
१६२५ क्षामणेषु गुरुवाक्यानि ।
३१ क्षामणासूत्रम् । ७९२
३२-३५ पाक्षिकक्षामणासूत्राणि । ७९३
२३६-२३७× चातुर्मासिकादौ देवताकायोत्सर्गादि । ७९४
१६२६-२९ दैवसिकादिकायोत्सर्गमानम् । ७९५
१६३०-३५, २३८× गमनागमनादौ भुक्तादौ विहारे उद्देशादौ च कायोत्सर्गः
(प्र.१-१.) दुःस्वप्ने नावुत्तारादौ च कायोत्सर्गः । ७९७
१६३६ पादसमा उच्छ्वासाः । ७९७
१६३७-४०, २३९-२४० (१ प्र.) निर्मायमुत्सर्गः ।
१६४१-४४ कायोत्सर्गे विधिः, दोषाश्च (१९) ७९८
१६४५-४७ वासीचन्दनकल्पस्योपसर्गसहस्य शुद्धः, सुभद्राद्या दृष्टान्ताः (४) फलं च । ७९९
२४१× क्रकचवत्कर्मनाशः । ८०१
१६४८-५१ कायोत्सर्गे भावना ।
॥ इति कायोत्सर्गाध्ययनम् ॥
॥ अथ प्रत्याख्यानाध्ययनम् ॥
१६५२ प्रत्याख्यानप्रत्याख्यातृप्रत्याख्येयानि पर्षत् कथनविधिः फलं च द्वाराणि ८०३
२४२–२४७× (१प्र) प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६) द्रव्ये राजसुताद्दष्टान्तः, भावे नोश्रुते मूले सर्वदेशे इत्वरयावत्कथिके, मूलगुणाः (५) ८०५
१६५३-५८ श्रावकभेदाः (३२) (१४७ भङ्गाः) ८०७
(१.१-४प्र.)अणुव्रतभङ्गा । (१६८०८)८०७
३६ सम्यक्त्वालापकः सातिचारः । (अभियोगेषु कार्त्तिक-वरुणश्रावक-भिक्षूपासकसौराष्ट्रदृष्टान्ताः) अतिचारेषु पेयाअश्वापहृतनृपचौरदुर्गन्धिकादृष्टान्ताः) (३६३ पाखण्डिनः) ८११

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

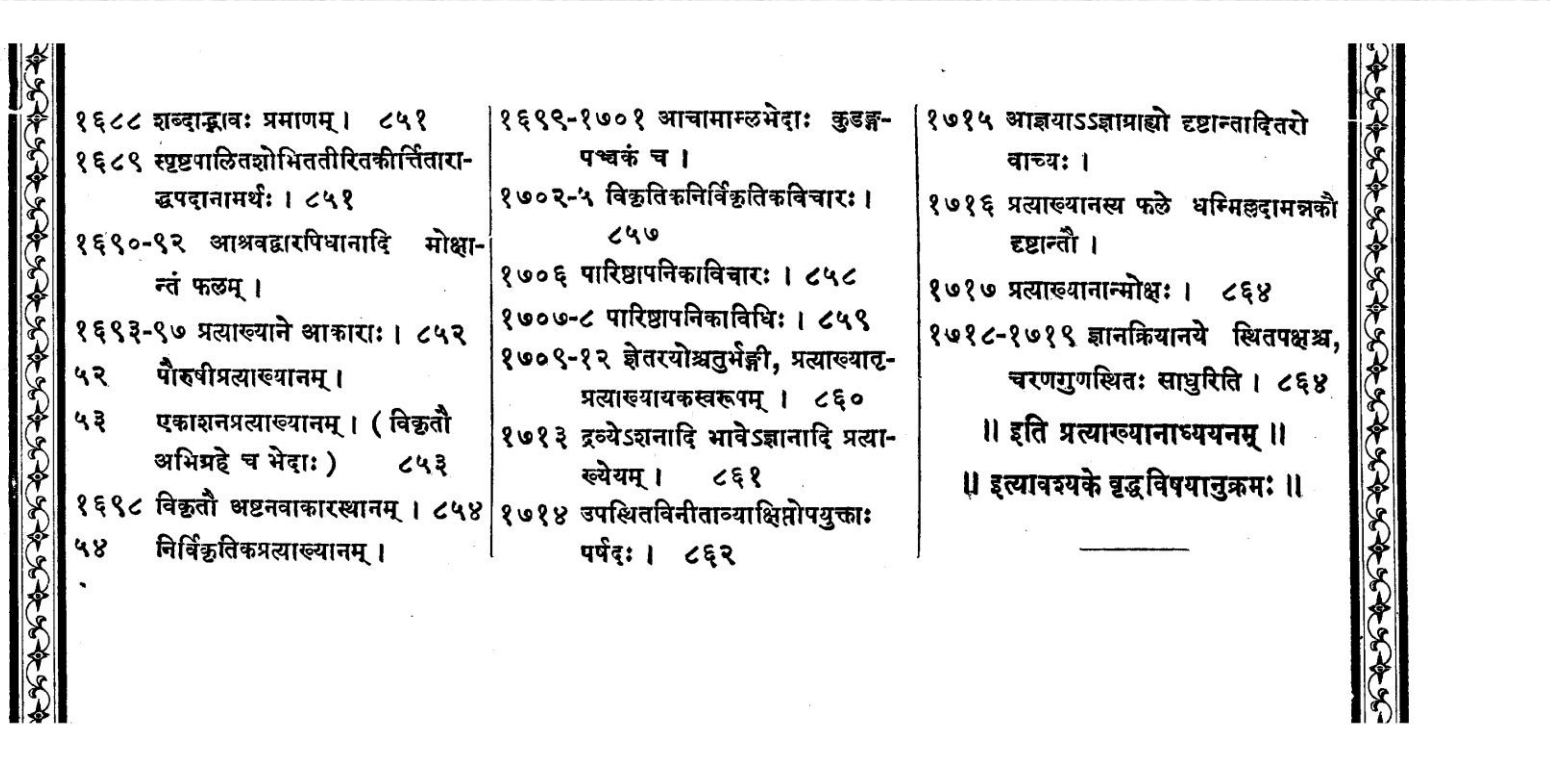
[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके आवश्यके ॥ १४८ ॥

३७ स्थूलप्राणातिपातप्रत्याख्यानं व्रतमाद्यं सातिचारम्। कोङ्कणकसाप्तपदिकक्षेमदृष्टान्ताः, व्रतविधिश्च) ८१८
३८ सातिचारं द्वितीयम्, (कोङ्कणकमथुरावणिक्परिव्राड्दृष्टान्ताः) ८२०
३९ तृतीयं सातिचारम् । (गोष्ठीश्रावकः) ८२२
४० चतुर्थं सातिचारम् । (मात्रादिगमने दृष्टान्ताः, कच्छकुलपुत्रकश्च) ८२३
४१ पञ्चमं सातिचारम् । (लोभनन्दिः) ८२५
४२ दिग्व्रतं सातिचारम्। ८२७
४३ उपभोगादिपरिमाणं सातिचारम्। ८२८
४४ कर्मादानानि। ८२९
४५ अनर्थदण्डः सातिचारः। ८३०
४६, १९-२१* सामायिके स्वरूपं शिक्षादि भेदाः सर्वपदाभगनमतिचाराश्च। ८३१
४७ दिग्व्रतं सातिचारम्। ८३४
४८ पौषधोपवासः सातिचारः। ८३५
४९ अतिथिसंविभागः। ८३७
५० अणुव्रतादीनां कालः, सम्यक्त्वभेदाः, प्रतिमाद्याः, संलेखनाऽतिचाराः। ८३८
१६५९-६१ उत्तरगुणे अनागतातिक्रान्तादि-(१०) प्रत्याख्यानभेदाः। ८४०
१६६२-६३ अनागतं पर्युषणादितपः। ८४१
१६६४-६९ अतिक्रान्तं कोटिसहितं नियन्त्रितं (प्रथमसंहनने) ८४२
१६७० साकारप्रत्याख्यानं। ८४३
१६७१ निराकारम्। ८४४
१६७२ दत्त्यादिभिः कृतपरिमाणम्।
१६७३ निरवशेषम्।
१६७४-७५ अङ्गुष्ठमुष्ट्यादि सकेतं पौरुष्याद्धाप्रत्याख्यानं च। ८४५
१६७६-८१ एकविधमेकविधेनैतानि ८४६
१६८२,२४८-२४९×श्राद्धकुलानां दर्शनं दानं च, शुद्धिषट्कप्रतिज्ञा, श्रद्धानज्ञानविनयानुभाषणानुपालनाभावाः। ८४७
२५०-२५७× श्रद्धानादिस्वरूपम्।
५१ नमस्कारसहितम् ८४९
१६८३-८४ आहारभेदव्युत्पत्ती। ८५०
१६८५-८७ सुखेन श्रद्धार्थं भेदाः।

प्रत्याख्यानाध्य. ॥ १४८ ॥



१६८८ शब्दाद्भावः प्रमाणम्। ८५१
१६८९ स्पृष्टपालितशोभिततीरितकीर्त्तिताराद्धपदानामर्थः। ८५१
१६९०-९२ आश्रवद्वारपिधानादि मोक्षान्तं फलम्।
१६९३-९७ प्रत्याख्याने आकाराः। ८५२
५२ पौरुषीप्रत्याख्यानम्।
५३ एकाशनप्रत्याख्यानम्। (विकृतौ अभिग्रहे च भेदाः) ८५३
१६९८ विकृतौ अष्टनवाकारस्थानम्। ८५४
५४ निर्विकृतिकप्रत्याख्यानम्।
१६९९-१७०१ आचामाम्लभेदाः कुडङ्गपञ्चकं च।
१७०२-५ विकृतिकनिर्विकृतिकविचारः। ८५७
१७०६ पारिष्ठापनिकाविचारः। ८५८
१७०७-८ पारिष्ठापनिकाविधिः। ८५९
१७०९-१२ ज्ञेतरयोश्चतुर्भङ्गी, प्रत्याख्यातृप्रत्याख्यायकस्वरूपम्। ८६०
१७१३ द्रव्येऽशनादि भावेऽज्ञानादि प्रत्याख्येयम्। ८६१
१७१४ उपस्थितविनीताव्याक्षिप्तोपयुक्ताः पर्षदः। ८६२
१७१५ आज्ञयाऽऽज्ञाग्राह्यो दृष्टान्तादितरो वाच्यः।
१७१६ प्रत्याख्यानस्य फले धम्मिल्लदामन्नकौ दृष्टान्तौ।
१७१७ प्रत्याख्यानान्मोक्षः। ८६४
१७१८-१७१९ ज्ञानक्रियानये स्थितपक्षश्च, चरणगुणस्थितः साधुरिति। ८६४
॥ इति प्रत्याख्यानाध्ययनम् ॥
॥ इत्यावश्यके वृद्धविषयानुक्रमः ॥

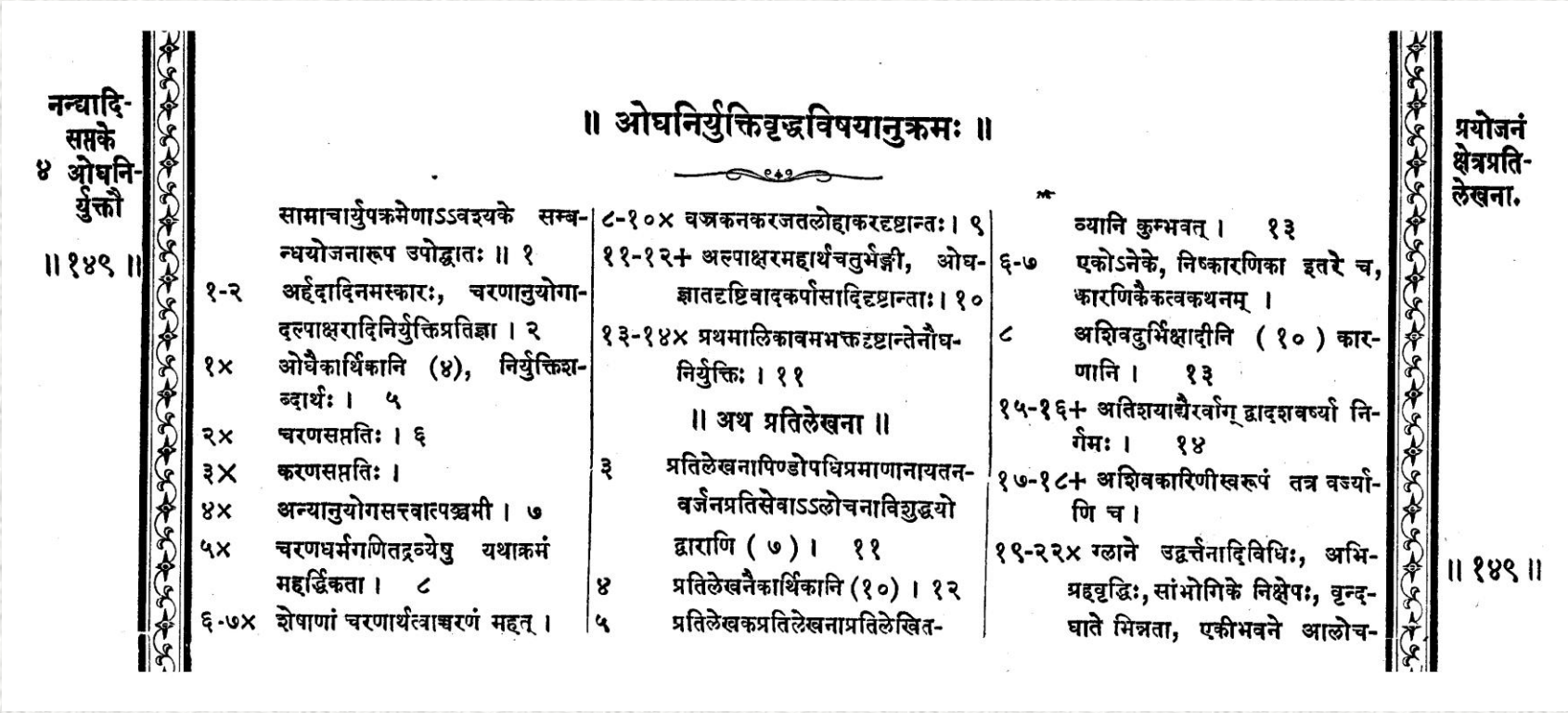
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्यादि-सप्तके ४ ओघनि-र्युक्तौ ॥ १४९ ॥

॥ ओघनिर्युक्तिवृद्धविषयानुक्रमः ॥

सामाचार्युपक्रमेणाऽऽवश्यके सम्बन्धयोजनारूप उपोद्घातः ॥ १
१-२ अर्हदादिनमस्कारः, चरणानुयोगादल्पाक्षरादिनिर्युक्तिप्रतिज्ञा । २
१× ओघैकार्थिकानि (४), निर्युक्तिशब्दार्थः । ५
२× चरणसप्ततिः । ६
३× करणसप्ततिः ।
४× अन्यानुयोगसत्त्वात्पञ्चमी । ७
५× चरणधर्मगणितद्रव्येषु यथाक्रमं महर्द्धिकता । ८
६-७× शेषाणां चरणार्थत्वाच्चरणं महत् ।
८-१०× वज्रकनकरजतलोहाकरदृष्टान्तः । ९
११-१२+ अल्पाक्षरमहार्थचतुर्भङ्गी, ओघज्ञातदृष्टिवादकर्पासादिदृष्टान्ताः । १०
१३-१४× प्रथमालिकावमभक्तदृष्टान्तेनौघनिर्युक्तिः । ११
॥ अथ प्रतिलेखना ॥
३ प्रतिलेखनापिण्डोपधिप्रमाणानायतनवर्जनप्रतिसेवाऽऽलोचनाविशुद्धयो द्वाराणि (७) । ११
४ प्रतिलेखनैकार्थिकानि (१०) । १२
५ प्रतिलेखकप्रतिलेखनाप्रतिलेखित-
व्यानि कुम्भवत् । १३
६-७ एकोऽनेके, निष्कारणिका इतरे च, कारणिकैकत्वकथनम् ।
८ अशिवदुर्भिक्षादीनि (१०) कारणानि । १३
१५-१६+ अतिशयाद्यैरर्वाग् द्वादशवर्ष्यां निर्गमः । १४
१७-१८+ अशिवकारिणीस्वरूपं तत्र वर्ज्यानि च ।
१९-२२× ग्लाने उद्वर्त्तनादिविधिः, अभिग्रहवृद्धिः, सांभोगिके निक्षेपः, वृन्दघाते भिन्नता, एकीभवने आलोच-

प्रयोजनं क्षेत्रप्रतिलेखना.

॥ १४९ ॥

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नादि, सोममुख्यादावनन्तरविशेष-स्थानादि । १५
२३-२७+ अवमे गोदृष्टान्तो भेदे निर्विषय-भक्तनिषेधोपकरणजीवहरेषु, अन्त्य-योर्भेदः, अभिमरादिशङ्कया राजद्वेषः, मालवक्षोभः, वादेन राजद्वेषः । १८
२८+ निर्यापणाय सूत्रार्थपृच्छायै प्रतिच-रितुं वा भेदः । २०
२९-३०+ स्फिटिते मन्दगतिः औषधायः शैक्षो वा देवतादेशश्चेति भेदकारणानि ।
३१-३२+ चरमायां संदेशाः, आभिग्रहिका-भावे गणामन्त्रणं, पृच्छाविधिः, कृतिकर्म । २१
९-१३ पौरुषीकरणाकरणे, द्विरपृच्छायां दोषाः, जागरणविधिः, प्रभातं या-वत्सहायः, ग्रामासन्नोपयोगः, हि-मस्तेनादिभयं, स्नेहपयोवर्जनं, स्था-पनाकुलाद्भिक्षा, अपरिणते गव्यू-तम् । २२
१४ अस्थण्डिलसंक्रमणविधिः । (चल-व्याक्षिप्तानुपयुक्तभङ्गाः (८) २३
१५ पृच्छा($\frac{३}{३}$)यतन($\frac{३}{०}$-$\frac{२}{३}$-३-३-३)यो-र्विधिः । २४
१६-२२ पुरुषस्त्रीनपुंसकानि स्थविरमध्यमत-रुणाः, स्वान्यधार्मिकौ, आत्मतृतीयः। उत्सर्गापवादौ, पार्श्वस्थितोऽनुज्ञाप्यः, पृच्छायां पुरुषादिसंयोगाः । २९
२३-२४ पृथिवीकाये सचित्तादि (३) कृ-ष्णादि (५) शुष्कार्द्रगमनविधिः,
३३× मधुसित्थपिण्डकचिक्खिल्लस्वरूपम् ।
२५-२६ व्यालादिस्तेनादिप्रत्यपायाः, आक्रा-न्तानाक्रान्तसप्रत्यपायेतरे विधिः।३०
२७-२८॥ पादलेखनिकास्वरूपम् ।
२९-३४ अन्तरिक्षापक्काये विधिः, भौमेऽने-काङ्गादि (५) पदभङ्गाः (६४), संडे-वके चलादि (३) भङ्गाः(८), पाषाण-मधुसित्थवालुकाकर्दमभेदैर्जलम् ।
३४+ संघट्टलेपोपरिभेदास्तीरे उत्सर्गश्च। ३२
३५-३९ संघट्टादिजलोत्तरणविधिः ।
४०-४३ तेजोवायुवनस्पतित्रसद्वाराणि । ३३
४४-४६ परस्परसंयोगे यतना । ३५
४७-६१ संयमादात्मनो रक्षा, न लोकेन

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्द्यादि-सप्तके ४ ओघनिर्युक्तौ. ॥ १५० ॥

समानता, भवमोक्षयोस्तुल्या हेतवः, यतायतयोर्निर्वाणभवौ, दलिकं प्राप्य विधिनिषेधौ, अतिचारशुद्धयोरेकहेतुता, न परप्रत्ययो बन्धः, शुद्ध्यर्थं यतना, हिंसापरिणामो न शुद्धिलिङ्गं, त्यागपरिणामस्य मुक्तिः ३८

६२ ग्लानसङ्ज्ञिसाधर्मिकवसतिस्थितिद्वाराणि प्रवेशे ।

६३ प्रवेशे ऐहिकपारत्रिकगुणाः, साम्भोगिकासाम्भोगिकैकानेकसाधर्मिकादिषु द्रव्यादियतना । ३९

६४ प्रवृत्तिः दर्शनं सङ्घडिश्राद्धा इहलोके, ग्लानचैत्यवादिप्रत्यनीकाः परलोके ।

६५-६७ स्वपक्षेण पृच्छा ।

६८-७२ चैत्यसाधुग्लानवैद्यानयनविधिः। ४०

७३-७६ एकाकिग्लाने विधिः । ४२

७७-८१ संयतीविधिः ।

८२-८४ श्रावकनिमन्त्रणे ग्लानयोग्यस्य ग्रहणाग्रहणे,पार्श्वस्थादीनां यतनया। ४४

३५-४१+ ग्लानप्रतिजागरकादिग्रहणाग्रहणे विधिः, प्रासुकेन पश्चानां, देवकुलिकानां खरण्टनम् ,अविशेषे निह्नवानां करणम् । ४६

४२-४६+ जिनाचार्याऽऽज्ञयोः प्राबल्यं, भोजिकदण्डिकदृष्टान्तौ । ४७

४७-४९× प्रथमालिकार्थं बहिर्गमनं यावद् ग्लानवैयावृत्त्यं तदावश्यकता । ४७

८५-९५ व्रजिकग्रामसंखडिदानश्राद्धभद्रविधयः

५०-६४× व्रजग्रामयोः क्षीरग्रहणे विघातः, संखड्यां स्त्रीस्पर्शप्रभूतभक्षणादि, दानश्राद्धे घृतपुरुषादि, भद्रे लड्डुकादि, महानिनादे स्निग्धादिदोषाः, पारिहट्टिकक्षीरादिना परितलितादिना व्याघातो ग्लानत्वादि च, तक्रौदनयोर्ग्रहणं, दूरोत्थितक्षुल्लकादौ प्रवेश :, कारणे दीर्घा भिक्षा, विधिनाऽऽपृच्छय दोषवर्जनेन प्रवेशः, उद्गमादिप्ररूपणा, बहिःस्थाने दोषाः, प्रवेशे विधिः, दोषशुद्धिः, बालकाभावे विधिः, शून्यगृहे विधिः, सागारिके विधिः, विश्रामणा वैद्यबोधः, स्थण्डिलान्यग्रामयोर्भिक्षा, न द्विगव्यूतातिक्रमः ।५४

मार्गे ग्लाने ग्रामप्रवेशे च विधिः ॥ १५० ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

९६-११६, ६५-६६+ साधर्मिके ज्ञाताज्ञात-दृष्टादृष्टश्रुताश्रुतप्रशस्ताप्रशस्तविधिः, साधूनां बाह्याभ्यन्तरप्रत्युपेक्षणा, संविग्नसङ्क्लिष्टभद्रकशून्येषु वसतिः, अमनोज्ञे निवेद्य भिन्ना वसतिः, मनोज्ञापरिभुक्तेऽपाक्षिकस्वाध्यायागत-संयतीवर्जिते पार्श्वस्थादिवसतौ स्थानविधिः,अशिवादौ स्थाने स्थितिः, वर्षासु गमने दोषाः, स्थाने दण्डकाचार्यसामाचार्यौ, एकाकिन उपसंहारः। ६०

११७-१२३, ६७+ सागरमीनवत्त्याजिताः, चक्रस्तूपाद्यर्थमनुपदिष्टाऽगीतार्थाः, गीतार्थतन्निश्राविहारौ, अन्यस्य विराधना ६०

१२४-१४३,६८-७२×यतमानविहरदवधावनाहिण्डकाः, प्रत्येकबुद्धाद्या निर्गताः, आचार्याद्या गच्छे, लिङ्गविहाराभ्यामवधावनता, गच्छगतविहरणविधिः, क्षेत्राप्रत्युपेक्षणेऽनाप्रच्छने क्षेत्रे मार्गे च दोषाः, शिष्यप्रतीच्छकतरुणवृद्धपृच्छाविधिः, बालवृद्धागीतार्थयोगिवृषभप्रेषणे दोषाः, कारणे विधिः। ६६

१४४-१७५,७३-७८×गमने उच्चारभूम्यादिप्रत्युपेक्षणं, सूत्रार्थाकरणं, क्षेत्रत्रिभागादिविधिः, गुर्वाद्यर्थं स्निग्धादि, स्थण्डिलादिप्रत्युपेक्षणा, शय्यातरानुज्ञा, वृषभकल्पनया वसतिः, द्रव्याद्यनुज्ञापना, साधुमानकालाकथनं, संकीर्णे प्राघूर्णके आगते विधिः, अन्यपथे नागमनं, गुरोरालोचनं, कथनविधिः, मतग्रहणं, आचार्यप्रामाण्यं, दुष्टाश्ववन्मध्यबलाः साधवः, तरुणाश्चतुर्थे, स्थविराद्या अनुकूले, पञ्चकैर्बलं, शय्यातराऽऽपृच्छा, अपृच्छायां नियमकथने च दोषाः, ज्ञापनविधिः, ७३

१७६-२१०, ७९-९४× विष्टिका, प्रशस्ततिथ्यादौ मध्याह्ने प्राग् वृषभप्रेषणं, शकुनाः, शय्यातरालापनं, उपकरणवहनविधिः, अप्कायषड्जाद्यधिकरणं, पश्चान्मुक्तेन सङ्केतः, स्वपना-

२६ नंद्या०

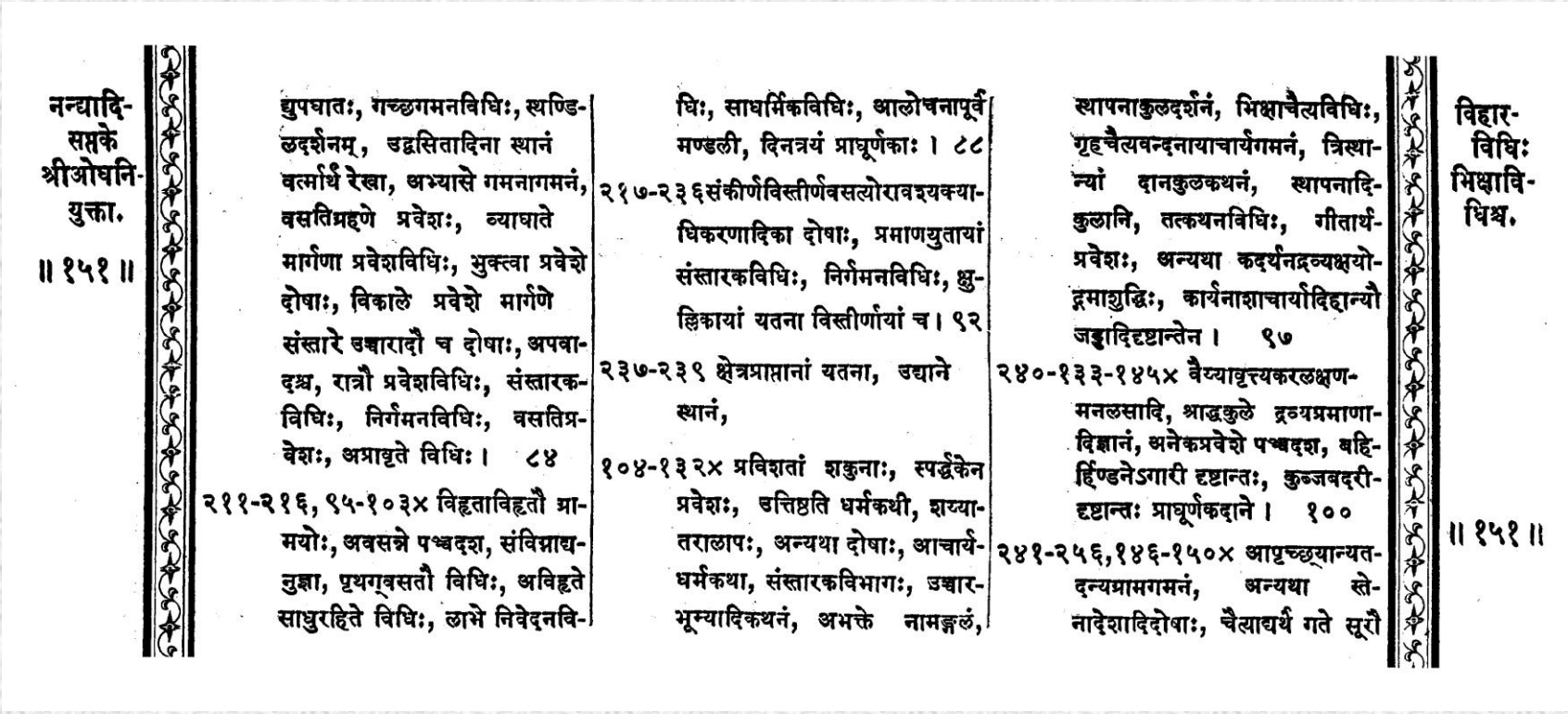
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-सप्तके श्रीओघनि-युक्ता. ॥ १५१ ॥

उपघातः, गच्छगमनविधिः, स्थण्डिलदर्शनम्, उद्वसितादिना स्थानं वर्मार्थं रेखा, अभ्यासे गमनागमनं, वसतिग्रहणे प्रवेशः, व्याघाते मार्गणा प्रवेशविधिः, भुक्त्वा प्रवेशे दोषाः, विकाले प्रवेशे मार्गणे संस्तारे उच्चारादौ च दोषाः, अपवादश्च, रात्रौ प्रवेशविधिः, संस्तारकविधिः, निर्गमनविधिः, वसतिप्रवेशः, अप्रावृते विधिः। ८४

२११-२१६, ९५-१०३× विहृताविहृतौ ग्रामयोः, अवसन्ने पञ्चदश, संविग्नाद्यनुज्ञा, पृथग्वसतौ विधिः, अविहृते साधुरहिते विधिः, लाभे निवेदनविधिः, साधर्मिकविधिः, आलोचनापूर्वं मण्डली, दिनत्रयं प्राघूर्णकाः। ८८

२१७-२३६ संकीर्णेविस्तीर्णवसत्योरावश्यक्याधिकरणादिका दोषाः, प्रमाणयुतायां संस्तारकविधिः, निर्गमनविधिः, क्षुल्लिकायां यतना विस्तीर्णायां च। ९२

२३७-२३९ क्षेत्रप्राप्तानां यतना, उद्याने स्थानं,

१०४-१३२× प्रविशतां शकुनाः, स्पर्द्धकेन प्रवेशः, उत्तिष्ठति धर्मकथी, शय्यातरालापः, अन्यथा दोषाः, आचार्यधर्मकथा, संस्तारकविभागः, उच्चारभूम्यादिकथनं, अभक्ते नामङ्गलं, स्थापनाकुलदर्शनं, भिक्षाचैत्यविधिः, गृहचैत्यवन्दनायाचार्यगमनं, त्रिस्थान्यां दानकुलकथनं, स्थापनादिकुलानि, तत्कथनविधिः, गीतार्थप्रवेशः, अन्यथा कदर्थनद्रव्यक्षयोद्गमाशुद्धिः, कार्यनाशाचार्यादिहान्यौ जडादिदृष्टान्तेन। ९७

२४०-१३३-१४५× वैय्यावृत्त्यकरलक्षणमनलसादि, श्राद्धकुले द्रव्यप्रमाणादिज्ञानं, अनेकप्रवेशे पञ्चदश, बहिर्हिण्डनेऽगारी दृष्टान्तः, कुब्जबदरीदृष्टान्तः प्राघूर्णकदाने। १००

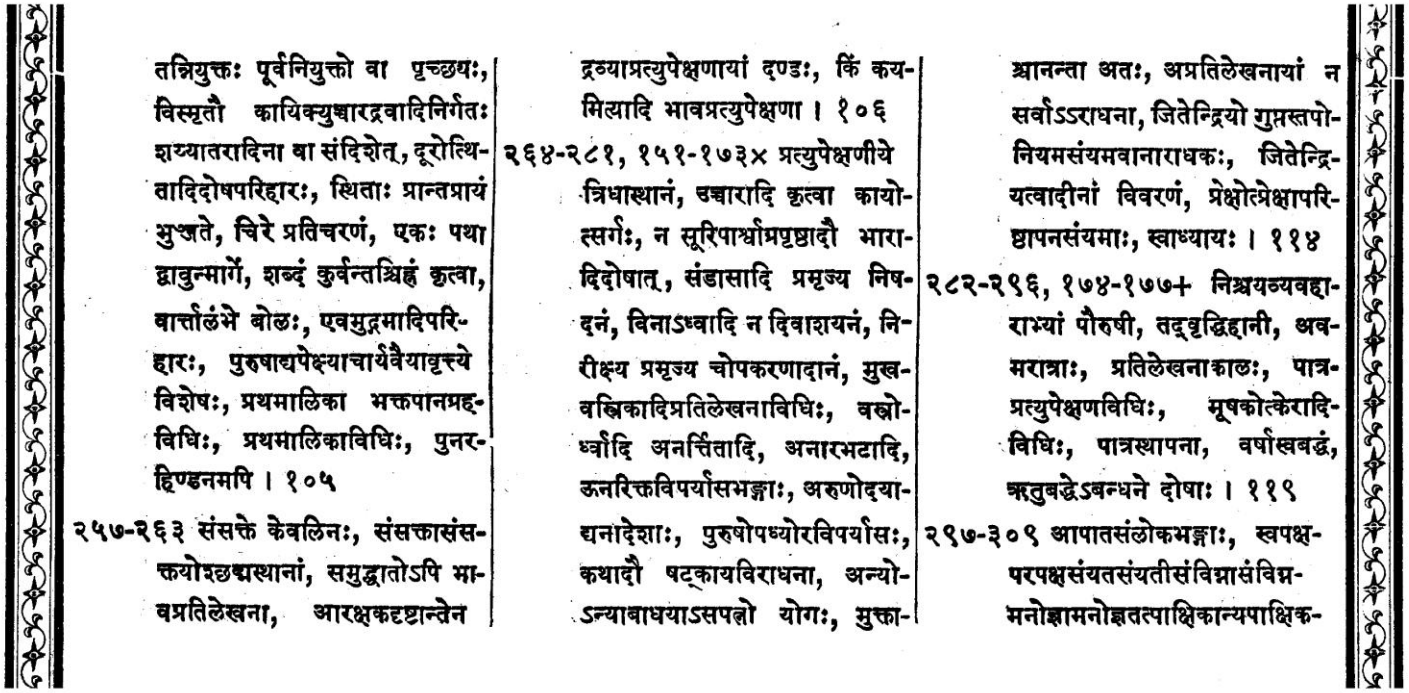
२४१-२५६, १४६-१५०× आपृच्छ्यान्यतदन्यग्रामगमनं, अन्यथा स्तेनादेशादिदोषाः, चैत्याद्यर्थं गते सूरौ

विहार-विधिः भिक्षाविधिश्च. ॥ १५१ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



तन्नियुक्तः पूर्वनियुक्तो वा पृच्छथः, विस्मृतौ कायिक्युच्चारद्रवादिनिर्गतः शय्यातरादिना वा संदिशेत्, दूरोत्थितादिदोषपरिहारः, स्थिताः प्रान्तप्रायं भुञ्जते, चिरे प्रतिचरणं, एकः पथा द्वावुन्मार्गे, शब्दं कुर्वन्तश्चिह्नं कृत्वा, वार्त्तालंभे बोलः, एवमुद्गमादिपरिहारः, पुरुषाद्यपेक्ष्याचार्यवैयावृत्त्ये विशेषः, प्रथमालिका भक्तपानग्रहविधिः, प्रथमालिकाविधिः, पुनरहिण्डनमपि । १०५

२५७-२६३ संसक्ते केवलिनः, संसक्तासंसक्तयोश्छद्मस्थानां, समुद्घातोऽपि भावप्रतिलेखना, आरक्षकदृष्टान्तेन द्रव्याप्रत्युपेक्षणायां दण्डः, किं कयमित्यादि भावप्रत्युपेक्षणा । १०६

२६४-२८१, १५१-१७३× प्रत्युपेक्षणीये त्रिधास्थानं, उच्चारादि कृत्वा कायोत्सर्गः, न सूरिपार्श्वाप्रपृष्ठादौ भारादिदोषात्, संडासादि प्रमृज्य निषदनं, विनाऽध्वादि न दिवाशयनं, निरीक्ष्य प्रमृज्य चोपकरणादानं, मुखवस्त्रिकादिप्रतिलेखनाविधिः, वस्त्रोर्ध्वादि अनर्त्तितादि, अनारभटादि, ऊनरिक्तविपर्यासभङ्गाः, अरुणोदयाद्यनादेशाः, पुरुषोपध्योरविपर्यासः, कथादौ षट्कायविराधना, अन्योऽन्याबाधयाऽसपत्नो योगः, मुक्ताश्चानन्ता अतः, अप्रतिलेखनायां न सर्वाऽऽराधना, जितेन्द्रियो गुप्तस्तपोनियमसंयमवानाराधकः, जितेन्द्रियत्वादीनां विवरणं, प्रेक्षोत्प्रेक्षापरिष्ठापनसंयमाः, स्वाध्यायः । ११४

२८२-२९६, १७४-१७७+ निश्चयव्यवहाराभ्यां पौरुषी, तद्वृद्धिहानी, अवमरात्राः, प्रतिलेखनाकालः, पात्रप्रत्युपेक्षणविधिः, मूषकोत्केरादिविधिः, पात्रस्थापना, वर्षास्वबद्धं, ऋतुबद्धेऽबन्धने दोषाः । ११९

२९७-३०९ आपातसंलोकभङ्गाः, स्वपक्षपरपक्षसंयतसंयतीसंविग्नासंविग्नमनोज्ञामनोज्ञतत्पाक्षिकान्यपाक्षिक-

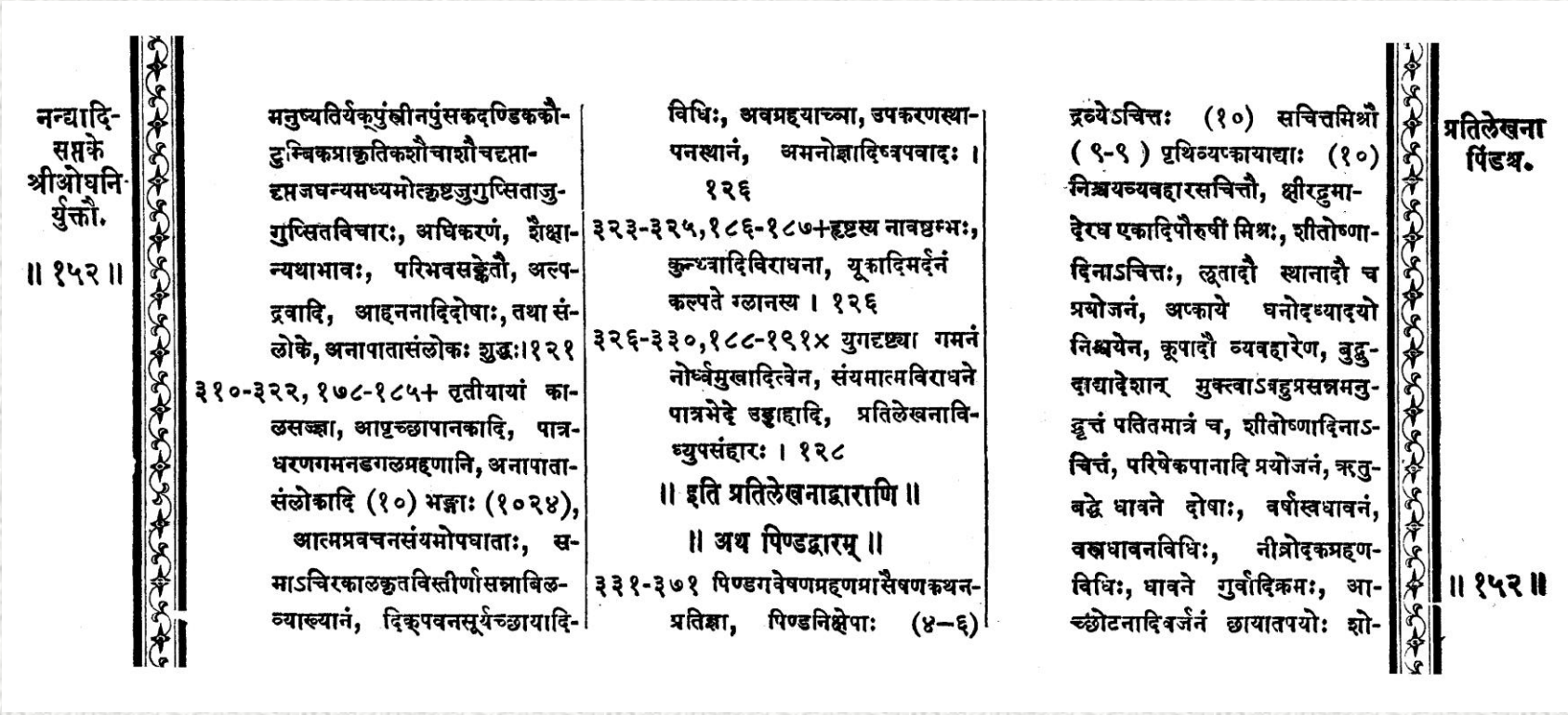
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-सप्तके श्रीओघनिर्युक्तौ. ॥ १५२ ॥

मनुष्यतिर्यक्पुंस्त्रीनपुंसकदण्डिककौटुम्बिकप्राकृतिकशौचाशौचदृष्टादृष्टजघन्यमध्यमोत्कृष्टजुगुप्सिताजुगुप्सितविचारः, अधिकरणं, शैक्षान्यथाभावः, परिभवसङ्क्लेतौ, अल्पद्रवादि, आहननादिदोषाः, तथा संलोके, अनापातासंलोकः शुद्धः।१२१

३१०-३२२, १७८-१८५+ तृतीयायां कालसञ्ज्ञा, आपृच्छापानकादि, पात्रधरणगमनडगलग्रहणानि, अनापातासंलोकादि (१०) भङ्गाः (१०२४), आत्मप्रवचनसंयमोपघाताः, समाऽचिरकालकृतविस्तीर्णासन्नाविलव्याख्यानं, दिक्पवनसूर्यच्छायादिविधिः, अवग्रहयाच्ञा, उपकरणस्थापनस्थानं, अमनोज्ञादिष्वपवादः । १२६

३२३-३२५,१८६-१८७+दृष्टस्य नावष्टम्भः, कुन्थ्वादिविराधना, यूकादिमर्दनं कल्पते ग्लानस्य । १२६

३२६-३३०,१८८-१९१× युगदृष्ट्या गमनं नोर्ध्वमुखादित्वेन, संयमात्मविराधने पात्रभेदे उड्डाहादि, प्रतिलेखनाविध्युपसंहारः । १२८

॥ इति प्रतिलेखनाद्वाराणि ॥

॥ अथ पिण्डद्वारम् ॥

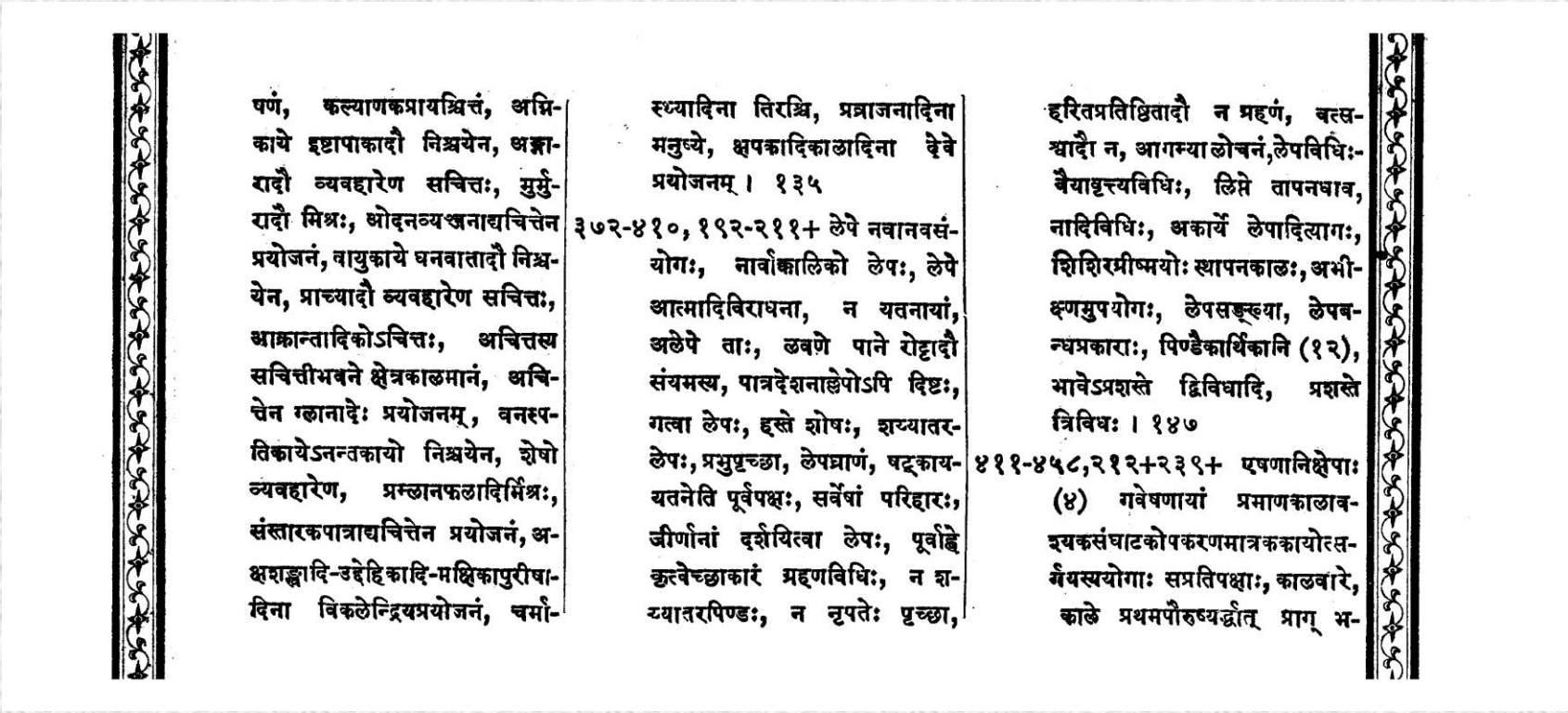
३३१-३७१ पिण्डगवेषणग्रहणग्रासैषणकथनप्रतिज्ञा, पिण्डनिक्षेपाः (४–६) द्रव्येऽचित्तः (१०) सचित्तमिश्रौ (९-९) पृथिव्यप्कायाद्याः (१०) निश्चयव्यवहारसचित्तौ, क्षीरद्रुमादेरध एकादिपौरुषीं मिश्रः, शीतोष्णादिनाऽचित्तः, लूतादौ स्थानादौ च प्रयोजनं, अप्काये घनोदध्यादयो निश्चयेन, कूपादौ व्यवहारेण, बुद्बुदाद्यादेशान् मुक्त्वाऽबहुप्रसन्नमनुद्वृत्तं पतितमात्रं च, शीतोष्णादिनाऽचित्तं, परिषेकपानादि प्रयोजनं, ऋतुबद्धे धावने दोषाः, वर्षास्वधावनं, वस्त्रधावनविधिः, नीत्रोदकग्रहणविधिः, धावने गुर्वादिक्रमः, आच्छोटनादिवर्जनं छायातपयोः शो-

प्रतिलेखना पिंडश्च. ॥ १५२ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



षणं, कल्याणकप्रायश्चित्तं, अग्निकाये इष्टापाकादौ निश्चयेन, अङ्गारादौ व्यवहारेण सचित्तः, मुर्मुरादौ मिश्रः, ओदनव्यञ्जनाद्यचित्तेन प्रयोजनं, वायुकाये घनवातादौ निश्चयेन, प्राच्यादौ व्यवहारेण सचित्तः, आक्रान्तादिकोऽचित्तः, अचित्तस्य सचित्तीभवने क्षेत्रकालमानं, अचित्तेन ग्लानादेः प्रयोजनम्, वनस्पतिकायेऽनन्तकायो निश्चयेन, शेषो व्यवहारेण, प्रम्लानफलादिर्मिश्रः, संस्तारकपात्राद्यचित्तेन प्रयोजनं, अक्षशङ्खादि-उद्देहिकादि-मक्षिकापुरीषादिना विकलेन्द्रियप्रयोजनं, चर्मास्थ्यादिना तिरश्चि, प्रव्राजनादिना मनुष्ये, क्षपकादिकालादिना देवे प्रयोजनम् । १३५

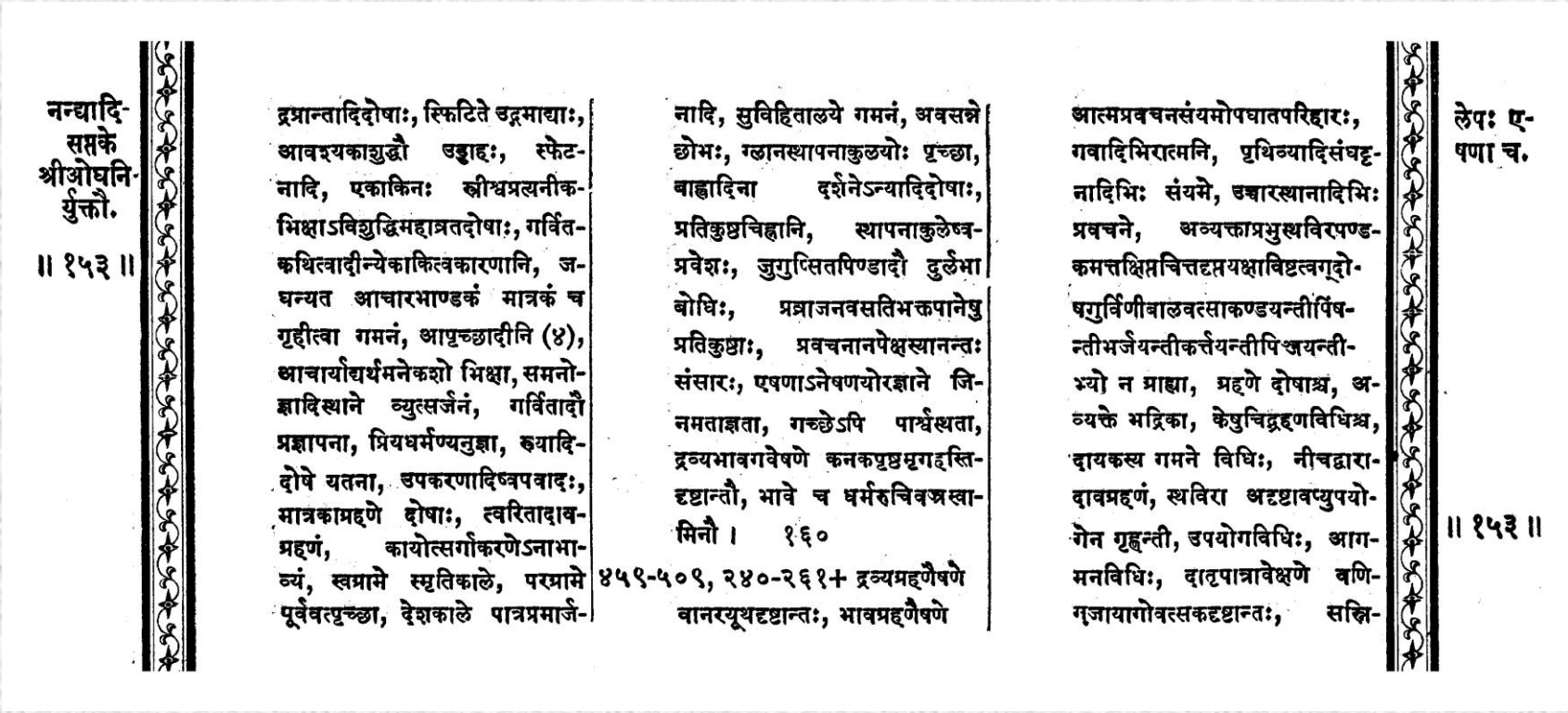
३७२-४१०, १९२-२११+ लेपे नवानवसंयोगः, नार्वाक्कालिको लेपः, लेपे आत्मादिविराधना, न यतनायां, अलेपे ताः, लवणे पाने रोट्टादौ संयमस्य, पात्रदेशनालेपोऽपि दिष्टः, गत्वा लेपः, हस्ते शोषः, शय्यातरलेपः, प्रभुपृच्छा, लेपघ्राणं, षट्कायतनेति पूर्वपक्षः, सर्वेषां परिहारः, जीर्णानां दर्शयित्वा लेपः, पूर्वाह्णे कृत्वेच्छाकारं ग्रहणविधिः, न शय्यातरपिण्डः, न नृपतेः पृच्छा, हरितप्रतिष्ठितादौ न ग्रहणं, वत्सस्यादौ न, आगम्यालोचनं, लेपविधिः-वैयावृत्त्यविधिः, लिप्ते तापनधाव, नादिविधिः, अकार्ये लेपादित्यागः, शिशिरग्रीष्मयोः स्थापनकालः, अभीक्ष्णमुपयोगः, लेपसङ्ख्या, लेपबन्धप्रकाराः, पिण्डैकार्थिकानि (१२), भावेऽप्रशस्ते द्विविधादि, प्रशस्ते त्रिविधः । १४७

४११-४५८, २१२+२३९+ एषणानिक्षेपाः (४) गवेषणायां प्रमाणकालावश्यकसंघाटकोपकरणमात्रककायोत्सर्गस्थयोगाः सप्रतिपक्षाः, कालद्वारे, काले प्रथमपौरुष्यर्द्धात् प्राग् भ-

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-सप्तके श्रीओघनिर्युक्तौ. ॥ १५३ ॥

द्रघ्नान्तादिदोषाः, स्फिटिते उद्गमाद्याः, आवश्यकाशुद्धौ उड्डाहः, स्फेटनादि, एकाकिनः स्त्रीश्वप्रत्यनीकभिक्षाऽविशुद्धिमहाव्रतदोषाः, गर्वितकथित्वादीन्येकाकित्वकारणानि, जघन्यत आचारभाण्डकं मात्रकं च गृहीत्वा गमनं, आपृच्छादीनि (४), आचार्यार्थमनेकशो भिक्षा, समनोज्ञादिस्थाने व्युत्सर्जनं, गर्वितादौ प्रज्ञापना, प्रियधर्मण्यनुज्ञा, रुग्णादिदोषे यतना, उपकरणादिष्वपवादः, मात्रकाग्रहणे दोषाः, त्वरितादावग्रहणं, कायोत्सर्गाकरणेऽनाभाव्यं, स्वग्रामे स्मृतिकाले, परग्रामे पूर्ववत्पृच्छा, देशकाले पात्रप्रमार्जनादि, सुविहितालये गमनं, अवसन्ने छोभः, ग्लानस्थापनाकुलयोः पृच्छा, बाह्यादिना दर्शनेऽन्यादिदोषाः, प्रतिकुष्ठचिह्नानि, स्थापनाकुलेष्वप्रवेशः, जुगुप्सितपिण्डादौ दुर्लभाबोधिः, प्रव्राजनवसतिभक्तपानेषु प्रतिकुष्टाः, प्रवचनानपेक्षस्यानन्तः संसारः, एषणाऽनेषणयोरज्ञाने जिनमताज्ञता, गच्छेऽपि पार्श्वस्थता, द्रव्यभावगवेषणे कनकपृष्ठमृगहस्तिदृष्टान्तौ, भावे च धर्मरुचिवज्रस्वामिनौ । १६०

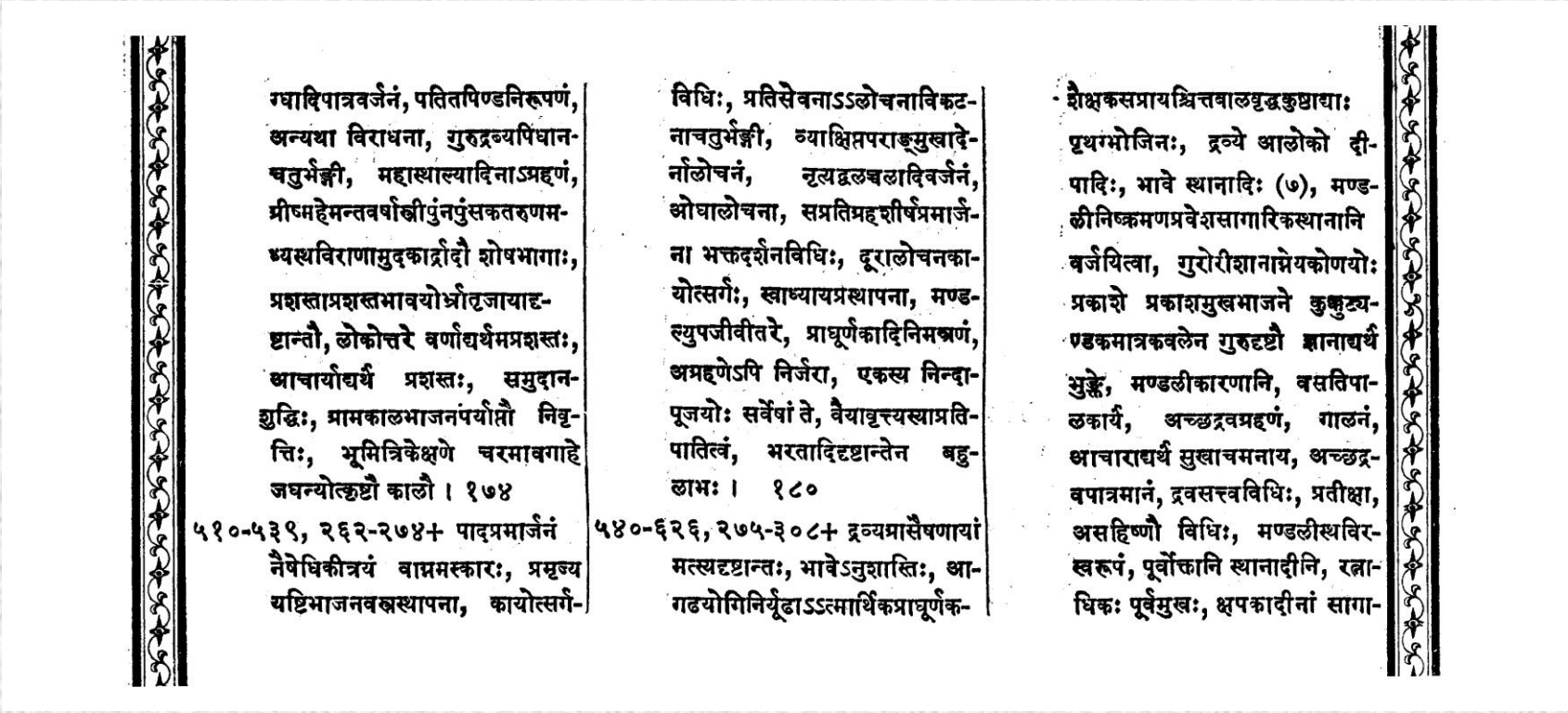
४५९-५०९, २४०-२६१+ द्रव्यग्रहणैषणे वानरयूथदृष्टान्तः, भावग्रहणैषणे आत्मप्रवचनसंयमोपघातपरिहारः, गवादिभिरात्मनि, पृथिव्यादिसंघट्टनादिभिः संयमे, उच्चारस्थानादिभिः प्रवचने, अव्यक्ताप्रभुस्थविरपण्डकमत्तक्षिप्तचित्तदृप्तयक्षाविष्टत्वगृद्धोषगुर्विणीबालवत्साकण्डयन्तीपिंषन्तीभर्जयन्तीकर्त्तयन्तीपिञ्जयन्तीभ्यो न ग्राह्या, ग्रहणे दोषाश्च, अव्यक्ते भद्रिका, केषुचिद्ग्रहणविधिश्च, दायकस्य गमने विधिः, नीचद्वारादावग्रहणं, स्थविरा अदृष्टावप्युपयोगेन गृह्णन्ती, उपयोगविधिः, आगमनविधिः, दातृपात्रावेक्षणे वणिग्जायागोवत्सकदृष्टान्तः, सन्नि-

लेपः एषणा च. ॥ १५३ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



ग्घादिपात्रवर्जनं, पतितपिण्डनिरूपणं, अन्यथा विराधना, गुरुद्रव्यपिधानचतुर्भङ्गी, महास्थाल्यादिनाऽग्रहणं, ग्रीष्महेमन्तवर्षाखीपुंनपुंसकतरुणमध्यस्थविराणामुदकार्द्रादौ शोषभागाः, प्रशस्ताप्रशस्तभावयोर्भ्रातृजायादृष्टान्तौ, लोकोत्तरे वर्णाद्यर्थमप्रशस्तः, आचार्याद्यर्थं प्रशस्तः, समुदानशुद्धिः, ग्रामकालभाजनपर्यायौ निवृत्तिः, भूमित्रिकेक्षणे चरमावगाहे जघन्योत्कृष्टौ कालौ । १७४

५१०-५३९, २६२-२७४+ पादप्रमार्जनं नैषेधिकीत्रयं वाग्नमस्कारः, प्रमृज्य यष्टिभाजनवस्त्रस्थापना, कायोत्सर्गविधिः, प्रतिसेवनाऽऽलोचनाविकटनाचतुर्भङ्गी, व्याक्षिप्तपराङ्मुखादेर्नालोचनं, नृत्यद्वलचलादिवर्जनं, ओघालोचना, सप्रतिग्रहशीर्षप्रमार्जना भक्तदर्शनविधिः, दूरालोचनकायोत्सर्गः, स्वाध्यायप्रस्थापना, मण्डल्युपजीवीतरे, प्राघूर्णकादिनिमन्त्रणं, अग्रहणेऽपि निर्जरा, एकस्य निन्दापूजयोः सर्वेषां ते, वैयावृत्त्यस्याप्रतिपातित्वं, भरतादिदृष्टान्तेन बहुलाभः । १८०

५४०-६२६, २७५-३०८+ द्रव्यग्रासैषणायां मत्स्यदृष्टान्तः, भावेऽनुशास्तिः, आगढयोगिनिर्यूढाऽऽत्मार्थिकप्राघूर्णकशैक्षकसप्रायश्चित्तबालवृद्धकुष्ठाद्याः पृथग्भोजिनः, द्रव्ये आलोको दीपादिः, भावे स्थानादिः (७), मण्डलीनिष्क्रमणप्रवेशसागारिकस्थानानि वर्जयित्वा, गुरोरीशानाग्नेयकोणयोः प्रकाशे प्रकाशमुखभाजने कुक्कुट्यण्डकमात्रकवलेन गुरुदृष्टौ ज्ञानाद्यर्थं भुङ्क्ते, मण्डलीकारणानि, वसतिपालकार्यं, अच्छद्रवग्रहणं, गालनं, आचाराद्यर्थं सुखाचमनाय, अच्छद्रवपात्रमानं, द्रवसत्त्वविधिः, प्रतीक्षा, असहिष्णौ विधिः, मण्डलीस्थविरस्वरूपं, पूर्वोक्तानि स्थानादीनि, रत्नाधिकः पूर्वमुखः, क्षपकादीनां सागा-

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके श्रीओघनिर्युक्तौ. ॥ १५४ ॥

रिकरक्षा, मल्लकग्रहणभोजनविधिः, यथाकृतानि पूर्वं, स्निग्धमधुराणि, कटकप्रतरच्छेदौ, सिंहखादितं, धूमाङ्गारवर्जनं, सुरसुरादिवर्जनं, भोजनं, सारासारता, स्तैन्यनिर्जरे, ससारोपवेशनोत्थाने, पात्रकभ्रमणविधिः, धूमाङ्गारस्वरूपं, यात्रामात्रार्थमाहारः, हिताद्याहाराः अरोगिणः, वेदनादीन्याहारकारणानि, आतङ्कादीन्यनाहारकारणानि, आहारस्यापवादता, पात्रसंलेखनविधिः, उद्धृतभोजनविधिः, परिष्ठापनविधिः, जाताजाते, एकान्तानापातादौ एकपुञ्जेन, लोभे पुञ्जद्वयेन, विद्याम- ६२७-६३२

आद्यभियोगे, छाराक्रमेण परिष्ठापनं, योगविद्यामन्त्रेषु दृष्टान्ताः, आचार्यार्थमधिकग्रहणं, तरुणाद्याचार्यो मण्डलीभोजी, सूत्रार्थस्थिरीकरणादि, द्रव्याद्यैराचार्ययोग्यं, ग्लानार्थं बहुभिर्याचनं, अजातायां पुञ्जत्रयं, पुञ्जकरणकारणं, अनापातादिस्थण्डिलचतुष्कं, अशक्तस्य साह्यादौ, तत्र न्यायश्च। १८९ इतिपिण्डः चरमपौरुष्यां स्वाध्यायः, भक्ताभक्तार्थिनो मुखानन्तकसकायगुर्वनशनग्लानशैक्षोपधिप्रतिलेखना, अभक्तार्थिनश्चरमः पट्टः परस्य पट्टकमात्रकादि, पुनः स्वाध्यायादि। १९९

६३३-६३५ उच्चारादि (२४) काल (३)-भूमिप्रतिलेखना।
६३६-६३८ निर्व्याघाते सर्वे, श्राद्धादिकथाव्याघाते गुरुं विना, सूत्रार्थस्मरणाय कायोत्सर्गं कुर्वते, बालादिरुपविष्टः।२००
६३९-६६६ त्रिस्तुत्यनन्तरं कालग्रहणं, घङ्घशालायां कथायां वा व्याघातः, तृतीयाय निवेदनं, कालग्रहणविधिः, तद्व्याघाताः, गण्डकोपमाः, कालसन्ध्ययोः समता, कालग्राहिगुणाः, शङ्कायां विधिः, स्वाध्याये मरुकदृष्टान्तः, स्वगणे त्रयाणां शङ्किते घातः, श्रादोषिके समकं स्वाध्यायः, कनकतारकोल्का व्याघातः, वृषभादीनां शयनयामाः, ऋतौ चतुर्षु चतस्रो दिशः,

मंडली-संघ्या-विधिः. ॥ १५४ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

अदृष्टेऽपि तारके प्राभातिकः, स्थितेनापि कालग्रहणं, कालग्रहणदिक् जागरणशयनविधेरतिदेशः। २०७

॥ इति कालग्रहणविधिः ॥

॥ अथोपधिनिरूपणम् ॥

६६७ उपध्येकार्थिकानि (८) २०७

६६८ औधिकौपग्रहिकौ, गणनातः प्रमाणतश्च। २०८

६६९-६७२ स्थविरकल्पिकानां चतुर्दश, जिनकल्पिकानां द्वादश, आर्याणां पञ्चविंशतिः, ऊर्ध्वमौपग्रहिकः।

६७३ जिनकल्पिकानां जघन्यमध्यमोत्कृष्ट उपधिः।

६७४ स्थविरकल्पिकानां मध्यमः। (जघन्योत्कृष्टावपि)

६७५-६७९, ३१३-३२०+ आर्यिकाणां पञ्चविंशतिरुपकरणानि, तत्स्वरूपं, उत्कृष्टः ८ मध्यमः १३ जघन्यः ४

६८० जिनकल्पिनामेकं पात्रं, स्थविराणां मात्रकद्वितीयम्। २१०

६८१-६८४ पात्रकप्रमाणम्।

३२१+ वैयावृत्त्यकरस्य २१०

६८५ नन्दीभाजनं, तत्प्रयोजनं च।

६८६-६९१ पात्रलक्षणापलक्षणानि। २११

६९२-६९३ पात्रप्रयोजनं षट्कायरक्षादि ग्लानादि च।

६९४-६९७ पात्रबन्धकस्थापनकगोच्छकप्रत्युपेक्षणिकानां प्रमाणानि प्रयोजनं च। २१२

६९८-७०३ पटलानां स्वरूपं, कालविशेषेण संख्या, प्रमाणं प्रयोजनं च। २१३

७०४-७०५ रजस्त्राणप्रमाणप्रयोजने।

७०६-७०७ कल्पानां प्रमाणप्रयोजने।२१३

७०८-७११, ३२२+ रजोहरणस्य स्वरूपं प्रमाणं किंमयत्वं प्रयोजनं च। २१४

७१२-७१३ मुखवस्त्रिकायाः प्रमाणं प्रयोजनं च। २१४

७१४-७२१ मात्रकस्य द्विधा प्रमाणं प्रयोजनं, अनुज्ञाहेतुः, तत्र ग्रहणे विधिः। २१६

७२२-७२३ चोलपट्टकस्य प्रमाणं प्रयोजनं च।

७२४-७२५ संस्तारकोत्तरपट्टयोः प्रमाणं प्रयोजनं च। २१७

७२६ रजोहरणाभ्यन्तरनिषद्याप्रमाणम्।

७२७ वर्षासु वर्षाकल्पादिर्द्विगुणः।

७२८ यथाकृते न सन्धनाच्छेदौ।

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-सप्तके श्रीओघनिर्युक्तौ. ॥ १५५ ॥

७२९-७३० चर्मचर्मकोशकादीनि औपग्रहिके गुरोः, प्रत्येकं दण्डयष्ट्यौ। २१८
७३१-७४१ यष्ट्यादिः (५), यष्ट्या लक्षणं, तत्फलं, प्रयोजनं च। २१९
७४२-७४७ उपकारकमुपकरणं तद्धारणरीतिः।
७४८-७५४ प्रयोगेनानवद्यस्य न बन्धः, ज्ञान्यज्ञानिप्रमत्तानां हिंसासु विशेषः। २२०
७५५ आत्मैव हिंसाहिंसे, अप्रमत्तोऽहिंसकः, पर इतरः। २२१
७५६-७५९ परिणामविशेषात् हिंसाविशेषः, अन्यभावा मनोऽमनोरक्तादेः।
७६०-७६३ यतनायां विराधना निर्जराफला, निश्चये परिणामः प्रमाणं, बाह्यकरणालसाश्चरणघातकाः, विधिमानायतनम्। २२२
॥ इत्युपधिनिरूपम् ॥

॥ अथानायतनवर्जनम् ॥
७६४-७८२ अनायतनस्यैकार्थिकानि (४) स्वरूपं, ततो हानिः, भावुकाभावुकस्वरूपम्। २२४
७८३-७८६ आयतने जिनगृहादि द्रव्ये, भावे ज्ञानादि, साधर्मिकादिस्थानमायतनं, तत्सेवाफलं च। २२४
॥ इत्यनायतनवर्जनम् ॥
॥ अथ प्रतिसेवनाद्वारम् ॥
७८७-७८९ मूले (६) उत्तरे (३) च प्रतिसेवना, तदेकार्थिकानि (८) २२५
॥ इति प्रतिसेवना ॥
॥ अथालोचनाद्वारम् ॥
७९०-७९२ दुःखक्षयार्थं विशुद्धिः, चतुष्कर्णा, भिन्नवर्गेऽष्टकर्णा, सिद्धावसानाऽपि, तदेकार्थिकानि (८)।
॥ इत्यालोचना ॥
॥ अथ विशुद्धिद्वारम् ॥
७९३-८०९ वैद्यदृष्टान्तेन जानतोऽपि गुरुपार्श्वे शुद्धिः, अज्ञानादिना प्रतिसेवा, बालवदालोचना, दुर्लभबोध्यनन्तसंसारित्वहेतुः शल्यं, निःशल्यस्यासन्ना मुक्तिः। २२७
॥ इति विशुद्धिद्वारम् ॥
८१०-८१२ सामाचार्या उपसंहारः फलं मानं च।
॥ इत्योघनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः ॥

उपधिः आयतनं शुद्धिश्च. ॥ १५५ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ अथ दशवैकालिकबृहद्विषयानुक्रमः ॥

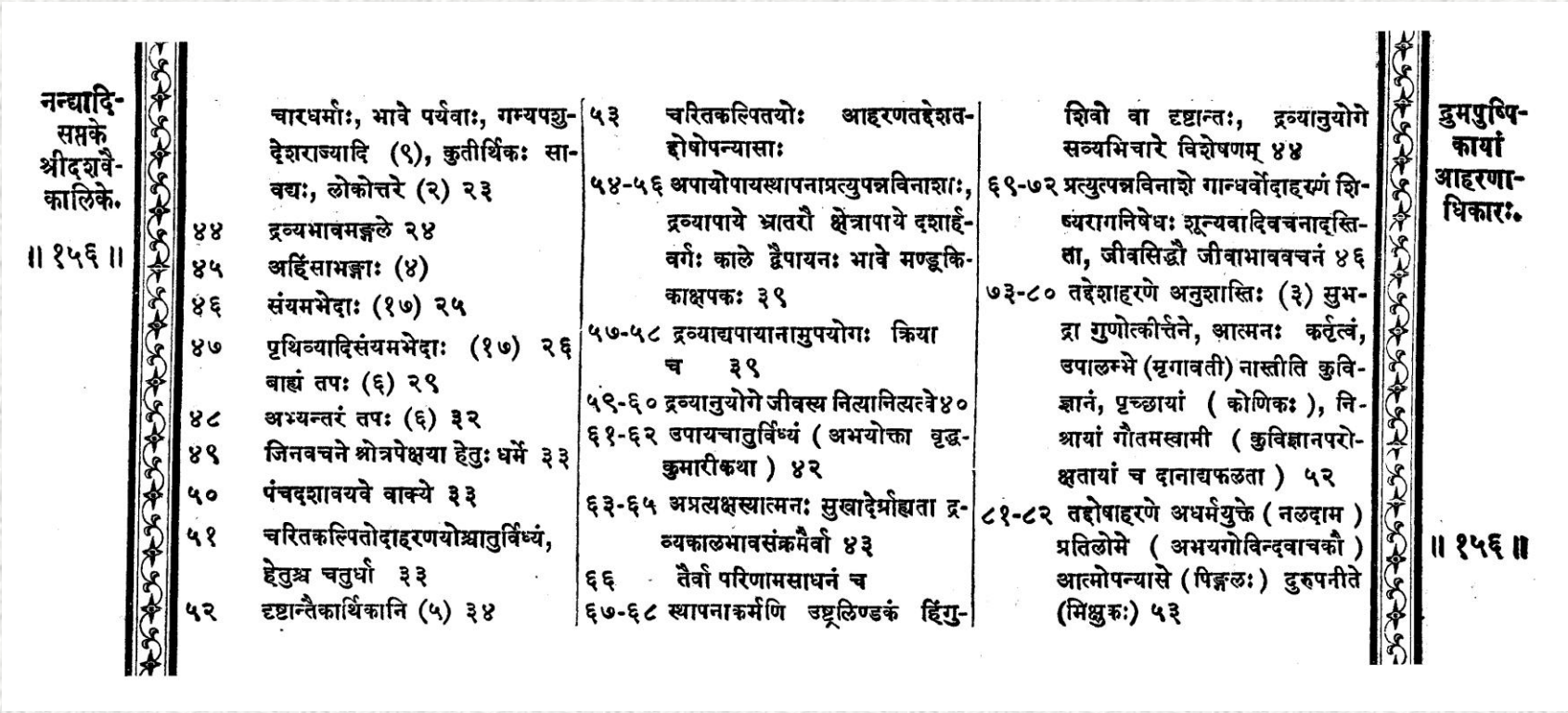
१ मङ्गलोपोद्घातौ सिद्धनमस्कारेण मंगलं, निर्युक्तिप्रतिज्ञा च।
२ मङ्गलत्रिकं मंगलनिक्षेपश्च । २
३ श्रुतज्ञानेऽनुयोगः ३
४ (४) अपृथक्त्वे ४
५ निक्षेपैकार्थौ (४) दीनि (११)
६ कल्पवर्णितगुणस्यानुयोगयोग्यता ६
७ दशकालश्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशनि-क्षेपाः ७
८ एककनिक्षेपाः ७
९ दशकनिक्षेपाः (६)
१० बाल्याद्या दश दशाः ८
११-१२ कालनिक्षेपाः(९) विकाले निर्यूढमिति दशकालिकम् ९
१३ येन यं यदादीनि (५) द्वाराणि १०
१४ जिनप्रतिमादर्शनबुद्धशय्यंभवनम-स्कारः (शय्यंभवकथा) १२
१५ मणकायोद्धृतम्
१६-१८ आत्मकर्मसत्यप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वे-भ्यो गणिपिटकाद्यङ्गाद्योद्धारः १३
१९-२३ दश अध्ययननामानि तदर्थाधिकाराः १५
२४ चूडाद्वयार्थाधिकारः
२५-२६ पिण्डार्थोपसंहारः प्रत्येककथनप्रतिज्ञा च, प्रथमाध्ययने द्वारचतुष्कं, धर्म-प्रशंसाऽधिकारः
२७-३३ ओघेऽध्ययनानि नामाद्याः, भावे अध्ययनाक्षीणायक्षपणाव्याख्या १६
३४-३६ द्रुमपुष्पयोर्निक्षेपाः (४) एकार्थि-कानि (६) च १७
३७ द्रुमपुष्पिकैकार्थिकानि (१४) १९ (रत्नवणिग्दृष्टान्तः)
१* दैवनमनीयधर्मस्वरूपं, उद्देशादीनि, व्याख्यालक्षणं च २०
३८ पृच्छापृच्छ्ययोः कथनम् २१
३९-४३ धर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्येऽस्तिकायप्र-

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-सप्तके श्रीदशवै-कालिके. ॥ १५६ ॥

चारधर्माः, भावे पर्यवाः, गम्यपशु-देशराज्यादि (९), कुतीर्थिकः सा-वद्यः, लोकोत्तरे (२) २३

४४ द्रव्यभावमङ्गले २४

४५ अहिंसाभङ्गाः (४)

४६ संयमभेदाः (१७) २५

४७ पृथिव्यादिसंयमभेदाः (१७) २६

बाह्यं तपः (६) २९

४८ अभ्यन्तरं तपः (६) ३२

४९ जिनवचने श्रोत्रपेक्षया हेतुः धर्मे ३३

५० पंचदशावयवे वाक्ये ३३

५१ चरितकल्पितोदाहरणयोश्चातुर्विध्यं, हेतुश्च चतुर्धा ३३

५२ दृष्टान्तैकार्थिकानि (५) ३४

५३ चरितकल्पितयोः आहरणतद्देशत-द्दोषोपन्यासाः

५४-५६ अपायोपायस्थापनाप्रत्युपन्नविनाशाः, द्रव्यापाये भ्रातरौ क्षेत्रापाये दशार्ह-वर्गः काले द्वैपायनः भावे मण्डूकि-काक्षपकः ३९

५७-५८ द्रव्याद्यपायानामुपयोगः क्रिया च ३९

५९-६० द्रव्यानुयोगे जीवस्य नित्यानित्यत्वे ४०

६१-६२ उपायचातुर्विध्यं (अभयोक्ता वृद्ध-कुमारीकथा) ४२

६३-६५ अप्रत्यक्षस्यात्मनः सुखादेर्ग्राह्यता द्र-व्यकालभावसंक्रमैर्वा ४३

६६ तैर्वा परिणामसाधनं च

६७-६८ स्थापनाकर्मणि उष्ट्रलिण्डकं हिंगु-शिवो वा दृष्टान्तः, द्रव्यानुयोगे सव्यभिचारे विशेषणम् ४४

६९-७२ प्रत्युत्पन्नविनाशे गान्धर्वोदाहरणं शि-ष्यरागनिषेधः शून्यवादिवचनादस्ति-ता, जीवसिद्धौ जीवाभाववचनं ४६

७३-८० तद्देशाहरणे अनुशास्तिः (३) सुभ-द्रा गुणोत्कीर्त्तने, आत्मनः कर्तृत्वं, उपालम्भे (मृगावती) नास्तीति कुवि-ज्ञानं, पृच्छायां (कोणिकः), नि-श्रायां गौतमस्वामी (कुविज्ञानपरो-क्षतायां च दानाद्यफलता) ५२

८१-८२ तद्दोषाहरणे अधर्मयुक्ते (नलदाम) प्रतिलोमे (अभयगोविन्दवाचकौ) आत्मोपन्यासे (पिङ्गलः) दुरुपनीते (भिक्षुकः) ५३

द्रुमपुष्पिकायां आहरणाधिकारः. ॥ १५६ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

८४-८६ उपन्यासाहरणे तद्वस्तुनि (अपूर्व-साधकः) तदन्यवस्तुनि अन्यत्वे एकत्वे प्रतिनिभे (लक्षधारणं) हेतौ यवक्रयः) ५७

८७-८९ हेतौ यापके (उष्ट्रलिंडानि) स्थापके (लोकमध्यं) व्यंसके (शकटतित्तिरिः) लूषके (मोदकः) ६२

९०-९२ प्रतिज्ञा हेतुर्दृष्टान्त उपनयो निगमनं च धर्मे ६३

९३-९६ अत्रैव प्रतिज्ञातद्विशुद्धी हेतुतद्विशुद्धी

१-४+ दृष्टान्ततद्विशुद्धी ६४

२* भ्रमरवद् गोचरी ६४

९७-९८ अमर आहरणदेशे, अनियतवृत्तिता ६५

९९-११७ अन्नग्रहणात् मुनेरारम्भः, वृणादिभ्यः वर्षादिवत्, आदित्यात् वृष्टिः, किं दुर्भिक्षनिर्घातौ? ऋतौ च, न भ्रमरेभ्यो द्रुमपुष्पनं, भ्रमरयुक्तो द्रुमः न, कर्मणः, अभ्रमरा अपि द्रुमा प्रकृत्या ऋतौ पुष्पनं, न श्रमणार्थं पाकः, कान्तारादौ रात्रौ च पाकात्, श्रमणाहेतुतः, अश्रमणे पाकः प्रकृत्या, तत्र श्रमणानां एषणा नवकोट्यादिशुद्धस्य सिद्धिरुपसंहारश्च ६८

३* भृंगवत् एषणारताः श्रमणाः

११८-१२३ द्रव्ये विहङ्गमः कर्म, भावे गुणसंज्ञावन्तौ गुणसिद्ध्या लोको विहङ्गमः, भावगत्या अस्तिकायाः कर्मगत्या सर्वे (अनाकाशाः) विहायोगतिः (वक्राः) चलनगतिः (संसारिणः) संज्ञायां पक्षिणः ७१

४-५* १२४-१२५ एषणात्रिकं अदत्तादानत्यागश्च, उपसंहारशुद्धिः अनुपघातः यथाकृतग्रहणं अनिश्रितादानं नानापिण्डाः साधवः ७२

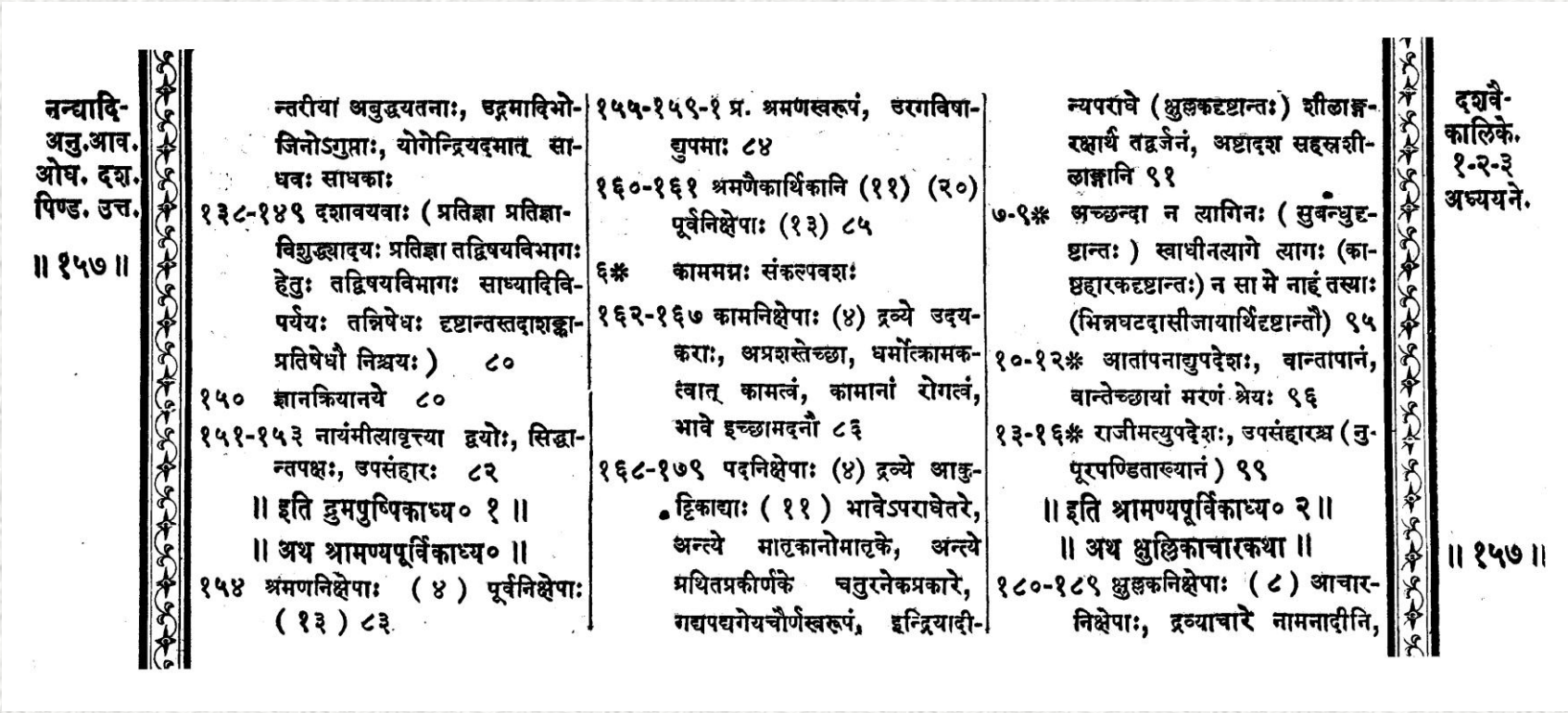
१२६-१३७ असंयताः श्रमणाः न, देशोपमत्वात् ७४ द्रुमवत् नागराः, भ्रमरवत् मुनयः, स्वभावसिद्धमन्वेषयन्ति, भ्रमरवत् अवधजीविनः, ईर्यादिषु यताः, उपनयनोपसंहारविशुद्धी, दयादिगुणैः साधितत्वात् धर्मे उत्कृष्टं मङ्गलं, तीर्था-

२७ गंथा०

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-अनु.आव.ओघ.दश.पिण्ड.उत्त. ॥ १५७ ॥

न्तरीया अबुद्धयतनाः, उद्गमादिभो-जिनोऽगुप्ताः, योगेन्द्रियदमात् सा-धवः साधकाः

१३८-१४९ दशावयवाः (प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा-विशुद्ध्यादयः प्रतिज्ञा तद्विषयविभागः हेतुः तद्विषयविभागः साध्यादिवि-पर्ययः तन्निषेधः दृष्टान्तस्तदाशङ्का-प्रतिषेधौ निश्चयः) ८०

१५० ज्ञानक्रियानये ८०

१५१-१५३ नायंमीत्यावृत्त्या द्वयोः, सिद्धा-न्तपक्षः, उपसंहारः ८२

॥ इति द्रुमपुष्पिकाध्य० १ ॥

॥ अथ श्रामण्यपूर्विकाध्य० ॥

१५४ श्रमणनिक्षेपाः (४) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८३

१५५-१५९-१ प्र. श्रमणस्वरूपं, उरगविषा-द्युपमाः ८४

१६०-१६१ श्रमणैकार्थिकानि (११) (२०) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८५

६* काममग्नः संकल्पवशः

१६२-१६७ कामनिक्षेपाः (४) द्रव्ये उदय-कराः, अप्रशस्तेच्छा, धर्मोत्कामक-त्वात् कामत्वं, कामानां रोगत्वं, भावे इच्छामदनौ ८६

१६८-१७९ पदनिक्षेपाः (४) द्रव्ये आकु-ट्टिकाद्याः (११) भावेऽपराधेतरे, अन्त्ये मातृकानोमातृके, अन्त्ये ग्रथितप्रकीर्णके चतुरनेकप्रकारे, गद्यपद्यगेयचौर्णस्वरूपं, इन्द्रियादी-न्यपराधे (क्षुल्लकदृष्टान्तः) शीलाङ्ग-रक्षार्थं तद्वर्जनं, अष्टादश सहस्रशी-लाङ्गानि ९१

७-९* अच्छन्दा न त्यागिनः (सुबन्धुद-ष्टान्तः) स्वाधीनत्यागे त्यागः (का-ष्ठहारकदृष्टान्तः) न सा मे नाहं तस्याः (भिन्नघटदासीजायार्थिदृष्टान्तौ) ९५

१०-१२* आतापनाद्युपदेशः, वान्तापानं, वान्तेच्छायां मरणं श्रेयः ९६

१३-१६* राजीमत्युपदेशः, उपसंहारश्च (नु-पूरपण्डिताख्यानं) ९९

॥ इति श्रामण्यपूर्विकाध्य० २ ॥

॥ अथ क्षुल्लिकाचारकथा ॥

१८०-१८९ क्षुल्लकनिक्षेपाः (८) आचार-निक्षेपाः, द्रव्याचारे नामनादीनि,

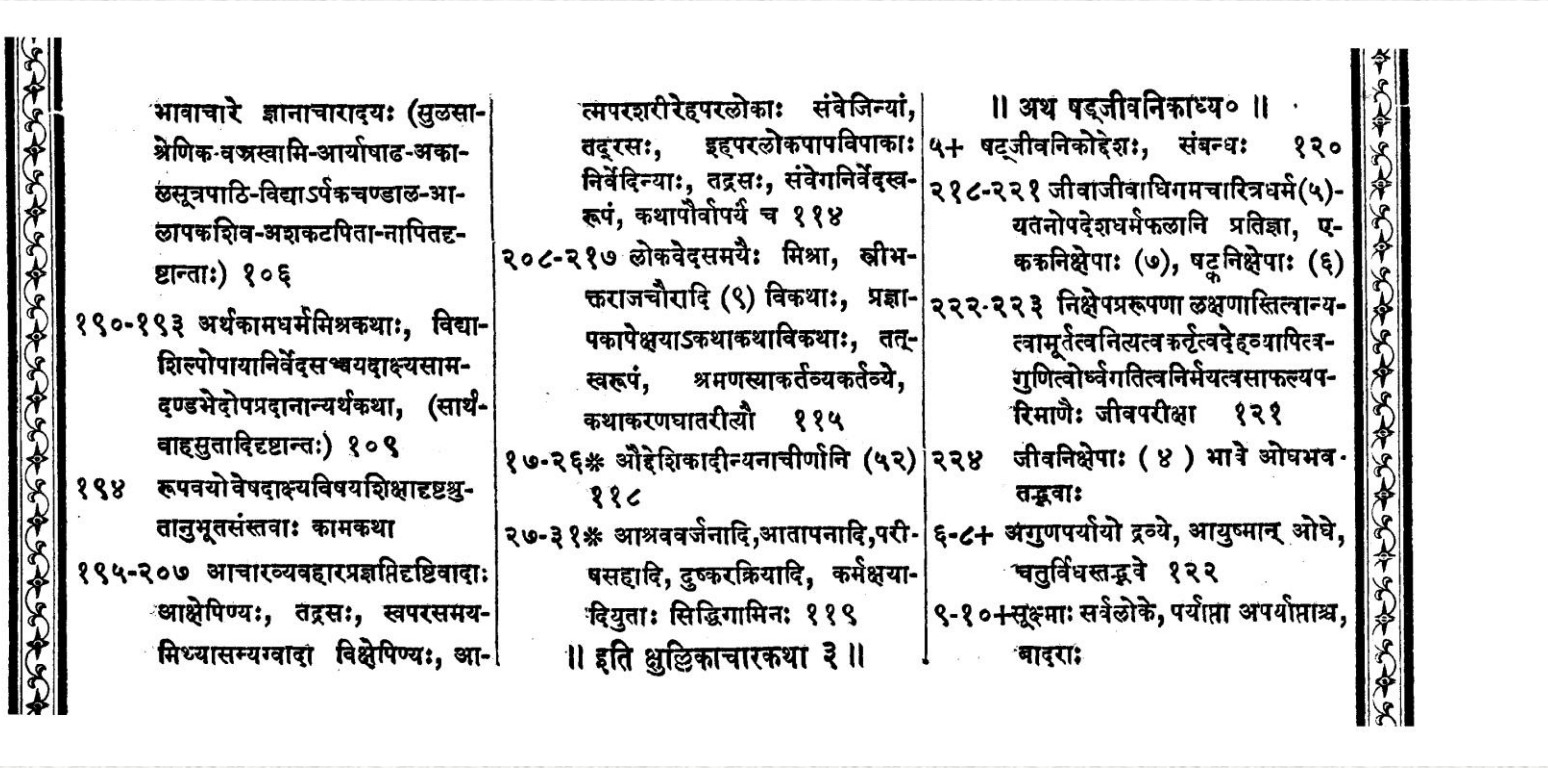
दशवै-कालिके. १-२-३ अध्ययने.

॥ १५७ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



भावाचारे ज्ञानाचारादयः (सुलसा-श्रेणिक-वज्रस्वामि-आर्याषाढ-अकालसूत्रपाठि-विद्याऽर्पकचण्डाल-आलापकशिव-अशकटपिता-नापितदृष्टान्ताः) १०६

१९०-१९३ अर्थकामधर्ममिश्रकथाः, विद्याशिल्पोपायानिर्वेदसञ्चयदाक्ष्यसामदण्डभेदोपप्रदानान्यर्थकथा, (सार्थवाहसुतादिदृष्टान्तः) १०९

१९४ रूपवयोवेषदाक्ष्यविषयशिक्षादृष्टश्रुतानुभूतसंस्तवाः कामकथा

१९५-२०७ आचाराव्यवहारप्रज्ञप्तिदृष्टिवादाः आक्षेपिण्यः, तद्रसः, स्वपरसमयमिथ्यासम्यग्वादा विक्षेपिण्यः, आत्मपरशरीरेहपरलोकाः संवेजिन्यां, तद्रसः, इहपरलोकपापविपाकाः निर्वेदिन्याः, तद्रसः, संवेगनिर्वेदस्वरूपं, कथापौर्वापर्यं च ११४

२०८-२१७ लोकवेदसमयैः मिश्रा, स्त्रीभक्तराजचौरादि (९) विकथाः, प्रज्ञापकापेक्षयाऽकथाकथाविकथाः, तत्स्वरूपं, श्रमणस्याकर्तव्यकर्तव्ये, कथाकरणघातरीत्यौ ११५

१७-२६* औद्देशिकादीन्यनाचीर्णानि (५२) ११८

२७-३१* आश्रववर्जनादि,आतापनादि,परीषसहादि, दुष्करक्रियादि, कर्मक्षयादियुताः सिद्धिगामिनः ११९

॥ इति क्षुल्लिकाचारकथा ३ ॥

॥ अथ षड्जीवनिकाध्य० ॥

५+ षट्जीवनिकोद्देशः, संबन्धः १२०

२१८-२२१ जीवाजीवाधिगमचारित्रधर्म(५)-यतनोपदेशधर्मफलानि प्रतिज्ञा, एककनिक्षेपाः (७), षट्कनिक्षेपाः (६)

२२२-२२३ निक्षेपप्ररूपणा लक्षणास्तित्वान्यत्वामूर्तत्वनित्यत्वकर्तृत्वदेहव्यापित्वगुणित्वोर्ध्वगतित्वनिर्मेयत्वसाफल्यपरिमाणैः जीवपरीक्षा १२१

२२४ जीवनिक्षेपाः (४) भावे ओघभवतद्भवाः

६-८+ अगुणपर्यायो द्रव्ये, आयुष्मान् ओघे, चतुर्विधस्तद्भवे १२२

९-१०+ सूक्ष्माः सर्वलोके, पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च, बादराः

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५८ ॥

२२५-२२६, ११-२४+ लक्षणैकार्थिकानि (५) आदानपरिभोगयोगोपयोगकषायलेश्याऽऽनप्राणप्राणेन्द्रियबन्धोदयनिर्जराचित्तचेतनासंज्ञाज्ञानधारणाबुद्धीहामतिवितर्काः लक्षणम् १२६

२५-३८+२२७ शब्दादस्तिता, न शून्यसिद्धिः, जीवाभावे दानाद्यानर्थक्यं, नित्यो जीवः, पृथग्देहात्, अच्छेद्याभेद्यः, सपुरीषः, आसीद् गजः, त्रिविधः संसारः, आदिमत्प्रतिनियताकारान्, ज्ञानादेः ज्ञानसिद्धदर्शनात् आप्तवचनात् जीवसिद्धिः, अन्यत्वामूर्तत्वनित्यत्वानि १२८

३९+४४ नेन्द्रियाण्युपलब्धिमन्ति, अमूर्तनित्यत्वे १३०

४५-४७+कारणाविभागादि, नित्यत्वे कारणाविभागविनाशाभावप्रत्ययाभावाः, विरुद्धाप्रादुर्भावाः १३०

२२८-२२९, ४८-४९+ स्तनाभिलाषोपस्थानादेर्नानित्यः, निर्भयः, उपसंहारः १३२

५०-५७+ कर्तृत्वादीनि द्वाराणि १३४

२३०-२३१ कायनिक्षेपाः (१२) (कापोतीदृष्टान्तः,) निकायकायेन अधिकारः १३५

१ सू. षड्जीवनिकोद्देशपृच्छानिर्देशाः, षड्जीवनिकायस्वरूपं च १३८

२३२-२३३ शस्त्राग्निविषादीनि शस्त्राणि भावकाया विरुद्धा भावे, स्वपरोभयकायमयं द्रव्ये, असंयमो भावे १४०

२३४ मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृता १४०

५८-६०+ विध्वस्ताविध्वस्ते योन्यौ, अन्यस्थापि व्युत्क्रमः मूलजीवकृतं प्रथमपत्रकन्दादिबीजांतं, अध्ययनार्थाः पञ्च, सूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मबादरबादरसूक्ष्मबादरबादरबादराः पुद्गलाः अणुस्कन्धाद्याः, धर्माद्या नोपुद्गलाः १४३

२ षट्कायदण्डनिवृत्तिः

३ प्रथममहावते सूक्ष्मादिवधत्यागः (उपस्थापनायां पटादिदृष्टान्ताः, पठितादौ) सूक्ष्मत्रसस्थावरौ बादरत्रसस्थावरौ च १४६

४ मृषावादत्यागो द्वितीये, सद्भावप्रतिषेधादिचतुर्भङ्गी च १४६

दशवै-कालिके. ३-४ अध्ययने.

॥ १५८ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

५ अदत्तादानविरतिः तृतीये १४७
६ मैथुनविरतिः चतुर्थे १४८
७ परिग्रहविरतिः पञ्चमे १४९
८-९ रात्रिभोजनविरतिः षष्ठे, चतुर्भङ्गी, सर्वव्रते (४७)भङ्गाः, प्रतिपत्तिश्च १५१
१० पृथिवीकायवधत्यागः
११ अप्कायवधत्यागः १५२
१२ अग्निकायवधत्यागः १५३
१३ वायुकायवधत्यागः १५४
१४ वनस्पतिकायवधत्यागः १५५
१५ त्रसकायवधत्यागः
३९-४०* अयतनायाः कटुकं फलं, यतनया गमनादि, पापकर्मबन्धकस्थितिः १५७
४१-५६*१प्र. जीवाजीवज्ञस्य संयमः, ततः पारम्पर्येण क्रमशः सिद्धत्वं, सुगतेर्दुर्लभसुलभत्वे, प्रियतपआदेः पश्चादप्यमरभवनं १५९
५७-५९*२३५ श्रामण्याविराधनोपदेशः उपसंहारश्च १६०
॥ इति षड्जीवनिकाध्य. ४ ॥
॥ अथ पिण्डैषणाध्ययनम् ॥
६१-६२+२३६-२४६ उपक्रमः पिण्डे एषणायां च निक्षेपाः, द्रव्ये गुडौदनादि भावे क्रोधादिकाः, धात्वर्थः पिण्डशब्दार्थः, सचित्तादीनां द्रव्यैषणा, भावे प्रशस्ता ज्ञानादिना अप्रशस्ता क्रोधादिना, भावस्योपकारित्वं द्रव्यैषणायाः, अधिकाराः, कोटिनवकं षट्सुद्गमकोटिः, क्रीतत्रिके विशुद्धिः, विशुद्ध्यविशुद्धिकोट्यौ, नवाष्टदशादिभेदाः १६३
६०-६१* भिक्षाकाले अव्याक्षिप्तेन चरणम्
६२-६७* महीं पश्यन् बीजहरितादि अवपातविज्जलमादि संक्रमं अङ्गारादि वृष्ट्यादि च वर्जयन् १६४
६८-७०* वेश्यासामन्ते अनायतने अचरणम् १६५
७१-७७* श्वाद्यनुल्लंघनं अनुन्नतादि स्थानं द्रुतगमनादिवर्जनं आलोकाद्यध्यानं राजादिरक्ष्यवर्जनं प्रतिकुष्टादिनिषेधः कपाटानुद्घाटनं १६७

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५९ ॥

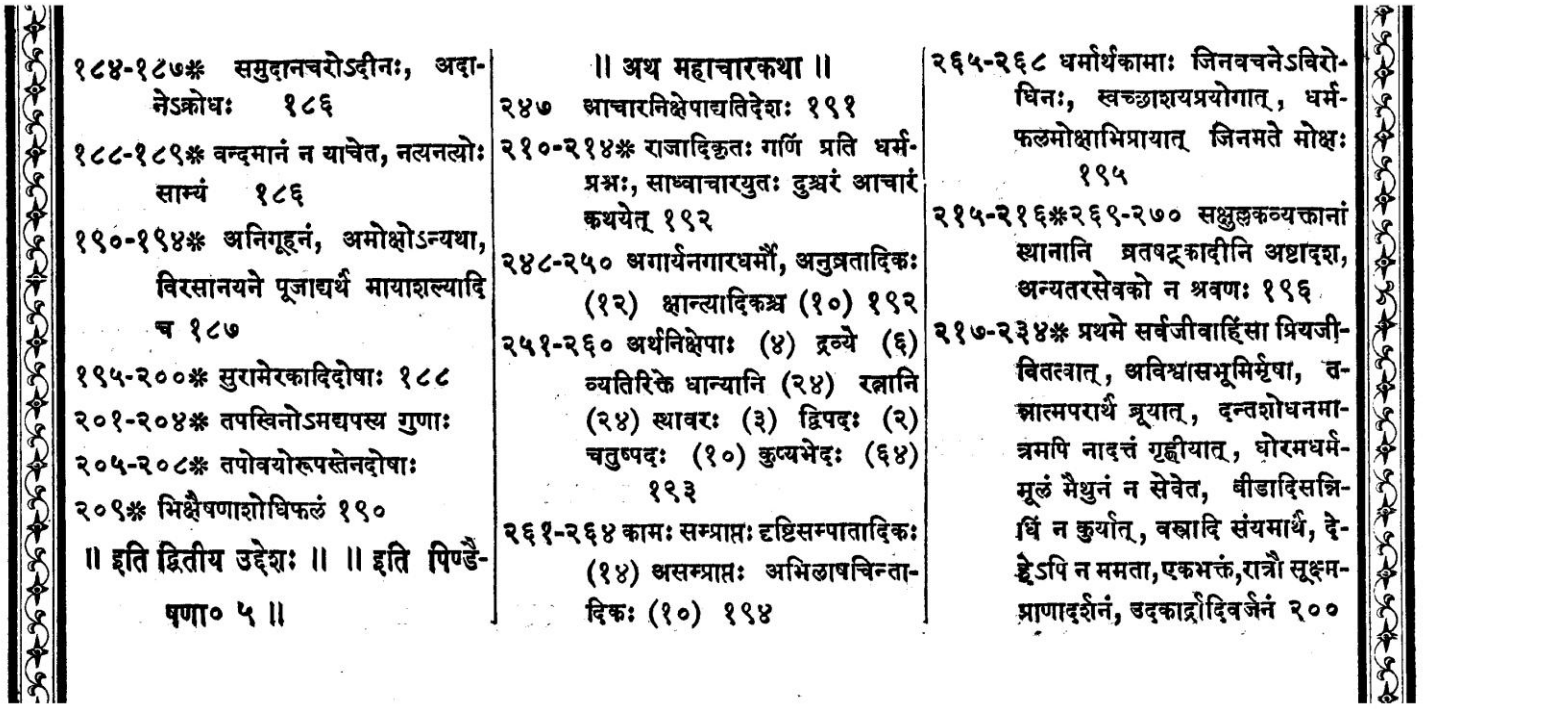
७८* वर्चोमूत्रयोरधारणं
७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुल्लंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसँलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८
८६-८८* अकल्प्यं परिशाटितं प्राणादिसम्मर्दयुतंच वर्जयेत् १६९
८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पुरःकर्मणा, उदकार्द्रादि, असंसृष्टेन वर्जनम् १७०
९६-१०३* अनिसृष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं ददत्या न ग्राह्या भिक्षा १७२
१०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यवनीपकश्रमणार्थकमकल्प्यम् १७४
११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निःशंकितग्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनिक्षिप्तं उत्ष्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५
१२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण वर्जनं १७६
१२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरजआदि, बह्वस्थिकादि, बहूज्झितकं च वर्ज्यं १७७
१३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्याद्यानत्यम्लं गृह्णीयात्, विपरीतं परिष्ठापयेत् १७८
१४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८
१४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो विश्रामणा निमन्त्रणं भोजनं च १८०
१५६-१५९* तिक्तादेरनिन्दा मुधदायिजीविनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परिव्राजकदृष्टान्तः) १८२
॥ इति प्रथम उद्देशः ॥
१६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्गवेषणं
१६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनुल्लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्टम्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४
१७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शालूकादिप्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलकपित्थफलमन्थ्वादिवर्जनम् १८६

दशवै-कालिके. ४-५-६ अध्ययने ॥ १५९ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



१८४-१८७* समुदानचरोऽदीनः, अदानेऽक्रोधः १८६
१८८-१८९* वन्दमानं न याचेत, नत्यनत्योः साम्यं १८६
१९०-१९४* अनिगूहनं, अमोक्षोऽन्यथा, विरसानयने पूजार्थं मायाशल्यादि च १८७
१९५-२००* सुरामेरकादिदोषाः १८८
२०१-२०४* तपस्विनोऽमद्यपस्य गुणाः
२०५-२०८* तपोवयोरूपस्तेनदोषाः
२०९* भिक्षैषणाशोधिफलं १९०
॥ इति द्वितीय उद्देशः ॥ ॥ इति पिण्डैषणा० ५ ॥

॥ अथ महाचारकथा ॥
२४७ आचारनिक्षेपाद्यतिदेशः १९१
२१०-२१४* राजादिकृतः गणिं प्रति धर्मप्रभः, साध्वाचारयुतः दुश्चरं आचारं कथयेत् १९२
२४८-२५० अगार्यनगारधर्मौ, अनुव्रतादिकः (१२) क्षान्त्यादिकश्च (१०) १९२
२५१-२६० अर्थनिक्षेपाः (४) द्रव्ये (६) व्यतिरिक्ते धान्यानि (२४) रत्नानि (२४) स्थावरः (३) द्विपदः (२) चतुष्पदः (१०) कुप्यभेदः (६४) १९३
२६१-२६४ कामः सम्प्राप्तः दृष्टिसम्पातादिकः (१४) असम्प्राप्तः अभिलाषचिन्तादिकः (१०) १९४

२६५-२६८ धर्मार्थकामाः जिनवचनेऽविरोधिनः, स्वच्छाशयप्रयोगात्, धर्मफलमोक्षाभिप्रायात् जिनमते मोक्षः १९५
२१५-२१६*२६९-२७० सक्षुल्लकव्यक्तानां स्थानानि व्रतषट्कादीनि अष्टादश, अन्यतरसेवको न श्रवणः १९६
२१७-२३४* प्रथमे सर्वजीवाहिंसा प्रियजीवितत्वात्, अविश्वासभूमिर्मृषा, तन्नात्मपरार्थं ब्रूयात्, दन्तशोधनमात्रमपि नादत्तं गृह्णीयात्, घोरमधर्ममूलं मैथुनं न सेवेत, बीडादिसन्निधिं न कुर्यात्, वस्त्रादि संयमार्थं, देहेऽपि न ममता, एकभक्तं, रात्रौ सूक्ष्मप्राणादर्शनं, उदकार्द्रादिवर्जनं २००

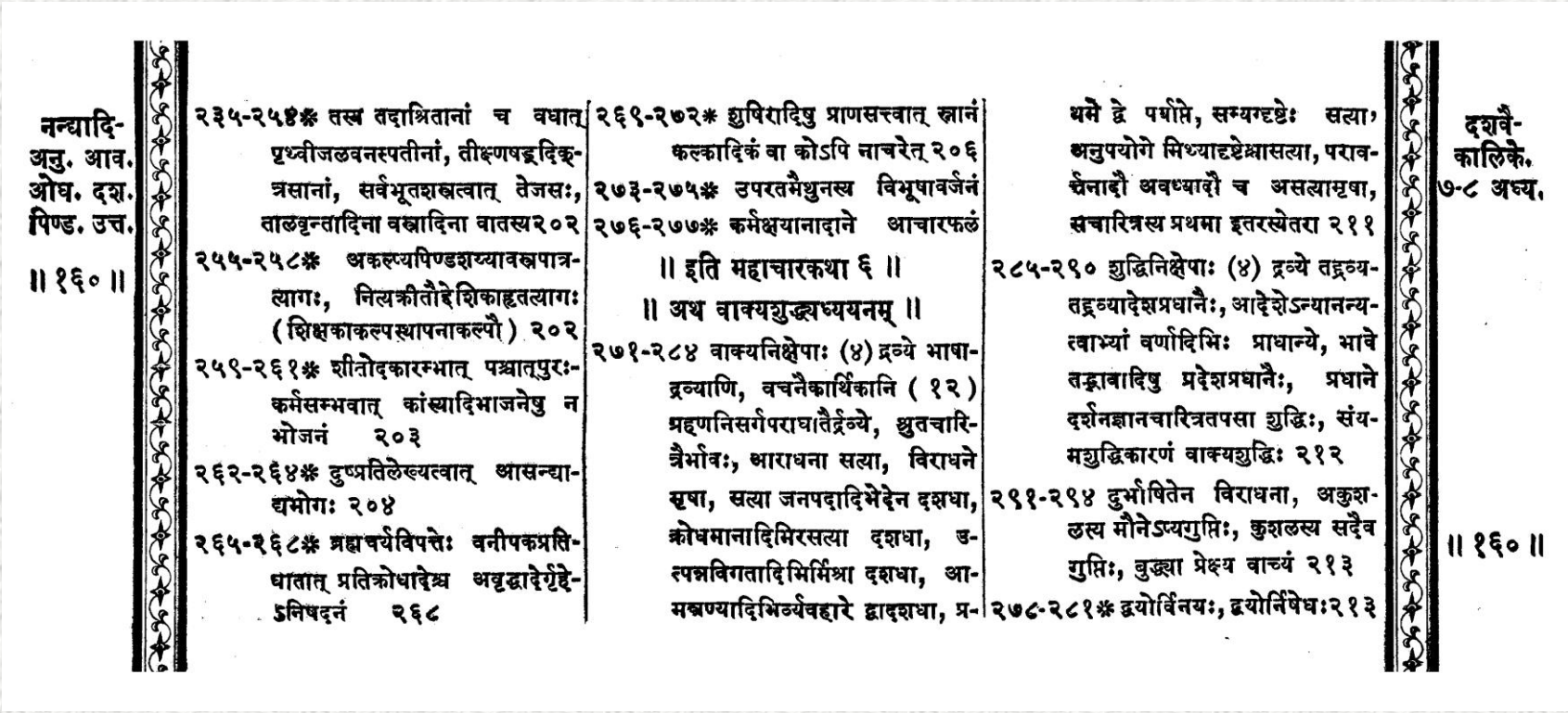
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्दादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६० ॥

२३५-२५४* तस्य तदाश्रितानां च वधात् पृथ्वीजलवनस्पतीनां, तीक्ष्णषड्दिक्त्रसानां, सर्वभूतशस्त्रत्वात् तेजसः, तालवृन्तादिना वस्त्रादिना वातस्य २०२
२५५-२५८* अकल्प्यपिण्डशय्यावस्त्रपात्रत्यागः, नित्यक्रीतौद्देशिकाहृतत्यागः (शिक्षकाकल्पस्थापनाकल्पौ) २०२
२५९-२६१* शीतोदकारम्भात् पश्चात्पुरःकर्मसम्भवात् कांस्यादिभाजनेषु न भोजनं २०३
२६२-२६४* दुष्प्रतिलेख्यत्वात् आसन्द्याद्यभोगः २०४
२६५-२६८* ब्रह्मचर्यविपत्तेः वनीपकप्रतिघातात् प्रतिक्रोधादेश्च अवृद्धादेर्गृहेऽनिषदनं २६८
२६९-२७२* शुषिरादिषु प्राणसत्त्वात् स्नानं कल्कादिकं वा कोऽपि नाचरेत् २०६
२७३-२७५* उपरतमैथुनस्य विभूषावर्जनं
२७६-२७७* कर्मक्षयानादाने आचारफलं

॥ इति महाचारकथा ६ ॥

॥ अथ वाक्यशुद्ध्यध्ययनम् ॥

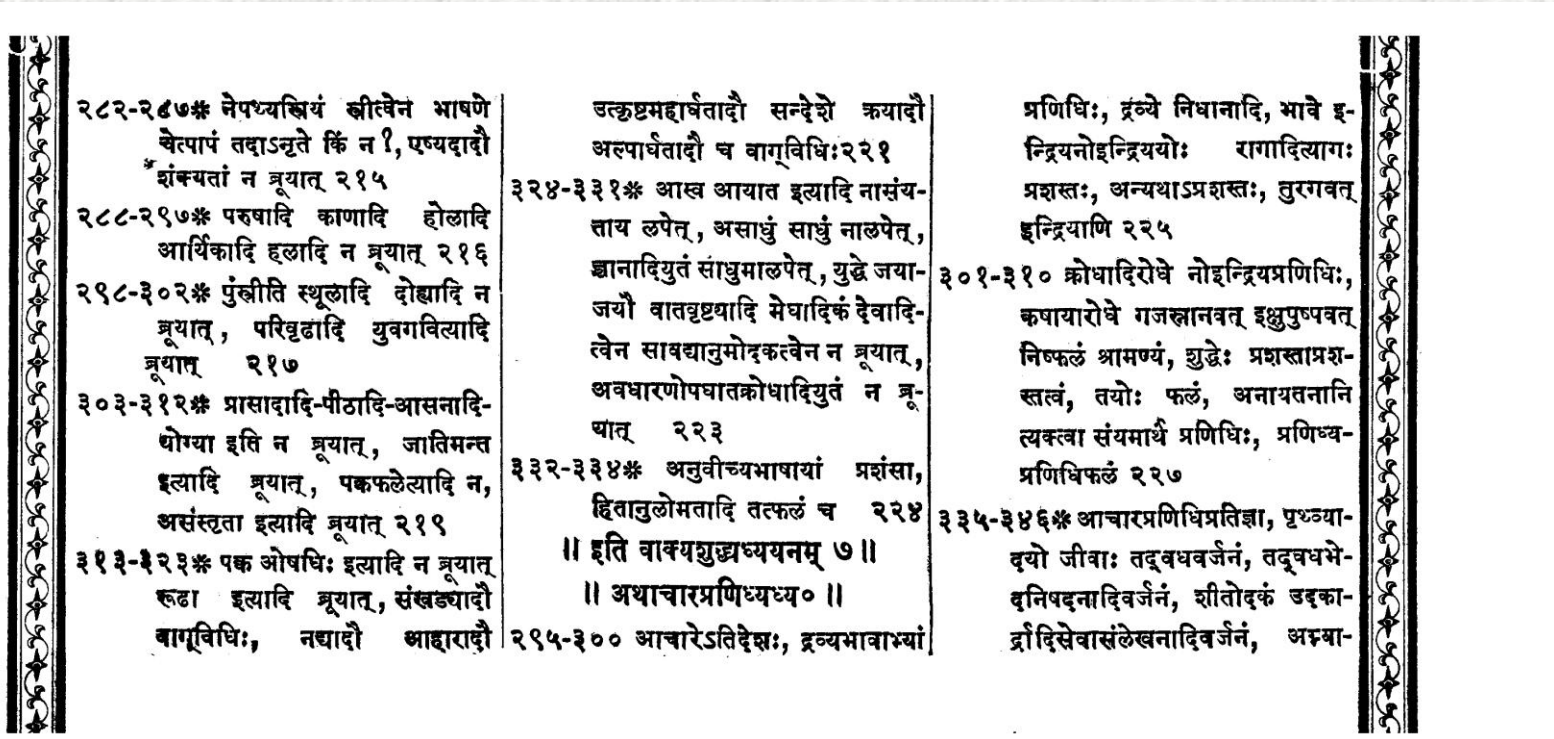
२७१-२८४ वाक्यनिक्षेपाः (४) द्रव्ये भाषाद्रव्याणि, वचनैकार्थिकानि (१२) ग्रहणनिसर्गपराघातैर्द्रव्ये, श्रुतचारित्रैर्भावः, आराधना सत्या, विराधने मृषा, सत्या जनपदादिभेदेन दशधा, क्रोधमानादिभिरसत्या दशधा, उत्पन्नविगतादिभिर्मिश्रा दशधा, आमन्त्रण्यादिभिर्व्यवहारे द्वादशधा, प्रथमे द्वे पर्याप्ते, सम्यग्दृष्टेः सत्या, अनुपयोगे मिथ्यादृष्टेरसत्या, परावतनादौ अवध्यादौ च असत्यामृषा, सचारित्रस्य प्रथमा इतरस्येतरा २११
२८५-२९० शुद्धिनिक्षेपाः (४) द्रव्ये तद्द्रव्यतद्द्रव्यादेशप्रधानैः, आदेशेऽन्यानन्यत्वाभ्यां वर्णादिभिः प्राधान्ये, भावे तद्भावादिषु प्रदेशप्रधानैः, प्रधाने दर्शनज्ञानचारित्रतपसा शुद्धिः, संयमशुद्धिकारणं वाक्यशुद्धिः २१२
२९१-२९४ दुर्भाषितेन विराधना, अकुशलस्य मौनेऽप्यगुप्तिः, कुशलस्य सदैव गुप्तिः, बुद्ध्या प्रेक्ष्य वाच्यं २१३
२७८-२८१* द्वयोर्विनयः, द्वयोर्निषेधः २१३

दशवै-कालिके. ७-८ अध्य. ॥ १६० ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



२८२-२८७* नेपथ्यस्त्रियं स्त्रीत्वेन भाषणे चेत्पापं तदाऽनृते किं न?, एष्यदादौ शंक्यतां न ब्रूयात् २१५
२८८-२९७* परुषादि काणादि होलादि आर्यिकादि हलादि न ब्रूयात् २१६
२९८-३०२* पुंस्त्रीति स्थूलादि दोह्यादि न ब्रूयात्, परिवृढादि युवगवित्यादि ब्रूयात् २१७
३०३-३१२* प्रासादादि-पीठादि-आसनादि-योग्या इति न ब्रूयात्, जातिमन्त इत्यादि ब्रूयात्, पक्वफलेत्यादि न, असंस्तृता इत्यादि ब्रूयात् २१९
३१३-३२३* पक्व ओषधिः इत्यादि न ब्रूयात् रूढा इत्यादि ब्रूयात्, संखड्यादौ वाग्विधिः, नद्यादौ आहारादौ उत्कृष्टमहार्घतादौ सन्देशे क्रयादौ अल्पार्घतादौ च वाग्विधिः२२१
३२४-३३१* आस्व आयात इत्यादि नासंयताय लपेत्, असाधुं साधुं नालपेत्, ज्ञानादियुतं साधुमालपेत्, युद्धे जयाजयौ वातवृष्ट्यादि मेघादिकं देवादित्वेन सावद्यानुमोदकत्वेन न ब्रूयात्, अवधारणोपघातक्रोधादियुतं न ब्रूयात् २२३
३३२-३३४* अनुवीच्यभाषायां प्रशंसा, हितानुलोमतादि तत्फलं च २२४
॥ इति वाक्यशुद्ध्यध्ययनम् ७ ॥
॥ अथाचारप्रणिध्यध्य० ॥
२९५-३०० आचारेऽतिदेशः, द्रव्यभावाभ्यां प्रणिधिः, द्रव्ये निधानादि, भावे इन्द्रियनोइन्द्रिययोः रागादित्यागः प्रशस्तः, अन्यथाऽप्रशस्तः, तुरगवत् इन्द्रियाणि २२५
३०१-३१० क्रोधादिरोधे नोइन्द्रियप्रणिधिः, कषायारोधे गजस्नानवत् इक्षुपुष्पवत् निष्फलं श्रामण्यं, शुद्धेः प्रशस्ताप्रशस्तत्वं, तयोः फलं, अनायतनानि त्यक्त्वा संयमार्थं प्रणिधिः, प्रणिध्यप्रणिधिफलं २२७
३३५-३४६* आचारप्रणिधिप्रतिज्ञा, पृथ्व्यादयो जीवाः तद्वधवर्जनं, तद्वधभेदनिषदनादिवर्जनं, शीतोदकं उदकार्द्रादिसेवासंलेखनादिवर्जनं, अम्बा-

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

दिघट्टनादिवर्जनं, व्यजनवर्जनं तृणादि छेदादिवर्जनं त्रसहिंसावर्जनं २२९

३४७-३५०* अष्ट सूक्ष्माणि

३५१-३६२* पात्रादिप्रतिलेखना उच्चारादिपरिष्ठापना परागारे स्थानभाषायतना, दृष्टादेरनाख्येयत्वं, गृहियोगासमाचारः, लाभालाभानिर्देशः, अप्रासुककृीताद्यभोजनं, सन्निधिवर्जनं, रूक्षवृत्तित्वादि, शब्देऽरागः, स्पर्शसहनं, क्षुदादिसहनं, रात्रावभोजनं च २३२

३६३-३७४* अतिन्तनादि परिभववर्जनादि संवरणादि जितेन्द्रियत्वादि अमोघवचनत्वादि भोगनिवृत्त्यादि, जरादिपीडाद्यभावे धर्मकृतिः क्रोधादेरवमने दोषाः घातोपायाः फलं च २३४

३७५-३८४* रत्नाधिकविनयादि अल्पनिद्रत्वादि श्रमणधर्मयोगादि बहुश्रुतपर्युपासनादि आलीनगुप्तत्वादि पक्षादिष्वनिषदनं पृष्ठमांसादिवर्जनं अप्रीतिकवर्जनं दृष्टादिवादित्वं अनुपहासः २३६

३८५-३९४* नक्षत्राद्यनाख्यानं उच्चारभूमियुक्तशय्यादि नारीकथावर्जनादि चित्रस्थस्त्रियः अध्यानं अकर्णनाशाया अपि वर्जनं विभूषादेर्विषत्वं अंगाद्यनिरीक्षणं विषयेष्वप्रेम अतृष्णत्वादि २३८

३९५-३९८* निष्क्रमणश्रद्धापालनं तपःस्वाध्यायादि स्वाध्यायध्यानादिफलं दुःखसहजितेन्द्रियादेर्मोक्षः २३९

॥ इत्याचारप्रणिध्यध्ययनम् ८ ॥

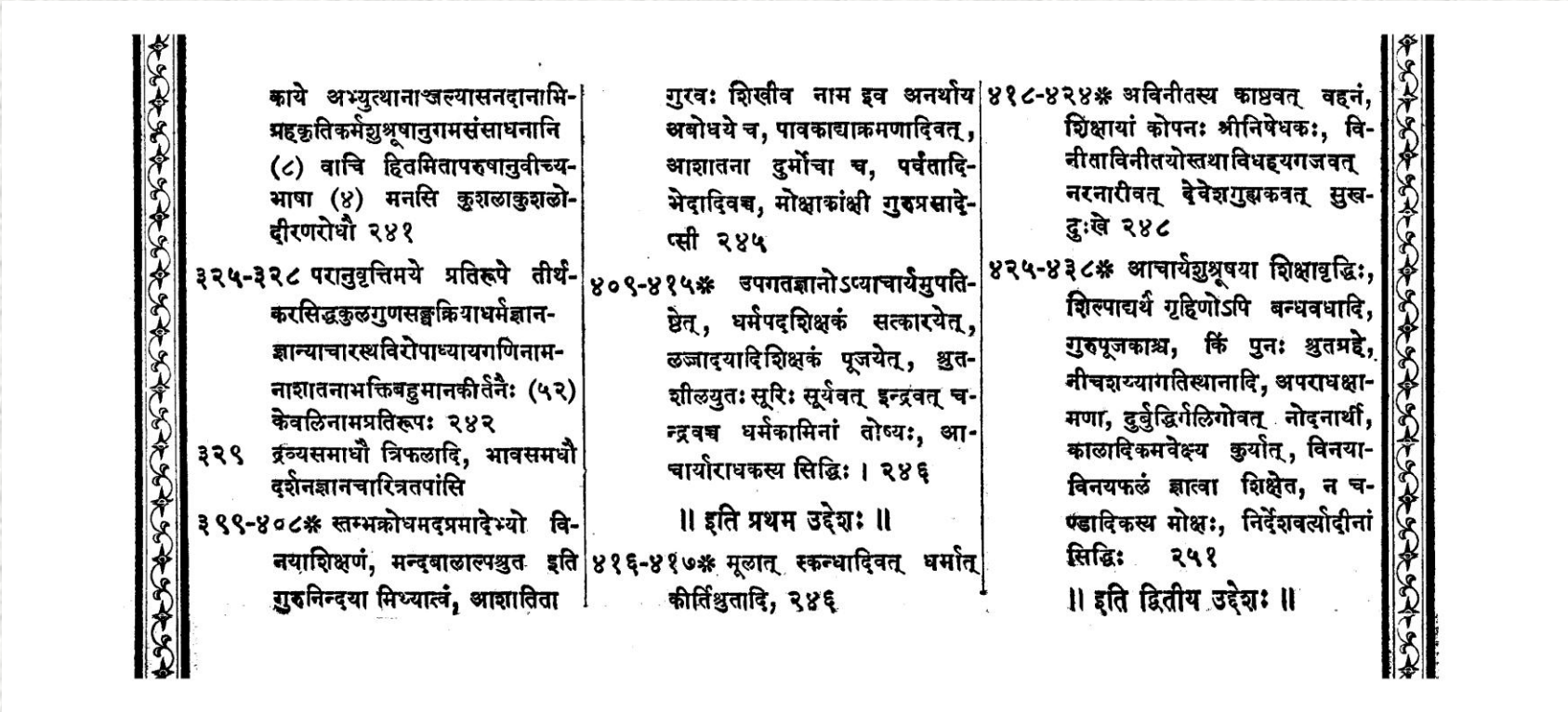
॥ अथ विनयसमाध्यध्य० ॥

३११-३२४ विनयसमाध्योर्निक्षेपाः (४-४) द्रव्ये तिनिशसुवर्णादीनि, भावे लोकोपचारे अभ्युत्थानाञ्जल्यासनातिथिदेवपूजाः (५) अर्थे कामे भये च अभ्यासवृत्तिऽछन्दोऽनुवर्तनावसरदानदानाभ्युत्थानाञ्जल्यासनदानादि, मोक्षे (५), दर्शने सद्भावश्रद्धानं ज्ञाने पठनगुणनकृत्यानि चारित्रे कर्मोपचयः तपसि स्वर्गमोक्षसाधनं, प्रतिरूपे

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



काये अभ्युत्थानाञ्जल्यासनदानाभिग्रहकृतिकर्मशुश्रूषानुगमसंसाधनानि (८) वाचि हितमितापरुषानुवीच्यभाषा (४) मनसि कुशलाकुशलोदीरणरोधौ २४१

३२५-३२८ परानुवृत्तिमये प्रतिरूपे तीर्थकरसिद्धकुलगुणसङ्घक्रियाधर्मज्ञानज्ञान्याचारस्थविरोपाध्यायगणिनामनाशातनाभक्तिबहुमानकीर्तनैः (५२) केवलिनामप्रतिरूपः २४२

३२९ द्रव्यसमाधौ त्रिफलादि, भावसमधौ दर्शनज्ञानचारित्रतपांसि

३९९-४०८* स्तम्भक्रोधमदप्रमादेभ्यो विनयाशिक्षणं, मन्दबालाल्पश्रुत इति गुरुनिन्दया मिथ्यात्वं, आशातिता गुरवः शिखीव नाम इव अनर्थाय अबोधये च, पावकाद्याक्रमणादिवत्, आशातना दुर्मोचा च, पर्वतादिभेदादिवच्च, मोक्षाकांक्षी गुरुप्रसादेत्सी २४५

४०९-४१५* उपगतज्ञानोऽप्याचार्यमुपतिष्ठेत्, धर्मपदशिक्षकं सत्कारयेत्, लज्जादयादिशिक्षकं पूजयेत्, श्रुतशीलयुतः सूरिः सूर्यवत् इन्द्रवत् चन्द्रवच्च धर्मकामिनां तोष्यः, आचार्याराधकस्य सिद्धिः । २४६

॥ इति प्रथम उद्देशः ॥

४१६-४१७* मूलात् स्कन्धादिवत् धर्मात् कीर्तिश्रुतादि, २४६

४१८-४२४* अविनीतस्य काष्ठवत् वहनं, शिक्षायां कोपनः श्रीनिषेधकः, विनीताविनीतयोस्तथाविधहयगजवत् नरनारीवत् देवेशगुह्यकवत् सुखदुःखे २४८

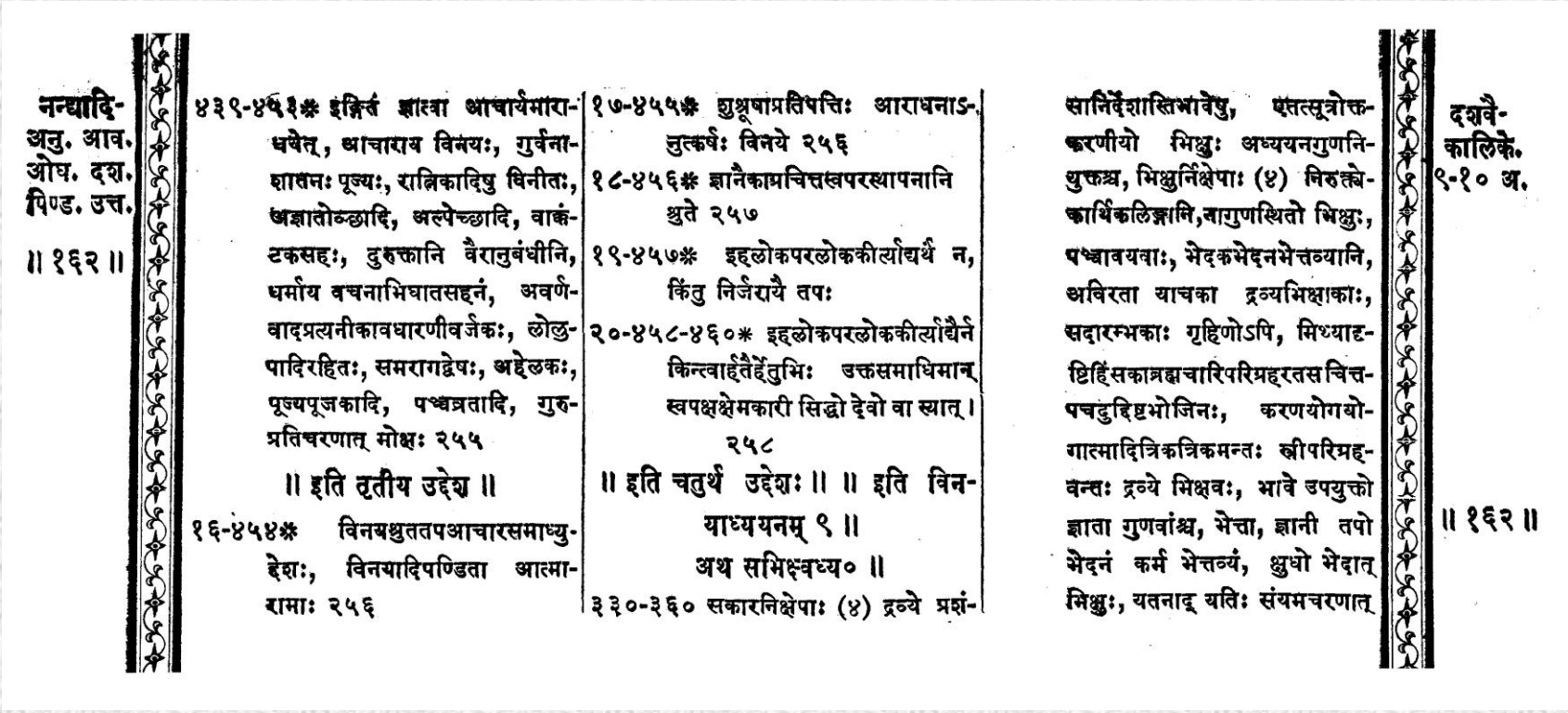
४२५-४३८* आचार्यशुश्रूषया शिक्षावृद्धिः, शिल्पाद्यर्थं गृहिणोऽपि बन्धवधादि, गुरुपूजकाश्च, किं पुनः श्रुतमहे, नीचशय्यागतिस्थानादि, अपराधक्षामणा, दुर्बुद्धिर्गलिगोवत् नोदनार्थी, कालादिकमवेक्ष्य कुर्यात्, विनयाविनयफलं ज्ञात्वा शिक्षेत, न चण्डादिकस्य मोक्षः, निर्देशवर्त्यादीनां सिद्धिः २५१

॥ इति द्वितीय उद्देशः ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६२ ॥

४३९-४५३* इङ्गितं ज्ञात्वा आचार्यमाराधयेत्, आचारार्थ विनयः, गुर्वनाशातनः पूज्यः, रात्निकादिषु विनीतः, अज्ञातोञ्छादि, अल्पेच्छादि, वाक्कंटकसहः, दुरुक्तानि वैरानुबंधीनि, धर्माय वचनाभिघातसहनं, अवर्णवादप्रत्यनीकावधारणीवर्जकः, लोलुपादिरहितः, समरागद्वेषः, अहेलकः, पूज्यपूजकादि, पञ्चव्रतादि, गुरुप्रतिचरणात् मोक्षः २५५

॥ इति तृतीय उद्देश ॥

१६-४५४* विनयश्रुततपआचारसमाध्युद्देशः, विनयादिपण्डिता आत्मारामाः २५६

१७-४५५* शुश्रूषाप्रतिपत्तिः आराधनाऽनुत्कर्षः विनये २५६

१८-४५६* ज्ञानैकाग्रचित्तस्वपरस्थापनानि श्रुते २५७

१९-४५७* इहलोकपरलोककीर्त्यार्थं न, किंतु निर्जरायै तपः

२०-४५८-४६०* इहलोकपरलोककीर्त्यार्थैर्न किन्त्वार्हतैर्हेतुभिः उक्तसमाधिमान् स्वपक्षक्षेमकारी सिद्धो देवो वा स्यात्। २५८

॥ इति चतुर्थ उद्देशः ॥ ॥ इति विनयाध्ययनम् ९ ॥

अथ सभिक्षवध्य० ॥

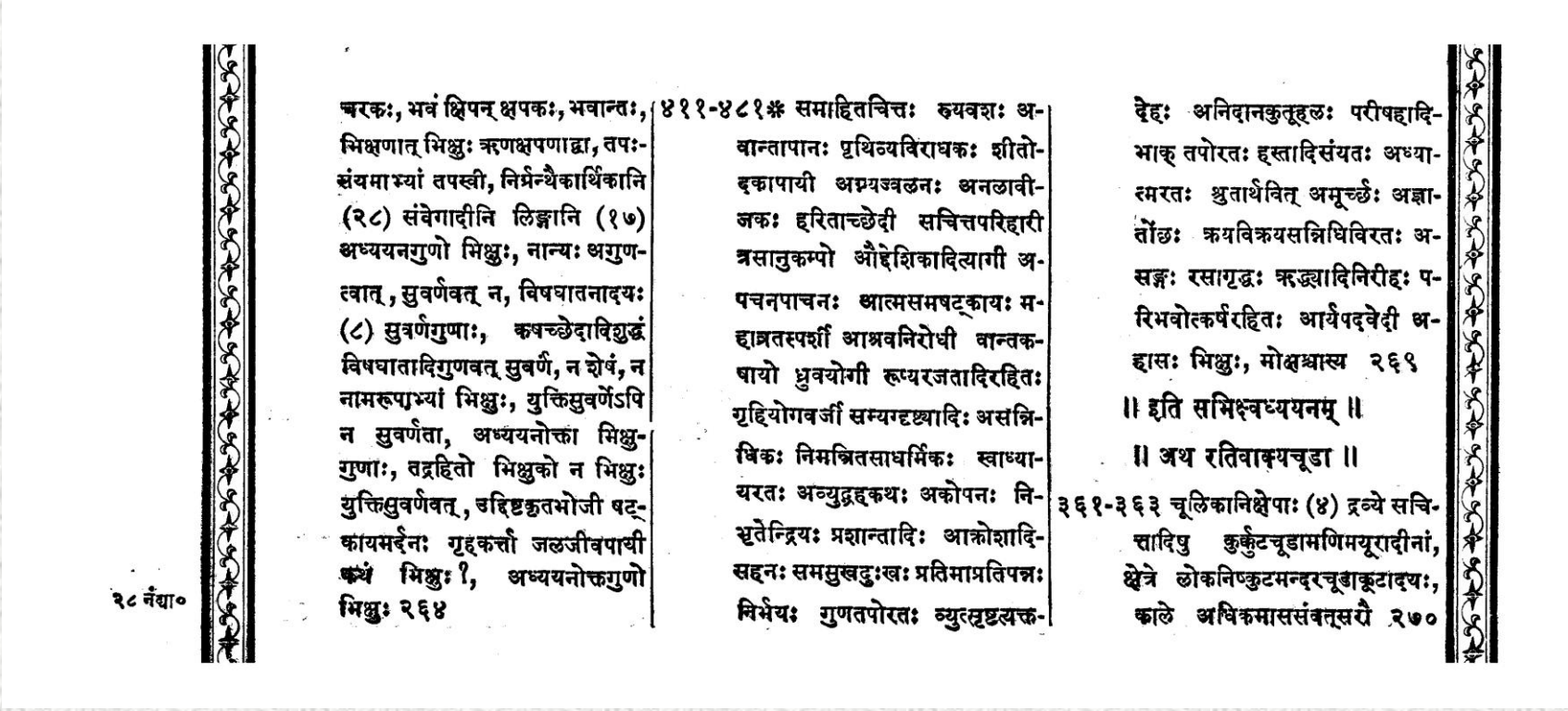
३३०-३६० सकारनिक्षेपाः (४) द्रव्ये प्रशंसानिर्देशास्तिभावेषु, एतत्सूत्रोक्तकरणीयो भिक्षुः अध्ययनगुणनियुक्तश्च, भिक्षुर्निक्षेपाः (४) निरुक्तेकार्थिकलिङ्गानि, त्रागुणस्थितो भिक्षुः, पञ्चावयवाः, भेदकभेदनभेत्तव्यानि, अविरता याचका द्रव्यभिक्षाकाः, सदारम्भकाः गृहिणोऽपि, मिथ्यादृष्टिर्हिंसकाब्रह्मचारिपरिग्रहरतसचित्तपचदुद्दिष्टभोजिनः, करणयोगयोगात्मादित्रिकत्रिकमन्तः स्त्रीपरिग्रहवन्तः द्रव्ये भिक्षवः, भावे उपयुक्तो ज्ञाता गुणवांश्च, भेत्ता, ज्ञानी तपो भेदनं कर्म भेत्तव्यं, क्षुधो भेदात् भिक्षुः, यतनाद् यतिः संयमचरणात्

दशवै-कालिके. ९-१० अ. ॥ १६२ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



चरकः, भवं क्षिपन् क्षपकः, भवान्तः, भिक्षणात् भिक्षुः ऋणक्षपणाद्वा, तपः-संयमाभ्यां तपस्वी, निर्ग्रन्थैकार्थिकानि (२८) संवेगादीनि लिङ्गानि (१७) अध्ययनगुणो भिक्षुः, नान्यः अगुण-त्वात्, सुवर्णवत् न, विषघातनादयः (८) सुवर्णगुणाः, कषच्छेदादिशुद्धं विषघातादिगुणवत् सुवर्णं, न शेषं, न नामरूपाभ्यां भिक्षुः, युक्तिसुवर्णेऽपि न सुवर्णता, अध्ययनोक्ता भिक्षु-गुणाः, तद्रहितो भिक्षुको न भिक्षुः युक्तिसुवर्णवत्, उद्दिष्टकृतभोजी षट्-कायमर्दनः गृहकर्त्ता जलजीवपायी कथं भिक्षुः ?, अध्ययनोक्तगुणो भिक्षुः २६४

४११-४८१* समाहितचित्तः रुयवशः अ-वान्तापानः पृथिव्यविराधकः शीतो-दकापायी अग्न्यज्वलनः अनलावी-जकः हरिताच्छेदी सचित्तपरिहारी त्रसानुकम्पो औद्देशिकादित्यागी अ-पचनपाचनः आत्मसमषट्कायः म-हाव्रतस्पर्शी आश्रवनिरोधी वान्तक-षायो ध्रुवयोगी रूप्यरजतादिरहितः गृहियोगवर्जी सम्यग्दृष्ट्यादिः असन्नि-धिकः निमन्त्रितसाधर्मिकः स्वाध्या-यरतः अव्युद्ग्रहकथः अकोपनः नि-भृतेन्द्रियः प्रशान्तादिः आक्रोशादि-सहनः समसुखदुःखः प्रतिमाप्रतिपन्नः निर्भयः गुणतपोरतः व्युत्सृष्टत्यक्त-देहः अनिदानकुतूहलः परीषहादि-भाक् तपोरतः हस्तादिसंयतः अध्या-त्मरतः श्रुतार्थवित् अमूर्च्छः अज्ञा-तोंछः क्रयविक्रयसन्निधिविरतः अ-सङ्गः रसागृद्धः ऋद्ध्यादिनिरीहः प-रिभवोत्कर्षरहितः आर्यपदवेदी अ-हासः भिक्षुः, मोक्षश्चास्य २६९

॥ इति सभिक्षध्ययनम् ॥

॥ अथ रतिवाक्यचूडा ॥

३६१-३६३ चूलिकानिक्षेपाः (४) द्रव्ये सचि-त्तादिषु कुर्कुटचूडामणिमयूरादीनां, क्षेत्रे लोकनिष्कुटमन्दरचूडाकूटादयः, काले अधिकमाससंवत्सरौ २७०

२८ नंद्या०

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्द्यादि-अनु.आव.ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १६३ ॥

३६४ रतिर्द्रव्ये नोकर्मणि शब्दद्रव्यादि भावे तस्योदयः

३६५-३६७ रतिवाक्यान्वर्थः, आतुरस्य सीवनच्छेदनादिवत् कर्मरोगातुरस्य धर्माधर्मयो रत्यरती

२१ स्वाध्यायादौ रतिमतोऽसंयमेऽरतिमतश्च सिद्धिः, ततः धर्माधर्मयो रत्यरतिकारकाणि स्थानान्यत्र, दुष्प्रमायां दुष्प्रजीविता इत्वराः कामाः मायाबहुला मनुष्या न चिरं दुःखं अवमजनपुरस्कारः वान्तादानं अधो गतिः गृहे दुर्लभो धर्मः आतङ्कसङ्कल्पौ वधाय, सोपक्लेशबन्धसावद्येतरौ गृहवासपर्यायौ, साधारणा भोगाः पृथक्कर्मणः अनित्यं जीवितं बहुपापं, नाभेदयित्वा मोक्षः (१८) २७४

४८२-४९९* एतदर्था गाथाः २१८

॥ इति रतिवाक्यचूडाध्य० ॥

॥ अथ विविक्तचर्याचूडा ॥

६३+ अधिकारातिदेशः २७८

५००-५०३* केवलिभाषिता धर्ममतिकारिका चूला, प्रतिश्रोतो गन्तव्यं प्रतिश्रोत उत्तारः चर्यागुणनियमाः २७९

५०४-५०८* अनिकेतवासः समुदानचर्या अज्ञातोञ्छं च प्रतिरिक्तताऽल्पोपधिः कलहवर्जनं आकीर्णावमानवर्जनं दृष्टाहृतान्नः संसृष्टकल्पः अमद्यमांसाशी निर्मत्सरः निर्विकृतिकः कायोत्सर्गकारी स्वाध्यायरतः शय्याविदप्रतिज्ञः निर्ममः न गृहिवैयावृत्त्यादिकः असंक्लिष्टसङ्गः २८०

३७०-३७१ संयतस्यावगृहीतादिचर्या अनिकेतादिस्वरूपा २८२

५०९-५१५* असजन्नेक विहारी अर्थाज्ञया चर्या कृताकृतादिचिन्तनं स्वस्खलितापेक्षी दुष्प्रयुक्तसंवरः प्रतिबुद्धजीवित्वं आत्मरक्षारक्षयोः फलं २८४

॥ इति विविक्तचर्या चूडा ॥

३७२-३७३ षण्मास्याऽधीत्य आराधक आर्यममकः, यशोभद्राद्यैः स्थापितमिदं, नयाश्च २८६

इति दशवैकालिकस्य सचूडाद्वयस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥

दशवै-कालिक-बृहद्विषया-नुक्रमः.

॥ १६३ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ पिण्डनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः ॥

मङ्गलम् । दशवैकालिकपिण्डैषणाध्ययननिर्युक्तिरेषा ।

॥ अथ पिण्डनिरूपणम् ॥

१ पिण्डोद्गमोत्पादैषणासंयोजनाप्रमाणाङ्गारधूमकारणानि (८) पिंण्डनिर्युक्तयाम् १

२ पिण्डैकार्थिकानि (१२) २

३-४ पिण्डनिक्षेपाः (४-६) २

५ कुलकचतुर्भागन्यायेन षट्चतुष्कम्

६, १-६+ गौणसमयोभयकृतानि नामानि, भेदत्रयस्वरूपं सिद्धिश्च ४

७-७+ अक्षकाष्ठादौ सद्भावासद्भावस्थापने ६

८-९ द्रव्ये सचित्तः पिण्डः (९) निश्चयव्यवहारौ

१०-११ सचित्तः पृथिवीकायपिण्डः ७

१२ क्षीरद्रुमादेरधः पथ्यादौ च मिश्रः, आर्द्रे एकद्वित्रिपौरुषीः ८

१३-१५ शीतोष्णादिनाऽचित्तः, लूतास्फोटादौ स्थानादौ च प्रयोजनम् ८

१६-३४ अप्काये निश्चयव्यवहारसचित्तता, अर्वाक् त्रिदण्डेभ्यः पतितमात्रे वर्षे अबहुप्रसन्ने तन्दुलोदके मिश्रः, अनादेशत्रिकं, तद्दूषणानि, शीतोष्णादिनाऽचित्तः, परिषेकपानहस्तवस्त्रधावनादि प्रयोजनं ऋतुबद्धे दोषः, वर्षास्वधावने दोषः, अर्वाग् वर्षायाः सर्वोपधेः क्षालनं, जघन्यतः पात्रनिर्योगस्य, आचार्यादीनां पुनः पुनः, पात्रनिर्योगाद्या अविश्राम्याः, विश्रामणाविधिः, नीव्रोदकग्रहणं, गुर्वनशन्यादिक्रमः, पूर्वं यथाकृतानि, नाच्छोटनादि, छायाऽऽतपयोः शोषणं, कल्याणकं च १६

३५-३७ तेजसि निश्चयव्यवहारसचित्तता, मुर्मुरादिर्मिश्रः, ओदनादिरचित्तः ।

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंडनिर्युक्ति'

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६४ ॥

३८-४२, १२-१५+ वायुकाये घनवातादौ निश्चयेन सचित्तः, प्राच्यादिर्व्यवहारेण, आक्रान्ताध्मातपीडनदेहानुगतनिश्चोदनेष्वचित्तः, इत्यादिवातस्याचित्तादित्वे क्षेत्रकालविचारः, ग्लानत्वेऽचित्तेन प्रयोजनम् १८

४३-४६ वनस्पतिकायेऽनन्तकायो निश्चयेन, शेषो व्यवहारेण, मिश्रः प्रम्लानो लोष्टादिः, वृन्तम्लानौ अचित्तः, संस्तारकादिना प्रयोजनम् १९

४७-४८॥ विकलेन्द्रिये पिण्डत्वं, अक्षाद्युदेहिकादिमक्षिकापुरीषादिना प्रयोजनम् २०

४९-५२ अनुपयोगिनो नारकाः, चरमास्थिदन्तादिना तिर्यञ्चः, प्रव्राजनादिना मनुष्याः, क्षपकादिकालकार्यादिना देवा उपयोगिनः २१

५३-५४ पिण्डनवकसंयोगाः (५०२) विधिश्च सौवीरतक्रादिषु २२

५५-५८ क्षेत्रकालपिण्डौ, अमूर्त्तत्वेन शङ्का, आधेयस्थितिभ्यां प्ररूपणाहेतुत्वेन च समाधानम् २४

५९-७२ भावे प्रशस्ते संयमादित एकादिदशविधान्तः, अप्रशस्तेऽसंयमादिरेकादिर्नवान्तः, बन्धहेतुरप्रशस्तः, मुक्तिहेतुः प्रशस्तः, ज्ञानदर्शनचारित्राणां पर्यायास्तत्तत्पिण्डः, अध्यवसायो वा पिण्डः, आहारादिः प्रशस्तपिण्डस्योपकारी, तेन द्रव्यभावपिण्डाभ्यामधिकारः, निर्वाणकारणज्ञानादिकारणमाहारः, पटे पक्ष्मवत्, अनुपहतकारणात्कार्य, अविकलज्ञानादिर्मोक्षहेतुः २८

॥ इति पिण्डनिरूपणम् ॥

॥ अथोद्गमदोषाः ॥

७३-७८ एषणैर्थिकानि (४) एषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये सचित्तादिः (द्विपदादि ३) भावे गवेषणैषणादिः (३) क्रमसिद्धिश्च ३०

७९-८४ गवेषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये कुरङ्गगजदृष्टान्तौ, भावे उद्गमोत्पादने ३२

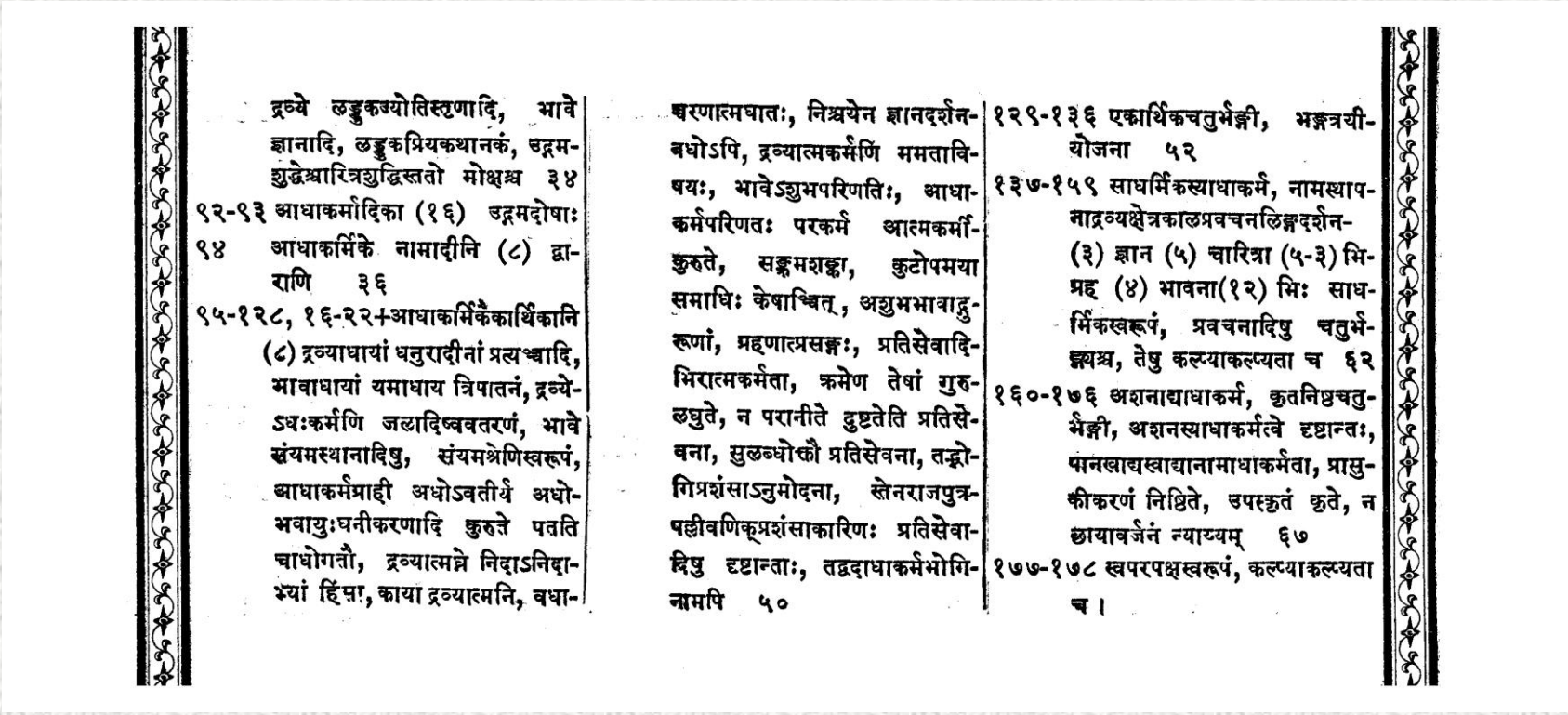
८५-९१ उद्गमैकार्थिकानि (३) निक्षेपाः(४)।

पिण्डनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः. ॥ १६४ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



द्रव्ये लड्डुकज्योतिस्तृणादि, भावे ज्ञानादि, लड्डुकप्रियकथानकं, उद्गम-शुद्धेश्चारित्रशुद्धिस्ततो मोक्षश्च ३४
९२-९३ आधाकर्मादिका (१६) उद्गमदोषाः
९४ आधाकर्मिके नामादीनि (८) द्वाराणि ३६
९५-१२८, १६-२२+आधाकर्मिकैकार्थिकानि (८) द्रव्याधायां धनुरादीनां प्रत्यञ्चादि, भावाधायां यमाधाय त्रिपातनं, द्रव्येऽधःकर्मणि जलादिष्ववतरणं, भावे संयमस्थानादिषु, संयमश्रेणिस्वरूपं, आधाकर्मग्राही अधोऽवतीर्य अधोभवायुःघनीकरणादि कुरुते पतति चाधोगतौ, द्रव्यात्मन्ने निदाऽनिदाभ्यां हिंसा, काया द्रव्यात्मनि, वधास्वरणात्मघातः, निश्चयेन ज्ञानदर्शनबधोऽपि, द्रव्यात्मकर्मणि ममताविषयः, भावेऽशुभपरिणतिः, आधाकर्मपरिणतः परकर्म आत्मकर्मीकुरुते, सङ्क्रमशङ्का, कुटोपमया समाधिः केषाञ्चित्, अशुभभावाद्रुरूणां, ग्रहणात्प्रसङ्गः, प्रतिसेवादिभिरात्मकर्मता, क्रमेण तेषां गुरुलघुते, न परानीते दुष्टतेति प्रतिसेवना, सुलब्धोक्तौ प्रतिसेवना, तद्भोगिप्रशंसाऽनुमोदना, स्तेनराजपुत्रपल्लीवणिक्प्रशंसाकारिणः प्रतिसेवादिषु दृष्टान्ताः, तद्वदाधाकर्मभोगिनामपि ५०
१२९-१३६ एकार्थिकचतुर्भङ्गी, भङ्गत्रयीयोजना ५२
१३७-१५९ साधर्मिकस्याधाकर्म, नामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालप्रवचनलिङ्गदर्शन-(३) ज्ञान (५) चारित्रा (५-३) भिः प्रह (४) भावना(१२) भिः साधर्मिकस्वरूपं, प्रवचनादिषु चतुर्भङ्गयश्च, तेषु कल्प्याकल्प्यता च ६२
१६०-१७६ अशनाद्याधाकर्म, कृतनिष्ठचतुर्भङ्गी, अशनस्याधाकर्मत्वे दृष्टान्तः, पानखाद्यस्वाद्यानामाधाकर्मता, प्रासुकीकरणं निष्ठिते, उपस्कृतं कृते, न छायावर्जनं न्याय्यम् ६७
१७७-१७८ स्वपरपक्षस्वरूपं, कल्प्याकल्प्यता च।

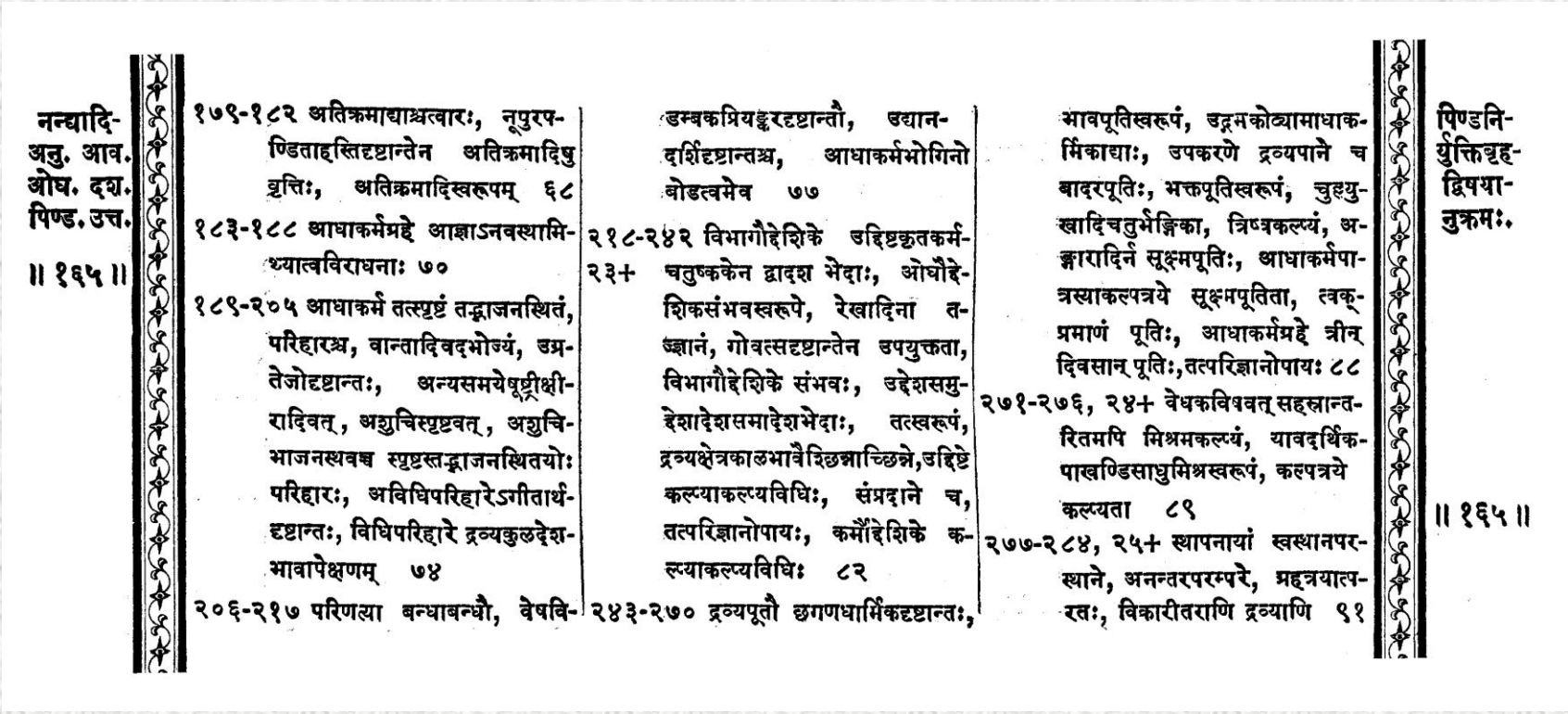
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १६५ ॥

१७९-१८२ अतिक्रमाद्याश्चत्वारः, नूपुरपण्डिताहस्तिदृष्टान्तेन अतिक्रमादिषु वृत्तिः, अतिक्रमादिस्वरूपम् ६८

१८३-१८८ आधाकर्मग्रहे आज्ञाऽनवस्थामिथ्यात्वविराधनाः ७०

१८९-२०५ आधाकर्म तत्स्पृष्टं तद्भाजनस्थितं, परिहारश्च, वान्तादिवदभोज्यं, उग्रतेजोदृष्टान्तः, अन्यसमयेषूष्ट्रीक्षीरादिवत्, अशुचिस्पृष्टवत्, अशुचिभाजनस्थवच्च स्पृष्टस्तद्भाजनस्थितयोः परिहारः, अविधिपरिहारेऽगीतार्थदृष्टान्तः, विधिपरिहारे द्रव्यकुलदेशभावापेक्षणम् ७४

२०६-२१७ परिणत्या बन्धाबन्धौ, वेषविडम्बकप्रियङ्करदृष्टान्तौ, उद्यानदर्शिदृष्टान्तश्च, आधाकर्मभोगिनो बोडत्वमेव ७७

२१८-२४२ विभागौद्देशिके उद्दिष्टकृतकर्मचतुष्केन द्वादश भेदाः, ओघौद्देशिकसंभवस्वरूपे, रेखादिना तज्ज्ञानं, गोवत्सदृष्टान्तेन उपयुक्तता, विभागौद्देशिके संभवः, उद्देशसमुद्देशादेशसमादेशभेदाः, तत्स्वरूपं, द्रव्यक्षेत्रकालभावैरिछन्नाच्छिन्ने, उद्दिष्टे कल्प्याकल्प्यविधिः, संप्रदाने च, तत्परिज्ञानोपायः, कर्मौद्देशिके कल्प्याकल्प्यविधिः ८२

२४३-२७० द्रव्यपूतौ छगणधार्मिकदृष्टान्तः, भावपूतिस्वरूपं, उद्गमकोव्यामाधाकर्मिकाद्याः, उपकरणे द्रव्यपाने च बादरपूतिः, भक्तपूतिस्वरूपं, चुल्ह्युखादिचतुर्भङ्गिका, त्रिष्त्रकल्प्यं, अङ्गारादिनं सूक्ष्मपूतिः, आधाकर्मपात्रस्याकल्पत्रये सूक्ष्मपूतिता, त्वक्प्रमाणं पूतिः, आधाकर्मग्रहे त्रीन् दिवसान् पूतिः,तत्परिज्ञानोपायः ८८

२७१-२७६, २४+ वेधकविषवत् सहस्रान्तरितमपि मिश्रमकल्प्यं, यावदर्थिकपाखण्डिसाधुमिश्रस्वरूपं, कल्पत्रये कल्प्यता ८९

२७७-२८४, २५+ स्थापनायां स्वस्थानपरस्थाने, अनन्तरपरम्परे, ग्रहत्रयात्परतः, विकारीतराणि द्रव्याणि ९१

पिण्डनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः.

॥ १६५ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

२८५-२९१, २६-२७+ बादरसूक्ष्मप्राभृतिके मङ्गलपुण्यार्थाय, तत्फलं च उत्त्वष्कनावष्वष्कनाभ्यां ९३

२९२-३०५ प्रादुष्करणसंभवे भिक्षुकत्रयदृष्टान्तः, प्रकटकरणे चुल्ल्यादेर्बहिरानयनं, प्रकाशकरणे रत्नादिना छिद्रादिना च, आत्मार्थीकृतं कल्पते, विशुद्धिकोटित्वम्। ९५

३०६-३१५ क्रीते आत्मपरद्रव्यभावक्रीतानि, सचित्तादि परद्रव्ये, आत्मद्रव्ये निर्माल्यादि, परभावे मङ्गदृष्टान्तः, आत्मभावे धर्मकथावादक्षपगादि (९) ९९

३१६-३२२ प्रामित्ये लौकिके भगिनीदृष्टान्तः, लोकोत्तरे वस्त्रादौ मलिनतादिदोषाः, अपवादश्च १००

३२३-३२८ परिवर्त्तिते लौकिकलोकोत्तरयोस्तद्द्रव्यान्यद्रव्ये, लौकिके शाल्योदनदृष्टान्तः, लोकोत्तरे ऊनाधिकवस्त्रादौ दोषास्तदपवादश्च १०२

३२९-३४६ अभ्याहृते आचीर्णानाचीर्णे निशीथानिशीथे स्वग्रामपरग्रामे जलपथस्थलपथौ, दोषाश्च, त्रिगृहाद् वाटकादेश्च परतः, परग्रामनिशीथे धनावहदृष्टान्तः, हस्तशतादाचीर्ण, उत्कृष्टादिभेदाः १०५

३४७-३५६ उद्भिन्ने पिहितकपाटौ प्रासुकाप्रासुके, षट्कायदोषाः, दानादिदोषाः, अकुञ्चितकपाटे आचीर्णम् १०७

३५७-३६५ मालापहृते जघन्योत्कृष्टे, भिक्षुदृष्टान्तः, दातृपतनादि, उत्कृष्टे कापिलः, ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्भेदाः, अपवादश्च ११०

३६६-३७६ प्रभुस्वामिस्तेनाऽऽच्छिन्नानि, प्रभौ गोपः, दोषा अपवादश्च ११३

३७७-३८७ सामान्यनिसृष्टे लोलुपभिक्षुदृष्टान्तः, भोजनानिसृष्टे, छिन्ने कल्प्यं, हस्तिनिसृष्टं दृष्टमप्यकल्प्यम् ११५

३८८-३९१ यावदर्थिकस्वगृहसाधुमिश्रैरध्यवपूरकस्त्रिधा, मिश्राद्भेदः, कल्प्याकल्प्यविधिः ११६

३९२-४०३, २८-३०+ विशोध्यविशोधिकोट्यौ, द्रव्यक्षेत्रकालभावैर्विवेकः,

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्दादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६६ ॥

शुष्कार्द्रचतुर्भङ्गी, कल्प्याकल्प्यविधिः, उद्गमकोट्यां षट्कं, शेषा विशोधिः, नवाष्टादशादिकोट्यः, गृह्णन्नुद्गमदोषाः १२०

॥ इत्युद्गमदोषाः ॥

॥ अथोत्पादनादोषाः ॥

४०४-४०९ द्रव्योत्पादनायां सचित्तादि, भावोत्पादनायां धात्र्यादयो दोषाः (१६) १२१

४१०-४२७, ३१-३२+ क्षीरमज्जनमण्डनक्रीडनाङ्कधात्रीत्वानि करणकारणाभ्यां, धात्रीशब्दव्युत्पत्तिः, धात्रीदोषगुणादिनिरूपणं, दत्तदृष्टान्तोऽत्र १२६

४२८-४३४ स्वग्रामपरग्रामप्रकटच्छन्नभेदा दूती, लोकोत्तरे उभयपक्षे च, धनदत्तदृष्टान्तः १२७

४३५-४३६, ३३-३४+ लाभालाभादि षड्विधं निमित्तं, भोगिनीदृष्टान्तः १२८

४३७-४४२ जातिकुलगणकर्मशिल्पैः सूचासूचाभ्यामाजीवः १३०

४४३-४५५ श्रमणमाहनकृपणातिथिश्वभिर्वनीपकः, निर्ग्रन्थादयः श्रमणभेदाः, वनीपकत्वे दोषाः १३२

४५६-४६० त्रिविधाश्चिकित्सास्तद्दोषाश्च १३३

४६१-४८३ घृतपूर्णसेवकिकामोदकसिंहकेशरदृष्टान्ताः क्रोधादिषु, क्रोधादिकारणानि च १३९

४८४-४९३ संस्तवस्वरूपं सम्बन्धिवचनयोः पूर्वपश्चात्संस्तवौ च १४१

४९४-४९९ विद्यायां मन्त्रे च भिक्षूपासकः पादलिप्तश्च दृष्टान्तौ १४२

५००-५१३, ३५-३७+ चूर्णे चाणाक्यक्षुल्लकौ, पादलेपे समितसूरयः, क्षताक्षतयोन्योर्विवाहे च युवतीयुग्मं, गर्भे नृपपद्मयौ १४६

५१४-५१५ साधुसमुत्था उत्पादनादोषाः, एषणायां शङ्कितभावापरिणतौ साधोः, शेषा गृहस्थात् १२२

॥ इत्युत्पादनादोषाः ॥

॥ अथ एषणादोषाः ॥

५१६-५२० एषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये वानर-

पिण्डनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः.

॥ १६६ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

यूथदृष्टान्तः, भावे शङ्कितादि (१०) १४७

५२१-५३० ग्रहणभोगयोश्चतुर्भङ्गी, उद्गम-(१६) ग्रक्षितादि(९)षु शङ्का, उपयोगाच्छुद्धिः, श्रुतोपयोगगृहीतं केवल्यपि भुङ्क्ते, अन्यथा श्रुताप्रामाण्यादि, परिणामाशुद्धेः शङ्कासद्भावे चानेषणीयम् १४८

५३१-५३९ ग्रक्षिते सचित्ते पृथिव्यब्वनस्पतयः, अचित्ते गर्हितेतरे, हस्तमात्रयोश्चतुर्भङ्गी, संसक्तिमदकल्प्यम् १५०

५४०-५५७ निक्षिप्ते सचित्तमिश्रयोरनन्तरपरम्परे, सचित्ते षोढा, स्वस्थानपरस्थानयोः, कल्प्याकल्प्यविधिः, सप्तविधो विध्याताद्यग्निः, यतना च, अनत्युष्णोदकमघट्टितकर्णं ग्राह्यं, पार्श्वावलिप्तानत्युष्णापरिशाटाघट्टनभङ्गाः, भङ्गानयनरीतिः, अत्युष्णे दोषाः, वातहरितयोरनन्तरपरम्परभेदौ १५४

५५८-५६२ सचित्ताचित्तमिश्रेषु पिहितेषु चतुर्भङ्ग्यः, चरमे भजना १५५

५६३-५७१ सचित्ताचित्तमिश्रसंहरणेषु चतुर्भङ्ग्यः, तल्लक्षणं, अचित्ते आधारसंह्रियमाणयोः शुष्कार्द्रस्तोकबहुचतुर्भङ्गथः, तत्र कल्प्याकल्प्यविधिर्दोषाश्च १५७

५७२-६०४ बालवृद्धमत्तोन्मत्तादिचत्वारिंशद्विधदायकेषु केषुचिद्भजना तद्दोषाश्च १६४

६०५-६०८ सचित्ताचित्तमिश्रैरुन्मिश्रे चतुर्भङ्गथः, संहृतोन्मिश्रयोर्विशेषः, आर्द्रशुष्कस्तोकबहुचतुर्भङ्गथः, कल्प्याकल्प्यविधिश्च १६५

६०९-६१२ अपरिणते द्रव्ये षट् कायाः, भावे दातृगृहीत्रोः १६६

६१३-६२६ लिप्ते दध्यादिलेपोऽपि वर्ज्यः, नित्यतपसा संयमादिहानेर्भोजनं, षण्मास्याचाम्लैर्भोजनं, महाराष्ट्रादिवत् अलेपेन यापना, तक्रादीनां, ग्रहणं, शीता आहारोपधिशय्याः, अलेपा-

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६७ ॥

ल्पबहुलेपद्रव्यादि, संसृष्टहस्तामत्र-सावशेषद्रव्यैर्भङ्गाः १६९

६२७-६२८ छर्दिते शीतोष्णमिश्रचतुर्भङ्ग्य-स्तद्दोषाश्च, शीतोष्णच्छर्दिते कायदाह-षट्कायविराधनाः, मधुबिन्दुदृष्टान्तः १७०

॥ इत्येषणादोषाः ॥

॥ अथ ग्रासैषणादोषाः ॥

६२९-६३५ ग्रासेषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये मत्स्यदृष्टान्तः, भावे संयोजनाद्याः, अर्थसिद्धये चरितकल्पिताहरणे, साधोरात्मानुशासनम् १७२

६३६-६४१ द्रव्यसंयोजना बहिः, पात्रकवलवदनेष्वन्तः, रसहेतौ दोषः, अपवादश्च १७३

६४२-६४३ पुरुषादेराहारप्रमाणं यात्रामात्राहारश्च मुनिः

६४४-६५४ अतिबहुकमतिबहुशः प्रकामनिकामाभ्यां प्रमाणं, हीनादिभोजने गुणाः, हितमितस्वरूपं, कालापेक्षयाऽऽहारमानम् १७५

६५५-६६० साङ्गारसधूमौ तद्दोषाश्च १७६

६६१-६७१ क्षुद्वेदनादीनि कारणानि, आतङ्कादीनि न्यूनाहारकारणानि, उपसंहारः, धर्मावश्यकयोगानामहानिः प्रयोजनं, सूत्रविधिना विराधना निर्जराफला १७९

॥ इति ग्रासैषणादोषाः ॥

॥ इति पिण्डनिर्युक्तिः ॥

पिण्डनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः.

॥ १६७ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ उत्तराध्ययने बृहद्विषयानुक्रमः ॥

	मङ्गलम् । उपोद्घातः । फलयोगमङ्गलादि ३	१२	श्रुतस्कन्धनिक्षेपातिदेशो, नामाधिकाराणां प्रतिज्ञा च ९	३०	संयोगे निक्षेपषट्कं द्रव्ये द्विधात्वम् । (नामादिव्याख्याविधिस्थापना) २३
१-२	उत्तरनिक्षेपाः (१५), जघन्यादेः सोत्तरानुत्तरत्वे ५	१३-२६	अध्ययननामानि सर्वाध्ययनाधिकारः	३१	संयुक्तकसंयोगत्रैविध्यम्
३	उत्तराध्ययनत्वे हेतुः ५	२७	पिण्डार्थोपसंहारः, एकैकाध्ययनप्रतिज्ञा च १०	३२	मूलाद्यैर्द्रुमादेः सचित्तसंयुक्तकसंयोगः २४
४	अङ्गादिप्रभवत्वम् ६	२८	विनयश्रुतस्योपक्रमादिद्वारातिदेशः (अनुयोगद्वारवर्णनं) १५	३३	अण्वादेरचित्तसंयुक्तकसंयोगः २५
५-११	अध्ययनादीनां निक्षेपचतुष्कम्, नोआगमभावाध्ययनव्याख्या, दीपदृष्टान्तावाक्षीणता, भावायः, तदेकार्थिकानि च, वस्तुस्य द्रव्यक्षपणा, त्रिधा भावक्षपणा ८	२९	विनयनिक्षेपातिदेशः श्रुतनिक्षेपचतुष्के द्रव्यभावौ च १८	३४	जीवकर्मणोर्मिश्रसंयुक्तकसंयोगः
		१*	साधुविनयकथनप्रतिज्ञा (संहितादिव्याख्या) २१	३५	परमाणुप्रदेशाभिप्रेतानभिप्रेताभिलापैरितरेतरसंयोगः
				३६	संस्थानस्कन्धभेदेन परमाणुसंयोगः २६
				३७	स्कन्धभावे हेतुः २७

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

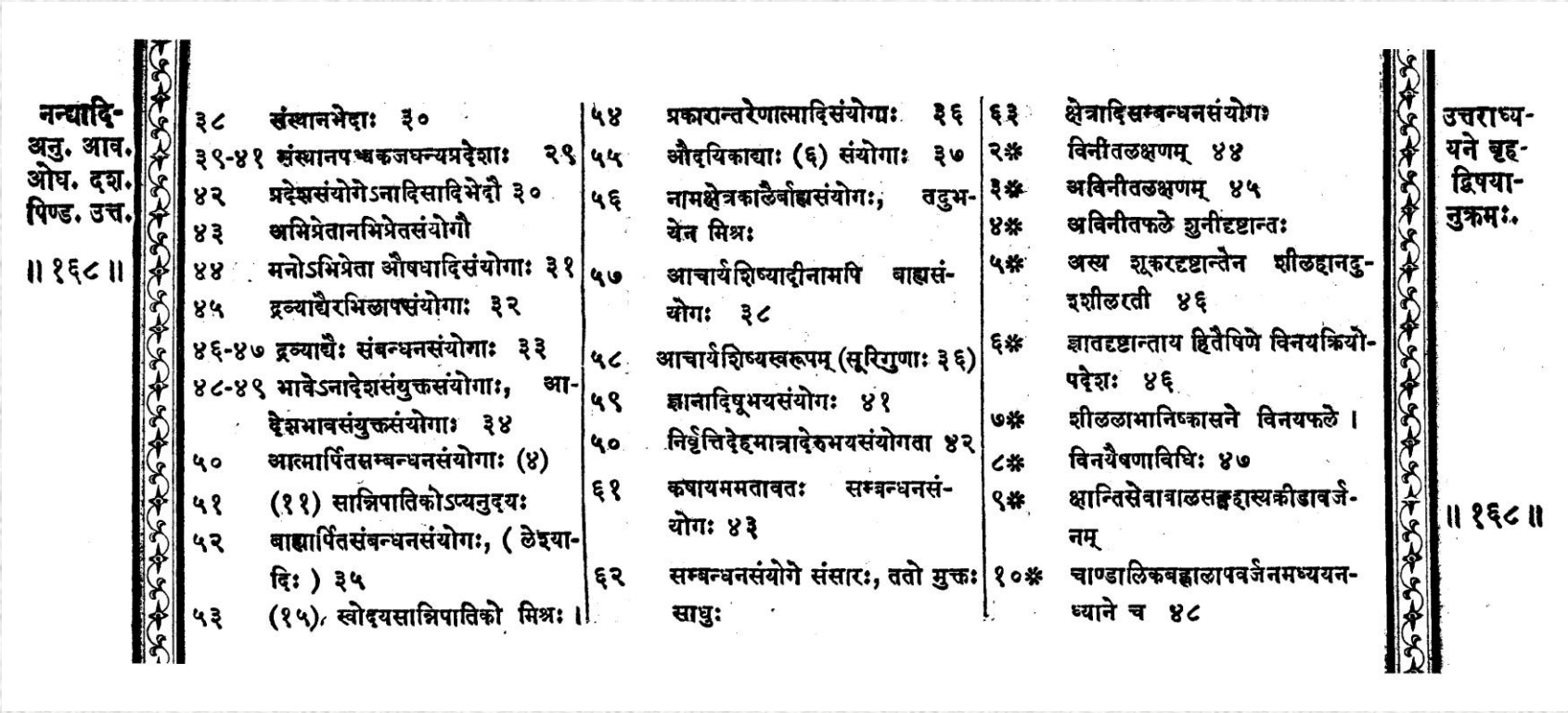
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्दादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १६८ ॥

३८ संस्थानभेदाः ३०
३९-४१ संस्थानपञ्चकजघन्यप्रदेशाः २९
४२ प्रदेशसंयोगेऽनादिसादिभेदौ ३०
४३ अभिप्रेतानभिप्रेतसंयोगौ
४४ मनोऽभिप्रेता औषधादिसंयोगाः ३१
४५ द्रव्याद्यैरभिलाप्यसंयोगाः ३२
४६-४७ द्रव्याद्यैः संबन्धनसंयोगाः ३३
४८-४९ भावेऽनादेशसंयुक्तसंयोगाः, आदेशभावसंयुक्तसंयोगाः ३४
५० आत्मार्पितसम्बन्धनसंयोगाः (४)
५१ (११) सान्निपातिकोऽप्यनुदयः
५२ बाह्यार्पितसंबन्धनसंयोगाः, (लेश्यादिः) ३५
५३ (१५) स्वोदयसान्निपातिको मिश्रः ।
५४ प्रकारान्तरेणात्मादिसंयोगाः ३६
५५ औदयिकाद्याः (६) संयोगाः ३७
५६ नामक्षेत्रकालैर्बाह्यसंयोगः, तदुभयेन मिश्रः
५७ आचार्यशिष्यादीनामपि बाह्यसंयोगः ३८
५८ आचार्यशिष्यस्वरूपम् (सूरिगुणाः ३६)
५९ ज्ञानादिष्वुभयसंयोगः ४१
५० निर्वृत्तिदेहमात्रादेरुभयसंयोगता ४२
६१ कषाययममतावतः सम्बन्धनसंयोगः ४३
६२ सम्बन्धनसंयोगे संसारः, ततो मुक्तः साधुः
६३ क्षेत्रादिसम्बन्धनसंयोगः
२* विनीतलक्षणम् ४४
३* अविनीतलक्षणम् ४५
४* अविनीतफले शुनीदृष्टान्तः
५* अस्य शूकरदृष्टान्तेन शीलहानदुश्शीलरती ४६
६* ज्ञातदृष्टान्ताय हितैषिणे विनयक्रियोपदेशः ४६
७* शीललाभानिष्कासने विनयफले ।
८* विनयैषणाविधिः ४७
९* क्षान्तिसेवाबालसङ्गहास्यक्रीडावर्जनम्
१०* चाण्डालिकबह्वालापवर्जनमध्ययनध्याने च ४८

उत्तराध्ययने बृहद्विषयानुक्रमः.

॥ १६८ ॥

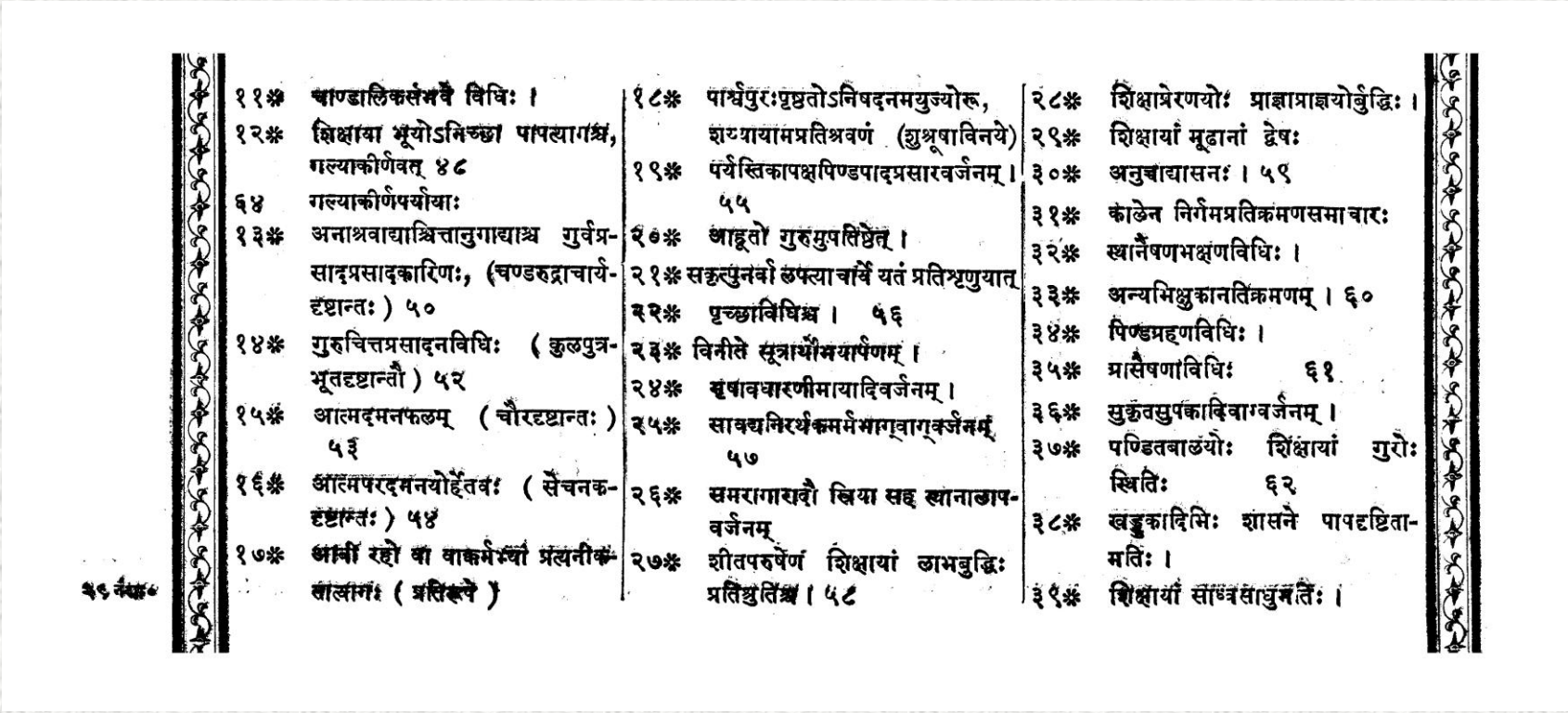
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



११* चाण्डालिकसंभवे विधिः ।
१२* शिक्षाया भूयोऽनिच्छा पापत्यागश्च, गल्याकीर्णवत् ४८
६४ गल्याकीर्णपर्यायाः
१३* अनाश्रवाद्याश्चित्तानुगाद्याश्च गुर्वप्रसादप्रसादकारिणः, (चण्डरुद्राचार्यदृष्टान्तः) ५०
१४* गुरुचित्तप्रसादनविधिः (कुलपुत्रभूतदृष्टान्तौ) ५२
१५* आत्मदमनफलम् (चौरदृष्टान्तः) ५३
१६* आत्मपरदमनयोर्हेतवः (सेचनकदृष्टान्तः) ५४
१७* आर्यां रहो वा वाचमश्रौषीत् प्रत्यनीकतात्यागः (प्रतिरूपे)
१८* पार्श्वपुरःपृष्ठतोऽनिषदनमयुज्योरू, शय्यायामप्रतिश्रवणं (शुश्रूषाविनये)
१९* पर्यस्तिकापक्षपिण्डपादप्रसारवर्जनम् । ५५
२०* आहूतो गुरुमुपतिष्ठेत् ।
२१* सकृत्पुनर्वा लप्त्या चार्वे यतं प्रतिशृणुयात्
२२* पृच्छाविधिश्च । ५६
२३* विनीते सूत्रार्थौभयार्पणम् ।
२४* मृषावधारणीमायादिवर्जनम् ।
२५* सावद्यनिरर्थकमर्मभाग्वाग्वर्जनम् ५७
२६* समरागारादौ स्त्रिया सह स्थानालापवर्जनम्
२७* शीतपरुषेण शिक्षायां लाभबुद्धिः प्रतिश्रुतिश्च । ५८
२८* शिक्षाप्रेरणयोः प्राज्ञाप्राज्ञयोर्बुद्धिः ।
२९* शिक्षायां मूढानां द्वेषः
३०* अनुचाद्यासनः । ५९
३१* कालेन निर्गमप्रतिक्रमणसमाचारः
३२* स्थानैषणभक्षणविधिः ।
३३* अन्यभिक्षुकानतिक्रमणम् । ६०
३४* पिण्डग्रहणविधिः ।
३५* ग्रासैषणाविधिः ६१
३६* सुकृतसुपक्वादिवाग्वर्जनम् ।
३७* पण्डितबालयोः शिक्षायां गुरोः स्थितिः ६२
३८* खड्डुकादिभिः शासने पापदृष्टितामतिः ।
३९* शिक्षायां साध्वसाधुमतिः ।

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

नन्द्यादि-अनु.आव.ओघ.दश.पिण्ड.उत्त.

॥ १६९ ॥

४०* आचार्यात्मनोरकोपनमुपघाततोत्रगवेषितावर्जनं च। (अनशन्याचार्यदृष्टान्तः) ६३
४१* आचार्यकोपे शिष्यविधिः ६४
४२* क्षान्त्याद्याचरिताचरणेऽगर्हा।
४३* आचार्यमनोवाग्गतस्योपपादनम्।
४४* नोदनानोदनयोर्यथोपदिष्टकृत्यकारी। ६५
४५* विनयात्प्राज्ञानां फलम्।
४६* विनयप्रसन्नात्पूज्यात्फलम्।
४७* पूज्यशास्त्रस्यैहिकं फलम् ६६
४८* विनीतस्यैहिकामुष्मिकं फलम् ६७
(नयज्ञानक्रियाविशेषविचारः) ७१
॥ इति विनयाध्ययनम् ॥ १ ॥

अथ परीषहाध्ययनम् ॥ २ ॥
६५-६७ परीषहनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते कर्मनोकर्मभेदौ, कर्मण्यनुदयश्च, नोकर्मणि भेदत्रयं, भावे कर्मोदयः ७३
६८ परीषहाध्ययने कुतः कस्येत्यादीनि १३ द्वाराणि
६९ कर्मप्रवादसूत्रताऽध्ययनस्य।
७० ऋजुसूत्रान्ताः त्रिषु, संयते शब्दः परीषहमानी ७४
७१ नैगमे भङ्गाष्टकं,सङ्ग्रहे जीवनोजीवौ, व्यवहारे नोजीवः, (शेषाणां जीवः परीषहः ७५
७२ प्रकृतिपुरुषयोः समवतारप्रतिज्ञा।
७३ परीषहाधारा मूलप्रकृतयः
७४-७८ भेदे परीषहाणां कर्मण्यवतारः ७६
७९ गुणस्थाने परीषहावतारः।
८० त्रयाणामग्रहणाभोजने, ऋजुसूत्राणां प्रासुकेऽध्यासना ७७
८१ आद्यस्य हेतुः, द्वयोर्वेदना, ऋजोर्जीवः, शेषाणामात्मा परीषहः।
८२ युगपत्परीषहसंख्या ७८
८३ वर्षाग्रं त्रयाणां, ऋजोरन्तर्मुहूर्तं, शब्दस्य समयं परीषहः।
८४ कण्ड्वाद्या वेदनाः सप्तवर्षशतीम्। (सनत्कुमारदृष्टान्तः)
८५ चतुर्णां लोकसंस्तारयोः, शेषाणामात्मनि परीषहः। ७९
८६ उद्देशपृच्छानिर्देशाः।

उत्तराध्ययने विनयाध्य. परीषहाध्य.

॥ १६९ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

१ सू. उद्देशपृच्छानिर्देशैः सूत्रस्पर्शने परीषहाः (२२) (वक्तृता, गुरुकुलवास-पौरुषेयतासिद्धिः) ८३

४९* परीषहकथनप्रतिज्ञा।

५०-५१* क्षुधापरीषहः,

८७-८८ परीषह (२३) दृष्टान्तसूचा। ८४

८९ हस्तिभूतिक्षुल्लकदृष्टान्तः (१) ८६

५२-५३*९० पिपासापरीषहः, धनशर्म-दृष्टान्तः (२) ८८

५४-५५*९१ शीतपरीषहः । वैभारगिरि-समीपवर्त्तिभद्रबाहुशिष्यचतुष्कदृष्टान्तः (३) ८९

५६-५७*९२ उष्णपरीषहः । अर्हन्नकदृष्टान्तः । (४) ९१

५८-५९*९३ दंशमशकपरीषहः । सुमनोभद्रदृष्टान्तः (५) ९२

६०-६१*९४-९७ अचेलकपरीषहः । (दिगम्बरनिराकरणं) सोमदेवदृष्टान्तः । (६) ९८

६२-६३*९८-९९ अरतिपरीषहः, तत्सहनोपायश्च, युवराजमित्रपुरोहित-दृष्टान्तः (७) १०३

६४-६५*१००-१०५ स्त्रीपरीषहः । पाटलिपुत्रे स्थूलभद्रदृष्टान्तः (८)१०७

६६-६७*१०६ चर्यापरीषहः । सङ्गमशिष्यदत्तदृष्टान्तः (९) १०८

६८-६९*१०७ नैषेधिकीपरीषहः । कुरुदत्तदृष्टान्तः । (१०) ११०

७०-७१*१०८-१०९ शय्यापरीषहः । सोमदत्तसोमदेवदृष्टान्तः । (११)१११

७२-७३*११० आक्रोशपरीषहः । अर्जुनमालाकारदृष्टान्तः (१२) ११४

७४-७५*१११-११३ वधपरीषहः, स्कन्दकतच्छिष्यदृष्टान्तः (१३) ११६

७६-७७*११३॥ याच्ञापरीषहः । बलदेवदृष्टान्तः (१४) ११७

७८-७९*११४ अलाभपरीषहः । ढंढणदृष्टान्तः (१५) ११९

८०-८१*११५ रोगपरीषहः । कालवेशिकदृष्टान्तः (१६) १२१

८२-८३*११६ तृणस्पर्शपरीषहः । भद्रकुमारदृष्टान्तः (१७) १२२

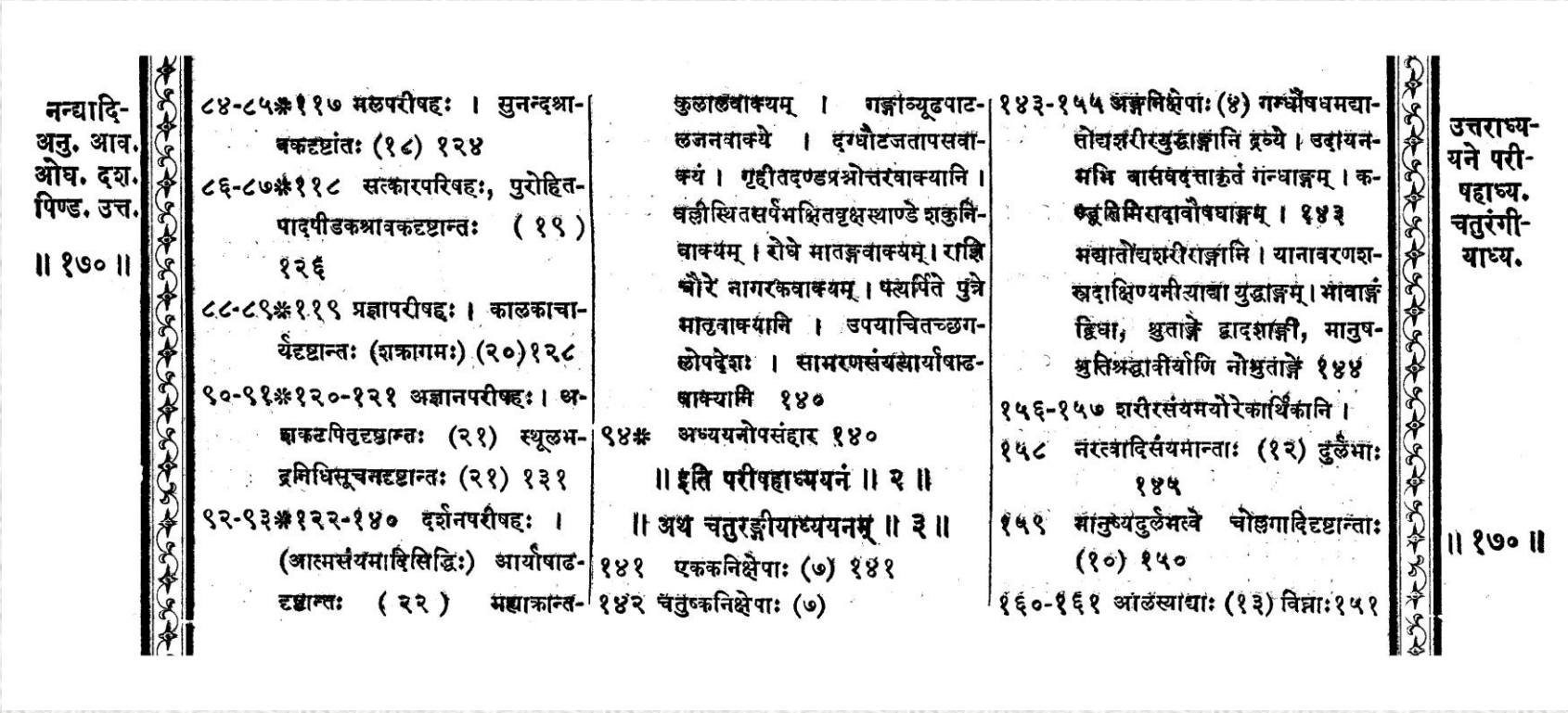
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७० ॥

८४-८५*११७ मलपरीषहः । सुनन्दश्रावकदृष्टांतः (१८) १२४
८६-८७*११८ सत्कारपरिषहः, पुरोहितपादपीडकश्रावकदृष्टान्तः (१९) १२६
८८-८९*११९ प्रज्ञापरीषहः । कालकाचार्यदृष्टान्तः (शक्रागमः) (२०)१२८
९०-९१*१२०-१२१ अज्ञानपरीषहः । अश्वकदृष्टान्तः (२१) स्थूलभद्रनिधिसूचनदृष्टान्तः (२१) १३१
९२-९३*१२२-१४० दर्शनपरीषहः । (आत्मसंयमादिसिद्धिः) आर्याषाढदृष्टान्तः (२२) मद्याक्रान्तकुलालवाक्यम् । गङ्गाव्यूढपाटलजनवाक्ये । दग्धौटजतापसवाक्यं । गृहीतदण्डप्रश्नोत्तरवाक्यानि । वल्मीस्थितसर्पभक्षितवृक्षस्थाण्डे शकुनिवाक्यम् । रोधे मातङ्गवाक्यम् । राज्ञि चौरे नागरकवाक्यम् । पत्यर्पिते पुत्रे मातृवाक्यानि । उपयाचितच्छगलोपदेशः । सामरणसंयम्यार्याषाढवाक्यानि १४०
९४* अध्ययनोपसंहार १४०

॥ इति परीषहाध्ययनं ॥ २ ॥

॥ अथ चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥

१४१ एककनिक्षेपाः (७) १४१
१४२ चतुष्कनिक्षेपाः (७)
१४३-१५५ अङ्गनिक्षेपाः (४) गन्धौषधमद्यातोद्यशरीरयुद्धाङ्गानि द्रव्ये । उदायनमभि वासवदत्ताकृतं गन्धाङ्गम् । कङ्कूलिमिरादावौषधाङ्गम् । १४३ मद्यातोद्यशरीराङ्गानि । यानावरणशस्त्रदाक्षिण्यमीत्याद्या युद्धाङ्गम् । भावाङ्गं द्विधा, श्रुताङ्गे द्वादशाङ्गी, मानुषश्रुतिश्रद्धावीर्याणि नोश्रुताङ्गे १४४
१५६-१५७ शरीरसंयमयोरेकार्थिकानि ।
१५८ नरत्वादिसंयमान्ताः (१२) दुर्लभाः १४५
१५९ मानुष्यदुर्लभत्वे चोल्लगादिदृष्टान्ताः (१०) १५०
१६०-१६१ आलस्याद्याः (१३) विघ्नाः१५१

उत्तराध्ययने परीषहाध्य. चतुरंगीयाध्य. ॥ १७० ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

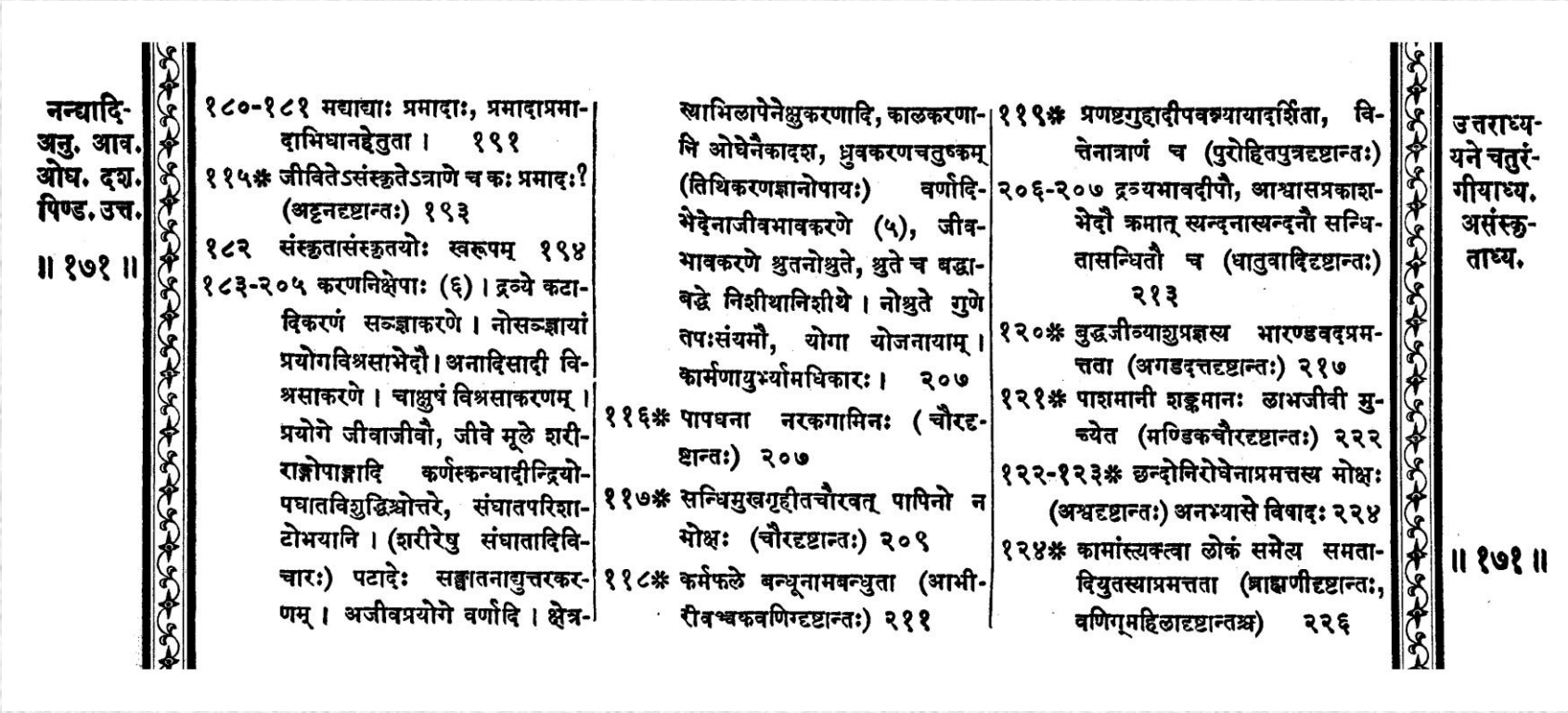
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

१६२-१६३ मिथ्यात्वादश्रद्धा, गुरुनियोगाऽनाभोगाभ्यां वाऽतत्त्वश्रद्धा १५२
१६४ निह्नववक्तव्यताप्रतिज्ञा १५२
१६५-१६६ निह्नवदृष्टीनामाद्याः पुरुषाः(७) १५३
१६७ जमालेरधिकारः (१) १५७
१६८ अन्यप्रदेशजीववादितिष्यगुप्ताधिकारः (२) १६०
१६९ अव्यक्तवाद्याषाढशिष्याधिकारः (३) १६२
१७० सामुच्छेद्यश्वमित्राधिकारः (४) १६५
१७१ द्वैक्रियाऽऽर्यगङ्गाधिकारः (५) १६८
१७२-१७४ षडुलूकत्रैराशिकाधिकारः (६) परिव्राजकविद्यास्तत्प्रतिपक्षविद्याश्च १७२
१७५-१७७ अबद्धिकगोष्ठामाहिलाधिकारः । (७) अबद्धताप्रतिपादनम् । अपरिमाणप्रत्याख्यानम्(१२ संभोगाः)१७८
१७८-१-२+ दिगम्बराधिकारः (८) दिगम्बरमततत्परम्परामूले १८१
९५-९६* चतुरङ्गीदुर्लभता । नानाकर्मजनानाजातिषु भ्रमान्मनुष्यत्वदुर्लभता १८२
९७* देवनरकासुरेषु भ्रमाच्च
९८* क्षत्रियचाण्डालादिषु भ्रमणादपि
९९-१००* कर्मणोऽनिर्वेदः संसारभ्रमश्च । १८३
१०१* लघुकर्मणः शुद्धस्य नरत्वम् १८४
१०२* तपःक्षान्त्यहिंसादरार्यं श्रुतेर्दुर्लभता
१०३* श्रवणेऽपि श्रद्धा दुर्लभा १८५
१०४* श्रुतिश्रद्धयोर्वीर्यस्य दुर्लभता ।
१०५* लब्धचतुरङ्गस्य कर्मनाशः ।
१०६* तस्यैव शुद्धिर्धर्मो निर्वाणं च १८६
१०७* ऐहिकामुष्मिकफलेन शिष्योपदेशः ।
१०८-१०९* मुक्तत्वभावे श्रेष्ठदेवत्वम् १८७
११०-११२* च्युतस्य दशाङ्गे कुले मानुष्यं, दशाङ्गानि च १८८
११३-११४* पुनर्मानुष्ये भोगाः बोधिः संयमः सिद्धिश्च १८९
॥ इति चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥
॥ अथासंस्कृताध्ययनम् ॥
१७९ प्रमादाप्रमादयोर्निक्षेपचतुष्कं १९०

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १७१ ॥

१८०-१८१ मद्याद्याः प्रमादाः, प्रमादाप्रमादाभिधानहेतुता । १९१

११५* जीविते ऽसंस्कृते ऽत्राणे च कः प्रमादः? (अट्टनदृष्टान्तः) १९३

१८२ संस्कृतासंस्कृतयोः स्वरूपम् १९४

१८३-२०५ करणनिक्षेपाः (६) । द्रव्ये कटादिकरणं सञ्ज्ञाकरणे । नोसञ्ज्ञायां प्रयोगविश्रसाभेदौ । अनादिसादी विश्रसाकरणे । चाक्षुषं विश्रसाकरणम् । प्रयोगे जीवाजीवौ, जीवे मूले शरीराङ्गोपाङ्गादि कर्णस्कन्धादीन्द्रियोपघातविशुद्धिश्चोत्तरे, संघातपरिशाटोभयानि । (शरीरेषु संघातादिविचारः) पटादेः सङ्घातनाद्युत्तरकरणम् । अजीवप्रयोगे वर्णादि । क्षेत्रस्याभिलापेनेक्षुकरणादि, कालकरणानि ओघेनैकादश, ध्रुवकरणचतुष्कम् (तिथिकरणज्ञानोपायः) वर्णादिभेदेनाजीवभावकरणे (५), जीवभावकरणे श्रुतनोश्रुते, श्रुते च बद्धाबद्धे निशीथानिशीथे । नोश्रुते गुणे तपःसंयमौ, योगा योजनायाम् । कार्मणायुर्भ्यामधिकारः । २०७

११६* पापधना नरकगामिनः (चौरदृष्टान्तः) २०७

११७* सन्धिमुखगृहीतचौरवत् पापिनो न मोक्षः (चौरदृष्टान्तः) २०९

११८* कर्मफले बन्धूनामबन्धुता (आभीरीवभ्रकवणिग्दृष्टान्तः) २११

११९* प्रणष्टगुहादीपवत्क्षयादर्शिता, वित्तेनात्राणं च (पुरोहितपुत्रदृष्टान्तः)

२०६-२०७ द्रव्यभावदीपौ, आश्वासप्रकाशभेदौ क्रमात् स्यन्दनास्यन्दनौ सन्धितासन्धितौ च (धातुवादिदृष्टान्तः) २१३

१२०* बुद्धजीव्याशुप्रज्ञस्य भारण्डवदप्रमत्तता (अगडदत्तदृष्टान्तः) २१७

१२१* पाशमानी शङ्कमानः लाभजीवी मुच्येत (मण्डिकचौरदृष्टान्तः) २२२

१२२-१२३* छन्दोनिरोधेनाप्रमत्तस्य मोक्षः (अश्वदृष्टान्तः) अनभ्यासे विषादः २२४

१२४* कामांस्त्यक्त्वा लोकं समेत्य समतादियुतस्याप्रमत्तता (ब्राह्मणीदृष्टान्तः, वणिग्महिलादृष्टान्तश्च) २२६

उत्तराध्ययने चतुरंगीयाध्य. असंस्कृताध्य.

॥ १७१ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

१२५-१२७* मोहगुणेषु रागद्वेषत्यागः कषायत्यागश्च। मृत्युं यावत्प्रेमद्वेषानुगमतजुगुप्सा २२८

॥ इत्यसंस्कृताध्ययनम् ॥ ४ ॥

भाग २ ॥ अथाकाममरणाध्ययनम् ॥

२०८ कामनिक्षेपाः (४) मरणनिक्षेपाः(६) अभिप्रेतकामैः प्रकृतम् २२९

२०९ द्रव्यभावमरणे, भावे ओघभवतद्भविकानि वा २३०

२१०-२११ मरणे विभक्तयनुभागप्रदेशाग्रादीनि (८) द्वाराणि

२१२-२१३ आवीच्यादिका मरणभेदाः(१७) २३१

२१४-२२४ नामविभागकथनप्रतिज्ञा, आवीचेर्लक्षणं भेदपञ्चकं च। अवध्यात्यन्तिकबलन्मरणानि। अन्तःशल्यमरणं, तत्फलं च। तद्भवबालपण्डितमिश्रच्छद्मस्थकेवलिवैहायसगृध्रपृष्ठमरणानि। २३५

२२५ भक्तपरिज्ञेङ्गिनीपादपोपगमनानि २३७

२२६ अनुभावेषूपक्रमेतरौ, आयुःप्रदेशाश्च।

२२७-२३० एकसमयमरणसंख्या (५), भवचक्रे एकैकमरणसङ्ख्या २३९

२३१-२३२ अनादिमेषु मरणेष्वनन्तो भागः, आद्यमनुसमयं, प्रथमचरमयोर्नान्तरम्, आद्यमनादि २४०

२३३ उपसंहार औद्धत्यपरिहारश्च।

२३४ भक्तपरिज्ञादीनां (३) श्रेष्ठता २४१

२३५ मनुष्यसकाममरणाभ्यामधिकारः

१२८* तार्येऽर्णवे प्रश्नः

१२९* सकामाकाममरणे। २४२

१३०* बालानामकाममसकृत्, पण्डितानां सकामं सकृत्।

१३१-१४४* कामगृद्धक्रूरकृतनास्तिकैहिककामाभिलाषिशङ्कितपरलोको लोकदर्शी त्रसस्थावरहिंसको (पशुपालदृष्टान्तः) मायी सुरामांसभोजी गृद्धो द्विधामलसंचयी आतङ्के भीतः कर्मानुप्रेक्षी प्रगाढनरकानुप्रेक्षी पश्चात्तापवान् भग्नशकटवत् प्रतिपन्नाधर्म-

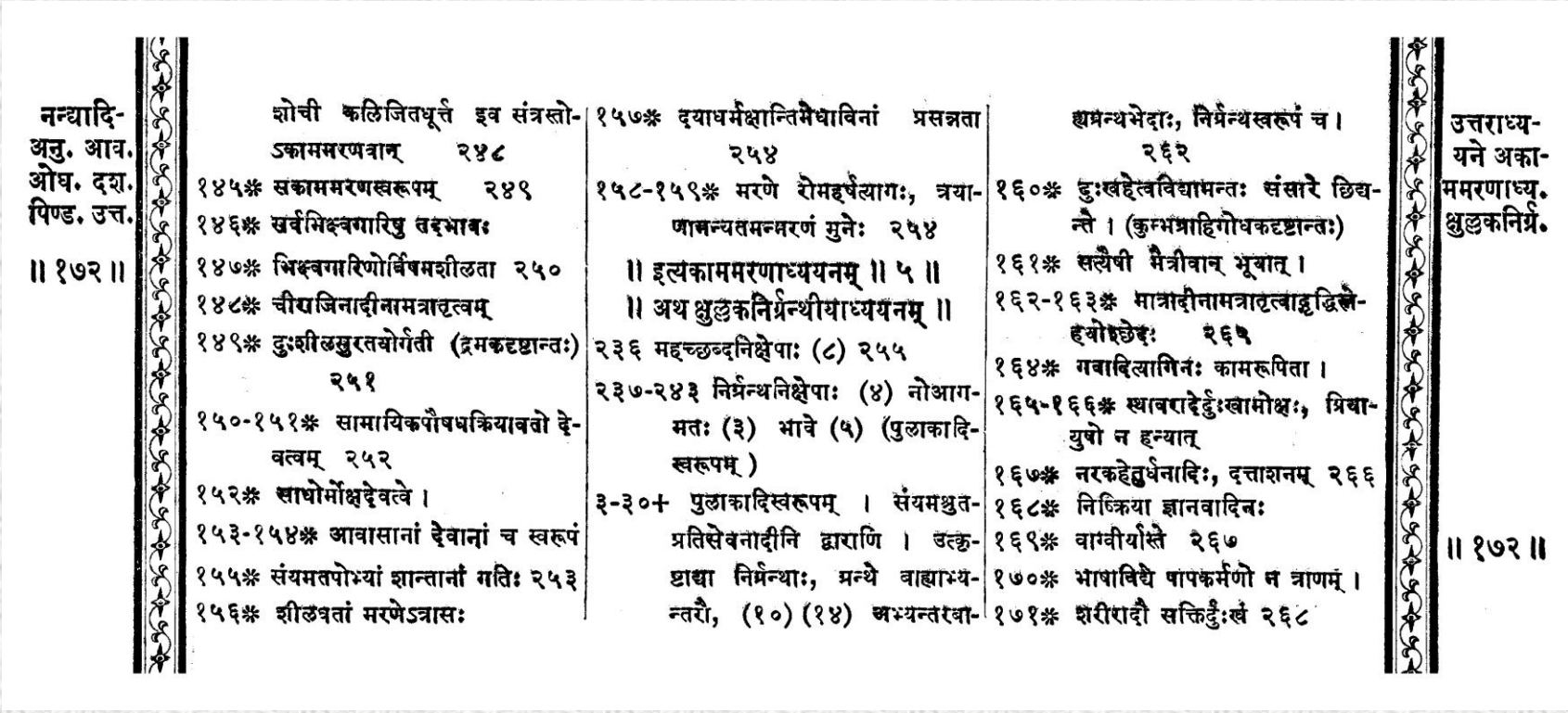
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७२ ॥

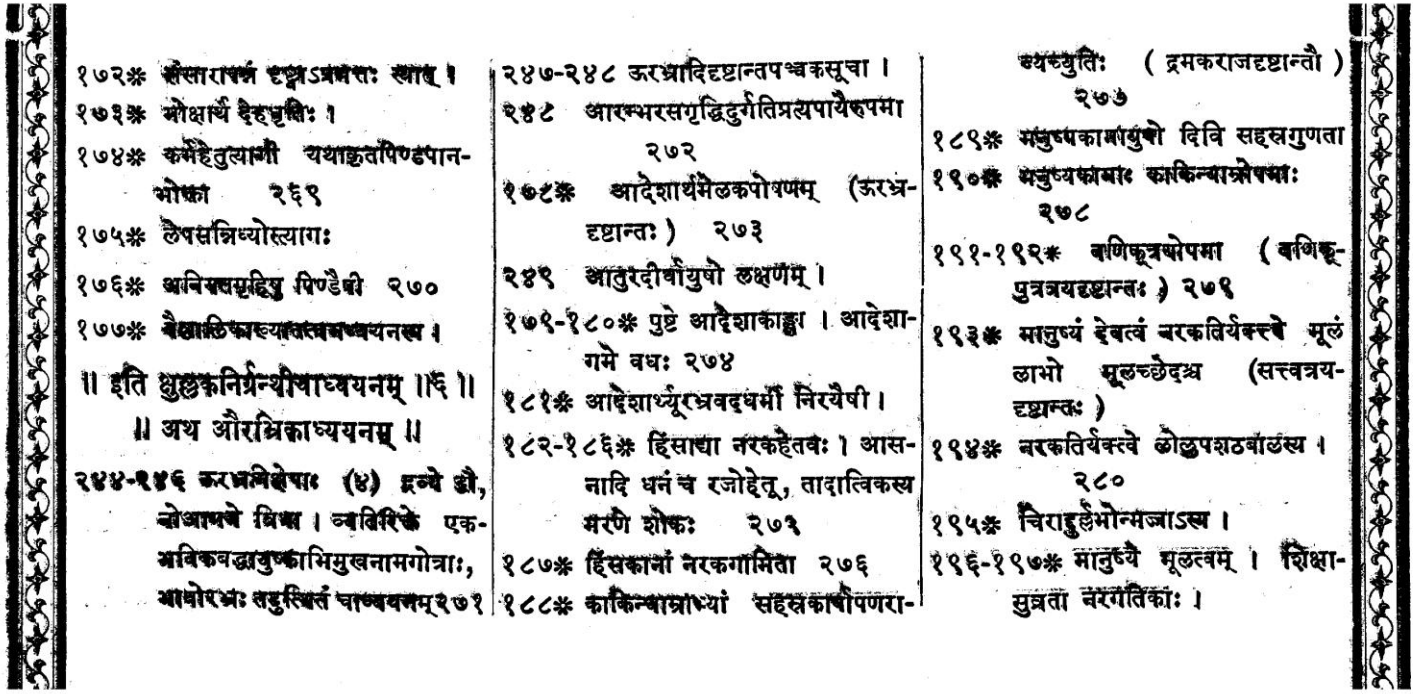
शोची कलिजितधूर्त्त इव संत्रस्तोऽकाममरणवान् २४८
१४५* सकाममरणस्वरूपम् २४९
१४६* सर्वभिक्ष्वगारिषु तदभावः
१४७* भिक्ष्वगारिणोर्विषमशीलता २५०
१४८* चीराजिनादीनामत्रातृत्वम्
१४९* दुःशीलसुरतयोर्गती (द्रमकदृष्टान्तः) २५१
१५०-१५१* सामायिकपौषधक्रियावतो देवत्वम् २५२
१५२* साधोर्मोक्षदेवत्वे ।
१५३-१५४* आवासानां देवानां च स्वरूपं
१५५* संयमतपोभ्यां शान्तानां गतिः २५३
१५६* शीलवतां मरणेऽत्रासः
१५७* दयाधर्मक्षान्तिमेधाविनां प्रसन्नता २५४
१५८-१५९* मरणे रोमहर्षत्यागः, त्रयाणामन्यतमन्मरणं मुनेः २५४
॥ इत्यकाममरणाध्ययनम् ॥ ५ ॥
॥ अथ क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥
२३६ महच्छब्दनिक्षेपाः (८) २५५
२३७-२४३ निर्ग्रन्थनिक्षेपाः (४) नोआगमतः (३) भावे (५) (पुलाकादिस्वरूपम्)
३-३०+ पुलाकादिस्वरूपम् । संयमश्रुतप्रतिसेवनादीनि द्वाराणि । उत्कृष्टाद्या निर्ग्रन्थाः, ग्रन्थे बाह्याभ्यन्तरौ, (१०) (१४) अभ्यन्तरबाह्यग्रन्थभेदाः, निर्ग्रन्थस्वरूपं च । २६२
१६०* दुःखहेत्वविधायन्तः संसारे छिद्यन्ते । (कुम्भभ्राहिगोधकदृष्टान्तः)
१६१* सत्यैषी मैत्रीवान् भूयात् ।
१६२-१६३* मात्रादीनामत्रातृत्वाद्बुद्धिस्नेहयोश्छेदः २६५
१६४* गवादित्यागिनः कामरूपिता ।
१६५-१६६* स्थावरादेर्दुःखामोक्षः, प्रियायुषो न हन्यात्
१६७* नरकहेतुर्धनादिः, दत्ताशनम् २६६
१६८* निष्क्रिया ज्ञानवादिनः
१६९* वाग्वीर्यास्ते २६७
१७०* भाषाविद्ये पापकर्मणो न त्राणम् ।
१७१* शरीरादौ सक्तिर्दुःखं २६८

उत्तराध्ययने अकाममरणाध्य. क्षुल्लकनिर्ग्र. ॥ १७२ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

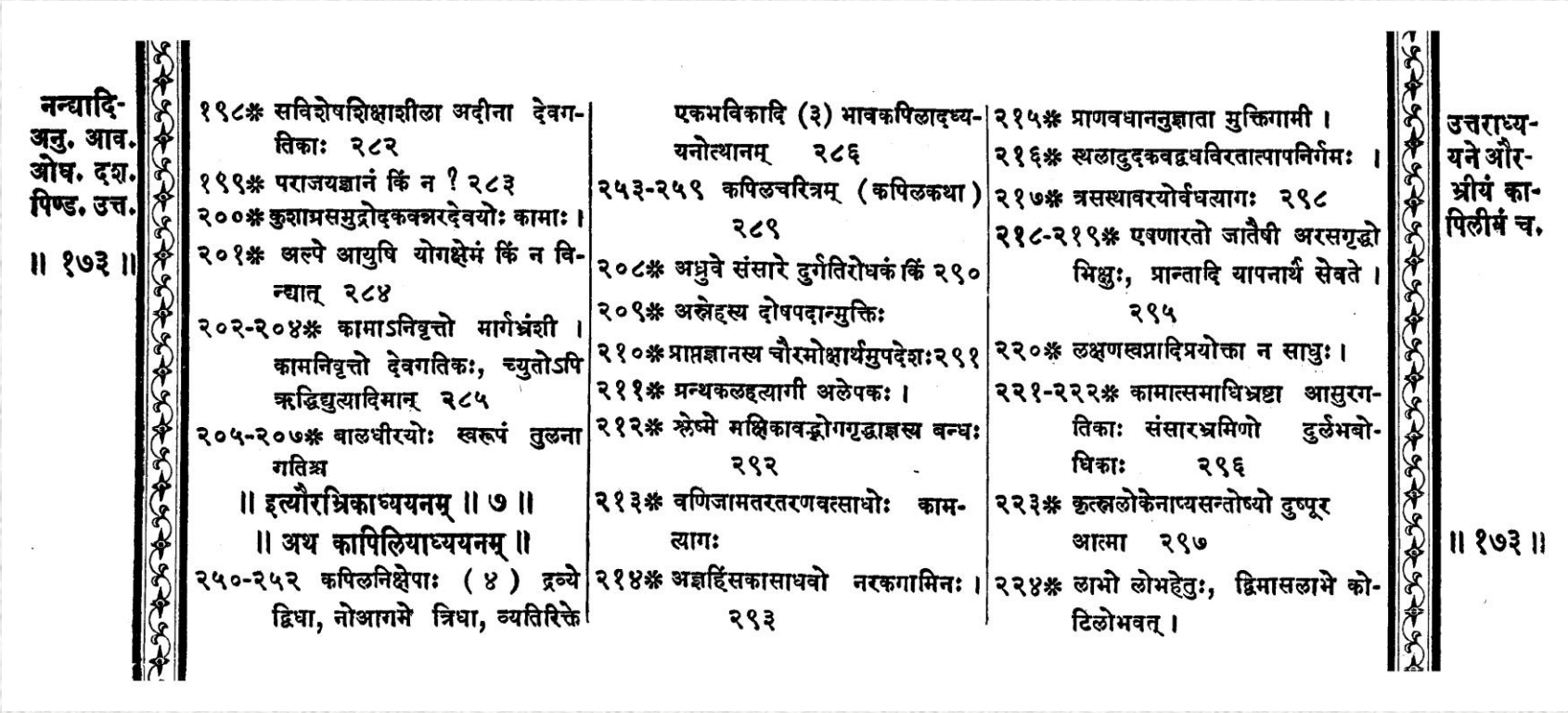


१७२* संसारार्णव दृष्टोऽप्रमत्तः स्यात् ।
१७३* मोक्षार्थं देहधृतिः ।
१७४* कर्महेतुत्यागी यथाकृतपिण्डपान-भोक्ता २६९
१७५* लेपसन्निध्योस्त्यागः
१७६* अनिस्सृष्टेषु पिण्डैषी २७०
१७७* वैक्षाटिकाख्यतत्त्वमध्ययनस्य ।
॥ इति क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥६॥
॥ अथ औरभ्रिकाध्ययनम् ॥
२४४-२४६ ऊरभ्रसमिलेषाः (४) द्रव्ये द्वौ, नोआगमे त्रिधा । व्यतिरिक्ते एक-भविकबद्धायुष्काभिमुखनामगोत्राः, आदेशभ्रः तदुत्थितं चाध्ययनम् २७१
२४७-२४८ ऊरभ्रादिदृष्टान्तपञ्चकसूचा ।
२४८ आरम्भरसगृद्धिदुर्गतिप्रत्यपायैरुपमा २७२
१७८* आदेशार्थमेलकपोषणम् (ऊरभ्र-दृष्टान्तः) २७३
२४९ आतुरदीर्घायुषो लक्षणम् ।
१७९-१८०* पुष्टे आदेशाकाङ्क्षा । आदेशा-गमे वधः २७४
१८१* आदेशार्थ्यूरभ्रवदधर्मी निरयैषी ।
१८२-१८६* हिंसाद्या नरकहेतवः । आस-नादि धनं च रजोहेतु, तादात्विकस्य मरणे शोकः २७५
१८७* हिंसकानां नरकगामिता २७६
१८८* काकिन्यास्याभ्यां सहस्रकार्षापणरा-ज्यच्युतिः (द्रमकराजदृष्टान्तौ) २७७
१८९* मनुष्यकामायुषो दिवि सहस्रगुणता
१९०* मनुष्यकामाः काकिन्यास्योपमाः २७८
१९१-१९२* वणिक्पुत्रयोपमा (वणिक्-पुत्रत्रयदृष्टान्तः) २७९
१९३* मानुष्यं देवत्वं नरकतिर्यक्त्वे मूलं लाभो मूलच्छेदश्च (सत्त्वत्रय-दृष्टान्तः)
१९४* नरकतिर्यक्त्वे लोलुपशठबालस्य । २८०
१९५* चिराद्दुर्लभोन्मज्जाऽस्य ।
१९६-१९७* मानुष्ये मूलत्वम् । शिक्षा-सूत्रता नरगतिकाः ।

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १७३ ॥

१९८* सविशेषशिक्षाशीला अदीना देवगतिकाः २८२
१९९* पराजयज्ञानं किं न ? २८३
२००* कुशाग्रसमुद्रोदकवन्नरदेवयोः कामाः ।
२०१* अल्पे आयुषि योगक्षेमं किं न विन्द्यात् २८४
२०२-२०४* कामाऽनिवृत्तो मार्गभ्रंशी । कामनिवृत्तो देवगतिकः, च्युतोऽपि ऋद्धिद्युत्यादिमान् २८५
२०५-२०७* बालधीरयोः स्वरूपं तुलना गतिश्च
॥ इत्यौरभ्रिकाध्ययनम् ॥ ७ ॥
॥ अथ कापिलियाध्ययनम् ॥
२५०-२५२ कपिलनिक्षेपाः (४) द्रव्ये द्विधा, नोआगमे त्रिधा, व्यतिरिक्ते एकभविकादि (३) भावकपिलाद्ध्ययनोत्थानम् २८६
२५३-२५९ कपिलचरित्रम् (कपिलकथा) २८९
२०८* अध्रुवे संसारे दुर्गतिरोधकं किं २९०
२०९* अश्लेहस्य दोषपदान्मुक्तिः
२१०* प्राप्तज्ञानस्य चौरमोक्षार्थमुपदेशः २९१
२११* ग्रन्थकलहत्यागी अलेपकः ।
२१२* श्लेष्मे मक्षिकावद्भोगगृद्धाज्ञस्य बन्धः २९२
२१३* वणिजामतरतरणवत्साधोः कामत्यागः
२१४* अज्ञहिंसकासाधवो नरकगामिनः । २९३
२१५* प्राणवधाननुज्ञाता मुक्तिगामी ।
२१६* स्थलादुदकवद्व्रतविरतात्पापनिर्गमः ।
२१७* त्रसस्थावरयोर्वधत्यागः २९८
२१८-२१९* एषणारतो जातैषी अरसगृद्धो भिक्षुः, प्रान्तादि यापनार्थं सेवते । २९५
२२०* लक्षणस्वप्नादिप्रयोक्ता न साधुः ।
२२१-२२२* कामात्समाधिभ्रष्टा आसुरगतिकाः संसारभ्रमिणो दुर्लभबोधिकाः २९६
२२३* कृत्स्नलोकेनाप्यसन्तोष्यो दुष्पूर आत्मा २९७
२२४* लाभो लोभहेतुः, द्विमासलाभे कोटिलोभवत् ।

उत्तराध्ययने और-भ्रीयं कापिलीयं च.

॥ १७३ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

२२५* स्त्रीषु न गृद्धयेत्, प्रलोभ्य दासवत्क्रीडन्ति ताः ।

२२६* स्त्रीत्यागी धर्मस्थो भिक्षुः २९८

२२७* कपिलाध्ययनक्रियाफलम् ।

॥ इति कापिलियाध्ययनम् ॥ ८ ॥

॥ अथ नमिप्रव्रज्याध्ययनम् ॥

२६०-२६३ नमिनिक्षेपाः (४) प्रव्रज्यानिक्षेपाः (४) द्रव्येऽन्यतीर्थिकी, भावे आरम्भपरिग्रहत्यागः २९९

२६४-२७९ प्रत्येकबुद्धास्तद्देशास्तद्बोधिहेतवश्च । नमिवृत्तान्तसूचा । समसमयं च्यवनं सिद्धिश्च प्रत्येकबुद्धानाम् । वृषभात्कलिङ्गराजबोधः । इन्द्रकेतोः पञ्चालराजस्यानित्यताविचारः । वलयशब्देभ्यो नमेः । चूताद्गान्धारस्य । त्यागिनःकः सञ्चयः? किं परकृत्यतृप्तिः ? किं गर्हा ? अहितवारणेऽदुष्टतेति । (प्रत्येकबुद्ध(४)-कथा) ३०६

२२८-२२९* नमेश्च्यवनं जातिस्मृतिः पुत्रमभिषिच्य दीक्षा ।

२३०-२३१* भुक्तभोगस्य त्यागः, राष्ट्रबलावरोधपरिजनत्यागश्च ३०७

२३२* प्रव्रजति नगर्यां कोलाहलः ।

२३३-२३४* माहनरूपेण शक्रागमनं, नगरीकोलाहलप्रासादगृहदारुणशब्दहेतुपृच्छा । ३०८

२३५-२३७* हेतुकारणचोदितनमिवाक्यं, वातह्रियमाणगन्धे वने खगाक्रन्दैः समाधानम् । ३०९

२३८-२३९* दह्यमानमन्दिरान्तःपुरोपेक्षाप्रभः । ३१०

२४०-२४१*अकिञ्चनस्य नगरीदाहे न दाहः

२४२-२४३* अपुत्रकलत्रव्यापारस्य न प्रियाप्रिये, एकत्वानुदर्शिनो भद्रं च

२४४-२४५* प्राकारगोपुरादिकरणानन्तरं व्रजेतीन्द्रवाक्यम् ३११

२४६-२४९* श्रद्धातपःक्षान्त्यादेर्नगर्यर्गलप्राकारादित्वं कृत्वा मुक्तिरिति नमिः । ३१२

२५०-२५१* प्रासादादि कृत्वा व्रजेतीन्द्रः ।

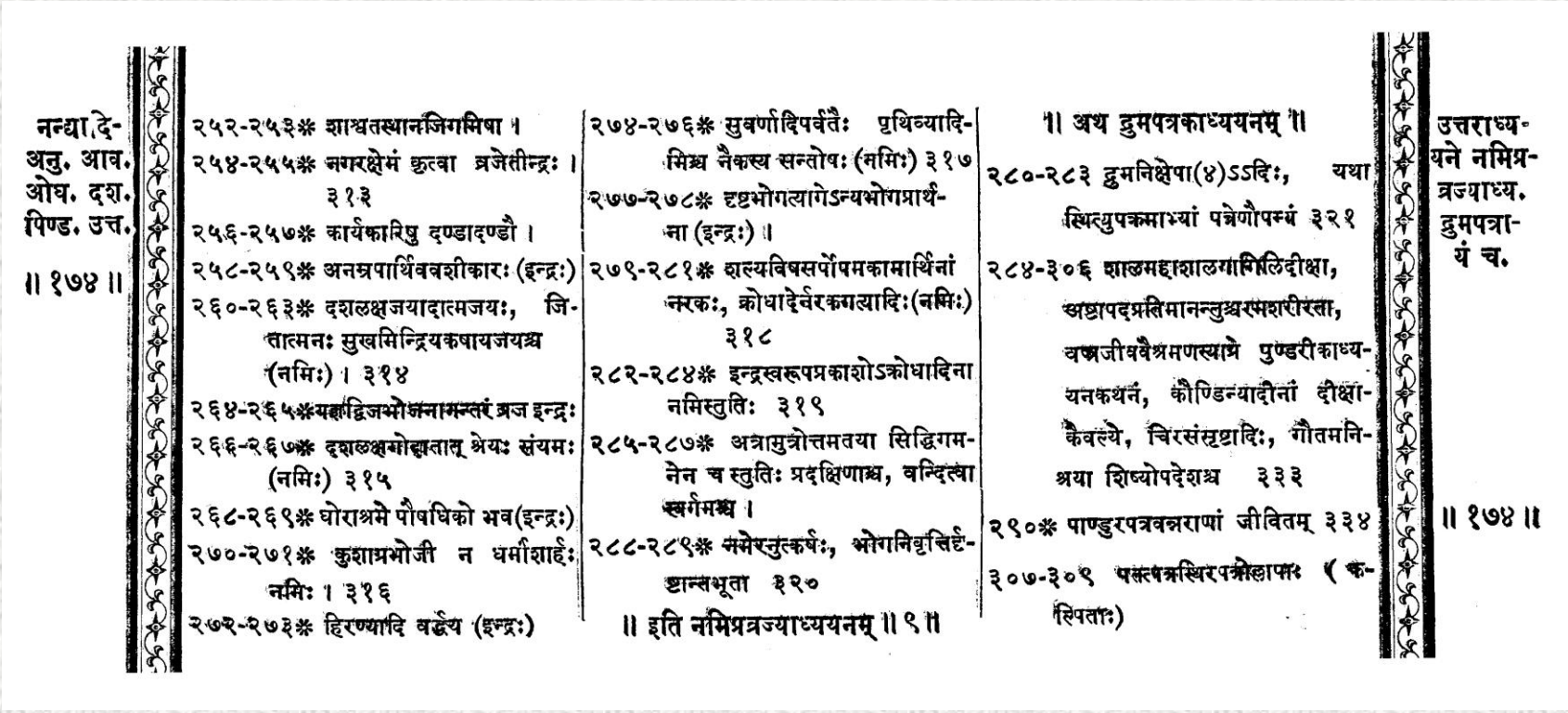
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्या.दे-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १७४ ॥

२५२-२५३* शाश्वतस्थानजिगमिषा ।
२५४-२५५* नगरक्षेमं कृत्वा व्रजेतीन्द्रः । ३१३
२५६-२५७* कार्यकारिषु दण्डादण्डौ ।
२५८-२५९* अनभ्रपार्थिववशीकारः (इन्द्रः)
२६०-२६३* दशलक्षजयादात्मजयः, जितात्मनः सुखमिन्द्रियकषायजयश्च (नमिः) । ३१४
२६४-२६५* यज्ञद्विजभोजनानन्तरं व्रज इन्द्रः
२६६-२६७* दशलक्षणगोप्तातः श्रेयः संयमः (नमिः) ३१५
२६८-२६९* घोराश्रमे पौषधिको भव(इन्द्रः)
२७०-२७१* कुशाग्रभोजी न धर्मीशार्हः नमिः । ३१६
२७२-२७३* हिरण्यादि वर्द्धेय (इन्द्रः)
२७४-२७६* सुवर्णादिपर्वतैः पृथिव्यादिमिश्र नैकस्य सन्तोषः (नमिः) ३१७
२७७-२७८* दृष्टभोगत्यागेऽन्यभोगप्रार्थना (इन्द्रः) ।
२७९-२८१* शल्यविषसर्पोपमकामार्थिनां नरकः, क्रोधादेर्नरकगत्यादिः(नमिः) ३१८
२८२-२८४* इन्द्रस्वरूपप्रकाशोऽक्रोधादिना नमिस्तुतिः ३१९
२८५-२८७* अत्रामुत्रोत्तमतया सिद्धिगमनेन च स्तुतिः प्रदक्षिणाश्च, वन्दित्वा स्वर्गमश्च ।
२८८-२८९* नमेरुत्कर्षः, भोगनिवृत्तिर्दृष्टान्तभूता ३२०

॥ इति नमिप्रव्रज्याध्ययनम् ॥ ९ ॥

॥ अथ द्रुमपत्रकाध्ययनम् ॥

२८०-२८३ द्रुमनिक्षेपा(४)ऽऽदिः, यथा स्थित्युपक्रमाभ्यां पत्रेणौपम्यं ३२१
२८४-३०६ शालमहाशालगागलिदीक्षा, अष्टापदप्रतिमानन्तुश्चरमशरीरता, वज्रजीववैश्रमणस्याग्रे पुण्डरीकाध्ययनकथनं, कौण्डिन्यादीनां दीक्षाकैवल्ये, चिरसंसृष्टादिः, गौतमनिश्रया शिष्योपदेशश्च ३२३
२९०* पाण्डुरपत्रवन्नराणां जीवितम् ३३४
३०७-३०९ पत्रपत्रस्थिरपत्रोलापाः (क्षिप्ताः)

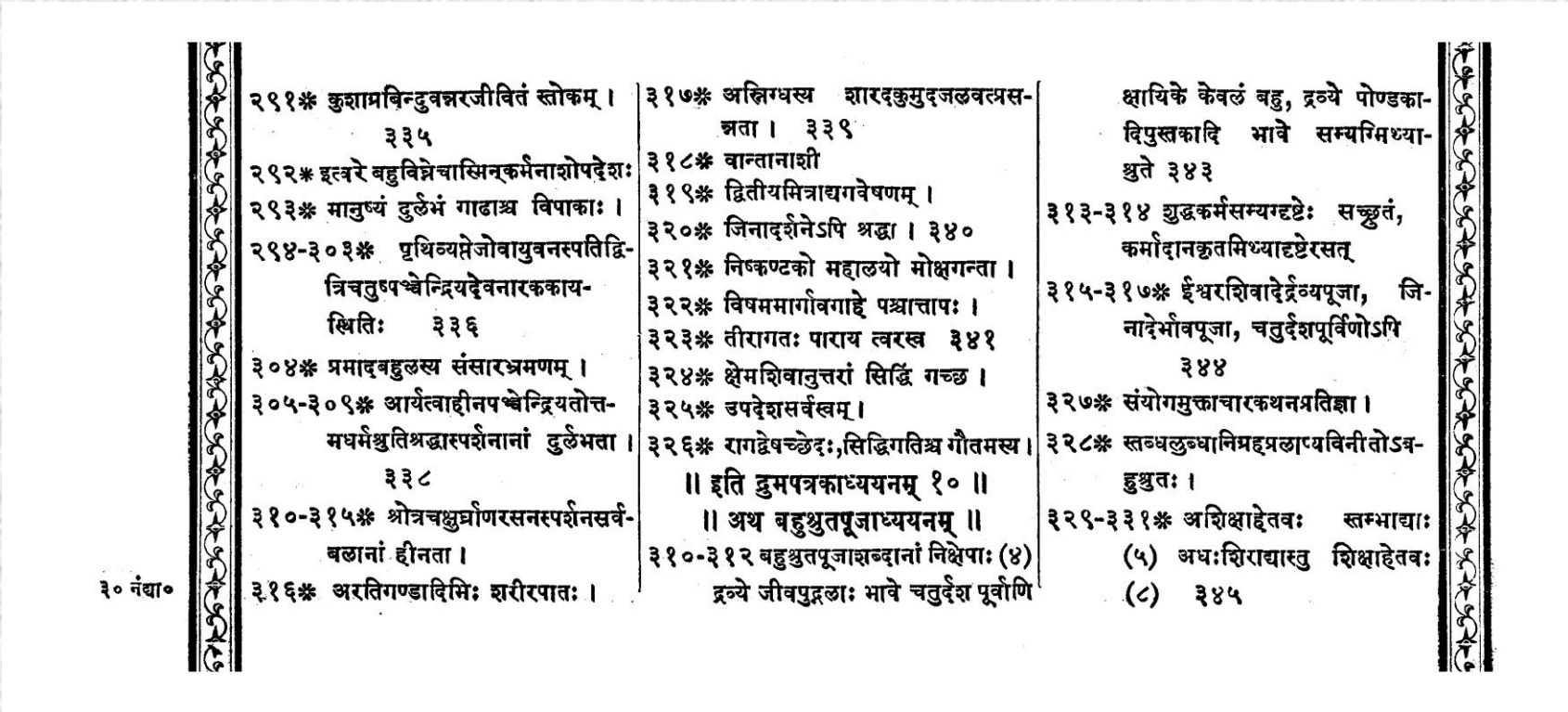
उत्तराध्ययने नमिप्रव्रज्याध्य. द्रुमपत्राध्यं च.

॥ १७४ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



३० नंद्या०

२९१* कुशाग्रबिन्दुवन्नरजीवितं स्तोकम् । ३३५
२९२* इत्वरे बहुविघ्नेचास्मिन्कर्मनाशोपदेशः
२९३* मानुष्यं दुर्लभं गाढाश्च विपाकाः ।
२९४-३०३* पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिद्वि-त्रिचतुष्पञ्चेन्द्रियदेवनारककाय-स्थितिः ३३६
३०४* प्रमादबहुलस्य संसारभ्रमणम् ।
३०५-३०९* आर्यत्वाहीनपञ्चेन्द्रियतोत्त-मधर्मश्रुतिश्रद्धास्पर्शनानां दुर्लभता । ३३८
३१०-३१५* श्रोत्रचक्षुर्घ्राणरसनस्पर्शनसर्व-बलानां हीनता ।
३१६* अरतिगण्डादिभिः शरीरपातः ।
३१७* अस्निग्धस्य शारदकुमुदजलवत्प्रस-न्नता । ३३९
३१८* वान्तानाशी
३१९* द्वितीयमित्राद्यगवेषणम् ।
३२०* जिनादर्शनेऽपि श्रद्धा । ३४०
३२१* निष्कण्टको महालयो मोक्षगन्ता ।
३२२* विषममार्गावगाहे पश्चात्तापः ।
३२३* तीरागतः पाराय त्वरस्व ३४१
३२४* क्षेमशिवानुत्तरां सिद्धिं गच्छ ।
३२५* उपदेशसर्वस्वम् ।
३२६* रागद्वेषच्छेदः,सिद्धिगतिश्च गौतमस्य ।
॥ इति द्रुमपत्रकाध्ययनम् १० ॥
॥ अथ बहुश्रुतपूजाध्ययनम् ॥
३१०-३१२ बहुश्रुतपूजाशब्दानां निक्षेपाः (४) द्रव्ये जीवपुद्गलाः भावे चतुर्दश पूर्वाणि क्षायिके केवलं बहु, द्रव्ये पोण्डकादिपुस्तकादि भावे सम्यग्मिथ्याश्रुते ३४३
३१३-३१४ शुद्धकर्मसम्यग्दृष्टेः सच्छ्रुतं, कर्मादानकृतमिथ्यादृष्टेरसत्
३१५-३१७* ईश्वरशिवादेर्द्रव्यपूजा, जिनादेर्भावपूजा, चतुर्दशपूर्विणोऽपि ३४४
३२७* संयोगमुक्ताचारकथनप्रतिज्ञा ।
३२८* स्तब्धलुब्धानिग्रहप्रलाप्यविनीतोऽबहुश्रुतः ।
३२९-३३१* अशिक्षाहेतवः स्तम्भाद्याः (५) अधःशिराद्यास्तु शिक्षाहेतवः (८) ३४५

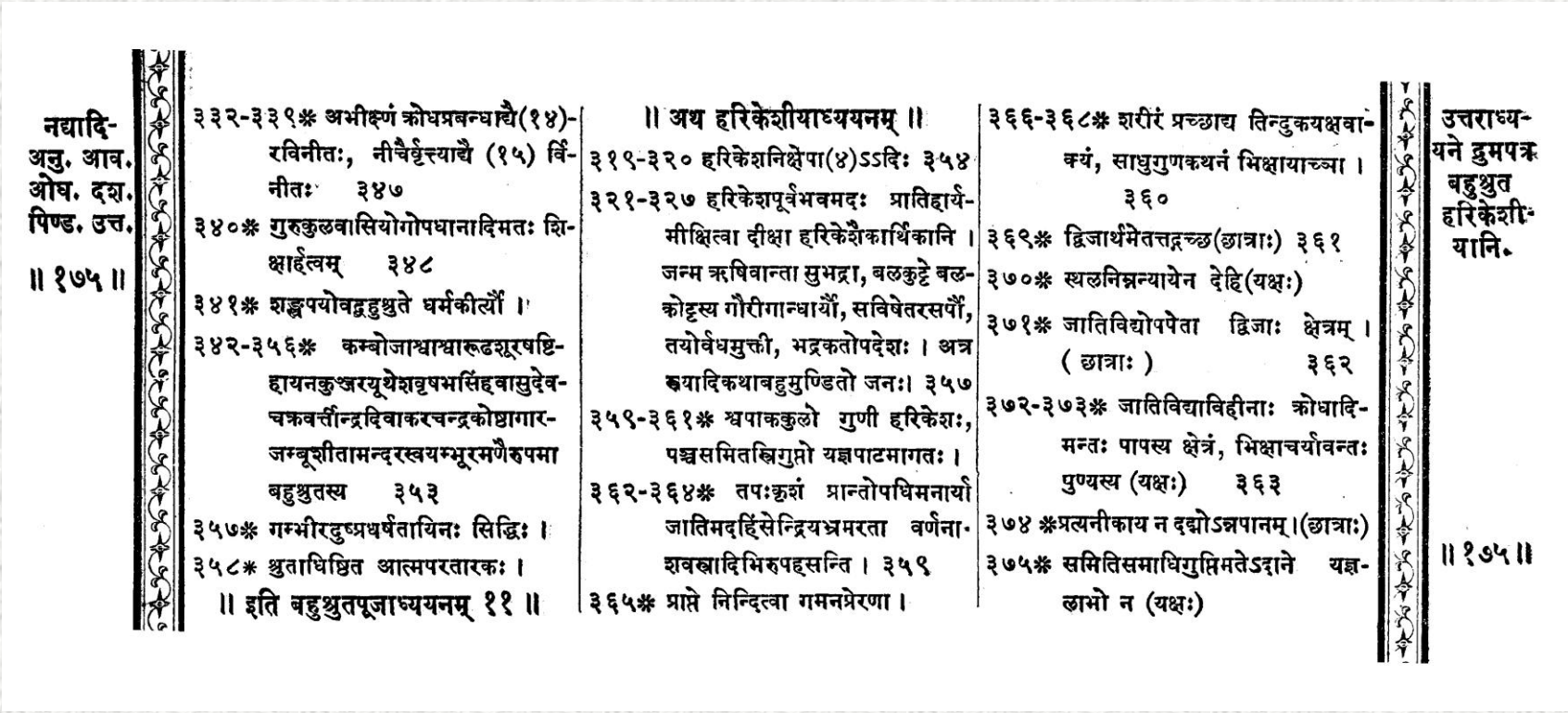
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नद्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७५ ॥

३३२-३३९* अभीक्ष्णं क्रोधप्रबन्धाद्यै(१४)-रविनीतः, नीचैर्वृत्त्याद्यै (१५) र्विनीतः ३४७
३४०* गुरुकुलवासियोगोपधानादिमतः शिक्षार्हत्वम् ३४८
३४१* शङ्खपयोवद्बहुश्रुते धर्मकीर्त्यौ ।
३४२-३५६* कम्बोजाश्वाश्वारूढशूरषष्टिहायनकुञ्जरयूथेशवृषभसिंहवासुदेवचक्रवर्त्तीन्द्रदिवाकरचन्द्रकोष्ठागारजम्बूशीतामन्दरस्वयम्भूरमणैरुपमा बहुश्रुतस्य ३५३
३५७* गम्भीरदुष्प्रधर्षतायिनः सिद्धिः ।
३५८* श्रुताधिष्ठित आत्मपरतारकः ।
॥ इति बहुश्रुतपूजाध्ययनम् ११ ॥

॥ अथ हरिकेशीयाध्ययनम् ॥
३१९-३२० हरिकेशनिक्षेपा(४)ऽऽदिः ३५४
३२१-३२७ हरिकेशपूर्वभवमदः प्रातिहार्यमीक्षित्वा दीक्षा हरिकेशैकार्थिकानि । जन्म ऋषिवान्ता सुभद्रा, बलकुट्टे बलकोट्टस्य गौरीगान्धार्यौ, सविषेतरसर्पौ, तयोर्वधमुक्ती, भद्रकतोपदेशः । अत्र रुयादिकथाबहुमुण्डितो जनः। ३५७
३५९-३६१* श्वपाककुलो गुणी हरिकेशः, पञ्चसमितस्त्रिगुप्तो यज्ञपाटमागतः ।
३६२-३६४* तपःकृशं प्रान्तोपधिमनार्यो जातिमदर्हिंसेन्द्रियभ्रमरता वर्णनाशवस्त्रादिभिरुपहसन्ति । ३५९
३६५* प्राप्ते निन्दित्वा गमनप्रेरणा ।

३६६-३६८* शरीरं प्रच्छाद्य तिन्दुकयक्षवाक्यं, साधुगुणकथनं भिक्षायाच्ञा । ३६०
३६९* द्विजार्थमेतत्तद्गच्छ(छात्राः) ३६१
३७०* स्थलनिम्नन्यायेन देहि(यक्षः)
३७१* जातिविद्योपपेता द्विजाः क्षेत्रम् । (छात्राः) ३६२
३७२-३७३* जातिविद्याविहीनाः क्रोधादिमन्तः पापस्य क्षेत्रं, भिक्षाचर्यावन्तः पुण्यस्य (यक्षः) ३६३
३७४ *प्रत्यनीकाय न दद्मोऽन्नपानम् ।(छात्राः)
३७५* समितिसमाधिगुप्तिमतेऽदाने यज्ञलाभो न (यक्षः)

उत्तराध्ययने द्रुमपत्रक बहुश्रुत हरिकेशीयानि. ॥ १७५ ॥

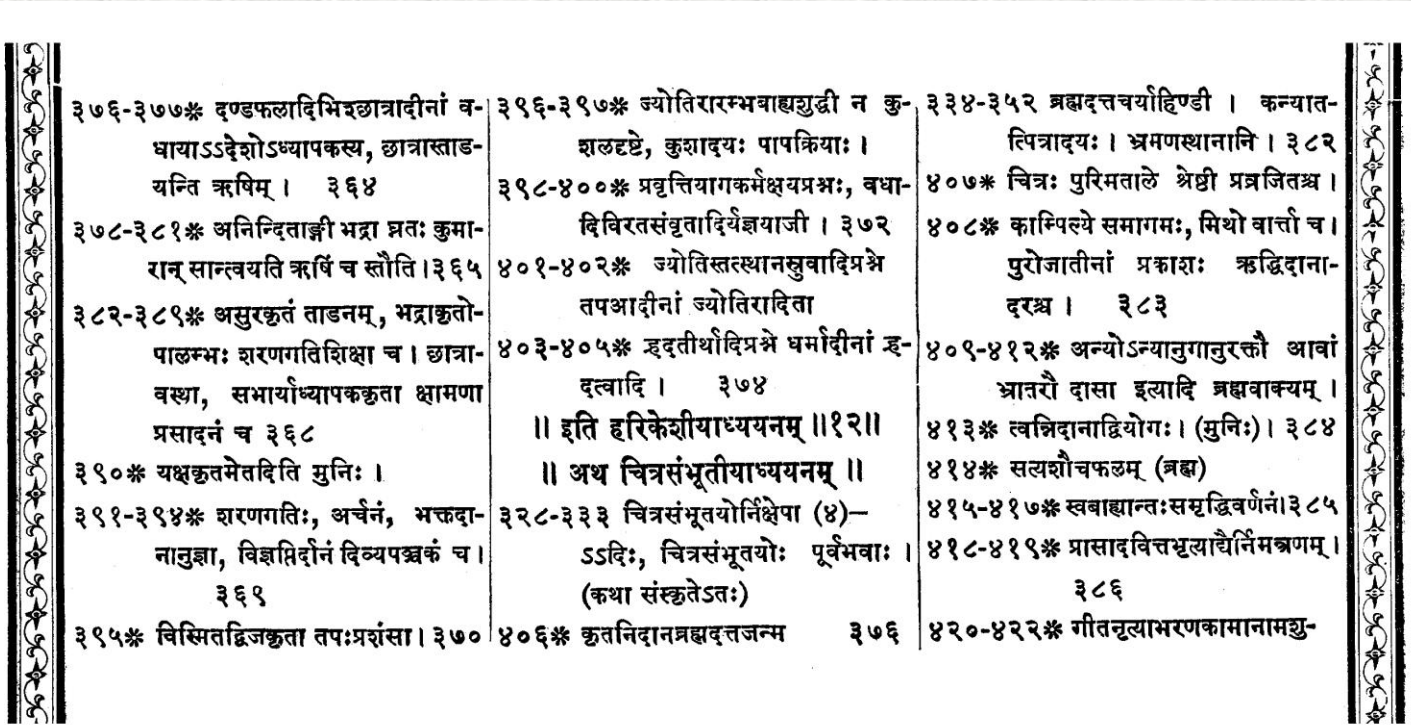
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



३७६-३७७* दण्डफलादिभिश्छात्रादीनां व-
धायाऽऽदेशोऽध्यापकस्य, छात्रास्ताड-
यन्ति ऋषिम् । ३६४
३७८-३८१* अनिन्दिताङ्गी भद्रा व्रतः कुमा-
रान् सान्त्वयति ऋषिं च स्तौति ।३६५
३८२-३८९* असुरकृतं ताडनम्, भद्राकृतो-
पालम्भः शरणगतिशिक्षा च । छात्रा-
वस्था, सभार्याध्यापककृता क्षामणा
प्रसादनं च ३६८
३९०* यक्षकृतमेतदिति मुनिः ।
३९१-३९४* शरणगतिः, अर्चनं, भक्तदा-
नानुज्ञा, विज्ञप्तिर्दानं दिव्यपञ्चकं च।
३६९
३९५* विस्मितद्विजकृता तपःप्रशंसा। ३७०
३९६-३९७* ज्योतिरारम्भबाह्यशुद्धी न कु-
शलदृष्टे, कुशादयः पापक्रियाः ।
३९८-४००* प्रवृत्तियागकर्मक्षयप्रभः, वधा-
दिविरतसंवृतादिर्यज्ञयाजी । ३७२
४०१-४०२* ज्योतिस्तत्स्थानस्रुवादिप्रभे
तपआदीनां ज्योतिरादिता
४०३-४०५* ह्रदतीर्थादिप्रभे धर्मादीनां ह्र-
दत्वादि । ३७४
॥ इति हरिकेशीयाध्ययनम् ॥१२॥
॥ अथ चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ॥
३२८-३३३ चित्रसंभूतयोर्निक्षेपा (४)—
ऽऽदिः, चित्रसंभूतयोः पूर्वभवाः ।
(कथा संस्कृतेऽतः)
४०६* कृतनिदानब्रह्मदत्तजन्म ३७६
३३४-३५२ ब्रह्मदत्तचर्याहिण्डी । कन्यात-
स्पित्रादयः । भ्रमणस्थानानि । ३८२
४०७* चित्रः पुरिमताले श्रेष्ठी प्रव्रजितश्च ।
४०८* काम्पिल्ये समागमः, मिथो वार्त्ता च ।
पुरोजातीनां प्रकाशः ऋद्धिदाना-
दरश्च । ३८३
४०९-४१२* अन्योऽन्यानुगानुरक्तौ आवां
भ्रातरौ दासा इत्यादि ब्रह्मवाक्यम् ।
४१३* त्वन्निदानाद्वियोगः । (मुनिः) । ३८४
४१४* सत्यशौचफलम् (ब्रह्म)
४१५-४१७* स्वबाह्यान्तःसमृद्धिवर्णनं।३८५
४१८-४१९* प्रासादवित्तभृत्याद्यैर्निमन्त्रणम् ।
३८६
४२०-४२२* गीतनृत्याभरणकामानामशु-

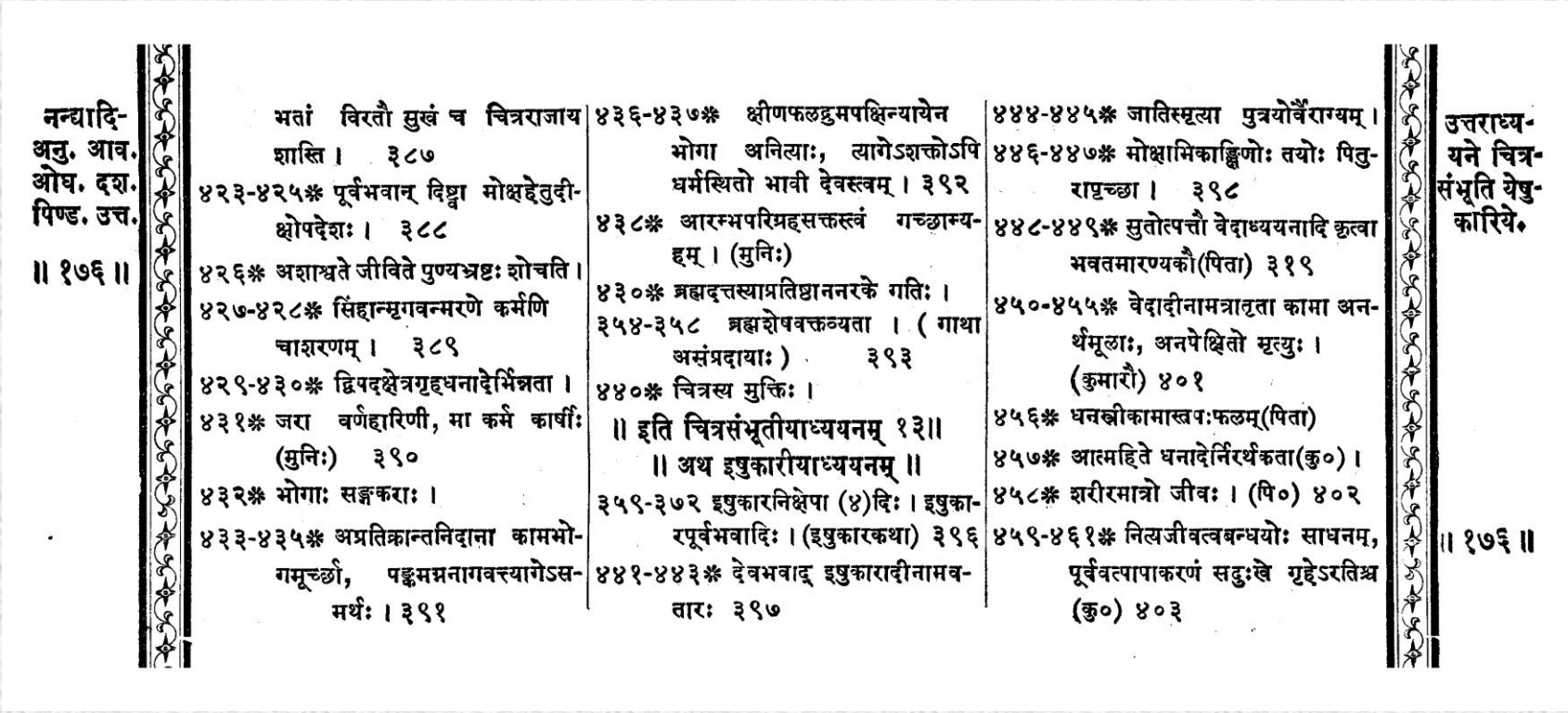
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७६ ॥

भतां विरतौ सुखं च चित्रराजाय शास्ति । ३८७

४२३-४२५* पूर्वभवान् दिष्ट्वा मोक्षहेतुदीक्षोपदेशः । ३८८

४२६* अशाश्वते जीविते पुण्यभ्रष्टः शोचति ।

४२७-४२८* सिंहान्मृगवन्मरणे कर्मणि चाशरणम् । ३८९

४२९-४३०* द्विपदक्षेत्रगृहधनादेर्भिन्नता ।

४३१* जरा वर्णहारिणी, मा कर्म कार्षीः (मुनिः) ३९०

४३२* भोगाः सङ्गकराः ।

४३३-४३५* अप्रतिक्रान्तनिदाना कामभोगमूर्च्छा, पङ्कमग्ननागवत्त्यागेऽसमर्थः । ३९१

४३६-४३७* क्षीणफलद्रुमपक्षिन्यायेन भोगा अनित्याः, त्यागेऽशक्तोऽपि धर्मस्थितो भावी देवस्त्वम् । ३९२

४३८* आरम्भपरिग्रहसक्तस्त्वं गच्छाम्यहम् । (मुनिः)

४३०* ब्रह्मदत्तस्याप्रतिष्ठाननरके गतिः ।

३५४-३५८ ब्रह्मशेषवक्तव्यता । (गाथा असंप्रदायाः) ३९३

४४०* चित्रस्य मुक्तिः ।

॥ इति चित्रसंभूतीयाध्ययनम् १३॥

॥ अथ इषुकारीयाध्ययनम् ॥

३५९-३७२ इषुकारनिक्षेपा (४)दिः । इषुकारपूर्वभवादिः । (इषुकारकथा) ३९६

४४१-४४३* देवभवाद् इषुकारादीनामवतारः ३९७

४४४-४४५* जातिस्मृत्या पुत्रयोर्वैराग्यम् ।

४४६-४४७* मोक्षाभिकाङ्क्षिणोः तयोः पितुरापृच्छा । ३९८

४४८-४४९* सुतोत्पत्तौ वेदाध्ययनादि कृत्वा भवतमारण्यकौ(पिता) ३९९

४५०-४५५* वेदादीनामत्रातृता कामा अनर्थमूलाः, अनपेक्षितो मृत्युः । (कुमारौ) ४०१

४५६* धनस्त्रीकामास्तप:फलम्(पिता)

४५७* आत्महिते धनादेर्निरर्थकता(कु०) ।

४५८* शरीरमात्रो जीवः । (पि०) ४०२

४५९-४६१* नित्यजीवत्वबन्धयोः साधनम्, पूर्ववत्पापाकरणं सदुःखे गृहेऽरतिश्च (कु०) ४०३

उत्तराध्ययने चित्रसंभूति येषुकारिये. ॥ १७६ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

४६२* व्याधवागुराप्रहरणप्रश्नाः । (पि०)
४६३-४६५* मृत्युजरारात्रयः, ताः धर्म्यधर्मिणोः सफलाः अफलाश्च(कु०)। ४०४
४६६* पश्चाद् यास्यामः (पि०)
४६७-४६८* मृत्युसख्यपलायनाभावाद्धर्मे त्वरा । (कु०) ४०५
४६९-४७०* पुत्रत्यक्तस्याशोभनता (पुरोहितः) ।
४७१* भुक्तभोगौ गमिष्यावः । (पु० पत्नी) ४०६
४७२* समलाभालाभसुखदुःखो मौनीभविष्यामि । (पु०)
४७३* भिक्षाचर्या दुःखं, भुङ्क्व भोगान् । (पु. पत्नी) ४०७
४७४-४७५* पुत्रौ विरक्तौ, धीराणां श्रामण्यम् । (पु०)
४७६* पतिपुत्रानुसरणाऽनुमतिः (पु० पत्नी) ४०८
४७७-४८०* तद्धनग्राहिणे राज्ञे राज्ञीशिक्षा, मा वान्ताशी भव, न ते तुष्टिश्चलाः कामा धर्मस्त्राणम् । ४०९
४८१-४८८* राज्ञा वैराग्यम् । ४११
४८९-४९३* राजराज्ञ्योर्दीक्षा, मोक्षश्च सर्वेषाम् । ४१२
॥ इतीषुकारीयाध्ययनम् १४॥
॥ अथ सभिक्षुकाध्ययनम् ॥
३७३-३७८ भिक्षुनिक्षेपा(४)दिः । द्रव्यभावभेत्तृभेदभेत्तव्यानि । रागादिक्षुद्भेदकाः सिद्ध्यन्ति । ४१३
४९४-५०९* मौनचरणादि-रागोपरमणादि-आक्रोशवधसहनादि-प्रान्तशयनासनादि-सत्कारानीहादि-मोहनिरासादि-स्वरभौमादिवर्जन-मन्त्रमूलादिवर्जन-क्षत्रियश्लोकादिवर्जन-संस्तवत्याग-अदत्तत्याग-शुद्धग्रास-धूमपरिहार-निर्भय-दृढसम्यक्त्वाशिल्पजीवनादिगुणोपेतो भिक्षुः । ४२०
॥ इति सभिक्षुकाध्ययनम् १५ ॥
॥ अथ ब्रह्मचर्यसमाध्यध्ययनम् ॥
३७९ एककनिक्षेपाः (७) । ४२१
३८० दशककनिक्षेपाः (६) दशप्रदेशिकः, अवगाहनस्थित्योश्च, जीवाजीवपर्यायाश्च ।

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १७७ ॥

३८१-३८२ ब्रह्मनिक्षेपाः (४) स्थापनायां ब्राह्मणोत्पत्तिः, द्रव्येऽज्ञस्य, भावे साधोः, रक्षायै स्थानान्यस्य ।
३८३ चरणनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गतिभक्षणे ।
३८४ समाधिनिक्षेपाः (४) ४२२
३८५ स्थाननिक्षेपाः (१४)
२सू. समाधिस्थानोद्देशः । ४२३
३ पृच्छा, स्त्रीपशुपण्डकासंसक्तशयनादिसेवनं, विपर्यये दोषाः ४२४
४ पूर्ववत्स्त्रीकथावर्जनम् ।
५ पूर्ववत्स्त्रीनिषद्यावर्जनम् ।
६ पूर्ववदिन्द्रियालोकवर्जनम् । ४२५
७ कुड्याद्यन्तरकूजितादिश्रवणवर्जनम् ।
८ पूर्वरतक्रीडितवर्जनम् ४२६
९ प्रणीताहारवर्जनम् ।
१० अतिभोजनवर्जनम् ।
११ विभूषात्यागः । ४२७
१२ शब्दाद्यननुपातिता ।
५१०-५१९* दशस्थानश्लोकाः । ४२९
५२०-५२२* स्त्रीसंसक्तशयनादीनां तालपुटोपमत्वम् । ४२९
५२३-५२४* त्यक्तकामादिः धर्मारामादिरतः स्यात् । ४३०
५२५-५२६* ब्रह्मचर्यमहिमा ।
॥ इति ब्रह्मचर्यसमाध्ययनम् १६ ॥
॥ अथ पापश्रमणाध्ययनम् ॥
३८६-३८७ पापनिक्षेपाः (६) । क्षेत्रे नरकः, कालेऽतिदुष्षमा ।
३८८ श्रमणनिक्षेपाः (४) । ज्ञानसंयमयुतो भावे । ४३२
३८९-३९० अकरणीयसेवी पापश्रमणस्तद्वर्जको मुक्तिगामी ।
५२७-५२९* प्रव्रज्य शय्यादिरतः सुखशीलः पापश्रमणः ।
५३०-५४५* आचार्यनिन्दकाऽतर्पकप्राणादिमर्दकाप्रमार्जितसंस्तारारोहकद्रुतचारिप्रतिलेखनाप्रमत्तगुरुपरिभावकबहुमायिविवादोदीरकास्थिरासनसरजस्कशयनविकृतिभोजनयावत्सूर्यभोजनाचार्यत्यागपरगेहव्यापारकुटुम्बपिण्डाः पापश्रमणाः । ४३६
५४६-५४७* पापश्रमणता तद्वर्जने च फलं । ४३७
॥ इति पापश्रमणाध्ययनम् १७ ॥

उत्तराध्ययने सभिक्षुब्रह्मचर्य पापश्रमणानि.

॥ १७७ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

॥ अथ संजयतीयाध्ययनम् ॥

३९१-३९३ संजयनिक्षेपा(४)दिः । ५४८-५५०* हयादियुतः मृगयानिर्गतः संजयः । ४३८

३९४-३९५ मृगयानिर्गमः ।

५५१-५५२* केशरोद्याने साधोः पार्श्वे मृगगतिः । ४३९

३९६ अप्फोवमण्डपे गर्दभालेर्ध्यानम् । ४३९

५५३-५५७*३९७-४०० साधुदर्शनं मन्दपुण्यतेक्षणं क्षामणा साधुमौनं नृपभयं च । पूर्ववत् ।

५५८-५६४* अभयदो भव, गन्ता त्यागी, चञ्चलायुः प्रेत्यार्थी, स्वार्थकुटुम्बी तपस्वी परकार्यकर्मेक्षी । ४४१

५६५-५६६*४०१-४०३ संजयदीक्षा गाथानवकानुवादः । ४४२

५६७-५६८* संजयं प्रति त्यागरूपनामगोत्रादिप्रश्नस्तदुत्तरं च । ४४३

५७०-५७८* क्रियावाद्याद्याः (४), बुद्धप्रादुष्कृता एते, फलं चैषाम् । तेषां मायाविता । तद्विषयं स्वज्ञानं ब्रह्मलोकच्यवनं, नानारुचिवर्जनं प्रभवर्जनं च । ४४६

५७९-५८०* तज्ज्ञानं जिनशासनं क्रियाऽक्रिययोर्ग्रहणवर्जने । ४४७

५८१-५९७* भरतसगरमघवत्सनत्कुमारशान्तिकुन्थ्वरमहापद्महरिषेणजयदशार्णभद्रप्रत्येकबुद्धो (४) दायनश्वेतविजयमहाबलानां त्यागमोक्षौ ।४४९

५९८-६००* दृढपराक्रमोपदेशः, संसारतरणं सिद्धिश्च । ४५०

४०४ संजयसिद्धिः ।

॥ इति संजयतीयाध्ययनम् १८ ॥

॥ अथ मृगापुत्रीयाध्ययनम् ॥

४०५-४०८ मृगापुत्रनिक्षेपा(४)दिः । ४५१

६०१-६०४* सुग्रीवाधिपबलभद्रमृगापुत्रबलश्रीः(मृगापुत्रः)दोगुन्दुक इव क्रीडन् नगरालोकी ।

६०५-६०८*४०९-४१५ साधुदर्शनाज्जातिस्मृतिः । पूर्वोक्तानुवादः । ४५२

६०९-६१०*४१६ विरक्तः प्रव्रज्याकामः पितरावुवाच । तदेव । ४५३

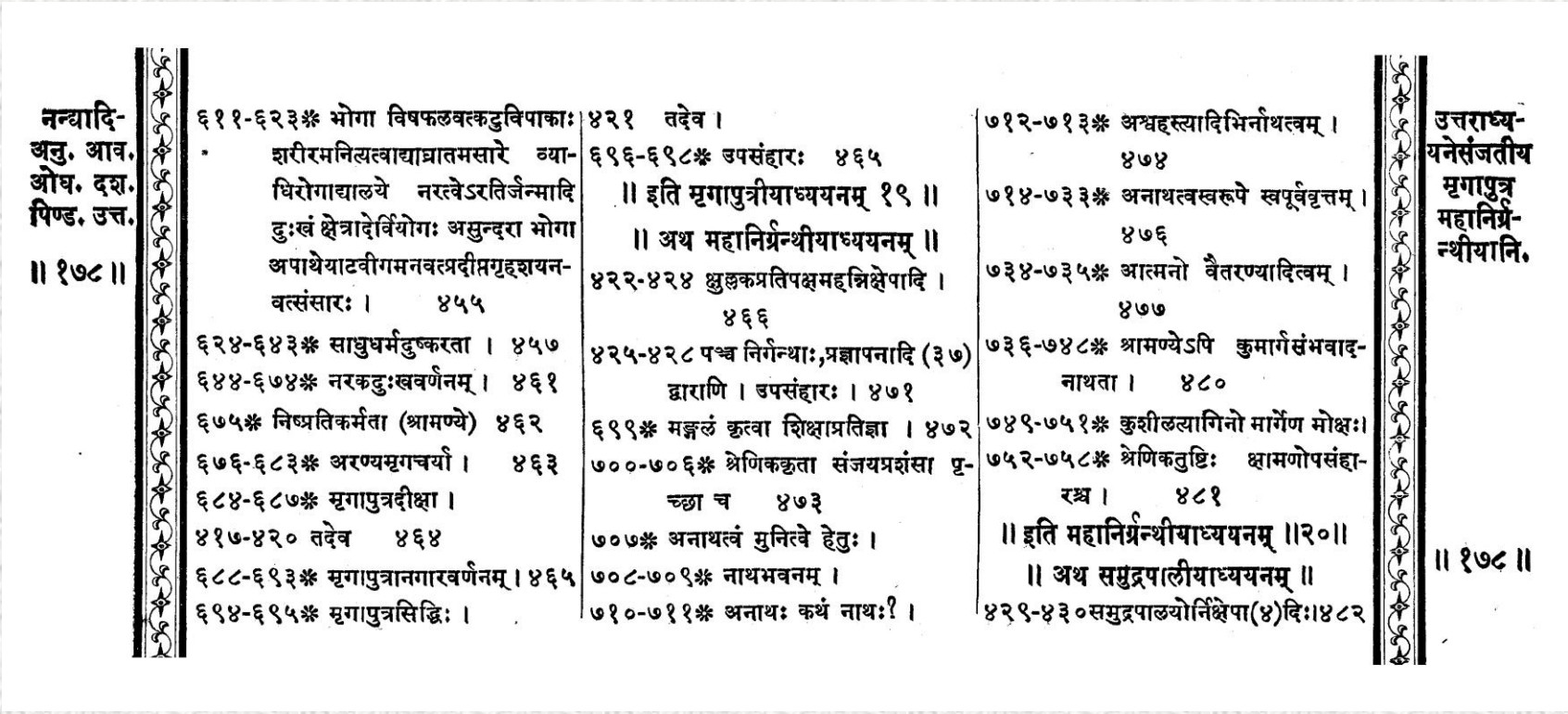
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १७८ ॥

६११-६२३* भोगा विषफलवत्कटुविपाकाः शरीरमनित्यत्वाद्याघातमसारे व्याधिरोगाद्यालये नरत्वेऽरतिर्जन्मादि दुःखं क्षेत्रादेर्वियोगः असुन्दरा भोगा अपाथेयाटवीगमनवत्प्रदीप्तगृहशयनवत्संसारः। ४५५

६२४-६४३* साधुधर्मदुष्करता । ४५७

६४४-६७४* नरकदुःखवर्णनम् । ४६१

६७५* निष्प्रतिकर्मता (श्रामण्ये) ४६२

६७६-६८३* अरण्यमृगचर्या । ४६३

६८४-६८७* मृगापुत्रदीक्षा ।

४१७-४२० तदेव ४६४

६८८-६९३* मृगापुत्रानगारवर्णनम् । ४६५

६९४-६९५* मृगापुत्रसिद्धिः ।

४२१ तदेव ।

६९६-६९८* उपसंहारः ४६५

॥ इति मृगापुत्रीयाध्ययनम् १९ ॥

॥ अथ महानिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥

४२२-४२४ क्षुल्लकप्रतिपक्षमहन्निक्षेपादि । ४६६

४२५-४२८ पञ्च निर्गन्थाः,प्रज्ञापनादि (३७) द्वाराणि । उपसंहारः । ४७१

६९९* मङ्गलं कृत्वा शिक्षाप्रतिज्ञा । ४७२

७००-७०६* श्रेणिककृता संजयप्रशंसा पृच्छा च ४७३

७०७* अनाथत्वं मुनित्वे हेतुः ।

७०८-७०९* नाथभवनम् ।

७१०-७११* अनाथः कथं नाथः? ।

७१२-७१३* अश्वहस्त्यादिभिर्नाथत्वम् । ४७४

७१४-७३३* अनाथत्वस्वरूपे स्वपूर्ववृत्तम् । ४७६

७३४-७३५* आत्मनो वैतरण्यादित्वम् । ४७७

७३६-७४८* श्रामण्येऽपि कुमार्गसंभवादनाथता । ४८०

७४९-७५१* कुशीलत्यागिनो मार्गेण मोक्षः।

७५२-७५८* श्रेणिकतुष्टिः क्षामणोपसंहारश्च । ४८१

॥ इति महानिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥२०॥

॥ अथ समुद्रपालीयाध्ययनम् ॥

४२९-४३०समुद्रपालयोर्निक्षेपा(४)दिः।४८२

उत्तराध्ययनेसंजतीय मृगापुत्र महानिर्ग्रन्थीयानि.

॥ १७८ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

७५९-७६८ समुद्रपालजन्मविवाहवध्यदर्शन-संवेगमातापितृपृच्छा दीक्षा च। ४३१-४४१ तदेव सविशेषम् ४८४
७६९-७८१ समुद्रपालानगारवर्णनम्। ४८७
७८२* समुद्रपालसिद्धिः।
४४२ तदेव। ४८८
॥ इति समुद्रपालीयाध्य० ॥२०॥
॥ अथ रथनेमीयाध्ययनम् ॥
४४३-४४५ रथनेमिनिक्षेपादिः ४८८
७८३-७९९* महर्द्धी नेमेरुद्वाहमहोत्सवः, मृगरोधप्रश्नश्च। सारथेरुत्तरम् ४९१
८००-८०६* नेमेर्दीक्षा ४९२
८०७-८०९* वासुदेवादिकृता नेमिस्तुतिः
८१०-८१२* राजीमतीदीक्षा। वासुदेवाशीर्वादः। ४९३
८१४-८३०*४४६-४५० गुहायां रथनेमिना समागमः, भोगप्रार्थना, राजीमत्या निश्चलता उपदेशश्च। रथनेमेर्मार्गप्रतिपत्तिः। (नूपुरपण्डिताख्यानम्) द्वयोर्मोक्षः। तदेव सविशेषम्। ४९७
८३१* उपसंहारः।
॥ इति रथनेमीयाध्ययनम् २२ ॥
॥ अथ केशिगौतमीयाध्ययनम् ॥
४५१-४५४ गौतमनिक्षेपादिः(केशिनोऽपि) ४९८
८३२* श्रीपार्श्ववर्णनम्।
८३३-८३५* सुविहितकेशिनस्तिन्दुके आगनम्।
८३६-८३९* श्रीगौतमस्यागमनं कोष्ठके। ४९९
८४०-८४४* उभयोराचारभेदचिन्ता।५००
८४५-८५१* गौतमस्य गमनं, पलालादिभिः प्रतिपत्तिः, द्वयोः शोभा, लोकसमागमः। ५०२
८५२-८५३* पृच्छाया अनुज्ञा।
४५५-४५७ व्रतलिङ्गादि(१२) प्रश्नोद्देशः।
८५४-८५८* चतुःपञ्चयामयोः केशिनः प्रश्नः, ऋजुजडवक्रजडत्वादिना गौतमस्योत्तरम्। ५०३
८५९-८६४* सचेलाचेलकप्रश्नः, प्रत्ययादिभिरुत्तरम्। ५०४
८६५-८६९* अनुज्ञायां शत्रुतत्पराजयप्रश्न

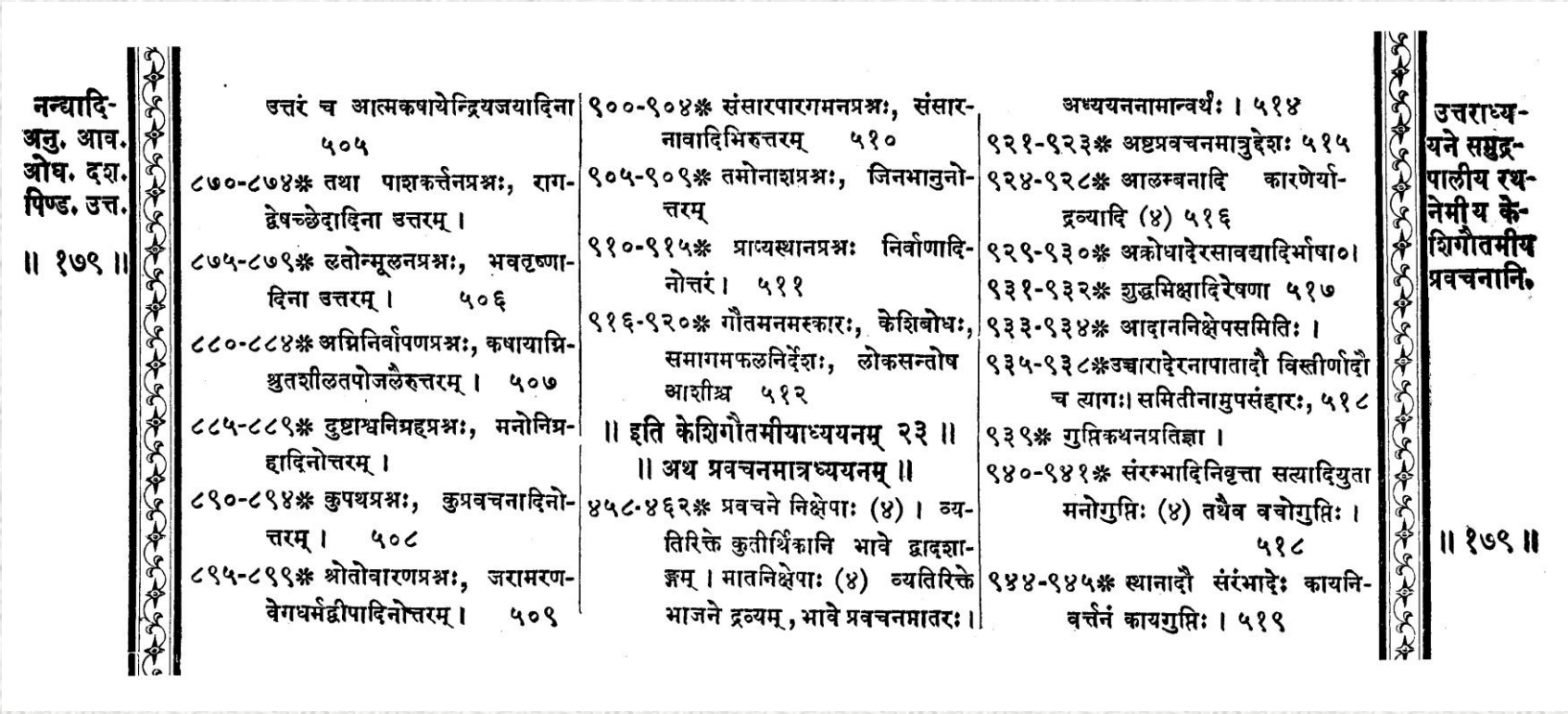
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १७९ ॥

उत्तरं च आत्मकषायेन्द्रियजयादिना ५०५

८७०-८७४* तथा पाशकर्त्तनप्रश्नः, राग-द्वेषच्छेदादिना उत्तरम् । ८७५-८७९* लतोन्मूलनप्रश्नः, भवतृष्णा-दिना उत्तरम् । ५०६

८८०-८८४* अग्निनिर्वापणप्रश्नः, कषायाग्नि-श्रुतशीलतपोजलैरुत्तरम् । ५०७

८८५-८८९* दुष्टाश्वनिग्रहप्रश्नः, मनोनिग्र-हादिनोत्तरम् ।

८९०-८९४* कुपथप्रश्नः, कुप्रवचनादिनो-त्तरम् । ५०८

८९५-८९९* श्रोतोवारणप्रश्नः, जरामरण-वेगधर्मद्वीपादिनोत्तरम् । ५०९

९००-९०४* संसारपारगमनप्रश्नः, संसार-नावादिभिरुत्तरम् ५१०

९०५-९०९* तमोनाशप्रश्नः, जिनभानुनो-त्तरम्

९१०-९१५* प्राप्यस्थानप्रश्नः निर्वाणादि-नोत्तरं । ५११

९१६-९२०* गौतमनमस्कारः, केशिबोधः, समागमफलनिर्देशः, लोकसन्तोष आशीश्च ५१२

॥ इति केशिगौतमीयाध्ययनम् २३ ॥

॥ अथ प्रवचनमात्रध्ययनम् ॥

४५८-४६२* प्रवचने निक्षेपाः (४) । व्य-तिरिक्ते कुतीर्थिकानि भावे द्वादशा-ङ्गम् । मातनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते भाजने द्रव्यम्, भावे प्रवचनमातरः ।

अध्ययननामान्वर्थः । ५१४

९२१-९२३* अष्टप्रवचनमात्रुद्देशः ५१५

९२४-९२८* आलम्बनादि कारणेर्या-द्रव्यादि (४) ५१६

९२९-९३०* अक्रोधादेरसावद्यादिर्भाषा०।

९३१-९३२* शुद्धभिक्षादिरेषणा ५१७

९३३-९३४* आदाननिक्षेपसमितिः ।

९३५-९३८*उच्चारादेरनापातादौ विस्तीर्णादौ च त्यागः। समितीनामुपसंहारः, ५१८

९३९* गुप्तिकथनप्रतिज्ञा ।

९४०-९४१* संरम्भादिनिवृत्ता सत्यादियुता मनोगुप्तिः (४) तथैव वचोगुप्तिः । ५१८

९४४-९४५* स्थानादौ संरंभादेः कायनि-वर्त्तनं कायगुप्तिः । ५१९

उत्तराध्य-यने समुद्र-पालीय रथ-नेमीय के-शिगौतमीय प्रवचनानि.

॥ १७९ ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'

९४६-९४७* समितिगुप्त्योर्विशेषः, तद्दृयफलं च। ५२०

॥ इति प्रवचनमात्रध्ययनम् २४ ॥

॥ अथ यज्ञीयाध्ययनम् ॥

४६३-४६५ यज्ञनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते द्विजयज्ञादि, भावे तपःसंयमयतना, विजयघोषयज्ञे जयघोषसाधोरध्ययनोत्थानम् ५२१

४६६-४७३ जयघोषचरित्रम्। ५२२

९४८-९५२* मनोरमे जयघोषस्य वासः विजयघोषयज्ञे भिक्षायाच्ञा। ५२३

९५३-९५५* ऋत्विगभ्य इदं, न तुभ्यं देयम्। (याजकः)

९५६-९५९* वेदयज्ञादिमुखाज्ञः। (मुनिः) ५२४

९६०-९६२* निरुत्तरःपप्रच्छ स्वरूपम्। (या०)

९६३-९८१* वेदादिमुखब्राह्मणादिस्वरूपम्। (मुनिः) ५२९

९८२-९८५* मुनिप्रशंसा दीक्षाविज्ञप्तिश्च। ५३०

९८६-९८९* निरीहता. मृत्तिकागोलकदृष्टान्तश्च

९९०-९९१* विजयघोषदीक्षा, द्वयोर्मोक्षश्च। ५३१

४७२-४८२ द्वयोश्चरित्रम्। ५३२

॥ इति यज्ञीयाध्ययनम् २५ ॥

॥ अथ सामाचार्यध्ययनम् ॥

४८३-४८८ सामनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते शर्करादौ। भावे इच्छामिथ्यादि। आचारनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते नमनादि भावे आचारः सामाचार्यः ५३३

४८९ अध्ययननामान्वर्थः।

९९२* दुःखमोक्षिणीसामाचारीकथनप्रतिज्ञा

९९३-९९५ सामाचार्यः (१०) आवश्यक्याद्याः। ५३४

९९६-९९८* (१०) सामाचारीविषयः५३५

९९९-१००१* स्वाध्यायवैयावृत्त्यनियोगः (ओघे) ५३६

१००२-१००३* पौरुषीचतुष्ककृत्यम्। ५३७

१००४-१००७* छायया पौरुषीज्ञानं प्रतिलेखनाकालज्ञानं च। ५३८

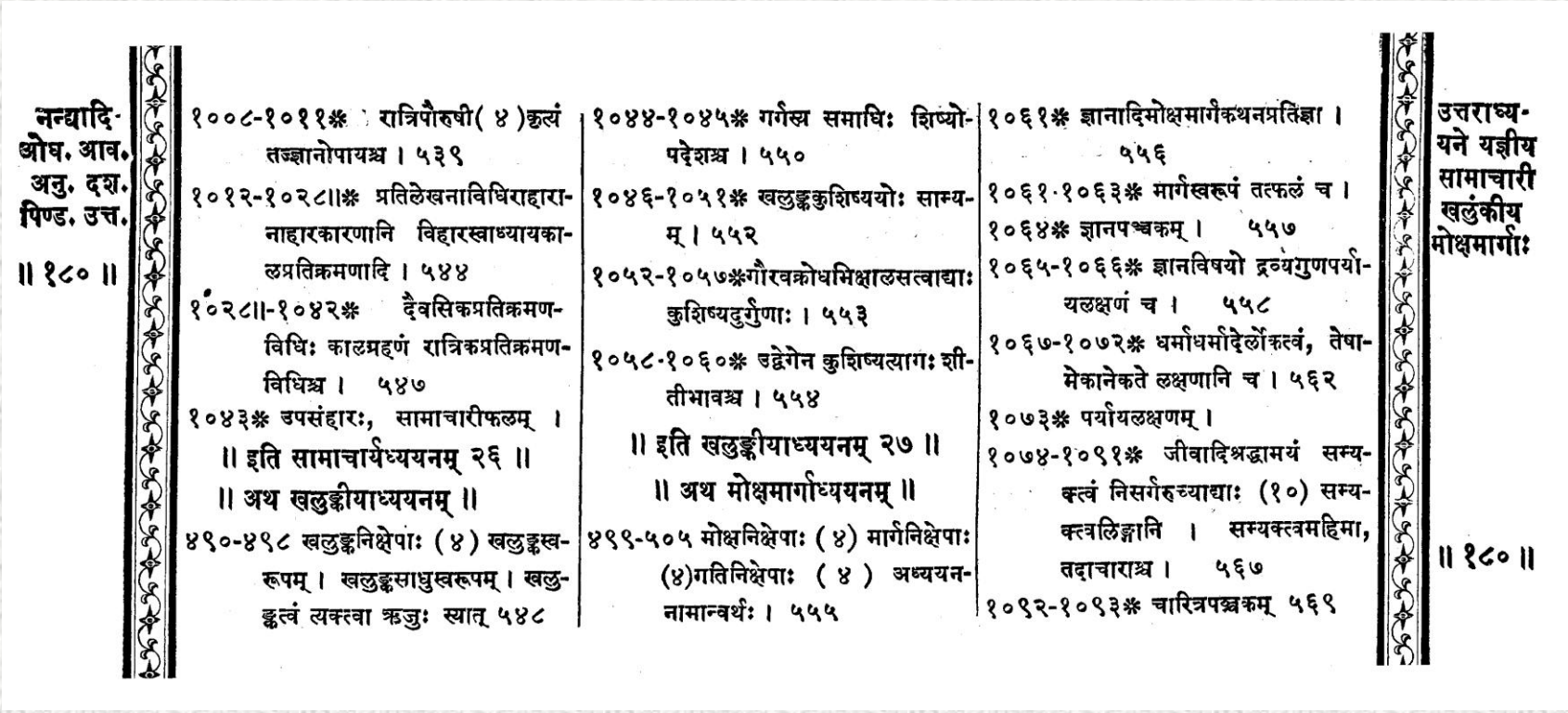
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-ओघ. आव. अनु. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १८० ॥

१००८-१०११* रात्रिपौरुषी(४)कृत्यं तज्ज्ञानोपायश्च । ५३९

१०१२-१०२८॥* प्रतिलेखनाविधिराहारानाहारकारणानि विहारस्वाध्यायकालप्रतिक्रमणादि । ५४४

१०२८॥-१०४२* दैवसिकप्रतिक्रमणविधिः कालग्रहणं रात्रिकप्रतिक्रमणविधिश्च । ५४७

१०४३* उपसंहारः, सामाचारीफलम् ।

॥ इति सामाचार्यध्ययनम् २६ ॥

॥ अथ खलुङ्कीयाध्ययनम् ॥

४९०-४९८ खलुङ्कनिक्षेपाः (४) खलुङ्कस्वरूपम् । खलुङ्कसाधुस्वरूपम् । खलुङ्कत्वं त्यक्त्वा ऋजुः स्यात् ५४८

१०४४-१०४५* गर्गस्य समाधिः शिष्योपदेशश्च । ५५०

१०४६-१०५१* खलुङ्ककुशिष्ययोः साम्यम् । ५५२

१०५२-१०५७*गौरवक्रोधभिक्षालसत्वाद्याः कुशिष्यदुर्गुणाः । ५५३

१०५८-१०६०* उद्वेगेन कुशिष्यत्यागः शीतीभावश्च । ५५४

॥ इति खलुङ्कीयाध्ययनम् २७ ॥

॥ अथ मोक्षमार्गाध्ययनम् ॥

४९९-५०५ मोक्षनिक्षेपाः (४) मार्गनिक्षेपाः (४)गतिनिक्षेपाः (४) अध्ययननामान्वर्थः । ५५५

१०६१* ज्ञानादिमोक्षमार्गैकथनप्रतिज्ञा । ५५६

१०६१-१०६३* मार्गस्वरूपं तत्फलं च ।

१०६४* ज्ञानपञ्चकम् । ५५७

१०६५-१०६६* ज्ञानविषयो द्रव्यगुणपर्यायलक्षणं च । ५५८

१०६७-१०७२* धर्माधर्मादेर्लोकत्वं, तेषामेकानेकते लक्षणानि च । ५६२

१०७३* पर्यायलक्षणम् ।

१०७४-१०९१* जीवादिश्रद्धामयं सम्यक्त्वं निसर्गरुच्याद्याः (१०) सम्यक्त्वलिङ्गानि । सम्यक्त्वमहिमा, तदाचाराश्च । ५६७

१०९२-१०९३* चारित्रपञ्चकम् ५६९

उत्तराध्ययने यज्ञीय सामाचारी खलुंकीय मोक्षमार्गाः

॥ १८० ॥

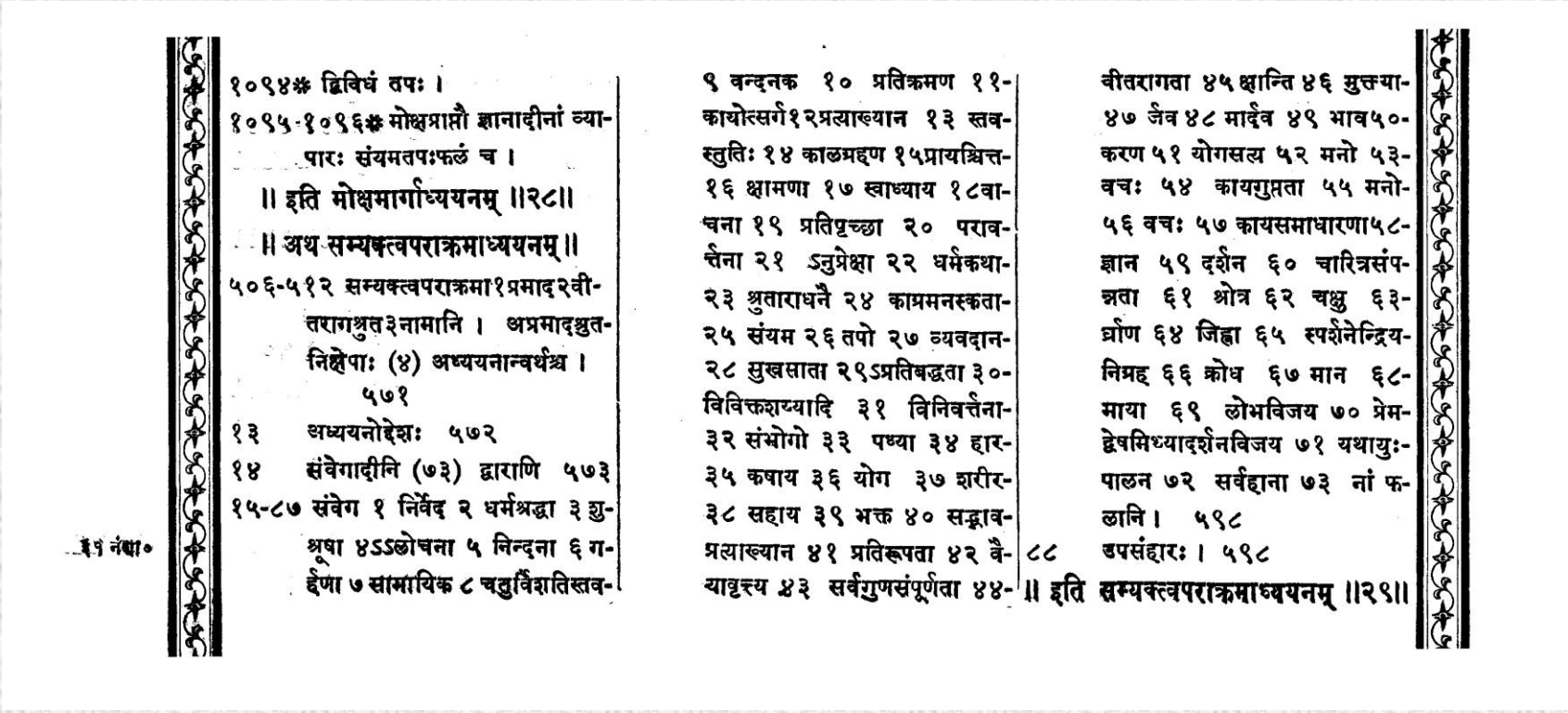
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



१०९४* द्विविधं तपः ।
१०९५-१०९६* मोक्षप्राप्तौ ज्ञानादीनां व्यापारः संयमतपःफलं च ।
॥ इति मोक्षमार्गाध्ययनम् ॥२८॥
॥ अथ सम्यक्त्वपराक्रमाध्ययनम् ॥
५०६-५१२ सम्यक्त्वपराक्रमा१प्रमाद२वीतरागश्रुत३नामानि । अप्रमादश्रुतनिक्षेपाः (४) अध्ययनान्वर्थश्च । ५७१
१३ अध्ययनोद्देशः ५७२
१४ संवेगादीनि (७३) द्वाराणि ५७३
१५-८७ संवेग १ निर्वेद २ धर्मश्रद्धा ३ गुरुशुश्रूषा ४ऽऽलोचना ५ निन्दना ६ गर्हणा ७ सामायिक ८ चतुर्विंशतिस्तव- ९ वन्दनक १० प्रतिक्रमण ११-कायोत्सर्ग१२प्रत्याख्यान १३ स्तवस्तुतिः १४ कालप्रतिलेखना १५प्रायश्चित्त-१६ क्षामणा १७ स्वाध्याय १८वाचना १९ प्रतिपृच्छा २० परावर्त्तना २१ ऽनुप्रेक्षा २२ धर्मकथा-२३ श्रुताराधनै २४ काग्रमनस्कता-२५ संयम २६ तपो २७ व्यवदान-२८ सुखसाता २९ऽप्रतिबद्धता ३०-विविक्तशय्यादि ३१ विनिवर्त्तना-३२ संभोगो ३३ पथ्या ३४ हार-३५ कषाय ३६ योग ३७ शरीर-३८ सहाय ३९ भक्त ४० सद्भाव-प्रत्याख्यान ४१ प्रतिरूपता ४२ वैयावृत्त्य ४३ सर्वगुणसंपूर्णता ४४-वीतरागता ४५ क्षान्ति ४६ मुक्त्या-४७ जैव ४८ मार्दव ४९ भाव५०-करण ५१ योगसत्य ५२ मनो ५३-वचः ५४ कायगुप्तता ५५ मनो-५६ वचः ५७ कायसमाधारणा५८-ज्ञान ५९ दर्शन ६० चारित्रसंपन्नता ६१ श्रोत्र ६२ चक्षु ६३-घ्राण ६४ जिह्वा ६५ स्पर्शनेन्द्रिय-निग्रह ६६ क्रोध ६७ मान ६८-माया ६९ लोभविजय ७० प्रेम-द्वेषमिथ्यादर्शनविजय ७१ यथायुः-पालन ७२ सर्वहाना ७३ नां फलानि । ५९८
८८ उपसंहारः । ५९८
॥ इति सम्यक्त्वपराक्रमाध्ययनम् ॥२९॥

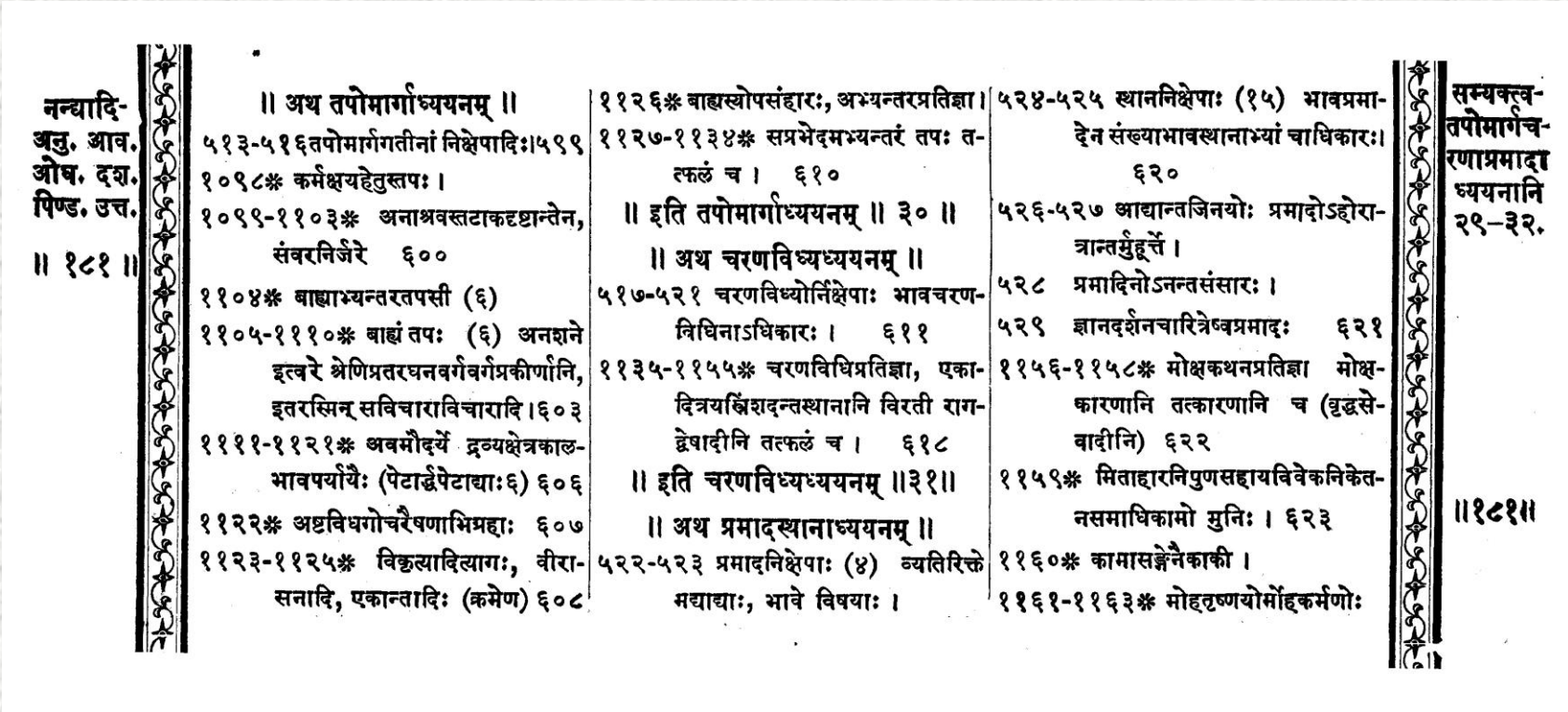
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्दादि-अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त.

॥ १८१ ॥

॥ अथ तपोमार्गाध्ययनम् ॥

५१३-५१६तपोमार्गगतीनां निक्षेपादिः।५९९

१०९८* कर्मक्षयहेतुस्तपः।

१०९९-११०३* अनाश्रवस्तटाकदृष्टान्तेन, संवरनिर्जरे ६००

११०४* बाह्याभ्यन्तरतपसी (६)

११०५-१११०* बाह्यं तपः (६) अनशने इत्वरे श्रेणिप्रतरघनवर्गवर्गप्रकीर्णानि, इतरस्मिन् सविचाराविचारादि।६०३

१११-११२१* अवमौदर्ये द्रव्यक्षेत्रकाल-भावपर्यायैः (पेटार्द्धपेटाद्याः६) ६०६

११२२* अष्टविधगोचरैषणाभिग्रहाः ६०७

११२३-११२५* विकृत्यादित्यागः, वीरासनादि, एकान्तादिः (क्रमेण) ६०८

११२६* बाह्यस्योपसंहारः, अभ्यन्तरप्रतिज्ञा।

११२७-११३४* सप्रभेदमभ्यन्तरं तपः तत्फलं च। ६१०

॥ इति तपोमार्गाध्ययनम् ॥ ३० ॥

॥ अथ चरणविध्यध्ययनम् ॥

५१७-५२१ चरणविध्योर्निक्षेपाः भावचरण-विधिनाऽधिकारः। ६११

११३५-११५५* चरणविधिप्रतिज्ञा, एकादित्रयस्त्रिंशदन्तस्थानानि विरती राग-द्वेषादीनि तत्फलं च। ६१८

॥ इति चरणविध्यध्ययनम् ॥३१॥

॥ अथ प्रमादस्थानाध्ययनम् ॥

५२२-५२३ प्रमादनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते मद्याद्याः, भावे विषयाः।

५२४-५२५ स्थाननिक्षेपाः (१५) भावप्रमादेन संख्याभावस्थानाभ्यां चाधिकारः। ६२०

५२६-५२७ आद्यान्तजिनयोः प्रमादोऽहोरात्रान्तर्मुहूर्त्ते।

५२८ प्रमादिनोऽनन्तसंसारः।

५२९ ज्ञानदर्शनचारित्रेष्वप्रमादः ६२१

११५६-११५८* मोक्षकथनप्रतिज्ञा मोक्षकारणानि तत्कारणानि च (वृद्धसेवादीनि) ६२२

११५९* मिताहारनिपुणसहायविवेकनिकेतनसमाधिकामो मुनिः। ६२३

११६०* कामासङ्गैनैकाकी।

११६१-११६३* मोहतृष्णयोर्मोहकर्मणोः

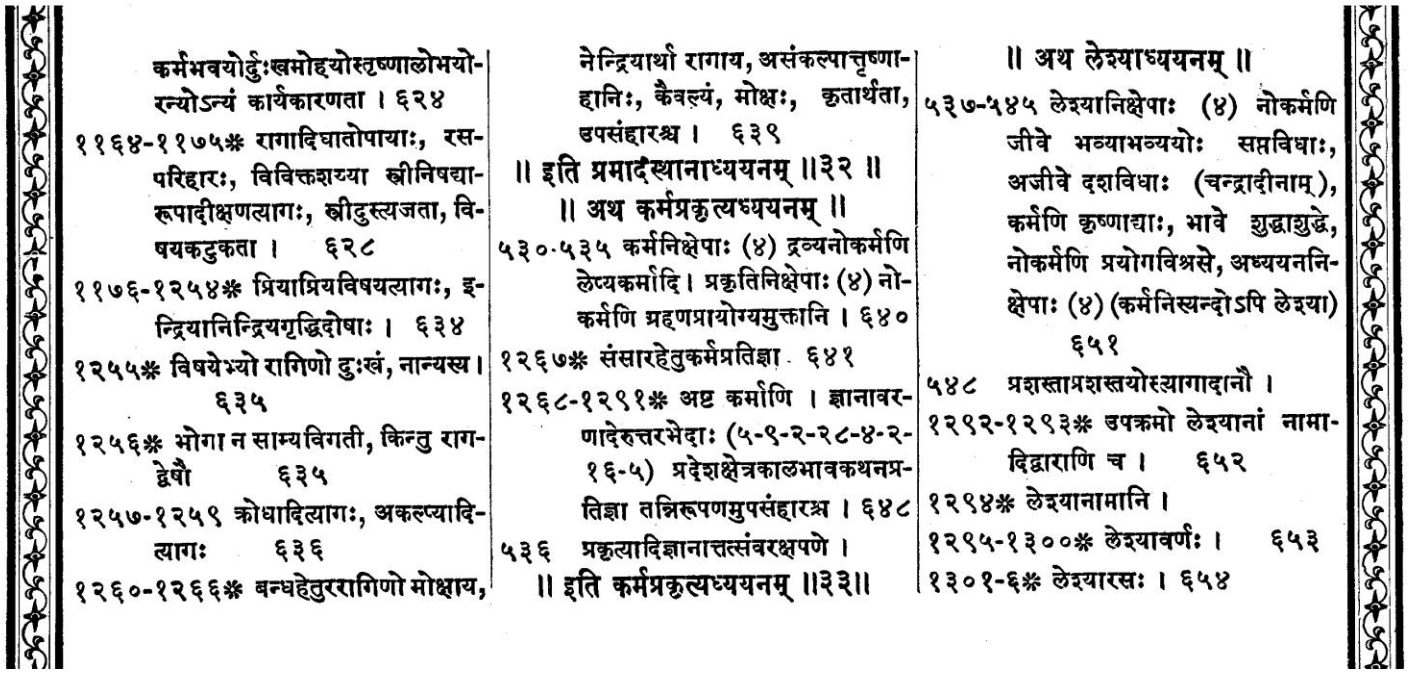
सम्यक्त्व-तपोमार्गचरणाप्रमादाध्ययनानि २९–३२.

॥१८१॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)



कर्मभवयोर्दुःखमोहयोस्तृष्णालोभयोरन्योऽन्यं कार्यकारणता । ६२४
११६४-११७५* रागादिघातोपायाः, रसपरिहारः, विविक्तशय्या स्त्रीनिषद्यारूपादीक्षणत्यागः, स्त्रीदुस्त्यजता, विषयकटुकता । ६२८
११७६-१२५४* प्रियाप्रियविषयत्यागः, इन्द्रियानिन्द्रियगृद्धिदोषाः । ६३४
१२५५* विषयेभ्यो रागिणो दुःखं, नान्यस्य । ६३५
१२५६* भोगा न साम्यविगती, किन्तु रागद्वेषौ ६३५
१२५७-१२५९ क्रोधादित्यागः, अकल्प्यादित्यागः ६३६
१२६०-१२६६* बन्धहेतुररागिणो मोक्षाय, नेन्द्रियार्था रागाय, असंकल्पात्तृष्णाहानिः, कैवल्यं, मोक्षः, कृतार्थता, उपसंहारश्च । ६३९

॥ इति प्रमादस्थानाध्ययनम् ॥३२ ॥

॥ अथ कर्मप्रकृत्यध्ययनम् ॥

५३०-५३५ कर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्यनोकर्मणि लेप्यकर्मादि। प्रकृतिनिक्षेपाः (४) नोकर्मणि ग्रहणप्रायोग्यमुक्तानि । ६४०
१२६७* संसारहेतुकर्मप्रतिज्ञा ६४१
१२६८-१२९१* अष्ट कर्माणि । ज्ञानावरणादेरुत्तरभेदाः (५-९-२-२८-४-२-१६-५) प्रदेशक्षेत्रकालभावकथनप्रतिज्ञा तन्निरूपणमुपसंहारश्च । ६४८
५३६ प्रकृत्यादिज्ञानात्तत्संवरक्षपणे ।

॥ इति कर्मप्रकृत्यध्ययनम् ॥३३॥

॥ अथ लेश्याध्ययनम् ॥

५३७-५४५ लेश्यानिक्षेपाः (४) नोकर्मणि जीवे भव्याभव्ययोः सप्तविधाः, अजीवे दशविधाः (चन्द्रादीनाम्), कर्मणि कृष्णाद्याः, भावे शुद्धाशुद्धे, नोकर्मणि प्रयोगविश्रसे, अध्ययननिक्षेपाः (४) (कर्मनिस्यन्दोऽपि लेश्या) ६५१
५४८ प्रशस्ताप्रशस्तयोस्त्यागादानौ ।
१२९२-१२९३* उपक्रमो लेश्यानां नामादिद्वाराणि च । ६५२
१२९४* लेश्यानामानि ।
१२९५-१३००* लेश्यावर्णः । ६५३
१३०१-६* लेश्यारसः । ६५४

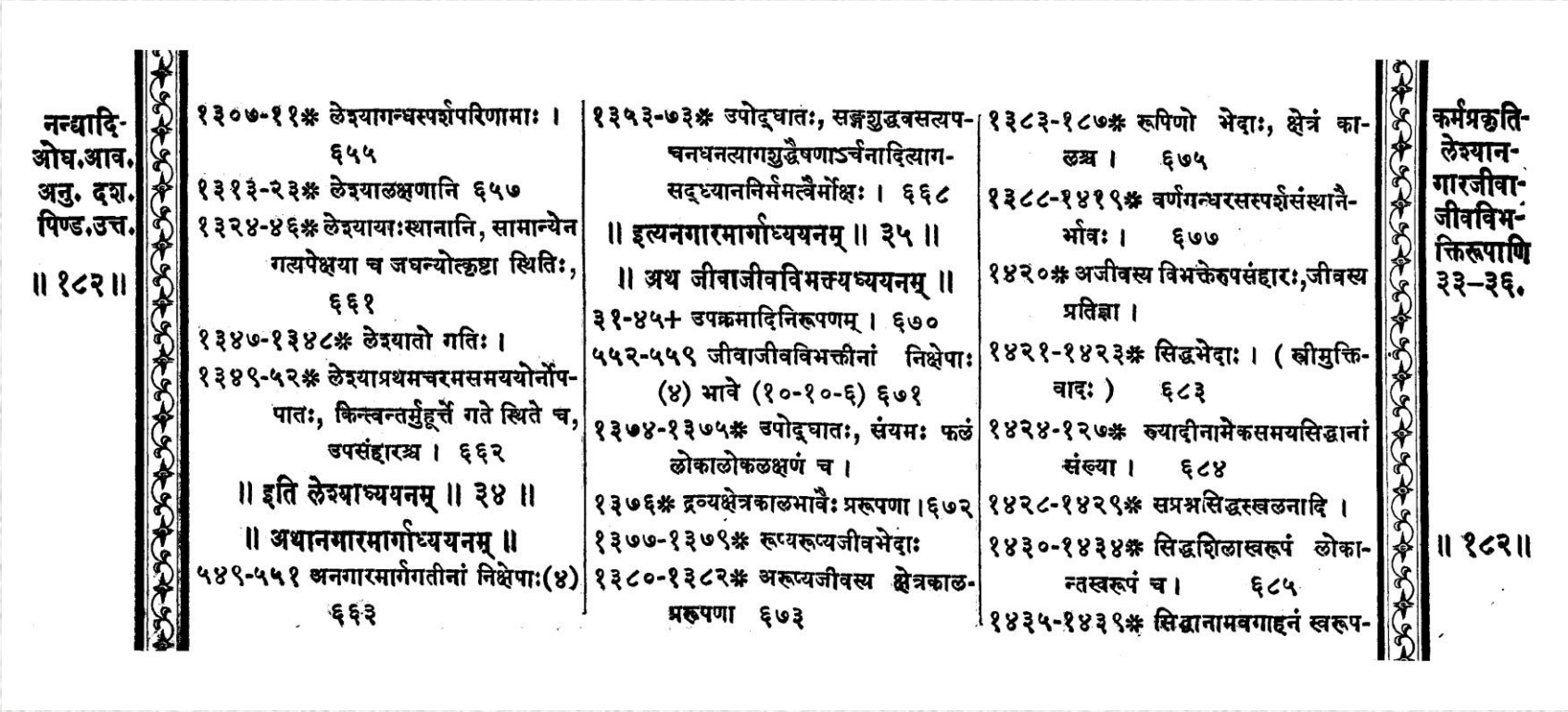
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



नन्द्यादि-ओघ.आव. अनु. दश. पिण्ड.उत्त. ॥ १८२ ॥

१३०७-११* लेश्यागन्धस्पर्शपरिणामाः । ६५५
१३१३-२३* लेश्यालक्षणानि ६५७
१३२४-४६* लेश्यायाःस्थानानि, सामान्येन गत्यपेक्षया च जघन्योत्कृष्टा स्थितिः, ६६१
१३४७-१३४८* लेश्यातो गतिः ।
१३४९-५२* लेश्याप्रथमचरमसमययोर्नोपपातः, किन्त्वन्तर्मुहूर्त्ते गते स्थिते च, उपसंहारश्च । ६६२
॥ इति लेश्याध्ययनम् ॥ ३४ ॥
॥ अथानगारमार्गाध्ययनम् ॥
५४९-५५१ अनगारमार्गगतीनां निक्षेपाः(४) ६६३
१३५३-७३* उपोद्घातः, सङ्गशुद्धवसत्यपचनधनत्यागशुद्धैषणार्चनादित्यागसद्ध्याननिर्ममत्वैर्मोक्षः । ६६८
॥ इत्यनगारमार्गाध्ययनम् ॥ ३५ ॥
॥ अथ जीवाजीवविभक्त्यध्ययनम् ॥
३१-४५+ उपक्रमादिनिरूपणम् । ६७०
५५२-५५९ जीवाजीवविभक्तीनां निक्षेपाः (४) भावे (१०-१०-६) ६७१
१३७४-१३७५* उपोद्घातः, संयमः फलं लोकालोकलक्षणं च ।
१३७६* द्रव्यक्षेत्रकालभावैः प्ररूपणा ।६७२
१३७७-१३७९* रूप्यरूप्यजीवभेदाः
१३८०-१३८२* अरूप्यजीवस्य क्षेत्रकालप्ररूपणा ६७३
१३८३-१८७* रूपिणो भेदाः, क्षेत्रं कालश्च । ६७५
१३८८-१४१९* वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानैर्भावः । ६७७
१४२०* अजीवस्य विभक्तेरुपसंहारः,जीवस्य प्रतिज्ञा ।
१४२१-१४२३* सिद्धभेदाः । (स्त्रीमुक्तिवादः) ६८३
१४२४-१२७* रुयादीनामेकसमयसिद्धानां संख्या । ६८४
१४२८-१४२९* सप्रभृसिद्धस्खलनादि ।
१४३०-१४३४* सिद्धशिलास्वरूपं लोकान्तस्वरूपं च । ६८५
१४३५-१४३९* सिद्धानामवगाहनं स्वरूप-

कर्मप्रकृति-लेश्यान-गारजीवा-जीवविभ-क्तिरूपाणि ३३–३६.

॥ १८२ ॥

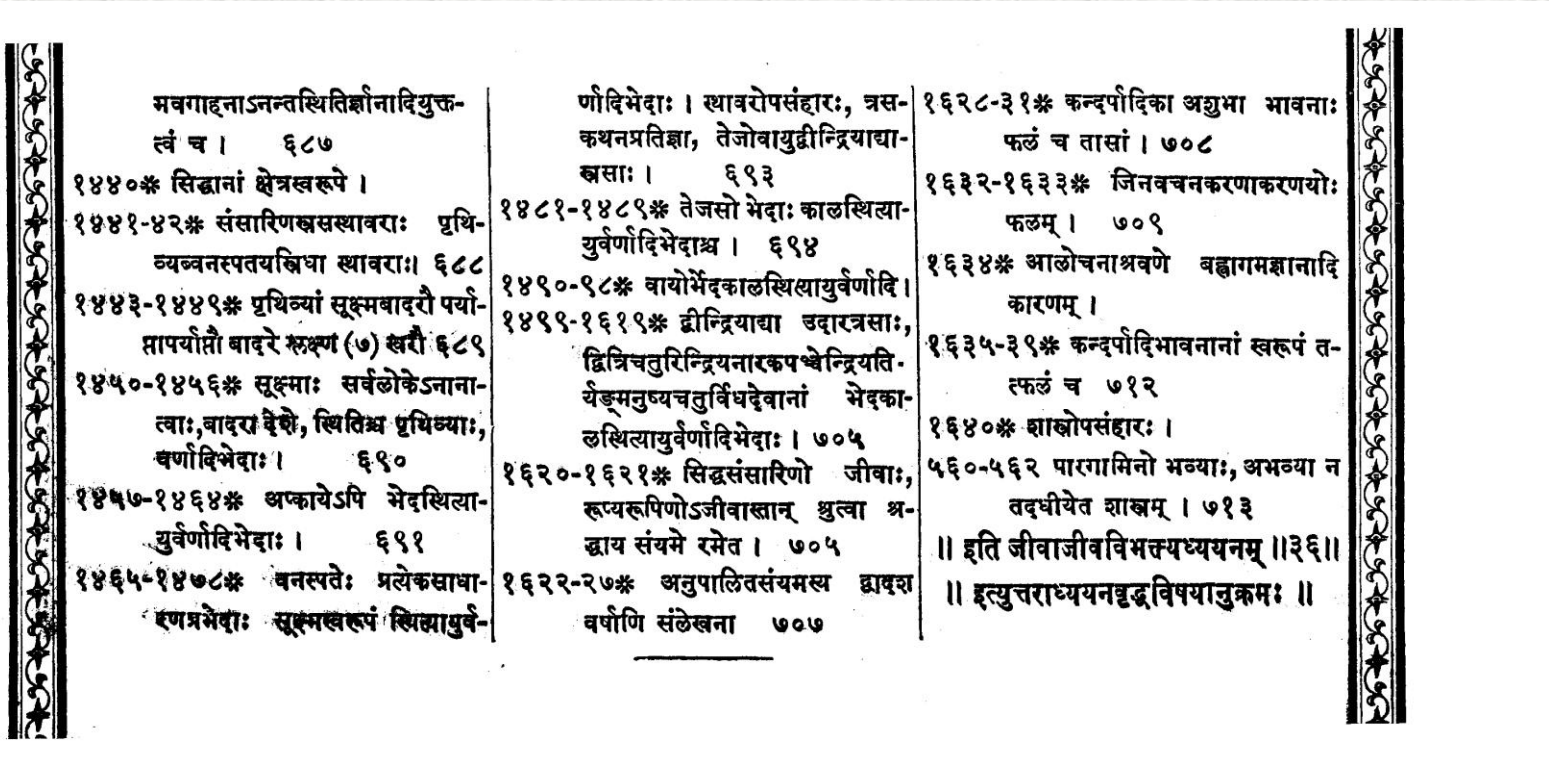
नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित: नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रम: (आगम-संबंधी-साहित्य)

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



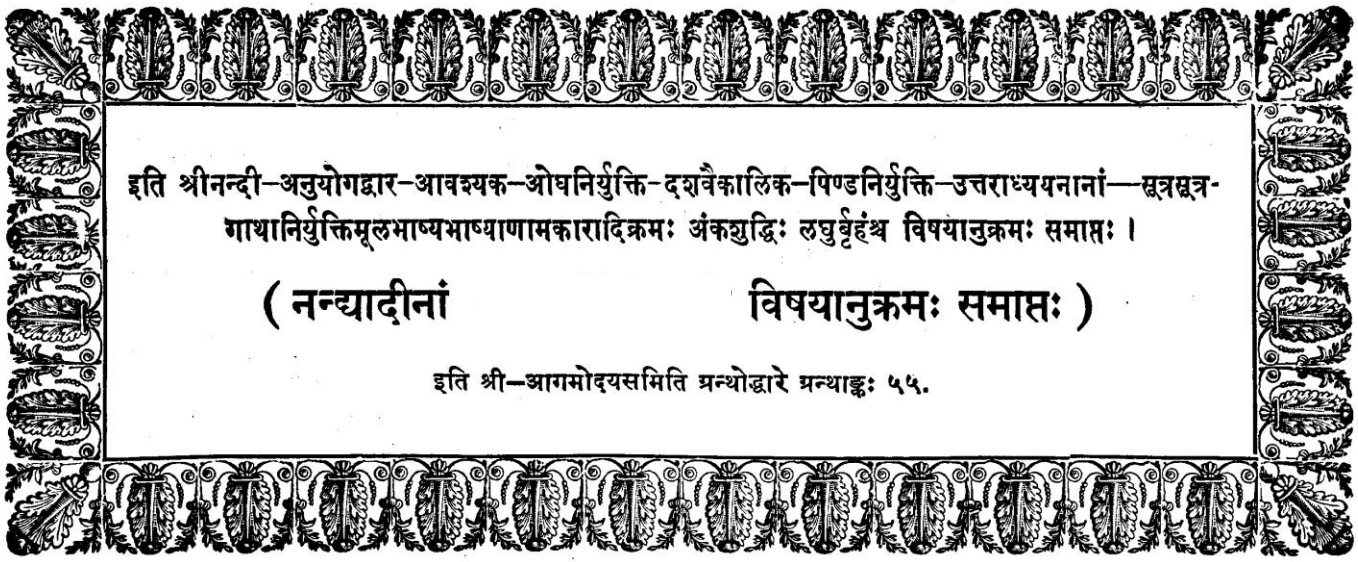
भवगाहनाऽनन्तस्थितिर्ज्ञानादियुक्तत्वं च। ६८७
१४४०* सिद्धानां क्षेत्रस्वरूपे।
१४४१-४२* संसारिणस्त्रसस्थावराः पृथिव्यब्वनस्पतयस्त्रिधा स्थावराः। ६८८
१४४३-१४४९* पृथिव्यां सूक्ष्मबादरौ पर्याप्तापर्याप्तौ बादरे श्लक्ष्ण (७) खरौ ६८९
१४५०-१४५६* सूक्ष्माः सर्वलोकेऽनानात्वाः, बादरा देशे, स्थितिश्च पृथिव्याः, वर्णादिभेदाः। ६९०
१४५७-१४६४* अप्कायेऽपि भेदस्थित्यायुर्वर्णादिभेदाः। ६९१
१४६५-१४७८* वनस्पतेः प्रत्येकसाधारणभेदाः सूक्ष्मस्वरूपं स्थित्यायुर्वर्णादिभेदाः। स्थावरोपसंहारः, त्रसकथनप्रतिज्ञा, तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्यास्त्रसाः। ६९३
१४८१-१४८९* तेजसो भेदाः कालस्थित्यायुर्वर्णादिभेदाश्च। ६९४
१४९०-९८* वायोर्भेदकालस्थित्यायुर्वर्णादि।
१४९९-१६१९* द्वीन्द्रियाद्या उदारत्रसाः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियनारकपञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्यचतुर्विधदेवानां भेदकालस्थित्यायुर्वर्णादिभेदाः। ७०५
१६२०-१६२१* सिद्धसंसारिणो जीवाः, रूप्यरूपिणोऽजीवास्तान् श्रुत्वा श्रद्धाय संयमे रमेत। ७०५
१६२२-२७* अनुपालितसंयमस्य द्वादश वर्षाणि संलेखना ७०७
१६२८-३१* कन्दर्पादिका अशुभा भावनाः फलं च तासां। ७०८
१६३२-१६३३* जिनवचनकरणाकरणयोः फलम्। ७०९
१६३४* आलोचनाश्रवणे बह्वागमज्ञानादि कारणम्।
१६३५-३९* कन्दर्पादिभावनानां स्वरूपं तत्फलं च ७१२
१६४०* शास्त्रोपसंहारः।
५६०-५६२ पारगामिनो भव्याः, अभव्या न तदधीयेत शास्त्रम्। ७१३
॥ इति जीवाजीवविभक्त्यध्ययनम् ॥३६॥
॥ इत्युत्तराध्ययनबृद्धविषयानुक्रमः ॥

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगमसूत्र]

प्रत सूत्रांक यहां देखीए

दीप क्रमांक के लिए देखीए 'सवृत्तिक आगम सुत्ताणि'



इति श्रीनन्दी–अनुयोगद्वार–आवश्यक–ओघनिर्युक्ति–दशवैकालिक–पिण्डनिर्युक्ति–उत्तराध्ययनानां—सूत्रसूत्र-गाथानिर्युक्तिमूलभाष्यभाष्याणामकारादिक्रमः अंकशुद्धिः लघुर्बृहंश्च विषयानुक्रमः समाप्तः ।

(नन्द्यादीनां विषयानुक्रमः समाप्तः)

इति श्री–आगमोदयसमिति ग्रन्थोद्धारे ग्रन्थाङ्कः ५५.

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित:

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां लघु-बृहत् विषयानुक्रम: परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-4

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

नन्द्यादिनां विषयानुक्रम:

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“नन्दी-आदि-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:”

नाम्ना परिसमाप्त:

आगम-संबंधी-साहित्य’-श्रेणि, भाग-४

भाग-4

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

[१] अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम: [३] प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

[२] उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम: [४] नन्द्यादि-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

[आगम-संबंधी-साहित्य]

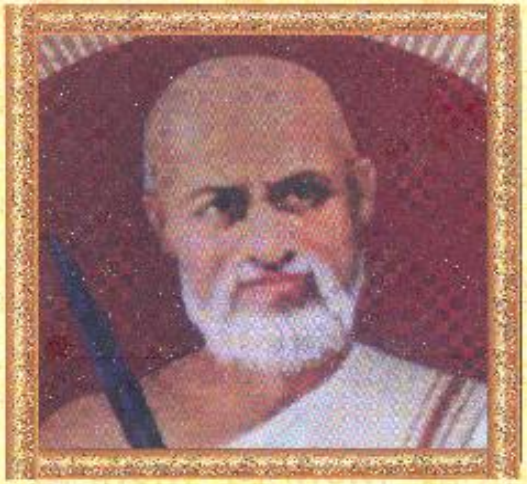
परिसमाप्ता:


आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

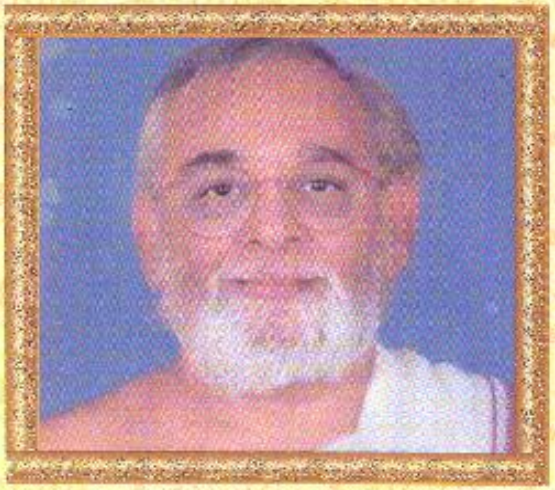
आगम_संबंधी_साहित्य

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

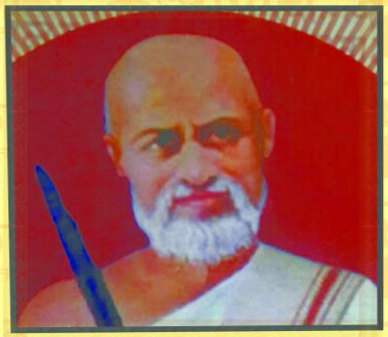


श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्व र्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू -भगवंत एवं साध्वी -महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |



मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रम:

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

